

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(ABHIJÑĀNAŚĀKUNTALAM)



डॉ. वेद प्रकाश शास्त्री

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

C.2

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

१०८

****

महाकविकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

'प्रकाश'-संस्कृत-हिन्दी-आङ्ग्लव्याख्यात्रयोपेतम्

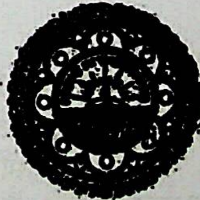
व्याख्याकार

डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री

एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत), स्वर्णपदक विजेता

पी-एच्० डी०, डी० लिट्०, डी० एस्सी०

साहित्याऽऽयुर्वेदरत्न, विद्याभास्कर, आयुर्वेदबृहस्पति



चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकाशक

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

दूरभाष : 2420404

ई-मेल : cvbhawan@yahoo.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पुनर्मुद्रित संस्करण : 2015

मूल्य : 150.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)

गली नं. 21-ए, अंसारी रोड

दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष : 32996391



चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113

दिल्ली 110007

दूरभाष : 23856391



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष : 2335263

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

THE
VIDYABHAWAN PRACAYAVIDYA GRANTHAMALA
108
****

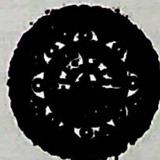
ABHIJÑĀNA ŚĀKUNTALAM

OF

MAHĀKAVI KĀLIDĀSA

Edited with
'Prakāśa' Sanskrit-Hindi-English Commentaries

By
Dr. Ved Prakash Shastri
M.A. (Hindi & Sanskrit) (Gold Medalist)
Ph. D., D. Litt., D. Sc.
Sahitya-Ayurvedaratna, Vidyabhaskar
Ayurveda-Brihaspati



CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Publishers :

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

(Oriental Publishers & Distributors)

Chowk (Behind Bank of Baroda Building)

Post Box No. 1069

Varanasi 221001

Tel. # 0542-2420404

e-mail : cvbhawan@yahoo.co.in

All Rights Reserved

Also can be had from :

CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN

K. 37/117, Gopal Mandir Lane

Post Box No. 1129

Varanasi 221001

CHAUKHAMBA SANSKRIT PRATISHTHAN

38 U.A. Bungalow Road, Jawahar Nagar

Post Box No. 2113

Delhi 110007

CHAUKHAMBA PUBLISHING HOUSE

4697/2, Ground Floor, Street No. 21-A

Ansari Road, Darya Ganj

New Delhi 110002

Printed at Ratna Offsets Ltd.

Kamachha, Varanasi

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आत्मनिवेदन

हिन्दी साहित्याकाश के हिमांशु गोस्वामी तुलसीदास के सम्बन्ध में यह सूक्ति प्रसिद्ध है—

''कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला''।

यही अथवा कहा जाय कि इससे भी बढकर महत्ता भगवती वाग्देवी के वरदपुत्र महाकवि कालिदास की है। इन्हीं की महनीय कृति है ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्''। जिसने शताब्दियों से गुलामी के भार से दबे भारतीय समाज को गर्वपूर्वक पाश्चात्य देशों की आँख में आँख डालकर यह कहने का साहस दिया कि समय के फेर से भले ही हम कैसी ही दीन-हीन दशा में क्यों न पहुँच गये हों हमारा अतीत, हमारा ज्ञान, हमारा विद्यावैभव, हमारा धर्म, हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति—आज भी बेजोड़ हैं और भगवान् मनु की यह गर्वोक्ति आज भी उतनी ही सार्थक है जितनी मानवीय सभ्यता के आदि-अनादि क्षण में थी—

'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'॥

कविवर कालिदास के 'अभिज्ञानशकुन्तलम्' को देखकर ही सही मानों में मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के हृदय में भारतीय दृष्टिकोण के प्रति परिवर्तन आया था और उसके पश्चात् ही पाश्चात्य जन भारतीय स्वतंत्रता के प्रति रुचि लेने लगे थे। आगे विस्तृत भूमिका में शाकुन्तलम् के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है अतः अधिक उस सम्बन्ध में न कहकर यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि मैंने जब महाकविकी कृतियों का अध्ययन किया तब इच्छा हुई कि इनका अनुवाद कर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी प्रेमियों के लिए इन्हें सुलभ कराया जाय जिससे वे भी महाकवि की रससिक्त भारती का आस्वादन कर भारत के अतीतकालीन आदर्श का साक्षात्कार कर सकें। भारत के सभी विश्वविद्यालयों में किसी-न-किसी पाठ्यक्रम में 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अध्ययनाध्यापन होता ही है अतः मेरा प्रयास रहा है कि छात्र और साहित्यप्रेमी दोनों समान रूप से इस व्याख्या से लाभान्वित हों।

यद्यपि मेरी मान्यता है कि हमारे अंग्रेजी में किये गये प्रयास से अंग्रेजी का ही साहित्य समृद्ध होता है, तथापि दक्षिण के संस्कृतानुरागियों की अंग्रेजी के प्रति अभिरुचि को दृष्टिगत रख अनुवाद अंग्रेजी में भी प्रस्तुत किया जा रहा है। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि कुछ दशाब्द पूर्व तक मद्रास (आज के हिन्दी-विरोधी तमिलनाडु की राजधानी) से भी जो संस्कृत ग्रंथ प्रकाशित होते थे वे शुद्ध देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित होते थे भले ही व्याख्या तमिल या अन्य दक्षिणी भाषा में (लिपि में) क्यों न हो। इसी मद्रास में रामस्वामी नायकर आदि के प्रयत्नों से दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना महात्मा गाँधी के करकमलों से करा कर इस उद्घोष से माँ मेदिनी का अभिनन्दन किया था ''एक राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, एक हृदय हो भारत जननी'' परन्तु समय की बलिहारी आज का कण-कण राजनीति से प्रेरित हो भाषा, प्रान्त के दृष्टिकोण को अपना कर इस प्रकार रोगग्रस्त हुआ कि एक हृदय की बात कोरी बात ही बनकर रह गयी। हृदयों को जोड़ने वाली कड़ी को हृदय तोड़ने वाली वस्तु समझ उसके

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अक्षरों तक से घृणा की जाने लगी, उसके अक्षरों पर अलकतरा पोता जाने लगा। तेलुगु जिसके आदिम शिलालेख स्वयं देवनागरी में उपलब्ध होते हैं तथा जिसके सहिष्णु विद्वान् स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि संस्कृत तथा देवनागरी ही मूलतत्त्व हैं वे भी कहीं कहीं भटके दिखायी देने लगे हैं। परन्तु सचेताओं के प्रयत्न से इस दिशा में सुधार हो रहा है और वह दिन दूर नहीं जब हम इस तथ्य को समझ लेंगे "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" और तब अपने ग्रन्थों को उनकी मूल भाषा में पढ़कर रसास्वादन करेंगे और व्याख्यादि के द्वारा किसी भारतीय भाषा के कोश को ही समृद्ध करेंगे, विदेशी भाषा के नहीं।

संस्कृत भारत की रक्तवाहिका नाड़ी है जिससे सभी भाषाओं को पोषण मिला है। हमारे इस प्रयास से भी इस पोषण-क्रम को यत्किञ्चित् सहयोग मिलेगा। इस विश्वास के साथ मैं इसके प्रकाशक श्रीवल्लभदासजी गुप्त संचालक—चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान को साधुवाद देता हूँ जिनके सत्प्रयास से यह व्याख्या सहृदय पाठकों के करों तक पहुँच पाने में सफल हुई है। चौखम्बा-वाराणसी, वेंकटेश्वर प्रेस-बम्बई, मोतीलाल बनारसीदास आदि कुछ संस्थाएँ ही ऐसी हैं जो तन-मन-धन से संस्कृत के प्रचार-प्रसार में अनेक वर्षों से जुड़ी हुई हैं और बिना बिक्री की चिन्ता किये ऐसे ग्रन्थों को भी प्रकाशित करती चली आ रही है जिनकी माँग सर्वथा नगण्य कही जा सकती है। आर्ष साहित्य प्रकाशन विषयक इनका यह प्रयास निश्चय ही इनके प्रकाशनों की कीर्ति को अमर करेगा।

बन्धुवर डॉ० विजयवीर विद्यालंकार एवं अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष डॉ० धनञ्जय कुलकरणी ने अंग्रेजी व्याख्या में अपेक्षित परिवर्तन, परिवर्धन, संशोधन कर अनुवाद को अधिक उपयोगी बनाने में जो अयाचित सहयोग दिया है उसके लिए आभार मात्र ही व्यक्त कर रहा हूँ और उसी प्रकार चौखम्बा विद्याभवन के संचालक श्रीव्रजदास जी एवं वहाँ के प्रूफशोधक महोदय का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अत्यधिक रुचि लेकर इसे यथासम्भव शीघ्र प्रकाशित कर विद्वज्जन के सामने प्रस्तुत करने का सत्प्रयास किया है।

मनुष्य अल्पज्ञ है, उसकी शक्ति सीमित है अतः हमारे इस प्रयास में त्रुटि रह जाना सहज सम्भाव्य है। आशा है सुधीजन त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर उपकृत करेंगे, जिससे भविष्य में उनका परिमार्जन किया जा सके।

जन्माष्टमी २०५१ वि०
१६ अगस्त १९९४ ई०

विदुषां वशंवदः
डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री

२१-१-१९८ गाँधी बाजार,
समक्ष : उच्चन्यायालय,
हैदराबाद-५०००२
दूरभाष : ५२५००९

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रस्तावना

सत्स्वपि बहुलेषु काव्येषु तत्प्रणायकेषु च प्रसादगुणगुम्फितस्य वैदर्भीरीति-नियन्त्रितस्याद्यरसरञ्जितस्य कविकुलगौरव रविणा कालिदासेनाभिहितस्य केरल-कामिन्या: कुन्तलस्येवाभिज्ञानशकुन्तलस्य वैशिष्ट्यं कस्य मनो नाह्लादयति। यस्य किल कवित्वरसेन प्लुतमानसा मनीषिण: सहसा कमपि भावभेदमाप्नुवन्त: कठोरदु:खेष्वपि अतुलां चित्तशान्तिमुपगच्छन्तो भारतीदेव्या नवीनमिव भावं प्रत्यक्षीकुर्वन्त: स्वकर्त्तव्येषु रसाभिभवेन प्रमाद्यन्ति। काव्यनिस्यूतमलौकिकं भावजातं चक्षुषेव पश्यन्ति। यस्य च शृङ्गाररससलिलावगाहनेन वृद्धोऽपि क्षणं तरुणायते। परुषमपि ब्रह्मचारिजनहृदयं शृङ्गारैकतानं प्रियवस्तु प्रवणतामवलम्बते च। तमेव कविकुलगुरुं संस्मरन् आहुश्च केचन रसिका:—

कालिदासकवितां नवं वयो माहिषं दधि सशर्करं पय:।
एणिमांसमबला सुकोमला सम्भवन्तु मम जन्मनि जन्मनि॥

यस्य च कवे: करुणरसप्रयोगनैपुण्येन मुहूर्त्तमपि जन्मावधि करुणभा-वमविजानतो नितरां कठोरमप्यन्त:करणं करुणरसमयकूपे निमज्जति। प्रकाश्यते एवास्य कवे: करुणरसवर्णनचातुरी शकुन्तलाया: प्रस्थानकौतुकेऽभिज्ञानस्य तुरीयाङ्के। अभिज्ञान-शाकुन्तले वर्णितं शकुन्तलाया: प्रस्थानदृश्यमवलम्ब्य केचन कारुणिका वदन्ति—

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशकुन्तलम्।
तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्को यत्र याति शकुन्तला॥

शृङ्गारचातुरी तु कवे: सर्वत्र परिस्फुटैवेति। कविरयमुपमाप्रिय इति के वा न जानन्ति। कथयन्ति च तद्वेदिन:—

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिन: पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणा:॥

अथायं कवीश्वर: कदा, कस्मिन् प्रान्ते जनुरधत्त तत्र बहवो बहुप्रकारै-र्विप्रतिपद्यन्ते। महाकविना स्वयं स्वविषये किमपि नोपन्यस्तम्। ऐहिक-नश्वर-सुखविमुखानां मोक्षरूपपरमपुरुषार्थपथमात्रप्रपीत्सूनां मुनीनामिवप्राचीनानामार्य्य- गौरवभूतानां केवलं दृष्टान्तप्रदर्शनद्वारेण लेशत एवैहिकसुखसम्पत्तिसाधनफलकेषु खल्वैतिह्यविषयेषु नासीन्मनागपि प्रयास:। महाकविना च यत्किञ्चिन्निरूपितं तत् स्वल्पं तदपि दुर्लभम्। तस्य च काव्ये आत्मप्रतिष्ठाया लेशोऽपि नास्ति। तत्रापि स स्वभावतो विनयावनत एव अस्माकं दृष्टिपथं आयाति। तस्य विनयत्वं रघुवंश-काव्यपद्येभ्योऽवगम्यते। कादम्बरीप्रणेता बाणभट्टो हर्षचरिते महाकवे: कवित्वं प्रशशंस। उक्तञ्च तेन—

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुमारिलभट्टोऽपि स्वतन्त्रे तन्त्रवार्तिके—

"सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रणाममन्तःकरणप्रवृत्तयः ॥"

इति शाकुन्तलपदमुद्धृत्य 'प्रसिद्धिरूपं कविभिर्निरूपितं' इति वाक्य- परिपोषणार्थं कालिदासं सस्मार।

महाकविदण्डिना काव्यादर्शप्रथमाध्याये—

"प्रसादवत् प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति।
लक्ष्म लक्ष्मीं तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥"

इति कालिदासकवितायास्तृतीयं चरणमुदाहृत्य प्रसादगुणो व्याख्यातः। तथा हि पूर्वोक्तप्रमाणकलापैः ख्रिष्टतृतीयशताब्दीकालात्परवर्त्तीपञ्चमशताब्दीकालशेषात् पूर्ववर्ती-कालो महाकवेः कालिदासस्याविर्भावकाल इति कैश्चिद् गवेषकैर्निरूपितीकृतमस्ति। केचन महानुभावाः महाकविकालिदासस्याविर्भावकालः ख्रिष्टीयषष्ठशताब्दीकाल इति मन्यन्ते। भारतीयजनश्रुतिरेव तेषां समालोचनाया प्रमुखाधारभूमिः। मालवदेशान्तःपातिन्यामुज्जयिनी नाम राजधान्यां विक्रमादित्यो नाम राजा आसीत्—

मत्तोऽधुना कृतिरियं सति मालवेन्द्रे,
श्रीविक्रमार्कनृपराजवरे समासीत्।
यद्राजधान्युज्जयिनी महापुरी,
सदा महाकालमहेशयोगिनी ॥

इति ज्योतिर्विदाभरणोक्तेः। तस्य च राज्ञो धन्वन्तरिप्रभृतयो रत्नभूता नव-संख्यकाः पण्डिताः सभासदो बभूवुः। तेषु महाकविः कालिदासोऽप्येकं रत्नमासीत्। तथा चोक्तं ज्योतिर्विदाभरणे—

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां,रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥ इति।

ख्रिष्टजन्माव्यवहितपूर्वशताब्दीकालो विक्रमादित्यस्य काल इत्यपि कैश्चिद् अनुसन्धित्सुभिर्निरूपितम्। स एव कालो महाकवेः कालिदासस्याविर्भावकाल इति कथञ्चित् मन्तव्यम्।

बिहारोत्कलजर्नल-विंसेण्टस्मिथ-महामहोपाध्यायहरप्रसादशास्त्री प्रभृतयो-विद्वांसः मालवदेशस्थं 'मन्दसौर'(प्राचीन दशपुर)नामकं नगरं तन्निकटवर्ती किञ्चित् पुण्यस्थानं वा महाकवेर्जन्मभूमिरिति निपुणं वदन्ति—

केचित् वदन्ति बङ्गेऽस्य जन्म मालवदेशके।
मगधे विबुधाश्चान्ये मिथिलायां परेऽधुना ॥

तथाहि विक्रमसभायां सदस्यतया नवरत्नानामेकं रत्नंकालिदास आसीत्। एवमेव भोजप्रबन्धादौ भोजसभायां कालिदासस्य वर्णनाद् भोजसमयेऽपि कश्चित् कालिदास आसीत् इति सम्भाव्यते। एवमन्येऽपिं कालिदासाः सन्ति ध्रुवं सम्भाव्यन्ते। राजशेखरोऽप्येवमेवाह—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकोऽपि जीयते हन्त! कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु॥ इति।

सम्प्रति हि कालिदासकृतत्वेन बहवो ग्रन्थाः समुल्लसन्ति, तेषु मुख्यतमाः— रघुवशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतं, शाकुन्तलं, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्नि-मित्रम्, ऋतुसंहारम्, पुष्पबाणविलासश्चेति ग्रन्था एकस्यैव कालिदासस्येति सम्भाव्यते। उपर्युक्तग्रन्थेषु 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटकं चरमोत्कर्ष-सीमायामस्तीति वक्तुं शक्यते। सम्भवतो नाटकमिदं कविना शेषजीवने निरमायि।

नाटकेऽस्मिन् धीरोदात्तो दक्षिणो नामकरो दुष्यन्तः। तृतीयाङ्कपर्यन्तं शकुन्तला कन्या मुग्धा च। ततः परं स्वकीया मध्या च नायिका। विप्रलम्भशृङ्गारः प्रधानो रसः वीरकरुणादयो गौणभूतरसाः। विप्रलम्भशृङ्गारस्तु गान्धर्वविवाहात् प्राक् पूर्वरागात्मकः ततः परं प्रवासरूपः। नाटकेऽस्मिन् प्रसादो गुणः, वैदर्भी रीतिश्च।

१९८, गाँधी बाजार, हैदराबाद दक्षिण,
गंगा दशहरा, १९५४ वि०
७-६-१९७७ ई०

विदुषां वशंवदः
डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूमिका

महाकवि कालिदास भारतीय मनीषा के परमोज्ज्वल प्रतीक रूप में संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठित हैं। विश्व साहित्य में उनकी कृतियों का तो महत्त्वपूर्ण स्थान है ही साथ ही विश्व के लोकप्रिय कवियों और नाटक कारों में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति की लीलाभूमि में जीवन बिताने वाले महाकवि ने अपने महाकाव्यों, ऋतुसंहार, मेघदूत जैसे लघुकाव्यों एवं अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय आदि नाटकों में जो अनुपम सौन्दर्य अनुस्यूत किया है, उसकी क्षमता संस्कृत साहित्य में ही नहीं विश्व के किसी भी साहित्य में दुर्लभ है। लोक-प्रियता की दृष्टि से कालिदास आज भी अद्वितीय ही ठहरते हैं। उनकी कृतियाँ विद्वानों तथा सामान्य शिक्षित जनों में समान रूप से प्रिय हैं। यदि कहा जाय कि संस्कृत साहित्य का अध्ययन कालिदास की कृतियों से ही होता है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मूर्धन्य टीकाकार मल्लिनाथ ने कालिदास की रचनाओं के सम्बन्ध में जो प्रशस्ति लिखी है उससे उक्त कथन का समर्थन अनायास उपलब्ध हो जाता है। वे लिखते हैं—

वाणीं काणभुजीमजीगणदवाशासीच्च वैयासिकीम्
अन्तस्तन्त्रमरंस्त पन्नगगवीगुम्फेषु चाजागरीत्।
वाचामाकलयद्रहस्यमखिलं यश्चाक्षपादस्फुराम्
लोके भूद्यदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः॥

अर्थात् महर्षि कणाद का वैशेषिक दर्शन, भगवान् वेदव्यास का वेदान्त दर्शन, शेषावतार पतंजलि का महाभाष्य, अक्षपाद गौतम का न्यायदर्शन आदि शास्त्रीय ग्रन्थों का जिसने यथावत् अध्ययन कर लिया है वही कालिदास की रचनाओं का रसास्वादन कर सकता है। इस कथन से यह स्पष्टतः ध्वनि होता है कि कालिदास की सूक्तियों का सम्यग् रूप से आस्वादन करना केवल दिग्गज पण्डितों के ही वश ही बात है। संस्कृत काव्य-ग्रन्थों के टीकाकारों में मल्लिनाथ का मूर्धन्य स्थान है। संस्कृत के अनेक जटिल काव्यों पर यदि उनकी टीकाएँ उपलब्ध न होतीं तो वे आज इतने लोकप्रिय न होते। कालिदास की रचनाओं को दृष्टिगत रख कर स्वयं मल्लिनाथ ने अपने सम्बन्ध में कहा है—

कालिदासगिरां सारं कालिदासः सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशाः॥

अर्थात् कालिदास की रचनाओं का सार अद्यावधि मात्र तीन ही हृदयंगम कर पाये हैं—एक चतुरानन ब्रह्मा, दूसरी वाग्देवी सरस्वती तथा तीसरे स्वयं कालिदास। मेरे समान अल्पज्ञ जन तो उन्हें समझ पाने में सर्वथा असमर्थ ही रहे हैं।

मल्लिनाथ जैसे प्रकाण्ड विद्वान् जब कालिदास की रचनाओं के यथावत् रसास्वादन में स्वयं को अशक्त प्रतिपादित करते हों तब अन्य विद्वानों की क्षमता का अनुमान स्वयं ही लगाया जा सकता है। अतः निःसंकोच कहा जा सकता है कि कालिदास की रचनाएँ दिग्गज विद्वानों के मनन का विषय हैं। वे अत्यन्त सरस, सरल तथा सुबोध होते हुए भी परम गम्भीर एवं निगूढ भावों से गुम्फित हैं।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाकवि कालिदास की कृतियाँ संस्कृत साहित्य की अमर निधि हैं। इन्हीं के कारण भारत का आदर अखिल विश्व में उस समय हुआ जब भारत दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। अभिज्ञानशाकुन्तल का अध्ययन कर प्रसिद्ध जर्मन कवि गेटे ने कहा था—

हे मित्र! यदि तुम वासन्ती तारुण्य के मनोहर पुष्प और ग्रीष्म तुल्य प्रौढावस्था के उत्तमोत्तम फल तथा आत्मा को प्रभावित करने वाली श्रेष्ठ सामग्रियाँ एकत्र ही पाना चाहते हो तो कालिदास की शकुन्तला पढो। उसके रससलिल में अवगाहन कर न केवल तुम्हारी आत्मा ही सन्तुष्ट और शान्त होगी प्रत्युत तुम्हें स्वर्ग और भूतल की सकल समृद्धियाँ भी वहाँ एक ही स्थान पर सुलभ हो जायेंगीं।

श्री वासुदेव विष्णु मिराशी ने गेटे के इस भाव को संस्कृत पद्य में गुम्फित कर लिखा है—

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपत् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो-
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्॥

कालिदास को शताब्दियों पूर्व 'कविकुलगुरु' कहा गया था, आज भी वे उक्त पदवी के अन्वर्थक अधिकारी हैं। उनकी उपलब्ध कृतियाँ आज भी उसी प्रकार सम्मानभाजन हैं जिस प्रकार शताब्दियों पूर्व थीं। इसका एक मात्र कारण यही है कि वे मानव-जीवन की शाश्वत कामनाओं और प्रवृत्तियों के सूक्ष्म द्रष्टा कवि हैं। उनके काव्य की स्रोतस्विनी ऐसे अगाध सौन्दर्य एवं प्रेम की लहलहाती पृष्ठभूमि पर प्रवहमाण है, जो सदैव आर्द्रतासम्पन्न रहती है। उन्होंने ऐसी मानवीय समस्याओं को अपना कार्य-विषय बनाया है जो देश-काल की सीमा में आबद्ध नहीं हो सकतीं। असीम सौन्दर्य का सतत दर्शन, पावन प्रेम का पूजन, सर्वस्व समर्पण की भावना उनके काव्य का कमनीय आधार है।

कालिदास की सूक्ष्म दृष्टि केवल बाह्य सौन्दर्य की उपासिका नहीं थी अपितु सभी अवस्थाओं में अक्षुण्ण रहने वाले सौन्दर्य की उपासिका थी। चराचर विश्व में व्याप्त प्रकृति नटी की स्वर्गीय सुषमा को वे मानव-सौन्दर्य में प्रतिमूर्त देखते थे। नारी-अंगों का सौन्दर्य ही उनका प्रिय वर्ण्य विषय नहीं था, प्राकृतिक उपादानों के वर्णन को भी उन्होंने उतना ही महत्त्व दिया है जितना नारी के सौन्दर्य-वर्णन को। नारी उनकी दृष्टि में मात्र उपभोग की वस्तु नहीं थी इसीलिए रघुवंश के अजविलाप प्रसंग में नारी के प्रति अपनी भावनाओं का उद्घाटन उन्होंने अज के मुख से इस प्रकार कराया था—

गृहिणी सचिवः मिथः सखी, प्रिय शिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे हृतम्॥

कालिदास के प्रेम की परिणति केवल उद्दाम कामवासना की क्षणिक तृप्ति मात्र नहीं थी, उनके पात्रों में अपने प्रेम की रक्षा के लिए समस्त जीवन का उत्सर्ग कर देने की निष्ठा है। कालिदास सौन्दर्य को प्रेम में तथा प्रेम को जीवन समर्पण में सफल मानते थे।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालिदास के प्रेम और सौन्दर्य की कल्पना प्राचीन भारतीय विचारधारा के सर्वथा अनुरूप है। कालिदास ने प्रेम की सार्थकता को विवाह में तथा विवाह की सार्थकता को प्रजोत्पादन के मांगलिक व्यापार में स्वीकार किया है। रघुवंश में उनका यह कथन उक्त कथन का प्रमाण है—

'प्रजायै गृहमेंधिनाम्'।

इसी विशेषता के कारण उनकी कृतियाँ देश काल की सीमा में आबद्ध न रहकर सार्वभौम प्रतिष्ठा की अधिकारिणी बन सकी हैं।

कालिदास, का प्रकृतिप्रेम विश्वविश्रुत है। उनके समान प्रकृतिप्रेमी अन्य कोई विश्व साहत्यि में दिखायी नहीं पड़ता। सामान्य कवियों की भाँति वे प्रकृति को केवल उद्दीपन विभाव के रूप में ही नहीं देखते थे बल्कि वे उसे प्रेम का पूरक मानते थे। उनकी दृष्टि में मानवीय सौन्दर्य का मापदण्ड प्राकृतिक सौन्दर्य ही था। वे मानते थे कि जब मनुष्य प्रकृति के जीवन से पृथक् हो जाता है तब उसकी अन्तश्चेतना मन्थर हो जाती है, आध्यात्मिक भूख मर जाती है और उसमें समाज-कल्याण की भावना सर्वथा तिरोहित हो जाती है। उनका प्रकृतिप्रेम पूर्ण कमनीयता के साथ अभिज्ञानशाकुन्तल में अनुस्यूत हुआ है। प्रकृति के साथ मानवीय मधुर सम्बन्धों की मनोरम छटा जिस रूप और परिमाण में शाकुन्तल में दृष्टिगत होती है उसकी तुलना अन्यत्र दुर्लभ है। कालिदास की लोकप्रियता का अन्य कारण है उनकी सुललित, सरस तथा सरल भाषा। वाग्देवी के वरदपुंत्र होने के नाते वे चाहते तो जटिल काव्य की रचना कर अपना प्रभुत्व सिद्ध कर सकते थे, परन्तु उन्होंने कभी ऐसा प्रयास नहीं किया। उन्होंने न अलंकारों के भार से कविताकामिनी के कमनीय कोमल कलेवर को व्यथित करने का प्रयास किया है और न ही जटिल छन्दों के बन्ध में कविता को उलझाकर इस स्थिति में पहुँचाया है कि उसे समझने के लिए किसी को सिर खपाना पड़े। वे अपनी कविताकामिनी को इस प्रकार हृदयाकर्षक बनाना चाहते थे कि उसके दर्शन मात्र से पण्डित-अपण्डित सभी उसकी ओर आकृष्ट हो सकें और अपने इस उद्देश्य में वे किस सीमा तक सफल रहे हैं, यह उनके काव्य के परिशीलन से स्वयमेव जाना जा सकता है।

उनकी लोकप्रियता का दूसरा कारण है—उनकी मौलिक उद्भावनाएँ। वर्ण्य विषय प्राचीन ग्रन्थों से लेकर भी उन्होंने अपनी कल्पना के रंगों से उन्हें इस प्रकार सँवारा है कि वे न केवल नये बन गये हैं बल्कि सर्वथा मौलिक ही प्रतिभासित होने लगे हैं।

कालिदास की प्रसादगुणपूर्ण ललित पदावलीमण्डित परिष्कृत शैली उनकी वैदर्भी रीति के जिस प्रकार सर्वथा अनुरूप है, उसी प्रकार उनकी सुकुमार कल्पना भी मधुर भावों की अभिव्यंजना में पूर्ण समर्थ है। रस और अलंकार उनके सहज सहचर हैं, जो उनकी इच्छानुसार विषय का अनुगमन करते हैं। उन्होंने सामान्यतया उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, अनुप्रास, उपमा, स्वभावोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग किया है सही परन्तु स्वभावोक्ति तथा उपमा के प्रयोग में जो सफलता उन्हें मिली है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कालिदास की उपमा के सम्बन्ध में तो 'उपमा कालिदासस्य' की उक्ति विश्वविख्यात ही है। यदि उनकी समस्त कृतियों से उनकी अनवद्य उपमाएँ एकत्रित की जायें तो मात्र उनके आधार पर ही यह

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निःसंकोच कहा जा सकता है कि उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी तथा शास्त्रज्ञान, व्यवहारज्ञान एवं अनुभव की दृष्टि से वे अद्वितीय थे।

मानसिक उद्वेगों एवं भावों के सूक्ष्म द्रष्टा तथा उनके यथावत् प्रतिपादक के रूप में भी कालिदास अद्वितीय ही ठहरते हैं। शृंगार की विविध भावनाओं के तो वे सर्वश्रेष्ठ चित्रकार थे ही। भाव, भाषा प्रतिपादन किसी भी दृष्टि से देखें तो कालिदास अद्वितीय प्रतिभा एवं काव्यशक्ति सम्पन्न ही दृष्टिगोचर होते हैं। यही कारण है कि मूर्धन्य आलोचकों ने उनके सम्बन्ध में कहा—''प्राचीन काल में कवियों की गणना का प्रसंग उपस्थित होने पर सर्वप्रथम कालिदास का नाम का कनिष्ठिका अँगुली पर रखा गया। किन्तु उनकी समता में अन्य नाम न आ पाने के कारण दूसरी अँगुली पर किसी का नाम जा ही नहीं सका। परिणामस्वरूप कनिष्ठिका के बाद की दूसरी अँगुली का नाम अनामिका पड़ गया। आज भी कालिदास के समान कोई और कवि न होने के कारण उस अँगुली का नाम 'अनामिका' सर्वथा सार्थक सिद्ध हो रहा है।

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव॥

प्रकृष्ट गद्यकार बाणभट्ट ने कालिदास की विशेषताओं को हृदयंगम कर उनके सम्बन्ध में कहा है कि कालिदास की आम्रमंजरी के समान सरस और मधुर कविताओं को सुनकर किस सहृदय के हृदय में आनन्द की बाढ़ नहीं आ जाती—

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते॥

कविवर सोड्ढल ने कालिदास की प्रशंसा करते हुए लिखा है—''वे कविश्रेष्ठ कालिदास धन्य हैं जिनकी उज्जवल कीर्ति उनकी निर्दोष कविता के समान अमृततुल्य तथा मधुर है। जिस प्रकार उनकी वाणी सूर्यवंश का पूरा वर्णन करने में समर्थ सिद्ध हुई है वैसे ही उनकी कीर्ति भी समुद्र के उस पार पहुँच गई है।''

ख्यातः कृती सोऽपि च कालिदासः शुद्धा सुधा स्वादुमती च यस्य।
वाणीमिषाच्चण्डमरीचिगोत्रसिन्धोः, परं पारमवाप कीर्तिः॥

इससे स्पष्ट होता है कि कालिदास की कीर्ति बहुत पहले ही विदेशों में फैल चुकी थी। कविवर श्रीकृष्ण ने कालिदास की भाषा के सम्बन्ध में लिखा है—''कमलिनी की भाँति अस्पृष्ट दोषवाली (रात्रि में विकसित होने वाली, दूसरे पक्ष में दोष रहित) मुक्ताहार की भाँति गुणसमूह से युक्त (अनेक सूत्रों में गुम्फित, दूसरे पक्ष में प्रसादादि गुणों से युक्त), प्रियतमा के अंक की भाँति विमर्द से (मींजने आदि से तथा परीक्षण से) आह्लादकारिणी भाषा कालिदास के अतिरिक्त अन्य किसी को सुलभ नहीं हो पाई है''—

अस्पृष्टदोषा नलिनीव हृष्टा हारावलीव ग्रथिता गुणौघैः।
प्रियाङ्कपालीव विमर्दहृद्या न कालिदासादपरस्य वाणी॥

ध्वन्यालोककार आनन्दवर्धनाचार्य ने कालिदास के महाकवित्व को स्वीकारते हुए कहा है—''यद्यपि संसार में अनेक कवि उत्पन्न होते हैं, तथापि उनमें से कालिदास के समान दो-तीन अथवा पाँच-छः व्यक्ति ही महाकवि की उपाधि के अधिकारी होते हैं—

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मिन्नतिविचित्रकविपरम्परावाहिनि संसारे कालिदास-प्रभृतयो द्वित्रा पञ्चषा वा महाकवय इति गण्यन्ते ॥

गोवर्धनाचार्य ने कालिदास की प्रशंसा करते हुए कहा है—''कालिदास की सूक्तियाँ साभिप्राय, मधुर तथा कोमल रतिविलासिनी (सुकुमार एवं मनोहर रमणी) के कलकण्ठ स्वर की भाँति शिक्षा देते समय भी हमें आनन्द से विभोर कर जाती हैं—

साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये ।
शिक्षासमयेऽपि मुदे रतिलीला कालिदासोक्ती ॥

आचार्य मम्मट ने कविता का उद्देश्य 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' प्रतिपादित किया है और वह अक्षरशः कालिदास की कविता में उपलब्ध होता है।

जीवनवृत्त—

अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्नि मित्र नाटकों; रघुवशं, कुमारसम्भव, मेघदूत तथा ऋतुसंहार जैसी महनीय कृतियों के कृती कालिदास का जीवनवृत्त प्रायः तिमिराच्छन्न ही कहा जा सकता है। एक जनश्रुति के अनुसार वे उज्जयिनी के परम प्रतापी शासक विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। कहा जाता है कि वे शैशव में निपट मूर्ख थे। कुछ चलते-पुर्जे पण्डितों ने परम विदुषी विद्योत्तमा के साथ उनका शास्त्रार्थ कराकर, उन्हें विजयी घोषित कर उसके साथ उनका विवाह करा दिया था परन्तु शीघ्र ही कालिदास की मूर्खता प्रकट हो जाने पर विद्योत्तमा ने उन्हें अपने घर से निकाल दिया। इस घटना से दुःखी होकर कालिदास ने भगवती की आराधना कर उनके कृपाप्रसाद से अपूर्व वैदुष्य प्राप्त किया और घर लौटकर पत्नी से घर के द्वार खोलने के लिए इस प्रकार कहा—'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'। विदुषी पत्नी ने पति की वाणी पहचान कर अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए पूछा—'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः' अर्थात् क्या तुम्हारी वाणी में कुछ विशेषता आ गई है। कालिदास ने पत्नी का तात्कालिक समाधान तो किया ही साथ ही कालान्तर में उसके प्रश्न के अस्ति, कश्चिद्, वाग् तीनों पदों को लेकर प्रथम पद से

'**अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः**'—कुमारसंभव, द्वितीय पद 'कश्चित्' को लेकर '**कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः**'— मेघदूत तथा तृतीय पद 'वाग्' को लेकर '**वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये**'— रघुवंश जैसे महाकाव्यों का प्रणयन कर अपनी प्रतिभा की छाप इस प्रकार कालपृष्ठ पर छोड़ी कि आज भी वह अजर- अमर बनकर उनकी यशःपताका फहरा रही है।

कालिदास के सम्बन्ध में लंका में किंवदन्ती प्रसिद्ध है। उसके अनुसार कालिदास श्रीलंका (सिंहल) नेरश कुमारदास के महाकाव्य 'जानकीहरण' के प्रशंसक थे। राजा ने यह सुनकर उन्हें अपने यहाँ बुलाया और उनका बहुत आदर-सत्कार किया। वहाँ रहते हुए कालिदास राजा के अतीव प्रिय पात्र बन गये। वहाँ उनकी घनिष्ठता एक सुन्दरी दासी से हो गई जिसके कारण वहीं कालिदास का निधन हुआ। राजा कालिदास के निधन से इतने दुःखी हुए कि उन्होंने कवि की चिता में कूद कर आत्महत्या कर ली। कहा जाता है कि सिंहल द्वीप के दक्षिण भाग में अभी तक कालिदास की समाधि विद्यमान है।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालिदास की जन्मभूमि के सम्बन्ध में पर्याप्त मतभेद है। कुछ लोग उन्हें बंगाली, कुछ काश्मीरी, कुछ मालवा निवासी तथा कुछ वर्तमान उत्तरप्रदेश का निवासी उन्हें सिद्ध करते हैं; परन्तु अद्यतन खोजों ने उत्तराखण्ड के केदार क्षेत्रान्तर्गत 'कविट्ठा' (कवेः स्थितिः यत्रासीत्) को उनका जन्मस्थान प्रतिपादित करने का प्रयास किया है और बताया है कि यहीं के नैसर्गिक वातावरण में जन्मे और अभिवर्धित होने के कारण कालिदास प्रकृति का सही चित्रण कर पाने में सफल रहे हैं। जन्मभूमि के समान ही उनके स्थितिकाल में भी मतभेद है। अधिकांश भारतीय विद्वान् ईसा से ५७ वर्ष पूर्व उनकी स्थिति मानते हैं। कुछ विद्वान् चौथी से छठी शताब्दी तक उनकी स्थिति को दोलायमान करते दृष्टिगोचर होते हैं परन्तु कवि के अन्तः साक्ष्य के अभाव में कुछ निर्णयात्मक रूप में कह पाना असंभव-सा ही है।

कालिदास की रचनाओं में उनके उज्जैन के प्रति लगाव का दिग्दर्शन होता है जिससे प्रतिभासित होता है कि सही जन्मभूमि एवं कर्मभूमि तो उज्जयिनी उनकी थी ही। मेघदूत में वे यक्ष से अपनी प्रियतमा के पास जाने वाले मेघ से कहलाते हैं—

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां।
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मास्म भूरुज्जयिन्याः॥

अर्थात् उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान करते हुए यद्यपि मार्ग कुछ टेढ़ा मेढ़गा तथापि तुम उज्जयिनी के राजभवनों को देखना न भूलना।

उन्होंने उज्जयिनी का तो बहुशः उल्लेख अपनी रचनाओं में किया ही है साथ ही उज्जयिनी में प्रवाहित शिप्रा नदी तथा वहाँ के अधिष्ठातृ देवता महाकाल का सादर उल्लेख करना भी वे नहीं भूले हैं।

कालिदास की कृतियों में नगाधिराज हिमालय तथा गंगा के प्रति विशेष पक्षपात पाया जाता है जिससे विदित होता है कि उनकी स्थिति इन क्षेत्रों में पर्याप्त समय तक रही होगी। भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों का पूर्णतः अवलोकन भी उन्होंने खुले नेत्रों से किया था जिसके कारण वे उन सबका जीवन्त वर्णन कर पाये।

व्यक्तित्व—

कालिदास की रचनाओं के अध्ययन से स्पष्टतः विदित हो जाता है कि उनका व्यक्तित्व अतीव प्रभावशाली था। वे सहृदय, सौन्दर्योपासक तथा विशुद्ध प्रेम के पुजारी थे। विश्व के सभी सुखों और समृद्धियों का उन्होंने उपभोग किया था। प्रकृति के अनन्य उपासक होते हुए भी नारी-सौन्दर्य के प्रति उनका विशेष आकर्षण था। वे आदर्शवादी प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति अगाध श्रद्धासम्पन्न थे। भारतीय संस्कृति के मूल्यवान् तत्त्वों की उन्होंने सर्वत्र प्रयत्नपूर्वक रक्षा की है और श्रुति, स्मृति, आचार ग्रन्थों की मान्यताओं का यथाशक्य संरक्षण किया है। वर्णाश्रम धर्म के प्रति अपनी अटूट निष्ठा का दिग्दर्शन उन्होंने अपनी कृतियों में प्रतिपद कराया है। राजतन्त्र के अनुयायी होते हुए भी उन्होंने 'राजा प्रकृतिरञ्जनात्' के आदर्श को उसका प्रथम गुण प्रतिपादित किया है। उत्कृष्ट नरेश में जिन गुणों को वे अनिवार्य मानते थे उनका दिग्दर्शन उन्होंने महाराज दिलीप के चरित्र के व्याज से रघुवंश के प्रथम सर्ग में कराया है।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उनकी रचनाओं के अध्ययन से विदित होता है कि उन्हें कभी अभाव का सामना नहीं करना पड़ा था। दुःख के दर्शन उन्हें वियोग अथवा मृत्यु के माध्यम से ही किये थे। स्वभाव से गम्भीर होते हुए भी वे विनोदप्रिय थे। अपने विदूषकों में हास्यरस का पूर्ण परिपाक दिखा कर उन्होंने इस बात को स्वतः सिद्ध कर दिया है। आयुर्वेद, संगीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, धर्मशास्त्र, लोकव्यवहार, पुराण, इतिहास, साहित्य आदि का उनका गम्भीर अध्ययन था। संगीत और चित्रकला के वे अनन्य प्रेमी थे और घुमक्कड प्रकृति के थे। उनके पात्रों द्वारा उनकी इन प्रवृत्तियों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

समष्टि रूप में साहित्य, संगीत और कला तीनों क्षेत्रों में कालिदास को विशेष निपुणता प्राप्त थी। लोकव्यवहार में उनकी अबाध गति थी और मानव-जीवन की सभी स्थितियों में उनका अनुभव नितान्त गम्भीर और व्यापक था। इन सब विशेषताओं के अधिष्ठान कालिदास महाकवि भर्तृहरि के इस कथन को अन्वर्थक बनाते दृष्टिगोचर होते हैं—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥

कालिदास के नाटक

कालिदास ने रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत, ऋतुसंहार चार काव्य तथा मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल तीन नाटकों का प्रणयन किया है और मात्र इन तीन नाट्यकृतियों के कारण वे मूर्धन्य नाटककार के सर्वमान्य पद पर अधिष्ठित हो गये हैं। उपर्युक्त तीनों नाटकों में 'मालविकाग्निमित्र' कालिदास की पहली नाट्यकृति है। यह निर्णय इस आधार पर किया गया है कि इसमें उनकी अन्य दो नाट्यकृतियों के समान रूपक प्रतिभा की चारुता के दर्शन नहीं होते। हाँ, इतना सत्य है कि अभिनय, संवाद तथा कथानक की मधुरता की दृष्टि से यह नाटक भी संस्कृत नाटकों में अपना प्रमुख स्थान रखता है, भले ही अभिज्ञानशाकुन्तल जैसी मनोज्ञता उसमें नहीं है। कालिदास जैसे रससिद्ध कवि के प्रथम प्रयास के लक्षण इसमें स्फुट हैं। प्रकारान्तर से इस नाटक का यह कथन भी हमारे कथन को प्रमाणित करता है दृग्गोचर होता है—'न तो पुराना होने से सब अच्छा हो सकता है और न नया होने से कोई काव्य उपहास अथवा उपेक्षा का पात्र ही बन जाता है। विद्वज्जन परीक्षा करके उत्तम को अंगीकार करते हैं। दूसरों के अनुभव अथवा विश्वास के आधार पर अपनी राय कायम करना तो मूर्खों का काम हैं—

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

यहाँ हम सभी नाटकों पर विचार न कर मात्र अभिज्ञानशाकुन्तल पर ही प्रकाश डालने का यत्किञ्चित्प्रयास करेंगे।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्—

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का विश्व-साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। इसके सम्बन्ध में यह सूक्ति प्रसिद्ध है—

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला'।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात् काव्यों में नाटक तथा नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तल से बढ़कर रम्य रचना अन्य नहीं है। इस नाटक में महाकवि कालिदास की नाट्य कला का ही चरम विकास नहीं हुआ है, अपितु उनकी काव्यप्रतिभा, सूक्ष्म पर्यवेक्षण एवं मानवीय संवेदनाओं का भी यह सर्वोत्तम उदाहरण है। यह नाटक अपनी ऐतिहासिक परन्तु अभिनव कथावस्तु, रोचक शैली, रचना-कौशल, स्वाभाविकता तथा आदर्श चरित्रों के कारण इतना लोकप्रिय है कि शायद ही कोई संस्कृत साहित्यिक रसिक इसकी रसमाधुरी का आस्वाद किये बिना रह सका हो। इस नाटक में सात अंक हैं तथा इसके आदि और अन्त में देवाधिदेव भगवान् शंकर की स्तुति इस बात की परिचायक है कि कालिदास परम शैव थे और 'विद्याकामः शिवं जपेत्' कथन में पूर्ण आस्था रखते थे।

इस नाटक की मूलकथा 'महाभारत' के आदिपर्व से ली गई है किन्तु कवि ने अपनी अलौकिक प्रतिभा से इसमें अनेक मौलिक परिवर्तन करके इसकी कथावस्तु का इतना मनोहर विकास किया है कि परवर्ती साहित्य में अभिज्ञानशाकुन्तल की कथावस्तु को ही ऐतिहासिक सामग्री के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। इस नाटक में नायक सम्राट् दुष्यन्त तथा नायिका कण्व ऋषि पालिता कन्या शकुन्तला के मिलन, वियोग तथा पुनः मिलन की कथा को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कथासार इस प्रकार है—

"हस्तिनापुर-निवासी पुरुवंश के प्रतापी समाट् दुष्यन्त एक दिन शिकार खेलते हुए कण्वमुनि के आश्रम के निकट जा पहुँचे। वहाँ एक मृग के पीछे उन्होंने अपना रथ दौड़ाया परन्तु मृग वेगपूर्वक मुनि के आश्रम में प्रविष्ट हो गया। राजा ने उसके वध के लिए बाण का संधान किया ही था कि दो मुनियों ने उसे आश्रम के मृग का वध करने से रोक दिया। राजा के अनुचर पीछे छूट गये थे। वह अकेला ही मुनि के आश्रम में प्रविष्ट हुआ। मुनि कण्व की अनुपस्थिति में उनके शिष्यों ने उनका आतिथ्य किया। विश्रामोन्मुख सम्राट् ने वहीं दो सखियों के साथ वृक्ष सींचती हुई परम सुन्दरी शकुन्तला को देखा। उसके नवयौवन एवं लावण्य से दुष्यन्त अभिभूत हो उठे। इसी मध्य शकुन्तला के केशपाश के फूलों की मधुर गन्ध का अनुसरण करता हुआ एक भ्रमर शकुन्तला के मुखकमल पर मँडराने लगा जिससे भीत होकर शकुन्तला ने अपनी सखियों को सहायता के लिए पुकारा, परन्तु सखियों ने परिहास में कहा कि इसे भगाने की शक्ति हममें नहीं है, इसके लिए तुम इस देश के शासक-सम्राट् दुष्यन्त को पुकारो, क्योंकि तपोवन और उसके निवासियों की रक्षा का भार शासक पर ही होता है।

दुष्यन्त पहले ही शकुन्तला के अनुपम सौन्दर्य पर रीझे हुए थे और किसी बहाने उससे मिलना चाहते थे। शकुन्तला की 'बचाओ, बचाओ' परक गुहार से उन्हें अनायास शकुन्तला से मिलने का अवसर मिल गया। किन्तु वे स्वयं को दुष्यन्त के रूप में प्रकट करना उचित न समझ कर दुष्यन्त के धर्माधिकारी के रूप में उसके सामने पहुँचे। उन्हें देखते ही शकुन्तला भी मुग्ध हो गई। राजा को शकुन्तला की सखियों से यह जानकर कि शकुन्तला मुनि कण्व की कन्या नहीं मेनका ओर विश्वामित्र की कन्या है; विश्वास होने लगा कि अब तक जिसे वह अग्नि समझ रहा था वह तो शरीर पर धारण करने योग्य रत्न है, अतः मेरी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। बातचीत के अन्तराल में सखियों पर भी यह रहस्य प्रकट हो

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया कि शकुन्तला और दुष्यन्त दोनों के हृदय में एक-दूसरे के लिए प्रेमांकुर उत्पन्न हो चुके हैं। उन्होंने कहा भी कि यदि आज तात कण्व आश्रम में विद्यमान होते तो.....।

आश्रम में ही दुष्यन्त और शकुन्तला गान्धर्व विधि से विवाह कर लेते हैं। इसके कुछ ही समय बाद राजा को आवश्यक कार्यवश हस्तिनापुर लौटना पड़ता है। लौटते समय राजा अपने नाम की अंगूठी शकुन्तला को देते हुए उसे शीघ्र ही अनुचरों द्वारा राजधानी बुलाने का आश्वासन देकर वहाँ से प्रस्थान करता है।

इधर दुष्यन्त के वियोग में शकुन्तला शून्य हृदय हो आत्म विस्मृत होकर समय बिता रही थी कि एक दिन अचानक क्रोधावतार महर्षि दुर्वासा कण्वाश्रम में पधारे। शून्यहृदया शकुन्तला उनका यथोचित स्वागत-सत्कार कर पाने में असफल रही जिससे क्रुद्ध होकर दुर्वासा ने उसे इस प्रकार शाप दिया—"जिसके स्मरण में तुम इतनी भूली हुई हो कि तुम्हें मुझ जैसे अतिथि के स्वागत-सत्कार का भी ध्यान नहीं रहा है, वह तुम्हें इस प्रकार भूल जायेगा कि याद दिलाने पर भी तुम्हें याद नहीं करेगा।" यह शाप सुनकर शकुन्तला की सखियों ने महामुनि से शकुन्तला को क्षमा कर देने का आग्रह किया। उनकी प्रार्थना पर रीझ कर दुर्वासा ने अपने शाप में इतना संशोधन किया कि इसका पति इसे भूलेगा तो अवश्य परन्तु जब उसे उसकी अंगूठी दिखायी जायेगी तब उसे इसकी याद आ जायेगी।

मुनि का शाप प्रतिफलित हुआ। राजधानी में पहुँचकर दुष्यन्त इस प्रकार व्यस्त हुआ कि उसे शकुन्तला का स्मरण तक नहीं रहा। इधर कण्व तीर्थयात्रा से लौटे। यज्ञशाला में प्रवेश करते ही आकाशवाणी द्वारा उन्हें शकुन्तला और दुष्यन्त के गान्धर्व विवाह तथा शकुन्तला के गर्भवती होने का समाचार मिला। उन्होंने शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी की और अपने दो शिष्यों के साथ शकुन्तला को हस्तिनापुर रवाना किया।

अभिज्ञानशाकुन्तल में शकुन्तला की विदाई का प्रसंग इतना करुण, सहज और आकर्षक है कि पाषाणहृदय भी द्रवित हो उठता है। स्वयं महर्षि कण्व के मुख से इस अवसर पर निकल पड़ता है कि मुझ जैसे विरक्त को यदि कन्या का वियोग इतना क्लेश पहुँचा सकता है तो सामान्य गृहस्थजन इसे किस प्रकार सहन कर पाते होंगे? शकुन्तला निसर्ग की कन्या थी। प्रकृति के आँचल में ही उसका शैशव और कैशोर्य बीता था। माता मेनका द्वारा छोड़ने के बाद पक्षियों ने ही उसे लाड़ लड़ाया था, अतः वन के पशु-पक्षी, वृक्ष-लताएँ सब में उसका ममत्व था। कालिदास ने मानवीय ममत्व इनमें अनुस्यूत कर ऐसा सजीव चित्रण किया है कि विश्व साहित्य में यह बेजोड़ हो गया है। आश्रमवासी पशु-पक्षी, मानव सभी आश्रम से शकुन्तला की विदाई ठीक उसी प्रकार करते हैं जैसे गृहस्थ अपनी कन्या की करते हैं। वीतराग महर्षि कण्व का समूचा आश्रम करुणा में आप्लावित हो जाता है। पशु-पक्षी, लता-वृक्ष सभी करुणविगलित हो फूट पड़ते हैं। शकुन्तला हस्तिनापुर की ओर प्रस्थान करती है परन्तु आश्रम की ममता उसे इस प्रकार अभिभूत करती है कि वह अपने पोषक पिता कण्व से पूछती है कि तात! मैं पुनः कब आपके चरणों में आ सकूँगी? महर्षि कण्व कहते हैं—पुत्री! जब तू चक्रवर्ती सम्राट् की जननी बनकर और अपने बेटे को साम्राज्य का भार सौंपकर अपने पति के साथ वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करेगी तभी यहाँ आ पायेगी। इसके साथ ही

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि शकुन्तला को आदर्श गृहिणी बनने के लिए कुछ सीख देते हैं जिसे कवि ने अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक के चार श्लोकों में अनुस्यूत किया है और ये चार श्लोक कवि के आदर्श दृष्टिकोण के ऐसे अमर परिचायक है कि इन्होंने अपने साथ-साथ कवि को, उसकी गहरी पैठ को भी विश्व-साहित्य में सदा-सदा के लिए अजर-अमर बना दिया है। इसके पश्चात् महर्षि के ये शिष्य—शार्ङ्गरव और शारद्वत—तथा आर्या गौतमी के साथ शकुन्तला पतिगृह की ओर प्रस्थान करती है।

दुष्यन्त शकुन्तला को सर्वथा विस्मृत कर चुका था। जब कण्व के दो शिष्यों, आर्या गौतमी के साथ शकुन्तला के आने की सूचना दुष्यन्त को दी गयी तो उसने यज्ञशाला में उनके स्वागत-सत्कार की व्यवस्था करने का निर्देश दिया और स्वयं भी वहाँ पहुँचा। पारस्परिक कुशल क्षेम का आदान-प्रदान होने के पश्चात् कण्व के शिष्यों ने अपने गुरु का सन्देश इस प्रकार सुनाया—"मेरी अनुपस्थिति में मेरी इस कन्या के साथ आपने जो गान्धर्व विवाह किया था वह हर दृष्टि से उचित था। आप सज्जनों तथा गुणीजनों में श्रेष्ठ हैं और शकुन्तला भी मूर्तिमती सत्कर्म है। ऐस सुयोग्य युगल का संयोग कराकर प्रजापति ने अपनी बहुत दिनों की निन्दा दूर कर दी है। अब आप अपनी इस सगर्भा सहधर्मिणी को स्वीकार करें।" किन्तु दुर्वासा के शापवश दुष्यन्त को कुछ भी स्मरण नहीं था, अतः उसने इस विवाह के सम्बन्ध में अनभिज्ञता प्रगट की। इस पर शार्ङ्गरव ने कहा कि यदि आपको अपना किया हुआ कार्य अप्रिय लग रहा हो तो भी राजा के नाते आपको अपना धर्म निभाना चाहिए। दुष्यन्त ने पुनः इनकार किया।

शकुन्तला को स्वप्न में भी राजा से इस प्रकार के व्यवहार की आशा न थी। राजा के कथन से वह चिन्तासागर में ऊभ चूभ होने लगी। आर्या गौतमी ने तभी शकुन्तला का घूंघट हटा दिया जिससे राजा उसे पहचान कर अपना ले, परन्तु राजा ने उसे अपनाने से ही नहीं उसे पहचानने तक से इनकार कर दिया। राजा के व्यवहार से खिन्न होकर कण्व के शिष्यों ने उसे ख़ूब खरी-खोटी सुनायी परन्तु राजा अविचलित रहा। अब शकुन्तला को अँगुठी की याद आयी और उसने वह दिखाकर राजा को अपने साथ विवाह की घटना याद कराने का विचार किया, परन्तु अँगुठी थी कहाँ ? वह तो शची तीर्थ में आचमन करते समय गिर चुकी थी। प्रमाण के अभाव में सभी निराश हो उठे। अन्त में आर्या गौतमी ने यह कहकर वहाँ से प्रस्थान किया कि यह आपकी पत्नी है और आप इसके पति हैं। चाहे इसे रखें चाहे निकालें। शकुन्तला भी उनके पीछे-पीछे चलने को उद्यत हुई। यह देख शार्ङ्गरव ने उसे डाटते हुए कहा—"अभागी! क्या अब तू स्वतन्त्र होना चाहती है ? यदि राजा का कथन सत्य है अर्थात् उनके साथ तेरा विवाह नहीं हुआ है तो तू पतिता है अतः महर्षि कण्व के आश्रम में प्रवेश के अयोग्य है और यदि तेरा कथन सत्य है, तेरा चरित्र शुद्ध है तो तेरे लिए पतिगेह में दासी बनकर रहना भी श्रेयस्कर है।

शकुन्तला यह सुनकर वहीं जड़ होकर खड़ी रह गयी। उसकी दयनीय दशा देखकर पुरोहित सोमरात ने कहा—"महाराज! ज्योतिषियों ने कहा है कि आपका पुत्र चक्रवर्ती होगा। यदि इसके गर्भ से जन्म लेने वाले बालक में चक्रवर्ती के लक्षण दिखायी दें तो समुचित

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाहिए कि इसका कथन सत्य है और तब इसे अन्तःपुर में निवास देना चाहिए, अन्यथा आश्रम में वापिस भेज देना चाहिए। अतः जब तक प्रसव न हो इसे मेरे यहाँ रहने दें। शकुन्तला पुरोहितजी के घर की ओर बढ़ी ही थी कि एक आश्चर्यजनक घटना घटी—अप्सरा तीर्थ के निकट एक दिव्य ज्योति उसे उठा कर ले गयी। पुरोहित से यह समाचार जानकर दुष्यन्त को सन्तोष-सा हुआ परन्तु यह सन्तोष क्षणिक ही था। वह मन-ही-मन उद्विग्न रहने लगा परन्तु लाख प्रयत्न करने पर भी उसे शकुन्तला के साथ विवाह का स्मरण नहीं आया।

दुष्यन्त का साला हस्तिनापुर का नगरपाल था। एक दिन दो प्रहरियों के साथ वह घूम रहा था कि उसे कुम्भिलक नामक मछुआ राजा के नाम वाली अँगूठी बेचता हुआ दिखायी दिया। उसने उसे बन्दी बनाकर महाराज के सामने प्रस्तुत किया। पूछने पर उसने रोहू मछली के पेट से उसे पाने की बात बतायी। अँगूठी देखते ही दुष्यन्त को शकुन्तला के साथ विवाह की घटना स्मरण हो आयी। मछुए को पुरस्कार देकर छोड़ दिया गयां। दुष्यन्त अब शकुन्तला के लिए विकल रहने लगा। एक दिन उसने अनसूया-प्रियंवदा सखियों के साथ शकुन्तला का चित्र बनाया और उसे देख-देख कर दिन बिताने लगा। विदूषक माधव्य को छोड़कर अन्य सबसे मिलना-जुलना भी छोड़ दिया।

इसी बीच वसन्त ऋतु का आगमन हुआ। प्रति वर्ष आयोजित होने वाले वसन्तोत्सव का निषेध कर दिया गया। इधर शकुन्तला को उसकी माता मेनका अप्सरा तीर्थ से उठाकर महर्षि कण्व के आश्रम में पहुँचा आई थी अवश्य; परन्तु इस चिन्ता में थी कि दुष्यन्त से शकुन्तला का मिलन हो। इसी दृष्टि से उसने अपनी सखी सानुमती को दुष्यन्त का हालचाल लेने के लिए भेजा। सानुमती अलक्ष्य होकर दुष्यन्त के अन्तःपुर में गई और शकुन्तला के वियोग में राजा की दयनीय दशा देखकर उसने स्वर्ग लौटकर मेनका को पूरा समाचार सुनाया।

इसी बीच विदूषक माधव्य का करुण क्रन्दन राजा के कानों में पड़ा। राजा उसे बचाने के लिए दौड़ा परन्तु तिरस्कारि विद्या के प्रभाव से कोई उसे लेकर अदृश्य हो गया। माधव्य को अदृश्य करने वाला अन्य कोई नहीं स्वयं इन्द्र का सारथी मातलि था। राजा की दयनीय दशा देखकर उसने उसे क्रुद्ध करने के लिए यह उपाय किया था। राजा की बेचैनी देखकर मातलि ने प्रकट होकर इन्द्र के रथ की ओर इंगित कर कहा—"महाराज! इस समय दानवों के साथ देवराज इन्द्र का घोर युद्ध हो रहा है। उन्होंने अपनी सहायता के लिए आपको तत्काल बुलाया है। दुष्यन्त यह सुनते ही तत्काल युद्ध में भाग लेने के लिए चल पड़े। वहाँ जाकर उन्होंने दानवों को परास्त किया जिससे इन्द्र प्रसन्न हुए। उन्होंने देवताओं के सामने दुष्यन्त को अपने सिंहासन पर बिठाया और बड़े आदर-सत्कार के बाद उन्हें अपने रथ में बिठाकर विदा किया। स्वर्ग से उतरते हुए मातलि ने हेमकूट पर्वत पर अपना रथ उतारा और कहा—"महाराज! यह सामने महर्षि कश्यप का आश्रम है और यहीं पर महर्षि तपस्या में लीन हैं।" राजा महर्षि के आश्रम की प्राकृतिक शोभा को देखकर मुग्ध हो गये और बोले—'यह तपोवन और इसके निवासी धन्य हैं।"

मातलि ने पता लगाया कि महर्षि कश्यप इस समय अपनी पत्नी अदिति तथा अन्य ऋषिपत्नियों को पतिव्रत धर्म का उपदेश कर रहे हैं। राजा को एक अशोक के वृक्ष के नीचे

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ठहराकर वह महर्षि कश्यप को राजा के आगमन की सूचना देने गया। इसी मध्य राजा का दक्षिण बाहु फड़कने लगा और कुछ दूरी पर स्त्रियों की आवाज सुनायी पड़ी, जिनके साथ एक चंचल बालक खेल रहा था। उन्होंने देखा—वह शिशु इतना धृष्ट और निर्भय है कि सिंहशावक का मुँह फाड़कर उसके दाँत गिनना चाहता है—"जृम्भस्व रे सिंहशावक! जृम्भस्व दन्तान् ते गणयिष्यामि। तपस्विनी स्त्रियाँ उसे इस कार्य से विरत करना चाहती हैं परन्तु वह उनकी बात पर कोई ध्यान ही नहीं देता। उस बालक को देखकर दुष्यन्त के हृदय में स्नेह की तरंगें उठने लगती हैं। तपस्विनियाँ दुष्यन्त से उस बालक को इस खेल से रोकने का अनुरोध करती हैं। दुष्यन्त उसे यह कह कर इस क्रीड़ा से विरत करने का प्रयास करता है कि 'एक ऋषिकुमार को ऐसा नहीं करना चाहिए'। धीरे-धीरे दुष्यन्त को विदित होता है कि यह बालक शकुन्तला का पुत्र है और इसके शरीर में चक्रवर्ती के लक्षण स्फुट हैं। इतने में एक तापसी घबराकर कहती है कि उसकी भुजा में बँधा हुआ रक्षाकवच कहाँ गया? राजा नीचे गिरे हुए रक्षा कवच को उठाकर बालक की भुजा में बाँधने के लिए उसे उठाने के लिए झुकता है परन्तु तापसी उसे उस कवच को उठाने से रोकती हुयी कहती है—इसके माता-पिता के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति यदि इसे छूयेगा तो महर्षि कश्यप के शाप से यह सर्प बनकर उसे डस लेगा। क्योंकि राजा उस कवच को हाथ में थाम चुका था अत: उसे विश्वास हो जाता है कि बालक उसी का पुत्र है। उधर तापसियाँ भी बालक की आकृति का राजा से साम्य देखकर तथा कवच से राजा को किसी प्रकार की हानि होते न देखकर समझ जाती हैं कि आगन्तुक अन्य कोई नहीं स्वयं राजा दुष्यन्त हैं।

तभी शकुन्तला वहाँ आई। राजा ने उसके चरणों पर गिरकर अपने अपराध की क्षमा माँगी। शकुन्तला ने उसे क्षमा करते हुए अपने स्मरण आने का रहस्य पूछा। राजा ने अंगूठी निकाल कर दिखाते हुए कहा—इसी के कारण।

इसी समय मालति ने वहाँ आकर पुत्र तथा पत्नी के मिलने पर राजा को वधाई दी। सब मिलकर कश्यप एवं अदिति के पास पहुँचे और सबने महर्षि को प्रणाम किया। महर्षि ने ऋषि दुर्वासा के शाप का विवरण सुनाते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया तथा अपने शिष्य द्वारा महर्षि कण्व को भी दुष्यन्त-शकुन्तला मिलन का समाचार भिजवा दिया।

अभिज्ञानशाकुन्तल का वैशिष्ट्य

अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा का मूलोत्स है महाभारत, जिसके सम्बन्ध में वेदव्यास जी की यह गर्वोक्ति प्रसिद्ध है—

'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'। परन्तु अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा महाभारत की अपेक्षा अतीव पृथुल एवं परिवर्तित है। इस नाटक का आरम्भ इतने प्रभावशाली ढंग से हुआ है कि प्रथम दृश्य में ही पाठक अभिभूत होकर रह जाता है। महाकवि ने कथा को इच्छानुसार परिवर्तित कर अपनी प्रतिभा-कूची से इस प्रकार सँवारा है कि कथा ही नहीं पात्रों के व्यक्तित्व में भी अन्तर आ गया है। प्रेम और सौन्दर्य का सरस, हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी चित्रण जैसा अभिज्ञानशाकुन्तल में हुआ है, अन्यत्र दुर्लभ है। राजदरबार और तपोवन का स्वरूप एवं सम्बन्ध, स्वर्ग और मर्त्यलोकवासियों का सम्बन्ध, वर्णाश्रम धर्म तथा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चारों वर्णों के पारस्परिक सम्बन्ध का अति सौहार्द्रपूर्ण चित्रण इस नाटक की सर्वोपरि विशेषता कही जा सकती है।

काव्यरसों की मोहक छटा के कारण अभिज्ञानशाकुन्तल के दृश्यों का अपना महत्त्व है। शृंगार के दोनों पक्षों—संयोग और वियोग—का जितना सजीव चित्रण अभिज्ञानशाकुन्तल में मिलता है उतना अन्यत्र विरल ही सम्भव है। शकुन्तला दुष्यन्त की वियोगाग्नि में तपकर पाठक भी विगलित हुए बिना नहीं रहते। शकुन्तला की विदाई का प्रसंग तो विश्व साहित्य में अद्वितीय ही सभी ने एक स्वर से स्वीकार किया है। इन्हीं विशेषताओं को दृष्टिगत रखकर शाकुन्तल के सम्बन्ध में कहा गया है—

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥

शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के प्रायः सभी दृश्य करुण रस से ओतप्रोत हैं। इस नाटक में यथाप्रसंग वीर, हास्य, अद्‌भुत, रौद्र तथा वात्सल्य रसों का पूर्ण परिपाक हुआ है। इसमें ओज के साथ मनोज्ञता तथा क्षिप्रता के साथ भावप्रांजलता का अनुपम समन्वय है। कालिदास नारी एवं प्रकृति सौन्दर्य के अनुपम चितेरे हैं। उनकी रससिक्त तूलिका का चमत्कार शाकुन्तल में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। उनके वर्णन इतने सजीव हैं कि रंगों और रेखाओं के बिना ही उनके द्वारा प्रस्तुत दृश्यों का अवलोकन किया जा सकता है।

अपनी प्रकृति के अनुसार महाकवि ने शाकुन्तल की समाप्ति भी सुखान्त ही रखी है। इसके अन्तिम दृश्य में वियुक्त प्रेम के संयोग की जो परिणति कवि ने प्रस्तुत की है उसमें लोक- कल्याण की शाश्वत पृष्ठभूमि सन्निहित है। सर्वदमन अर्थात् भरत के रूप में इस विशाल राष्ट्र के रक्षक की ऐसी छवि के दर्शन कवि ने कराये हैं जो मोहक तो है ही, प्रेरक भी है। महर्षि कश्यप के आश्रम में रहते हुए जो संस्कार भरत के मन पर पड़े हैं उनका दिग्दर्शन कवि ने इतनी कुशलता से कराया है कि शारीरिक तथा मानसिक क्षमता की किशोर मूर्ति पाठक को भावविभोर कर जाती है। अपने राष्ट्र को भी इस अवसर पर कवि भुलाता नहीं। उसके लिए उसके कण्ठ से यह मंगलकामना प्रस्फुटित होती है—

प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः।
सरस्वती श्रुतिमहती न हीयताम्॥

कालिदास के अतिरिक्त लोकमंगल की ऐसी उदात्त भावना अन्यत्र मिल पाना असम्भव ही है। शाकुन्तल में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों का सामंजस्यपूर्ण प्रतिपादन अतीव व्यावहारिक और प्रेरणाप्रद है। कवि ने राजा को अहर्निश प्रजा के कल्याणकामी के रूप में प्रस्तुत कर 'राजा प्रकृतिरञ्जनात्' की आर्ष कामना को मूर्त करने का प्रयास किया है।

कालिदास वस्तुतः प्रेम के कवि थे और यही कारण है कि उनकी कृतियों में जुगुप्सा और घृणा के दर्शन चेष्टा करने पर भी नहीं होते। सुन्दरता उन्हें अतीव प्रिय है और उन्होंने 'भवन्ति भव्येषु हि पक्षपाताः' की सूक्ति को सर्वत्र गरिमा प्रदान की है, तथापि उनके मन में

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुरूपों, दलितों और अभागों के प्रति जो सहानुभूति है वह उनके दृष्टिकोण को उजागर कर देने मे समर्थ है।

भाषा-शैली—

शाकुन्तल की भाषा एवं शैली सर्वथा अभिनव है। संस्कृत साहित्य में इसकी तुलना किसी अन्य ग्रन्थ से नहीं की जा सकती। स्वयं कालिदास को भी इसकी जैसी सफलता अपनी अन्य कृतियों में नहीं मिली है। सम्भवत: यही कारण है कि समीक्षक इसे कवि की अन्तिम एवं अनवद्य रचना मानते हैं। इसकी भाषा अतीव सरस, सजीव, प्रांजल, परिमार्जित एवं प्रवाहमयी है। इसके संवादों में इतनी सहजता, क्षिप्रता, प्रभावोत्पादकता एवं चुस्ती है कि पात्रों का व्यक्तित्व स्वयं साकार हो उठता है। यथास्थान लोकोक्ति और मुहावरों के समुचित प्रयोग से भाषा की शक्ति सौन्दर्य में अकल्पनीय वृद्धि हुई है। उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति आदि अलंकारों के समुचित प्रयोग से इनकी कृति कितनी महनीय बन गयी है उसे उसके आस्वादन से ही जाना जा सकता है।

प्राकृतिक उपादानों के मानवीकरण द्वारा कवि ने अभिज्ञानशाकुन्तल के सौन्दर्य को कई गुणा बढ़ा दिया है। कण्वाश्रम के पशु-पक्षी-लता-वृक्ष सबमें मानवीय संवेदना की गहरी छाप है। कवि ने सर्वत्र गृहस्थधर्म की मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। महर्षि कण्व जैसे वीतराग मुनि को भी राजघरानों की स्त्रियों के जीवनादर्श की जानकारी से ओतप्रोत दिखाकर कवि ने अपनी एतद्विषयक पैठ का दिग्दर्शन जिस खूबी से कराया है वह स्वयं में बेजोड़ है। शकुन्तला की आश्रम से विदायी के अवसर पर जड़-चेतन सभी का करुणाविगलित हो जाना कालिदास की व्यापक मानवीय संवेदना का जीता-जागता प्रमाण है।

कालिदास ने अपने पात्रों के चरित्रचित्रण के साथ रसव्यंजना पर भी पूरा-पूरा ध्यान दिया है। उनके अनेक पात्र इसी धरा के निवासी, अनेक दिव्य गुणों और अलौकिक सौन्दर्य के स्वामी होते हुए भी मानवीय संवेदना और सहानुभूति से जिस प्रकार ओतप्रोत परिलक्षित होते हैं वैसे अन्यत्र दुर्लभ ही हैं। उनके नायक अपने सुख के लिए नहीं सर्वसाधारण के सुख के लिए ही जीवन धारण करते हैं। वे स्वकीय वेदना को मानवता के लिए न्योछावर कर परम तोष का अनुभव करते हैं। कालिदास के प्रेमप्रसंग वासनात्मक नहीं हैं, क्योंकि रघुवंश में उन्होंने विवाह का भारतीय आदर्श इस रूप में प्रतिपादित किया है—'प्रजायै गृहमेधिनाम्'।

चरित्र-चित्रण

दुष्यन्त—शाकुन्तल के नायक दुष्यन्त धीरोदात्त प्रकृति के हैं। सुन्दरता, सुकुमारता, वीरता, धीरता, गम्भीरता उनके ऐसे नैसर्गिक गुण हैं जिनके कारण अनायास ही उनका महापुरुषत्व ज्ञापित होता है। मृगया और युद्ध दोनों के ही वे कुशल खिलाड़ी हैं। उत्कृष्ट प्रेमी होने के साथ-साथ उत्तम पति भी वे हैं और रसिकशिरोमणि होने के साथ-साथ अद्वितीय योद्धा भी हैं। आत्मसंयम के क्षेत्र में भी उन्हें अद्वितीय कहा जा सकता है। अभिशप्त दशा में शकुन्तला जैसी अपूर्व सुन्दरी को तिरस्कृत कर देना उनके आत्मसंयम का प्रमाण है। गुरुजनों के प्रति श्रद्धा-भावना, सतत प्रजा की हितकामना एवं न्यायपरक निष्ठा आदि गुण उन्हें आदर्श व्यक्ति से बढ़कर और कुछ सिद्ध करते हैं। कर्तव्यपरायणता के साथ-साथ दुर्गुणों से घृणा

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा वचनपालन की प्रवृत्ति उन्हें श्रेष्ठ मानव, आदर्श राजा सिद्ध करती है। आत्मप्रशंसा से उन्हें अरुचि है और यही कारण है कि स्वर्ग से लौटते समय मातलि जब उनकी प्रशंसा करने लगता है तब वे अपने सारे कार्यों का श्रेय देवराज इन्द्र को देकर मौन हो जाते हैं। धर्म-कर्म में उनकी सूक्ष्म दृष्टि है और शास्त्रीय चर्चा के समान ही नृत्य, संगीत, चित्रकला में उनकी अप्रतिहत गति है। अद्वितीय गुणों के आधान ऐसे नायक के चरित्र-चित्रण में कालिदास को अपूर्व सफलता प्राप्त हुयी है।

शकुन्तला—कालिदास की शकुन्तला अनुपम सुन्दरी, गुणवती, शीलवती और भोली-भाली है। आश्रम में पोषित होने के कारण समस्त प्राकृतिक उपादानों से उसे अनन्य स्नेह है। वृक्षों के सींचने तथा मृगों की परिचर्या में उसके दिव्य मातृत्व की छटा दृष्टिगोचर होती है। कुलपति कण्व की पोषित कन्या होते हुए भी निरभिमानिता, आत्मगोपन की क्षमता उसकी ऐसी विशेषताएँ हैं जिनके कारण उसकी गरिमा स्वतः प्रकट होती है। भावप्रवणता के कारण महर्षि दुर्वासा के आतिथ्य में विमुख रहकर वह उनके शाप का भाजन बनती है परन्तु विषम परिस्थिति में भी अनन्य पतिप्रेम से विचलित नहीं होती। अपने गुरुजनों तथा प्रियजनों के प्रति उसके मन में अपार आदर और स्नेह है। शकुन्तला का आदर्श चरित्र भारतीय नारी की उज्ज्वल मर्यादा और गरिमा का प्रतीक है। विश्व-साहित्य में इसके समान आदर्श नारी का चित्रण सर्वथा दुर्लभ है।

इसी प्रकार शाकुन्तल के अन्य पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी कालिदास को अपूर्व सफलता मिली है। कुलपति महर्षि कण्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी, प्रतिदिन अग्निहोत्र करने वाले, लोकमंगल की उदात्त भावना से ओतप्रोत हैं। इसी लोकमंगल की भावना से अनुप्राणित होकर ही उन्होंने शकुन्तला को अपनी औरस पुत्री के समान पाला और उस पर पिता-माता का समन्वित प्रेम इस प्रकार उस पर लुटाया कि शकुन्तला को कभी यह जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी कि उसके माता-पिता कौन थे? संसारत्यागी होते हुए भी उन्हें गृहस्थ धर्म की मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रहता है। मानव-स्वभाव के वे पूरे पारखी हैं। शकुन्तला को पतिगृह भेजते समय वे उसे जो समयोचित सीख देते हैं, उससे उनके अथाह ज्ञान, सामयिक दृष्टि तथा कर्तव्यपरायणता का बोध होता है।

इसी प्रकार विदूषक के चरित्र-चित्रण में कालिदास हास्यरस की अवतारणा में पूर्ण सफल रहे हैं। वह सदा अपने पेट का ही चिन्तन करता है। राजा का मुँहलगा होने के कारण कभी-कभी वाचालता के कारण वह सब भी कह बैठता है जो मर्यादा की सीमा में नहीं आता। उसे कोई बात हजम नहीं होती फिर भी वह राजा का नर्मसचिव है। प्रकृति से भीरु एवं कोमल हृदय होने के कारण वह किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन कर पाने में अक्षम है। यद्यपि वह सर्वथा मूर्ख नहीं तथापि दूसरों की दृष्टि में स्वयं को बुद्धू दर्शाना उसे खूब आता है।

शार्ङ्गरव और शारद्वत महर्षि कण्व के अन्तेवासी हैं। ये समयानुसार कोमल और कठोर व्यवहार करने में कुशल हैं। कुलपति महर्षि कण्व के प्रति इनके हृदय में अवार आदर भाव है। लोकाचार की भी इन्हें थोड़ी-बहुत जानकारी है, कोरे आश्रमवासी ब्रह्मचारी ही ये

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं है। राजदरबार के आचार-व्यवहार का भी इन्हें अच्छा ज्ञान है। इन दोनों की प्रकृति में थोड़ी सी असमानता है। जहाँ शार्ङ्गरव भावुक प्रकृति का है और चिरकाल तक आश्रमवास का अभ्यासी होने के कारण राजदरबार के प्रति वितृष्णा की भावना रखता है वहीं शारद्वत दार्शनिक विचारधारा का होने के कारण सांसारिक सुखभोग में डूबे हुए लोगों को देखकर करुणार्द्र हो उठता है। शार्ङ्गरव अधिक भावुक तथा असहिष्णु है। क्रोध की भावना में शीघ्र ही बह जाता है; शारद्वत प्रकृति से गम्भीर तथा क्षमाशील है। वह विवाद को शान्त करने में विशेष रुचि रखता है और देश-काल के अनुसार व्यवहार करना वह भलीभाँति जानता है।

अनसूया तथा प्रियंवदा अपने नाम के अनुरूप स्वभाववाली हैं। अपनी सखी शकुन्तला के प्रति उनके हृदय में अपार स्नेह हैं। अहर्निश शकुन्तला का हितचिन्तन वे अपना पुनीत कर्तव्य मानती हैं। दोनों ही अत्यन्त चतुर और व्यावहारिक हैं। शकुन्तला-दुष्यन्त प्रथम भेंट के समय ये दोनों कुछ दूर खड़ी रहकर देखती हैं कि कोई दूसरा उन्हें देख न ले। जब गौतमी उधर आती दीखती है तब चक्रवाक वधू के व्याज से वे शकुन्तला को सचेत कर देती हैं। दुर्वासा के शाप से उन्हें हार्दिक वेदना होती है परन्तु वे अनुनय-विनय कर उस शाप की निवृत्ति करा लेती हैं। हाँ, शकुन्तला को इस विषय में इस दृष्टि से कुछ नहीं बताती कि वह कहीं अकारण और अधिक उद्विग्न न हो जाय। शकुन्तला की विदायी के पश्चात् आश्रम उन्हें सूना-सूना लगने लगता है। दोनों के स्वभाव में थोड़ा-बहुत अन्तर है। अनसूया सदैव शकुन्तला को सुखी बनाने की बात सोचती है। उसे अपने सुख और आराम की तनिक भी इच्छा नहीं है। स्वभाव से वह अल्पभाषी तथा गंभीर है। इसके विपरीत प्रियंवदा प्रसन्नचित्त और मृदुभाषी है। उसकी बातों में परिहास का पुट रहता है। अनसूया संशक दृष्टिकोण वाली तथा इधर-उधर की बातें सोचने वाली है परन्तु प्रियंवदा दूसरे का विश्वास करने वाली तथा प्रत्येक प्रसंग के अच्छे पहलू को देखकर निर्णय लेने वाली है। बुराई की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। अनसूया में भी गम्भीरता और संकट से निपटने की क्षमता है परन्तु प्रियंवदा शीघ्र ही आतंकित हो जाने वाली बालिका है।

इसी प्रकार अन्य चरित्रों के चित्रण में भी कालिदास ने पौराणिक एवं लौकिक जीवन के उच्च आदर्शों की रक्षा की है।

नाटक का नाम अभिज्ञानशाकुन्तल क्यों ?

नाटक का नाम अभिज्ञानशाकुन्तल देने का कारण यह है कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला को गान्धर्व विवाह के पश्चात् अपने नामवाली अँगूठी दी थी। महर्षि दुर्वासा ने अनसूया- प्रियंवदा की प्रार्थना पर अपने शापमोचन की विधि बताते हुए कहा था—उसी अँगूठी को दिखाने पर राजा को शकुन्तला की याद आयेगी। किन्तु जब शकुन्तला के सामने अँगूठी दिखाने का अवसर आया तो वह उसके हाथ में थी ही नहीं। शचीतीर्थ में आचमन करते समय गिर गयी थी। बाद मे धीवर द्वारा जब अँगूठी राजा के पास पहुँची तब उसे शकुन्तला का स्मरण आया और वह अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप करता हुआ विरहाग्नि में जलने लगा। क्योंकि अँगूठी के दर्शन से प्रिया शकुन्तला की याद राजा को आयी थी इसीलिए नाटक का नाम अभिज्ञानशाकुन्तलम् पड़ा। अभिज्ञान का अर्थ है—पहचानने की वस्तु या निशानी।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

KALIDASA - HIS DATE, LIFE AND WORK

We have no reliable information regarding the personal life of Kālidāsa, the greatest Indian poet. There is no evidence to prove where and when he was born, who were his parents, where and when he died. The poet has studiously observed complete silence about himself in his work. Neither directly nor indirectly does he shed any light on his personal life or on any remarkable event of his life. In this situation, we can only depend on external sources and a few incidents found here and there in his works, which may be supposed to have a distant bearing upon the history of his life. Regarding the date of the poet, we proceed here to state a few facts that can thus be known about him. A time-honoured tradition, supported by internal and external evidence, associates the name of Kālidāsa with that of the ruler of Ujjainī, king Vikramāditya. The keen interest and admiration with which the poet describes the Mahākāla (Lord Śiva), the Śiprā (sacred river of Ujjainī) confirm the idea that he must have been a native of that city or spent a lot of time there. Very often, he made various covert references to king Vikramāditya, who was his patron. The court life described by Kālidāsa also testifies that he was related to the king's court. This circumstance, coupled with the fact that there is no allusion in his writings to the goddess of wealth, having ever frowned upon him, shows that he was in affluent circumstances, and had not the misfortune ever to drink the bitter cup of poverty.

Taking into consideration the natural description of Kālidāsa some critics believe that either he was born at some hill station near the Himālayās or spent a lot of time there. Otherwise such real description was beyond his grip. Some modern critics believe that he was a native of 'Kavittha' which is situated near Kedār Kśhetra in Himālayan range.

He was a Brāhmana by caste and was a devout worshipper of Lord Śiva, though by no means a sectarian. As per his descriptions, he seems to have travelled throughout India or widely. He visited almost all the important places of Northern India. Dr.Bhau Daji says that he is the only poet who describes a living saffron flower, the plants which grow in Kāśmīr. His graphic description of the Himālayan scenes looks very much like that of one who was an eye-witness. He was the luckiest poet as he enjoyed great popularity during his life time. He was 'an admirer of field-sports', and

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

describes their benificial effects with the exactness of a true sports man. Though he was fond of pleasures, he was not an unscrupulous (unprincipled) voluptuary (a person whose life is devoted to the pursuit and enjoyment of sensual pleasure), as was supposed by some critics. This is clear from the many noble sentiments expressed by him in his best play 'Abhijñāna Śākuntalam'. It also appears from the same play that he was against love-marriages, though he was full of generous sentiments towards that fair sex. His work testifies that he was having a vast knowledge of Vedās, Upanishads, Purānās and other śāstrās. He also went through Āyurveda (Science of Medicine and life), Kāma Śāstra and Astronomy. Beyond these few facts nothing is known for certain about this great poet Kālidāsa. During the course of time, a number of legends clustered round this great poet. According to one story, in his early age the poet was totally dull but due to the blessings of Goddess Kālī he became an intellectual and then he was named Kālidāsa. Another story makes him a friend of king Kumārdāsa of Ceylon, in whose city Kālidāsa was murdered by a courtesan. Many other stories related to Kālidāsa can be found in 'Bhojaprabandha' and 'king Bhoja and poet Kālidāsa'. Other stories are narrated in different books but their veracity is doubtful.

HIS WORK

As the poet observed complete silence about himself in his works, so, it is beyond one's capacity to say any thing about his work authentically. Anyhow the scholars produce a list of the works generally attributed to him—1. Śākuntala, 2. Vikramorvaśī, 3. Mālvikagnimitra, 4. Raghuvaṁśa, 5. Kumārsaṁbhava, 6. Meghdoot, 7. Ṛitusaṁhāra, 8. Kunteshwar Dautya, 9. Ambastava, 10. Kalyānastava, 11. Kālī Stotra, 12. Kāyya-Natakālaṅkarah, 13. and 14. Two Gaṅgāṣṭaka, 15. Ghatkarpar, 16. Chandikā Dandak Stotra, 17. Charchastava, 18. Jyotirvidābharaṇa, 19. Durghat Kāvya, 20. Nalodaya, 21. Nava Ratna Mālā, 22. Puṣpabaṇa Vilās, 23. Makarandastava, 24 and 25. Two Mangalāṣṭakas, 26. Mahā Padya Śataka, 27. Ratnakoṣa, 28. Rākshas Kāvya, 29. Lakshmistava, 30. Laghustava, 31. Vidvādvinod Kāvya, 32. Vrindāvan Kāvya, 33. Vaidya Manoramā, 34. Śuddhi Candrikā, 35. Shriṅgār Tilaka, 36. Shriṅgar Ras Śataka, 37. Shringār Sār Kāvya, 38. Śyāmalā Daṇḍaka, 39. Śrutbodh, 40. Saptaślokī Rāmāyaṇ, and 41. Setubaṅdh.

Of these the first seven are acknowledged by all critics to be

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

undoubtedly his. Whether the remaining thirtyfour works are of Kālidāsa or not, is a matter for investigation or research. There is also another fact which should be borne in mind in this connection. In Sanskrit literary history there have been many poets who borne the name Kālidāsa, and atleast three were known to Rajaśekhara, who wrote—

एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदास त्रयी किमु॥

It is possible, therefore, that other Kālidāsas other than the author of first seven works are responsible for the trifling pieces mentioned above. Here, we are concerned with the first seven only. The most convenient and reliable way of studying the development of a poet's mind and relation to his works would be to read his works in their chronological order. But we have no external evidence, whatsoever, to ascertain the chronology of Kālidāsa's works. So, we can depend only on internal evidence. Judged as such, the works would stand in the order—
Poetry : Kumār Sambhava, Meghdoot, Raghuvamśa, Ritusamhār.
Plays : Malvikāgnimitra, Vikramorvaśi, Śākuntala.

According to critics and poet's admirers the three—Meghdoota, Śākuntala and Raghuvamśa are the outcome of the poet's matured poetic faculties and riper years.

HIS POETRY

Undoubtedly everyone can say by going through the works of Kālidāsa that he was the greatest master-mind in the field of Sanskrit poetry and plays. His talent and genius has been recognized in India from very early times. He has been and will ever remain in the hearts of his countrymen as the crowned prince of Indian poets. Most Indian scholars have expressed in suitable words their admiration for the poet who stood far ahead of them in the perfection of his art and ability. The well known author of Sanskrit novel 'Kādambarī Baṇa Bhatta praises him thus—"When Kālidāsa's sweet sayings, charming with sweet sentiment, went forth, who did not feel delight in them as in honey-laden flowers of mango tree—

निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मंजरीष्विव जायते॥

Kumārila (8th Century) quoting a passage from 'Śākuntala' acknowledges the greatness of Kālidāsa—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'सतां हि सन्देह पदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः'

Actually Kālidāsa stands at the top, when scholarly poets are being reckoned. According to a 'Subhāśita'- "While once the poets were being evaluated, Kālidāsa though the first, occupied the last finger. But the ring finger remained true to its name (Anāmika = nameless), since his second has not yet been found".—

पुरा कवीनां गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका साऽर्थवती बभूव॥

A great scholar Pandit Goverdhanācārya praising his poetry says:- "Two things only i.e. love sport and Kālidāsa's poetry, delight the heart even at the time of instruction, as they mostly consist of the sweet, delicate and touching words of a sportful girl"—

साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये ।
शिक्षा समयेऽपि मुदे रतिलीला कालिदासोक्ती॥

Prasing the works of Kālidāsa in general and his play 'Śākuntala' in particular, scholars say-" Among Kāvyas the drama is the most charming. Among dramas 'Śākuntala' is more charming. In 'Śākuntala' the fourth act is the best one and lastly four ślokas related to 'Śākuntala' are the most beautiful—

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोक चतुष्टयम्॥

Some scholars who consider Kālidāsa the greatest among the poets in the construction of unique similies, say—

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पद लालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

Among later writers, Jayadeva has called our poet-'the lord of poets and graceful plays" of the muse of poetry—"भासो हासः कविकुल गुरु कालिदासो विलासः"

Taking into consideration the above views, Indian scholars have placed him at the head of all Saṁskrit poets. Not only Indian scholars, but foreign scholars too, who have gone through his works either directly or through translations, have same opinion about him. The reason for placing Kālidāsa at the top of all samskrit poets is explained by someone thus—"His poetic genius has brought Samskrit poetry to the highest elegance and refinement, his style is peculiarly pure and chaste. It has neither the laxity

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

of the Purāṇās nor the extravagant colouring of later poems. It is natural and characterized by brevity consistent with perspicacity. "His simplicity of expression and an easy flowing language make his works unparalleled for their beauty and appropriateness. His compundless sentences, his similies, way of saying all made him uncrowned prince of the heart of common people along with scholars.

The modern scholars recognized that " nature must be the life and essence of poetry". Kālidāsa knew this fact long ago. He describes with most effective touches the charming and attractive scenery of Himālayās. Nothing was kept unseen by him in his descriptions about Himālayās. He observed its black deers, green valleys, snow covered peaks, murmuring falls, dancing peacocks etc. with open eyes and described it all judiciously. His description of the Ganges and the peaceful hermitage-life is very srtiking and life-like. His descriptive powers are great, and some of the scenes in his different works are so enchanting that they hold his readers spellbound. In brief it can be said that he was a master of acknowledged skill.

HIS DATE—Though scholars produce research work on Kālidāsa regularly, yet his date is to be finally settled. The earliest mention of Kālidāsa by name is in the Aihole Inscription dated 634 A.D., and it furnishes the 7th century A.D. as the downward limit of the Kālidāsa's date. Tradition mentions that he was a court-poet of king Vikramāditya (who was brought down by the scholars to A.D. 544). The discovery of the Mandsor Inscription, which is dated Saṁvat 529 made this theory untenable and the traditional date remained as it is. Now comes forth the theory of 'NINE GEMS'. Nine great scholars are considered to be the 'Nine Gems' of the court of king Vikramāditya-

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥

As all these poets have lived through different ages, it is believed that the tradition can not be true. The above verse about nine gems has been compiled only to arrange a series of great poets in order.

To reach to some conslusion Prof. Max Muller divided the entire Samskrit literary period into two divisions. Among these two the first began with the Vedās and ended with the first centruy

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

A.D. and second one, during which foreigners invaded India and consequently, literary activity came to a stand still. The Professor placed the "Renaissance of Samskrit learning" in the sixth centruy A.D. starting with the reign of king Vikramāditya. If Kālidāsa is to be considered the first poet of the new school, he must be placed considerably earlier. Prof. Max Muller has done this.

Some facts quoted by Kālidāsa in his works and his quotation by Aśwaghoṣa the author of Buddhacharita, Daṇḍin the author of Kādambarī etc. compels us to place him some six or seven centuries before them. A period necessary to cause such a revolution in the art of literary composition, considering the scanty means of the propagation of learning in those times. It thus becomes clear that Kālidāsa lived in the first century B.C. at the latest.

HIS DRAMAS—For its visuality the play has more importance in. literature. As it influences the audiences directly, its effect remains on the mind for a memorable time. During British period when Indians were considered as stupids and illiterates the play of Kālidāsa i.e. Śākuntala had opened their eyes and compelled them to think wisely over India, Indians, its culture, civilization, learning and heritage. Śākuntala compelled them to change their opinion about Indians and India.

All the works of Kālidasa have a unique place in the Indian literature. Kālidāsa is considered wright a great poet and a great play by all eminent scholars. As a play writer or poet he stands at the top of all other writers. His composition whether it may be a poetry or play remains unique.

Upto this day only three plays of Kalidasa are available. These are Mālavikāgnimitra, Vikramorvasī and Abhijñān Śākuntala. Though the first two plays also have much importance in Saṁskrit drama they are not comparable to Śākuntala.

The source of Kālidāsa's 'Śākuntala' is 'Mahābhārata'. Here we trace the original story of Mahābhārata to testefy how wonderfully Kālidāsa changed it for his play, with the help of his unique imagination.

Once king Duśyanta, followed by a large army entered a thick forest. There he killed various beasts. Then following a deer, he reached a calm and attractive hermitage on the banks of the rriver 'Mālinī'. Leaving his army there and his royalty's sign, he entered alone into that hermitage and sought the sage 'Kaṇva', but finding no one there he cried aloud - "who is there?" Hearing his

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

voice, a beautiful maiden, dressed in a hermit's garb came out and welcomed the king. On being asked his purpose of coming there he told her that he had come to pay reverence to sage Kaṇva, and enquired if she could tell where he had gone ?

The maiden was 'Śakuntalā', the adopted daughter of Saint Kaṇva. She replied -"my father has gone to gather fruits and roots in the forest, please wait a while, you shall see him when he returns".

In the absence of the sage, the king seeing this youthful lovely maiden, having fair hips and charming smiles, asked her "Who are you ? Whose offspring are you ? Why have you come to the forest ? You stole my heart at the first sight. I wish to know more of you".

At this, smiling Śakuntalā said - "I am the daughter of sage Kaṇva".

The king said -"Sage Kaṇva is away from all the worldly affairs such as marriage, then how do you claim to be his daughter?"

She then told him the story of her birth, as she heard from saint Kaṇva. Once Indra the Lord of the Gods afraid of the austerities of the sage Viśvamitra, sent the nymph Menakā to tempt him. She went to the sage and paid reverence to him, and while she was sportively moving towards the hermitage her garment was carried away by the wind. Seeing her naked beauty the sage was disturbed and called her to him. They stayed together for a long period and a daughter was born of the union. Menakā, leaving her daughter on the banks of the river Mālinī, returned to Indra's court. On the bank of Mālinī the newly born baby was cared for by Śākuntas (Birds) and hence was named 'Śakuntalā'. The saint found her there and reared her as his foster child.

After hearing this, Duśyanta said- "Then, you are a princes and not a saint's daughter. I pray you to be my loving bride, by rites of Gandharva marriage."

Śakuntalā replied- "I am ready to accept your proposal if you promise that the son that will be born to me from you becomes the king after you."

"So be it" the king promised and married her according to the Gandharva rite and lived with her. After some time he left for his capital, repeating his promise, saying that he would send a large army to bring her to his capital. Though he married Śakuntalā, he

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

was afraid of saint Kaṇva thinking of what he might do on hearing the news. After some time sage Kaṇva came back and knew it through his divine power. At this he was pleased and so, he said to Śakuntalā- "Dear child ! that you lived secretly with a man, forgetting me, is as I see it, not against the law, for the Gandharva form of marriage is declared to be the kbest for a kśatriya, when both love one another. Duśyanta is the best among wise people, noble and law-abiding, and since you have found a loving husband, you shall give birth to a noble son, mighty in the world." Śakuntalā then begged of the sage to think kindly of her husband Duśyanta. After some time she gave birth to a boy in the hermitage. He grew quickly to be a splendid boy. At the young age of six years, he rode on the backs of lions, tigers and bears near about the hermitage, tamed them and played with them. Counting the lion's teeth was his hobby. Keeping all these in view, the sage Kaṇva gave him the name 'Sarva Damana', the 'All Tamer'. Then seeing the child and his exorbitant human deeds, sage Kaṇva decided that it was the proper time to crown the child as the prince (Yuvarāja). So, he ordered his two pupils Śāradwat and Śāraṅgrava to take Śakuntalā and her son Sarvadamana to her husband's home.

They set-out with Śakuntalā and her son for Hastināpura and led Śakuntalā into the presence of the king Duśyanta. She bowed to him and said- "This is your son, O King ! install him as crown prince, as you promised in the hermitage."

On hearing this, the king remembered every thing but said I do not know who you are and have I wedded you ? Stay or leave as you like.

Hearing these words, Śakuntalā became motionless in shame and grief. Her eyes became red with grief and anger, her lips quivered like a wind shaken leaf, and she stood watching the king steadily, concealing her feelings and controlling her anger she held in cheek the magic power that her penance had given her. She thought for a while and looked at her husband in rage and grief, and said passionately to him- "How you can say -'I do not know' like any ordinary man, when you know every thing."

"I do not know the son born of you, O, Hermit woman, women are believed to be very talkative. Who will believe your words ? Are you not ashamed to talk to me such incredible things? Get away, return to your hermit."

Śakuntalā told- "O King, remember, truth is the highest di-

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

vinity, do not break your promise, if you are not ready to remember the facts I must go away. There is no union with a man like you. Even without you my son shall protect the foursquare earth adorned with the lofty mountains. Saying thus, Śakuntalā started, then suddenly a voice from space spoke to Duśyanta- "Take your child, Duśyanta, do not scorn your wife Śakuntalā. Indeed you are the father of this child. Śakuntalā tells the truth. "Having heard this, the king jumped with joy and said to the courtiers- "Hear these words spoken from space for if I were to receive my son, solely relying on her words, he would be suspected by the people, he would not be pure."

Then he rose from his throne, received the child and embraced him. He then honoured his wife and consoled her. "Our marriage was a secret one, so, to save your reputation I was afraid that the people would think that it was a woman's passion that brought you to me. Then Duśyanta gave the name "Bharata" to 'Sarvadamana' the son of Śakuntalā and made him crown-prince.

The Changes brought by Kālidāsa in the Original plot—

How cleverly the great poet Kālidāsa introduces changes into the original story is just a matter of imagination. Going through the story of his play Śākuntala and the original story of Mahābhārata we come to know that the poet by his brilliant wit breathed the life of poetry into the dry bones of this bare and unromantic story, and made it a most moving and an ideal one. The main difference in the original story is the rejection of Śakuntalā for reasons which are any thing but convincing. So, the first great change which the poet introduces into the story is the curse of sage Durvāsā, which vanished the memory of the king and made him so blunt that he even refused to recognize Śakuntalā, his love and his own promise too. This change saves the king from moral responsibility in his repudiation of Śakuntalā. When the recognition ring which Duśyanta gave to Śakuntalā comes forth to the king the curse goes and the situation seems to be saved by the poet. It is just an accident that Śakuntalā drops her husband's ring in the holy water of Śachi Teertha, before that moment of her encounter with the king. For her this moment was really a fatal one. The curse, however, is so modified as to exert its beneficial influence for a short period only until the king sees the ring. This description brought such a beautiful change which could stun the reader or make him motionless for a moment.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Śakuntalā is really charming in the story of Mahābhārata. She is direct in her simplicity, and fearful innocence. So, the king's proposal of marriage is a direct one. He is not troubled by those doubts which assails a lover's heart. The poet described Śakuntalā as very attractive, charming with a honeyed tongue, even though he did not allow the king to meet her directly and ask the story of her birth. Leaving this direct way, the story of Śakuntalā's birth is most skilfully woven into the conversation of the king with her two girl friends i.e. Anasūyā and Priyamvadā. During the conversation, the king promises spontaneously to be responsible for Śakuntalā's future destiny and the promise is not extracted from him as the condition of their union. All these have been managed with absolute delicacy.

In Mahābhārata Śakuntalā goes to her husband's home six years after giving birth to his son. Thus the original story tells the separation of Duśyanta and Śakuntalā for a long period before she reaches to the capital. But in the play Śakuntalā leaves her forest-home for the capital before her son is born. And the final union takes place after a long period of suffering and remorse.

In the play this union takes place after seeing the royal-ring, but in Mahābhārata, after hearing the truth from the space.

Besides these changes, the poet has added largely from his imagination some very beautiful scenes and characters. As Rider states- "Only acts one and five with a part of act VII rest upon the ancient text, while acts two, three, four and sixth with most of seven, are certain of the poet."

Finally, it is interesting to note how cleverly the poet has utilised his sources, and the numerous epic suggestions which he has incorporated into his play. How nicely he has woven the story of Śakuntalā's recognition, divine power of sage Kanva, which saved Śakuntalā from disclosing her union with the king, the marks of imperial birth on the hand of the child; all these makes him an ūnparalleled poet and dramatist.

Construction and analysis of the plot—

According to the great writer Tagore- "There are two unions in Śakuntalā and the central motif of the play is the progress from the earlier union of the first three acts with its youthful beauty and romance through an interval of separation and intense and speechless agony to the ultimate union in the Elysian regions of eternal bliss described in the last act. The play, therefore, naturally falls

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

into three divisions, each having a distinct atmosphere of its own- the first four acts constituting the first division, the fifth and sixth the second, and the seventh act the last."

For the first four acts the scene is laid in the hermitage. In this act the poet has already intimated in the prelude that it was the time of pleasant summer, and even within the sacred grove every tree and plant is touched by its magic fingers. In drawing natural scenes the poet proved himself to be unparalleled. Though the hermitage area was calm and quiet and the king entered there to get peace and rest yet the presence of beauty takes all his peace away.

Then come the maidens on the scene, with their charming friend Śakuntalā in the centre. Here the poet described Śakuntalā to be as delicate as a Jasmine flower, who waters her leafy sisters and takes delight in that duty. Her unparalleled beauty is observed by the king who impressed by that remarks- "Youth with all its magic charm, blossoms within her blood." Thus the poet succeeded to paint vividly the scene of intoxicating youth. The great poet Kālidāsa knows well that the source of human inspiration is none else but nature alone. Nature is not some thing outside of man with a life-spirit and purpose of its own, but it is the background for reflecting human emotion. As Kālidāsa had taken nature as background in all his works, so, some one said about it- "Atmospheric subjectivity is one feature of Kālidāsa'a nature-poetry."

The wonderful manner in which the poet introduced the king Duśyanta to his heroine Śakuntalā is really remarkable. The black bee has left the Jasmine and is trying to settle on Śakuntalā's face, thinking it to be a blossomed lotus flower. She tries to remove it, but the bee roaming around her face distracts her. Being afraid, she calls for help, and her friend playfully suggests that she had better call on Duśyanta, the king, whose duty was to protect the hermitage. This saying (suggestion) gives room (chance) to king Duśyant who was watching them eagerly to get closer to them. Hearing the cry of Śakuntalā for help the king enters, and Śakuntalā looking at him before her, feels a strange flutter in her heart. She remains motionless. Now in the course of conversation between her friends and the king, the poet very cleverly and artistically revealed that Duśyanta the king was in every way worthy of her, and her friends, too, feel that if sage Kaṇva were present he would do honour to the honourable guest and offer him his most valuable possession. Duśyanta's doubts regarding her birth are cleared, when, urged by

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

him, Śakuntalā's friends narrate to him how she was the daughter of Viśvāmitra and Menakā, and is being reared not for the religious life but for marriage with some one worthy of her. Śakuntalā hearing all such becomes angry and rises to leave the spot, when Priyaṁvadā detains her saying she had promised her the watering of two trees and she could not leave before she had paid her debt, at which the king most gallantly gives her the ring to redeem her debt. This is the fatal ring which failed to prove Śakuntalā's statement in the royal court when she was in a critical position, after some time recovery of the same ring restored the memory of the king and then only he received Śakuntalā with her son. The story of ring is woven by the poet very skilfully and hence this became the soul of the play.

The other scene, the disturbance in the conversation by the elephant's trumpetting is described as a signal of the coming storm in the life of lovers, who are away from the world and its feelings. This shows the cleverness and keen observance of the poet and alertness for the reality of his plot. It thus differs from the story in Mahābhārata.

In the second act of the play, the poet described the kings pining for love, which allows him no rest even at night and deprives him of all his hobbies. He fails to enjoy even the pleasures of hunting. He recounts his feelings to his unsympathetic friend, the Vidūśaka (Jester) and gratefully receives the request of the young hermit to protect the hermitage against the attacks of the demons. Then comes a messenger from the capital and requests him on behalf of his ministers and queens to be present there at the festival, and this gives the king the opportunity to dismiss all his retinue and the jester (Vidūśaka), whom he commands not to spread scandals about Śakuntalā and him.

The Third Act in its introductory scene presents to us the love-torn Śakuntalā. The king who had returned his retinue, now seeks his love who spends those hours of mid day heat with her friends on the banks of river Mālinī. There, she is discovered lying on a bed of lotus leaves, writing, at her friend's suggestion a love-letter in the shape of a verse to the king. How careful is the poet to show that Śakuntalā in her womanly shame has not revealed her passion even to her bosom friends for long, she discloses her heart only when she becomes perturbed by passion and when the situation compels her, she tells her friends to which state she has been

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

driven by love. Then follows a scene of ideal love or passion. Śakuntalā composes a song which breathed of the keen anguish that filled her heart, and the king who has overheard comes on the scene and assures Śakuntalā's friends about his deep rooted love for Śakuntalā. Here the poet gives a glimpse of Śakuntalā's jealousy when she says to her friends that they should not tax the honourable guest's or king's courtesy. Though Śakuntalā was blind in love, yet her friends know that the kings are prodigal in their love to many ladies. So, keeping all such in view Priyaṁvadā suspects the king's assurance but Anasūyā keeping the promise of the king remarks, whereupon the king assures them that inspite of many wives, henceforth this dear friend of ours shall be the chief glory of his harem and throne. The friends now make an excuse and leave the lovers to themselves. How cleverly the love scene is drawn is a remarkable thing. Here he never allows love to go beyond aesthetic bounds. The scene ends with the arrival of Gautamī who comes to take away Śakuntalā to the hermitage.

Among the works of Kālidāsa, the play Abhijñana Śakuntalā is considered the best. According to some well known critics, in all the available dramas in Saṁskrit, the Śākuntalam is a unique one, and in it, its Fourth Act is considered very remarkable and pleasing, and in this act specially four verses (ślokās), at the time of Śakuntalā's departure towards her husband's home, related to sage Kaṇva's teaching to Śakuntalā are counted to be not only the best one but immortal and an eternal treasure of Indian religion, culture and civilization. Especially for newly married girls these verses have much value. As these are just like guide-line and can enrich the follower with human value and raise their status too.

This Fourth Act is full of the shadows of coming events and doom. First of all, when for a long time the inhabitants of the hermitage fail to hear any news from the king or receive any messenger sent by him to bring Śakuntalā to the capital, Anasūyā, Śakuntalā's companion suspects, that surrounded by the charming ladies (queens) with their courly ways and their charming gestures the king may not remember Śakuntalā and the hermitage. Priyaṁvadā, however, assures her saying that noble persons always remain firm in their promises, they are not changeable. But the thing that troubles her (Śakuntalā) is the fear of her father, what the sage Kaṇva will say when he knows of the union. Meanwhile the dreaded sage Durvāsā comes to the hermitage (Āśrama).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Thinking of her husband, poor Śakuntalā is far too deeply burdened to take any kind notice of the sage. The sage Durvāsā, who expected a warm welcome from her, being an honourable guest in the hermit, seeing such negligence burnt with anger, and his curse fell on Śakuntalā like a knife of a butcher falls on the innocent lamb. The curse was- "As you forget me to receive and welcome, the person in whose love you have forgotten to welcome and give proper respect and hospitality to an honourable guest like me, even yourself, he too will forget you, and thus you have to repent for your negligence. Śakuntalā knows nothing about sage Durvāsā's arrival and his curse. But her close friend Priyaṁvadā had heard it and for the welfare of her friend Śakuntalā she pleases the dreaded sage Durvāsā. Then the sage Durvāsā graciously grants that- "although Śakuntalā shall be cleanly erased from her husband's memory, yet at the sight of the recognition ring the curse shall break."

At the time of his return to the capital the king has given his signet ring to Śakuntalā, the friends feel that the same ring will save her. They decide to tell no one of the incident, so that Śakuntalā may not be perturbed.

The next scene opens in the teerful glimmer of the languid dawn, where in a very suggestive stanza a pupil of sage Kaṇva compares the strange changes of life with the simultaneous rise and fall of heaven's brightest luminaries. Sage Kaṇva after his return to the hermitage knows by his divine power about the marriage of Śakuntalā with king Duśyanta and her pregnancy from him. He decides to send her under the escort of his trustworthy pupils and Gautamī to the king. Now starts another scene of leave-taking. This is so pathetic, heart rending and touching that even a stone heart can not remain unshaken when Śakuntalā starts from hermit. Hard of heart must he be who can read the Act without tears in his eyes. What delicate leave-taking of the tree and plants, of the deer and peacock, of the Vanjyotsnā, of the doe that is slow by the weight of young, of the fawn, her foster-child, that would fain prevent her going and catches the end of her garment, and lastly of the friends of her childhood and her father. What a linegreing farewell! who can tear the fond parent from his beloved child? How the truth of life comes forth through a prākrit verse ? All these point to the keen observation of the poet. Fickle minded Śakuntalā fails to ascertain, which life would be better for her, of hermitage or of a

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

harem of a king. Śakuntalā finds herself between two worlds, the one (hermit) now lost to her, and the other (king's harem) is dark and uncertain. Taking into consideration her fear (if the king had forgotten their union) the friends suggest to her to show the recognition ring, in case he hesitates to recognize her. They advise her to take care of herself. After this, Śakuntalā with a heart, heavy with grief bids farewell to her forest home.

In this act the lyrical element of the play reaches its climex. It produces forth a picture of great experience of life and the poet makes the nature echo the feelings of the characters. Meanwhile we reach the second portion of the drama. In passing from the fourth act to fifth we suddenly enter a new atmosphere. Here the poet momentarily draws aside the curtain from the king's love affairs. We listen to a woman's voice singing in an impassioned strain, it is a taunt to the king for his forgetting of Haṁspādikā, on account of empress Vāsumatī. Here we find the king away from all pleasures. He seems to be heart-striken and vexed.

When the pupils of sage Kaṇva escort Śakuntalā into the royal court, the scene of hermitage disappears from our sight and with pupils of sage Kaṇva we too feel that we have entered an altogether new world.

The singing of Haṁsapādikā causes a strange disturbance in Duśyanta's soul. It appears as if his heart is filled with sweet pain. This remarkable song is included here to show the effect of music and beauty.

The repudiation scene is the most remarkable one in the whole drama. Śakuntalā reaches the king's court, with her escort. Gautamī requests the king to receive his wife Śakuntalā and conveys the message of sage Kaṇva to him. But the king denies having had any thing to do with Śakuntalā. He does not recognize her when her veil is removed, and due to the bad luck of Śakuntalā the recognition ring has already been lost. Thus when direct evidence fails to prove Śakuntalā's claim, the poor girl (Śakuntalā) makes the pathetic attempt of riviving his memory by verbal testimony. But the king cuts all these points like a sharp knife. When every effort of her fails she thinks that in her innocence she should not have given her honour to such a person whose mouth drops honey, but whose heart is filled with poison. Looking at the behaviour of the king the pupil of sage Kaṇva sārangrava repudiates the king,

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

and rudely abusing both Duśyanta and Śakuntalā, bids them farewell, and the scene ends in the mighty silence.

The fifth act with its painful and tense tragedy strains our nerves to the utmost, and we stand in need of relief. So, with a rare judgment which the poet gives us at the begining of the sixth act, a scene drawn almost raw from life, but one which is of vital importance to the play. He narrates a story about the recovery of the recognition ring from a fisherman, who got it in the stomach of a fish and now trying to sell it when caught red handed by the commissioner of police i.e. the king's brother in law. In the main act the poet describes how the king recoginzes the wrong unwillingly done and of his heart wrenching agony at the loss of his beloved wife. He seeks to console himself with a portrait of his love which he had drawn himself. But when he comes to know that queen Vāṣumatī is coming to him, keeping her jealousy in mind he becomes alert. Her presence would have been altogether out of place in a scene of severe penitence and tenderness, and the poet very skilfully avoids it by making the thoughtful queen give precedence to affairs of state. The minister obtains from the king the decision of a law point involving the right to inheritance an episode which only deepens the king's regret by reminding him of his childishness.

The loud cry of the jester, who has been roughly handled by Mātalī, awakens the king from his despair. This is necessary as Mātalī explains-"For bringing the king back to the realization that there are duties superior to personal feeling. Indra (Lord of Gods) requires his help in the war with demons."

We come to the last part of the drama and see the royal court and the capital. We have there a hermit's daughter full of youth with her two companions, exiled in disgrace. But the aspect of the other hermitage where Śakuntalā was living, was quite different from that of above. There, a single boy fills the loving bosom of the entire forest world. Now as before when the king was about to enter sage Kaṇva's āśrama, the throbbing of the right arm of the king indicates to him to his approaching fortune. Hiding behind the creepers he looks towards a boy, who is unruly and mounting a lion's cub, and tearing its mouth with his two little hands shouting—"O' cub of lion, open awfully your mouth, so that I may count your teeth." This scene is arranged in the play most skillfully and delicately in such a manner as it not only pleases the readers

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

but also stuns the king and also compells him to murmur himself- "What fire is in the child?" His heart goes out to him, then as he stretches his hand, the marks of imperial birth are revealed. We reach the climex when after conversation between the king and the child the king touches the magic amulet which he is told, none but his parents only can touch with impunity. Hearing this he realises that this child may be his own son from Śakuntalā and his lost hope has come true. Then comes Śakuntalā on the scene, who due to her misfortune and negligence of her husband appears as an image of incarnate pathos. Her loving heart was full of understanding of for-giveness. She blames only her bad luck which had been fixed for her by some former transgression of sage Durvāsā's hospitality. But under the auspicious of the divine pair and Durvāsā's blessings to her friends Śakuntalā and her boy are united to Duśyanta, and thus earthly paradise is gained by the main characters of the play and satisfaction by the poet, readers and audience.

The Title of the play—

In Abhijñāna Śākuntalam, the signet ring of king Duśyanta has been used as a dominating factor of the play, very skilfully by the great poet Kālidāsa. In the first act of the play the king Duśyanta offers his signet ring to Śakuntalā's friend to redeem the debt she owes her, and in the fourth act, after the curse of sage Durvāsā, when Anasūyā tries to appease his anger and the sage Durvāsā modifies his curse by saying that the curse shall go at the sight of some token of recognition. Though the friends kept quiet to say any thing to Śakuntalā about the curse of sage Durvāsā and why it fall on her, but later on Priyaṁvadā tells us how the king at time of departing from hermitage, put the ring, engraved with his own name, in Śakuntalā's finger to remember him by, and that will save Śakuntalā. Here the poet Kālidāsa very cleverly produces the dramatic irony. The friends, with the desire to spare the feelings of Śakuntalā, decide not to tell any one about the curse, but at the end of act four, when they were unable to overpower their anxiety they merely drop a hint by saying to Śakuntalā that if due to his well mannered harem the king becomes slow to remember his words or her, she should show him the signet ring. But, man proposes, God disposes. The signet ring slipped from Śakuntalā's finger in Śāchi teertha while she was coming to the capital. In the most critical moment when the king refuses to recognize her the only rescue i.e. the signet ring was not there. This moment comes forth in the court

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

scene of fifth act. In the opening scene of act six we see its miraculous recovery from the maw of a carp-fish opened by the fisherman. As soon as it comes in the sight of the king, he remembered every thing related to Śakuntalā. He reviles the ring, but the jester consoles him by pointing to the ring as the one that shows that incredible meetings do take place. Finally in the seventh act when Śakuntalā sees the ring, the king tells her how at the sight of the ring his memory returned. He offers to put it on her finger, but Śakuntalā would not trust it, she would rather have the king wear it.

Keeping all these in mind Dr. C. D. Pandey Comments- "Thus it will be seen that this episode of the ring whose loss prevents the immediate recognition of Śakuntalā is very effectively conceived and woven into the texture of the play. Aptly, therefore, is the play given the name 'Abhijñāna Śākuntala."

Śakuntalā, its inner meaning—

As per etymology, the word Śakuntalā is formed with the union of two words- i.e. Śakunta—the birds and la—nourishment. The whole meaning of it is the child who is nourished by the birds. This is the literal meaning of the title, but its inner meaning is quite different. It seems as if the poet Kālidāsa wants to indicate his views about beauty "The appearance of which gives new feelings at every moment is the true definition of beauty." 'Kshne kshne yannavatamupaiti tadeva roopam ramaneeyatayah'.

So, as the multi-coloured birds are attracting one's mind towards them, accordingly, the skilfully painted Śakuntala's beauty, simplicity, mildness, honeyed tongue etc. qualities make her an unparalleled beauty queen, who attracts our mind immediately with a striking hint—beauty is only to admire not to touch. So, the unique beauty is another meaning of the play. Overriding all these meanings, the inner meaning is more interesting. According to this, it contains the history of a development—the development of flower into fruit, of earth into heaven, of matter into spirit. The drama was meant for translating the whole subject from one world to another, from the sphere of physical beauty to the eternal heaven.

In brief, physical love changed into moral love. Therefore, the poet has made the two lovers undergo a long "tapasyā" (penance) that they may understand truly, eternally. According to

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

the poet, the first union of the lovers has a moral lapse, and later it was converted into moral entity.

Character sketches—

DUṢYANTA: The hero of Abhijñāna Śākuntalam is magnanimous. Qualities like beauty, delicacy, bravery, courage and seriousness are natural to his character. They indicate him as a great person. He is an expert player of war and hunting. Being a great lover, he proves himself a loyal and good natured husband too. He is a unique, passionate and unparalleled warrior too. He is also considered unique in the sphere of self restrainet. During the period of Durvāsā's curse his refusal for unparalleled beauty queen Śakuntalā's recognition proves that he was really a self restrained king, and this puts forth a burning example of self control.

Respect for elders, continuous thinking for welfare of his subjects prove him something more than a mere ideal person. Including sense of duty, hatred for bad qualities and fulfilment of his words, prove him a great person and an ideal king. He hates self praise. At the time of returning from heaven, taking part in the war with demons and defeating them, when Mālatī, the charioteer starts praising him, he gives all his credit to Devarāja Indra (lord of Gods) and keeps quiet. He has keen interest in religion and religious activities. He participates in scholarly discussions. He has a thorough knowledge and interest in song, dance, music and painting. Drawing such a great character the great poet Kālidāsa succeeded in all respects, it can be said honestly.

ŚĀKUNTALĀ: Though Śakuntalā originally comes forth in great epic - 'Mahābhārata' yet going through the play 'Abhijñāna Śākuntalam' we feel the heroine of the play 'Abhijñāna Śākuntalam' by name Śakuntalā is a fresh creation of the great poet Kālidāsa. She is most beautiful, virtuous, chaste and simple. As she grows up in the hermitage, she loves every natural thing i.e. trees, creepers, flowers, birds, animals, rivers, falls, surroundings etc. whole heartedly. Her complete affection seems to be bestowed on nature and natural things. Watering the plants, nourishing the deers, watching the dancing peacocks are her hobbies, and in such activities her sympathetic attitude towards the sub-human beings comes forth and sets an example of her divine greatness. Though she was an adopted daughter of Kulpati Kaṇva (chancellor of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

hermitage) yet was free from pride. She was fully able to hide her feelings of heart. All these virtues show her greatness in all the spheres mentioned above. Deeply drowned in the memories of her husband, she forgets to welcome sage Durvāsā and appease him, and for the same negligence she was punished by a cruel curse which led her to misery, and shameful condition.

Even though she loves her husband whole-heartedly, blaming her bad luck and not uttering a single word against him she has much respect and affection for her elders, kinsmen, friends. This ideal character is a symbol of a great Indian woman. In brief we can say that in the history of literature the character of Śakuntalā is unparalleled and the like of her is hardly traceable.

SAGE KAṆVA: Sage Kaṇva is described in the play as the supreme authority of the hermitage i.e. Kulapati. He is a perfect Bramhachārī owing a vow of chastity. He performs sacrificial right (maintenance of the sacred fire and offering oblation to it) regularly, and always praise for the universal welfare. Due to his high wellwishing spirit he brought Śakuntalā from the bank of river Mālinī and brought her up as his adopted daughter. He gave her parental love in such a way that she had forgotten her real parents and considered him her real father. The sage became for her both mother and father. Though he was away from all worldly affairs. Sage Kaṇva had a knowledge of the bounds of a house-holder. When he sends Śakuntalā to her husband's house, his knowledge about house-holder's bounds comes forth. He is fully aware of the habits and natures of people. Like a touch stone as soon as one comes into his contact he comes to know his every secret or read thoroughly his mind. At the time of Śakuntalā's departure he teaches her in such a way which leaves an impression on our mind and heart for long and shows his deep knowledge, momentary vision and dutyfulness. In brief, he is an ideal father, great sage, learned scholar and foresighted.

VIDŪṢAKA (The Jester): The poet Kālidāsa succeeded completely in creating the character of the jester. Through him he succeeded in producing the sentiment of humor in the play. The jester always thinks about his belley and talks always about delicious foods to fill it up. He is so talkative and sometime crosses the landmark of conduct. He is unable to digest the secret of any person or of his close friend king Duśyanta. He is described in the play as the pleasure companion of the king. Being a coward and

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

soft hearted by nature he is unable to tolerate pain or difficulty. Though he is not actually a stupid, he knows the art of making fools of others by presenting himself as a fool and or ridiculous person.

ŚĀRAṄGRAVA & ŚĀRADWATA: These two are the pupils of sage Kaṇva. As per the situation, they are experts in social manners and etiquette. They have much respect for their preceptor or chancellor of the Āśrama i.e. sage Kaṇva. They have some knowledge of worldly affairs. They are not mere students but clever in worldly dealings. They know how to behave in a royal-court. Apart from this both the students are different in some manners. While Śāraṅgrava is a student with an appreciative nature, Śāradwata has a philosphers attitude. Śārṁgrava dislikes the atmosphere of a royal—court. Śrādawta feels pity for those who are spending their lives in mortal luxuries. Śārṁgrava is more appreciative but has less power for tolerance. He sometime appears very shrewd as he becomes angry very quickly. But forgiveness, the main feature or quality of Śāradwata which makes him some how better than his friend Śāradwata. His forbearance power makes him a wise one. He takes interest to settle a dispute and is well aware of behaving according to the time, situation and demand.

ANASŪYĀ & PRIYAṀVADĀ: Both are the close friends of Śakuntalā. The nature of both are according to their names i.e. Anasūyā is free from jealousy and Priyaṁvadā is a honeyed tongue girl. Both are having great affection for their friend Śakuntalā. Always they think of the welfare of Śakuntalā. They consider it their sacred duty to think of Śakuntalā's welfare day and night. Both are very clever and well mannered. At the first meeting of Duśyanta with Śakuntalā they have a keen watch on the hermitage so that anyone should not see and know about it. When they find Gautamī is coming they alert Śakuntalā indirectly. When Durvāsā's curse falls on Śakuntalā they please him and seek refuge for their friend. But they did not tell any thing to Śakuntalā about the curse, so that she may not be purturbed. When Śakuntalā departs from them and the hermitage they feel the hermitage has lost its glory, calmness, beauty. There is some difference in their nature. While Anasūyā wants to see Śakuntalā ever happy, Priyaṁvadā takes every thing very light. Anasūyā is serious and teciturn. But Priyaṁvadā is of a cheerful nature whose utterances

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

are always sweet. Anasūyā is always suspecious but Priyaṁvadā takes quick decision according to the demands of the situation. Anasūyā remains unruffled in all difficult situations but Priyaṁvadā is a girl who gets afraid easily.

Janmastami, 2044 Vikrami.
16th August 1987
21-1-198, Gandhi Bazar,
Opp: High Court,
Hyderabad-500002
Phone: 525009

Dr. Ved Prakash Shastri,
M.A. (Hindi & Samskrit)
Gold Medalist,
Ph.D., D.Litt., D.Sc.
Sahitya-Ayurved Ratna, Vidya Bhaskar,
Ayurved Brihaspati.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभिज्ञानशाकुन्तलस्थपात्राणां परिचयः

पुरुषपात्रगणः

पात्रम्		परिचयः
सूत्रधारः	:	नाटकस्य निर्देष्टा, प्रवर्तयिता प्रधाननटः।
दुष्यन्तः	:	नाटकस्य नायको हस्तिनापुराधिपतिः।
सूतः	:	दुष्यन्तस्य सारथिः।
वैखानसः	:	वनवासी तपस्वी
माधव्यः	:	राज्ञो नर्मसचिवो विदूषकः।
भद्रसेनः	:	राज्ञो दुष्यन्तस्य सेनापतिः।
रैवतकः	:	द्वारपालकः।
ऋषिकुमारौ	:	कण्वाश्रमवासिनौ।
करभकः	:	हस्तिनापुरादागतो दूतः।
यजमानशिष्यः	:	महर्षेः कण्वस्य शिष्यविशेषः।
हारीतः	:	महर्षेः कण्वस्य शिष्यविशेषः।
कण्वः	:	शकुन्तलाया रक्षको महर्षिः।
शार्ङ्गरवः, शारद्वतमिश्रः	:	कण्वस्य प्रधान शिष्यौ।
कञ्चुकी	:	पार्वतायननामा सौविदल्लः।
पुरोधाः	:	सोमरातनामा राज्ञो दुष्यन्तस्य पुरोहितः
नागरकः श्यालः	:	नगररक्षको राज्ञः श्यालकः।
सूचकः, जालुकः	:	रक्षिणौ
पुरुषः	:	मुद्रिकाप्रासिकारी धीवरः।
मातलिः	:	इन्द्रसारथिः।
सर्वदमनः भरतश्च	:	राज्ञः सुतः शाकुन्तलेयः।
मारीचः	:	मरीचेः सुतः कश्यपः।
गालवः	:	कश्यपशिष्यः।

स्त्रीपात्रगणः

पात्रम्		परिचयः
शकुन्तला	:	नाटकस्य नायिका, कण्वपालिता पुत्री।
अनसूया, प्रियंवदा	:	शकुन्तलासख्यौ।
गौतमी	:	महर्षेः कण्वस्य धर्मभगिनी।
प्रतिहारी	:	राज्ञः पार्श्ववर्तिनी।
मिश्रकेशी	:	शकुन्तलायाः शुभचिन्तिका सखी।
तापस्यः	:	कण्वाश्रमस्था मुनिपत्न्यः।
परभृतिका, मधुरिका	:	चित्रकरणार्थं विदेशादागतं [illegible]सीद्वयम्।
चतुरिका	:	राज्ञो दासी।
तापसीद्वयम्	:	कश्यपाश्रमस्थं सर्वदमनकरक्षकम्।
अदितिः	:	देवमाता कश्यपपत्नी।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ श्रीः ॥

महाकविश्रीकालिदासप्रणीतम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथमोऽङ्कः

या सृष्टिः स्त्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रसन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥ १ ॥

अन्वयः—या तनुः स्त्रष्टुः आद्या सृष्टिः, या विधिहुतं हविः वहति, या च होत्री ये द्वे कालं विधत्तः, (या) श्रुतिविषयगुणा, या विश्वं व्याप्य स्थिता, यां सर्वबीजप्रकृतिः इति आहुः, यया प्राणिनः प्राणवन्तः ताभिः प्रत्यक्षाभिः अष्टाभिः तनुभिः (उपलक्षितः) प्रसन्नः ईशः वः अवतु ॥ १ ॥

या सृष्टिरिति। या तनुः=मूर्तिः, स्त्रष्टुः=जगन्निर्माणकर्तुः, आद्या सृष्टिः= प्राथमिकनिर्माणम् (जलरूपेत्यर्थः), या मूर्तिः, विधिना=वैदिकेन विधानेन, हुतं=देवतोद्देशेनाग्नौ हवनीकृतम्, हविः=हवनीयद्रव्यम्, वहति=देवान् प्रापयितुं धारयति प्रापयति (अग्निमयीति भावः), या च तनुः, होत्री=हवनकर्त्री (यजमानरूपेत्यर्थः), ये द्वे मूर्त्ती, कालम्=अहोरात्रस्य (तत्परकतिथेश्च) प्रवर्त्तनात् सौरं चान्द्रञ्च मासर्त्तुवर्षादिरूपं समयं, विधत्तः=निष्पादयतः (सूर्यचन्द्ररूपे इत्यर्थः), श्रुतेः= श्रवणस्य, विषयः=शब्दः, स एव गुणो यस्याः सा श्रुतिविषयगुणा=आकाशमयी, या मूर्त्तिः, विश्वं= सकलं जगत्, व्याप्य=आवृत्य, स्थिता=विद्यमानाऽस्ति (नभोरूपेत्यर्थः), यां मूर्तिम्, सर्वबीजा-

---

भगवान् शिव की वह जलमयी मूर्ति जो विधाता की प्रथम सृष्टि है, वह अग्निरूपा मूर्ति जो विधिवत् हवन की गई सामग्री को तत्-तद् देवताओं तक पहुँचाती है, वह मूर्ति जो होत्री अर्थात् यजमान रूप में वैदिक विधानों का सम्पादन करती है, वे दो मूर्तियाँ जो सूर्य-चन्द्र रूप में पक्ष, मास, ऋतु आदि के द्वारा काल का विधान करती हैं, वह मूर्ति जो कर्णेन्द्रिय के विषय शब्दों के आश्रय आकाश के रूप में सर्वत्र व्याप्त है, वह मूर्त्ति जिसे विद्वान् सम्पूर्ण बीजों का उत्पादक कारण अर्थात् पृथ्वीरूपा प्रतिपादित करते हैं तथा वह मूर्ति जिससे सम्पूर्ण

May Īśa (Lord Śiva) protect you. Īśa, who is possessed of those eight visible forms, (to wet, viz water) which is the first creation of the creator, (viz fire), which carries the oblation offered according to injunction, (viz the priest) which performs the religious rites or sacrifice, those two (viz. the Sun and the Moon) which regulate time (viz ether or sky) which having the attribute of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण। (नेपथ्याभिमुखमवलोक्य) आर्ये! यदि नेपथ्य-विधानमवसितं तदिहागम्यताम्।

नटी—(प्रविश्य) अज्ज! इअह्मि। आणवेदु अज्जो को णिओओ अणुचिट्ठिअदुत्ति। [आर्ये! इयमहमस्मि। आज्ञापयतु आर्यः को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति।]

नाम्=सकलधान्यादिशस्यानां, प्रकृतिः=योनिः, अङ्कुराद्युत्पादने कारणम्, आहुः=ब्रुवन्ति (बुधा इति शेषः), (पृथ्वीरूपेति भावः), यया च मूर्त्या, प्राणिनः=शरीरिणः, प्राणवन्तः=जीवनवन्तः भवन्ति, ताभिः=पूर्वोक्ताभिः, प्रत्यक्षाभिः=प्रत्यक्षगोचरीभूताभिः, अष्टाभिः तनुभिः= मूर्त्तिभिः (उपलक्षितः), प्रसन्नः=सर्वत्र प्रकाशितस्वसामर्थ्यः, ईशः=महेश्वरः, वः=युष्मान्, अवतु=रक्षतु।

भावार्थः—महेश्वरस्य या मूर्तिः जगन्निर्मातुः प्राथमिकनिर्माणमत एव जलरूपा, या मूर्तिः विधिवत् हवनीकृतं हवनीयद्रव्यं देवान् प्रापयति अत एव अग्निमयी, या च हवनकर्त्री अत एव यजमानरूपा, ये द्वे मूर्त्ती सौरं चान्द्रं च मासर्तुवर्षादिरूपं समयं विधत्तः—सूर्यचन्द्ररूपा, या श्रुतिविषयगुणरूपा—आकाशमयी, या च नभोरूपेण सकलं विश्वं व्याप्य स्थिता अस्ति, यां बुधाः सर्वबीजानां योनिः ब्रुवन्ति (पृथ्वीरूपेति भावः), यया च मूर्त्या प्राणिनः प्राणवन्तः भवन्ति (वायु-रूपेण सर्वान् जीवनवन्तः करोति), ताभिः प्रत्यक्षगोचरीभूताभिः अष्टाभिः तनुभिः उपलक्षितः महेश्वरः युष्मान् रक्षतु ॥ १ ॥

(नान्द्यन्ते=आशीः प्रतिपादनपरा देवस्तुतिर्नान्दी, तस्याः अन्ते=अवसाने)

सूत्रधारः—अलम्=पर्याप्तम्, अतिविस्तरेण=शब्दबाहुल्येन। (नेपथ्याभिमुखम्=यवनिका सम्मुखम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा) आर्ये=प्रिये! यदि=चेत्, नेपथ्यविधानम्=पात्रादेः प्रसाधनादिकर्म, अवसितम्=सम्पन्नं, तत्, इह=अत्र रङ्गमञ्चे, आगम्यताम्=आगच्छताम्।

प्राणी जीवन प्राप्त करते हैं अर्थात् वायुरूप में जो मूर्ति सकल प्राणियों को जीवनदान देती है; इस प्रकार प्रत्यक्षतः दृश्यमान प्रसन्न भगवान् शिव की अष्टमूर्त्ति आप लोगों की रक्षा करें।

(विघ्नशान्त्यर्थ की जाने वाली ईश प्रार्थना (नान्दी) के पश्चात्)

सूत्रधार—बस, अब अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं। (नेपथ्य की ओर देखकर) आर्ये! नेपथ्यविधान (पात्रों का प्रसाधनादि कार्य) सम्पन्न हो चुका हो तो यहाँ आओ।

---

the object of hearing (i.e. sound), remains pervading the universe, (viz the earth) which the wise people call the source of all seeds, (viz the air) by which the living are endowed with life. (1)

(At the end of the benedication)

The Stage Director—Enough it is. Do not extend it more now. *(Looking towards the make up/tiring room)* Dear lady, if the make up (performance of your dressing etc.) is over, just come over here.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूत्रधारः—आर्ये! इयं हि रसभावविशेषदीक्षागुरोर्विक्रमादित्यस्य अभिरूपभूयिष्ठा परिषत्। अस्याञ्च कालिदासग्रथितवस्तुना नवेनाभिज्ञानशाकुन्तलनामधेयेन नाटकेनो-पस्थातव्यमस्माभिः, तत्प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः।

नटी—(प्रविश्य=रङ्गशालायां प्रवेशं विधाय) आर्य्य!=प्रिय! (पूज्य!) इयमहम् अस्मि= आगतास्मि। आर्य्यः=पूज्यः (भवान्), आज्ञापयतु=निर्दिशतु माम् इति शेषः। कः=कतमः, नियोगः-निदेशः, (मया) अनुष्ठीयताम्=क्रियताम्।

सूत्रधारः—आर्य्ये=प्रिये! इयं हि, रसाः=शृङ्गारादयः, भावाः=प्रधानतः प्रतीयमाना रसा-भिव्यञ्जकाः सञ्चारिभावाः, रत्यादि स्थायिभावाश्च, तेषां विशेषः=प्रकृष्टो भेदः, तस्य दीक्षागुरुः= प्रधानोपदेशकः (रसभावविषये प्रमुखरूपेण दीक्षागुरुः) तस्य, रसभावविशेषदीक्षागुरोः= रसभावविषयेषु प्रधानशिक्षकस्य, विक्रमे=पराक्रमे, आदित्यः=सूर्यः तद्रूपः, तस्य विक्रमा-दित्यस्य='विक्रमादित्य' इति प्रसिद्धाभिधेयस्य नरपतेः, अभिरूपाः=पण्डिता विद्वांस एव, भूयिष्ठाः=बहुतराः, यस्यां सा=विद्वद्बहुला, परिषत्=सभा (समुपस्थिताऽस्ति), अस्याञ्च=अत्र परिषदि, कालिदासेन=तन्नामकेन कविना, ग्रथितं=गुम्फितम्, यद् वस्तु= इतिवृत्तं, यत्र कालिदास-ग्रथितवस्तुना=कालिदासरचितवस्तुना, नवेन=नूतनेन, अभिज्ञानशाकुन्तलनामधेयेन='अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' नामकेन (अभिज्ञायते येन तदभिज्ञानं (अङ्गुरीयकं), तेन ज्ञाता शकुन्तला यत्र अभिज्ञानशाकुन्तलनामधेयेन), नाटकेन=दृश्यकाव्यविशेषेण, उपस्थातव्यम्=आराधनीयम्, अस्माभिः (नाटकस्याभिनयं विधाय रङ्गशालायामुपस्थितान् सभ्यान् सन्तोषयाम इति), तत्= तस्मात्, प्रतिपात्रं=प्रतिकुशीलवम् (प्रत्येकाभिनेतृविषये), यत्नः=अभिनयचारुतोत्पादाय विशेषेण आदरः, आधीयताम्=क्रियताम् (तेन सर्वैरभिनेतृभिः स्वस्वकर्मणि सावधानैर्यथा भवितव्यं तथा विधेयम्। अयमेव त्वां प्रति मे नियोग इति भावः)।

नटी—(प्रवेशकर) आर्य! यह मैं (सेवा में) उपस्थित हूँ। आप आज्ञा दीजिए, मैं आपके किस निर्देश का पालन करूँ।

सूत्रधार—आर्ये! शृङ्गारादि नवरस तथा भावों के दीक्षागुरु महाराज विक्रमादित्य की यह सभा प्रचुर विद्वानों से परिपूर्ण है। हमें महाकवि कालिदास की अभिनव कृति 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक नाटक से इस सभा की सेवा (मनोरञ्जन) करनी चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुम प्रत्येक पात्र को आदरपूर्वक समझा दो (अर्थात् जिससे हमारा उद्देश्य पूरा हो सके तुम सयत्न वह बात इस नाटक में भाग लेने वाले पात्रों को समझा दो)।

Actress—(Entering) Dear sir, here I am. Let your honour command what duty is to be executed ?

The Stage Director—Dear lady! This assembly of king Vikramāditya who is the teacher of all sentiments and emotions, is for the most part composed of learned people. Today we indeed have to offer a new drama—'Abhijñāna Śākuntalam' by name. The plot of which has been strung together by great poet Kālidāsa. Let therefore (your) effort be bestowed on every actor.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नटी—सुविदिदप्पओअदाए अज्जस्स ण किंपि परिहाइस्सदि। [सुविदितप्रयोगतया आर्यस्य न किमपि परिहास्यते।]

सूत्रधारः—(सस्मितम्) आर्ये! कथयामि ते भूतार्थम्—

आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ॥ २ ॥

नटी—(सविनयम्) एवं णेदं। अणंतरकरणिज्जं दाणिं अज्जो आणवेदु। [एवमेतत्। अनन्तरकरणीयमिदानीमार्य आज्ञापयतु।]

नटी—सुविदितः=सम्यक् सम्पादितः, प्रयोगः=अभिनयव्यापारः, येन तस्य भावस्तया सुविदितप्रयोगतया, आर्यस्य=भवतः, किमपि=अभिनये कश्चिदपि प्रयोगः, न परिहास्यते=न स्खलितः भविष्यति (अत एव प्रतिपात्रं यत्नाधाने न किञ्चित्प्रयोजनम्)।

सूत्रधारः—(सस्मितम्=ईषद् हास्यं तेन सह यथा सस्मितम्), आर्ये=मान्ये! प्रिये! ते= तुभ्यम्, भूतार्थम्=सत्यविषयम्, कथयामि=भणामि।

अन्वयः—विदुषाम् आपरितोषात् प्रयोगविज्ञानं साधु न मन्ये। (कुतः) शिक्षितानां बलवदपि चेतः आत्मनि अप्रत्ययं भवति ॥ २ ॥

आपरितोषादिति। विदुषां=पण्डितानाम्, आपरितोषात्=सन्तोषप्राप्तिपर्यन्तम्, प्रयोग-विज्ञानम्—प्रयोगस्य=आङ्गिक-वाचिकादिक्रियाकलापस्य, विज्ञानम्=विशिष्टज्ञानम्, साधु= उत्कृष्ट-मेव जातम्, इति तु न मन्ये=न स्वीकरोमि। (कुतः) बलवदपि=सुदृढमपि, शिक्षितानाम्= अभ्यासवतां, चेतः=मनः, आत्मनि=स्वस्मिन् विषये, अप्रत्ययम्=अविश्वसनीयं भवति ॥ २ ॥

भावार्थः—विश्वेऽस्मिन् सुशिक्षिता अपि जना मदीयेयं शिक्षा उत्कृष्टैवेति निश्चेतुं न शक्नुवन्ति। मादृशानाम् अल्पज्ञानां कथा तु तत्र दूरतः परिहरणीयाः (त्वया प्रकटितोऽपि विश्वासो न मयि समुचित इति भावः) ॥ २ ॥

नटी—अभिनय करने की कला से सुपरिचित होने के कारण हमारे पात्रों द्वारा इस अभिनव प्रयोग में भी आपका किसी प्रकार उपहास नहीं होगा।

सूत्रधार—(मुस्कराकर) आर्ये! मैं तुमसे सच कहता हूँ कि—

जब तक विद्वान् हमारे नाट्यकौशल से सन्तुष्ट न हो जायें तब तक मैं अपने 'मंचन' को सफल नहीं मान सकता। क्योंकि मैं इस कार्य को सुचारु रूप से कर लूँगा, ऐसी बलवती धारणा रहने पर भी शिक्षितों के सामने स्वयं अपने मन को विश्वास नहीं होता अर्थात् ये सन्तुष्ट होंगे या नहीं यह सन्देह बना ही रहता है ॥ २ ॥

नटी—(विनयपूर्वक) आपका कथन सत्य है। अब इसके आगे जो करना है, बताइए।

Actress—By reason of your being well aquainted with this field, nothing at all will be ridiculous/funny.

The Director—*(With smile)* Lady! I tell you the truth.

I do not consider my knowledge of representation sound until it satisfies the learned; mind of even the highly educated person. I will be devoid of confidence till I gain their approval. (2)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूत्रधारः—आर्ये! किमन्यदस्याः परिषदः श्रुतिप्रमोदहेतोर्गीतात्करणीयमस्ति।

नटी—अध कदमं उण उदुं अधिकरिअ गाइस्सं। [अथ कतमं पुनः ऋतुमधिकृत्य गास्यामि।]

सूत्रधारः—आर्ये! नन्विममेव तावदचिरप्रवृत्तमुपभोगक्षमं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम्। सम्प्रति हि—

सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः।
प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीयाः॥ ३॥

नटी—(विनयेन सह यथा सविनयम्=विनयपूर्वकम्) एतत्=भवत्कथनम्, एवम्=इत्थम् (समीचीनमेव), अनन्तरकरणीयम्=परस्तात् यत्कर्त्तव्यम् (तत्सर्वमपि), आर्यः=भवान्, आज्ञापयतु=आदिशतु।

सूत्रधारः—आर्ये=मान्ये! अस्याः=पुरोवर्तिन्याः, परिषदः=सभायाः, श्रुतिप्रमोदहेतोः—श्रुतेः=श्रवणस्य, प्रमोदः=आमोदः, तस्य हेतुः=कारणं, तस्मात्=श्रवणसुखसम्पादकात्, गीतात्=गेयपदात्, अन्यत्= अपरम्, किम्=किं करणीयमस्ति? न किमपीत्यर्थः।

नटी—अथेति प्रश्नार्थे, कतमं=कम्, ऋतुमधिकृत्य=आश्रित्य, गास्यामि=गानं विधास्यामि।

सूत्रधारः—आर्ये=प्रिये! ननु इत्यनुनये, अचिरप्रवृत्तम्=सम्प्रति प्रस्तुतम्, उपभोगक्षमम्=सेवनार्हं, ग्रीष्मसमयमेव=ग्रीष्मर्तुमेव, तावदधिकृत्य=आश्रित्य, गीयताम्=गानं क्रियताम्। सम्प्रति हि=इदानीन्तु—

अन्वयः—दिवसाः सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः प्रच्छायसुलभनिद्राः परिणामरमणीयाः, वर्तन्ते इति शेष॥ ३॥

सुभगसलिलेति। सुभगः=अतिमनोहरः, सलिलेषु=जलेषु, अवगाहः=मज्जनं, येषु ते

सूत्रधार—आर्ये! गाने के अतिरिक्त इस सभा के कानों को सुख पहुँचाने वाला और क्या कार्य हो सकता है?

नटी—तो फिर किस ऋतुपरक गीत को गाया जाय?

सूत्रधार—आर्ये! इस समय विद्यमान ग्रीष्मऋतुपरक ही गीत गाओ, क्योंकि इस समय—

जल में स्नान करना अच्छा लगता है। पाटल पुष्प के संसर्ग से वन की वायु सुगन्धित

Actress—(Politily) It is so sir. Let your honour now command what is next to be done?

Director—What else more than to please the ears of the audience.

Actress—Then concerning which season shall I sing?

Director—Dear lady! you please sing just with reference to this very summer season. For at present—

The days on which a plung in water is pleasant, on which the breeze of the forest is fragrant owing to contact with Paṭala flowers,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नटी—तह [तथा]। (इति गायति)

ईषदीषच्चुंबिआइं भमरेहिं उह सुउमारकेसरसिहाइं।
ओदंसअंति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाइं॥ ४॥
[ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः पश्य सुकुमारकेसरशिखानि।
अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि॥]

सूत्रधारः—आर्ये! साधु गीतम्। अहो! रागापहृतचित्तवृत्तिरालिखित इव विभाति सर्वतो रङ्गः। तदिदानीं कतमं प्रयोगमाश्रित्यैनमाराधयामः।

सुभगसलिलावगाहाः, पाटलानां=तन्नामकपुष्पाणाम्, संसर्गेण=स्पर्शेन, सुरभिः=सुगन्धिः, वनवातः=काननपवनः, येषु ते पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः, प्रकृष्टा छाया यत्र तादृशे स्थाने, सुलभाः= अनायासलभ्याः, निद्राः येषु ते प्रच्छायसुलभनिद्राः, परिणामे=परिपाके, रमणीयाः=मनोहराः, दिवसाः अद्य वर्तन्ते, तम् (ग्रीष्मकालम्) अधिकृत्य गीयताम्॥ ३॥

नटी—तथा इति=तथैव करोमि।

अन्वयः—प्रमदाः दयमानाः सत्यः सुकुमारकेसरशिखानि भ्रमरैः ईषदीषच्चुम्बितानि शिरीषकुसुमानि अवतंसयन्ति॥ ४॥

ईषदीषदिति। प्रकृष्टो मदो यासां ताः प्रमदाः=मदविह्वलास्तरुण्यः, दयमानाः=सदयाः सत्यः, सुकुमाराः=कोमलाः, केसराणां=किञ्जल्कानां, शिखा येषां तानि सुकुमारकेसरशिखानि, ईषदीषत्=अनिर्भरं यथा स्यात्तथा, चुम्बितानि=स्पृष्टानि, ईषदीषच्चुम्बितानि, शिरीषकुसुमानि, अवतंसयन्ति=कर्णाभरणं कुर्वन्ति। काव्यलिङ्गमलङ्कारः, उद्गाथा जातिः॥ ४॥

सूत्रधारः—आर्ये=प्रिये! साधु गीतम्=शोभनं गानं समीचीनतया कृतम्, अहो! इत्याश्चर्ये, रङ्गः=रङ्गभूमिः, रागेण-गीतस्वेरण, अपहृता=बलादाकृष्य नीता, चित्तवृत्तिर्यस्य सः रागापहृत-

---

होकर बह रही है। घनी छाया वाले स्थानों में सुखद नींद आती है तथा इस ऋतु के दिवस का अन्त (सन्ध्याकाल) अतीव रमणीय लगता है॥ ३॥

नटी—जो आज्ञा। (गाती है)

भ्रमर-समूह ने धीरे-धीरे भलीभाँति जिसका रसपान कर लिया है ऐसे कोमल केसर युक्त गुच्छों वाले शिरीष के पुष्पों को यौवन-मद में चूर युवतियाँ सदयभाव से अपने क़ानों का आभूषण बना रही हैं॥ ४॥

सूत्रधार—आर्ये! आपने बहुत सुन्दर गीत गाया। (आश्चर्य प्रकट करते हुए) ओह!

---

on which sleep is easily induced in thickly shaded spots and which are charming towards their close.(3)

Actress—As you please. *(Sings)*

Young compassionate women use as ear ornaments (earings) the Śirīṣa flowers, which are only gently kissed by black bees and the tips of whose filaments are very delicate. (4)

Director—Well sung, dear lady. oh! The audience on all

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नटी—णं पढमं ज्जेव अज्जेण आणत्तं अहिण्णाणसउंतलं णाम अउब्बं णाडअं अहिणीअदु त्ति। [ननु प्रथममेव आर्येण आज्ञसमभिज्ञानशाकुन्तलं नाम अपूर्वं नाटकमभिनीयतामिति।]

सूत्रधारः—आर्ये! सम्यगनुबोधितोऽस्मि। अस्मिन् क्षणे खलु विस्मृतं मयैतत्। कुतः—

तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः।
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा॥ ५॥

(इति निष्क्रान्तौ)

इति प्रस्तावना।

चित्तवृत्तिः, (अत एव) सर्वतः=समन्ततः, अलिखितः=चित्रितः, इव, विभाति=शोभते (उत्प्रेक्षालङ्कारः)। तत्=तावत्, कतमं=कम्, प्रयोगम्=अभिनयम्, आश्रित्य= अवलम्ब्य, एनं=रङ्गं, आराधयामः=सेवामहे सन्तोषयामः इति यावत्।

नटी—ननु, प्रथममेव=पूर्वमेव, आर्येण=भवता, आज्ञसम्=निर्दिष्टम्, अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम, अपूर्वम्=अभिनवम्, नाटकम् अभिनीयतामिति।

सूत्रधारः—आर्ये=प्रिये! सम्यगनुबोधितोऽस्मि=त्वया सम्यक् स्मारितः, अस्मिन् क्षणे= काले, खलु=निश्चयेन, विस्मृतं मयैतत्। कुतः—

अन्वयः—अतिरंहसा (अत एव) हारिणा सारङ्गेण एषः राजा दुष्यन्तः इव (हारिणा) तव गीतरागेण प्रसभं हृतः अस्मि।

तवास्मीति। अतिरंहसा=अतिशयवेगशालिना, अत एव, हारिणा=हर्त्तुं शीलमस्येति तेन= दूरमाकर्षतेत्यर्थः, सारङ्गेण=मृगेण, एषः=मृगयाशीलः, राजा दुष्यन्त इव, हारिणा= मनोहारिणा, तव

तुम्हारे राग ने सबका चित्त चुरा लिया है, अतः यह नाट्यसभा चित्रलिखित की भाँति दिखायी दे रही है। इस स्थिति में अब हम किस अभिनय द्वारा इस सभा को प्रसन्न करें?

नटी—आपने पहले ही निर्देश दिया था कि अभिज्ञानशाकुन्तल नामक अपूर्व नाटक का अभिनय किया जाय।

सूत्रधार—आर्ये! आपने ठीक याद दिलाया। इस समय मैं यह बात भूल ही गया था, क्योंकि—

---

sides appears as though painted (drawn) in a picture, due to the charm of your song (melody). Now then, having recourse to what drama shall we entertain it ?

Actress—It is already ordered by your honour. A new drama "Abhijñāna Śākuntalaṁ" by name should be taken up for representation.

Director—Darling! I am well reminded. I have forgotten about it at this moment. How ? I was forcibly carried away by the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति रथारूढः सशरचापहस्तो मृगमनुसरन् राजा सूतश्च)

सूतः—(राजानं मृगञ्चावलोक्य) आयुष्मन्!

कृष्णसारे ददच्चक्षुस्त्वयि चाधिज्यकार्मुके।
मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्॥ ६ ॥

गीतरागेण=गानस्वरेण, प्रसभं=बलात्, हृतः=आकृष्टचित्तः, अस्मि। उपमालङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥५॥

(इति निष्क्रान्तौ=नटीनटौ रङ्गशालातो निर्गतौ।)

इति प्रस्तावना।

(ततः=तदनन्तरम्, शरेण सह वर्तत इति सशरं=बाणयुक्तं, चापं=धनुः, हस्ते यस्य सः सशरचापहस्तः=धृतधनुर्बाणः, राजा=दुष्यन्तः, सूतः=तत्सारथिश्च, मृगं=हरिणम्, अनुसरन्=अनुधावन्, प्रविशति=नाट्यशालायामागच्छति।)

सूतः—(राजानं=दुष्यन्तं, मृगम्=हरिणञ्चावलोक्य) आयुष्मन्=प्रशस्तायुःशालिन्!

अन्वयः—कृष्णसारे अधिज्यकार्मुके त्वयि चक्षुर्ददत् मृगानुसारिणं साक्षात् पिनाकिनम् इव पश्यामि॥६॥

कृष्णसारे इति। कृष्णश्चासौ सारः तस्मिन् कृष्णसारे=पलायमाने कृष्णाख्यमृगविशेषे, ज्यां=गुणम्, अधिकृत्य वर्त्तत इति अधिज्यं, कार्मुकं=धनुः, यस्य तस्मिन् अधिज्यकार्मुके, त्वयि=

अतीव वेगपूर्वक दौड़ते हुए मृग द्वारा दूर पहुँचाये गये इन राजा दुष्यन्त की भाँति तुम्हारे चित्तहारी मधुर राग ने मेरे चित्त को कहीं दूर आकृष्ट कर लिया (पहुँचा दिया) था॥५॥

(दोनों रंगशाला से निकल जाते हैं।)

प्रस्तावना (आमुख) समाप्त।

(इसके पश्चात् रथ पर सवार हाथ में धनुष-बाण लिये राजा दुष्यन्त और सारथी मृग का पीछा करते हुए प्रविष्ट होते हैं।)

सूत—(राजा और मृग को देखकर) आयुष्मन्!

इस कृष्णसार मृग का शरसन्धान किये हुए आपको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों साक्षात् भगवान् शङ्कर मृग का पीछा करते हुए जा रहे हों॥६॥

---

ravishing (abduction) melody of your song like king Duṣyanta here by a very swift (fleet) antelope.

(Exeunt)

Thus ends the prologue

(Then enter in a chariot the king, following a deer and holding a bow with fixed arrow on it in his hand and the charioteer)

Charioteer—(Looking at the king and the deer)

Long lived one! Casting my eye on the black deer and on you, whose bow is strung, I behold, as it were, Lord Śiva in person with the pināka (bow) following the deer. (6)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—सूत! दूरममुना सारङ्गेण वयमाकृष्टाः। सोऽयमिदानीमपि—

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः
पश्चार्द्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
शष्पैरर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥ ७॥

दुष्यन्ते, (च=तुल्यकालताबोधनार्थे) चक्षुर्ददत्=अर्पयन् (अहम्), मृगमनुसरतीति तं मृगानुसारिणम्=मृगमुद्दिश्य अनुवर्त्तमानम्, (त्वां) साक्षात्=प्रत्यक्षं, पिनाकिनं=शिवम्, इव, पश्यामि=अवलोकयामि। उपमाऽलङ्कारः। पलायमाने कृष्णसारे शरसन्धानं कृत्वा अनुधावन्तं त्वाम् अहं मृगानुसारिणं प्रत्यक्षं शिवमिव पश्यामि (भावयामि)।

विशेषः—पुरा दक्षयज्ञे पतिनिन्दामसहमानाया भवान्या अग्नौ शरीरपातमाकर्ण्य वधार्थमागच्छन्तं कुपितं पिनाकिनं दृष्ट्वा दक्षयज्ञो गृहीतमृगस्वरूपः पलायामास। ततः पिनाकी तमनुसरन् शिरश्चिच्छेद॥ ६॥

राजा—सूत! अमुना=पुरोवर्त्तिना, सारङ्गेण=मृगेण, वयं—दूरमाकृष्टाः=आकृष्यानीताः। सोऽयं=सारङ्गः, इदानीमपि=दूरमाकृष्यापि, प्रयातीति भावः।

अन्वयः—अनुपतति स्यन्दने ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुः बद्धदृष्टिः शरपतनभयात् भूयसा पश्चार्द्धेन पूर्वकायं प्रविष्टः इव अर्द्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः शष्पैः कीर्णवर्त्मा उदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरम् उर्व्यां स्तोकं प्रयाति॥ ७॥

ग्रीवाभङ्गेति। अनु=पश्चात्, पतति=धावति, स्यन्दने=रथे, ग्रीवायाः=कन्धरायाः, भङ्गेन=परावृत्त्या, अभिरामं=मनोहरं, ग्रीवाभङ्गाभिरामं, मुहुः=पुनः पुनः, बद्धा दृष्टिर्येन सः बद्धदृष्टिः=दत्तचक्षुः, शरस्य=बाणस्य, पतनभयात्=स्वशरीरे सञ्जातभयेन (हेतुना), भूयसा=बहुलेन,

---

राजा—सूत! यह मृग हमें बहुत दूर खींच लाया है। यह अब भी—

पीछे दौड़ते हुए रथ को (यह मृग) बार-बार गर्दन मोड़कर देखता है, बाण लगने के भय से अपने शरीर का पिछला भाग अपने शरीर के अगले भाग में समेट कर गोलाकार हो जाता है। थकावट तथा भय से मुख खुल जाने के कारण जिसके मुख से आधी चबायी हुयी घास के गिर जाने के कारण मार्ग भर गया है, (ऐसा यह) मृग चौकड़ी भरता हुआ ऐसा जान पड़ता है मानो (यह) आकाश में अधिकतर तथा पृथ्वी पर बहुत कम चल रहा हो॥ ७॥

King—Charioteer! we have been drawn far by this deer. Even now it—

Casting its glance on the chasing chariot in a very graceful manner turning his neck drawing to a great extent the back half portion into the forepart of his body through fear of the descent of the arrow and strewing his track with the half chewed grass dropping from his mouth opened through exhaustion, moves much-more in the sky but a little on the earth, owing to his lofty boundings. (7)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(सविस्मयम्) कथमनुपतत एव मे प्रयत्नप्रेक्षणीयः संवृत्तोऽयं मृगः।

सूतः—उद्घातिनी भूमिरिति रश्मिसंयमनात् रथस्य मन्दीभूतो वेगः; तेनैष मृगो विप्रकृष्टः संवृत्तः। सम्प्रति हि समदेशवर्त्ती, न ते दुरासदो भविष्यति।

राजा—तेन हि मुच्यन्तामभीषवः।

सूतः—यथाज्ञापयत्यायुष्मान्। (इति भूयो रथवेगं सूचयित्वा) आयुष्मन्! पश्य पश्य। एते हि—

पश्चार्द्धेन=देहस्य पश्चाद्भागेन, पूर्वभागम्=देहस्य पूर्वार्द्धभागम्, प्रविष्ट इव (इति गूढोत्प्रेक्षा), अर्द्धावलीढैः=अर्द्धचर्वितैः, श्रमविवृतमुख भ्रंशिभिः—श्रमेण=धावनरूपप्रयासेन, विवृतं=व्यात्तं, यन्मुखं तस्मात् भ्रंशिभिः=अधःपतद्भिः, शष्पैः=तृणैः, कीर्णं=व्याप्तं, वर्त्म=मार्गं यस्य सः कीर्णवर्त्मा, उदग्रम्=उच्चम्, प्लुतं=प्लवनं, यस्य सः तस्य भावस्तस्मात् उदग्रप्लुतत्वाद्=उत्कटोत्प्लवनात्, वियति=आकाशे, बहुतरम्= अधिकम्, उर्व्यां=भूमौ, स्तोकम्=अल्पम्, प्रयाति=गच्छतीति पश्य। स्वभावोक्तिरलङ्कारः। स्रग्धरा-वृत्तम्॥ ७॥

भावार्थः—अस्मत्स्यन्दनमुद्दिश्य शरपतनभयात् मण्डलीव भूत्वा धावन् मृगः स्वकीयोत्कटोत्प्लवनात् आकाशे अधिकं भूमौ तु अत्यल्पं गच्छन् इव प्रतिभाति॥७॥

(सविस्मयम्=साश्चर्यम्) अयं मृगः, अनुपततः=पश्चाद्धावतः एवः मे=मम, कथं, प्रयत्नेन= प्रयासेन, प्रेक्षणीयः=निरीक्षणीयः, संवृत्तः=सञ्जातः।

सूतः—उद्घातयति=पादस्खलनं जनयतीति, उद्घातिनी=पादस्खलनयोग्या, भूमिः=पृथ्वी (मार्गः), (इति हेतोः) रश्मीनां=प्रग्रहाणां, रथस्य=स्यन्दनस्य, मन्दीभूतः=अल्पीभूतः, वेगः= गतिः। तेन=हेतुना, एष मृगः=अयं हरिणः, विप्रकृष्टः=दूरवर्ती, संवृत्तः=सञ्जातः, सम्प्रति=इदानीं, समदेशवर्त्ती=समतलभूमिवर्ती (मृगः इति शेषः), अत एंव ते=तव, दुरासदः=दुर्लभः, न भविष्यति।

राजा—तेन हि=समतलप्रदेशवर्त्तित्वेन हेतुना, अभीषवः=प्रग्रहाः, मुच्यन्ताम्=शिथिलीक्रियन्ताम्।

(आश्चर्य के साथ) मैं इसका पीछा कर ही रहा हूँ कि देखते-ही-देखते यह दृष्टि से इतनी दूर पहुँच गया है कि कठिनाई से ही दिखायी पड़ता है।

सूत—यहाँ की भूमि ऊबड़-खाबड़ है। अतः बागडोर खिंची रहने से रथ की गति मन्द हो गई थी, इसीलिए यह मृग दूर निकल गया। अब रथ समतल भूमि पर आ पहुँचा है अतः अब इसका मिलना कठिन न होगा।

राजा—तो रास ढीली करो।

(With surprise) How then has he become visible to me with efforts, though I am closely following him.

Charioteer—Longlived one! I have restrained the speed of the chariot by drawing the reins as the ground was not equal. Therefore the deer there advanced to a very long distance. Now the chariot is on level ground, so it will not be difficult to get at by you.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुक्तेषु रश्मिषु निरायतपूर्वकायः
स्वेषामपि प्रसरतां रजसामलङ्घ्याः।
निष्कम्पचामरशिखाश्च्युतकर्णभङ्गा
धावन्ति वर्त्मनि तरन्ति नु वाजिनस्ते॥ ८॥

राजा—(सहर्षम्) नूनमतीत्य हरिणं हरयो वर्त्तन्ते। यतः—

सूतः—यथाऽऽज्ञापयत्यायुष्मान्=यथोपदिशति आयुष्मान्। (इति=एवं, भूयः=पुनः, रथस्य=स्यन्दनस्य, वेगं सूचयित्वा) आयुष्मन्! पश्य, पश्य।

अन्वयः—रश्मिषु मुक्तेषु निरायतपूर्वकायः तथा प्रसरतां स्वेषां रजसाम् अपि अलङ्घ्याः (तथा) निष्कम्पचामरशिखाश्च्युतकर्णभङ्गाः ते वाजिनः वर्त्मनि धावन्ति तरन्ति नु॥ ८॥

मुक्तेष्विति। रश्मिषु=प्रग्रहेषु, मुक्तेषु=शिथिलीकृतेषु, निरायतः=नितरां दीर्घः, पूर्वकायः=देहपूर्वभागः, येषान्ते निरायतपूर्वकायः, तथा, प्रसरतां=प्रचलताम्, स्वेषां=स्वखुरोत्थानाम्, रजसामपि=धूलिनामपि, अलङ्घ्याः=अनतिक्रमणीयाः, तथा निष्कम्पाः=निश्चलाः, चामराणाम्=शिरोलोम्नां, शिखाः=अग्रभागाः, येषान्ते निष्कम्पचामरशिखाः, (तथा) च्युताः=अपगताः, कर्णयोर्भङ्गाः=अवनतयः, येषान्ते च्युतकर्णभङ्गाः, ते=तव, वाजिनः=अश्वाः, वर्त्मनि=मार्गे, धावन्ति, नु=किम्, तरन्ति=आकाशे प्लवन्ते नु किम्। स्वभावोक्तिरलङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम् (प्रग्रहेषु शिथिलीकृतेषु त्वरमाणा अश्वाः एवं धावन्ति यथाऽऽकाशे प्लवन्ति)॥ ८॥

राजा—(सहर्षम्=सानन्दम्) नूनम्=निश्चयेन, हरयः=अश्वाः, हरिणं=लक्ष्यभूतमृगम्, अतीत्य=अतिक्रम्य वर्तन्ते।

सूत—जैसी आयुष्मान् की आज्ञा। (इस प्रकार पुनः रथ का वेग दिखाकर) आयुष्मान्! देखो-देखो ये घोड़े—

लगाम ढीली कर देने पर ये सुदीर्घ शरीर के पूर्वभाग वाले घोड़े अपने खुरों से उठी हुई धूल से आगे रहते हैं। इनके मस्तक की कलगी जरा भी नहीं हिलती और इनके कान भी निष्कम्प खड़े हुए हैं। यह सब देखकर ऐसा जान पड़ता है कि आपके घोड़े पृथ्वी पर नहीं आकाश में उड़ रहे हैं॥ ८॥

राजा—(हर्षपूर्वक) निःसन्देह हमारे घोड़ों ने हरिण को पछाड़ दिया है, क्योंकि—

King—Then loosen the reins.

Charioteer—As the longlived one commands. *(Acting the speed of the chariot)* Longlived one! look! look! The reins being loosened, these horses gallop along as if with impatience of the speed of the deer, with the forepart of their bodies fully stretched out, with the tips of their chowries quiverless, with thier ears steady and erect and becoming incapable of being over taken even by the dust raised by their own hooves. (8)

King—*(With joy)* Really our horses are outstripping the deer. For—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदद्धा विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो-
र्न मे दूरे किञ्चित् क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्॥ ९॥

सूतः—पश्यैनं व्यापाद्यम्।

(राजा शरसन्धानं नाटयति।)

(नेपथ्ये) भो भो राजन्! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

अन्वयः—रथजवात् यत् आलोके सूक्ष्मम् आसीत् तत् सहसा विपुलतां व्रजति। यद् अद्धा विच्छिन्नं तत् कृतसन्धानमिव भवति। यद् प्रकृत्या वक्रं तदपि समरेखं (भवति), मे नयनयोः क्षणमपि न दूरे न वा पार्श्वे (विद्यते)॥ ९॥

यदालोक इति। रथस्य=स्यन्दनस्य, जवः=वेगः, तस्मात् रथजवात्, यद्=वस्तु, आलोके= दूराद्दर्शने, सूक्ष्मम्=लघीयसी, आसीत्, तद्=वस्तु, सहसा=अकस्मादेव, विपुलताम्=विशालताम्, व्रजति=प्राप्नोति, यद्वस्तु, अद्धा=तत्त्वत एव, विच्छिन्नं=पार्थक्ययुक्तमासीत्, तद्वस्तु, कृतसन्धान-मिव=कृतसन्धिवत्, भवति। यद्वस्तु, प्रकृत्या=स्वभावत एव, वक्रं=कुटिलमासीत्, तद्वस्तु अपि, समरेखं—समा रेखा=भोगः, यस्य तत्, भवति, (तथा) किञ्चिद् वस्तु, मे=मम, नयनयोः=नेत्रयोः, क्षणमपि=स्वल्पकालमपि, न दूरे, न वा पार्श्वे=सन्निधाने, विद्यते (इत्येवं प्रतिभाति)॥ ९॥

सूतः—सूतः=सारथिः, व्यापाद्यम्=वध्यम्, एनं=हरिणं, पश्य=अवलोकय।

(राजा=दुष्यन्तः, शरसन्धानं=चापे शरारोपम् (हरिणवधायेति भावः), नाटयति=चेष्टया प्रकटीकरोति।)

रथ के वेग से जो वस्तु पहले सूक्ष्म दीख पड़ती थी वही सहसा विशालकाय हो जाती है। जो वस्तु स्वभाव से ही पृथक्-पृथक् थी वह जुड़ी हुयी-सी दिखायी देती है। जो वस्तु स्वभावतः टेढ़ी है वह नेत्रों को सीधी दिखायी देती है। इस प्रकार कोई भी वस्तु मेरे पास या दूर नहीं रह जाती अर्थात् दूर की वस्तु निकट और निकट की वस्तु देखते-ही-देखते दूर हो जाती है॥ ९॥

सूत—इसे शिकार होता हुआ देखो (यह शिकार सामने है, इसे देखिए)।

(राजा धनुष पर बाण चढ़ाने का अभिनय करता है।)

(नेपथ्य में) हे राजन्! यह आश्रम का मृग है, इसे न मारिये, न मारिये।

The thing which appears minute (very small) to sight suddenly attains magnitude (great), which really is disjointed becomes as if united, even that thing which by nature is crooked, appears straight to my eyes, to me nothing even for a moment remains at a distance, nor at my side, by reason of the speed (velocity) of the chariot. (9)

Charioteer— Behold him being killed.

(The king acts—taking aim with an arrow)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूतः—(आकर्ण्य अवलोक्य च) आयुष्मन्! अस्य खलु ते बाणपातपथवर्त्तिनः कृष्णसारस्यान्तरायौ तपस्विनौ संवृत्तौ।

राजा—(ससम्भ्रमम्) प्रगृह्यन्तामभीषवः।

सूत—यथाज्ञापयत्यायुष्मान्। (इति तथा करोति)

(ततः प्रविशति सशिष्यो वैखानसः)

वैखानसः—(हस्तमुद्यम्य) राजन्! आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः।

(नेपथ्ये=यवनिकामध्ये) भो भो राजन्! इति न हन्तव्यो न हन्तव्य इति च सम्भ्रमे द्विर्वचनम्। आश्रममृग इत्यनेनात्र हिंसा सर्वथैवानुचिता इति।

सूतः—(आकर्ण्य=नेपथ्योत्थवाक्यं श्रुत्वा, अवलोक्य=शब्दाभिमुखं दृष्ट्वा च) आयुष्मन्! अस्य=पुरोवर्तिनः, ते=तव, बाणपातस्य पन्थाः बाणपातपथः, तत्र वर्त्तते इति बाणपातपथवर्ती तस्य बाणपातपथवर्त्तिनः, कृष्णसारस्य=मृगस्य (वधकार्ये), अन्तरायौ=मृगरक्षणाय बाणपातनिवारकत्वेन विघ्नभूतौ, तपस्विनौ, संवृत्तौ=उपस्थितौ।

राजा—(ससम्भ्रमम्=सत्वरम्, प्रगृह्यन्ताम्=समाकृष्यन्ताम्, अभीषवः=वाजिरज्जवः (रथः स्थाप्यतामिति भावः)।

सूतः—आयुष्मान्! यथाऽऽज्ञापयति=यथा आदिशति तथैव करोमि (इति तथा करोति, अभीषून् प्रगृह्य रथं स्थापयति)।

(ततः=तदनन्तरं, प्रविशति=रङ्गमञ्चे समायाति, सशिष्यः=शिष्येण सह वर्तमानः, वैखानसः=एतन्नामकः ऋषिः।

सूत—(उक्त शब्द सुनकर तथा सामने देखकर) आयुष्मन्! तुम्हारे बाण के निशाने के मार्ग में विद्यमान इस कृष्णसार मृग के सामने विघ्न रूप में दो तपस्वी आ उपस्थित हुए हैं अर्थात् तुम्हारे बाण और हरिण के मध्य तपस्वी अन्तराय (विघ्न) अथवा आड़ बनकर आ पहुँचे हैं।

राजा—(विस्मयपूर्वक) रास खींचो।

सूत—जैसी आयुष्मान् की आज्ञा। (उसी प्रकार करता है, रास खींचता है)

(इसके बाद शिष्य के साथ वैखानस का प्रवेश)

वैखानस—(हाथ उठाकर) राजन्! यह आश्रम का मृग है। इसे न मारिये, न मारिये।

(Behind the scenes) O' O' king! that is a deer belonging to the hermitage. He should not be killed. He should not be killed.

Charioteer—(Hearing and observing) Longlived one! hermits indeed have arrived intervening of the deer, who is with in the range of your arrow.

King—(Hastily) Seize the rein of the horses (to control with a bridle).

Charioteer—As instructs longlived one *(stops the chariot)*.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे तूलराशाविवाग्निः।
क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता वज्रसाराः शरास्ते॥ १०॥
तदाशु कृतसन्धानं प्रतिसंहर सायकम्।
आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्त्तुमनागसि॥ ११॥

वैखानसः—(हस्तमुद्यम्य=हरिणवधवारणाय करमुन्नमय्य) राजन्! आश्रममृगोऽयं— अयं=एषः पुरोवर्ती, आश्रममृगः=आश्रमपाल्यमानः हरिणः अस्ति, (अत एव) न हन्तव्यो न हन्तव्यः—सम्भ्रमे द्विर्वचनम्।

अन्वयः—तूलराशौ अग्निरिव मृदुनि अस्मिन् मृगशरीरे अयं बाणः न खलु न खलु सन्निपात्यः बत। हरिणकानाम् अतिलोलं जीवितं क्व च निशितनिपाताः वज्रसाराः ते शराः च क्व?॥ १०॥

न खल्विति। तूलस्य राशिः, तस्मिन् तूलराशौ=कार्पाससमूहे, अग्निरिव=वह्निरिव, मुदुनि=सुकुमारे, अस्मिन् मृगशरीरे=हरिणदेहे, अयं बाणः=तव करस्थितशरः, न खलु न खलु सन्निपात्यः=नैव निक्षेप्यः। (बाणस्य न निक्षेपणे कारणं दर्शयति) बतेति खेदप्रकाशः, अल्पा हरिणा हरिणकास्तेषाम्=क्षुद्रमृगाणाम्, अतिलोलम्=अतीव चञ्चलम् (स्वल्पमात्रबाधया विनाशित्वात् इति भावः), जीवितं=जीवनम्, क्व च=कुत्र च वर्त्तते इति शेषः, निशिताः=तीक्ष्णाः, निपाताः= अग्रभागाः, येषान्ते निशितनिपाताः, वज्रस्येव-कुलिशवत्, सारः=बलं, येषान्ते वज्रसाराः =अतिकठिनाः, ते=तव, शराः=बाणाश्च क्व? महदन्तरमेतयोरिति भावः। अत्र अर्थान्तरन्यासो नामालङ्कारः, मालिनी नाम वृत्तम्॥ १०॥

भावार्थः—कार्पासव्यूहे अग्निरिव सुकुमारे अस्मिन् मृगशरीरे—अयं प्रखरशरः नैव निक्षेप्यः। क्षुद्रमृगाणाम् अतिलोलं जीवनं कुत्र च वर्त्तते। तीक्ष्णाग्रभागाः वज्रसाराः तव शराश्च क्व वर्तन्ते? (नखच्छेद्ये कुठाराघातवत्तस्मिंस्ते बाणप्रहरणमयुक्तमिति भावः।)॥ १०॥

रूई के ढेर पर अग्नि के समान इस मृग के कोमल शरीर पर यह बाण मत चलाइए। कहाँ तो मृगों का अत्यन्त चञ्चल (त्वरित नाशवान्) जीवन और कहाँ तीखे और वज्र के समान कठोर आपके बाण?॥ १०॥

इसलिए अब आप धनुष पर चढ़ाये हुए अपने बाण को शीघ्र ही उतार लीजिए,

---

(Then enters Vaikhānasa with his pupils)

Vaikhānasa—(Raising his hand) O' king! this dear belongs to the hermitage. He should not be killed. He should not be killed. Not indeed! not indeed! Should this arrow be made to descend upon the delicate body of this deer, like fire upon a heap of cotton! Where alas is the extremely frail (morally weak) life of poor deer and where your arrows of sharp points and adamantine strength! (10)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सप्रणामम्) एष प्रतिसंहृत एव (इति यथोक्तं करोति)।

वैखानसः—(सहर्षम्) सदृशमेवैतत् पुरुषवंशप्रदीपस्य भवतः।

जन्म यस्य पुरोर्वंशे युक्तरूपमिदं तव।
पुत्रमेवङ्गुणोपतं चक्रवर्त्तिनमाप्नुहि॥ १२॥

अन्वयः—तत् कृतसन्धानं सायकम् आशु प्रतिसंहर। (यतः) वः शस्त्रम् आर्त्तत्राणाय अनागसि प्रहर्त्तुं न॥ ११॥

तदाश्विति। तत्=तस्मात् कारणात्, आश्रममृगस्य वध्यमानत्वाभावादित्यर्थः, कृतं सन्धानं यस्य तं कृतसन्धानम्=मृगोपरि निक्षेपणाय विहितसन्धानम्, सायकम्=बाणम्, आशु=शीघ्रम्, प्रतिसंहर=प्रत्यावृत्त्य स्वं स्थानं प्रापय। (यतः) वः=युष्माकम्, शस्त्रं=बाणादि, आर्त्तानां=पीडितानां, त्राणाय=रक्षणाय (अस्ति), अनागसि=निरपराधे प्राणिनि, प्रहर्तुं न=प्रक्षेप्तुं न। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः। अर्थान्तरन्यास इति केचित्॥ ११॥

भावार्थः—तस्मात् आश्रममृगस्य वध्यमानत्वाभावात् कृतसन्धानं बाणं शीघ्रं प्रतिसंहर। यतः युष्माकं शस्त्रं पीडितानां रक्षणाय एव भवति न तु निरपराधे प्राणिनि प्रक्षेप्तुम्॥ ११॥

राजा—(सप्रणामम्=प्रणामपुरस्सरं) एषः=बाणः, प्रतिसंहृतः=निवर्त्तितः एव। (इति=एवमुक्त्वा, यथोक्तं करोति=बाणं तूणीरे निक्षिपति)

वैखानसः—(सहर्षम्) एतत्=बाणप्रतिसंहरणम्, पुरुवंशप्रदीपस्य=पुरुवंशप्रकाशकस्य, भवतः=दुष्यन्तस्य, सदृशमेव=सङ्गतं खलु।

अन्वयः—पुरोः वंशे यस्य जन्म तस्य तव इदं युक्तरूपम्। एवं गुणोपेतं चक्रवर्त्तिनं पुत्रमाप्नुहि॥ १२॥

जन्मेति। पुरोः=तदाख्ययययातिनन्दनस्य राज्ञः, वंशे=अन्वये, यस्य=ते जन्म, तस्य, तव=ते,

---

क्योंकि आपका शस्त्र दुःखियों का दुःख दूर करने के लिए है न कि निरपराधों के वध के लिए॥ ११॥

राजा—(प्रणाम करते हुए) लीजिए, यह उतरा हुआ ही है। (यह कहकर अपने कथनानुसार बाण उतार लेता है।)

वैखानस—(प्रसन्नतापूर्वक) पुरुवंश के दीपक आपके लिए यह उचित ही है।

जिसका जन्म पुरु के वंश में हुआ है, उसके लिए ऐसा करना समीचीन ही है। (इस

Therefore withhold your arrow which has been well-aimed because your weapon is for the protection of the distressed and not to strike at the innocent. (11)

King—(With salutations) Here it is withdrawn *(does as said).*

Vaikhānasa**—**This is worthy of you who are the burning lamp of Puru's race.

This exceedingly becomes you, whose birth is in the dynasty

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(इतरोऽपि हस्तमुद्यम्य) सर्वथा चक्रवर्त्तिनं पुत्रमाप्नुहि।

राजा—(सप्रणामम्) प्रतिगृहीतं ब्राह्मणवचः।

वैखानसः—राजन्! समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम्। एष चास्मद्गुरोः कण्वस्य कुलपतेः साधिदैवत एव शकुन्तलया अनुमालिनीतीरमाश्रमो दृश्यते। न चेदन्यकार्यातिपातस्तदत्र प्रविश्य प्रतिगृह्यतामतिथिसत्कारः। अपि च—

इदम्=बाणप्रतिसंहरणरूपम्, युक्तरूपम्=अतिशयेन युक्तम्। (इत्युक्त्वा आशीः प्रयच्छति) एवं गुणैः=दाक्षिण्यादिभिः, उपेतं=युक्तम्, चक्रवर्त्तिनं=सार्वभौमम्, पुत्रमाप्नुहि=लभस्व॥ १२॥

(इतरोऽपि=अन्यः सहागतः शिष्यः अपि, हस्तमुद्यम्य=हस्तमुत्थाप्य, आशीः प्रयच्छतीति शेषः।) सर्वथा=बाढम्, चक्रवर्त्तिनं=सार्वभौमं, पुत्रमाप्नुहि=लभस्व।

राजा—(सप्रणामम्=प्रणामपुरस्सरं) ब्राह्मणवचः=आशीर्वचनम्, प्रतिगृहीतम्=अङ्गीकृतम्।

वैखानसः—राजन्! समिधां=होमीयकाष्ठानाम्, आहरणाय=आनयनाय (संग्रहणाय), प्रस्थिताः=चलिताः, वयम्=तापसा इति शेषः। एषः=पुरो दृश्यमानः, अस्मद्गुरोः=अस्माकमुपाध्यायस्य, कुलपतेः=अयुतशिष्यपोषकस्य, कण्वस्य=तदाख्यमुनेः, शकुन्तलयैव=तदाख्यकण्वदुहित्रैव, साधिदैवतः=साधिष्ठातृजनः (शकुन्तलाधिष्ठित इत्यर्थः), आश्रमः=पर्णशालीया-

---

स्थिति में हमारा आशीर्वाद है कि—) तुम अपने ही समान गुणयुक्त चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त करो॥ १२॥

(दूसरा शिष्य भी हाथ उठाकर आशीर्वाद देता है)—सर्वथा चक्रवर्ती पुत्र ही आप प्राप्त करें।

राजा—(प्रणाम कर) मैं ब्राह्मण के वचन (आशीर्वाद) को अङ्गीकार करता हूँ।

वैखानस—राजन्! हमलोग समिधा लाने के लिए आश्रम से निकले हैं। यह हमारे कुलपति महर्षि कण्व का आश्रम मालिनी नदी के तट पर दिखायी दे रहा है। इस समय वहाँ हमारी गुरुपुत्री शकुन्तला विद्यमान है। यदि आपके किसी अन्य कार्य में व्याघात न पहुँचता हो तो आप वहाँ जाकर आतिथ्य ग्रहण कीजिए। क्योंकि—

---

of king Puru. (May you) obtain a son, endowed with similar virtues, (who would be) an emperor of this universe. (12)

(Other also—raising his hand syas) Assuredly (utterly) (you would) obtain a son, who would be an emperor.

***King**—(with a bow)* The words of a Brāhmana like you are accepted.

Vaikhānasa— O' king! we have set out to collect sacrificial sticks (wood). And this, on the bank of Mālinī river, is in truth, the religious domicile of the great sage Kanva. If no other work is interfered with, then enter and accept the rites of hospitality. And more over—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धर्म्यास्तपोधनानां प्रतिहतविघ्नाः क्रियाः समवलोक्य।
ज्ञास्यसि कियद्भुजो मे रक्षति मौर्वीकिणाङ्क इति॥ १३॥

राजा—अपि सन्निहितोऽत्र कुलपतिः ?

वैखानसः—इदानीमेव दुहितरं शकुन्तलामतिथिसत्कारायादिश्य दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीर्थं गतः।

वासः, अनुमालिनीतीरं=मालिनीति नाम काचिन्नदी तस्याः तीरे, दृश्यते=अवलोक्यते (वर्तत इत्यर्थः)। अन्यकार्यातिपातः-अन्यस्य कार्यस्य, अतिपातः=अत्ययः, न चेत्=यदि न स्यात्, तत्= तदा, अत्र=आश्रमे, प्रविश्य, अतिथिसत्कारः=आतिथ्यम्, प्रतिगृह्यताम्=स्वीक्रियताम्। अपि च= किं च—

अन्वयः—धर्म्याः प्रतिहतविघ्नाः तपोधनानां क्रियाः समवलोक्य मौर्वीकिणाङ्कः मे भुजः कियद्रक्षति (इति त्वं) ज्ञास्यसि॥ १३॥

धर्म्या इति। धर्मादनपेता धर्म्याः=धर्मयुक्ताः, प्रतिहताः=अपसारिताः, विघ्नाः यासां तास्तथोक्ताः, तपो धनं येषां तेषां तपोधनानां=तपस्विनाम्, क्रियाः=यज्ञादिकार्याणि, समवलोक्य= सम्यग् अवेक्ष्य, मौर्व्याः=धनुर्गुणस्य, यः किणः=तच्चालनजनितचिह्नविशेषः, स एव अङ्कः=चिह्नं भूषणं वा, यत्र सः मौर्वीकिणाङ्कः, मे=मम (दुष्यन्तस्य), भुजः=बाहुः, कियद्रक्षति=किं परिमाणकं भयाद्रक्षति, (इति त्वं) ज्ञास्यसि॥ १३॥

भावार्थः—धर्मयुक्ताः अपसारितविघ्नाः तपस्विनां यज्ञादिकमवलोक्य मौर्वीकिणाङ्कः मे बाहुः किंपरिमाणकं भयाद्रक्षति इति त्वं ज्ञास्यसि॥ १३॥

राजा—अपि=इति प्रश्ने, अत्र=आश्रमे, कुलपतिः=महर्षिः कण्वः, सन्निहितः=वर्त्तते वा ?

वैखानसः—इदानीमेव=सम्प्रति हि, दुहितरं=पुत्रीं शकुन्तलाम्, अतिथिसत्काराय= अभ्यागतपूजायै, आदिश्य=आज्ञाप्य, अस्याः=शकुन्तलायाः, प्रतिकूलं=विपरीतं, दैवं=भाग्यं

वहाँ धर्मयुक्त निर्विघ्न सम्पादित होती हुई यज्ञादि क्रियाओं को देखकर आप यह जान सकेंगे कि धनुष की डोरी चढ़ाने से रगड़ खायी हुयी आपकी भुजा (किस प्रकार) कितने व्यक्तियों की रक्षा करती है ?॥ १३॥

राजा—क्या कुलपतिजी यहीं हैं ?

वैखानस—अभी-अभी अपनी कन्या शकुन्तला को अतिथिसत्कारार्थ आदेश देकर उसके प्रतिकूल दैव (भाग्य) की शान्ति के लिए सोमतीर्थ पर गये हैं।

Beholdig the pleasing rites of those whose wealth is their penance, performed without any hindrances, those will know how much they arm marked with the sear of the bow-string defends. (13)

King—Is the patriarch of the family or chancellor at home?

Vaikhānasa—Just now, having directed his daughter Śakuntalā to offer hospitality to guests, he has gone to Somatīrtha to pacify her bad-luck (adverse fate).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भवतु। तामेव द्रक्ष्यामि। सा खलु विदितभक्तिर्मां महर्षये निवेदयिष्यति।

वैखानसः—साधयामस्तावत्। (इति सशिष्यो निष्क्रान्तः)

राजा—सूत! नोदय अश्वान्। पुण्याश्रमदर्शनेनात्मानं पुनीमहे।

सूतः—यथाज्ञापयत्यायुष्मान्। (इति भूयो रथवेगं रूपयति)

राजा—(समन्तादवलोक्य) सूत! अकथितोऽपि ज्ञायत एवायमाभोगस्तपोवनस्य।

पूर्वजन्मकर्मदोषं वा, शमयितुम्=अनुष्ठानादिभिः शान्तिमानेतुं, सोमतीर्थं=तन्नामकपावनधाम, गतः=प्रस्थितः।

राजा—भवतु=आत्मसंवेदद्योतकम्, तामेव=शकुन्तलामेव, द्रक्ष्यामि=पश्यामि। सा=शकुन्तला, खलु=इति निश्चये, विदिता=अवगता, भक्तिः=अनुरागः, यया सा विदितभक्तिः, महर्षये=कण्वाय, मां=भक्तिमन्तं, निवेदयिष्यति (सा मम भक्तिं कण्वाय निवेदयिष्यतीति भावः)।

वैखानसः—तावत्=तदा, साधयामः=गच्छामः। (इति सशिष्यः=अन्तेवासिसहितः, निष्क्रान्तः=निर्गतः।)

राजा—सूत! नोदय=प्रेरय, अश्वान्, पुण्यः=पवित्रः, य आश्रमस्तस्य दर्शनेन आत्मानं, पुनीमहे=पवित्रीकुर्महे।

सूतः—यद्=यथा, आज्ञापयति=निर्दिशति, आयुष्मान्=भवान् (इति भूयः=पुनः, रथवेगं, रूपयति=सूचयति)।

राजा—(समन्ताद्=परितः, अवलोक्य=दृष्ट्वा) सूत! अकथितोऽपि=अनुक्तोऽपि, तपोवनस्य, अयमाभोगः=सीमा, परिपूर्णता, ज्ञायते एव=अनुमीयते खलु।

राजा—ठीक है, मैं उसी (शकुन्तला) को देखूँगा। वह निश्चय ही हमारी भक्ति देखकर महर्षि कण्व को हमारे सम्बन्ध में बता देगी।

वैखानस—तो अब हम चलते हैं। (**यह कहकर शिष्यों सहित चला जाता है।**)

राजा—सूत! घोड़ों को बढ़ाओ। इस पवित्र आश्रम के दर्शन से स्वयं को पवित्र करें।

सूत—जैसी आयुष्मान् की आज्ञा (**फिर अपने रथ का वेग दिखाता है**)।

राजा—(**चारों ओर देखकर**)—सूत! बिना कहे ही यह विदित हो जाता है कि यह समस्त तपोवन का ही क्षेत्र है।

King—Well, I shall see herself. She certainly will report me to sage Kaṇva as one whose devotion is known.

Vaikhānasa—Meanwhile we walk along. ***(Exit with pupils)***

King—Charioteer! Drive on the horses. We shall purify overselves with the sight of this holy hermitage.

Charioteer—As the long-lived one commands ***(Again acts the speed of the chariot).***

King—(Looking around) Charioteer! Though untold, it is indeed known that this is the extension of the penance grove.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूतः—कथमिव ?

राजा—किं न पश्यति भवान्? इह हि—

नीवाराः शुक-कोटरार्भक-मुख-भ्रष्टास्तरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा-
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिःष्यन्दरेखाङ्किताः॥ १४॥

सूतः—कथमिव ?=केन प्रकारेण ?

राजा—किं न पश्यति भवान् तपोवनस्याभोगानिति, हि=यस्मात्, इह=अत्र तपोवने—

अन्वयः—तरूणामधः शुककोटरार्भकमुखभ्रष्टाः नीवाराः (सन्ति), क्वचित् इङ्गुदीफलभिदः (अत एव) प्रस्निग्धाः एव उपलाः सूच्यन्ते, विश्वासोपगमात् अभिन्नगतयः मृगाः शब्दं सहन्ते, तोयाधारपथाः च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः दृश्यन्ते॥ १४॥

नीवारा इति। तरूणां=वृक्षाणाम्, अधः=तलप्रदेशे, शुकानां=तन्नामकपक्षिविशेषाणाम्, ये कोटरार्भकाः=तरुविवरस्थशुकशावकाः, तेषां मुखेभ्यः=चञ्चुपुटेभ्यः, भ्रष्टाः=विगलिताः, नीवाराः= तृणधान्यानि (दृश्यन्ते)। क्वचित्=कुत्रचित् अथवा कस्मिन्नपि भागे, इङ्गुदीनां=तापसतरूणाम्, फलानि भिन्दन्ति=विदारयन्तीति इङ्गुदीफलभिदः, अत एव, प्रस्निग्धाः=प्रकर्षेण चिक्कणा एव, उपलाः=प्रस्तराः, सूच्यन्ते=प्रकाश्यन्ते। विश्वासोपगमात्=मुनीनां वात्सल्यलाभात्, अभिन्ना= यथापूर्वमवस्थिता, गतिः=सञ्चारः, येषान्ते अभिन्नगतयः, मृगाः=हरिणाः, शब्दं=रथोत्थध्वनिं, सहन्ते=आकर्णयन्ति इति यावत् (शब्दमसहमाना न धावन्ति इति भावः), तथा तोयाधार-पथाः=उटजाज्जलाशयगमनमार्गाः, च=समुच्चये, वल्कलानां=परिहिततरुत्वचां, शिखाः=अग्राणि,

---

सूत—कैसे ? (आप 'यह आश्रम है' यह किस आधार पर कह रहे हैं ?)

राजा—क्या आप नहीं देख रहे हैं कि यहाँ—

घोंसले में विद्यमान शुकशावकों के मुख से गिरे हुए नीवार धान्य के कण नीचे पड़े हैं। कहीं-कहीं इंगुदी के फल तोड़ने से चिकने बने हुए पत्थर दिखाई दे रहे हैं। मानव-साहचर्यजनित विश्वास के कारण यहाँ के मृग रथ की ध्वनि से विचलित नहीं हो रहे हैं तथा जलाशय की ओर जाने वाले मार्ग भीगे वल्कल के अग्रभाग से टपकने वाले जल से चिह्नित हो रहे हैं॥ १४॥

Charioteer—How you consider it as penance-grove?

King—Do you not see? For here are the grains of wild rice under the trees, fallen from the mouths of hollows with baby parrots inside, somewhere stones, excessively oily, are seen betrayed (to break) as crackers of Ingudi fruit; the fawn, whose gait is undisturbed owing to the acquisition of confidence, stand the sound of the chariot and the paths to water ponds are marked with lines of the dripping from the skirts of bark-garments. (14)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूलाः
भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोद्गमेन।
एते चार्व्वागुपवनभुवि च्छिन्नदर्भाङ्कुरायां
नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति॥ १५॥

तासां निःष्यन्देन=जलधारया, याः रेखास्ताभिरङ्किताः=चिह्निताः, दृश्यन्त इति शेषः। काव्यलिङ्गानुमानसमुच्चयस्वभावोक्तयोऽलङ्काराः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १४॥

भावार्थः—आश्रमसूचकचिह्नानि सूचयन् राजा कथयति—पश्य, वृक्षाणां तलप्रदेशे तरुकोटरस्थशुकशावकचञ्चुविगलिताः नीवाराः दृश्यन्ते। क्वचित् इङ्गुदीफलभिदः सुचिक्कणा उपला आश्रममेवायं इति प्रकाश्यन्ते। विश्वासोपगमात् यथापूर्वमवस्थिता मृगाः रथोत्थध्वनिमाकर्ण्य इतस्ततः न धावन्ति। च उटजाज्जलाशयगमनमार्गाः वल्कलशिखारेखाङ्किता दृश्यन्ते अत एव आश्रमप्रदेशोऽयं इति निश्चिनोमि॥ १४॥

अपि च=अन्यच्च—

अन्वयः—पवनचपलैः कुल्याम्भोभिः शाखिनः धौतमूलाः (सन्ति), आज्यधूमो-द्गमेन किसलयरुचां रागः भिन्नः, तथा एते हरिणशिशवः नष्टाशङ्काः छिन्नदर्भाङ्कुरायां उपवनभुवि अर्वाक् मन्द-मन्दं चरन्ति॥ १५॥

कुल्याम्भोभिरिति। पवनेन=वायुना, चपलैः=चलितैः, कुल्यानां=कृत्रिमसरिताम्, अम्भोभिः=जलैः, शाखिनः=तटस्थिताः वृक्षाः, धौतानि=क्षालितानि, मूलानि येषान्ते धौतमूलाः (भवन्ति), तथा, आज्यस्य=घृतस्य (वह्नौ हुतस्येति यावत्), धूमोद्गमेन=उद्भूतधूम्रेन (धूमसम्पर्केणेति भावः), किसलयरुचां=पल्लवदीप्तीनां, रागः=रक्तिमा, भिन्नः=भेदं गतः, वैपरीत्यं गत इति भावः। तथा च एते=दृश्यमानाः, हरिणशिशवः=मृगशावकाः (हरिणपोताश्च); नष्टाशङ्काः=निर्भीकाः सन्तः, छिन्नाः=तेषां भक्षणाय मुनिभिर्लूनाः, दर्भाणां=कुशानाम्, अङ्कुराः=अग्रभागाः, यस्यां

और भी—

वायु के झोंकों से चञ्चल तरङ्गों द्वारा कृत्रिम नदी के जल से तटवर्ती वृक्षों की जड़ें धुल गई हैं। यज्ञीय घृत के हवन से उत्पन्न धूप से नये पत्तों की लालिमा और ही प्रकार की हो गई है। जिस उपवन-भूमि से कुशा के अंकुर उखाड़ लिये गये हैं ऐसी उपवन-भूमि में ये हरिण के बच्चे निर्भीक भाव से धीरे-धीरे घास चर रहे हैं (ये सब लक्षण इस प्रदेश को तपोवन सिद्ध करते हैं)॥ १५॥

More over,

The trees have their roots washed by the water of artificial rivers rippling (small waves) in the wind; the hue of the lustre of tender leaves is diversified by the smoke of ghee (offered in the fire) rising up; and here, in front, on the garden-ground whose sprouts of darbha (sacred) grass are uprooted (cut down), leisurely graze (pasture) the young ones of deer, free from fear.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूतः—सर्वमुपपन्नम्।

राजा—(स्तोकमन्तरं गत्वा) आश्रमोपरोधो माभूत्, तदिहैव रथं स्थापय, यावदवतरामि।

सूतः—धृताः प्रग्रहाः, अवतरत्वायुष्मान्।

राजा—(अवतीर्य्य आत्मानमवलोक्य च) सूत! विनीतवेषेण प्रवेष्टव्यानि तपोवनानि, तदिमानि तावद् गृह्यन्तामाभरणानि धनुश्च। (इति सूतस्यार्पयति)

(सूतः गृह्णाति)

छिन्नदर्भाङ्कुरायाम्, उपवनभुवि=उद्यानभूमौ, अर्वाक्=अस्माकं सन्निधावेव (निकट एव), मन्द-मन्दं=शनैः-शनैः (स्वैरं), चरन्ति=पर्य्यटन्ति। काव्यलिङ्गानुमानसमुच्चयस्वभावोक्तयश्चा-लङ्काराः। मन्दाक्रान्ता नाम वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—वायुप्रेरिततरङ्गैः कृत्रिमक्षुद्रसरितां जलैः तटस्थवृक्षाः धौतमूला इव प्रतिभान्ति। वह्नौ हुतहविषः, तज्जातधूमसम्पर्केण किसलयरुचां रागः वैपरीत्यं गतः। एते दृश्यमाना मृगपोताश्च नष्टशङ्का सन्तः च्छिन्नदर्भाङ्कुराणाम् उद्यानभूमौ अस्माकं निकट एव स्वेच्छया चरन्ति, अत एव निश्चिनोमि तपोवनप्रदेशोऽयमस्ति॥ १५॥

सूतः—सर्वं=कृत्स्नम् (यद् यद् भवतोक्तं तत् सर्वम्), उपपन्नम्=युक्तम् (तथावद् दृश्यत इति भावः)।

राजा—(स्तोकं=किञ्चित्, अन्तरं=तपोवनाभ्यन्तरं, गत्वा) आश्रमोपरोधः=रथप्रवेशेन आश्रमस्य पीडा, मा भूत्=न भवतु, तद्=तस्मात् कारणात्, रथं=स्यन्दनम्, इहैव=अत्रैव (आश्रमस्य किञ्चिद् दूर एव), स्थापय=स्थिरीकुरु, यावदवतरामि=रथाद् अवतरणं विधास्यामि।

सूतः—धृताः=गृहीताः, प्रग्रहाः=अश्वरज्जवः, आयुष्मान्=भवान्, अवतरतु=रथादवतरणं क्रियतामिति भावः।

राजा—(अवतीर्य आत्मानमवलोक्य च) सूत! विनीतवेषेण=अनुद्गताभरणेन (सात्त्विकवेषेण), तपोवनानि=मुन्यावासस्थलानि, प्रवेष्टव्यानि=आभ्यन्तरगम्यानि, तत्=तस्मात्

सूत—आपका कहना सही है।

राजा—(कुछ आगे जाकर) आश्रमवासियों को किसी प्रकार का कष्ट न हो अतः रथ यही रोक दो, जिससे मैं उतर जाऊँ।

सूत—मैंने लगाम खींच ली है अतः अब आप उतर जायें।

राजा—(उतरकर तथा स्वयं को देखकर) सारथी! तपोवन में विनीत वेश से प्रवेश

Charioteer—(What is told by you) All that is correct.

King—*(Going a short distance)* Let there be no inconvenience to the residents of the penance grove. Stop the chariot just here, so that I get down.

Charioteer— I have drawn the reins of the horses. Let the long-lived one alight.

King—*(Alighting)* Charioteer! Penance-groves or hermi-

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—यावदाश्रमवासिनः प्रत्यवेक्ष्य निवर्त्तिष्ये, तावदार्द्रपृष्ठाः क्रियन्तां वाजिनः।

सूतः—यथाज्ञापयत्यायुष्मान्। (इति निष्क्रान्तः)

राजा—(परिक्रम्यावलोक्य च) इदमाश्रमपदं तावत् प्रविशामि। (प्रविश्य प्रवेष्टकेन निमित्तं सूचयित्वा) अये!

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र॥ १६॥

कारणात्, आभरणानि=अलङ्काराणि, धनुः=कार्मुकं च, गृह्यन्ताम्=आदीयन्ताम् (रक्ष्यन्ताम्)। (इति सूतस्यार्पयति=ददाति आभरणानि धनुश्च।) (सूतः, गृह्णाति=राज्ञ आभरणानि धनुश्च गृह्णाति।)

राजा—यावत्=यावता कालेन, आश्रमवासिनः=आश्रमस्थान् जनान्, प्रत्यवेक्ष्य= अवलोक्य, निवर्त्तिष्ये=प्रत्यागमिष्यामि, तावत्=तत्कालपर्यन्तम्, आर्द्राणि=सिक्तानि, पृष्ठानि येषां ते आर्द्रपृष्ठाः=जलसेचनेन विगतश्रमाः, क्रियन्ताम्, वाजिनः=अश्वाः।

सूतः—यथाऽऽज्ञापयत्यायुष्मान्=यथा भवन्तं रोचते तथैव करिष्यामि।

राजा—(परिक्रम्य=कियत्पदं चंक्रमणं विधाय, च=एवम्, अवलोक्य=परितः दृष्टिपातं कृत्वा) इदमाश्रमपदम्—आश्रम एव पदं=स्थानम्, इत्याश्रमपदम्, तावत्, प्रविशामि। (प्रविश्य= आभ्यन्तरभागे सञ्चर्य, प्रवेष्टकेन=दक्षिणेन बाहुना, निमित्तं=हेतुकम्, स्पन्दनरूपं मङ्गललक्षणम्, सूचयित्वा=निरूपयित्वा) अये!=इति सम्भ्रमोक्तिः।

करना चाहिए, इसलिए इन गहनों और धनुष को सँभालो। (यह कहकर राजा सूत को गहने और धनुष देता है।)

(सूत गहने और धनुष लेता है।)

राजा—जब तक मैं आश्रमवासियों के दर्शन कर लौटूँ, तब तक आप घोड़ों को ठण्डा कर लीजिए (उनकी थकान मिटा लीजिए)।

सूत—जैसी आयुष्मान् की आज्ञा (प्रस्थान)।

राजा—(घूमकर और देखकर) यह आश्रम है, चलू, इसमें प्रवेश करूँ। (प्रवेश कर भुजा द्वारा स्फुरण रूप शुभ शकुन दर्शाकर) अरे!

---

tages should indeed be entered in a modest (simple) dress. Just hold these ornaments and bow. *(Having handed over his ornaments and bow to the charioteer)*

(Charioteer takes all things-bow etc.)

King—Charioteer! by the time I come back, having visited the inmates of the penance grove, let the horses be cooled (repose them).

Charioteer—Very well, Long lived one *(exit)*.

King—*(Roaming about and observing)* Here is the hermitage. Let me enter. *(Entering and indicating throbbing arm an good omen)*.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) इदो इदो पिअसहीओ। [इतः इतः प्रियसख्यौ।]

राजा—(कर्णं दत्त्वा) अये! दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालाप इव श्रूयते, यावदत्र गच्छामि। (परिक्रम्यावलोक्य च) अये! एतास्तपस्विकन्यकाः स्वप्रमाणानुरूपैः सेचन-घटैर्बालपादपेभ्यः पयो दातुमित एवाभिवर्त्तन्ते। (निरूप्य) अहो! मधुरमासां दर्शनम्—

अन्वयः—इदम् आश्रमपदं शान्तं तथा च बाहुः स्फुरति, इह अस्य फलं कुतः ? अथवा भवितव्यानां द्वाराणि सर्वत्र भवन्ति॥ १६॥

शान्तमिति। इदं=परिदृश्यमानम्, आश्रम एव पदम्=स्थानम्, इत्याश्रमपदम्, शान्तं=शमप्रधानम्, तथा च, बाहुः=मे दक्षिणभुजः, स्फुरति=स्पन्दते (स्त्रीलाभं सूचयतीत्यर्थः), इह=आश्रमपदे, अस्य=बाहुस्फुरणस्य, फलं=स्त्रीलाभविषयकफलं, कुतः=कथं सम्भवति? अथवा, भवितव्यानाम्=अवश्यम्भाव्यानामर्थानाम्, द्वाराणि=उपायाः, सर्वत्र भवन्ति। अत्र अर्थान्तरन्यासालङ्कारः, आर्या जातिः।॥ १६॥

भावार्थः—शमप्रधानमिदमाश्रमपदम्, तथाप्यत्र मम दक्षिणभुजः स्पन्दते, सूचयति चायं स्त्रीलाभम्। अत्र बाहुस्फुरणस्य फलं कथं प्राप्तं सम्भवति इति न जाने। उक्तविप्रतिपत्तिं स्वयमेव समाधत्ते—यत् अवश्यम्भाव्यानामर्थानाम् उपायाः ईश्वराधीनत्वात् सर्वत्र अनायासमुत्पद्यन्ते॥ १६॥

(नेपथ्ये=यवनिकापृष्ठभागे परोक्षे वा) (शकुन्तलाया उक्तिरियम्) प्रियसख्यौ=अनसूया-प्रियंवदेति तन्नाम्न्यौ, इदो इदो पिअसहिओ—(शौरसेनीभाषायाम्) इत इतः=अस्यामस्यां दिशि आगच्छेति शेषः।

राजा—(कर्णं दत्त्वा=उक्तालापं श्रोतुं कर्णं नियोज्य) अये! इति आत्मसम्बोधने, दक्षिणस्यां दिशीति दक्षिणेन, वृक्षवाटिकाम्=उद्यानम् (उद्यानस्य सन्निकृष्टदक्षिणपार्श्वभागे इत्यर्थः), आलापः इव=परस्परसम्भाषणमिव, श्रूयते=आकर्ण्यते, यावदत्र गच्छामि=आलापस्थाने गच्छामि।

यह आश्रम का प्रदेश तो सर्वथा शान्त है, (परन्तु) यहाँ आकर मेरी दक्षिण भुजा फड़क रही है। भला यहाँ इस अङ्गस्फुरण का फल (स्त्रीलाभ) कैसे सम्भव है? अथवा अवश्यम्भावी बातों (कार्यों) के लिए सर्वत्र द्वार बन जाते हैं॥ १६॥

(नेपथ्य में) प्रिय सखियो! इधर आओ इधर।

राजा—(कान देकर) अरे! दाहिनी ओर के बाग में बातचीत होती हुई-सी सुनायी दे रही है, तो चलूँ वहीं पहुँचूँ। (घूमकर और देखकर) अरे! ये तापसबालिकाएँ अपने-अपने

"The place of this hermitage is tranquil and yet my right arm throbs! where can arise its fruit here? or things destined to happen find doors every where. (16)

(Behind the scenes) This side, this side my friends.

King—(Listening) Oh, to the sight of the grove of trees some thing like a conversation is heard. I shall just go here. *(Goving round and observing)* Oh, here are the hermit girls, coming this way to water young trees with watering pots suited to their size.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः ॥ १७ ॥

यावदेताश्छायामिमामाश्रित्य प्रतिपालयामि। (इति विलोकयन् स्थितः।)

(ततः प्रविशति यथोक्तव्यापारा सह सखीभ्यां शकुन्तला)

(परिक्रम्यावलोक्य च=किञ्चित् सञ्चर्य पुरतः अवलोक्य च) अये!=इति विस्मये, एताः तपस्वि-कन्यकाः=तापसबालिकाः, स्वप्रमाणानुरूपैः=स्वदेहप्रमाणयोग्यैः, सेचनघटैः=जलसेचनकलशैः, बालपादपेभ्यः=क्षुद्रवृक्षेभ्यः, पयः=जलं, दातुम्=प्रदातुम्, इत एव=अस्यां दिश्येव, अभिवर्तन्ते= अभिमुखमागच्छन्ति। (निरूप्य=अवलोक्य) अहो=इत्याश्चर्ये, आसां=तपस्विकन्यकानाम्, दर्शनम्=रूपम्, मधुरम्=चित्ताह्लादकरमस्ति।

अन्वयः—आश्रमवासिनः जनस्य इदं वपुः यदि शुद्धान्तदुर्लभं (तदा) वनलताभिः उद्यानलताः गुणैः दूरीकृताः खलु॥ १७॥

शुद्धान्तेति। आश्रमे वस्तुं शीलं यस्य तस्य आश्रमवासिनः=तापसाश्रमवासिनः, जनस्य=शकुन्तलादिजनस्य, इदं वपुः=शरीरलावण्यं वा, यदि शुद्धान्तेषु=राजान्तःपुरेषु, दुर्लभम्= दुष्प्रापमस्ति, तदा, वनलताभिः=काननवल्लिभिः, उद्यानलताः=प्रयत्नवर्धिता उद्यानलताः, गुणैः= सौकुमार्यादिभिः, दूरीकृताः=तिरस्कृताः, खल्विति निश्चये॥ १७॥

भावार्थः—यदि राजान्तःपुरेषु दुष्प्रापम् ईदृग् रूपम् आश्रमवासिनो जनस्य दरीदृश्यते तदा निश्चिनोमि यद् अयत्नवर्धिताभिः वनलताभिः सौकुमार्यादिगुणैः सयत्नवर्धिता उद्यानलता सर्वथैव पराजिताः इति॥ १७॥

यावत्=यावत्कालेन, इमां=तारवीयाम् छायामाश्रित्य=आश्रयं गत्वा, एताः=तपस्वि-कन्यकाः, प्रतिपालयामि=प्रतीक्ष्ये।

प्रमाणानुरूप (छोटे-बड़े) घड़े लेकर छोटे-छोटे पौधों को सींचने के लिए इधर ही आ रही हैं। (देखकर) अहो! इनका रूप तो बहुत ही सुन्दर है।

यदि महलों के लिए भी दुर्लभ यह सुन्दर स्वरूप आश्रमवासिनी बालाओं में दिखायी पड़ रहा है तो (कहना पड़ेगा कि) वनलताओं ने सौकुमार्यादि गुणों से उद्यान की लताओं को परास्त कर दिया है।

तो कुछ देर इस छाया में ठहरकर इनकी प्रतीक्षा करूँ। (इस प्रकार विचार कर उनकी प्रतीक्षा में खड़ा हो जाता है।)

(इसके बाद पौधों को सींचती हुई शकुन्तला अपनी सखियों के साथ आती है।)

(watching closely) Oh! Their appearance is very pleasing (agree-able).

If to people living in a hermitage belongs this lovely form difficult to be found in harems, then certainly are garden creepers distanced in virtues by forest creepers.

Let me resort to this shade and wait *(stands watching)*.

(Then enter Śakuntalā engaged as described with her girl friends)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एका—हला सउंतले! तत्तो वि तादकण्णस्स अस्समरुक्खआ पिअदरा त्ति तक्केमि; जेण णोमालिआकुसुमपरिपेलवावि तुमं एदाणं आलबालपरिऊरणे णिउत्ता। [हला शकुन्तले! त्वत्तोऽपि तातकण्वस्य आश्रमवृक्षाः प्रियतरा इति तर्कयामि; येन नवमालिका-कुसुमपरिपेलवापि त्वम् एतेषामालवालपरिपूरणे नियुक्ता।]

शकुन्तला—हला अणसूए! ण केवलं तादस्स णिओओ, मम वि एदेसुं सहो-अरसिणेहो। (इति वृक्षसेचनं नाटयति।) [हला अनसूये! न केवलं तातस्य नियोगः, ममापि एतेषु सहोदरस्नेहः।]

द्वितीया—सहि सउंतले! उदअं लंभिदा एदे गिह्मआलकुसुमदाइणो अस्सम-रुक्खआ। दाणिं अदिक्कंतकुसुमसमए वि रुक्खके सिंचम्ह, तेण अणहिसंधिगुरुओ धम्मो भविस्सदि। [सखि शकुन्तले! उदकं लम्भिता एते ग्रीष्मकालकुसुमदायिनः आश्रमवृक्षाः। इदानीम् अतिक्रान्तकुसुमसमयानपि वृक्षान् सिञ्चामः। तेन अनभिसन्धिगुरुको धर्मो भविष्यति।]

(ततः=तदनन्तरम्, यथोक्तव्यापारा=वृक्षसेचनाय घटं वहन्ती, सखीभ्यां सह= अनसूया-प्रियंवदाभ्यां सह, शकुन्तला प्रविशति।)

एका—हला=इति सख्याः सम्बोधने, शकुन्तले! त्वत्तोऽपि=त्वदपेक्षयापि, तातकण्वस्य, आश्रमवृक्षाः=आश्रमपादपाः, प्रियतराः=अतिप्रियाः, इति तर्कयामि=इत्थं सम्भावयामि। येन=येन कारणेन, नवमालिकायाः कुसुमवत् पेलवापि=सर्वतः सुकुमारापि, त्वम्, एतेषाम्=आश्रमपादपानाम्, आलवालानां=वृक्षमूलस्थक्षुद्रखातानाम्, परिपूरणे=सेचने, नियुक्ता=नियोजितासि।

शकुन्तला—हला अनसूये! न केवलं तातस्य=पितुः, नियोगः=आदेशः, ममापि, एतेषु=पादपेषु, सहोदरस्नेहः=सहोदरवत् स्नेहः। (इति=इत्युक्त्वा, वृक्षसेचनं, नाटयति=नाट्येन रूपयति।)

द्वितीया—सखि शकुन्तले! उदकम् =अस्माभिः सिक्तं जलं, लम्भिताः=प्रापिताः, एते= पादपाः, गीष्मकालकुसुमदायिनः=ग्रीष्मर्तौ सुमनप्रदायिनः, आश्रमवृक्षाः=आश्रमपादपाः, इदानीम्=

एक—सखि शकुन्तला! जान पड़ता है कि पिता कण्व को ये आश्रम के वृक्ष तुमसे बढ़कर प्रिय हैं। इसीलिए तो नवीन मालिनी के फूलों से भी कोमल तुम्हें इनके थाले भरने (सींचने) के लिए नियुक्त किया है।

शकुन्तला—सखी अनसूया! केवल पिता की आज्ञा ही नहीं है अपितु मेरा भी इन आश्रम के वृक्षों पर सगे भाई जैसा स्नेह है। (वृक्ष सींचने का नाट्य करती है)

दूसरी—प्रिय सखी शकुन्तला! हम लोग ग्रीष्मकाल में फूल देने वाले इन आश्रम के

One—Friend Śakuntalā, I feel that the trees in the hermitage are dearer to father Kanva than you, since he has engaged you who are delicate like the Navamalika flower, to fill their basin.

Śakuntalā—Not only father's command alone! I too have a brotherly affection towards them.

Second friend—Friend Śakuntalā, we have watered those

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला— हला पिअंबदे! रमणिज्जं मंतेसि। [हला प्रियंवदे! रमणीयं मन्त्रयसि।] (इति भूयो वृक्षसेचनं नाटयति।)

राजा—(निर्वर्ण्य आत्मगतम्) कथमियं सा कण्वदुहिता शकुन्तला! (सविस्मयम्) अहो! असाधुदर्शी खलु भगवान् कण्वः, य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते।

इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति॥ १८॥

अधुना, अतिक्रान्तः=अतिवाहितः, कुसुमानां=पुष्पाणां, समयः=उत्पादनकालः, यैस्तान्—अतिक्रान्तकुसुमसमयान्, अपि, वृक्षान्=पादपान्, सिञ्चामः=जलेन सन्तर्पयामः, तेन=कर्मणा, नास्ति अभिसन्धिः=फलाशा, यस्मिन्, अनभिसन्धिः, गुरुरेव गुरुकः=महान्, धर्मः=कल्याणम्, भविष्यति।

शकुन्तला—हला=इति सख्याः सम्बोधने, प्रियंवदे! रमणीयं=शोभनं, मन्त्रयसि=कथयसि। (इति=एवं, भूयः=पुनः, सेचनं=वृक्षसेचनं, नाटयति।)

राजा—(निर्वर्ण्य=निरीक्ष्य, रूपलावण्यादिसम्पन्नां शकुन्तलामवलोक्य इति भावः, आत्मगतम्=स्वगतम्) कथम्=इति सम्भावनायाम्, इयम्=पुरतःस्थिता, सा=पूर्वं वैखानसेनोक्ता, कण्वदुहिता=कण्वतनया, शकुन्तला अस्तीति शेषः ? अहो=इत्याश्चर्ये, असाधुदर्शी=असम्यग् द्रष्टा (अविवेकी), खलु=इति निश्चये, भगवान् कण्वः=कण्वनामा महर्षिः, यः=कण्वः, इमाम्=शकुन्तलाम्, आश्रमधर्मे=तापसव्रते, नियुङ्क्ते=वृक्षसेचनादिव्यापारे नियोजयति।

वृक्षों को सींच चुकी हैं, चलो अब उन वृक्षों को सींचे जिनके फूलने का समय बीत चुका है, इससे निष्काम दान करने का महान् फल प्राप्त होगा।

शकुन्तला—सखी प्रियंवदा! (तुम) सुन्दर परामर्श दें रही हो। (यह कहकर पुनः वृक्ष सींचने का अभिनय करती है।)

राजा—(शकुन्तला को देखकर मन में) तो क्या यही वह कण्व ऋषि की पुत्री शकुन्तला है। (आश्चर्यपूर्वक) अरे! महर्षि कण्व बड़े ही अविवेकी जान पड़ते हैं जो इस (अनुपम सौन्दर्यशालिनी, कोमलाङ्गी शकुन्तला) को आश्रमधर्म (वृक्षादिकों को सींचना आदि) में नियुक्त करते हैं।

जो ऋषि इस नैसर्गिक मनोहर शरीर को तपस्या का कष्ट सहन करने के योग्य बनाने

---

hermit trees, which shall grant flowers in the summer. Let us now go to water those trees whose time of granting flowers has surpassed. By this act of selfless service we will achieve a great righteousness.

Śakuntalā—Friend Priyaṁvadā your advice indeed is very suitable. *(Again acts watering.)*

King—*(Observing keenly to himself)* How! is this that daughter of Kanva by name Śakuntalā? *(with surprise)* void of discrimination indeed is his reverence Kaṇva, who appoints her to the duties of the hermitage.

The sage, who expects to render this natural attractive form

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भवतु, पादपान्तरित एव विश्वस्तां तावदेनां पश्यामि (इति तथा करोति)।

शकुन्तला—हला अणसूए! अदिपिणद्धेण वक्कलेण पिअंबदाए दढं पीडिदा म्हि, ता सिढिलेहि दावं णं। [हला अनसूये! अतिपिनद्धेन वल्कलेन प्रियंवदया दृढं पीडितास्मि, तत् शिथिलय तावदेनम्।]

अनसूया—तह। [तथा।] (इति शिथिलयति।)

अन्वयः—यः इदं अव्याजमनोहरं वपुः किल तपःक्षमं साधयितुम् इच्छति सः ध्रुवं नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुं व्यवस्यति॥ १८॥

इदमिति। यः=ऋषिः, इदं=पुरोवर्तमानम्, अव्याजेन=कारणं विनैव, स्वभावत एव इत्यर्थः, मनोहरं=सुन्दरम्, वपुः=शरीरम्, किलेति=अनुकम्पायामसहने वा, तपःक्षमं=तपःसाधनयोग्यम्, साधयितुं=सम्पादयितुम्, इच्छति=वाञ्छति। सः=ऋषिः, ध्रुवं=निश्चितम्, नीलोत्पलपत्रस्य=इन्दीवरदलस्य, धारया=पार्श्वदेशेन (निशितपार्श्वभागेन), शमीलतां=शमीवल्लीं, छेत्तुं=कर्त्तितुम्, व्यवस्यति=प्रयतते। निदर्शनालङ्कारः, वंशस्थं वृत्तञ्च॥ १८॥

भावार्थः—यः महर्षिः कण्वः पुरोदृश्यमानं शाकुन्तलीयं स्वभावत एव मनोहरं शरीरं तपःसाधनयोग्यं विधातुं वाञ्छति, सः ऋषिवर्यः इन्दीवरस्य निशितपार्श्वदेशेन शमीलतां कर्त्तितुं प्रयतते इति तर्कयामि॥ १८॥

भवतु=कण्वोऽसाधुदर्शी साधुदर्शी वाऽस्तु तस्मिन्न मे किञ्चित् साध्यम्। (अहं तु) पादपान्तरित एव= वृक्षपृष्ठे आत्मानं गोपयित्वैव, विश्वस्ताम्=अनुद्विग्नचित्ताम्, एनां=शकुन्तलां, पश्यामि=अवलोकयामि (इति तथा=स्वविचारमनुरूपं करोति)।

शकुन्तला—हला अनसूये! प्रियंवदया=तन्नामकसख्या, अतिपिनद्धेन=दृढबद्धेन, वल्कलेन=तरुत्वग्वाससा, दृढं=बलवत्, पीडितास्मि=भृशं दुःखितास्मि, तत्=तस्मात् कारणात्, एनं=वल्कलं, शिथिलय=शिथिलं कुरु।

की इच्छा करता है, वह ऋषि निश्चय ही नीलकमल के पत्र की धार से शमीलता को काटना चाहता है॥ १८॥

अस्तु, वृक्ष के पीछे छिपकर ही विश्वस्त (कोई उसे नहीं देख रहा है, इस विचार से आश्वस्त) इस शकुन्तला को देखता हूँ (वैसा ही करता है)।

शकुन्तला—सखी अनसूया! प्रियंवदा ने इस वल्कल को बहुत कसकर बाँध दिया है, जिससे मुझे कष्ट हो रहा है। अतः इसे ढीला कर दो।

अनसूया—अच्छा (वल्कल ढीला करती है)।

---

capable of penance, certainly attempts to cut a Semi creeper with the sharp edge of the petal of a blue lotus. (18)

Well, even as I am concealed by trees I shall just observe her at her case *(does the same)*.

Śakuntalā—Friend Anasūyā! I am feeling uneasy (pinioned) with this bark too tightly fastened by Priyaṁvadā. Please, just loosen it.

Anasūyā—*(Loosens)*.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(सहासम्) एत्थ दाव पओहरवित्थारहेदुअं अत्तणो जोब्बणारंभं उवालह, मं कि उवालहसि ? [अत्र तावत् पयोधरविस्तारहेतुकम् आत्मनो यौवनारम्भम् उपाल- भस्व, मां किमुपालभसे ?]

राजा—सम्यगियमाह—

इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे
स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना वल्कलेन।
वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभां
कुसुममिव पिनद्धं पाण्डुपत्रोदरेण॥ १९॥

अनसूया—(शिथिलयति=शिथिलं करोति।)

प्रियंवदा—(सहासम्) अत्र=अस्मिन् पीडाविषये, पयोधरयोः=कुचयोः, विस्तारस्य= प्रसारस्य (औन्नत्यस्य), हेतुकम्=कारणभूतम्, आत्मनः=स्वस्य, यौवनं=तारुण्यम्, उपालभस्व= तिरस्कुरु, मां किमुपालभसे=मां कथं तिरस्करोषि ?

(यौवनारम्भात् स्तनयोः पीवरीभवनेन पीडा सञ्जायते न तु मत्कर्तृकवल्कलबन्धनेनेति भावः।)

राजा—इयं=सखी प्रियंवदा, सम्यगाह=उचितं भणति—

अन्वयः—इदं अभिनवम् अस्याः वपुः स्कन्धदेशे उपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्तनयुग- परिणाहाच्छादिना वल्कलेन पाण्डुपत्रोदरेण पिनद्धं कुसुममिव स्वां शोभां न पुष्यति॥ १९॥

इदमुपेति। इदं=सम्प्रति दृश्यमानम्, अभिनवम्=नवीनम्, अस्याः=शकुन्तलायाः, वपुः= शरीरं, स्कन्धदेशे=अंशभागे, उपहितः=दत्तः, सूक्ष्मः=क्षुद्रः, ग्रन्थिः=बन्धनं, यस्य तेन, उपहित- सूक्ष्मग्रन्थिना, (तथा) स्तनयुगस्य=कुचद्वयस्य, यः, परिणाहः=विशालता, तमाच्छादयतीति तेन स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना, वल्कलेन=तरुत्वङ्निर्मितवस्त्रविशेषेण, पाण्डुवर्णानां पत्राणां=दलानां,

---

प्रियंवदा—(हँसकर) यहाँ तो तुम्हें अपनी स्तनवृद्धि के कारणभूत यौवन को उलाहना देना चाहिए, मुझे भला क्यों उलाहना दे रही हो ?

राजा—यह सखी ठीक ही कह रही है—

इसका नवस्फुटित यौवन कन्धे पर बँधे हुए सूक्ष्म गाँठ वाले तथा दोनों स्तनों के विस्तार को ढाँपने वाले वल्कल के कारण उसी प्रकार अपनी शोभा को पुष्ट नहीं कर पा रहा है—जैसे पीले पत्तों से ढँका हुआ पुष्प अपनी पूरी शोभा नहीं प्रगट कर पाता॥ १९॥

Priyaṁvadā—*(Smiling)* In this matter blame your youth which causes the expansion of breasts, why do you blame me?

King—She is correct. This blooming body of her, (who is dressed) in a bark which covers the expanse of her charming, grownup breasts and has its delicate knot fastened on the region of her shoulders, doet not exhibit its proper charm, like a flower enveloped in the interior of a pale leaf. (19)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथवा काममननुरूपमस्या वपुषा वल्कलं न पुनरलङ्कारश्रियं न पुष्यति। कुतः ?—

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥ २०॥

उदरेण=गर्भेण, पिनद्धम्=बद्धम्, कुसुममिव=पुष्पमिव, स्वां=स्वकीयां, शोभां=कान्तिम्, न पुष्यति=नैव पुष्णाति (बिभर्त्ति)। अत्र उपमालङ्कारः, मालिनी नाम वृत्तम्॥ १९॥

भावार्थः—इदं नवीनं शकुन्तलायाः शरीरम् अंशभागे न्यस्तसूक्ष्मबन्धनेन, कुचद्वयस्य विशालताच्छादकेन वल्कलेन पाण्डुपत्रोदरेण बद्धमाच्छादितं वा पुष्पमिव स्वकीयां शोभां न बिभर्त्ति॥ १९॥

अथवा—अस्याः=शकुन्तलायाः, वपुषः=शरीरस्य, कामम्=अत्यर्थम्, अननुरूपम्=अयोग्यमपि, वल्कलं=वृक्षत्वग्निर्मितपरिधानम्, पुनरलङ्कारश्रियम्=आभरणजनितशोभाम्, न पुष्यति=न बिभर्त्ति इति, अपितु पुष्यत्येवेत्यर्थः। कुतः—अत्र हेतुत्वेन पद्यमवतारयति।

अन्वयः—शैवलेन अनुविद्धम् अपि सरसिजं रम्यं (भवति), (तथा) हिमांशोः लक्ष्म मलिनमपि लक्ष्मीं तनोति; (तदिव) इयं तन्वी वल्कलेनापि अधिकमनोज्ञा (दृश्यते)। हि मधुराणाम् आकृतीनां किमिव मण्डनं न भवति॥ २०॥

सरसिजमिति। शैवलेन=जलनील्या (शैवालम्), अनुविद्धं=सम्पृक्तम् आच्छादितं वा, अपि, सरसिजम्=कमलम्, रम्यं=मनोहरं भवति। (तथा) हिमांशोः=चन्द्रस्य, लक्ष्म=कलङ्कः, मलिनमपि=दोषयुक्तमपि, लक्ष्मीं=शोभां, तनोति=विस्तारयति। (तदिव) इयम्=दृश्यमाना, तन्वी=कोमलाङ्गी, वल्कलेनापि=धारितवृक्षत्वग्वस्त्रेणापि, अधिकमनोज्ञा=अधिकमनोहरा (दृश्यते), हि=यतः, मधुराणां=स्वभावतः सुन्दराणाम्, आकृतीनाम्=स्वतःसौन्दर्यशालिदेहबिभृताम्, किमिव=वस्तु, मण्डनं=भूषणं, न भवति—इति काकुः अपितु सर्वमपि भवति एव इत्यर्थः। अत्र प्रतिवस्तूपमालङ्कारः। मालिनीवृत्तम्॥ २०॥

अथवा—यद्यपि यह वल्कल इसके अनुरूप नहीं है तथापि यह इसके अलङ्कार की शोभा को न बढ़ाता हो ऐसी बात नहीं। क्योंकि—

सेवार से आच्छादित होने पर भी कमल सुन्दर ही प्रतीत होता है। मलिन होने पर भी चन्द्रमा का कलङ्क शोभा का ही विस्तार करता है। उसी प्रकार यह कृशाङ्गी बाला भी वल्कल धारण कर और अधिक मनोहर दिखायी पड़ती है। वस्तुतः स्वभाव से मधुर लगने वाली आकृतियों के लिए भला कौन-सी वस्तु अलङ्करण का साधन नहीं बन जाती॥ २०॥

Or, though this bark is unsuited to her body, but it is not that, it does not cherish the charm of embellishments, why?

A lotus, though encased in moss, is charming. The speck, though filthy, heightens the beauty of the moon. Accordingly this slender lady is more attractive even with the bark, what indeed is possibly not an embellishment to lovely forms? (20)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

कठिनमपि मृगाक्ष्या वल्कलं कान्तरूपं
न मनसि रुचिभङ्गं स्वल्पमप्यादधाति।
विकचसरसिजायाः स्तोकनिर्मुक्तकण्ठं
निजमिव कमलिन्याः कर्कशं वृन्तजालम्॥ २१ ॥

शकुन्तला—(अग्रतोऽवलोक्य) सहीओ! एस बादेरिदपल्लवांगुलीहिं किंपि वाहरेदि विअ मं चूअरुक्खओ। ता जाव णं संभावेमि। [सख्यौ! एष वातेरितपल्लवाङ्गुलीभिः किमपि व्याहरतीव मां चूतवृक्षः। तद् यावदेनं सम्भावयामि।] (इति तथा करोति।)

भावार्थः—यथा शैवलेनाच्छादितमपि कमलं मनोहरमेव भवति। यथा चन्द्रस्य मलिनोऽपि कलङ्कः शोभां एव विस्तारयति तदिव इयं तन्वी बाला वल्कलभूषिताऽपि अधिक-मनोहरा दृश्यते। यतः स्वभावतः मनोहराकृतीनां सर्वमेव वस्तुजातं (देहयात्रार्थं धृतवस्त्रादिकम्) मण्डनमेव भवति। नास्त्यत्र सन्देहलेशावसरः॥ २०॥

अपि च=अन्यच्च—

अन्वयः—मृगाक्ष्याः कठिनमपि कान्तरूपं वल्कलं विकचसरसिजायाः स्तोकनिर्मुक्त-कण्ठं कर्कशं निजं वृन्तजालम् इव मनसि स्वल्पमपि रुचिभङ्गं न आदधाति॥ २१ ॥

कठिनमिति। मृगस्येवाक्षिणी यस्यास्तस्याः मृगाक्ष्याः=हरिणनयनायाः, कठिनमपि=कर्कशमपि, कान्तरूपम्=(अङ्गसम्पर्केण) मनोहराकारम्, वल्कलं=पादपत्वक्परिधानं, विकचं=विकसितं, सरसिजं=कमलं, यस्यास्तस्याः विकचसरसिजायाः, स्तोकम्=ईषद् यथा स्यात्तथा, निर्मुक्तः=किञ्चिद् बहिरागतः, कण्ठः=निजाधोदेशः, यस्य तत् स्तोकनिर्मुक्तकण्ठम्, कर्कशं=कठिनं, निजं=स्वकम्, वृन्तजालम्=वृन्तसमूहः, इव=यथा, मनसि=चेतसि, स्वल्पमपि=किञ्चिदपि, रुचिभङ्गम्=अनुरागहानिं, न आदधाति=न जनयति। अत्र श्रौत्युपमालङ्कारः। मालिनी वृत्तम्॥ २१ ॥

भावार्थः—हरिणनयनायाः शकुन्तलाया रूक्षमपि रुचिराङ्गसम्पर्केण मनोहराकारं वल्कलं, प्रफुल्लकमलतायाः स्तोकनिर्मुक्तकण्ठं, स्वकीयकर्कशवृन्तसमूह इव मनसि स्वल्पमपि रुचिभङ्गं न जनयति॥ २१ ॥

और भी—इस मृगनयनी के कोमल शरीर के लिए यद्यपि यह वल्कल कठोर है तथापि जैसे जल से किञ्चित् बाहर निकली हुई विकसित कमलिनी का अपना कर्कश वृन्तसमूह किसी भी प्रकार अरुचिकर नहीं लगता, वैसे ही इसके द्वारा धारण किया गया यह रूक्ष वल्कल मन की रुचि में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं करता॥ २१ ॥

शकुन्तला— (सामने देखकर) सखियो! यह आम का वृक्ष वायु से हिलती हुई

And also—

For this deer eyed, though this bark is very rough, even though it appears pleasing like a mass of the foot stalks of that blown lotus creeper which has come out a litttle from the water and it does not create any perturbance in our mind too. (21)

Śakuntalā*—*(Looking forward) This mango tree as though

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—हला सउंतले! इध ज्जेव मुहुत्तअं चिट्ठ। [हला शकुन्तले! इहैव मुहूर्त्तकं तिष्ठ।]

शकुन्तला—किं णिमित्तं। [किं निमित्तम् ?]

प्रियंवदा—तए समीवट्ठिदाए लदासणाधो विअ अअं चूअरुक्खओ पडिहादि। [त्वया समीपस्थितया लतासनाथ इव अयं चूतवृक्षः प्रतिभाति।]

शकुन्तला—अदो ज्जेव तुमं पिअंबद त्ति भणीअसि। [अत एवं त्वं प्रियंवदेति भण्यसे।]

राजा—अवितथमाह प्रियंवदा। तथा ह्यस्याः—

शकुन्तला—सख्यौ=अनसूया-प्रियंवदा चेति, एषः चूतवृक्षः=आम्रवृक्षः, वातेन=वायुना, ईरिताः=प्रेरिताः, सञ्चालिताः वा, पल्लवाः=पत्राणि एव, अङ्गुल्यस्ताभिः वातेरितपल्लवाङ्गुलीभिः, मां=शकुन्तलाम्, किमपि=जलदानायेति भावः, व्याहरतीव=कथयतीव। तद्=तस्मात् कारणात्, यावदित्यवधारणे, एनं=चूतवृक्षम्, सम्भावयामि=जलदानेन तर्पयामि (अभिनन्दयामि)। (इति= इत्युक्त्वा, तथा करोति=जलदानं करोति।)

प्रियंवदा—हला शकुन्तले=सखि शकुन्तले! मुहूर्तकं=किञ्चित्कालं, इहैव=अत्रैव, तिष्ठ= प्रतीक्षस्व।

शकुन्तला—किं निमित्तम् ?=केन हेतुना तिष्ठामीति भावः।

प्रियंवदा—समीपे=पार्श्वे, स्थितया=विद्यमानया, त्वया=शकुन्तलया, अयम्=एषः, चूतवृक्षः=आम्रवृक्षः, लतासनाथः=लतायुक्तः, इव=यथा, प्रतिभाति=शोभते।

शकुन्तला—अत एव=एवं प्रियवचनकथनादेव, त्वं प्रियंवदेति अस्मद्विधैरभिधीयसे।

अंगुलियों द्वारा मानो मुझसे कुछ कहना चाहता है। तो चलूँ, इसका सम्मान करूँ (इसका अभिनन्दन करूँ)। (यह कहकर उसी प्रकार करती है।)

प्रियंवदा—सखी शकुन्तले! (तुम) थोड़ी देर यहीं ठहरो।

शकुन्तला—किसलिए ?

प्रियंवदा—तुम्हारे पास रहने से यह आम का वृक्ष लतासनाथ-सा दिखायी देता है।

शकुन्तला—इसीलिए (ऐसी मधुर बातें कहने के कारण ही) तुम्हें प्रियंवदा कहा जाता है।

राजा—प्रियंवदा ने सत्य ही कहा है—

---

hastens me on with its fingers of leaves set in motion by the air. Let me just honour it *(Acts accordingly)*.

Priyaṁvadā—Friend Śakuntalā, just stay here for some time.

Śakuntalā—What for?

Priyaṁvadā—For, with you near, this mango tree appears as though possessed of a creeper.

Śakuntalā—Hence indeed you are called Priyaṁvadā.

King—The truth Priyaṁvadā has said about Śakuntalā.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥ २२॥

अनसूया—हला सउंतले! इअं सअंबरबहु सहआरस्स तुए किदणामहेआ वनदोसिणी त्ति णोमालिआ णं विसुमरिदासि? [हला शकुन्तले! इयं स्वयंवरवधूः सहकारस्य त्वया कृतनामधेया वनतोषिणीति नवमालिका; एनं विस्मृतासि?]

शकुन्तला—तदो अत्ताणं पि विसुमरिस्सं। (लतामुपेत्य अवलोक्य च) हला! रमणीओ क्खु कालो इमस्स पादवमिहुणस्स रदिअरो संवुत्तो। जेग णवकुसुमजोब्बणा णोमालिआ अअं पि बहुफलदाए उअभोअक्खमो सहआरो। (इति पश्यन्ती तिष्ठति।) [तत आत्मानमपि विस्मरिष्यामि। हला! रमणीयः खलु कालः अस्य पादपमिथुनस्य रतिकरः संवृत्तः। येन नवकुसुमयौवना नवमालिका, अयमपि बहुफलतया उपभोगक्षमः सहकारः।]

राजा—प्रियंवदा, अवितथं=सत्यम्, आह=उक्तवतीति भावः।

अन्वयः—अधरः किसलयरागः, बाहू कोमलविटपानुकारिणौ, (तथा) अङ्गेषु कुसुममिव लोभनीयं यौवनं सन्नद्धम्॥ २२॥

अधर इति। अधरः=अधरोष्ठः, किसलयस्य=नवपल्लवस्येव, रागः=लौहित्यं, यस्य सः किसलयरागः=रागेण नवपल्लवतुल्यः, बाहू=भुजौ, कोमलयोः=मृदुलयोः, विटपयोः=स्कन्धोर्ध्व-शाखयोः, अनुकारिणौ=तत्सदृशौ, तथा, अङ्गेषु=अवयवेषु, कुसुममिव=पुष्पमिव, लोभनीयं=चित्ताकर्षकम्, यौवनम्=तारुण्यम्, सन्नद्धम्=प्रकटीभूतम्। अत्रोपमालङ्कारः। आर्या जातिः॥ २२॥

भावार्थः—अस्या अधरोष्ठः रागेण नवपल्लवप्रतिमः, भुजौ तु कोमलविटपानुकारिणौ, तथा शरीरावयवेषु कुसुममिव चित्ताकर्षकं यौवनं सञ्जातम्; अत एव सत्यमेव प्रियंवदया-भिहितम्॥ २२॥

अनसूया—हला शकुन्तले! इयं, सहकारस्य=आम्रस्य, स्वयं वृणोतीति स्वयंवरा, सा चासौ वधूश्चेति स्वयंवरवधूः=स्वयमेव कृताश्रयणाद्वधूरिव स्थिता इति भावः. वनम्=उद्यानम्=सौरभ्येणानन्दयतीति वनतोषिणी, इति=इत्थम्, त्वया=भवत्या, कृतं नामधेयं=नाम, यस्याः सा कृतनामधेया, नवमालिका (अस्ति), एनां=नवमालिकां, विस्मृताऽसि (किम्)?

(इसका) अधरोष्ठ रक्तिमा में नवपल्लव के समान है। दोनों भुजाएँ दो कोमल शाखाओं से समान हैं और फूल के समान रूप-सौरभसम्पन्न यौवन इसके समस्त अङ्गों में व्याप्त है॥ २२॥

अनसूया—सखि शकुन्तले! यह आम की स्वयंवर (अपने आप वरने वाली) वधू है। तुम्हीं ने इस नवमालिका (जूही) का नाम वनतोषिणी रखा था। क्या तुम इसे भूल गई?

Indeed her—

Lower lip has the redness of a fresh leaf her arms imitate (copy) tender twigs and her youth, charming (attractive) like a flower, pervades her limbs. (22)

Anasūyā—Dear Śakuntalā! here is the Navamālikā, the self choosen wife of the mango tree, named by you as Vanajyotsnā. Have you forgotten it?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(सस्मितम्) अणसूए! जाणासि किं णिमित्तं सउंतला वणदोसिणीं अदिमेत्तं पेक्खदि त्ति। [अनसूये! जानासि किं निमित्तं शकुन्तला वनतोषिणीमतिमात्रं प्रेक्षत इति।]

अनसूया—ण क्खु विभावेमि, ता कधेहि मे। [न खलु विभावयामि, तत् कथय मे।]

शकुन्तला—ततः=तदा तु (तर्हि), आत्मानमपि=स्वस्वरूपमपि, विस्मरिष्यामि (मत्कृते अस्याविस्मरणमात्मविस्मरणवदसम्भाव्यम्।) (लतामुपेत्य=अन्तिके गत्वा निरीक्ष्य च) हला=सखि! पादपमिथुनस्य=नवमालिकासहकारयोः, रतिकरः=प्रेमवर्द्धकः, कालः=समयः, संवृत्तः=जातः (उपस्थितः), येन, नवं=नवीनम्, कुसुमं=पुष्पं, स्त्रीपक्षे रजश्च यस्मिन् तथाभूतं, यौवनं=तारुण्यं, यस्याः सा नवकुसुमयौवना, नवमालिका=वनतोषिणी, अयम्=आम्रः (सहकारः) अपि, बहूनि फलानि=आम्राणि, पुरुषपक्षे (शुक्राणवः) रेतांसि, यस्य तस्य भावस्तया बहुफलतया, उपभोगक्षमः=लोकैः सेव्यः, अन्यत्र सम्भोगयोग्यश्च। (इति=इत्युक्त्वा, पश्यन्ती=साभिलाषमवलोकयन्ती तिष्ठति। एतेन शकुन्तलायास्तादृशयुवकसम्पर्काभिलाषा संसूच्यते।)

प्रियंवदा—(सस्मितम्=ईषद्हाससहितम्) अनसूये! शकुन्तला=अस्मद् सखी, किं निमित्तं, वनतोषिणीम्=नवमालिकाम्, अतिमात्रं=मुहुर्मुहुः, प्रेक्षते=अवलोकयति, इति जानासि किम्?

अनसूया—खलु=निश्चयेन, न अवधारयामि=विभावयामि। तत्=तन्निमित्तं, मे=मह्यं, कथय=श्रावय।

शकुन्तला—(यदि इसे भूलूँगी) तो स्वयं को भी भूल जाऊँगी। (लता के निकट जाकर और उसे देखकर) सखी! इन दोनों (लता और वृक्ष) का यह अनुराग बढ़ाने वाला समय आ गया है; क्योंकि नवमालिका नवीन कुसुम रूपी यौवन से लदी है और यह आम का वृक्ष भी बहुत फलों से सम्पन्न होने के कारण इसका उपभोग करने में समर्थ हो गया है। (देखती हुई खड़ी हो जाती है।)

प्रियंवदा—(मुस्कराती हुई) अनसूये! जानती हो, शकुन्तला वनतोषिणी को इस प्रकार बार-बार (गहराई से) क्यों देख रही है?

अनसूया—मैं तो नहीं जानती, अतः मुझे बताओ।

Śakuntalā—Then I shall forget even myself. *(Approaching the creeper and observing it steadily)* Friend! at a charming season indeed has the union between this couple (pair), the creeper and the tree taken place. Since Vanajyotsnā is possessed of youth (marked) with fresh flowers and the mango tree, bent with plenty of fruits is capable of enjoyment owing to its possession of lovely leaves.

Priyaṁvadā—Anasūyā! do you know for what reason Śakuntalā is looking steadily at this Vanajyotsnā?

Ansūyā—I am unable to guess! Please tell me (about it).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—जह वणदोसिणी अणुरूवेण पादवेण संगदा, तह अहंपि अत्तणो अणुरूवं वरं लहेअं त्ति। [यथा वनतोषिणी अनुरूपेण पादपेन सङ्गता, तथा अहमपि आत्मनः अनुरूपं वरं लभेय इति।]

शकुन्तला—एस दे अत्तणो चित्तगदो मणोरहो। [एष ते आत्मनश्चित्तगतो मनोरथः।] (इति कलशमावर्जयति।)

अनसूया—हला सउंतले! इअं तादकण्णेण तुमं विअ सहत्थेण संबड्ढिदा माहवीलदा, ता कधं इमं विसुमरिदासि? [हला शकुन्तले! इयं तातकण्वेन त्वमिव स्वहस्तेन संवर्द्धिता माधवीलता, तत् कथमिमां विस्मृतासि?]

शकुन्तला—तदा अत्ताणंपि विसुमरिस्सं। (लतामुपेत्यावलोक्य च सहर्षम्) अच्चरीअं अच्चरीअं, पिअंबदे! पिअं दे णिवेदेमि। [तत आत्मानमपि विस्मरिष्यामि। आश्चर्यमाश्चर्यम्। प्रियंवदे! प्रियं ते निवेदयामि।]

प्रियंवदा—यथा=येन प्रकारेण, वनतोषिणी=नवमालिका, अनुरूपेण=सदृशेन (रूपादि-गुणैरिति भावः), सङ्गता=सम्मिलिता, तथा=तेनैव प्रकारेण, अहमपि=शकुन्तलापि, आत्मनः= स्वस्य, अनुरूपम्=वयोरूपादिगुणैः सदृशम्, वरं लभेयेति=वरं प्राप्नुयाम् इति।

शकुन्तला—एषः=कथितः, ते=तव, आत्मनः=स्वकीय एव, मनोरथः=अभिलाषः, न तु ममेति भावः। (इति=इत्थं, कलशं=भाण्डं, पादपमिथुनालवाले जलदानाय, आवर्जयति=अधोमुखं करोति।)

अनसूया—हला शकुन्तले! इयं=पुरोवर्त्तिनी नवमालिका, तातकण्वेन=जनककण्व-महर्षिणा, त्वमिव=यथा त्वं तथैव, स्वहस्तेन=स्वकरेण, संवर्द्धिता=पोषिता, तत्=तस्मात्, कथमिमां=वनतोषिणीं, विस्मृतासि=जलं दातुं विस्मृतासि।

शकुन्तला—ततः=यद्येवं तदा तु, आत्मानमपि=स्वात्मानमपि, विस्मरिष्यामि (यथा मम

प्रियंवदा—जैसे वनतोषिणी अपने अनुरूप वृक्ष की जीवनसङ्गिनी बन गई है वैसे ही मुझे भी अपने अनुरूप वर प्राप्त हो, इसलिए।

शकुन्तला—यह तुम्हारे अपने मन का भाव है। (यह कहकर घड़ा उडेलती है।)

अनसूया—सखि शकुन्तले! इस वनतोषिणी को पिता कण्व ने तुम्हारी ही भाँति अपने हाथ से पाल-पोसकर बढ़ाया है, फिर तुम इसे कैसे भुला रही हो?

शकुन्तला—(यदि ऐसा है तब तो) मैं स्वयं को भी भूल जाऊँगी। (लता के पास

Priyaṁvadā—As Vanajyotsnā is united with a worthy tree, accordingly may I also obtain a bridegroom worthy of me.

Śakuntalā—This certainly is the desire of your own self. *(Inverts the pitcher).*

Anasūyā—Dear Śakuntalā! Father Kaṇva grew up this Mādhavī creeper by his own hands like you, as such, how you are forgetting it?

Śakuntalā—Then I shall forget even my self *(Approaching*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—सहि! किं मे पिअं? । [सखि! किं मे प्रियम्?]

शकुन्तला—असमए क्खु एसा आमूलादो मुउलिदा माहवीलदा । [असमये खल्वेषा आमूलात् मुकुलिता माधवीलता ।]

उभे—(सत्वरमुपगम्य) सहि! सच्चं सच्चं? । [सखि! सत्यं सत्यम्?]

शकुन्तला—सच्चं किं ण पेक्खध । [सत्यं किं न प्रेक्षेथे ।]

प्रियंवदा—(सहर्षं निरूप्य) सहि! तेण हि पडिप्पिअं दे णिवेदेमि । [सखि! तेन हि प्रतिप्रियं ते निवेदयामि ।]

आत्मा हिताहितविषये सततमविस्मरणीयः तथेयमपि अविस्मरणीयैव ममेति भावः) । (लतां=नवमालिकां, उपेत्य=प्राप्य, पार्श्वे गत्वा, च=तथा, अवलोक्य=दृष्ट्वा, सहर्षम्=हर्षपूर्वकम्), आश्चर्य-माश्चर्यम्, प्रियंवदे! ते=तुभ्यम्, प्रियम्=आह्लादजनकम् (किमपि वृत्तम्), निवेदयामि=सूचयामि ।

प्रियंवदा—सखि! शकुन्तले! मे=मम, प्रियं=प्रीतिकरं किमस्ति?

शकुन्तला—खलु=निश्चयेन, एषा=पुरोवर्तिनी, माधवीलता=नवमालिका, असमये=अकाले, आमूलात्=मूलप्रदेशादारभ्य, मुकुलिता=मुकुलानि=सञ्जातानि अस्या इति मुकुलिता=कलिकाभिः भरिता ।

उभे—(सत्वरम्=शीघ्रम्, उपगम्य=पार्श्वे गत्वा), सखि! सत्यम्-सत्यम्=सत्यमेव कथयसि किम्? इति भावः ।

शकुन्तला—सत्यमेव, किं न प्रेक्षेथे?

जाकर और उसे देखकर हर्षपूर्वक) आश्चर्य है, आश्चर्य है! प्रियंवदा! मैं तुम्हें एक आनन्ददायक समाचार दे रही हूँ।

प्रियंवदा—सखी! मुझे प्रिय लगने वाली बात कौन-सी है?

शकुन्तला—यह माधवीलता बिना समय के ही आपाद कलियों से लद गई है।

दोनों—(शीघ्र पास जाकर) सखी! सच है, सच है।

शकुन्तला—सच है, क्या तुम दोनों नहीं देखती?

प्रियंवदा—(हर्षपूर्वक देखकर) सखी! इस प्रिय समाचार के बदले मैं भी तुम्हें एक प्रिय बात बताती हूँ।

---

the creeper and seeing it, with joy) wonderful! wonderful!! Dear Priyaṁvadā! I tell you some thing pleasing.

Priyaṁvadā—What is the pleasing thing for me?

Śakuntalā—Without season, this Mādhavī creeper is covered with flowers from top to bottom.

Both—(Quickly going nearer) Dear one! it is exactly correct!

Śakuntalā—almost correct. Are you not seeing it.?

Priyaṁvadā—(Looking with joy) Dear! in return I too want to inform you a good news.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—किं मे पडिप्पिअं? [**किं मे प्रतिप्रियम्?**]

प्रियंवदा—आसण्णपाणिग्गहणासि तुमं। [**आसन्नपाणिग्रहणासि त्वम्।**]

शकुन्तला—(सासूयमिव) एस दे अत्तणो चित्तगदो मणोरहो, ता ण दे वअणं सुणिस्सं। [**एष ते आत्मनश्चित्तगतो मनोरथः, तन्न ते वचनं श्रोष्यामि।**]

प्रियंवदा—सहि! ण क्खु परिहासेण भणामि, सुदं मए तादकण्णस्स मुहादो तुहकल्लाणसूअअं एदं णिमित्तं त्ति। [**सखि! न खलु ते परिहासेन भणामि, श्रुतं मया तातकण्वस्य मुखात् तव कल्याणसूचकम् एतन्निमित्तमिति।**]

प्रियंवदा—(सहर्षम्=हर्षपूर्वकम्, निरूप्य=अवलोक्य) सखि=शकुन्तले! तेन=कारणेन, हि=निश्चयेन, ते=तुभ्यम्, प्रतिप्रियम्=प्रत्याह्लादकरं, निवेदयामि=कथयामि।

शकुन्तला—मे=मम, प्रतिप्रियम्=प्रियस्थानप्रीतिकरं किमस्ति?

प्रियंवदा—त्वम्, आसन्नं=सन्निहितं, पाणिग्रहणं-=विवाहः, यस्याः सा आसन्नपाणिग्रहणा असि।

शकुन्तला—(सासूयमिव=सरोषमिव) एषः=पाणिग्रहणरूपः, ते=तव, आत्मनः=स्वकीयस्य, मनोरथः=अभिलाषः, तत्=तस्मात्, ते=तव, वचनं=कथनं, न श्रोष्यामि=आकर्णयिष्यामि।

प्रियंवदा—सखि! न=नहि, खलु=इति निश्चयेन, परिहासेन=उपहासेन, छलेनेति भावः, भणामि=कथयामि, मया=प्रियंवदया, तातकण्वस्य=पितुः कण्वस्य, मुखात् श्रुतम्=आकर्णितम्, (यत्) एतन्निमित्तम्=अकाले माधवीलतामुकुलरूपं लक्षणम्, तव=भवत्या, कल्याणसूचकम्=पाणिग्रहणनिवेदकम् इति।

(तातकण्वेन निर्दिष्टं पुरा यद् यदि असमये माधवीलता मुकुलिता भवेत् तर्हि अचिरेणैव शकुन्तलायाः पाणिग्रहणमवश्यं भविष्यतीति भावः।)

शकुन्तला—मुझे बदले में कौन-सी प्रिय बात सुनाओगी?

प्रियंवदा—शीघ्र ही तुम्हारा विवाह होने वाला है।

शकुन्तला—(क्रोधपूर्वक देखती हुई) यह तुम्हारे अपने मन का भाव है, अतः तुम्हारे वचन नहीं सुनूँगी।

प्रियंवदा—सखी! मैं तुमसे मजाक में (यह) नहीं कह रही हूँ। मैंने तात कण्व के मुख से सुना था कि इस माधवीलता का इस प्रकार असमय मुकुलित होना तुम्हारे विवाह का परिचायक है।

Śakuntalā—What is that pleasing news for me?

Priyaṁvadā—You will get married very soon.

Śakuntalā—*(With anger)* This is your own thinking. Now I shall not hear your words more.

Priyaṁvadā—Dear! I am not joking. I heard from father

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—हला पिअंबदे! अदो ज्जेव ससिणेहा सउंतला माहवीलदां सिञ्चदि। [हला प्रियंवदे! अत एव सस्नेहा शकुन्तला माधवीलतां सिञ्चति।]

शकुन्तला—जदो बहिणी मे भोदि, तदो किं त्ति ण सिञ्चेमि। (इति कलशमावर्जयति।) [यतो भगिनी मे भवति, ततः किमिति न सिञ्चामि।]

राजा—अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसम्भवा भवेत्? अथवा कृतं सन्देहेन—

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥ २३॥

अनसूया—हला प्रियंवदे! अत एव=अस्मादेव कारणात्, सस्नेहा=स्नेहयुक्ता, शकुन्तला, माधवीलतां=नवमालिकां, सिञ्चति=जलेन तर्पयति।

शकुन्तला—यतः=यस्मात् कारणात्, भगिनी=सहोदरा (निजजनककण्वपरिवर्द्धितत्वात् भगिनीरूपा इति भावः), मे=मम, भवति, ततः=तस्मात् कारणात्, किमिति=कथम्, न सिञ्चामि=जलेन न तर्पयामि।

(इति कलशं=जलपात्रम्, आवर्जयति=जलसेचनायाधोमुखं करोति।)

राजा—अपि नाम=इति सम्भावनायाम्, इयं=शकुन्तला, कुलपतेः=आश्रमाधिपस्य (अयुतशिष्यपोषकस्य) कण्वस्य, असवर्णम्=असमानं, क्षत्रियादि क्षेत्रं=कलत्रं, तत्र सम्भवः=जन्म, यस्याः सा असवर्णक्षेत्रसम्भवा=अनुलोमविवाहोत्पन्ना, भवेत्=स्यात् (यदीयं ब्राह्मणेतर-जातीयपत्नीगर्भसम्भूता भवेत् तर्हि मे परिणययोग्या भवेदन्यथा शास्त्रनिषेधात् ममास्याम् अभिलाषो व्यर्थ इति भावः), अथवा, सन्देहेन=आशङ्कया, कृतम्=अलम् (अत्र सन्देहो न कर्तव्य इति भावः)—

अनसूया—सखी प्रियंवदा! इसीलिए शकुन्तला माधवीलता को स्नेहपूर्वक सींचती है।

शकुन्तला—जब यह मेरी बहन है तब भला मैं इसे क्यों नहीं सींचूँगी? (घड़ा उडेलती है)

राजा—तो क्या यह कुलपति कण्व की ब्राह्मणेतर पत्नी से उत्पन्न कन्या है? अथवा सन्देह करना व्यर्थ है—

निःसन्देह यह क्षत्रिय के ग्रहण करने योग्य है; क्योंकि मेरा पवित्र मन इसे चाहता है। किसी भी सन्दिग्ध विषय में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं॥ २३॥

Kaṇva that whenever Mādhavī creeper blossoms untimely, then Śakuntalā's marriage will take place very soon.

Anasūyā—Dear Priyaṁvadā! Thats why Śakuntalā waters this Mādhavī creeper affectionately.

Śakuntalā—When this is my sister then why not I water it? *(pours)*

King—Can it be that this girl is sprung from a wife of the lord of sages not belonging to his own caste? or away with doubt.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथापि तत्त्वत एवैनामुपलप्स्ये।

शकुन्तला—(ससम्भ्रमम्) अम्भ! सलिअसेअसंभवुग्गदो णोमालिअं उज्झिअ वअणं मे महुअरो अहिवट्टदि। (इति भ्रमरबाधां नाटयति।) **[अम्भ! सलिलसेकसम्भ्रमोद्गतो नवमालिकामुज्झित्वा वदनं मे मधुकरोऽभिवर्तते।]**

अन्वयः—असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यत् मे आर्यं मनः अस्यां अभिलाषि हि सन्देहपदेषु वस्तुषु सताम् अन्तःकरणप्रवृत्तयः प्रमाणम्॥ २३॥

असंशयमिति। असंशयं=नूनम्, क्षत्रस्य=क्षत्रियस्य, परिग्रहक्षमा=पत्नीत्वेन ग्रहणयोग्या, क्षत्रपरिग्रहक्षमा, यत्=यस्मात्, मे=मम, आर्यम्=साधु, श्रेष्ठम् (निषिद्धाचरणविमुखम्), मनः= अन्तःकरणम्, अस्यां=शकुन्तलायाम्, अभिलाषि=अभिलाषयुक्तमस्ति। हि=यस्मात् निश्चयेन वा, सन्देहपदेषु=संशयास्पदेषु, वस्तुषु=विषयेषु, सतां=सज्जनानाम्, अन्तःकरणस्य=मनसः, प्रवृत्तयः= प्रवर्तनानि (चेष्टा इति भावः), प्रमाणं=निर्णयहेतुः। अत्र अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, वंशस्थविल-वृत्तम्॥ २३॥

भावार्थः—नूनमियं क्षत्रियस्य पत्नीत्वेन ग्रहणयोग्या अस्ति यस्मात् मम निषिद्धाचरण-विमुखत्वेन निर्दोषम् अन्तःकरणम् अस्याम् अभिलाषयुक्तं भवति। निश्चिनोमि यत् संशयास्पदेषु विषयेषु सज्जनानां मनसः प्रवर्त्तनानि प्रमाणं भवन्ति॥ २३॥

तथापि, तत्त्वतः=सखीसकाशात् (क्षत्रपरिग्रहक्षमा अस्ति न वा—इति शब्दादिप्रमाणेन) यथार्थतः, एनां=शकुन्तलाम्, उपलप्स्ये=ज्ञास्यामि।

शकुन्तला—(ससम्भ्रमम्=सोद्वेगं) अम्भ=इति विस्मये, सलिलसेकेन=जलसेचनेन, यः सम्भ्रमः=त्वरा, तेन उद्गतः=उड्डीनः, जलसेकसम्भ्रमोद्गतः, मधुकरः=भ्रमरः, नवमालिकाम्= वनतोषिणीम्, उज्झित्वा=त्यक्त्वा, मे=मम, वदनं=मुखम्, अभिवर्तते=लक्षीकृत्याऽऽगच्छति। (इति=इत्थं, भ्रमरस्य बाधां=निराकरणं, नाटयति=अभिनयति।)

तथापि यह क्षत्रिय द्वारा विवाहने योग्य है या नहीं यह शब्दादि प्रमाण से यथार्थ रूप में मैं इसके सम्बन्ध में जानूँगा।

शकुन्तला—(घबराहट के साथ) ओह! जल डालने से विक्षुब्ध होकर यह भौंरा नवमालिका को छोड़कर मेरे मुख की ओर आ रहा है। **(इस प्रकार कहती हुई भँवरे को हटाने का अभिनय करती है।)**

Certainly she is capable of being married to a Kṣatriya, since my pure mind has a longing for her, for to the good, in doubtful matters, the inclinations of their hearts are the (deciding) authority. (23)

Never the less I shall ascertain the truth regarding her.

Śakuntalā*—*(In confusion) Oh! raised by the perturbance caused by the sprinkling of water, this bee having left the Navamālikā is coming towards my face. *(Acts to remove the bee).*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सस्पृहं विलोक्य) साधु बाधनमपि रमणीयमस्याः।

यतो यतः षट्चरणोऽभिवर्त्तते ततस्ततः प्रेरितवामलोचना।
विवर्त्तितभ्रूरियमद्य शिक्षते भयादकामापि हि दृष्टिविभ्रमम्॥ २४॥

अपि च (सासूयमिव)—

चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदुकर्णान्तिकचरः।

राजा—(सस्पृहं=साभिलाषम्, विलोक्य=दृष्ट्वा), साधु=शोभनम्, बाधनम्=भ्रमर-निराकरणम्, अस्याः=शकुन्तलायाः, रमणीयम्=चित्ताह्लादकम् अस्तीति शेषः।

अन्वयः—हि षट्चरणः यतो यतः अभिवर्तते ततस्ततः प्रेरितवामलोचना (तथा) विवर्त्तितभ्रूः इयम् अकामापि भयात् अद्य दृष्टिविभ्रमं शिक्षते॥ २४॥

यतो यत इति। हि=यस्मात्, षट्चरणः=भ्रमरः, यतो यतः=यस्यां यस्यां दिशि, अभिवर्त्तते=अस्या मुखं लक्षीकृत्य भ्रमति, ततस्ततः=तस्यां तस्यां दिशि, प्रेरिते=चालिते, वामे=शोभने, लोचने=नयने, यया सा प्रेरितवामलोचना, (तथा) विवर्त्तिते=क्षणे क्षणे परिवर्त्तिते, भ्रुवौ=दृग्भ्यामूर्ध्वभागौ, यया सा विवर्त्तितभ्रूः, इयम्=शकुन्तला, अकामापि=अकारणाद् प्रवृत्तमदनापि, भयात्=षट्चरणदंशनभीत्या, अद्य=अधुना, दृष्टिविभ्रमं=दृक्पातं, शिक्षते=अभ्यसितुं प्रवर्त्तत इव। अत्र विभावनालङ्कारः, वंशस्थं नाम वृत्तम्॥ २४॥

भावार्थः—यस्मात् (जलसेकसम्भ्रमोद्गतः), भ्रमरः यस्यां यस्यां दिशि अस्या मुखं लक्षीकृत्य भ्रमति तस्यां तस्यां दिशि प्रेरितवामलोचना, परिवर्तितभ्रूरियं शकुन्तला अकारणादप्रवृत्त-मदनापि भ्रमरदंशनभीत्या अधुना दृष्टिविभ्रमं शिक्षते॥ २४॥

राजा—(लालसापूर्वक देखकर) वाह! भँवरों को हटाने की इसकी चेष्टा भी कितनी आकर्षक है (क्योंकि)—

यह भौंरा जिस-जिस ओर (दिशा में) जाता है उसी-उसी ओर यह अपने सुन्दर नेत्रों को घुमाती हैं (इसे देखकर प्रतीत होता है कि) यद्यपि यह शकुन्तला कामभावना से रहित है तथापि भँवरे के दंश के भय से आँखें नचाना सीख रही है॥ २४॥

और भी (ईर्ष्यापूर्वक)—

ओ भ्रमर! यद्यपि यह शकुन्तला तुझे बार-बार उड़ाती है फिर भी तू उसके चञ्चल नेत्रों को छूता है। गुप्तभाषी की भाँति इसके कानों के समीप जाकर मधुर स्वर में गुनगुनाता है

King—(Looking longingly) Her action to remove bee is also attractive—

In whichever direction the bee turns, in the same direction she turns her rolling eyes. Arching her brows, she is learning today coquettish play of her eyes through fright only and not from love.

More over *(with jealousy)*

Frequently you touch her throbbing eye with its outer corner trembling and approaching her ear, you murmur softly, as if you

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करं व्याधुन्वन्त्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्त्वान्वेषान्मधुकर! हतास्त्वं खलु-कृती॥ २५॥

अपि च— लोलां दृष्टिमितस्ततो वितनुते सभ्रूलताविभ्रमाम्
माभुग्नेन विवर्तिता वलिमता मध्येन कम्रस्तनी।

अपि च (सासूयमिव=असूयासहितमिव)—

अन्वयः—मधुकर! करं व्याधुन्वन्त्याः वेपथुमतीं चलापाङ्गां दृष्टिं बहुशः स्पृशसि, रहस्याख्यायीव कर्णान्तिकचरः मृदु स्वनसि, तथा रतिसर्वस्वम् अधरं पिबसि; (अत एव) वयं तत्त्वान्वेषात् हताः (किन्तु) त्वं खलु कृती॥ २५॥

चलापाङ्गामिति। मधुकर=हे भ्रमर! करं=हस्तम्, व्याधुन्वन्त्याः=भ्रमरनिराकरणाय इतस्ततो चालयन्त्याः, अस्याः शकुन्तलाया इति शेषः, वेपथुमतीं=त्वद्भयेन, आरोपपक्षे कामवेगेन कम्पमानाम्, (अत एव) चलौ=चञ्चलौ, अपाङ्गौ=नेत्रप्रान्तभागौ, यस्याः चलापाङ्गाम्, दृष्टिं=नयनम्, बहुशः=वारं-वारं, स्पृशसि=स्पर्शं करोषि, आरोपपक्षे चुम्बसि। रहस्यं=गोप्यम्, आख्यातीति रहस्याख्यायी स इव रहस्याख्यायीव, कर्णान्तिकचरः=कर्णपार्श्वगामी सन्, मृदु=कोमलं मन्दं वा, स्वनसि=शब्दं करोषि, आरोपपक्षे ब्रवीषि, तथा च, रतेः=सुरतेच्छायाः, सर्वस्वं=प्रधानकारणं, रतिसर्वस्वम्=रतौ सर्वस्वमिवादरणीयम्, यद्वा रतेः=कामपत्न्याः, सर्वस्वं=युवजये परमसहायम्, अधरम्=अधरोष्ठं, पिबसि=चुम्बसि दशसि वा, (अत एव) वयम्=अहम्, तत्त्वान्वेषात्=केयम्, मम परिग्रहक्षमा न वा इत्यादितथ्यानुसन्धानात्, हताः=हतप्रायाः, वञ्चिता इति वा, किन्तु त्वम्, खलु=नूनम्, कृती=धन्यः। अत्र काव्यलिङ्गालङ्कारः, शिखरिणी वृत्तम्॥ २५॥

अपि च=अन्यच्च—

अन्वयः—कम्रस्तनी इयं सभ्रूलताविभ्रमां लोलां दृष्टिं इतस्ततः वितनुते, आभुग्नेन वलिमता मध्येन विवर्त्तिता, (तथा) शीत्कारभिन्नाधरा पल्लवनिभं हस्ताग्रं विधुनोति। (अत एव) भ्रमराभिलङ्घनभिया वाद्यैर्विना नर्तकी जाता॥ २६॥

और इसके रतिसर्वस्व अधरोष्ठ के रस का पान करता है। हम तो (यह कौन है, हमारे विवाहने योग्य है या नहीं ? आदि) तत्त्वानुसन्धान में लगकर असफल ही रहे—परन्तु तुम धन्य हो (जो अपने उद्देश्य में सफल रहे)॥ २५॥

और भी—

सुन्दर स्तनों वाली यह शकुन्तला भ्रूविलास के साथ अपनी चञ्चल दृष्टि इधर-उधर घुमा रही है। कुछ तिरछे और त्रिवलियुक्त शरीर के मध्य भाग को बार-बार नचा-सा रही है।

---

were whispering a secret of love; and while she waves her hands, you kiss her lower lip which contains all the treasure of love's delight; while we, O bee, through search after truth are disappointed, you succeeded to gain the wish. (25)

More over—

Having charming breasts this Śakuntalā with playful movement of her eye-brows throws her fickle sight here and there

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हस्ताग्रं विधुनोति पल्लवनिभं शीत्कारभिन्नाधरा
जातेयं भ्रमराभिलङ्घनभिया वाद्यैर्विना नर्त्तकी॥ २६॥

शकुन्तला—हला! परित्ताअध परित्ताअध मं इमिणा दुट्ठमहुअरेण अहिहूअमाणं। [हला! परित्रायेथां परित्रायेथां मामनेन दुष्टमधुकरेणाभिभूयमानाम्।]

उभे—(सस्मितम्) का अम्हो परित्ताणे? एत्थ दाव दुस्सन्दं अक्कंद, जदा राअ-रक्खिदाइं तवोवणाइं। [के आवां परित्राणे? अत्र तावत् दुष्यन्तमाक्रन्द, यतो राजरक्षितानि तपोवनानि।]

लोलामिति। कम्रौ=शोभनौ, स्तनौ यस्याः सा कम्रस्तनी, इयं=शकुन्तला, भ्रुवौ लते इव तयोर्विभ्रमेण=विलासेन, सह वर्त्तत इति तां सभ्रूलताविभ्रमाम्, लोलां=चञ्चलाम्, दृष्टिं=नयनम्, इतस्ततः=यस्यां तस्यां वा दिशि, सर्वासु दिक्षु, वितनुते=विक्षिपति, आभुग्नेन=ईषद्वक्रेण, वलिमता=त्रिवलियुक्तेन, मध्येन=कटिरूपशरीरमध्यभागेन, विवर्त्तिता=परिवर्तिता (आत्मानं भ्रमरदंशनात् त्रातुमिति भावः), तथा शीत्कारेण=भयव्यञ्जकशब्देन, भिन्नौ=विश्लिष्टौ, अधरौ=ओष्ठयुगलं, यस्याः सा शीत्कारभिन्नाधरा, पल्लवनिभं=किसलयसदृशम् (रक्तवर्णं), हस्ताग्रं=कराग्रभागं, विधुनोति=कम्पयति, भ्रमरनिराकरणाय चालयति। अत एव भ्रमरेण यदभिलङ्घनं=बाधनं, तस्मात् या भीः=भयं, तया भ्रमराभिलङ्घनभिया, वाद्यैर्विना=वाद्ययन्त्रादिसाधनैर्विना, नर्त्तकी=नर्त्तकीप्राया, जाता। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, शार्दूलविक्रीडितं नाम वृत्तम्॥ २६॥

भावार्थः—शोभनस्तनी इयं शकुन्तला सभ्रूलताविभ्रमां स्वकीयां चञ्चलां दृष्टिं इतस्ततः सर्वासु दिक्षु विक्षिपति। (आत्मानं भ्रमरदंशनात् त्रातुम्) ईषद्वक्रेण त्रिवलियुक्तेन शरीरमध्यभागेन विवर्त्तिता, तथा भयव्यञ्जकशब्देन भिन्नाधरा किसलयसदृशं हस्ताग्रं कम्पयति, अत एव भ्रमराभि-लङ्घनभिया वाद्यैर्विना नर्त्तकीप्राया जाता इति मन्ये।

शकुन्तला—हला! परित्रायेथां, परित्रायेथां इति मुग्धात्वेन कातरोक्तिः युवाम् इति भावः। माम्=शकुन्तलाम्, अनेन=दृश्यमानेन, दुष्टमधुकरेण=भ्रमरेण, अभिभूयमानाम्=व्याकुलीक्रिय-माणाम्।

भ्रमर के भय से जब यह शीत्कार करती है तब दोनों अधर अलग हो जाते हैं। पल्लव के समान लाल हाथ के अग्रभाग को भ्रमर को हटाने के लिए हिलाती है। इस प्रकार भ्रमर के दंश के भय से (उपरोक्त विभिन्न चेष्टाएँ करती हुई) यह शकुन्तला बिना बाजों के नर्तकी-सी बन गई है—ऐसा प्रतीत होता है।

शकुन्तला—सखियो! इस दुष्ट भँवरे द्वारा सताई जाती हुई मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।

---

and turns round the middle portion of her body which is curved a little and marked with three wrinkles. By the fear of the bee her lips are separated from each other due to the sound made to express a sudden thrill of pain and also she shakes sprout like front portion of her hand to remove the bee and thus appears if she has become a dancing girl without musical instruments. (26)

Śakuntalā—Freinds! protect me, who am being attacked by this ill-behaved wicked bee.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अवसरः खल्वयमस्माकमात्मानं दर्शयितुम्। न भेतव्यं न भेतव्यम्। (इत्यर्द्धोक्ते स्वगतम्) एवं हि राजाहमिति परिज्ञानं भविष्यति। भवतु, अतिथि-समाचारमेवावलम्बिष्ये।

शकुन्तला—ण एसो दुव्विणीदो विरमदि, ता अण्णदो गमिस्सं। (पदान्तरे सदृष्टि-क्षेपम्) हद्धी! हद्धी! कधं इदो वि मं अणुसरदि, ता परित्ताअध मं। [नैष दुर्विनीतो विरमति, तदन्यतो गमिष्यामि। हा धिक्! हा धिक्! कथमितोऽपि मामनुसरति तत् परित्रायेथां माम्।]

उभे=अनूसया-प्रियंवदे, (सस्मितम्=ईषद्हाससहितम्), परित्राणे=भ्रमराक्रमणाद्रक्षणे, आवाम्=अनसूया-प्रियंवदे, के=अक्षमे इत्यर्थः। अत्र=अस्मिन् परित्राणावसरे, तावत्, दुष्यन्तम्= दुष्यन्तनामधेयं राजानम्, आक्रन्द=आह्वय, यतः=यस्मात्, तपोवनानि=आश्रमाणि, राजरक्षितानि भवन्ति।

राजा—अवसरः=समयः, खलु=निश्चयेन, अयम्, अस्माकम्=मदीयं, आत्मानं, दर्शयितुम्=प्रकटितुम्। न भेतव्यम्, न भेतव्यम्=भयं मा कुरु। (इत्यर्द्धोक्ते=एवं वाक्यस्यार्द्धोच्चारणं कृत्वा, स्वगतं=मनसि) एवं=उक्तप्रकारेण न भेतव्यम् इति कथनेन, हि=इति निश्चये। अहं राजा= नृपः दुष्यन्तः, इति परिज्ञानं=परिचयः, भविष्यति। (तेन प्रशान्तेऽस्मिन् तपोवने कथं प्रवेष्टव्यम्?) भवतु=अस्तु, अतिथेः=आगन्तुकस्य, समाचारं=व्यवहारं, अवलम्बिष्ये=आश्रयिष्ये।

शकुन्तला—दुर्विनीतः=दुष्टः, उद्धतः, एषः=मधुकरः, न विरमति=बाधनात् पराङ्मुखो न भवति। तत्=तस्मात्, अन्यतः=अन्यस्मिन् स्थाने, गमिष्यामि। (पदान्तरे—अन्यत् पदमिति पदान्तरं

दोनों—(मुस्कराकर) हम रक्षा करने वाली कौन हैं? इसके लिए राजा दुष्यन्त को पुकारो, क्योंकि तपोवन राजा द्वारा रक्षित होते हैं।

राजा—मेरे प्रगट होने का यही अवसर है। मत डरो, मत डरो। (इतना आधा वाक्य कहकर मन में) यदि ऐसा कहूँगा तो ये जान जायेगीं कि मैं ही राजा दुष्यन्त हूँ। अस्तु, मैं अतिथि के-से आचार का सहारा लूँगा।

शकुन्तला—यह दुष्ट नहीं रुकता (मानता), अतः मैं अन्यत्र चली जाती हूँ। (आँखों से देखती हुई पाँव बढ़ाती है) धिक्कार है, धिक्कार है। क्या, यह यहाँ भी मेरा पीछा कर रहा है? (तब तो) मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।

Both—*(With a smile)* Who are we to protect? Cry out to Duṣyanta, because penance groves are to be protected by the king.

King—Here is the chance to disclose myself. Do not be afraid, do not be afraid. *(To himself when this is half said)* If I say like this then, my identity would be disclosed. Well, I will accept the manner of a stranger.

Śakuntalā— This wicked bee does not stop. I will go to another place. *(Stepping aside, and looking about her)* How, now! He is coming this way too. Save me friends; save me from this ill-mannered bee (which is following me even here).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सत्वरमुपगम्य) आः!

कः पौरवे वसुमतीं शासति शासितरि दुर्विनीतानाम्।
अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु॥ २७॥

(सर्वा राजानं दृष्ट्वा किञ्चिदिव सम्भ्रान्ताः।)

सख्यौ—अज्ज! ण किंपि अच्चाहिदं किण्णु क्खु इअं पिअसहि दुट्ठमहुअरेण आउलीकिअमाणा कादरीभूदा। (इति शकुन्तलां दर्शयतः।) [**आर्य! न किमपि अत्याहितम्, किन्तु खलु इयं प्रियसखी दुष्टमधुकरेण आकुलीक्रियमाणा कातरीभूता।**]

तस्मिन् पदान्तरे=स्थानान्तरे, गत्वेति शेषः, दृष्ट्याः क्षेपः=भ्रमराधिष्ठितस्थाने, दृष्टिनिक्षेपं=दृष्टिदानं, तेन सह वर्तत इति सदृष्टिक्षेपम् (भ्रमरो विरतो न वा इति परिज्ञानार्थम्), हा धिक्! हा धिक्!=इति विषादे, कथम्, इतोऽपि=अस्मिन् स्थानेऽपि, माम्=शकुन्तलाम्, अनुसरति=अनुधावति। तत्=तस्मात्, माम्=शकुन्तलाम्, परित्रायेथाम्।

राजा—(सत्वरम्=शीघ्रम्, उपगम्य=शकुन्तलादीनां समीपं गत्वा) आः=इति कोपे।

अन्वयः—दुर्विनीतानां शासितरि पौरवे वसुमतीं शासति सति कोऽयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु अविनयम् आचरति॥ २७॥

क इति। दुर्विनीताम्=दुष्टानाम्, शासितरि=शासनकर्त्तरि, पौरवे=पुरुवंशप्रसूते राजनि, वसुमतीं=वसुन्धराम्, शासति=पालयति सति, कोऽयम्, मुग्धासु=स्वभावसरलासु, तपस्विकन्यासु=तापसबालिकासु, अविनयम्=असदाचारम्, आचरति=व्यवहरति (स मे दण्ड्य इति भावः)। अत्र च्छेकानुप्रासः, आर्या जातिः॥ २७॥

(सर्वाः=ताः कन्याः, राजानं दृष्ट्वा किञ्चिदिव, सम्भ्रान्ताः=चकिताः भवन्ति।)

सख्यौ—आर्य्य! न किमपि अत्याहितम्=महाभीतिः, किन्तु, खलु=इति निश्चये, इयमस्माकं प्रियसखी, दुष्टमधुकरेण=दुर्विनीतषट्पदेन, आकुलीक्रियमाणा=सन्त्रासिता, व्याकुलिता सति, कातरीभूता=विक्षुब्धा जाता।

राजा—(**शीघ्रतापूर्वक उनके पास पहुँचकर**) आह! दुष्टों पर शासन करने वाले पुरुवंशी राजा के पृथ्वी पर शासन करते समय भला वह कौन दुर्विनीत है जो इन स्वभाव से सरल तपस्वी कन्याओं पर अन्याय कर रहा है?

(**सब राजा को देखकर हड़बड़ा जाती हैं।**)

दोनों सखियाँ—आर्य! कोई विशेष भय की बात नहीं है। किन्तु हमारी यह सखी भ्रमर द्वारा सतायी जाने से घबरा उठी है (**यह कहकर शकुन्तला को दिखाती हैं**)।

King—(Quickly approaching) Oh!

While a descendant of Puru; a chastiser of the ill-mannered, governs the world, who is this that is so rude to these artless hermit girls? (27)

(All are slightly confused at the sight of the king)

Both friends—It is nothing very dreadful, respected sir, but this our dear friend was teased and frightened by the bee. *(Indicates Śakuntalā)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(शकुन्तलामुपेत्य) अयि! तपो वर्द्धते?

(शकुन्तला ससाध्वसावनतमुखी तिष्ठति।)

अनसूया—दाणिं अदिधिविसेसलाहेण। [इदानीम् अतिथिविशेषलाभेन।]

प्रियंवदा—साअदं अज्जस्स। हला सउंतले! गच्छ, उडआदो फलमिस्सं अग्घभाअणं उवहर, इदंपि पाओदअं भविस्सदि। (इति घटं दर्शयति।) [स्वागतमार्यस्य। हला शकुन्तले! गच्छ, उटजात् फलमिश्रमर्घ्यभाजनमुपहर, इदमपि पादोदकं भविष्यति।]

राजा—भवतीनां सूनृतयैव वाचा कृतमातिथ्यम्।

राजा—(शकुन्तलामुपेत्य=निकटं गत्वा) अयि=इति कोमलसम्बोधने, तपो वर्द्धते= निर्विघ्नेन तपो वर्द्धते ननु?

(शकुन्तला, साध्वसेन=भयेन, सह वर्त्तते इति ससाध्वसा, अवनतमुखी=लज्जया नम्रमुखी, तिष्ठति।)

अनसूया—इदानीम्, विशिष्टोऽतिथिरित्यतिथिविशेषस्तस्य लाभेन=प्राप्त्या (भवल्लाभेन), तपो वर्द्धत इति पूर्वेण सम्बन्धः।

प्रियंवदा—आर्यस्य=भवतः, स्वागतम्=शुभागमनम्। हला शकुन्तले! गच्छ, उटजात्= पर्णशालायाः, फलेन मिश्रं=युक्तं, फलमिश्रम्, अर्घ्यभाजनम्=अर्घ्यपात्रम्, उपहर=आनय, इदमपि= घटस्थितजलमपि (वृक्षसेचनार्थमानीतं जलमपि), पादोदकं=पादप्रक्षालनजलं, भविष्यति। (इति=इत्युक्त्वा, घटं=जलभाण्डं, दर्शयति।)

राजा—भवतीनां, सूनृतया=सत्यया प्रियया च, वाचा=वाक्येनैव, आतिथ्यम्=अतिथि-सत्कारः, कृतं=विहितम्।

राजा—(शकुन्तला के पास जाकर) अयि! तुम्हारी तपस्या तो बढ़ रही है न?

(शकुन्तला लज्जा से सिर झुकाये खड़ी रहती है।)

अनसूया—आप जैसे विशेष अतिथि को पाकर तपस्या बढ़ ही रही है।

प्रियंवदा—आर्य का स्वागत है। सखी शकुन्तले! जाओ कुटिया से फलमिश्रित अर्घ ले आओ। (और) यह पाँव धोने के काम आ जायेगा (घड़ा दिखाती है)।

राजा—आप लोगों की मधुर और सत्यवाणी ने ही हमारा अतिथिसत्कार कर दिया है।

King—(Approaching Śakuntalā) I trust your devotion or penance prospers.

(Śakuntalā stands speechless through embarrassment).

Anasūyā—Now through the arrival of a distinguished guest like you.

Priyaṁvadā—Welcome, respected sir. Dear Śakuntalā, go to the cottage and fetch an offering mixed with fruits. This will serve as water for washing the feet. *(Points at the pitcher)*

King—The rites of hospitality have been performed by your sweet and truthful speech (words).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—इमस्सिं दाव पच्छाअसीदलाए सत्तवण्णवेदिआए उवविसिअ अज्जो परिस्समं अवणेदु। [अस्यां तावत् प्रच्छायशीतलायां सप्तपर्णवेदिकायामुपविश्य आर्यः परिश्रममपनयतु।]

राजा—नूनं यूयमप्यनेन धर्मकर्मणा परिश्रान्ताः, तन्मुहूर्तमुपविशत।

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्) हला सउंतले! उइदं णो अदिधिपज्जुवासणं, ता एहि उवविसम्ह। (इति सर्वा उपविशन्ति।) [हला शकुन्तले! उचितं नः अतिथिपर्युपासनम्, तद् एहि, उपविशामः।]

शकुन्तला—(आत्मगतम्) कधं इमं जणं पेक्खिअ तवोबणविरोहिणो विआरस्स गमणीअह्मि संवुत्ता। [कथमिदं जनं प्रेक्ष्य तपोवनविरोधिनो विकारस्य गमनीयास्मि संवृत्ता।]

अनसूया—तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, प्रकृष्टा छाया प्रच्छायं, तेन शीतला, तस्यां प्रच्छायशीतलायाम्, अस्याम्, सप्तपर्णस्य=विषमच्छदवृक्षस्य (छदौना इति भाषायाम्), वेदिकायाम्=मूलस्थचतुरस्रभूमौ, उपविश्य, परिश्रमं=मार्गश्रमम्, अपनयतु=दूरीकरोतु, आर्यः=मान्यः।

राजा—अनेन=परिदृश्यमाणेन, धर्म्मकर्मणा=जलसेचनादिरूपधर्मकार्येण, नूनं=निश्चितमेव, यूयं=भवत्यः, परिश्रान्ताः=क्लान्ताः, तत्=तस्मात्, मुहूर्तम्=किञ्चित्कालपर्यन्तम्, उपविशत।

प्रियंवदा—(जनस्य=उद्देश्यभूतजनस्य, अन्तिकम्=समीपम्, जनान्तिकम्=अनन्यबोध्यमित्यर्थः) हला शकुन्तले! नः=अस्माकम्, अतिथिपर्युपासनम्=अभ्यागतसत्कारं, उचितम्=समीचीनम्, तत्=तस्मात्, एहि=आगच्छ, उपविशामः। (इति सर्वा उपविशन्ति)

शकुन्तला—(आत्मगतम्=स्वगतम्) इमं=पुरतः स्थितम्, जनं=दुष्यन्तमिति यावत्, प्रेक्ष्य=दृष्ट्वा, तपोवनस्य=आश्रमस्य, विरोधिनः=विरुद्धस्य, विकारस्य=विकृतेः, गमनीया=प्रापणीया,

---

अनसूया—आर्य! आप भी इस सघन छाया युक्त सप्तपर्ण की वेदी पर बैठकर अपनी थकावट को मिटा लें।

राजा—निश्चय ही आप सब भी जलसिञ्चन रूपी धर्मकार्य से थक गई होंगीं। अतः आप सब भी थोड़ी देर के लिए बैठ जाइए।

प्रियंवदा—(शकुन्तला के कान में छिपाकर) सखी शकुन्तले! हमें अतिथि का सत्कार करना चाहिए। तो आओ बैठ जायें। (इस प्रकार सब बैठ जाती हैं)

शकुन्तला—(स्वयं) न जाने इस व्यक्ति को देखकर मैं क्यों तपोवन-विरोधी भावों का लक्ष्य बनी जा रही हूँ?

Anasūyā—Then, please divert your fatigue by sitting for a while on the seat under the cool and dense shade of the Saptaparna Tree.

King—Why! you also are fatigued by this holy work.

Priyaṁvadā—*(Proximity, whispering)* Dear Śakuntalā! it is proper for us to wait upon our guests. Let us sit here. *(All sit down)*

Śakuntalā—*(To herself)* How it is that having seen this person I have become susceptible to an emotion inconsistent with a penance grove.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सर्वा अवलोक्य) अहो! समानवयोरूपरमणीयं सौहार्दमत्रभवतीनाम्।

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्) हला अणसूए! को णु क्खु एसो दुरवगाहगंभीराकिदी महुरं आलवंतो पहुत्तदाक्खिण्णं वित्थारेदि। [हला अनसूये! को नु खलु एष दुरवगाह-गम्भीराकृतिर्मधुरमालपन् प्रभुत्वदाक्षिण्यं विस्तारयति।]

अनसूया—हला! मम वि अत्थि कोदूहलं, ता पुच्छिस्सं दाव णं। (प्रकाशम्) अज्जस्स महुरालाबजणिदो विस्संभो मं आलावेदि। कदरो राएसिवंसो अलंकरीअदि अज्जेण? कदमो वा देसो विरहपज्जुस्सुओ करीअदि? किं णिमित्तं वा अज्जेण सुउमारेण तवोवणगमणपरिस्समे अप्पा उवणीदोत्ति?। [हला! ममापि अस्ति कौतूहलम्, तत् प्रक्ष्यामि तावदेनम्। आर्यस्य मधुरालापजनितो विश्रम्भो मामालापयति। कतरो राजर्षिवंशः अलंक्रियते

कथं=केन कारणेन, संवृत्ता अस्मि=जाता अस्मि? (तपोविनाशकतया विरुद्धस्य कामवेगस्य प्रभावेन कथमहमभिभूता इव जाता इति भावः।)

राजा—(सर्वा अवलोक्य=दृष्ट्वा) अहो! इति कौतुके, अत्रभवतीनां=पूज्यानाम् (युष्माकम्), सौहार्दं=परस्परमैत्रीं, समानानि=अन्योन्यतुल्यानि, वयांसि, रूपाणि=आकृतयः स्वभावश्च, तैः रमणीयं=मनोहरम् समानवयोरूपरमणीयम्।

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्=अनसूयापार्श्वे) हला अनसूये! को नु खलु एषः=न जाने कोऽयं महानुभावः, यः, दुःखेनावगाह्यते इति दुरवगाहा=दुष्प्रवेशा (दुर्बोधस्वभावः), गम्भीरा आकृतिर्यस्य सः गम्भीराकृतिः, मधुरं=मिष्टम्, आलपन्=कथयन्, प्रभुत्वं=प्रभावः (निग्रहानुग्रह-सामर्थ्यं), दाक्षिण्यम्=औदार्य्यम्, विस्तारयति=प्रकाशयति।

अनसूया—हला! ममापि=मम मनसि अपि, कौतूहलं=परिज्ञानार्थं जिज्ञासा, अस्ति, तत्=तस्मात्, तावत् एनं=जनं, प्रक्ष्यामि। (प्रकाशम्=सर्वश्राव्यम्) आर्यस्य=भवतः, मधुरालाप-जनितः=प्रियालापोद्भवः, विश्रम्भः=विश्वासः, माम् आलापयति=आलपितुं नियोजयति, आर्येण=

राजा—(सबको देखकर) समान आयु और रूप के कारण आपलोगों की मित्रता भी बड़ी सुन्दर प्रतीत होती है।

प्रियंवदा—(सखी से चुपके से) सखी अनसूया! ये कौन हैं? जिनकी आकृति गम्भीर और स्वभाव दुर्बोध है और जो अपनी मधुर बातों से अपनी प्रभुता और उदारता का विस्तार (प्रदर्शन) कर रहे हैं।

अनसूया—सखी! मेरे मन में भी (यह जानने का) कौतूहल है। अतः मैं इन्हीं से पूछती हूँ। (प्रगट) आपके मधुर आलाप से आश्वस्त होकर ढिठाई मुझे कुछ पूछने के लिए

King—(Looking at all) How charming is your friendship owing to your equal age and beauty.

Priyaṁvadā—(Aside) Anasūyā! who indeed may this be, that being and dignified in appearance and talking in a pleasing and sweet manner, appears as though endowed with majesty.

Anasūyā—Dear! I too possess the curiosity, I will just ask him. ***(Aloud)*** The confidence created by your sweat tongue prompts

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्येण? कतमो वा देशो विरहपर्युत्सुकः क्रियते? किं निमित्तं वा आर्येण सुकुमारेण तपोवनगमनपरिश्रमे आत्मा उपनीतः ?]

शकुन्तला—(आत्मगतम्) हिअअ! मा उत्तम्म, जं तुए चिंतिदं तं अणसूआ मंत्रेदि। [हृदय! मा उत्ताम्य, यत् त्वया चिन्तितं तदनसूया मन्त्रयति।]

राजा—(स्वगतम्) कथमिदानीमात्मानं निवेदयामि, कथं वात्मनः परिहारं करोमि। भवतु, एवं तावत्। (प्रकाशम्) भवति! वेदविदस्मि राज्ञः पौरवस्य नगरधर्माधिकारे नियुक्तः, पुण्याश्रमदर्शनप्रसङ्गेन धर्मारण्यमिदमायातः।

भवता, कतरः=कः, राजर्षिवंशः, अलंक्रियते=जन्मना विभूष्यते। कतमो वा देशः=बहूनां देशानां मध्ये को वा देशः, विरहेण=वियोगेन, पर्युत्सुकः=उत्कण्ठितः, क्रियते (कस्माद्देशादागतोऽसीति भावः)। किन्निमित्तं वा, सुकुमारेण=मृदुलाङ्गेन, आर्येण=मान्येन, तपोवनगमनपरिश्रमे, आत्मा=देहः, उपनीतः=उपस्थापितः (किमत्रागमनकारणमित्यर्थः)।

शकुन्तला—(आत्मगतम्) हृदय! मा उत्ताम्य=जिज्ञासया सन्तापं मा कृथाः। यत् त्वया, चिन्तितं=प्रष्टव्यत्वेन निश्चितम्, तदनसूया, मन्त्रयति=पृच्छति।

राजा—(स्वगतम्) कथं=केनोपायेन, इदानीम्=अधुना, आत्मानं निवेदयामि=स्वात्मपरिचयं ददामि, वा=अथवा, कथम्=केनोपायेन, आत्मनः=स्वस्य, परिहारं करोमि=अन्यरूपेणाभिधाय गोपनं करोमि। (किञ्चिदुपायं विचार्य) एवम्=इत्थम्, तावत्=भवतु। (प्रकाशम्) भवति इति सम्बोधने, (अहम्) वेदवित्=वेदज्ञः अस्मि (वेदज्ञब्राह्मणोऽस्मि इति भावः), तथा च

विवश कर रही है। (कृपया बताइए) आप किस राजवंश को अलंकृत करते हैं (आप किस वंश से सम्बद्ध हैं) ? किस देश को विरहोत्कण्ठित कर यहाँ पधारे हैं और आप जैसे सुकुमार व्यक्ति ने किसलिए तपोवन में आने के घोर परिश्रम में स्वयं को डाला है ?

शकुन्तला—(मन में) हृदय! अधिक उतावले न बनो! तुमने जो सोचा था, वही बात अनसूया पूछ रही है।

राजा—(मन में) अब किस प्रकार अपना परिचय दूँ अथवा किस प्रकार अपना बचाव करूँ (सच्चा परिचय छिपाऊँ)। अच्छा ऐसे ही सही। (प्रगट) आर्ये! मैं वेदज्ञ विद्वान् तथा नगरधर्माधिकार पर नियुक्त धर्माधिकारी हूँ। पावन आश्रमों के दर्शन प्रसङ्ग में इधर-उधर घूमता हुआ इस पुनीत तपोवन में आ पहुँचा हूँ।

---

me to speak which family of royal sages is adorned by you? Which country and its people you have distressed through separation from you? For what reason has yourself, though very delicate, been subjected to the fatigue of a visit to the penance grove?

Śakuntalā—(Aside or to herself) O my heart, don't be uneasy. This Anasūyā speaks your very thoughts.

King—(To himself) How shall I disguise myself now? Well, I will speak to her thus. *(Aloud)* Respected Madam! I am the person appointed by the king, the descendent of Puru, to supervise religious rites, and have arrived at this penance grove to ascertain

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—अज्ज सणाधा धम्मआरिणो। [अद्य सनाथा धर्मचारिणः।]

(शकुन्तला लज्जां नाटयति।)

सख्यौ—(उभयोराकारं विदित्वा) हला सउंतले! जइ अज्ज तादो इध सण्णिहिदो भवे···। [हला शकुन्तले! यदि अद्य तात इह सन्निहितो भवेत्···।

शकुन्तला—तदो किं भवे? [ततः किं भवेत्?]

सख्यौ—तदो जीविदसव्वस्सेण वि इमं अदिधिविसेसं कदत्थं करेदि। [ततो जीवितसर्वस्वेनापि इमम् अतिथिविशेषं कृतार्थं करोति।]

पौरवस्य=पुरुवंशोद्भवस्य राज्ञः दुष्यन्तस्य, नगराणि=राज्यानि (पुराणि), धर्माः=प्रजापालनादयः शौचाचारादयो वा, तेषामधिकारे=नग..र्माधिकारे, नियुक्तः=व्यापारितः, पुण्याश्रमाणां=पावनाश्रमाणां, दर्शनप्रसङ्गेन=पर्य्यवेक्षणप्रसङ्गेन, इदं धर्मारण्यं=तपोवनम्, आयातः=आगतः। (अन्यत्र मृगयाकरणावसरे आश्रममृगमनुधावन् कतिचिद्वैखानसैरनुरोधकारणात् पुण्याश्रमदर्शनप्रसङ्गेनेदं धर्मारण्यमागतः।)

अनसूया—अद्य, धर्मचारिणः=धर्माचरणतत्पराः, नाथेन=प्रभुणा, सह वर्त्तमाना इति सनाथाः (भवदागमनेन कृतार्थाः)।

शकुन्तला—(शृङ्गारलज्जां=मदनजनितलज्जासूचकबहिर्विकारम्, नाटयति=अभिनयति)।

सख्यौ—(उभयोः=राज्ञः शकुन्तलायाश्च, आकारं=भावसूचकमुखलक्षणं, विदित्वा=अवगम्य) हला शकुन्तले! यदि अद्य तातः=कण्वः, इह=अत्र (अस्मिन्नाश्रमे), सन्निहितः=उपस्थितो भवेत्?

शकुन्तला—ततः=तदा, किं भवेत्?

अनसूया—आज धर्मचारी लोग (धर्माचरण करने वाले) सनाथ हो गये।

(शकुन्तला शृंगार-लज्जा का अभिनय करती है।)

सखियाँ—(राजा और शकुन्तला के आकार को जानकर) सखी शकुन्तला! यदि आज पिता कण्व यहाँ होते तो····

शकुन्तला—तब क्या होता?

सखियाँ—तब तो अपने जीवन का सर्वस्व (अर्थात् तुम्हें) देकर इस विशेष अतिथि को कृतार्थ कर देते।

---

whether the religious rites suffer any obstruction or in course of visiting holy places, by chance I have reached over here i.e. in this pure (holy) penance grove.

Anasūyā—Now the people engaged in acts of piety have found some one to take care of them.

Śakuntalā—*(Acts amorous bashfulness)*

The two friends—*(Observing the demeanour of both of them)* Dear Śakuntalā, if the father were here today...?

Śakuntalā— What would happen then?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(सकृतककोपम्) अवेध, तुम्हे किंपि हिअए कदुअ मंतेध, ण वो वअणं सुणिस्सं। [अपेतम्, युवां किमपि हृदये कृत्वा मन्त्रयथः, न वां वचनं श्रोष्यामि।]

राजा—वयमपि भवत्योः सखीगतं किञ्चित् पृच्छामः।

सख्यौ—अज्ज! अणुग्गहे वि अब्भत्थणा! [आर्य! अनुग्रहेऽपि अभ्यर्थना।]

राजा—तत्रभवान् कण्वः शाश्वते ब्रह्मणि वर्त्तते, इयञ्च वः सखी तस्यात्मजा, कथमेतत्?

सख्यौ—ततः=तदा, जीवितस्य सर्वस्वं=दारापत्यादिरूपं द्रविणं, तेन, तस्य हि कस्मैचिददेयत्वाज्जीवितसर्वस्वेन, अपि, अथवा जीवितस्य=आत्मनो जीवनस्य, सर्वस्वेनापि=सर्वसम्पत्तिस्वरूपेणापि वस्तुना (त्वया=शकुन्तलया इति भावः) इमम्=लोकोत्तरगुणविशिष्टम्, अतिथिविशेषम्=विलक्षणं अतिथिं, कृतार्थं=सफलमनोरथं, करोति=विदधाति करिष्यति (तदा अतिथये त्वां दत्त्वाऽऽत्मानमानन्दयेदिति)।

शकुन्तला—(कृत्रिमकोपेन सहेति सकृतककोपं तद् सकृतककोपम्) अपेत=दूरमपसरत, युवां, किमपि=यथा रोचते तथैव (मत्परिणयविषयम्), हृदये कृत्वा=अभिसन्धाय, मन्त्रयथः=कथयथः, वां=युवयोः, वचनं न श्रोष्यामि=असम्बद्धप्रलापित्वाद् न आकर्णयिष्यामि।

राजा—वयमपि=अहमपि, भवत्योः=युवयोः, सखीगतं=शकुन्तलासम्बद्धम्, किञ्चित् पृच्छामः=ज्ञातुमिच्छामः।

सख्यौ—आर्य! अनुग्रहेऽपि=अनुग्रहपदेऽपि, अभ्यर्थना=प्रार्थना (क्रियते)। (भवद्विधानामस्मद्विधासु प्रश्नोऽनुग्रह एव, अत एव प्रार्थना कथमपि नोपयुज्यते इति भावः।)

राजा—तत्रभवान्=पूज्यः, कण्वः=महर्षिः, शाश्वते=नित्ये, ब्रह्मणि=ब्रह्मचर्यव्रते, वर्त्तते, इयं च, वः=युष्माकम्, सखी=शकुन्तला, तस्य=महर्षेः (कण्वस्य), आत्मजा=तनया, एतत् कथम्=केन प्रकारेण?

शकुन्तला—(बनावटी क्रोध से) हटो, तुम दोनों अपने मन में कुछ-कुछ विचार कर इस प्रकार कहती हों, अतः मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगी।

राजा—हम भी आपकी सखी के सम्बन्ध में कुछ पूछना चाहते हैं?

सखियाँ—आर्य! कृपा करने के लिए भी प्रार्थना?

राजा—पूज्य महर्षि कण्व तो नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं और यह आपकी सखी उनकी पुत्री है—यह भला कैसे?

The two friends—He would make this distinguished guest satisfied, even if it took the most valuable possession of his life.

Śakuntalā—Go to! you form some absurd motion in your mind and speak. I will not listen to you.

King—We also want to ask something about your friend.

Friends—This request is a veritable favour.

King—It is known that his reverence Kaṇva observes perpetual celibacy. How is it that this your friend is his daughter?

 CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—सुणादु अज्जो। अत्थि को वि कोसिओ त्ति गोत्तणामहेओ महाप्पहावो राएसी। [शृणोतु आर्यः। अस्ति कोऽपि कौशिक इति गोत्रनामधेयो महाप्रभावो राजर्षिः।

राजा—स खलु भगवान् कौशिकः।

अनसूया—तं सहीए पहवं अवगच्छ। उज्झिदाए सरीरसंबड्ढणादिहिं उण तादकण्णो वि एदाए पिदा। [तं सख्याः प्रभवमगच्छ। उज्झितायाः शरीरसंवर्द्धनादिभिः पुनस्तातकण्वोऽपि एतस्याः पिता।]

अनसूया—शृणोतु आर्य्यः=मान्यः शृणोतु। अस्ति कोऽपि, कुशिकस्यापत्यं पुमान् कौशिकः, इति=इत्थं, गोत्रनामधेयः=वंशानुभावकनामधेयः। महाप्रभावः=महातेजाः, राजर्षिः=क्षत्रियतपस्वी (विश्वामित्रः)।

राजा—सः=प्रसिद्धः, भगवान्=लोकातीतमाहात्म्ययुक्तः, कौशिकः=विश्वामित्रः (यः जन्मना क्षत्रियोऽपि स्वमाहात्म्येन ब्राह्मणत्वमापेति भावः)।

अनसूया—तं=कौशिकं, सख्याः=शकुन्तलायाः, प्रभवं=जन्मकारणं (जनकम्), अवगच्छ=जानीहि, उज्झितायाः=त्यक्ताया अस्याः, शरीरस्य=देहस्य, संवर्द्धनादिभिः= परिपोषणादिभिः, पुनरित्यविशेषे, तातकण्वोऽपि=जनककण्वोऽपि, एतस्याः=शकुन्तलायाः, पिता=जनकः (धर्मपितेति भावः)।

राजा—उज्झितः=त्यक्तः, इति शब्देन, नः=अस्माकम्, कुतूहलम्=कौतुकम्, आश्चर्यम् (जिज्ञासा इति यावत्), जनितम्=उत्पादितं, तत्=तस्मात्, आमूलात्=आदित आरभ्य, श्रोतुं=आकर्णयितुं, इच्छामः=वाञ्छामः।

अनसूया—आर्य! सुनिए, कौशिक नामक गोत्र और नाम वाले कोई बड़े भारी राजर्षि हुए हैं, जो अमित प्रभावशाली थे।

राजा—हाँ, वे भगवान् कौशिक थे।

अनसूया—उन्हें ही मेरी सखी का पिता समझें। परित्यक्त (इस शकुन्तला) के पालन-पोषण-संवर्द्धन के लिए महर्षि कण्व भी इसके पिता हैं।

राजा—'त्याग दिया' इस शब्द ने मेरे हृदय में कुतूहल जगा दिया है, अतः आरम्भ से इस सम्बन्ध में जानना चाहता हूँ।

Anasūyā—Honourable sir, please hear. There was a certain royal sage of great majesty whose family name is Kaushika.

King—There is, I know.

Anasūyā—Know him to be the progenitor of our friend. Father Kaṇva is her father by reason of his fostering (nourishing) her body etc. when she was deserted.

King— The word "deserted or (emitted)" has excited my curiosity. I wish to hear from the very beginning.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—उज्झितशब्देन जनितं नः कुतूहलम्। तदामूलाच्छ्रोतुमिच्छामः।

अनसूया—सुणादु अज्जो। पुरा किल तस्स राएसिणो उग्गे तवसि वत्तमाणस्स कधंपि जादसंकेहिं देवेहिं मेणआ णाम अच्छरा णिअमविग्घआरिणि पेसिदा। [**श्रृणोतु आर्यः। पुरा किल तस्य राजर्षेरुग्रे तपसि वर्त्तमानस्य कथमपि जातशङ्कैः देवैः मेनका नाम अप्सरा नियमविघ्नकारिणी प्रेषिता।**]

राजा—अस्त्येवान्यसमाधिभीरुत्वं देवानाम्। ततस्ततः ?

अनसूया—तदो वसंतावदाररमणीए समए उम्मादहेदुअं ताए रूवं पेक्खिअ····। (इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयति।) [**ततो वसन्तावताररमणीये समये उन्मादहेतुकं तस्या रूपं प्रेक्ष्य····।**

अनसूया—आर्यः=मान्यः, शृणोतु=आकर्णयतु, पुरा=अतीते काले, किलेति=परम्परागत-लोकवार्त्तायाम्, तस्य=पूर्वोक्तस्य, राजर्षेः=विश्वामित्रस्य, उग्रे=उत्कटे, तपसि=नियमे, वर्त्तमानस्य=तदाचरत इत्यर्थः, कथमपि=केनाऽपि हेतुना, जातशङ्कैः=जातभयैः, देवैः, नियमस्य=तपसः, विघ्न-कारिणी=भङ्गकारिणी, मेनका नाम अप्सरा=इति नाम्ना प्रसिद्धा सुराङ्गना, प्रेषिता=प्रेरिता प्रहिता वा।

राजा—देवानाम्=इन्द्रादीनाम्, अन्येषां यः समाधिः=तपोनियमः, तस्माद् भीरुत्वम्=भयशीलत्वम्, अस्त्येव=वर्तते खलु। ततस्ततः=तदा किमभूत् ?

अनसूया—तदा, वसन्तस्य=मधुऋतोः, अवतारेण=प्रवृत्त्या, रमणीयः=मनोहरः, तस्मिन् समये=वसन्तावताररमणीये समये, उन्मादहेतुकम्=चित्तविभ्रमहेतुभूतम् (कामोद्दीपकम्), तस्याः=मेनकायाः, रूपं=सौन्दर्यम्, प्रेक्ष्य=दृष्ट्वा, (इत्यर्द्धोक्ते—तया सह रन्तुं प्रवृत्तो राजर्षिर्गर्भमजनयदिति वाक्यशेषस्य प्रेक्ष्येत्यन्तमर्द्धम्, लज्जां नाटयति=अभिनयति)

अनसूया—आर्य! सुनिये, बहुत पहले जब वे राजर्षि उग्र तपस्या में संलग्न थे, किसी कारण शङ्कित होकर देवताओं ने तपस्या में विघ्न डालने वाली मेनका नामक अप्सरा को भेजा।

राजा—दूसरों की समाधि (तपस्या) देखकर देवताओं को भय होता ही है। फिर क्या हुआ ? (अर्थात् दूसरों के तप से भयभीत होना देवताओं का स्वभाव ही है।)

अनसूया—इसके बाद वसन्तऋतु के प्राकट्य से रमणीय काल में कामभावना जगाने वाले उसके मादक रूप को देखकर···· (**इतना आधा ही कहकर लज्जा का अभिनय करती है।**)

Anasūyā—Your honour! please hear. Formerly, they say, to that royal sage, who was practising rigorous penance, was sent by the gods, who some how grew alarmed, a nymph named Menakā to cause obstacles to his vows.

King—There is this dread of the gods regarding other's practice of penance.

Anasūyā—Then, in the pleasant time of spring season, having seen her intoxicating form. ***(stops through bashfulness when half said)***

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—पुरस्तादवगम्यत एव सर्वथा अप्सरःसम्भवैषा।

अनसूया—अध इं? [अथ किम्?]

राजा—उपपद्यते—

मानुषीभ्यः कथं नु स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥ २८॥

(शकुन्तला सव्रीडाऽधोमुखी तिष्ठति।)

राजा—पुरस्तात्=अग्रतः, अवगम्यते=ज्ञायते, एव (अत एकवाचा कथनमनावश्यकमिति भावः), एषा=शकुन्तला, सर्वथा=पूर्णतः, अप्सरःसम्भवा=अप्सरोगर्भसम्भूता एव नास्त्यत्र सन्देहलेशावसरः।

अनसूया—अथ किम् इत्यङ्गीकारे (स्वीकरोमीत्यर्थः)।

राजा—उपपद्यते=युज्यते (अस्या अप्सरःसम्भवत्वमुपपद्यते), यतः—

अन्वयः—मानुषीभ्यः अस्य रूपस्य कथं नु सम्भवः स्यात्। प्रभातरलं ज्योतिः वसुधातलात् न उदेति॥ २८॥

मानुषीभ्य इति। मानुषीभ्यः=नानाविधमानवजातिस्त्रीभ्यः, अस्य=दृश्यमानस्य (शकुन्तलाया इति भावः), रूपस्य=सौन्दर्यस्य आकृतेर्वा, कथं नु सम्भवः=समुद्भवः, स्यात्, न कथमपीत्यर्थः। (यथा) प्रभया=त्विषा, तरलं=भास्वरं, प्रभातरलम्, ज्योतिः=तेजः, वसुधातलात्=भूतलात्, न उदेति=नोत्पद्यते। अत्र प्रतिवस्तूपमालङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २८॥

भावार्थः—यथा त्विषा भास्वरं ज्योतिः भूतलात् नोत्पद्यते तथैव शकुन्तलायाः दृश्यमानस्यास्य सौन्दर्यस्य मानुषीभ्यः कथं नु समुद्भवः स्यात्? (न कथमपीत्यर्थः)॥ २८॥

(शकुन्तला सव्रीडा=सलज्जा, अधोमुखी=नम्रमुखी तिष्ठति।)

राजा—आगे की घटना तो सहज ही समझ में आ जाती है, तो यह पूर्णतः अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुई है?

अनसूया—और क्या? (अर्थात् आप का अनुमान सही है)

राजा—ठीक है—

मनुष्य जाति की स्त्री से भला ऐसे रूप का जन्म कैसे सम्भव है? प्रकाश से तरल ज्योति (विद्युत्) पृथ्वी से नहीं उत्पन्न हुआ करती। २८॥

(शकुन्तला लज्जापूर्वक मुख नीचा किये रहती है।)

King—The sequel is quite understood. Verily she is born of a nymph.

Anasūyā—Exactly.

King—That is proper—"How could the rise of such form take place amongst mortal females? The flash, tremulous with lustre, does not spring from the surface of the earth. (28)

(Śakuntalā stands with her face hung down)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(आत्मगतम्) हन्त! लब्धावकाशो मे मनोरथः।

प्रियंवदा—(सस्मितं शकुन्तलां विलोक्य) पुणो वि वत्तुकामो विअ अज्जो लक्खीअदि। [पुनरपि वक्तुकाम इव आर्यो लक्ष्यते।]

(शकुन्तला सखीमङ्गुल्या तर्जयति।)

राजा—सम्यगुपलक्षितं भवत्या। अस्ति नः सच्चरितश्रवणलोभादन्यदपि प्रष्टव्यम्।

प्रियंवदा—तेण हि अलं विआरिदेण, अणिज्जंतणाणुजोओ क्खु तवस्सिजणो। [तेन हि अलं विचारितेन, अनियन्त्रणानुयोगः खलु तपस्विजनः।]

राजा—(आत्मगतम्) हन्तेति हर्षे, लब्धः=प्राप्तः, अवकाशः=अवसरः, प्रवेशद्वारं वा, येन सः लब्धावकाशः, मे=मम, मनोरथः=अभिलाषः।

प्रियंवदा—(सस्मितम्=ईषद्हाससहितं, शकुन्तलां=स्वसखीं, विलोक्य=दृष्ट्वा) पुनरपि=अन्यदपि, वक्तुकामः=कथनेच्छुरिव, आर्य्यः=भवान्, लक्ष्यते=प्रतीयते।

(शकुन्तला सखीम्=प्रियंवदाम्, अङ्गुल्या=तर्जन्या (सङ्केतेन वा), तर्जयति=भर्त्सयति।)

राजा—सम्यक्=यथार्थम्, उपलक्षितम्=उन्नितम् (ज्ञातम्), भवत्या=त्वया, सच्चरितस्य=सदाचारस्य, श्रवणलोभात्=श्रवणौत्सुक्यात्, नः=अस्माकं, अन्यदपि=अपरञ्च, प्रष्टव्यम्=जिज्ञास्यम्, अस्ति।

प्रियंवदा—तेन हि=प्रष्टव्यान्तरसद्भावेनैव हेतुना, विचारितेन=विचारेण, अलम्=पर्याप्तम् (यथेच्छया प्रष्टव्यमिति भावः), नियन्त्रणा=देशकालादिभिर्निर्दिष्टनियमः, न विद्यते नियन्त्रणा=

राजा—(मन में) मेरी इच्छा को प्रवेशद्वार मिल गया है (इच्छापूर्ति का अवसर हाथ आ गया)।

प्रियंवदा—(मुस्कान सहित शकुन्तला को देखकर) जान पड़ता है, अभी आप और कुछ कहना चाहते हैं।

(शकुन्तला सखी को अङ्गुली के संकेत से डाँटती है।)

राजा—आपने ठीक अनुमान लगाया। आप लोगों के सुन्दर चरित्र को जानने के लोभवश हमें अभी कुछ और जानना शेष है।

प्रियंवदा—तब तो अधिक सोच-विचार करने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि तपस्वियों से कुछ पूछने के लिए कोई विशेष नियम नहीं रहता।

King—(To himself) My desire has found a way.

Priyaṁvadā—(Smilingly looking at Śakuntalā) Your honour looks as though desirous of speaking again?

(Śakuntalā rebukes her frined with her figner)

King—Your guess is correct. From an eagerness to hear the deeds of the good, there is still something to be asked by us (me).

Priyaṁvadā—Enough of deliberating. Ascetic people may surely be questioned without any reserve.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—एतत् पृच्छामि—

वैखानसं किमनया व्रतमा प्रदानाद्
व्यापाररोधि मदनस्य निषेवितव्यम्।
अत्यन्तमेव सदृशेक्षणवल्लभाभि
राहो निवत्स्यति समं हरिणाङ्गनाभिः॥ २९॥

प्रियंवदा—अज्ज! धम्माअरणपरवसो एस जणो, गुरुणो उण से अणुरूअवरप्पदाणे संकप्पो। [आर्य! धर्माचरणपरवश एष जनः, गुरोः पुनरस्या अनुरूपवरप्रदाने सङ्कल्पः।]

दोकालादिभिर्निश्चितनियमः, यस्मिन् सः अनियन्त्रणः, अनुयोगः=प्रश्नः, यस्मिन् सः तथाभूतः, खलु=इति निश्चयेन, तपस्विजनः=मुनिजनः (मुनिजनस्य विकाररहितत्वात् तेषां सन्निधावनियमेनैव सर्वं प्रष्टुमर्हसि)।

राजा—एतत्=वक्ष्यमाणम्, पृच्छामि=ज्ञातुमिच्छामि।

अन्वयः—अनया आ प्रदानात् मदनस्य व्यापाररोधि वैखानसे किं निषेवितव्यम् आहो सदृशेक्षणवल्लभाभिः हरिणाङ्गनाभिः समम् अत्यन्तमेव निवत्स्यति॥ २९॥

वैखानसमिति। अनया=शकुन्तलया, आ प्रदानात्=योग्यवराय प्रदानपर्यन्तम्, मदनस्य=कामस्य, व्यापारः=व्यवहारः, तं रुणद्धि=परिहरतीति, तत् व्यापाररोधि, वैखानसं=तापसं व्रतं, किं निषेवितव्यम्=पालयितव्यम्? आहो=अथवा, सदृशे=स्वसमाने, ईक्षणे=नयने, यासां ताः, अत एव वल्लभाः=प्रियाः, ताभिः सदृशेक्षणवल्लभाभिः, हरिणाङ्गनाभिः=मृगीभिः, समं=सह, अत्यन्तमेव=सातिरेकमेव (यावज्जीवमेव), निवत्स्यति=स्थास्यति (तपोवने इति)। इयं भवदीया प्रियसखी किमुपकुर्वाणं ब्रह्मचर्ये तिष्ठत्यथ नैष्ठिकब्रह्मचर्ये वेति भावः।) अत्र परिकरालङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २९॥

भावार्थः—अनया शकुन्तलया स्वपरिणयपर्यन्तं मदनस्य व्यापाररोधि तापसं व्रतं पालयितव्यं किम्? अथवा एषा सदृशेक्षणवल्लभाभिः मृगीभिः सह यावज्जीवमेव तपोवनमध्ये स्थास्यति किम्?॥ २९॥

राजा—मैं यह पूछता हूँ—

यह आपकी सखी विवाहपर्यन्त ही इस प्रकार ब्रह्मचर्यव्रत धारण किये रहेगी अथवा समान नेत्र होने से प्रिय हरिणबन्धुओं के साथ जन्मभर (यहीं वन में) निवास करती रहेगी।

प्रियंवदा—आर्य यह व्यक्ति तो धर्मानुष्ठान के अधीन है, किन्तु पिता कण्व का विचार तो इसे किसी अनुरूप वर को प्रदान करने का है।

King—I wish to ascertain this (about your friend)—

Is the ascetic vow, which obstructs the operation of love, to be observed by her until she is given away in marriage or will she dwell even to the end (of her life) along with the female deer that are her favourites owing to their similar eyes? (29)

Priyaṁvadā—Sir, even in the practice of religious duties this person is dependent on another. But it is her father's earnest desire to give her hand to a suitable bridegroom.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सहर्षमात्मगतम्)

भव हृदय! साभिलाषं सम्प्रति सन्देहनिर्णयो जातः।
आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्॥ ३०॥

शकुन्तला—(सरोषमिव) अणसूए? अहं गमिस्सं। [अनसूये! अहं गमिष्यामि।]

अनसूया—किं णिमित्तं? [किं निमित्तम्?]

प्रियंवदा—आर्य! एष जनः=शकुन्तला, धर्माचरणस्य=धर्मानुष्ठानस्य, परवशः=अधीनः (अत एवाऽधर्मं नोपायातुमर्हति), पुनः=किन्तु, अस्याः=शकुन्तलायाः, गुरोः=पितुः कण्वस्य, अनुरूपाय=तुल्यरूपगुणशालिने, वराय, प्रदाने=समर्पणे, सङ्कल्पः=मनोभिलाषोऽस्ति। अर्थात् आ प्रदानादनया वैखानसं व्रतं निषेवितव्यम्।

राजा—(सहर्षम्=हर्षसहितम्, आत्मगतम्=मनसि)

अन्वयः—हे हृदय! साभिलाषं भव, सम्प्रति सन्देहस्य निर्णयः जातः यत् अग्निम् आशङ्कसे तत् इदं स्पर्शक्षमं रत्नम् (अस्ति इति शेषः)॥ ३०॥

भवेति। हे हृदय! साभिलाषं=शकुन्तलाप्राप्तिविषये गृहीतसङ्कल्पं, भव (यथेच्छमेनां अभिलष), सम्प्रति=इदानीम्, सन्देहस्य=इयं क्षत्रियपरिग्रहक्षमा न वेति विषयकसन्देहस्य तथा किमुपकुर्वाणा नैष्ठिकी ब्रह्मचारिणी वेति संशयस्य, निर्णयः=निश्चयः, जातः। यत्=शकुन्तलारूपं वस्तु, अग्निम्=अग्नितुल्यं (स्पर्शानर्हम्), इति आशङ्कसे=संशयं करोषि, तत्=शङ्कितम्, इदं= शकुन्तलारूपं वस्तु, स्पर्शक्षमम्=स्पर्शार्हम्, रत्नं=मणिस्वरूपं जातम्। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, आर्या जातिः॥ ३०॥

भावार्थः—हे हृदय! इदानीं यथेच्छमेनां अभिलष, सम्प्रति सन्देहस्य निर्णयः जातः। यत् पुरा अग्निम् इत्याशङ्कसे तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नमेव। (अप्सरःसम्भवत्वात् राजर्षिबीजभूतत्वाच्च अब्राह्मणीरूपोपकुर्वाणा परिणययोग्येति अस्याः परिग्रहे पापं न भविष्यतीति भावः।)॥ ३०॥

शकुन्तला—(सरोषमिव=सकोपमिव) अहं=शकुन्तला, गमिष्यामि=व्रजिष्यामि।

अनसूया—किं निमित्तं=केन कारणेन? कस्माद्धेतोः? गमिष्यसीत्यर्थः।

राजा—(हर्षपूर्वक मन में)

हे हृदय! (अब) तुम अभिलाषायुक्त बनो; क्योंकि अब सन्देह (क्षत्रिया है या नहीं तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी तो नहीं-विषयक) भी निवृत्त हो गया है। जिसे तुम (अब तक) अग्नि समझ रहे थे वह स्पर्श योग्य रत्न निकला॥ ३०॥

शकुन्तला—(कुछ क्रुद्ध-सी होकर) अनसूया! मैं जा रही हूँ।

अनसूया—भला क्यों (किसलिए)?

King—(With pleasure to himself)

My heart, be hopeful, for now all doubt is over. What you dreaded as fire, the same is a gem capable of being touched.

Śakuntalā—(Feigning anger) Anasūyā! I am going.

Anasūyā—What for?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—इमं असंबद्धप्पलाविणिं पिअंवदं अज्जाए गोदमीए गदुअ णिवेदइस्सं। (इत्युत्तिष्ठति) [इमामसम्बद्धप्रलापिनीं प्रियंवदाम् आर्यायै गौतम्यै गत्वा निवेदयिष्यामि।]

अनसूया—सहि! ण जुत्तं अस्समवासिणो जणस्स अकिदसक्कारं अदिधिविसेसं उज्झिअ सच्छंददो गमणं। [सखि! न युक्तमाश्रमवासिनो जनस्य अकृतसत्कारमतिथिविशेषम् उज्झित्वा स्वच्छन्दतो गमनम्।

(शकुन्तला उत्तरमदत्त्वैव प्रस्थिता।)

राजा—(स्वगतम्) कथमियं गच्छति। (जिघृक्षुरिव पुनरिच्छां निगृह्य) अहो! चेष्टानुरूपिणी कामिजनचित्तवृत्तिः। अहं हि—

शकुन्तला—इमाम्, असम्बद्धप्रलापिनीम्=असङ्गतभाषिणीम्, प्रियंवदाम्, आर्य्यायै=माननीयायै, गौतम्यै=गौतमी नाम कण्वमहर्षेः धर्मभगिनी तस्यै, गत्वा=प्राप्य, निवेदयिष्यामि=ज्ञापयिष्यामि। (इति=एवमुक्त्वा, उत्तिष्ठति)

अनसूया—सखि!=शकुन्तले! अकृतः सत्कारः=पूजा, यस्य तम् अकृतसत्कारं, अतिथिविशेषम्=अतिथिरूपेणात्र आगतं राजानम्, उज्झित्वा=त्यक्त्वा, स्वच्छन्दतः=स्वाभिप्रायतः, गमनं=पलायनम्, आश्रमवासिनो जनस्य=तपोवनगतस्य जनस्य कृते, न युक्तम्=न सङ्गतम्।

(शकुन्तला—उत्तरं=प्रतिवचनम्, अदत्त्वैव=नोक्त्वैव, प्रस्थिता=निष्क्रान्ता।)

राजा—(स्वगतम्) इयं=शकुन्तला, कथं=सविषादसम्भ्रमव्यञ्जकः शब्दः, गच्छति= न गच्छत्विति भावः। (जिघृक्षुरिव=ग्रहीतुमिच्छुरिव, पुनः=भूयः, इच्छाम्=जिघृक्षाम्, निगृह्य=बलपूर्वकं दमयित्वा) अहो=आश्चर्यम्, कामिजनस्य=कामाधीनस्य लोकस्य, चित्तवृत्तिः=इच्छा, चेष्टानुरूपिणी=शरीरकृतव्यापारतुल्यरूपा भवतीति शेषः।

शकुन्तला—इस असम्बद्ध (ऊट-पटाँग) बात करने वाली प्रियंवदा के सम्बन्ध में जाकर आर्या गौतमी से निवेदन करूँगी (उठ खड़ी होती है)।

अनसूया—सखी! असत्कृत विशेष अतिथि को इस प्रकार (बिना स्वागत किये) छोड़कर इच्छानुसार चल देना आश्रमवासी जनों के लिए उचित नहीं है।

(शकुन्तला बिना उत्तर दिये चली जाती है।)

राजा—(मन में) क्या यह जा रही है? (पकड़ने की कामना करते हुए, फिर इच्छा को दबाकर) आश्चर्य की बात है, कामीजनों की चित्तवृत्ति भी बाहरी घटनाओं के अनुरूप ही होती है। क्योंकि मैं ही—

Śakuntalā—I am going to tell the venerable Gautamī how impertinently Priyaṁvadā has been prattling.

Anasūyā—Dear Śakuntalā, it is not proper for a person of this penance grove to leave at will, before the rites of hospitality are done to an honoured guest.

(Śakuntalā exits with out saying any thing).

King—*(To himself)* Is she really going? *(Wishing to detain her then checking himself)* Ah! the state of a lovers mind is an exact reflection of bodily movement. For I,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुयास्यन् मुनितनयां सहसा विनयेन वारितप्रसरः।
स्वस्थानादचलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः॥ ३१॥

प्रियंवदा—(शकुन्तलामुपेत्य) हला चंडि! णारिहसि गंतुं। [हला चण्डि! नार्हसि गन्तुम्।]

शकुन्तला—(परिवृत्य सभ्रूभङ्गम्) किं त्ति? किमिति?

हि=यस्मात्, अहम्=दुष्यन्तः (अहमित्यस्य स्वस्थानाच्चलन्नपि गत्वेव प्रतिनिवृत्तः इति श्लोकस्थेनान्वयः)—

अन्वयः—मुनितनयाम् अनुयास्यन् सहसा विनयेन वारितप्रसरः (सन्) स्वस्थानात् अचलन्नपि गत्वा पुनः प्रतिनिवृत्तः इव (अस्मीति शेषः)॥ ३१॥

अनुयास्यन्निति। मुनितनयां=कण्वदुहितां शकुन्तलाम्, अनुयास्यन्=दर्शनलोभात् अनुगमिष्यन्, सहसा=हठात्, विनयेन=जितेन्द्रियतया, वारितः=निषिद्धः, प्रसरः=आवेगः (गतिः), यस्य सः वारितप्रसरः सन्, अत एव, स्वस्थानात्=स्वाध्युषितप्रदेशात्, अचलन्नपि=पदमेकमगच्छन्नपि, गत्वा पुनः प्रतिनिवृत्तः=प्रत्यागत इव अस्मि। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा तथा 'अचलन्नपि गत्वा' इति विरोधाभासश्चालङ्कारौ। आर्या जातिः॥ ३१॥

भावार्थः—अहं कण्वदुहितां शकुन्तलां बलवत्तद्दर्शनलोभात् अनुगमिष्यन् (स्वस्वरूपं स्थानविशेषं च अनादृत्य) हठात् विनयेन वारितः। अत एव स्वाध्युषितप्रदेशात् पदमेकमगच्छन्नपि, गत्वा पुनः प्रतिनिवृत्त इव अस्मि॥ ३१॥

प्रियंवदा—(शकुन्तलाम्, उपेत्य=उपगम्य) हला चण्डि!=अतिकोपने! गन्तुं=यातुं (इतोऽन्यत्र इति भावः), नार्हसि=नोपयुक्ताऽसि।

शकुन्तला—(परिवृत्य=सम्मुखीभूय, भ्रूभङ्गेन=भ्रूकौटिल्येन, सहितमिति सभ्रूभङ्गम्) इति=मम गमननिषेधः, किम्=कथं क्रियते इति? किं हेतुकं वा इति।

(जबकि मैं) शकुन्तला के पीछे जाने की तैयारी कर चुका था, सहसा शिष्टाचार ने रोक दिया। यद्यपि मैं अपने स्थान से नहीं हटा पर (ऐसा जान पड़ा मानो मेरा) मन उसके पीछे जाकर लौट आया हो॥ ३१॥

प्रियंवदा—(शकुन्तला के पास जाकर) री चण्डी! (क्रोधयुक्त) तू नहीं जा सकती।

शकुन्तला—(घूमकर भौंह चढ़ाकर)। क्यों नहीं जा सकती?

About to follow the sage's daughter suddenly, (but) with my advance stopped by the sense of propriety (decorum), (and) though not moving from my place, have as though gone and returned. (31)

Priyaṁvadā—*(Approaching Śakuntalā)* Dear furious one! you can not go from here.

Śakuntalā—*(With the knitting of her eyebrow)* why not? (what for?)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—दुवे मे रुक्खसेअणके धारेसि, तेहिं दाव अत्ताणं मोआवेहि, तदो गमिस्ससि। (इति बलान्निवर्त्तयति)। [द्वे मे वृक्षसेचनके धारयसि, ताभ्यां तावदात्मानं मोचय; ततो गमिष्यसि।]

राजा—भद्रे! वृक्षसेचनादेवात्रभवतीं परिश्रान्तां तर्कयामि! तथा ह्यस्याः—

स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू घटोत्क्षेपणा-
द्द्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः।
बद्धं कर्णशिरीषरोधि वदने घर्माम्भसा जालकं
बन्धे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्द्धजाः॥ ३२॥

प्रियंवदा—मे=मह्यम्, द्वे वृक्षसेचनके=वृक्षं सिच्यते आभ्यामिति वृक्षसेचनके=जल-पूर्णघटौ, धारयसि=ऋणत्वेन धत्से, तथा च (पूर्वेद्युस्त्वया वारद्वयं वृक्षसेचनं मह्यं दातुमङ्गीकृत्य मत्तो गृहीतम्, तत् ते ऋणत्वेन जातम्), ताभ्याम्=ऋणबन्धभूताभ्यां वृक्षसेचनकाभ्याम्, आत्मानं मोचय=आत्मानं मुक्तं कुरु, ततः=तदा, गमिष्यसि=स्थानादस्मात् यास्यसि। (इति=एवं, बलात्, निवर्तयति= स्वस्थानं प्रापयति।)

राजा—भद्रे=कल्याणि प्रियंवदे! अत्रभवतीम्=(मुनिदुहितृत्वेन) पूज्यां शकुन्तलाम्, वृक्षसेचनात्=पादपजलसेकात्, एव परिश्रान्तां=पूर्णतः श्रमयुक्तां, तर्कयामि=लक्षयामि। तथाहि= तेनैव कारणेन, अस्याः=शकुन्तलायाः—

अन्वयः—बाहू घटोत्क्षेपणात् (हेतोः) स्रस्तांसौ, तथा अतिमात्रलोहिततलौ प्रमाणाधिकः श्वासः अद्यापि स्तनवेपथुं जनयति, तथा वदने घर्माम्भसा कर्णशिरीषरोधि जालकं बद्धम्, तथा बन्धे स्रंसिनि एकहस्तयमिताः मूर्द्धजाः च पर्य्याकुलाः॥ ३२॥

स्रस्तांसाविति। बाहू=भुजौ, घटानां=कुम्भानां (जलपूर्णानामित्यर्थः), उत्क्षेपणात्= उत्तोलनात् (जलसेचनाय इति भावः), हेतोः, स्रस्तौ=अवनतौ (भाराधिक्यात् इति भावः), अंसौ=स्कन्धसन्धिभागौ ययोस्तादृशौ, तथा, अतिमात्रम्=अत्यन्तं, लोहिते=रक्तवर्णे, तले=करतले, ययोस्तौ अतिमात्रलोहिततलौ (सम्प्रति परिश्रमातिरेकात् करतलम् अतिमात्रं रक्तवर्णं जातम्),

---

प्रियंवदा—तू मेरे दो वृक्ष सींचने की ऋणी है। पहले उस ऋण को उतार, तभी तू जा सकेगी।

राजा—भद्रे! मैं इन्हें (शकुन्तला को) वृक्ष सींचने से ही थकी हुई मानता हूँ; क्योंकि—

इसके (घड़ा उठाने से) दोनों कन्धे झुक गये हैं, दोनों हथेलियाँ लाल हो गई हैं, परिश्रम के कारण श्वास का वेग बढ़ जाने से दोनों स्तन काँप रहे हैं, पसीने की बूँदें मुख पर

Priyaṁvadā—You owe me two waterings of trees, so release yourself first, then only you can go.

King—Good lady! I observe this lady is fatigued even with watering trees. For her—

Arms, with the shoulders drooping, have their palms rendered excessively red through this hard work i.e. the lifting of the pitcher; even now her breathing, which is more than normal,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदहमेनामनृणां करोमि। (इत्यङ्गुरीयकं ददाति।)

(सख्यौ प्रतिगृह्य नामाक्षराणि वाचयित्वा च परस्परमवलोकयतः।)

राजा—अलमन्यथा सम्भावनया, राज्ञः प्रतिग्रहोऽयम्।

प्रमाणाधिकः=स्वाभाविकादधिकः, श्वासः=निःश्वासः, अद्यापि=इदानीमपि (जलसेचनावसानेऽपि),स्तनयोर्वेपथुं=कम्पं, जनयति=उत्पादयति। तथा, वदने=मुखे, घर्माम्भसा=स्वेदवारिणा, कर्णशिरीषरोधि=कर्णभूषणभूते शिरीषकुसुमे रुणद्धि (सुकुमारतया स्वेदजललग्नतया च दोलनात् स्थगयति), जालकं=बिन्दुकदम्बकम्, बद्धं=धृतं, तथा, बन्धे= केशबन्धने, स्रंसिनि=स्खलिते सति (एकेन हस्तेन अपरस्य घटोद्वहने नियतत्वादिति भावः), यमिताः=संयतीकृताः, मूर्द्धजाः=केशाश्च, पर्य्याकुलाः=विक्षिप्ताः, स्थिताः। अत्र परिश्रान्तिसमर्थकबहुविधकारणानामभिहितत्वात् समुच्चयालङ्कारः, स्वभावोक्तिरिति केचित्। शार्दूलविक्रीडितं नाम वृत्तम्॥ ३२॥

भावार्थः—अस्याः शकुन्तलायाः करद्वयं जलपूर्णकुम्भानां जलसेचनायोत्तोलनात् हेतोः स्रस्तांसौ, तथा परिश्रमातिरेकात् करतलम् अतिमात्रं रक्तवर्णं जातम्। स्वाभाविकादधिकः श्वास इदानीमपि स्तनवेपथुमुत्पादयति। (तथा) मुखमण्डले स्वेदवारिणा कर्णशिरीषरोधि बिन्दुकदम्बकं जनितम्। (तथा) केशबन्धने स्खलिते सति (एकेन हस्तेन) संयतीकृताः केशाश्च इतस्ततः विकीर्णाः (इति दृश्यन्ते)॥ ३२॥

तत्=तस्मात्, अहम्=दुष्यन्तः, एनाम्=शकुन्तलाम्, अनृणां=ऋणमुक्तां, करोमि। (इति= इत्युक्त्वा, अङ्गुरीयकं, ददाति=अर्पयति।)

(सख्यौ=अनसूया-प्रियंवदेति, प्रतिगृह्य=गृहीत्वा, नाम्नः अक्षराणि नामाक्षराणि= अङ्गुरीयाङ्कितान् दुष्यन्तस्य नामवर्णान्, वाचयित्वा=पठित्वा, च=एवं, परस्परम्=अन्योन्यं, अवलोकयतः=पश्यतः (कथमत्र स्वयं महाराजदुष्यन्तः समायातः)।

छाई हुई हैं और इसी से दोनों कानों के शिरीष कुसुम अवरुद्ध हो गये हैं। बन्धन छूट जाने से एक हाथ में सँभाले हुए केश भी अब इधर-उधर बिखर गये हैं॥ ३२॥

इसलिए मैं इन्हें ऋणमुक्त किये देता हूँ। (अपनी अंगूठी देता है)

(सखियाँ अंगूठी लेकर और उस पर अङ्कित नाम के अक्षरों को पढ़कर एक-दूसरी को देखती हैं।)

राजा—आप लोग और किसी प्रकार की सम्भावना न करें। यह मुझे राजा ने पारितोषिक रूप में दी थी।

---

causes tremor (thrill) in her breasts; on her face is formed a cluster of sweat drops, which obstructs (the movement of) the Śirīṣa flowers on her ears; and the braid (plaited hair) being loosened, her hair, restrained with one hand, are dishevelled. (32)

Therefore I shall make her free from debt. *(Saying this, gives his ring).*

(Both reading the letters on the ring with name and then look at each other)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—तेण हि णारिहदि एदं अंगुलीअं अंगुलीविओअं। अज्जस्स वअणादो ज्जेव अणिणा एसा भोदु। [तेन हि नार्हति इदमङ्गुरीयकमङ्गुलीवियोगम्। आर्यस्य वचनादेव अनृणा एषा भवतु।]

अनसूया—हला सउंतले! मोआविदासि अणुकंपिणा अज्जेण अहवा राएसिणा। ता कहिं दाणिं गमिस्ससि? [हला शकुन्तले! मोचितासि अनुकम्पिना आर्येण, अथवा राजर्षिणा। तत् कस्मिन्निदानीं गमिष्यसि?]

शकुन्तला—(आत्मगतम्) ण एदं जणं परिहरिस्सं, जई अत्तणो पहविस्सं। [नैतं जनं पर्याहरिष्यम्, यद्यात्मनः प्राभविष्यम्।]

राजा—अन्यथा सम्भावनया=मम नृपत्वसम्भावनया, अलम्=पर्याप्तम् (मम विषये अन्यथा सम्भावना न कार्या इति भावः), (इदं अङ्गुरीयकं तु), राज्ञः=दुष्यन्तात्, अयं, प्रतिग्रहः= आदानम् (राज्ञा दुष्यन्तेन स्वयं इदम् अङ्गुरीयकं मह्यं पारितोषिकं दत्तम्)।

प्रियंवदा—तेन हि=प्रतिगृहीतत्वेनैव कारणेन, अङ्गुलीवियोगं=भवदङ्गुलीविच्छेदं, नार्हति=कर्त्तुं युक्तं नास्ति। आर्य्यस्य=भवतः, वचनादेव=कथनमात्रेणैव, एषा=शकुन्तला, अनृणा= ऋणमुक्ता, भवतु।

अनसूया—हला शकुन्तले! अनुकम्पिना=दयालुना, आर्येण=मान्येन, अमुना राजर्षिधर्म- सचिवेन, अथवा राजर्षिणा=स्वयं दुष्यन्तेन, मोचितासि=अनृणीकृतासि। तत्=तस्मात्, कस्मिन्= कस्मिन् स्थाने, इदानीम्=अधुना, गमिष्यसि?

शकुन्तला—(आत्मगतम्) एतं जनं=राजानम्, न पर्य्यहरिष्यम्=न पर्य्यत्यक्षम्, यदि आत्मनः=स्वस्य, प्राभविष्यम्=प्रभुः अधिकारिणी अभविष्यम् (यद्यहं पितुरधीना नाऽभविष्यम्, तर्ह्येनमेव पतित्वेनावरिष्यमिति भावः)।

प्रियंवदा—(सम्भवतः) इसीलिए इस अँगूठी का आपकी उँगली से बिछुड़ना ठीक नहीं। आपके कथन मात्र से ही यह ऋणमुक्त हो जाय। अर्थात् इस अँगूठी को देने की आवश्यकता नहीं, आपके कहने मात्र से मैं इसे ऋणमुक्त किये देती हूँ।

अनसूया—सखी शकुन्तला! दयालु अथवा राजर्षि ने तुम्हें ऋणमुक्त कर दिया। तो बताओ अब कहाँ जाओगी?

शकुन्तला—(मन में) यदि मैं पिता के अधीन न होती तो इसे निश्चय ही पति रूप में वर लेती।

King—Enough of thinking otherwise of me. This is a gift (prize) from the king.

Priyaṁvadā—That's why this ring deserves not separation from your finger. By your honour's words she is now free from debt.

Anasūyā—Dear Śakuntalā! You have been freed by this gentleman who takes pity on you, or by the king himself. So, let me know where do you want to go now?

Śakuntalā—*(To herself)* If I am mistress of myself, then surely I will marry this honourable one.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—किं दाणिं ण गच्छीअदि ? [किमिदानीं न गम्यते ?]

शकुन्तला—दाणिं किं तुह आअत्तम्हि ? जदो मे रोअदि, तदो गमिस्सं। [इदानीं किं तव आयत्तास्मि ? यतो मे रोचते, ततो गमिष्यामि।]

राजा—(शकुन्तलां विलोकयन्नात्मगतम्) किं खलु यथा वयमस्यामियमपि अस्मान् प्रति तथा स्यात् ? अथवा लब्धावकाशा मे मनोवृत्तिः। कुतः—

वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः
कर्णं ददात्यवहिता मयि भाषमाणे।
कामं न तिष्ठति मदाननसम्मुखीयं
भूयिष्ठमन्यविषया न तु दृष्टिरस्याः ॥ ३३ ॥

प्रियंवदा—सकौतुकमाह किमिदानीं=अधुना, न गम्यते ?

शकुन्तला—इदानीम्=अधुना, किं, तव, आयत्ता=आधीना अस्मि, यतः=यस्मिन् स्थाने काले वा, मे=मह्यं, रोचते, ततः=तस्मिन् काले, गमिष्यामि=व्रजिष्यामि।

राजा—(शकुन्तलां विलोकयन्=पश्यन्, आत्मगतम्=स्वमनसि) किं खलु=इत्येताभ्यां वितर्कगर्भप्रश्नो द्योत्यते। अस्यां शकुन्तलायाम्, यथा=येन प्रकारेण, वयम्=अहम् (अनुरक्तोऽस्मि) (किं तथैव), इयमपि=शकुन्तलापि, तथा=तेनैव रूपेण, अस्मान् प्रति=मां प्रति, स्यात्=भवेत् ? अथवा मे=मम, मनोवृत्तिः=निश्चयात्मिका मनोवृत्तिः, लब्धावकाशा=प्राप्तविषयद्वारा वर्तते। (मम निश्चयरूपा प्रवृत्तिः शकुन्तलागतानुरागरूपविषयस्पर्शं द्वारं प्राप इति भावः।) कुतः=यद्यपि—

अन्वयः—इयं मद्वचोभिः वाचं न मिश्रयति तथापि मयि भाषमाणे अवहितां कर्णं ददाति। (एवं यद्यपि) मदाननस्य सम्मुखी कामं न तिष्ठति तथापि तु अस्याः दृष्टिः भूयिष्ठम् अन्यविषया न ॥ ३३ ॥

वाचमिति। इयं=शकुन्तला, मद्वचोभिः=ममोक्तिभिः सह, वाचं=निजकथनम् (उक्तिं), न मिश्रयति=न सम्मेलयति (मया सह नालपति), (तथापि) मयि=दुष्यन्ते, भाषमाणे=यत्किञ्चित्

प्रियंवदा—अब क्यों नहीं जा रही हो ?

शकुन्तला—क्या मैं तुम्हारे अधीन हूँ ? जब मेरी इच्छा हागी तब जाऊँगी।

राजा—(शकुन्तला को देखते हुए मन में) क्या जैसे मैं इसमें अनुरक्त हूँ वैसे ही यह भी मुझमें अनुरक्त होगी ? अथवा मेरी मनोवृत्ति को यह अवसर मिल गया है। क्योंकि—

Priyaṁvadā—Why are you not going now?

Śakuntalā—Am I under your control now? When ever I like, I will go.

King—*(Looking at Śakuntalā; to himself)* May it indeed be that as we are (disposed) towards her, so she also is towards us? or my thought has found scope.

How? though she mingles not her speech with my words, (but) she directs her ear towards me when I speak; granted that she

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) भो भोस्तपस्विनः! तपोवनसन्निहितसत्त्वरक्षणाय सज्जीभवन्तु भवन्तः, प्रत्यासन्नः किल मृगयाविहारी राजा दुष्यन्तः।

तुरगखुरहतस्तथाहि रेणुर्विटपविषक्तजलार्द्रवल्कलेषु।
पतति परिणतारुणप्रकाशः शलभसमूह इवाश्रमद्रुमेषु॥ ३४॥

कथयति सति, अवहिता=दत्तावधाना (मदुक्तौ इति शेषः) सती, कर्णं ददाति=निक्षिपति (मदुक्तिं सावधानतया शृणोति), एवं यद्यपि, मदाननस्य=मन्मुखस्य, सम्मुखी=अभिमुखी सती, कामं=पर्याप्तम्, न तिष्ठति=न आश्रयते, (तथापि) तु=किन्तु, अस्याः=शकुन्तलायाः, दृष्टिः=दृक्, भूयिष्ठम्=अतिशयेन (प्रायशः), अन्यः=मद्भिन्नः, विषयः=लक्ष्यः, यस्याः सा अन्यविषया, न=नैव। अत्र समुच्चयालङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ३३॥

भावार्थः—यद्यपि इयं शकुन्तला मया सह नालपति तथापि मदुक्तिं सावधानतया शृणोति। एवमेव यद्यपि मन्मुखाग्रे (पुरतः) पर्याप्तं न तिष्ठति तथापि अस्याः दृष्टिः प्रायश अन्यविषया (मद्भिन्नलक्ष्यमधिकृत्य) न प्रवर्तते॥ ३३॥

(नेपथ्ये=परोक्षे, यवनिकामध्ये इति भावः) भो भोः=इति सम्भ्रमे द्विरुक्तिः, तपोवन-सन्निहितानाम्=आश्रमपार्श्वभागे अवस्थितानाम्, सत्त्वानां=जन्तूनाम्, रक्षणाय=रक्षार्थम्, भवन्तः=यूयम्, असज्जाः सज्जा भवन्तु इति सज्जीभवन्तु=उद्युक्ताः भवन्तु, प्रत्यासन्नः=सन्निहितः, किलेति सम्भावनायां, मृग्यन्ते जन्तवो यस्यां क्रियायां सा मृगया=पशुहिंसा, तस्यै विहरति=विचरति, इति मृगयाविहारी राजा दुष्यन्तः।

अन्वयः—तथाहि तुरगखुरहतः परिणतारुणप्रकाशः रेणुः शलभसमूह इव विटपविषक्त-जलार्द्रवल्कलेषु आश्रमद्रुमेषु पतति॥ ३४॥

यद्यपि जिस समय मैं बात करता हूँ तब यह उस वार्तालाप में भाग नहीं लेती, तथापि सावधान होकर मेरा कथन सुनती है। इसी प्रकार यद्यपि यह शकुन्तला मेरे मुँह के सामने नहीं बैठती तथापि इसकी दृष्टि अन्यत्र नहीं भटकती (अर्थात् मेरी ओर ही रहती है)॥ ३३॥

(नेपथ्य में)—हे हे तपस्वियो! तपोवन के आस-पास रहने वाले जीवों की रक्षा करने के लिए तैयार हो जाओ; क्योंकि आखेट के लिए निकला हुआ राजा दुष्यन्त निकट ही है।

(देखिये) घोड़ों के खुरों से उड़ी हुई अस्ताचलगामी सूर्य के प्रकाश की भाँति रक्तिम धूलि शलभ (टिड्डी) समूह की भाँति वृक्षों की शाखाओं पर सूखने के लिए लटकाये गये वल्कलों वाले आश्रम के वृक्षों पर गिर रही है॥ ३४॥

---

does not stand with her face (turned) towards my face, yet her eye for the most part does not possess any other object. (33)

(Behind the scene) O' O' Ascetics! be alert for the protection of the animals of the penance grove. King Dushyanta, amusing himself with the chase, is reported to be hard by (very near).

For, the dust, struck up by the hoofs of horses and having the colour of the evening twilight, descends like a swarm of locusts (insect) on the trees of the hermitage, that wear bark garments, wet with water, suspended from their branches. (34)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(स्वगतम्) अहो धिक्! ममान्वेषिणः सैनिकास्तपोवनमभिरुन्धन्ति।
(पुनर्नेपथ्ये) भो भोस्तपस्विनः! पर्याकुलयन् वृद्धस्त्रीकुमारान् एष गजः प्राप्तः—

तीव्राघातादभिमुखतरुस्कन्धभग्नैकदन्तः
प्रौढाकृष्टव्रततिवलयासङ्गनाज्जातपाशः ।
मूर्त्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
धर्मारण्यं विरुजति गजः स्यन्दनालोकभीतः॥ ३५॥

तुरगेति। तथा हि=यतः, तुरगाणाम्=अश्वानां, खुरैर्हतः=क्षुण्णः, तुरगखुरहतः, परिणतः=अस्तमयोन्मुखः, यः अरुणः=सूर्यः, तस्य प्रकाश इव प्रकाशो यस्य सः परिणतारुणप्रकाशः=पाटलवर्णः, रेणुः=धूलिः, शलभानां=पतङ्गानां, समूहः=वृन्दम्, इव, विटपेषु=वृक्षशाखासु, विषक्तानि=विलम्बितानि, जलार्द्राणि वल्कलानि=वृक्षत्वचः, येषां तेषु विटपविषक्तजलार्द्रवल्कलेषु, आश्रमद्रुमेषु=तपोवनवृक्षेषु, पतति। अत्र परिणतारुणप्रकाशेन लुप्तोपमा, शलभसमूह इव इत्यनेन श्रौतोपमा तथा अनयोः परस्परनैरपेक्ष्येण संसृष्टि अलङ्कारः, पुष्पिताग्रा नाम वृत्तम्॥ ३४॥

भावार्थः—मृगयाविहारिणो राज्ञः दुष्यन्तस्य पार्श्ववर्त्तित्वं सूचयन् चिह्नानि निर्दिशन् कथयति कश्चित्तापसः—पश्यन्तु भवन्तः। यत् तुरगखुरहननेनोत्क्षिप्तः, सन्ध्याकाले अस्तमनवेलायां सूर्यस्य प्रकाश इव पाटलवर्णः धूलिः शलभसमूह इव विटपविलम्बितजलार्द्रवल्कलेषु आश्रमस्थ-वृक्षेषु पतति, सूचयति च राज्ञः सान्निध्यम्॥ ३४॥

राजा—(स्वगतम्) अहो=इति विस्मये, धिक्=इति निन्दायाम्, मम=दुष्यन्तस्य, अन्वेषिणः=अनुसन्धित्सवः, सैनिकाः, तपोवनम्=आश्रमम्, अभिरुन्धन्ति=समन्तात् परिवेष्ट्य पीडयन्ति।

(पुनर्नेपथ्ये=भूयः यवनिकामध्ये) भो भोस्तपस्विनः! पर्य्याकुलयन्=भयेन व्यस्ती-कुर्वन्, वृद्धान्=जठरान्, स्त्रीकुमारान्=बालकांश्च, एष गजः, प्राप्तः=उपागतः।

राजा—(मन में) अरे, धिक्कार है। जान पड़ता है, मुझे खोजने वाले सैनिकों ने इस तपोवन को घेर लिया है।

(फिर नेपथ्य में) हे हे तपस्वियो! बूढ़े, स्त्री तथा बालकों को भयाकुल बनाता हुआ यह हाथी आ पहुँचा है।

(और भी) सामने के वृक्ष के तने पर तीव्र प्रहार करने से जिसका एक दाँत टूट गया है, लताओं का समूह लिपटजाने के कारण जिसके लिए बन्धन-सा बन गया है, जिसने सहसा

King—(To himself) Oh! what a pity. It seems, that the soldiers, who are engaged to find me out, have surrounded (encompassed) the penance grove.

(Again behind the scene) O' Ascetics! frightening the aged people, women and children, this wild (furious) elephant has arrived.

(More over) An elephant, one of whose tusks is struck in the trunk of a tree, that has been struck back with a violent blow, who

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(सर्वाः श्रुत्वा ससम्भ्रममुत्तिष्ठन्ति।)

राजा—(स्वगतम्) अहो धिक्! कथमपराद्धस्तपस्विनामस्मि। भवतु, प्रतिगच्छामि तावत्।

अन्वयः—तीव्राघातात् अभिमुखतरुस्कन्धभग्नैकदन्तः प्रौढाकृष्टव्रततिवलयासङ्गनात् जातपाशः भिन्नसारङ्गयूथः स्यन्दनालोकभीतः गजः मूर्त्तः तपसः विघ्न इव नः धर्म्मारण्यं विरुजति॥ ३५॥

तीव्राघातादिति। तीव्राघातात्=प्रखरप्रहारात्, अभिमुखस्य=सम्मुखस्थस्य, तरोः=वृक्षस्य, स्कन्धे=प्रकाण्डे, भग्नः, एको दन्तो यस्य सः अभिमुखतरुस्कन्धभग्नैकदन्तः, प्रौढम्=अत्यन्तं (प्रवृद्धं), यथा स्यात्तथा आकृष्टस्य=आक्षिप्तस्य उत आकर्षितस्य, व्रततिवलयस्य=लतामण्डलस्य, आसङ्गनात्=परिवेष्टनात्, जातः पाशः=बन्धनं, यस्य सः जातपाशः, भिन्नं=भयोत्पादनात् पृथक् कृतम्, सारङ्गानां=हरिणानां, यूथं=कुलं, येन सः भिन्नसारङ्गयूथः, स्यन्दनस्य=रथस्य, आलोकेन= दर्शनेन, भीतः=त्रस्तः, स्यन्दनालोकभीतः, गजः=हस्ती, मूर्त्तः=शरीरधारी, तपसः=धर्मकर्मणः, विघ्न इव, नः=अस्माकम्, धर्म्मारण्यं=तपोवनं, विरुजति=पीडयति। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः; मन्दाक्रान्ता वृत्तम्।

भावार्थः—प्रखरप्रहारात् अभिमुखतरोः प्रकाण्डे भग्न एको दन्तो यस्य, एव प्रौढाकृष्ट-लतामण्डलस्य परिवेष्टनात् जातपाशः, भीत्युत्पादनात् भिन्नसारङ्गयूथः, रथालोकेन त्रस्त एष गजः धर्मकर्मभङ्गकरणात् शरीरधारी तपसः विघ्न इव अस्माकं धर्मारण्यं परिपीडयति॥ ३५॥

(सर्वाः श्रुत्वा=आकर्ण्य, ससम्भ्रमम्=सभयम्, उत्तिष्ठन्ति।)

राजा—(स्वगतम्) अहो=इति विषादे, धिक् मामिति शेषः, तपस्विनाम् अपराद्धः= कृतापराधोऽस्मि। भवतु=तदपराध इति शेषः, तावत्, प्रतिगच्छामि=सैन्यानां समीपमेव प्रतिगच्छामि (तपोवनावरोधात्तान्निषेद्धुङ्गजं निवारयितुं च इत्याशयः)।

उपस्थित होकर मृगों के झुण्ड को तितर-बितर कर दिया है तथा रथ को देखकर, जो भयभीत है; धर्माचरण में मूर्त्तिमान् विघ्न के समान (ऐसा) वह हाथी हमारे तपोवन को बहुत कष्ट (हानि) पहुँचा रहा है॥ ३५॥

(सब सुनकर, परेशान होकर उठ खड़ी होती हैं।)

राजा—मुझे धिक्कार है। क्या मैं तपस्वियों की दृष्टि में अपराधी बन गया? अच्छा, तब तक जाकर देखूँ।

---

has a letter formed by the clinging of the coils of creepers dragged along his feet, who is as though an incarnate obstacle to our penance and has dispersed, herds of deer, is entering in this sacred grove, being frightened at the sight of a chariot.

(All stand with hurry after hearing this.)

King*—*(To himself) Oh, what a pity! Am I became a guilty in the sight of these ascetics? Well! we shall just go back.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्यौ—महाभाअ! इंमिणा हत्थिसंभमेण पज्जाउला म्ह। ता अणुजाणीहि णो उडअगमणे। [महाभाग! अनेन हस्तिसम्भ्रमेण पर्याँकुलाः स्मः। तदनुजानीहि न उटजगमने।]

अनसूया—(शकुन्तलां प्रति) हला सउंतले! पज्जाउला अज्जा गोदमी भविस्सदि, ता एहि सीग्घं एकत्था होम्ह। [हला शकुन्तले! पर्याकुला आर्या गौतमी भविष्यति, तदेहि शीघ्रमेकस्था भवामः।]

शकुन्तला—(गतिरोधं रूपयित्वा) हद्दी! हद्दी! उरुत्थंबविब्भलम्हि संवुत्ता। [हा धिक्! हा धिक्! ऊरुस्तम्भविह्वलाऽस्मि संवृत्ता।]

राजा—स्वैरं स्वैरं गच्छन्तु भवत्यः। आश्रमबाधा यथा न भवति, तथाहमपि यतिष्ये।

सख्यौ—महाभाग=महोदय! अनेन, हस्तिसम्भ्रमेण=करिसंवेगेन, पर्य्याकुलाः= अतिसन्त्रस्ताः स्मः। तत्=तस्मात्, नः=अस्मान्, उटजगमने=पर्णशालागमने, अनुजानीहिं=अनुमन्यस्त्व (आज्ञां देहीति भावः)।

अनसूया—(शकुन्तलां प्रति) हला शकुन्तले! आर्य्या=मान्या, गौतमी, पर्य्याकुला= व्याकुला, भविष्यति, तत्=तस्मात्, एहि=आगच्छ, एकस्थाः=मिलिताः, भवामः।

शकुन्तला—(गतिरोधं=गमनप्रतिबन्धम्, रूपयित्वा=नाटयित्वा) हा धिक्! हा धिक्! इति भर्त्सने, ऊर्वोः स्तम्भेन=रक्तसञ्चाराभावे ऊर्वोः स्थैर्येण, विह्वला=विकला, विवशा, संवृत्ताऽस्मि=जातास्मि।

राजा—स्वैरं स्वैरं=मन्दं मन्दं, गच्छन्तु भवत्यः (अतित्वरयालम् इति भावः)। यथा=येन प्रकारेण, आश्रमबाधा=आश्रमोपद्रवः, न भवति, तथा=तेनैव प्रकारेण, अहमपि, यतिष्ये=यत्नं करिष्ये।

दोनों सखियाँ—महाभाग! इस हाथी के भय से हम सब घबरा गई हैं, अतः अब आप हमें अपनी कुटिया में जाने की आज्ञा दें।

अनसूया—(शकुन्तला से) सखी शकुन्तला! आर्या गौतमी (इस उपद्रव के समय हमें पास न देखकर) व्याकुल हो रही होंगी, अतः आओ हम लोग शीघ्र एकत्रित हो जायें।

शकुन्तला—(गतिरोध=(अचानक रुकने) का अभिनय करती हुई) हाय! हाय! पाँव के सो जाने से (ऊरुस्तम्भ से) मैं विह्वल हो गई हूँ (मुझसे चला ही नहीं जाता)।

राजा—आप लोग धीरे-धीरे जायें। आश्रम को (और आश्रमवासियों को) जिससे किसी प्रकार की हानि न पहुँचे मैं वही यत्न करूँगा।

Friends—Noble sir! we feel greatly perturbed by this report about the wild elephant. Please permit us to go to the hermitage.

Anasūyā—*(Towards Śakuntalā)* Dear Śakuntalā! Respected Gauttami will be frightened in our absence, so come quickly and let us get in one place.

Śakuntalā—*(Acting stoppage)* Oh, what a pity, due to a cramped leg, I became frightened to see (also unable to walk).

King—Let your ladyships go slowly. I shall try that no trouble will happen to the hermitage.

 CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्यौ—महाभाअ! विदिदभूइट्ठोसि। संपदं उवआरमज्झत्थदाए अवरद्ध म्ह; तं मरिसेहि, असंभाविदसक्कारं भूओ बि पच्चवेक्खणणिमत्तं अज्जं विण्णवेह्य। [महाभाग! विदितभूयिष्ठोऽसि। साम्प्रतमुपचारमध्यस्थतया अपराद्धाः स्मः; तन्मर्षय, असम्भावितसत्कारं भूयोऽपि प्रत्यवेक्षणनिमित्तमार्यं विज्ञापयामः।]

राजा—मा मैवम्। दर्शनेनैव भवतीनां सम्भूतसत्कारोऽस्मि।

शकुन्तला—हला अणसूए! अहिणवकुससूइपरिक्खदं मे चलणं कुरुव-असाहा-परिलग्गं च वक्कलं, दाव परिवालेध मं, जाव णं मोआवेमि। (इति राजानमवलोकयन्ती सव्याजं विलम्ब्य सह सखीभ्यां निष्क्रान्ता।) [हला अनसूये! अभिनव-कुश-सूचिपरिक्षतं मे चरणम्, कुरुबक-शाखापरिलग्नञ्च वल्कलम्। तावत् प्रतिपालयतं माम्, यावदेनं मोचयामि।]

सख्यौ—महाभाग!—महान् भागः=भाग्यं, यस्य सः तत्सम्बोधने महाभाग! विदितं= परिज्ञातं, भूयिष्ठं=बहुलं (अस्माकमाचारेङ्गितादि), येन सः विदितभूयिष्ठोऽसि। साम्प्रतम्=इदानीम्, उपचारेषु=भवतः सत्कारेषु, मध्यस्थतया=उदासीनतया, उपचारमध्यस्थतया, अपराद्धाः= अपराधवत्यः, स्मः=भवामः (वयमिति शेषः, तत्=तदपराधं, मर्षय=क्षमस्व, असम्भाविताः= अस्माभिरनाचरितः, सत्कारः यस्य सः, तम् असम्भावितसत्कारं, आर्य्यम्, भूयोऽपि=पुनरपि, प्रत्यवेक्षणनिमित्तं=दर्शनार्थम्, विज्ञापयामः=निवेदयामः (अस्मभ्यं दर्शनं दातुं तथा अस्मदीयसत्कारं ग्रहीतुं भवतां पुनरप्यत्रागमनं प्रार्थयाम)।

राजा—एवम्=उपरोक्तसम्भावितसत्कारत्वम्, मा मा=नहि नहि (सम्भ्रमे द्विरुक्तिः), भवतीनां दर्शनेनैव, सम्भूतसत्कारः=सञ्जातसपर्यः, अस्मि (भवतीनां दर्शनेनैव कृतकृत्योऽस्मि, मन्ये च सम्भूतसत्कार इवात्मानम्)।

शकुन्तला—हला अनसूये! अभिनवया कुशस्य सूच्या=शिखया, परिक्षतं=विद्धम्, अभिनवकुशसूचिपरिक्षतं, मम चरणं=पादम्, वल्कलञ्च=तरुत्वक् च, कुरुबकस्य=वृक्षविशेषस्य, शाखायां परिलग्नम्=संलग्नम् (मम वस्त्रभूतं वल्कलञ्च ससम्भ्रमगामित्वेनासावधानतया कुरुबक-वृक्षस्य शाखायां परिलग्नम्), तावत्, प्रतिपालयतम्=प्रतीक्षेथाम्, माम्=शकुन्तलाम्, यावद्=

दोनों सखियाँ—महाभाग! आप तो बहुत कुछ जानते ही हैं। इस समय आपकी सेवा से पराङ्मुख होने के कारण हम अपराधिनी हैं, अतः क्षमा करें। हमने अभी आपका सत्कार नहीं किया अतः पुनः दर्शन देने के लिए आर्य से प्रार्थना करती हैं।

राजा—ऐसा नहीं, ऐसा नहीं। आप लोगों के दर्शन से ही मेरा (पर्याप्त) सत्कार हो गया है।

शकुन्तला—सखी अनसूया! नवीन कुश का काँटा गड़ने से मेरे पाँव में घाव हो गया

Friends—Noble sir! not having rendered hospitality due to guests, we feel ourselves guilty. Please excuse us. We request your honour for the purpose of an interview again.

King—No, not so! even by your sight I am honoured.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(निःश्वस्य) गताः सर्वाः। भवतु, अहमपि गच्छामि, शकुन्तलादर्शनादेव मन्दौत्सुक्योऽस्मि नगरगमनं प्रति। यावदनुयात्रिकानतिदूरे तपोवनस्य निवेशयामि। न खलु शक्तोऽस्मि शकुन्तलादर्शनव्यापारादात्मानं निवर्त्तयितुम्। मम हि—

गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्थितं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य॥ ३६॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति प्रथमोऽङ्कः।

यावत्कालपर्यन्तम्, एनं=वल्कलं, मोचयामि। (इति=इत्थं, राजानम्=दुष्यन्तम्, अवलोकयन्ती=पश्यन्ती, सव्याजं=सकपटम्, विलम्ब्य=विलम्बं कृत्वा, सहसखीभ्याम्=अनसूया-प्रियंवदाभ्यां सह, निष्क्रान्ता=निर्गता।)

राजा—(निःश्वस्य=दीर्घनिःश्वासं त्यक्त्वा) गताः सर्वाः। भवतु=गमनं निवार्यासां रक्षणोपाय एव न दृश्यते इति भावः, अहमपि गच्छामि (इहोपस्थितेः निष्फलत्वादिति भावः)। शकुन्तलादर्शनादेव=अवलोकनादेव, मन्दं=स्वल्पीकृतम्, औत्सुक्यम्=उत्साहः, यस्य मन्दौत्सुक्यः, अस्मि, नगरगमनं प्रति=राजधानीं प्रति (राजधानीं प्रति यातुम् उत्साहो मे मन्दीभूतः), यावत्=सर्वान्, अनुयात्रिकान्=अनुगामिनः सैनिकान्, तपोवनस्य अतिदूरे=दूरस्थप्रदेशे, निवेशयामि=स्थापयामि। खलु=निश्चयेन, आत्मानं=हृदयं, शकुन्तलायाः दर्शनव्यापारात्=दर्शनकार्यात्, निवर्तयितुम्=समाक्रष्टुं, न=नहि, शक्तः=समर्थः अस्मि (अनुरागावर्तनस्य दुर्निवार्य्यत्वात् इति शेषः)। कथम्? इति प्रश्ने, तत्र हेतुमाह—मम हीति।

अन्वयः—मम शरीरं पुरः गच्छति किन्तु प्रतिवातं नीयमानस्य केतोः चीनांशुकमिव असंस्थितं चेतः पश्चात् धावति॥ ३६॥

है और इस कुरबक वृक्ष की शाखा में मेरा वल्कल वस्त्र भी उलझ गया है। अतः थोड़ी देर मेरी प्रतीक्षा करो, जिससे मैं इसे छुड़ा लूँ।

(इस प्रकार राजा को देखती हुई, बहाने से विलम्ब कर सखियों के साथ चली जाती है।)

राजा—(साँस भरकर) सब गईं। अच्छा तो मैं भी जाता हूँ। शकुन्तला के देखने मात्र से ही मेरी नगर लौटने की इच्छा मन्द पड़ गई है। तब तक अपने पीछे आने वाले यात्रियों

---

point of a young Kusha-thorn and my bark is stuck to a Kurabaka-branch. Wait for me so long as I extricate it.

(Looking at the king and delaying under pretext exit along with friends)

King—(With a sigh) All have gone. Well, I too go then. I am slackened in my eagerness to go to the city. Meanwhile having joined my followers I shall encamp them far from the penance grove. Indeed I am not able to bring back myself from occupying

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गच्छतीति। हि=इति निश्चयेन, मम=दुष्यन्तस्य, शरीरं=वपुः, पुरः=अग्रे, गच्छति=प्रयाति (अनुयात्रिकाननुधावति इति भावः), किन्तु, वातं=वायुं, प्रति इति प्रतिवातं=वाय्वभिमुखं यथा स्यात्तथा, नीयमानस्य=चाल्यमानस्य, केतोः=पताकायाः, चीनांशुकमिव=चीनदेशनिर्मितसूक्ष्म-वस्त्रमिव (चीनांशुकनिर्मितपताकेव), असंस्थितम्=अस्थिरम्, चेतः=स्वान्तम्, पश्चात्= शकुन्तलाभिमुखम्, धावति=अनुसरति। अत्र उपमालङ्कारः, आर्या जातिः ॥ ३६ ॥

भावार्थः—निश्चिनोमि यत् मम शरीरम् अनुयात्रिकाननुसरति किन्तु वातं प्रति नीयमानस्य केतोः चीनांशुकमिव (चीनांशुकनिर्मितपताकेव) अस्थिरं चेतः शकुन्तलाभिमुखमेव धावति।

(वाताभिमुखं नीयमानो यथा ध्वजः पुरतो गच्छति तदुपरि स्थिता पताका वातवेगेन पश्चाच्चाल्यते तद्वच्छरीरमनुयात्रिकाभिमुखं नीयमानं सत् पुरः शनैश्चलति चेतस्तु तदनुरागेण विमूढं सत्तां प्रत्येव पश्चाच्चाल्यतं इति भावः।)

इति प्रथमोऽङ्कः।

(सैनिकों) को तपोवन से दूर ठहराऊँ। मैं शकुन्तला के देखने के व्यापार से स्वयं को दूर रखने में असमर्थ हूँ। क्योंकि—

जैसे चीनी रेशमी वस्त्र की पताका का वस्त्र वायु के प्रतिकूल सञ्चालित करने पर भी पीछे की ओर ही उड़ता है, उसी प्रकार मेरा शरीर तो आगे जाता है, परन्तु चीनांशुक की भाँति अस्थिर मन पीछे ही दौड़ता है ॥ ३६ ॥

(सब चले जाते हैं)

प्रथम अंक समाप्त हुआ।

---

myself with Śakuntalā. For mine (my) body goes forward but the restless heart runs backward, like the China made subtle silken cloth of a banner which is being borne against the wind. *(all executants exit)*

End of act First.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति विदूषकः)

विदूषकः—(निश्वस्य) भो! हदोह्मि एदस्स मिअआसीलस्स रण्णो बअस्सभावेण णिब्बिण्णो अअं मिओ, अअं वराहो, अअं सद्दूलो त्ति मज्झंदिणे वि गिह्मे विरलपादवच्छाआसुं वणराइसुं आहिंडिअ पत्तसंकरकसाअविरसाइं उण्णकडुआइं पिज्जंति गिरिणईसलिलाइं। अणिअदवेलं च उण्णोण्णमंसभूइट्ठं भुंजीअदि। तुरअगआणां च सद्देण रत्तिं पि मे णत्थि पकामसुइदव्वं। महंते ज्जेब पच्चूसे दासीए पुत्तेहिं साउणिअलुद्धेहि कण्णोपघादिणा वणगअणकोलाहलेण पडिबोधिदह्मि। एत्तिकेण बि मे पीडा ण संवुत्ता, जदो अअं गण्डस्य उवरि विप्फोडओ संवुत्तो। [भोः! हतोऽस्मि एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णः। अयं मृगः, अयं वराहः, अयं शार्दूल इति मध्यन्दिनेऽपि ग्रीष्मे विरल-पादपच्छायासु वनराजिषु आहिण्ड्य पत्रसङ्करकषायविरसानि उष्णकटुकानि पीयन्ते गिरिनदीसलिलानि। अनियतवेलञ्च उष्णोष्णमांसभूयिष्ठं भुज्यते। तुरगगजानाञ्च शब्देन रात्रावपि मे नास्ति प्रकामशयितव्यम्। महत्येव प्रत्यूषे दास्याः पुत्रैः शाकुनिकलुब्धैः कर्णोप-घातिना वनगमनकोलाहलेन प्रतिबोधितोऽस्मि। एतावतापि मे पीडा न संवृत्ता, यतः अयं गण्डस्य उपरि विस्फोटकः संवृत्तः।]

विदूषकः—(निश्वस्य=दीर्घं निश्वस्य), भोः=विषादसूचकमव्ययम् ('भोस्तु सम्बोधन-विषादयोः'—मेदिनी), (अहम्) हतोऽस्मि। एतस्य=पुरोवर्तिनः, मृगयाशीलस्य=आखेटव्यसनिनः, राज्ञः=दुष्यन्तस्य, वयस्यभावेन=सहचरतया, निर्विण्णः=सुतरां दुःखितः। अयं मृगः=हरिणः, अयं वराहः=वन्यः शूकरः, अयं शार्दूलः=सिंहः, इति=इत्थम्, दिनस्य मध्यमिति मध्यन्दिनम्, तस्मिन् मध्यन्दिनेऽपि=मध्याह्नेऽपि, ग्रीष्मे=ग्रीष्मसमये, विरलाः=सान्तराः, पादपानां=वृक्षाणां, छाया, यासु विरलपादपच्छायासु, वनराजिषु=वनश्रेणीषु, आहिण्ड्य=परिभ्रम्य, पत्राणां=विविधपादपपर्णानां, सङ्करेण=एकत्र समवायेन, कषायाणि=सनिर्यासानि, अत एव विरसानि=विस्वादानि, तथा उष्णानि च तानि (तपनतापसम्पर्कात् उत उष्णविपाकत्वात् इति भावः), कटुकानि=अल्पकटूनि, चेति पत्र-सङ्करकषायविरसानि उष्णकटुकानि, गिरिनदीसलिलानि=पर्वतीयनदीजलानि, पीयन्ते। अनियता=

विदूषक—(लम्बी साँस भरकर) हाय! इस शिकारी राजा का मित्र बनकर दुःख भोगते मैं तो मारा गया। भयङ्कर ग्रीष्मकाल के मध्याह्न में भी यह मृग, यह सूअर, यह सिंह चिल्लाते हुए विरल पेड़ों की छाया वाले वनों में मारे-मारे फिरना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के पत्तों के समूह के मिलने से कषैले तथा विरस, गरम और कुछ-कुछ कड़ुआ-सा पर्वतीय नदियों का जल पीना पड़ता है। बिना किसी निश्चित समय के गरम-गरम माँस खाना पड़ता है। हाथी और घोड़ों के शब्द से रात्रि में भली प्रकार नींद भी नहीं ले पाता। बड़े तड़के ही इन

Vidūṣaka—(Sighing) Oh! I am worn out by the companionship of this king, who is addicted to the chase. This is deer, this is boar, this is tiger saying thus, even at mid-day does he wander about from forest to forest, along rows of woods where the shade of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तेण हि किल अह्मेसुं अवहीणेसुं तत्थभअदा मिआणुसारिणा अस्समपदं पविट्ठेण मम अधण्णदाए सउंतला णाम का वि तवस्सिकण्णआ दिट्ठा, तं पेक्खिअ संपदं णअरगमणस्स कथंपि ण करेदि। एवं ज्जेव चिंतअस्स मे पहादा अच्छिसुं रअणी, का गदी। जाव णं किदआआरपरिग्गहं पिअवअस्सं पेक्खामि। [**तेन हि किल अस्मासु अवहीनेषु तत्रभवता मृगानुसारिणा आश्रमपदं प्रविष्टेन मम अधन्यतया शकुन्तला नाम काऽपि तपस्वि-कन्यका दृष्टा, तां प्रेक्ष्य साम्प्रतं नगरगमनस्य कथामपि न करोति। एवमेव चिन्तयतः मे प्रभाता अक्ष्णोः रजनी, का गतिः। यावदेनं कृताचारपरिग्रहं प्रियवयस्यं प्रेक्षे।**]

नियमरहिता, वेला=कालः, यस्मिन् तत् अनियतवेलं (कदाचित् पूर्वाह्णे, कदाचित् मध्याह्ने, कदाचित् रात्रौ एवं), उष्णोष्णम्=उष्णप्रकारं, मांसमेव, भूयिष्ठम्=अधिकतरं (प्रचुरं), भुज्यते च। तुरगानाम्=अश्वानाम्, च गजानां=करिणाम्, शब्देन=रवेण, रात्रावपि=निशाकालेऽपि, प्रकामशयितव्यम्=यथेप्सितनिद्रा नास्ति। महत्येव प्रत्यूषे=प्रत्यूषारम्भवेलायामेव, दास्याः पुत्रैः=अतिनीचैः, शकुनान् हिंसन्तीति शाकुनिकाः ते च ते लुब्धाश्चेति, तैः शाकुनिकलुब्धैः=व्याधैः, कर्णोपघातिना=श्रवणोद्वेजनकारिणा, वनगमनकोलाहलेन—वनंगमने=वनगमनकाले, यः कोलाहलः=कलकल-शब्दः, तेन प्रतिबोधितोऽस्मि=जागरितोऽस्मि। एतावतापि=पूर्वोक्तप्रकारेणापि, मे=मम, पीडा=दुःखम्, न संवृत्ता=न सञ्जाता। यतः अयम्, गण्डस्य=कपोलस्य, उपरि=उपरिभागे, विस्फोटकः=व्रणः, संवृत्तः=सञ्जातः (तेनैवातिदुःसहं दुःखं सञ्जातम्)।

तेन=उक्तप्रकारेण, हि=इति निश्चयेन, किल=इति वार्तायाम्, अस्मासु=सेवकेषु, अवहीनेषु=पश्चात् पतितेषु, तत्रभवता=मान्येन राज्ञा दुष्यन्तेन, मृगानुसारिणा=मृगमनुधावता,

---

नीच व्याधों के वन में जाने की तैयारी के शब्दों से मैं जाग जाता हूँ। इतना सब होने पर भी मुझे कष्ट नहीं होता, पर गाल पर यह फोड़ा (घाव) और निकल आया है।

इसी कारण हमलोगों से बिछुड़कर माननीय राजा दुष्यन्त ने मृग का अनुगमन करते हुए आश्रम में प्रविष्ट होकर मेरे दुर्भाग्य से शकुन्तला नामक किसी तपस्वी कन्या को देखा। उसे देखकर अब वे नगर चलने की चर्चा भी नहीं करते। यही सब सोचते-सोचते मेरी आँखों के सामने सबेरा हो जाता है। इसलिए उपाय ही क्या है ? चलूँ, तब तक शिकारी वेशधारी प्रिय मित्र को देखूँ।

---

trees is scanty (very little) in the hot season. The lukewarm water of mountain streams astringent from the mixture of leaves, are drunk. At irregular times a meal, mostly consisting of meat roasted on spits, is eaten. Due to the neighing of the horses and elephents I can not enjoy sound sleep even at night. Then even at the dawn I am awakened by the whore sons, the hunters, with the din (noise) of surrounding the forest. Even then my trouble does not end. Then a pimple has grown on a boil on the check.

While we were left behind, the hermit's daughter, Śakuntalā, was, through my ill-luck, presented to the view of his majesty,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(परिक्रम्यावलोक्य च) एसो बाणासणहत्थो हिअअ-णिहिद-पिअअणो वण-पुप्फमालाहारी इदो ज्जेव आअच्छदि पिअवअस्सो। भोदु, अंग-भंग-विअलो भविअ चिट्ठिस्सं। एव्वंपि णाम विस्सामं लहेअं। (इति दण्डकाष्ठमवलम्ब्य स्थितः।) [एष बाणासनहस्तः हृदयनिहिंतप्रियजनः वनपुष्पमालाधारी इत एव आगच्छति प्रियवयस्यः! भवतु, अङ्गभङ्गविकलो भूत्वा स्थास्यामि। एवमपि नाम विश्रामं लभेय।]

आश्रमपदं=तपोवनस्थानं, प्रविष्टेन, मम=विदूषकस्य, अधन्यतया=दुर्भाग्यतया, शकुन्तला नाम्नी काऽपि, तपस्विकन्यका=मुनिकन्या, दृष्टा=अवलोकिंता, तां=शकुन्तलां, प्रेक्ष्य=दृष्ट्वा, साम्प्रतम्= इदानीम्, नगरगमनस्य=राजधान्यां गमनस्य, कथामपि=प्रस्तावनामपि, न करोति (अत एव नास्त्यस्माकं दुःखनिवृत्त्युपायः)। एवमेव=अनेन प्रकारेणैव, चिन्तयतः=चिन्तां कुर्वतः, भावयतः, मे=मम, अक्ष्णोः=नयनयोः, रजनी=रात्रिः, प्रभाता=अवसानप्राप्ता, रात्रिः दिने परिवर्तिता, का गतिः=दुःखोन्मूलने क उपायः ? (न काचिदपीत्यर्थः), यावद्=यावत्कालपर्यन्तं, एनं=दुष्यन्तं, कृतः आचारपरिग्रहो येन तं कृताचारपरिग्रहम्=धृतमृगयोचितवेशं, प्रेक्षे=पश्य।

(परिक्रम्य=इतस्ततः किञ्चित् सञ्चर्य, च=तथा, अवलोक्य=दृष्ट्वा) एषः बाणासनं=धनुः, तद्धस्ते यस्य बाणासनहस्तः, हृदये=मनसि, निहितः=स्थापितः, प्रियजनः=प्रणयिजनः, यस्य हृदयनिहितप्रियजनः, वनपुष्पाणाम्=अरण्यकुसुमानां, मालां=स्रजं, धर्तुं शीलं यस्य वनपुष्पमाला-धारी, प्रियवयस्यः=प्रियसखा राजा दुष्यन्तः, इत एव=अत्रैव, आगच्छति। भवतु=अस्तु, अङ्गानां= करपादाद्यवयवानाम्, भङ्गेन=मिथ्यावक्रतासम्पादनेन, विकलः=अप्राकृतिकावस्थः (विवश इव), भूत्वा, स्थास्यामि=उपविशामि। एवमपि नाम=ईदृगवस्थानेनापि, विश्रामं=मृगयाव्यापारात् सुस्थताम्, लभेय=प्राप्नुयाम्। (इति=एवमुक्त्वा, दण्डकाष्ठम्=लंगुडम्, अवलम्ब्य=धृत्वा, स्थितः।)

(घूमकर तथा देखकर) यह हाथ में धनुष लिये, हृदय में प्रियजन को बिठाये, वनपुष्पों की माला पहने हुए मेरे प्रिय मित्र इधर ही आ रहे हैं। अच्छा, मैं भी अंग-भंग से विकल हुए के समान बैठूँगा। शायद ऐसा करने से ही विश्राम करने का अवसर मिल जाय। (ऐसा कहकर छड़ी के सहारे बैठ (ठहर) जाता है।)

---

who had entered region of the hermitage in pursuit of a deer. Now (my friend) does not even talk of going to the city. Even today the dawn broke upon my eyes, while I was thinking about all these incidents. What help is there? Meanwhile I shall see him, who must have performed his customary of suitable of hunting decoration.

(Roaming about and observing)— Here comes my dear friend having bow in his hand and wearing garlands of wild flowers. Well! I shall stand as though crippled by the breaking of my limbs. If possibily even in this way I may obtain rest. *(Stands leaning on his stick staff).*

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टो राजा।)

राजा—(आत्मगतम्)

कामं प्रिया न सुलभा मनस्तु तद्भावदर्शनाश्वासि।
अकृतार्थेऽपि मनसिजे रतिमुभयप्रार्थना कुरुते॥ १॥

(स्मितं कृत्वा) एवमात्माभिप्रायसम्भावितेष्टजनचित्तवृत्तिः प्रार्थयिता विप्रलभ्यते। कुतः—

(ततः=तदनन्तरम्, यथानिर्दिष्टः=बाणासनहस्तः, राजा=दुष्यन्तः, प्रविशति=रङ्गभूमौ समायाति।)

राजा—(आत्मगतम्)

अन्वयः—प्रिया कामं न सुलभा तु मनः तद्भावदर्शनाश्वासि मनसिजे अकृतार्थेऽपि उभयप्रार्थना रतिं कुरुते॥ १॥

कामिति। प्रिया=शकुन्तला, कामम्=पर्याप्तम् (अतिशयेन), न सुलभा=न सुखेन लभ्या, तु=परन्तु, मनः=मदीयं चेतः, तस्याः=प्रियायाः (शकुन्तलायाः), ये भावाः=अनुरागव्यञ्जकचेष्टाविशेषाः, तेषां दर्शनेन=अवलोकनेन, आश्वसिति=प्राप्तानन्दं भवतीति तत्—तद्भावदर्शनाश्वासि, मनसिजे=कामे, अकृतार्थेऽपि=असफलमनोरथेऽपि, उभयप्रार्थना=शकुन्तलाया मम चान्योन्यानुरागः, रतिं=प्रीतिम्, कुरुते=उत्पादयति। अत्र अर्थान्तरन्यासालङ्कारः, आर्य्या जातिः॥ १॥

भावार्थः—यद्यपि प्रिया शकुन्तला सुखेन लभ्या नास्ति तथापि मे मनः तस्याः ये अनुरागव्यञ्जकचेष्टाविशेषाः सन्ति तेषां दर्शनेन प्राप्तानन्दं भवति तद्भावदर्शनाश्वासि कामे असफलमनोरथेऽपि शकुन्तलाया मम चान्योन्यानुरागः प्रीतिमुत्पादयतीव। (अजातसङ्गमयोर्बहुप्रयासलभ्यत्वेन निराशयोरपि नायकनायिकयोः परस्परानुरागचर्वणं मनसि कमपि प्रमोदमुत्पादयतीत्यर्थः)॥ १॥

(स्मितम्=ईषद्हास्यं, कृत्वा) एवम्=इत्थमेव, आत्माभिप्रायेण=निजचित्तवृत्तिसाम्येन, सम्भाविता=स्थिरीकृता, इष्टजनस्य=अभिलषितजनस्य, चित्तवृत्तिः=मनोगतभावः, येन सः आत्मा-

---

(इसके पश्चात् निर्दिष्ट रूप से सुसज्जित राजा का प्रवेश)

राजा—(मन में) यद्यपि प्रिया का मिलना सहज नहीं है तथापि उसके भावों को देखकर मेरे मन को आश्वासन-सा प्राप्त हो गया है। (क्योंकि) कामदेव के असफल रहने पर भी नायक-नायिका की परस्पर प्रार्थना परस्पर उन दोनों को आनन्दित ही करती रहती है॥ १॥

(मुस्कराकर)—जो व्यक्ति अपनी चित्तवृत्ति के अनुसार अपनी प्रिया की भी चित्तवृत्ति मानता है वह इसी प्रकार धोखा खाता है, क्योंकि—

(Then enters the king as deseribed)

King—(To himself) Granted my beloved is not easy to obtain, but my mind feels comforted by observing her feelings. Even when love has not achieved its object, mutual solicitation creates enjoyment. (1)

(Smiling)—Thus the lover who judges the working of the mind of the beloved person by his own desires, is deluded—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्निग्धं वीक्षितमन्यतोऽपि नयने यत् प्रेरयन्त्या तया
यातं यच्च नितम्बयोर्गुरुतया मन्दं विलासादिव।
मा गा इत्युपरुद्धया यदपि तत्सासूयमुक्ता सखी
सर्वं तत् किल मत्परायणमहो कामः स्वतां पश्यति॥ २॥

भिप्रायसम्भावितेष्टजनचित्तवृत्तिः, प्रार्थयिता=कामयिता, विप्रलभ्यते=वञ्चितो भवति। (यथा मम तस्यां तथैव तस्या अपि मयि मनोभाव इति मन्यमानोऽहं प्रतारितः)।

अन्वयः—तया नयने अन्यतः प्रेरयन्त्याऽपि स्निग्धं यद्वीक्षितं तथा नितम्बयोः गुरुतया विलासादिव मन्दं यातं, मा गाः इति उपरुद्धया सखी यदपि तत् सासूयम् उक्ता तत् सर्वं मत्परायणं किल। अहो कामः स्वतां पश्यति॥ २॥

स्निग्धमिति। तया=शकुन्तलया, नयने=नेत्रयुगलम्, अन्यतः=अन्यस्यां दिशि, प्रेरयन्त्या-ऽपि=स्फुटं पातयन्त्याऽपि, स्निग्धं=साभिलाषम्, यद्वीक्षितम्=यद् अवलोकितम्, तथा, नितम्बयोः=कटिपश्चाद्भागयोः, गुरुतया=पृथुलत्वेन, विलासादिव=मामुद्दिश्य अङ्गक्रियादिषु वैशिष्ट्यं प्रदर्श्येव, मन्दं=मन्थरं, यातं=गतम्, तथा मा गाः=गच्छ, इति=इत्थमुक्त्वा, उपरुद्धया=अनुरुद्धया, तया शकुन्तलया, सखी=प्रियंवदा, यदपि तत्=यच्च तत्, सासूयम्=ईर्ष्यापूर्वकम्, यथा स्यात्तथा उक्ता=अभिहिता, तत् सर्वम्=पूर्वोक्तगमनादिकम्, अहमेव परम् अनयनम्=आश्रयः, विषयो यस्य तत्, मत्परायणम्=मदनुरागाविष्करणतत्परम्, किल=इति सम्भावनायाम्, अहो=आश्चर्यं, कामः=मदनावेशोऽभिलाषः, स्वताम्=आत्मीयताम्, पश्यति=अवलोकयति (सम्भावयति)। अत्र 'कामः स्वतां पश्यति' इति सामान्येन पूर्वविशेषस्य समर्थनाद् अर्थान्तरन्यासः, विलासादिव इति हेतूत्प्रेक्षा। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ २॥

भावार्थः—तया शकुन्तलया नयने अन्यतः पातयन्त्याऽपि यत् व्याजेन तारकां युग्मं सञ्चार्य्यावलोकितम्, तथा नितम्बयोः गुरुतया मामुद्दिश्य अङ्गक्रियादिषु वैशिष्ट्यं प्रदर्श्येव यत् मन्दं यातं, एवं मा गाः इति भाषमाणा सखी यया सासूयं अभिहिता तत् सर्वं मत्परायणमेवासीत्। अहो! कामः आत्मीयतां स्वयमेव संम्भावयति॥ २॥

क्योंकि—शकुन्तला ने अन्यत्र दृष्टिपात कर भी वस्तुतः हमें ही देखा था तथा विलासभाव से हमें देखने के लिए ही मानो वह अपने नितम्ब भार से दबी हुई-सी मन्द-मन्द चल रही थी। और जब उसकी सखी प्रियंवदा ने कहा—'मत जाओ' तब उसने ईर्ष्यापूर्वक उसे झिड़ककर जो कुछ कहा था, वह सब मेरे लिए ही था। कितने आश्चर्य की बात है कि काम पर-विषयक व्यापार को भी अपने ही लिए समझ लेता है॥ २॥

For— "The affectionate way in which she looked even when directing her eyes away, the slow steps (slacken speed) she took owing to the heaviness of her buttocks as though through dalliance (amusing), also the indignant words she addressed to her friend when stopped by her with 'Do not go'— all that indeed had refrence to me. Oh! every where a lover sees his own. (2)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(तथा स्थित एव) भो महाराअ! ण मे हत्थो पसरदि, ता वाआमेत्तेण जीआवइस्सं। जअदु जअदु भवं। **[भो महाराज! न मे हस्तः प्रसरति, तत् वाचामात्रेण जापयिष्यामि। जयतु जयतु भवान्।]**

राजा—(विलोक्य सस्मितम्) कुतोऽयं गात्रोपघातः।

विदूषकः—कुदो किल सअं अच्छी आउलीकरिअ अस्सुकारणं पुच्छेसि। **[कुत किल स्वयमक्षिणी आकुलीकृत्य अश्रुकारणं पृच्छसि।]**

राजा—न खल्ववगच्छामि, भिन्नार्थमभिधीयताम्।

विदूषकः—जं वेदसो खुज्जस्स लीलां बिडंबेदि, तं किं अत्तणो पहावेण? अधवा णईवअस्स? **[यद् वेतसः कुब्जस्य लीलां विडम्बयति, तत् किम् आत्मनः प्रभावेण? अथवा नदीवेगस्य?]**

विदूषकः—(तथा स्थितः=अङ्गवैकल्यप्रदर्शनेन काष्ठदण्डमवलम्ब्य स्थित एव) भो महाराज! मे=मम, हस्तः=करः, न प्रसरति=प्रचलति (अङ्गवैकल्यत्वात् आशीर्वादप्रदानेऽपि असमर्थोऽहं हस्तमुद्यम्य इति भावः), तत्=तस्मात्, वाचामात्रेण=केवलेन वचसा, जापयिष्यामि= कथयिष्यामि। जयतु जयतु भवान्।

राजा—कुतः=कस्मात् कारणात्, अयं=दृश्यमानं, गात्रस्य=अङ्गस्य, उपघातः= वैकल्यम्?

विदूषकः—कुतः=कस्मात् कारणात्, किल=इति सम्भावनायां, स्वयम्=आत्मना एव, अक्षिणी=नयने, आकुली=व्याकुली, कृत्य=विधाय, अश्रुकारणं—अश्रुणः=बाष्पजलस्य, कारणं= हेतुम्, पृच्छसि? (त्वमेव ममाङ्गवैकल्ये हेतुरिति)।

राजा—न=नहि, खलु=इति निश्चयेन, अवगच्छामि=ज्ञानामि (तव वचनाशयमिति शेषः), (तस्मात्) भिन्नार्थम्—भिन्नः=उक्तादन्यः, अर्थः=तात्पर्यं, यस्य तत्=स्पष्टार्थकवचनम्, अभि-धीयताम्=कथ्यताम्।

विदूषक—(उसी प्रकार बैठे हुए) ओ महाराज! मेरा हाथ नहीं फैलता अतः वचनों से ही आपकी अभ्यर्थना करता हूँ। आपकी जय हो, जय हो।

राजा—यह अङ्गवैकल्य (जकड़न) कैसे हुआ?

विदूषक—कैसे क्या? स्वयं आँखों में अँगुली घुसेड़कर फिर आँसू आने का कारण पूछते हो?

राजा—मैं समझ नहीं पाया, जरा साफ-साफ कहिए।

विदूषक—बेंत जो कुबड़ेपन का प्रदर्शन करता हैं, क्या वह अपने मन से अथवा नदी के वेग के प्रभाव से?

Vidūṣaka—(Sitting as it is) O' king! My hands do not move. I greet you with victory only with words—May you be victorious, be victorious.

King—Where from came this breakdown of your limbs.

Vidūṣaka—Why indeed do you ask the cause of tears after having troubled the eyes yourself.

King—Really, I do not understand, please tell me clearly.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—नदीवेगस्तत्र कारणम्।

विदूषकः—मम वि भवं। [ममापि भवान्।]

राजा—कथमिव?

विदूषकः—जुत्तं णाम एव्वं, जं तुए रज्जकज्जाइं उज्झिअ तादिसं अक्खलिदपदं पदेसं च वणचलवित्तिणा होदव्वं त्ति। किं एत्थ मंतीअदु? अहं उण बह्मणो पच्चहं सापदाणुसरणेहिं संक्खोहिदसंधिवन्धणाणं अत्तणो अङ्गाणं अणीसोह्मि। ता पसीद मे, एक्काहंपि दाव विसमीअदु। [युक्तं नाम एवम्, यत् त्वया राजकार्याणि उज्झित्वा तादृशम् अस्खलितपदं प्रदेशञ्च वनचरवृत्तिना भवितव्यमिति। किमत्र मन्त्र्यताम्, अहं पुनर्ब्राह्मणः प्रत्यहं श्वापदानुसरणैः संक्षोभितसन्धिबन्धनानामङ्गानामनीशोऽस्मि। तत् प्रसीद मे, एकाहमपि तावद् विश्रम्यताम्।

विदूषकः—वेतसः=वानीरः इति प्रसिद्धो लताविशेषः (नदीतटारूढ इति शेषः), यत् कुब्जस्य=उन्नतपृष्ठस्य जनस्य, लीलां=क्रियाम्, विडम्बयति=अनुकरोति, तत्-कुब्जलीलाअनुकरणं, किंम्, आत्मनः प्रभावेण=निजशक्त्या? अथवा=उत, नदीवेगस्य=सरित्प्रवाहस्य?

राजा—तत्र=तस्मिन् विषये, नदीवेगः=सरिद्वेगः, कारणम्=हेतुः (नदीवेग एव वेतसं कुब्जं करोतीत्यर्थः)।

विदूषकः—भवान्=त्वमेव, ममापि गात्रोपघाते कारणम्।

राजा—कथमिव=कथमहं तव गात्रोपघाते कारणं भवामि?

विदूषकः—एवम्=उक्तप्रकारकं भवदाचरणम्, युक्तम्=उचितम्, नाम=इति सम्भावनायाम्, यत्=येन कारणेन, त्वया=भवता, राजकार्य्याणि=प्रशासनकार्याणि, उज्झित्वा=परित्यज्य, न स्खलितं=न प्रभ्रष्टं, पदं=पादविन्यासः, यस्मिन्=अस्खलितं, तादृशं प्रदेशं च=राजधानीञ्च, उज्झित्वा, त्वया=भवता, वनेचरस्य=सततं वनविहरणशीलस्य-व्याधादेः, वृत्तिरिव=मृगयारूप आजीव इव,

---

राजा—उसमें (बेंत को कुब्ज करने में) नदी का वेग ही कारण होता है।

विदूषक—उसी प्रकार मेरे अङ्ग-भङ्ग के कारण आप हैं।

राजा—कैसे?

विदूषक—बस, यही तो बात है। क्योंकि आप राजकार्य और वैसा निरापद स्थान छोड़कर सर्वथा वनचारी-व्याध बन गये हैं। अब मैं आपके प्रश्न का क्या उत्तर दूँ (अर्थात् बिना उत्तर ही सब कुछ स्पष्ट है)। मैं ब्राह्मण होकर भी प्रतिदिन हिंस्र जीवों के पीछे दौड़ता हूँ, इससे मेरे सन्धिस्थान के सब बन्धन अपने-अपने स्थान से हट गये हैं और इसी के

Vidūṣaka—Dear! when the cane imitates the kubja (hump-backed or crooked) is that by its own power or by that of the current of the river.

King—The current of the river is the cause there.

Vidūṣaka—Mine also you (are the cause).

King—How do you say this?

Vidūṣaka—Thus having relinquished (to give up) your royal duties, you should, in such a dreary region, lead the life of a forester. Now what shall I reply to your question? Even being a

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(आत्मगतम्) अयमेवमाह, ममापि कण्वसुतामनुस्मृत्य मृगयां प्रति निरुत्सुकं चेतः। तथाहि—

न नमयितुमधिज्यमुत्सहिष्ये धनुरिदमाहितसायकं मृगेषु।
सहवसतिमुपेत्य यैः प्रियायाः कृत इव लोचनकान्तिसंविभागः॥ ३॥

वृत्तिः=मृगयारूपव्यापारः, यस्य तेन वनचरवृत्तिना, भवितव्यम्=अभूयत इति। अत्र= भवत्कृतप्रश्ने, किं मन्त्र्यताम्=मया उत्तरं प्रदीयताम्? (स्वयमेव विचारमात्रेण ज्ञातव्यमस्ति सर्वम्), पुनः=पश्चात्, अहं ब्राह्मणः=विप्रः (ब्राह्मणो भूत्वापि इति भावः), प्रत्यहं=प्रतिदिनं, श्वभ्यः=कुक्कुरेभ्यः, आपदः येषां ते श्वापदाः=व्याघ्रादयः, तेषामनुसरणैः=अनुधावनैः, संक्षोभितानि= विक्षुभ्य चलितानि, सन्धिबन्धनानि=संयोगसन्धानस्थानानि, येषां संक्षोभितसन्धिबन्धनानाम्, अङ्गानाम्=अवयवानां, अनीशः=वहनसञ्चालनादावक्षमः, अस्मि। तत्=तस्मात्, मे=मयि, प्रसीद=कृपां कुरु, तावत्= तावत्कालपर्यन्तम्, एकाहमपि=दिवसमेकमात्रमपि, विश्रम्यताम्=विश्रामं कुरु।

राजा—(आत्मगतम्=स्वमनसि) अयं=विदूषकः, एवम्=इत्थम्, आह=उक्तवान्, मम= दुष्यन्तस्यापि, कण्वसुताम्=शकुन्तलाम्, अनुस्मृत्य=मनसिकृत्य, मृगयां प्रति=निरीहपशुव्यापादने, निरुत्सुकं=विरक्तं, चेतः। तथाहि—

अन्वयः—अधिज्यं तथा आहितसायकम् इदं धनुः मृगेषु नमयितुं न उत्सहिष्ये यैः सहवसतिम् उपेत्य प्रियायाः लोचनकान्तिसंविभागः कृत इव॥ ३॥

नेति। अध्यारूढा ज्या यस्मिन् तत् अधिज्यं=गुणयुक्तम्, तथा आहितः=संयोजितः, सायकः=बाणः, यस्मिन् तत् आहितसायकं=शरयुक्तम्, इदं=दृश्यमानम्, धनुः, मृगेषु=हरिणेषु (तान् लक्ष्यीकृत्येत्यर्थः), नमयितुं=वक्रीकर्तुं (ज्याकर्षणेनेति यावत्), न उत्सहिष्ये=शक्ष्यामि।

परिणामस्वरूप मैं अब अपने अङ्गों से कोई कार्य नहीं ले सकता। अतः अब मुझ पर कृपा कीजिये और कम-से-कम एक दिन तो विश्राम कर लीजिये।

राजा—(मन में) यह इस प्रकार कह रहा है और इधर शकुन्तला का स्मरण करते रहने से मेरे मन में भी शिकार के प्रति उत्साह नहीं रहा है। क्योंकि—

धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ी हुई है तथा उस पर बाण भी चढ़ाया हुआ है, फिर भी मैं उसे हरिणों पर चला नहीं पाता; क्योंकि इन्हो(मृगों) ने साथ रहने के कारण अपने नेत्र-सौन्दर्य का कुछ भाग मेरी प्रिया को भी बाँटकर दे दिया है॥ ३॥

Brahmana regularly I follow the wild animals and thus the bandages of my joints are thoroughly loosened or shaken and as a result of it I am become no master of my limbs. Therefore be pleased with me, take rest just even for a day.

King—(To himself) He too speaks thus. My mind too is disinclined towards the chase, thinking of Kaṇva's daughter.

Why I am not able to bend this bow, strong and with the arrow fixed, against the deer, by whom instruction in beautiful glances was as though imparted to my beloved, having come to reside with her. (3)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(राज्ञो मुखमवलोक्य) अत्तभवं किंपि हिअए कदुअ मंतेदि, अरण्णे क्खु मए रुदिदं। [अत्रभवान् किमपि हृदये कृत्वा मन्त्रयति, अरण्ये खलु मया रुदितम्।]

राजा—(सस्मितम्) अनतिक्रमणीयं सुहृद्वाक्यमिति स्थितोऽस्मि।

विदूषकः—(सपरितोषम्) तेण हि तुमं चिरं जीव। (इत्युत्थातुमिच्छति) [तेन हि त्वं चिरं जीव।]

(कस्मात्?) स्वयमेव उत्तरयति—यैः=मृगैः, सहवसतिम्=एकत्रवासम्, उपेत्य=प्राप्य, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, लोचनयोः=नयनयोः, कान्तेः=शोभायाः, संविभागः=सम्यक् विभज्यार्पणं कृत इव। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, पुष्पिताग्रा वृत्तम्। अत्र च मृगलोचनमिव शकुन्तलालोचनं रमणीयम् इत्यनेन उपमालङ्कारोऽपि ध्वन्यते॥ ३॥

भावार्थः—गुणयुक्तं शरयुक्तञ्च इदं धनुः मृगान् लक्ष्यीकृत्य ज्याकर्षणेन वक्रीकर्त्तुं न उत्सहिष्ये। यतः यैः सहवसतिं प्राप्य शकुन्तलायाः नयनयोः शोभायाः संविभागः कृत इव (प्रियाकृतसौहार्देषु विषयेषु मम सौहार्दकरणमेवोचितं न पुनस्तेषु हिंसेति भावः।)॥ ३॥

विदूषकः—(राज्ञः=दुष्यन्तस्य, मुखम्=आननम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा) अत्रभवान्=माननीयस्त्वम्, किमपि=अकथनीयं, हृदये कृत्वा=चिन्तयित्वा, मन्त्रयति=भाषते, मया=विदूषकेण, खलु=इति निश्चयेन, रुदितम्=अश्रुपातनम्, कृतम्=विहितम् (अरण्यरोदनमिव मद्वचनं व्यर्थं जातम्)।

राजा—(सस्मितम्=ईषद्हाससहितम्) सुहृदः=मित्रस्य, वाक्यम्=वचनम्, अनतिक्रमणीयम्=अलङ्घनीयम्, इति=अस्मात् कारणात्, स्थितोऽस्मि=मृगयाव्यापारात् निवर्त्त्याऽवस्थितोऽस्मि।

विदूषकः—(सपरितोषम्=सन्तोषसहितम्) तेन हि=मद्वचनपालनेनैव हेतुना, त्वम्=भवान्, चिरं जीव=चिरंजीवी भव इत्याशीर्वचनम्। (इति=एवमुक्त्वा, उत्थातुम्=गमनाय, इच्छति=उपक्रमते।)

विदूषक—(राजा का मुख देखकर) न जाने आप मन में क्या विचारकर यह सब कह रहे हैं। (मैंने जो कहा वह सब तो व्यर्थ गया और यही जान पड़ता है कि मानो) मैंने अरण्यरोदन किया।

राजा—(हँसकर) मित्र की बात टाली नहीं जा सकती अतः मैं शिकार से विरत होकर यहीं ठहरता हूँ।

विदूषक—(सन्तोषपूर्वक) यदि ऐसा है तो आप चिरंजीवी हों। (उठना चाहता है)

Vidūṣaka—(Looking at the king's face) **Considering some thing in your mind your majesty is deliberating. I did the crying in the wilderness.**

King—(With a smile) **What else? I am at a stop, because I can not transgress the words of my friend.**

Vidūṣaka—(With satisfaction) **If so, may you live long. *(Desires to go)***

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—तिष्ठ, शृणु मे सावशेषं वचः।

विदूषकः—आणवेदु भवं। [आज्ञापयतु भवान्।]

राजा—विश्रान्तेन भवता ममान्यस्मिन्ननायासे कर्मणि सहायेन भवितव्यम्।

विदूषकः—किं मोदअखज्जिआए? [किं मोदकखादिकायाम्?]

राजा—यद् वक्ष्यामि।

विदूषकः—गहीदो क्खणो। [गृहीतः क्षणः।]

राजा—कः कोऽत्र भोः!

दौवारिकः—(प्रविश्य) आणवेदु भट्टा। [आज्ञापयतु भर्ता।]

राजा—तिष्ठ=स्थिरो भव, मे=मम, सावशेषं=शेषपर्यन्तम्, वचः, शृणु=आकर्णय।

विदूषकः—आज्ञापयतु भवान्=कथयतु सावशेषवचः।

राजा—विश्रान्तेन=मृगयाव्यापारात् कृतश्रमापनोदनेन, भवता=त्वया, मम=दुष्यन्तस्य, अन्यस्मिन्=मृगयेतरकार्ये, अनायासे=विना परिश्रमेण साध्ये, कर्मणि=कार्ये, सहायेन=सहायकत्वेन, भवितव्यम्।

विदूषकः—किम्, मोदकं=मिष्टान्नं (लड्डू) इति नाम्ना प्रसिद्धम्, तस्य खादिकायां=भक्षणे?

राजा—यद् वक्ष्यामि=यद् कथयामि, तत्रभवता सहायेन भवितव्यम्।

विदूषकः—क्षणः=श्रवणावसरः, गृहीतः=अवलम्बितः (भवदीयकथनसमाप्तिपर्यन्तं स्थितोऽस्मि इति तात्पर्यम्)।

राजा—भो=इति अनिर्दिष्टपरिजनाह्वाने, अत्र कः कः=परिजनः वर्त्तते?

राजा—रुको और मेरे पूरे कथन को सुनो।

विदूषक—आज्ञा दीजिए श्रीमन्!

राजा—विश्राम कर लेने के पश्चात् तुम्हें मुझे अनायास सिद्ध होने योग्य कार्य में सहायता देनी चाहिए।

विदूषक—क्या लड्डू खाने के काम में?

राजा—जो (काम) मैं बताने जा रहा हूँ।

विदूषक—मैं वह काम बताने के लिए आपको अवसर देता हूँ।

राजा—अरे! यहाँ (द्वार पर) कौन है?

द्वारपाल—(प्रवेशकर) महाराज आज्ञा दें।

King—Dear, stay, my say is not complete.

Vidūṣaka—Let your majesty command.

King— When rested, you should be my help-mate in one of my affairs and requiring no exertion (of any kind).

Vidūṣaka—Is it in eating sweet meats?

King—In what I shall tell you.

Vidūṣaka—I am giving you a chance to tell that one.

King—Hallo, who is here (at the gate)?

Door-keeper—*(Entering)* May your majesty command.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—रैवतक! सेनापतिस्तावदाहूयताम्।

दौवारिकः—तह। (इति निष्क्रम्य सेनापतिना सह प्रविश्य) एदु एदु अज्जो। एस आलावदिण्णकण्णो भट्टा इधज्जेव चिट्ठदि, उवसप्पदु णं अज्जो। तथा। [एतु एतु आर्यः। एष आलापदत्तकर्णः भर्ता इह एव तिष्ठति, उपसर्पतु एनमार्यः।]

सेनापतिः—(राजानमवलोक्य स्वगतम्) दृष्टदोषापि मृगया स्वामिनि केवलं गुणायैव संवृत्ता। तथाहि देवः—

अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरवर्ष्मा
रविकिरणसहिष्णुः स्वेदलेशैरभिन्नः।
अपचितमपि गात्रं व्यायतत्वादलक्ष्यं
गिरिचर इव नागः प्राणसारं बिभर्त्ति॥ ४॥

दौवारिकः—(प्रविश्य=कक्षे आगत्य) भर्त्ता=प्रभुः, आज्ञापयतु।

राजा—रैवतक! तावद् सेनापतिः=सेनाध्यक्षः, आहूयताम्=आकारय।

दौवारिकः—तथा=यथाऽऽज्ञापयति भर्त्ता। (इति=एवमुक्त्वा, निष्क्रम्य=बहिः गत्वा, सेनापतिना=सेनाध्यक्षेण सह, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) आर्यः=प्रभुः मान्यः, एतु एतु=प्रविशतु प्रविशतु। एषः=दृश्यमानः, भर्त्ता=प्रभुः, राजा इत्यर्थः, आलापे=आवयोः कथोपकथने, सम्भाषणे= दत्तौ कर्णौ येन स आलापदत्तकर्णः, इहैव=अत्रैव, तिष्ठति=विद्यते। आर्यः=भवान्, एनं=भर्त्तारम्, उपसर्पतु=पार्श्वे गच्छतु।

सेनापतिः—(राजानं=दुष्यन्तम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा, स्वगतम्=मनसि) दृष्टः=प्रत्यक्षतया- ऽवलोकितः (अनुभूतः), दोषः=दुष्प्रभावः, यस्याः सा दुष्टदोषा, अपि, मृगया=पशुवधरूपा हिंसा, स्वामिनि=राजनि, केवलं=एकमात्रम्, गुणायैव=गुणसम्पादनार्थमेव, संवृत्ता=जाता। तथाहि, देवः=राजा—

राजा—रैवतक! सेनापति को बुला लाओ।

द्वारपाल—जो आज्ञा (जाकर, सेनापति के साथ प्रविष्ट होकर) आइए आइए श्रीमान्! हमलोगों की बातों में कान लगाये हुए महाराज यहीं विराजमान हैं, आप इनके पास पहुँचिए।

सेनापति—(राजा को देखकर मन में) यद्यपि मृगया में दोष-ही-दोष हैं तथापि वह स्वामी के लिए गुणरूपा ही सिद्ध हो रही है। क्योंकि—

निरन्तर धनुष की डोरी खींचने से महाराज का शरीर कठिन हो गया है, (शरीर में)

King—Raivātaka! let the general be summond.

Door-Keeper—As you command your majesty. ***(going and entering again with the general)*** Come! come! your honour! Here is his majesty, with his ears fixed to our conversation. Let your honour approach.

General—***(Looking at the king, to himself)*** Though the chase have so many defects, yet it proved only an advantage in our lord. For his majesty—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(उपगम्य) जयतु जयतु स्वामी। स्वामिन्! गृहीतश्वापदमरण्यम्, तत् किमन्यत्रवस्थीयते?

अन्वयः—अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरवर्ष्मा (अत एव) रविकिरणसहिष्णुः स्वेदलेशैः अभिन्नः, (तेन हि) गिरिचरः नागः इव अपचितम् अपि व्यायतत्वाद् अलक्ष्यं प्राणसारं गात्रं बिभर्त्ति ॥ ४ ॥

अनवरतेति। अनवरतः=सततं, यद् धनुषः ज्यायाः=मौर्व्याः, आस्फालनं=कर्षणं, तेन क्रूरं=कठिनं, वर्ष्म=शरीरं, यस्य अनवरतधनुर्ज्यास्फालनक्रूरवर्ष्मा, (अत एव) रविकिरणान्=सौररश्मीन्, सहिष्णुः=सोढा, रविकिरणसहिष्णुः=आतपेऽप्यक्लान्तः, स्वेदलेशैः=घर्मजलकणैः, अभिन्नः=अविशिष्टः (श्रमजयी इति भावः), (तेन हि) गिरौ चरतीति गिरिचरः=पार्वतीयः, नागः=हस्तीव, अपचितम्=क्षीणम्, अपि, व्यायतत्वात्=परिच्छदावृतत्वेन विशालत्वदृश्यमानत्वात् (गजपक्षे-दीर्घत्वात्), अलक्ष्यम्=अदृश्यम्, तथा प्राणः=बलमेव, सारः=स्थिरांशः, यस्मिन् तत् प्राणसारं=बलवत्तरं, गात्रम्=शरीरं, बिभर्त्ति=वहति। अत्र अलङ्कारः श्लेषोपमा परिकरश्च। मालिनी नाम वृत्तम् ॥ ४ ॥

भावार्थः—यद्यपि मृगया दृष्टदोषैव भवति परन्तु अस्माकं राज्ञि अनवरतज्यास्फालनकठिनकायतया सौरतापसहिष्णुतया च प्रभूतेऽपि शरीरव्यापारे स्वेदानातुरिततया घातुकजन्तुसामान्येभ्योऽपि अविपन्नतया गुणायैव नितरां भवति ॥ ४ ॥

(उपगम्य=उत्पेत्य, राज्ञोऽन्तिकं प्राप्य) जयतु जयतु स्वामी! इत्याद्याचारसम्पादनेन स्वोपस्थितिं सूचयति। स्वामिन्! गृहीतः=अवगतः, श्वापदाः=व्याघ्रादिहिंस्रजन्तवः, यस्मिन् तत् श्वापदम्, अरण्यम्=काननम् (तथा च वनस्य कस्मिन् भागे हरिणाश्चरन्ति कुत्र च व्याघ्रादि जन्तवः

आतप (धूप) सहन करने की शक्ति आ गई है। (अब) वे पसीना आ जाने पर व्याकुल नहीं होते। यद्यपि इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग क्षीण हो गये हैं, वस्त्रादि धारण करने पर भी इन्हें मोटा नहीं कहा जा सकता तथापि ये बलवान् पर्वतीय हाथी की भाँति केवल बलवान् शरीर धारण किये हुए हैं ॥ ४ ॥

(पास में जाकर)—स्वामी की जय हो, जय हो। वन में मृगों एव हिंस्र जन्तुओं के आवास का पता कर लिया गया है। अब इसके पश्चात् क्या आपका अन्यत्र ठहरने का विचार है।

Like a mountain-roaring elephant, possesses a body, where fore-part is hardened by the incessant friction of the bow-string, which can stand the rays of the sun and is not affected by the slightest fatigue, which, though reduced in bulk, is not noticeable owing to its muscular development and which is the very essence of strength. (4)

(Approaching) May your majesty be victorious. The forest has its beasts of prey hemmed in. Why does your majesty stay in another place?

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भद्रसेन! मन्दोत्साहः कृतोऽस्मि मृगयापवादिना माधव्येन।

सेनापतिः—(जनान्तिकम्) सखे! माधव्य! स्थिरप्रतिज्ञो भव, अहं तावत् स्वामिनश्चित्तवृत्तिमनुवर्त्तिष्ये। (प्रकाशम्) देव! प्रलपत्येष वैधेयः, ननु प्रभुरेव निदर्शनम्। पश्यतु देवः—

मेदश्छेदकृशोदरं लघु भवत्युत्साहयोग्यं वपुः,
सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चित्तं भयक्रोधयोः।

सन्ति तत्सर्वं सम्यगवगतमस्माभिरिति भावार्थः), किम् अन्यत्र=इतो भिन्नम् अपरस्थानम्, अवस्थीयते=निवासः क्रियते।

राजा—भद्रसेन! (भद्राः=क्षेमकारिण्यः, सेना यस्य सः तथोक्तस्तत्सम्बोधने भद्रसेन इति) मृगयाम्= आखेटम्, अपवदति=निन्दतीति मृगयापवादी, तेन मृगयापवादिना=मृगयाद्वेषिणा, माधव्येन=विदूषकेण, मन्दः=शिथिलीकृतः, उत्साहः=उद्यमः, यस्य सः तथाभूतः मन्दीकृतोत्साहः, अस्मि=विहीतोऽस्मि।

सेनापतिः—(जनान्तिकम्=विदूषकस्य कर्णे), सखे माधव्य! =मित्र माधव्य! स्थिर-प्रतिज्ञः=दृढनिश्चयः, अहं तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, स्वामिनः=राज्ञः दुष्यन्तस्य, चित्तवृत्तिम्= हृदयगतभावम्, अनुवर्त्तिष्ये=अनुसरिष्यामि। (प्रकाशम्) देव!=स्वामिन्! एष वैधेयः=मूढः, प्रलपति=उन्मत्त इव निरर्थकं वक्ति। ननु=इति दृढामन्त्रणे, प्रभुरेव=भवानेव, निदर्शनम्=प्रमाणम् (मृगयाया गुणत्वे दृष्टान्तः)। देवः=भवान्, पश्यतु=विचारयतु।

अन्वय—वपुः मेदश्छेदकृशोदरम् अत एव लघु अत एव च उत्साहयोग्यं भवति। (अपि च) सत्त्वानां भयक्रोधयोः विकृतिमत् चित्तं लक्ष्यते। चले लक्ष्ये यद् इषवः सिध्यन्ति स च धन्विनाम् उत्कर्षः, अत एव मृगयां मिथ्या हि व्यसनं वदन्ति। ईदृक् विनोदः कुतः॥ ५॥

मेदरिति। वपुः=शरीरम्, मेदसः=वसायाः, छेदेन=ह्रासेन, कृशं=क्षीणम्, उदरं यत्र तत्

राजा—भद्रसेन! शिकारद्वेषी माधव्य ने हमारा शिकार करने का उत्साह मन्द कर दिया है।

सेनापति—(विदूषक के कान में) मित्र माधव्य! तुम अपनी प्रतिज्ञा पर जमे रहो, मैं स्वामी की चित्तवृत्ति का अनुसरण करता हूँ। (प्रकट) महाराज! यह मूर्ख यूँ ही बक रहा है। वस्तुतः मृगया के सम्बन्ध में (अर्थात् वह अच्छी वस्तु है या बुरी) स्वामी ही प्रमाण हैं। आप ही देखिए—

शिकार खेलने से चर्बी नष्ट होकर पेट सिकुड़ जाता है, शरीर हलका और फुर्तीला बनता है, भय और क्रोध पर वन्य जीवों की चेष्टाओं का ज्ञान हो जाता है। भागते हुए पशुओं

King—Madhavya, who denounces the chase, had dulled my enthusiasm.

General—*(Aside)* Dear! Be of firm opposition. As for me, I shall follow the inclinaiton of my master's mind. (Aloud) Let this fool prattling. Why your majesty himself is an illustration here.

The body, with its belly thinned from reduction of fat. It becomes light and capable of exertion, the mind of the beasts, as

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले,
मिथ्या हि व्यसनं वदन्ति मृगयामीदृग् विनोदः कुतः ॥ ५ ॥

विदूषकः—(सरोषम्) अवेहि रे उच्छाअहेतुअ! अत्तभवं पइदिं आवण्णो, तुमं दाव दासीए पुत्तो अडइदो अडइं आहिंडंतो जाव सिआलमिअलोलुअस्स कस्स वि जिण्णरिच्छस्स मुहे णिवडिदो होहि। **[अपेहि रे उत्साहहेतुक! अत्रभवान् प्रकृतिमापन्नः, त्वं तावद् दास्याः पुत्रः अटवीतः अटवीमाहिण्डमानः यावत् शृगालमृगलोलुपस्य कस्यापि जीर्णऋक्षस्य मुखे निपतितो भव।]**

मेदश्छेदकृशोदरम्, अतएव लघु=भारहीनं सत्, अत एव च उत्साहयोग्यम्=सर्वकर्मक्षमम्, भवति। (अपि च) सत्त्वानां=प्राणिनां, मृगव्याघ्रादीनाम्, भयक्रोधयोः=भयक्रोधपरकभावविशेषयोः, विकृतिर्विद्यते यस्मिंस्तत् विकृतिमत्=विकारग्रस्तम्, चित्तं=चेतः, लक्ष्यते=चेष्टाविशेषदर्शनेनावबुध्यते (अत एव रणाङ्गणे महती सुविधा अरिभावभङ्गिमापरिज्ञाने भवति)। चले=चञ्चले, लक्ष्ये=शरव्ये, यद् इषवः=शराः, सिध्यन्ति=कृतकार्या (सफलाः) भवन्ति, स च धन्विनां=धानुष्काणाम्, उत्कर्षः=प्राधान्यं (निपुणताव्यञ्जकं) भवति। अत एव मृगयाम्=आखेटकम्, मिथ्या हि=मुधैव (वृथैव), व्यसनम्=दोषोत्पादकम्, वदन्ति=कथयन्ति (स्मृतिकाराः इति शेषः), ईदृक्=ईदृशः, विनोदः=प्रमोदः, कुतः=मृगयातिरिक्तात् कस्माद् व्यापारादुत्पद्यते (अत एव एष वैधेयो माधव्य उन्मत्तवत् मृगयाविषये किमपि किमपि प्रलपति)। अत्र मृगयाया व्यसनत्वस्य मिथ्यात्वं प्रति नानाकरणाभिधानात् समुच्चयालङ्कारः, शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ५ ॥

भावार्थः—आखेटकस्य गुणानुद्घाटयन् भद्रसेनः कथयति यत्—मृगयाव्यापारेण शरीरमुत्साहयोग्यं सर्वकार्यार्थसाधकञ्च भवति। उदरं वसायाः ह्रासेन क्षीणं भवति। वन्यसत्त्वानां चेष्टाविशेषदर्शने सक्षमं विदधाति मृगयाशीलं मृगया, अत एव समराङ्गणे अरिभावभङ्गिमापरिज्ञाने सुविधा जायते। चञ्चले लक्ष्ये प्रक्षिप्ता बाणाः मृगयाशीलं कुशलं लक्ष्यभिद् कुर्वन्ति। अत एव मृगयां वृथैव दोषोत्पादकं कथयन्ति स्मृतिकाराः। कथम्? ईदृशः प्रमोदः मृगयातिरिक्तं कस्मात् व्यापारात् उत्पद्यते?॥ ५ ॥

विदूषकः—(सरोषम्=सकोपम्) रे=भो, उत्साहे हेतुरेव हेतुकस्तत्सम्बोधने=उत्साह-हेतुक=राज्ञः उत्साहकर्ता इति भावः, अपेहि=अपसर, दूरं गच्छ। अत्रभवान्=मान्यो महाराजः,

---

का शिकार करने से निशान सिद्ध हो जाता है जिससे धनुर्धारी की विशेषता परिलक्षित होती है। इन सब विशेषताओं को परिलक्षित करते हुए—मृगया को जो व्यसन बताया गया है वह उचित नहीं है। वस्तुतः इससे बढ़कर आनन्द-प्राप्ति का साधन दूसरा नहीं है॥ ५॥

विदूषक—(क्रोधपूर्वक) ओ उत्साह बढ़ाने वाले! जा भाग, महाराज प्रकृतिस्थ हो चुके हैं। तू दासीपुत्र एक वन से दूसरे वन में घूमता हुआ सियार या हरिण के लोभी किसी बूढ़े रीछ के मुख में जा पड़।

---

affected in fright and anger is noticed. Moreover this is the glory of archers when their arrows are successful on the moving target, falsely indeed do they call the chase a vice. Where one can have such diversion. (5)

Vidūṣaka(Jester)— Get away O'cause of ardour (one who

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—सेनापते! आश्रमसन्निकर्षे स्थितोऽस्मीति वचनं ते नाभिनन्दामि। अद्य तावत्—

गाहन्तां महिषा निपानसलिलं शृङ्गैर्मुहुस्ताडितं,
छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्यतु।
विश्रब्धैः क्रियतां वराहपतिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले,
विश्रामं लभतामिदञ्च शिथिलज्याबन्धमस्मद्धनुः॥ ६॥

प्रकृतिमापन्नः=स्वभावं सम्प्राप्तः, तावत्=त्वम्, दास्याः पुत्रः=नीचः, अटवीतोऽटवीम्=वनाद्वनम्, आहिण्डमानः=परिभ्राम्यन्, यावत् शृगालमृगलोलुपस्य=लुब्धस्य, कस्यापि, जीर्णऋक्षस्य=वृद्धभल्लूकस्य, मुखे=आनने, पतितो भव।

राजा—सेनापते=भद्रसेन! आश्रमस्य=तपोवनस्य, सन्निकर्षे=पार्श्वे, स्थितोऽस्मि=वर्त्ते, इति=अस्मात्, ते=तव, वचनम्=वाक्यम्, नाभिनन्दामि=न प्रशंसामि। (आश्रमसन्निधौ अवस्थानेन तत्रत्यानां प्राणिनां हननस्यैकान्ततोऽन्याय्यत्वाद्)। अद्य=इदानीम्, तावत् (अद्य तावत् इत्यस्य निम्नश्लोकीयक्रियाभिः साकमन्वयः)—

अन्वयः—महिषाः शृङ्गैः मुहुः ताडितं निपानसलिलं गाहन्ताम्, मृगकुलं छायाबद्धकदम्बकं रोमन्थम् अभ्यस्यतु, वराहपतिभिः विश्रब्धैः पल्वले मुस्ताक्षतिः क्रियतां तथा इदमस्मद्धनुश्च शिथिलज्याबन्धं विश्रामं लभताम्॥ ६॥

गाहन्तामिति। महिषाः=लुलायाः, शृङ्गैः=विषाणैः, मुहुः=वारंवारम्, ताडितम्=आहतम्, निपानस्य=जलाशयस्य, सलिलम्=जलम्, गाहन्ताम्=आलोडयन्तु, मृगकुलं=हरिणवृन्दम्, छायासु=अनातपेषु, बद्धं=रचितं, कदम्बकम्=संहितभावः, येन तत् छायाबद्धकदम्बकम्, रोमन्थम्=चर्वितचर्वणम्, अभ्यस्यतु=पौनःपुन्येनानुतिष्ठतु, वराहाणां=वन्यशूकराणां, पतिभिः=नाथैः, वराहपतिभिः, विश्रब्धैः=विश्वस्तैः, पल्वले=क्षुद्रजलाशये, मुस्तानां=तदाख्यतृणविशेषाणाम्, क्षतिः=

राजा—सेनापति! मैं इस समय आश्रम में हूँ अतः तुम्हारे कथन की सराहना नहीं कर सकता।

आज भैंसे अपने सींगों से मथे हुए सरोवर के जल में स्नान करें। मृगसमूह किसी वृक्ष की सघन छाया म्रें बैठकर जुगाली करें। बनैले सूअर विश्वस्त होकर छोटे-छोटे तालाबों के मोथे खाएँ और यह ढीली प्रत्यञ्चा वाला मेरा धनुष भी विश्राम करे॥ ६॥

---

encourages to exertion)! His majesty has returned to his natural state. As for you, you will, wandering from forest to forest, fall into the mouth of some bear, greedy after some deer of jackal.

King—General! As we have encamped nearby this hermitage. Hence I do not approve of your words. Today, then,

Let the buffaloes plung into the water of tanks, struck repeatedly with their horns; let the herd of deer, forming groups in the shade, chew cuds; let the boars dig up the Musta grass at ease in the pool, and let this bow of ours obtain rest, with the grip of the string loose. (6)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेनापतिः—यथा प्रभविष्णवे रोचते।

राजा—तेन हि निवर्त्तय पुरोगतान् धनुर्ग्राहिणः। यथा च मे सैनिकास्तपोवनं नाभिरुन्धन्ति दूरात् परिहरन्ति च, तथा निषेद्धव्याः। पश्य—

शमप्रधानेषु तपोवनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला अपि सूर्यकान्तास्ते ह्यन्यतेजोऽभिभवाद्दहन्ति॥ ७॥

मूलोत्पाटनेन ध्वंसः, क्रियताम्, तथा इदम् अस्मद्धनुश्च, शिथिलः=एककोटेरवमोचनाच्छिथिलीभूतः, ज्यायाः=मौर्व्याः, बन्धः=अन्यकोटिबन्धनं, यस्य तत् शिथिलज्याबन्धम्, विश्रामं=विश्रान्तिम्, लभताम्=निर्व्यापारं तिष्ठतु। अत्र स्वभावोक्तिरतिशयोक्तिश्चालङ्कारौ। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ६॥

भावार्थः—अद्य तावत् महिषाः विषाणैः मुहुस्ताडितं जलाशयसलिलं प्रविशन्तु आलोडयन्तु वा। मृगकुलं छायाबद्धकदम्बकं रोमन्थम् अभ्यस्यतु। विश्रब्धैः वराहपतिभिः पल्वले मुस्तानां मूलोत्पाटनेन ध्वंसः क्रियताम् तथा इदमस्मद्धनुश्च शिथिलज्याबन्धनं भूत्वा विश्रान्तिं लभताम्॥ ६॥

सेनापतिः—यथा=येन प्रकारेण, प्रभवति तच्छीलः प्रभविष्णुस्तस्मै प्रभविष्णवे=प्रभुत्वशीलाय (भवते), रोचते तथैवास्तु।

राजा—तेन हि=यद्येवं तर्हि (विश्रान्तेर्भवतोऽप्यभिलषितत्वेनैव), पुरः=अग्रे, गतान्=प्रस्थितान्, धनुर्ग्राहिणः=धानुष्कान्, निवर्त्तय=प्रत्यावर्त्तय, च=एवं, यथा=येनोपायेन, मे=मम, सैनिकाः, तपोवनं नाभिरुन्धन्ति=नो परिपीडयन्ति, च दूरात्=दूरत एव, परिहरन्ति=परित्यजन्ति, तथा=तेनैव प्रकारेण, निषेद्धव्याः=प्रतिषेधनीयाः। पश्य—

अन्वयः—शमप्रधानेषु तपोवनेषु गूढं हि दाहात्मकं तेजः अस्ति, हि स्पर्शानुकूलाः ते सूर्य्यकान्ताः अन्यतेजोऽभिभवात् दहन्ति॥ ७॥

शमेति। शमः=शान्तिरेव, प्रधानं=मुख्यं, येषु तेषु शमप्रधानेषु, तपोधनेषु=मुनिषु, गूढं हि=प्रच्छन्नमेव, दाहः=भस्मीकरणम्, आत्मा=स्वरूपं, यस्य तत् दाहात्मकम्, तेजः=ब्रह्मवर्चसम्,

---

सेनापति—जैसी प्रतापी प्रभु की इच्छा।

राजा—तो फिर आगे जाने वाले धनुर्धारियों को लौटा लो और जैसे मेरे सैनिक इस तपोवन को न घेरें, दूर ही रहें, उस प्रकार उन्हें मना कर दो। देखो—

इस शान्ति-प्रधान तपोधनों (मुनियों) में एक प्रकार का गुप्त दाहक तेज छिपा रहता है। जैसे सूर्यकान्त मणि सामान्य रूप में स्पर्श योग्य होती है परन्तु सूर्य का स्पर्श पाते ही

General—As it pleases your majesty.

King—Well, then, recall the archers, that have gone ahead. My soldiers should be so warned that they do not disturb the penance grove. See—

In Predominantly peaceful ascetics in whom quietism is predominant, there indeed lies hidden consuming lustre. Like sun-gems, delightful to touch, (they) emit (to give out) that lustre through agression of other lustres. (7)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सेनापतिः—यथाज्ञापयति स्वामी।

विदूषकः—भो उच्छाअहेतुअ! णिक्कम णिक्कम। [भो उत्साहहेतुक! निष्क्रम निष्क्रम।]

(सेनापतिर्निष्क्रान्तः)

राजा—(परिजनानवलोक्य) मृगयावेशमपनयन्तु भवन्तः। रैवतक! त्वमपि स्वनियोगमशून्यं कुरु।

रैवतकः—जं महाराओ आणवेदि। [यत् महाराज आज्ञापयति।]

(इति निष्क्रान्तः।)

अस्ति। हिं=तथाहि, स्पर्शे=स्पर्शनविषये, अनुकूलाः=प्रच्छन्नतेजस्कत्वेन सुखदायिनोऽपि, ते= विख्याताः, सूर्य्यकान्ताः=स्वाभिधानप्रसिद्धाः मणिविशेषाः, अन्येन तेजसा=सूर्यतेजसा, अभि-भवात्=समाक्रमणात् (स्पर्शेन) दहन्ति। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः, उपजातिर्वृत्तम्॥ ७॥

भावार्थः—सूर्यकान्तमणयः प्रच्छन्नतेजस्कतया स्पर्शसहा अपि यथा सूर्यतापस्पर्शेन अन्तर्निगूढं तेज उद्दीर्य दहनक्षमा भवन्ति तद्वत्तपोधनानि शान्तिबहुलान्यपि केषाञ्चिदविनीतानां समाकर्षणेन अचिरादेव तापसमुखेन तेज उद्दीर्य अपकारिणं भस्मसात् कुर्वन्त्येव॥ ७॥

सेनापति—यथाऽऽज्ञापयति स्वामी=यथा प्रभोः निदेशः तथा करोमि।

विदूषकः—भो उत्साहहेतुक—उत्साहे कुत्सितो हेतुरिति उत्साहहेतुकस्तत्सम्बोधने भो उत्साहहेतुक=मृगयाव्यापारे राज्ञ उत्साहोत्पादक! निष्क्रम-निष्क्रम=अपगच्छ, वीप्सायां द्विर्वचनम्।

(सेनापतिर्निष्क्रान्तः=रङ्गाद् बहिर्गतः)

राजा—(परिजनान्=स्वसेवकान् सैनिकादिभृत्यवर्गान् वा, अवलोक्य=दृष्ट्वा) भवन्तः= यूयम्, मृगयोचितवेशो मृगयावेशस्तं मृगयावेशं=मृगयोचितवेशं, अपनयन्तु=परित्यजन्तु। रैवतक!= दौवारिक! त्वमपि, स्वस्य=आत्मनः, नियोगम्=अधिकारम्, स्वनियोगम्, अशून्यं=पूर्णं कुरु (पूर्ववद् द्वारं पालयेत्यर्थः)।

जलाने लगती है (वैसे ही किसी प्रकार की दुष्टता या अवज्ञा का स्पर्श पाते ही इन तपोवनों का ब्रह्मतेज अपराधी को जला डालने के लिए मुखर हो उठता है।)॥ ७॥

सेनापति—स्वामी की जैसी आज्ञा।

विदूषक—ओ उत्साह बढ़ाने के कारण! चल निकल। (सेनापति का प्रस्थान)

राजा—(अपने सेवकों को देखकर) आप लोग भी शिकारी-वेश त्याग दें। रैवतक! तू भी अनी नौकरी पर जा।

रैवतक—जो महाराज की आज्ञा (चला जाता है)।

General—As your majesty commands.

Jester—A way with you, o' cause of ardour.

(The general exits)

King—*(Looking at his attendents)* Let you take off your hunting suits. Raivātaka you too occupy your post.

Raivātaka (Door-keeper)—As your majesty commands. *(Exeunt)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—किदं भअदा संपदं णिम्मक्खिअं, ता इमस्सिं पादवच्छाआविरइद-विदाण-सणाहे सिलाअले उववसिदु भवं; जाव अहंपि सुहासीनो होमि। [कृतं भवता साम्प्रतं निर्म्मक्षिकम्, तदस्मिन् पादपच्छायाविरचितवितानसनाथे शिलातले उपविशतु भवान्; यावदहमपि सुखासीनो भवामि।]

राजा—गच्छाग्रतः।

विदूषकः—एदु एदु भवं। [एतु एतु भवान्।]

(उभौ परिक्रम्योपविष्टौ।)

राजा—सखे माधव्य! अनाप्तचक्षुःफलोऽसि, येन त्वया द्रष्टव्यानां परं न दृष्टम्।

रैवतक—यत् महाराज आज्ञापयति=यथा भवानादिशति। (निष्क्रान्तः)

विदूषकः—साम्प्रतम्=इदानीम्, भवता=त्वया, मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकम्=जन-राहित्यम्, कृतं विहितम्। तत्=तस्मात्, अस्मिन्=दृश्यमाने, पादपानां=वृक्षाणाम्, छायाभिर्वि-रचितं=विहितं, यद्वितानं=वस्त्राच्छादनं (चन्दोवा इति भाषायाम्), तत्सनाथे=तत्सहिते, पाद-पच्छायाविरचितवितानसनाथे=वृक्षच्छायात्मकवस्त्राच्छादनच्छादिते, शिलातले=प्रस्तरतलप्रदेशे, उपविशतु=निषीदतु, भवान्=त्वमिति। यावत् अहमपि, सुखासीनः=सुखोपविष्टः, भवामि।

राजा—अग्रतः=पुरतः, गच्छ=याहि (मार्गं प्रदर्शय इत्याशयः)।

विदूषकः—एतु एतु=मत्पृष्ठत आगच्छतु (मामनुसरतु), भवान्=त्वम्।

(उभौ=राजा विदूषकश्चेति द्वौ, परिक्रम्य=पारिक्रमणं निरूप्य, उपविष्टौ।)

राजा—सखे माधव्य! न आप्तम् अनाप्तम्=अलब्धं, चक्षुषोः=नयनयोः, फलं=लाभं (कमनीयवस्तुदर्शनात्मकं लाभं), येनासौ अनाप्तचक्षुफलः=चक्षुःफलं न लब्धवान् असि, येन=हेतुना, द्रष्टव्यानां=दर्शनयोग्यानां वस्तूनां मध्ये, परं=श्रेष्ठं (वस्तु द्रव्यं वा), न दृष्टम्=नावलोकितम्।

विदूषक— आपने अब इस स्थान को मक्षिकाशून्य (जनशून्य) बना दिया है। अतः आप वृक्षों की छाया से निर्मित चन्दोवे से सनाथ (अलंकृत) इस चट्टान पर बिराजिए। जब तक मैं भी सुखपूर्वक (इस पर) बैठता हूँ।

राजा—आगे-आगे चलो (मार्ग दिखाओ)।

विदूषक—आप भी आइए-आइए। (दोनों घूमकर बैठते हैं।)

राजा—मित्र माधव्य! तुम्हें नेत्रों का फल प्राप्त नहीं हुआ है, क्योंकि तुमने दर्शनीय वस्तुओं में से उत्तम वस्तु नहीं देखी।

Jester—You have shooed away even the flies. Now, your honour may sit (rest) on this rocky seat under the tent or canopy made of shade of trees. So that I too shall comfortably sit.

King—Go ahead.

Jester—May your majesty come. ***(Both go round and sit)***

King—Friend! Madhavya! You have not achieved the fruit of your eyes, since what deserves to be seen has not been seen by you.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—णं भवं ज्जेव मे अग्गदो वट्टदि। [**ननु भवानेव मे अग्रतो वर्त्तते।**]

राजा—सर्वः खलु कान्तमात्मानं पश्यति। अहन्तु तामेवाश्रमललामभूतां शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि।

विदूषकः—(स्वगतम्) भोदु, ण से प्पस्सअं वड्ढइस्सं। (प्रकाशम्) भो! जइ सा तवस्सिकण्णआ अणब्भत्थणीआ, ता किं ताए दिट्टआए। [**भवतु, नास्य प्रश्रयं वर्द्धयिष्यामि। भोः! यदि सा तपस्विकन्या अनभ्यर्थनीयाः, तत् किं तया दृष्टया ?**]

राजा—धिङ्मूर्ख!

> **निवारितनिमेषाभिर्नेत्रपङ्क्तिभिरुन्मुखः।**
> **नवामिन्दुकलां लोकः केन भावेन पश्यति॥ ८॥**

विदूषकः—ननु=इति सम्बोधने, भवानेव=द्रष्टव्यतम् इत्यर्थः, मे=मम, अग्रतः=सम्मुखे, वर्त्तते=तिष्ठति (द्रष्टव्याग्रगण्यस्य भवतो मत्सम्मुखवर्तित्वात् कथं वा मया द्रष्टव्यानां परं न दृष्टम् ?)

राजा—सर्वः खलु=समस्त एव जनः, आत्मानं=स्वं निजप्रेमपात्रं वा, कान्तं=सुन्दरम्, पश्यति=विजानाति। अहन्तु=अहं पुनः, आश्रमस्य=तपोवनस्य, ललामभूतां=भूषणस्वरूपाम्, (ताम्) शकुन्तलां=कण्वदुहिताम्, अधिकृत्य=आश्रित्य, ब्रवीमि=द्रष्टव्यानां परमिति वच्मि।

विदूषकः—(स्वगतम्=स्वमनसि) भवतु=द्रष्टव्यानां परं शकुन्तलेति शेषः। अस्य=दुष्यन्तस्य, प्रश्रयं=प्रणयातिशयम् (शकुन्तलाविषयक-अनुरागम्), न वर्द्धयिष्यामि=न पोषयामि (अनुकूलवचनप्रयोगेनेति भावः)। (प्रकाशम्=सर्वश्राव्यम्) भोः! यदि=चेत्, सा=पूर्वोक्ता, तपस्विकन्या=कण्वमुनेः दुहिता, अनभ्यर्थनीया=न प्रार्थनीया (दर्शनेन तावन्न किञ्चिदपि फलम्), तत्=तदा, किम्, तया=शकुन्तलया, दृष्टया=अवलोकनेन, नास्ति किञ्चिदपि फलम्।

राजा—मूर्ख=भो जडमति!, धिक्।

विदूषक—निश्चय ही (दर्शनीयों में से एक सर्वोत्तम) आप ही मेरे सामने बैठे हैं।

राजा—सब लोग स्वयं को अथवा स्वकीय प्रेमपात्र को ही सुन्दर समझते हैं परन्तु मैं तो इस आश्रम की अलंकारभूता शकुन्तला के सम्बन्ध में ऐसा कह रहा हूँ।

विदूषक—(मन में) मैं इस विषय को आगे नहीं बढ़ने दूँगा। (प्रकट) प्रियवर! यदि वह तापस कन्या माँगी नहीं जा सकती तो फिर उसे देखने से क्या लाभ ?

राजा—ओ मूर्ख! धिक्कार है (तुझे)—

लोग मुँह ऊपर उठाकर निर्निमेष दृष्टि से नवोदित चन्द्रकला को किस भाव से देखते हैं ?॥ ८॥

Jester—Why! Your majesty stands before me.

King—Everybody looks upon his own as beautiful. But I am speaking with reference to that Shakuntala who is just like an ornament of the hermitage.

Jester—*(To himself)* Well, I shall not give him scope in this matter. *(Aloud)* O friend! If the daughter of the hermit is not to be prayed for then what is the use of having a sight on her?

King—What a pity! O' stupid!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न च परिहार्ये वस्तुनि दुष्यन्तस्य मनः प्रवर्त्तते।

विदूषकः—ता कधेहि। [तत् कथय।]

राजा—

ललिताप्सरोभवं किल मुनेरपत्यं तदुज्झिताधिगतम्।
अर्कस्योपरि शिथिलं च्युतमिव नवमालिकाकुसुमम्॥ ९॥

अन्वयः—लोकः उन्मुखः निवारितनिमेषाभिः नेत्रपंक्तिभिः नवां इन्दुकलां केन भावेन पश्यति॥ ८॥

निवारितेति। लोकः=जनः (जनसमुदायः), उद्=ऊर्ध्वं, मुखं यस्य उन्मुखः=ऊर्ध्ववदनः, सन्, निवारितः=निवर्त्तितः, निमेषः=पक्ष्मस्पन्दनं, याभिस्ताभिः निवारितनिमेषाभिः, नेत्रपंक्तिभिः= नयनश्रेणिभिः, नवाम्=नवोदिताम्, इन्दुकलां=चन्द्रकलाम्, केन भावेन=केनाशयेन, पश्यति= अवलोकयति (दृष्ट्वा नन्दति) ? अत्र अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः॥ ८॥

भावार्थः—यथा चन्द्रकला बहुदूरवर्त्तितया अलभ्याऽपि लोको नयनानन्दसम्पादनायैव नवोदितां तां सादरं पश्यति तथैव अलभ्याऽपि सा कण्वदुहिता शकुन्तला नयनानन्दसम्पादनायैव दर्शनार्हा एव॥ ८॥

च=एवं, परिहार्य्ये=कथञ्चिदपि परित्याज्ये, वस्तुनि=विषये, दुष्यन्तस्य=मम, मनो न प्रवर्तते=प्रवृत्तिमद् न भवति।

विदूषकः—तत्=तावत्, कथय=शकुन्तलापरकवृत्तान्तं श्रावय।

राजा—अन्वयः—ललिताप्सरोभवं मुनेः अपत्यं तथा तदुज्झित (पश्चात्) अधिगतं शिथिलम् अर्कस्य उपरि च्युतं नवमालिकाकुसुमम् इव स्थितम्॥ ९॥

ललिता इति। ललितायाः=रमणीयायाः, अप्सरसः=मेनकायाः, भवतीति ललिताप्सरो- भवं=कमनीयमेनकागर्भसम्भूतम्, मुनेः=कण्वस्य, अपत्यम्=औरसजातम्, तथा तया=मेनकया,

---

इसके अतिरिक्त किसी भी परित्याज्य वस्तु पर दुष्यन्त का मन नहीं फिसलता।

विदूषक—तो कहिए।

राजा—यह (शकुन्तला) ऋषि की सन्तान है अवश्य परन्तु इसका जन्म एक कमनीय अप्सरा के गर्भ से हुआ है। उस अप्सरा द्वारा इसका परित्याग किये जाने के पश्चात् ऋषि कण्व ने इसे प्राप्त किया है। जैसे नवमालिका का पुष्प टूटकर अर्क (मन्दार) पर जा गिरे ठीक उसी प्रकार अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न होकर भी यह आश्रम में रह रही है॥ ९॥

People, through what state observing the newly risen digit of the moon, lifting their faces up, with steady eyes? (8)

Moreover, the mind of mine does not incline towards a forbidden object.

Jester—Then tell it to me.

King—That sage's offspring, I hear, is born from a celestial damsel and was found (by him) when deserted (by her); like a Navamālikā flower loosened and fallen on an Arka tree (the sun plnat). (9)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(विहस्य) भो! जधा पिंडीखज्जुरेहिं उब्बेजिदस्स तिंतडीए सद्धा भोदि, तधा अंतेउर-इत्थिआ-रअणपरिभोइणो भअदो इअं पत्थणा। [**भोः! यथा पिण्डीखर्जूरैरुद्वेजितस्य तिन्तिड्यां श्रद्धा भवति, तथा अन्तःपुरस्त्रीरत्नपरिभोगिनो भवत इयं प्रार्थना।**]

राजा—सखे! तावदेनां न जानासि, येन त्वमेवमवादीः।

विदूषकः—तं क्खु रमणीअं णाम जं भअदोवि विह्मअं उप्पादेदि। [**तत् खलु रमणीयं नाम, यत् भवतोऽपि विस्मयमुत्पादयति।**]

उज्झितं=त्यक्तं सत्, पश्चात्-अधिगतं=प्राप्तम् (राजर्षिवीर्यत्वात्=विश्वामित्रवीर्यसम्भवात् पूर्वमुज्झितं पश्चात् कण्वेन प्राप्तम्) (मुनेः=कण्वस्य, अपत्यं=लालिता, कन्या=शकुन्तलाऽपि अत्र योज्यम्), शिथिलं=वृन्ताद् विश्लथम्, अर्कस्य=अर्कवृक्षस्य (क्षुपस्य), उपरि च्युतं=गलितम् (न तु तस्मात् जातम्), नवमालिकायाः=सप्तलतायाः, कुसुममिव=पुष्पमिव स्थितम्। अत्रोपमालङ्कारः, आर्या जातिः ॥ ९ ॥

भावार्थः—यथा नवमालिकासकाशाद् विच्छिन्नं पुष्पं तथा इयं शकुन्तला अपि स्वकीयजनयित्र्या मेनकायाः सकाशात् विच्छिन्ना एवञ्च पुष्पं यथा वृन्तात् प्रच्युतं तथैव इयमपि स्वपितुर्विश्वामित्रात् प्रच्युता, अन्यच्च कुसुममर्कस्योपरि निपतितं तथेयमपि महर्षेः कण्वस्याश्रमे पतिता अत एव सुसङ्गतमेव अस्याः स्थितिः ॥ ९ ॥

विदूषकः—(विहस्य=मध्यमं हासं कृत्वा) भोः=भो राजन्! यथा=येन प्रकारेण, पिण्डीखर्जूरैः=तन्नामकखर्जूरविशेषैः, उद्वेजितस्य=जिह्वावैकल्यं प्रापितस्य, तिन्तिड्याम्= अम्लरसप्रधानचिञ्चायाम्, श्रद्धा=अभिलाषः, भवति=जायते (मधुरभक्षणेन जनितं जिह्वाजाड्यमम्लरसभक्षणेन निवर्त्तते इति न्यायः), तथा=तथैव, अन्तःपुरे यानि स्त्रीरत्नानि=रमणीरत्नानि, तेषां परिभोगिनः= सम्भोगशीलस्य, भवतः=तव, इयं=वन्यशकुन्तलाविषया, प्रार्थना=आकांक्षा। (यथा मधुररसेनोद्विग्नोऽह्द्यमपि तिन्तिडीफलं बहु मन्यते तथैव त्वयाऽपि वन्या शकुन्तला काम्यते) (जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमिति कथयते)।

राजा—सखे=मित्र! तावत्=यतः, एनां=शकुन्तलां, न जानासि=नावगच्छसि, येन हेतुना, त्वम् एवं=पूर्वोक्तप्रकारम्, अवादीः=उक्तवानसि।

विदूषक—(हँसकर) हे मित्र! जैसे पिण्डखजूर की मधुरता से उद्विग्न व्यक्ति को इमली खाने में रुचि होती है, उसी प्रकार अन्तःपुर की रमणियों के साथ विलास कर ऊबे हुए आपकी इसमें रुचि है।

राजा—मित्र! क्योंकि तुम उसे नहीं जानते, इसीलिए ऐसा कह रहे हो।

विदूषक—निश्चय ही वह अतीव सुन्दर होगी, क्योंकि उसने तुम्हें भी विस्मय में डाल दिया है।

Jester—(Laughing) Just as some one, surfeited with quantities of dates, may cherish a desire for tarmarind, so is this longing of your majesty who enjoys games of herm-women.

King—As you have not seen her, hence you said so.

Jester—Indeed, she must be charming which excites even your majesty.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—वयस्य! किं बहुना—

चित्ते निवेश्य परिकल्पितसर्वयोगान्
रूपोच्चयेन विधिना विहिता कृशाङ्गी।
स्त्रीरत्नसृष्टिरपरा प्रतिभाति सा मे
धातुर्विभुत्वमनुचिन्त्य वपुश्च तस्याः॥ १०॥

विदूषकः—तत्=शकुन्तलात्मकं द्रव्यं, खलु=निश्चितम्, रमणीयं नाम=अवश्यमेव सुन्दरमिति सम्भावयामि। यद्=वस्तु, भवतोऽपि=तवापि, विस्मयं=कौतुकम्, उत्पादयति=जनयति (अशेषरमणीयवस्तुदर्शनेऽपि अविस्मितस्य भवतः विस्मयम् उत्पादयति)।

राजा—वयस्य=सखे! किं बहुना=विशेषकथनेन किं प्रयोजनम्।

अन्वयः—धातुः विभुत्वं तस्याः वपुश्च अनुचिन्त्य मे विधिना परिकल्पितसर्वयोगान् चित्ते निवेश्य रूपोच्चयेन विहिता सा कृशाङ्गी अपरा स्त्रीरत्नसृष्टिः (इति) प्रतिभाति॥ १०॥

चित्त इति। धातुः=ब्रह्मणः, विभुत्वम्=निर्माणकौशलम्, तस्याः=शकुन्तलायाः, वपुः= शरीरञ्च (अलौकिकसौन्दर्याधानं शरीरञ्च), अनुचिन्त्य=चिन्तयित्वा, मे=मम, विधिना= सृष्टिकर्त्रा, परिकल्पिताः=रचिताः (तदैवाभिनवसृष्टाः) सर्वे योगाः=उपादानकारणानि, तान् परिकल्पित-सर्वयोगान्, चित्ते=स्वान्ते, निवेश्य=निधाय, रूपोच्चयेन=सौन्दर्यराशिना, विहिता=रचिता, सा कृशाङ्गी=तन्वङ्गी सा शकुन्तला, अपरा=अन्या विलक्षणा, स्त्रीरत्नमिव स्त्रीरत्नं, तस्य सृष्टिः स्त्रीरत्न-सृष्टिः=रत्नोपमा स्त्री, (इति) प्रतिभाति=प्रतिभासते। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १०॥

भावार्थः—विधातुः निर्माणकौशलं शकुन्तलाया अलौकिकसौन्दर्यसम्पन्नं शरीरञ्च विमृश्य निश्चिनोमि यत् ब्रह्मणा परिकल्पितसर्वयोगान् स्वान्ते निधाय सौन्दर्यराशिना विलक्षणा सा कृशाङ्गी शकुन्तला रचिता इति॥ १०॥

विशेषः—क्वचित् पुस्तके—'चित्रे निवेश्य परिकल्पितसर्वयोगात्, रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृता नु'। इत्यपि पाठान्तरं लभ्यते। इदमत्र व्याख्यानम्—विधिना=ब्रह्मणा, चित्रे=आलेख्ये, निवेश्य=चित्रयित्वा, परिकल्पितसर्वयोगात्=कृतप्राणप्रयोगात्, रूपाणां=चन्द्रचकोरकमलादि-लक्षणानाम्, उच्चयेन=समुदायेन मनसा करणेन, कृता नु। पक्षेऽस्मिन् सन्देहालङ्कारः।

राजा—मित्र! अधिक कहने से क्या लाभ?

विधाता की सृष्टि कर[illegible]मर्थ्य तथा शकुन्तला के कमनीय कलेवर को देखने से विदित होता है कि विधाता [illegible] सृ[illegible] उ[illegible]दानकारणभूत सारी सामग्रियों को मन में रखकर केवल रूपराशि द्वारा ही इस [illegible]र्माण किया है। इसी से उन्होंने एक विलक्षण स्त्रीरत्न शकुन्तला के रूप में प्रस्तु[illegible] है॥ १०॥

King—Friend! Why [illegible] much?

May she have been en[illegible]ed with life by the creator after delineating her in a picture, or may she have been mentally created with an assemblage of the b[illegible]iful articles. Considering the creator's power and her charming, unique form, she appears to me to be a totally different creation of an excellent woman. (10)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—सव्वधा पच्चादेसो क्खु सा रूववदीणं। [सर्वथा प्रत्यादेशः खलु सा रूपवतीनाम्।]

राजा—इदञ्च मे मनसि वर्त्तते—

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनामुक्तं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति भुवि॥ ११॥

विदूषकः—सा=शकुन्तला, सर्वथा=सर्वप्रकारेण रूपेण वा, (नूनं) रूपवतीनाम्= सुन्दरीणाम्, प्रत्यादेशः खलु=निराकरणकारिण्येव।

व्याख्या—इदं=वक्ष्यमाणप्रकारञ्च, मे=मम, मनसि=चित्ते, वर्तते (एतदप्यहं चिन्तयामि)।

अन्वयः—अनाघ्रातं पुष्पं (इव), कररुहैः अलूनं विसलयम् (इव), अनामुक्तं रत्नम् (इव), अनास्वादितरसं नवं मधु (इव), पुण्यानाम् अखण्डं फलमिव अनघं तद्रूपं च इह भुवि कं यं भोक्तारं समुपस्थास्यति इति न जाने॥ ११॥

अनाघ्रातमिति। न आघ्रातमनाघ्रातं=अकृतगन्धोपलम्भम्, पुष्पं=कुसुमं (इव), कररुहैः= नखैः, अलूनम्=अच्छिन्नम्, किसलयं=पल्लवं (इव), अनामुक्तम्=अङ्गेषु अपरिहितं, रत्नं=मणिरिव (अनाविद्धमिति पाठान्तरम्), अनास्वादितः=अननुभूतः, रसः=स्वादः, यस्य तत् अनास्वादित-रसम्, नवं=नवीनम्, मधु=क्षौद्रमिव, पुण्यानां=सुकृतानाम्, अखण्डं=परिपूर्णं, फलमिव=परिपाक इव, अनघं=निष्पापं निष्कलङ्कं वा (मनोज्ञम् इत्यर्थः), तस्याः=शकुन्तलायाः, रूपम्=सौन्दर्यम् व, इह भुवि=अस्मिन् जगति, कं=सुकृतिनं, (यं) भोक्तारम्=स्व-उपभोगकर्त्तारम्, समुपस्थास्यति= सेविष्यते, इति न जाने=न वेद्मि तमिति शेषः। अत्र परिकरालङ्कारः, शिखरिणी नाम वृत्तम्। (केचित् इवशब्दस्य सर्वत्र योजनात् मालोपमालङ्कार इति मन्यन्ते।)

भावार्थः—अनाघ्रातं पुष्पमिव, नखैः अच्छिन्नं प्रसूनमिव, अङ्गेषु अपरिहितं रत्नमिव, अनास्वादितरसं सद्यः समानीतं क्षौद्रमिव, पुण्यानामखण्डं फलमिव मनोज्ञमस्याः सौन्दर्यम् अस्मिन् जगति कं सुकृतिनं भोक्तारं सेविष्यते इति न जाने॥ ११॥

विदूषक—(तब तो) उसने संसार की सब सुन्दरियों को पछाड़ दिया है।

राजा—और यह विचार भी मेरे मन में है—

बिना सूंघे हुए फूल की भाँति, नख से बिना तोड़े पत्ते की भाँति, बिना धारण किये रत्न की भाँति, बिना चखे नवमधु की भाँति, पुण्य के अखण्ड फल की भाँति शकुन्तला का कमनीय सौन्दर्य इस भूतल के किस पुण्यात्मा भोगी को प्राप्त होगा, यह मैं नहीं जानता॥ ११॥

Jester—If so, (then all) beauties are now repudiated by her.

King—This is also in my mind—

Like a flower not yet smelt, like a delicate sprout not plucked by nails, like a jem which is not kept on the body or its limbs, fresh honey whose falvour is untasted, as if the fruit of merits not divided, I do not know, who is that fortunate one, on this earth, who will enjoy with her beauty?

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—तेण हि लहुं लहुं गच्छदु भवं; मा जाव सा कस्स वि तवस्सिणो इंगुदीतेल्लचिक्कणसीसस्स हत्थे णिवडिस्सदि। [तेन हि लघु लघु गच्छतु भवान्, मा यावत् सा कस्यापि तपस्विन इङ्गुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य हस्ते निपतिष्यति।]

राजा—परवती खलु तत्रभवती, न च सन्निहितगुरुजना।

विदूषकः—अध तुह उवरि कीदिसो से चित्तराओ ? [अथ तव उपरि कीदृशः अस्याः चित्तरागः ?]

राजा—वयस्य ! स्वभावादेवाप्रगल्भास्तपस्विकन्यकाः। तथापि तु—

अभिमुखे मयि संवृतमीक्षितं हसितमन्यनिमित्तकथोदयम्।
विनयवारितवृत्तिरतस्तया न विवृतो मदनो न च संवृतः॥ १२॥

विदूषकः—तेन=अनिश्चितोपभोकृत्वेन कारणेन, लघु लघु=शीघ्रं शीघ्रं, गच्छतु, भवान्=त्वम्। सा=शकुन्तला, यावत्, इङ्गुदीनां तैलेन चिक्कणं=स्निग्धं, शीर्षं=मस्तकं, यस्य तस्य इङ्गुदीतैलचिक्कणशीर्षस्य, कस्यापि=कस्यचिद्, तपस्विनः=वीतरागस्य, हस्ते=करे, निपतिष्यति। (कस्यचिद् विलासविमुखस्य तापसस्य हस्ते पतनात् पूर्वमेव तां स्वीकुरुतामिति भावः)।

राजा—तत्रभवती=मान्या शकुन्तला, परवती खलु=परतन्त्रैव (सुतरामात्मानं मह्यं समर्पयितुं न शक्नुयादिति भावः), न=नहि, च, सन्निहितः=उपस्थितः, गुरुजनः=पित्रादिजनः, यस्याः सा सन्निहितगुरुजना (इदानीं गुरवोऽपि अत्र पार्श्वे नास्ति अतः शीघ्रं तत्परिग्रहो न सुकरः)।

विदूषकः—अथ=इति प्रश्ने, तव उपरि, अस्याः=शकुन्तलायाः, चित्तरागः=चेतसोऽनुरागः, कीदृशः=अस्ति न वा ?

राजा—वयस्य=मित्र ! स्वभावादेव=प्रकृत्यैव, अप्रगल्भाः=अचपलाः (अतीव मुग्धाः), तपस्विकन्यकाः। तथापि=अप्रगल्भत्वेऽपि, तु=पुनः (तया हृदयगतो भावः किञ्चित् सूचितः, किञ्चिच्च संवृत इत्यग्रिमश्लोकेन सम्बध्यते)।

विदूषक—तो अब आप शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँच जाइए, कहीं वह इङ्गुदी तेल से चिकने मस्तक वाले किसी तपस्वी के हाथ न पड जाय।

राजा—वह (मान्या शकुन्तला) पराधीन है और उनके गुरुजन भी यहाँ उपस्थित नहीं हैं।

विदूषक—आप पर उसका अनुराग कैसा है ?

राजा—मित्र ! तापसकन्याएँ स्वभाव से ही भोली-भाली होती हैं, फिर भी—

Jester—Then indeed let your majesty quickly rescue her, that she might not fall into the hands of some hermit, whose head is greasy with the oil of Iṅgudi.

King—Her ladyship is certainly not independent; more over her elders are not present here.

Jester—Well, what was the feeling (betrayed) by her heart towards your majesty.

King—A hermit's daughter is even by nature coy (shy). But yet—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(विहस्य) किं दिट्ठिमेत्तेण ज्जेव भअदो अंकं आरोहदु! [किं दृष्टि-मात्रेणैव भवतः अङ्कम् आरोहतु।]

राजा—सखीभ्यां मिथः प्रस्थाने पुनः सलीलया तत्रभवत्या मयि भूयिष्ठमाविष्कृतो भावः। तथाहि—

अन्वयः—मयि अभिमुखे तथा ईक्षितं संवृतं तथा अन्यनिमित्तकथोदयं हसितम् अतः तया विनयवारितवृत्तिः मदनः न विवृतः न च संवृतः ॥ १२ ॥

अभीति। मयि अभिमुखे=मम सम्मुखवर्त्तिनि सति, (तया) ईक्षितं=मदवलोकनम्, संवृतं=सङ्कोचितम्, तथा अन्यदेव निमित्तं=निदानं, वा अन्यनिमित्ता सा चासौ कथा चेति सा तस्या उदयः=उत्पत्तिः, यस्य तादृशम्, हसितं=हास्यं कृतम्, अथवा अन्येन निमित्तेन=हेतुना, कथायाः= वाग्व्यवहारस्य, उदयः=उत्पत्तिः, यत्र तद्यथा स्यात्तथा=कथान्तरव्याजेन, हसितं=हसनं कृतम्। अतः=अस्मात्कारणात्, तया=शकुन्तलया, विनयेन=शिष्टाचारेण, वारिता=संस्तम्भिता, वृत्तिः= प्रसरः, यस्य सः विनयवारितवृत्तिः, मदनः=कामः, न विवृतः=न व्यक्तीकृतः (ईक्षणसंवरणादिति भावः), न च संवृतः=न च गृहीतः (तथाविधहसितादिति भावः)। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः। द्रुतविलम्बितं नाम वृत्तम्॥ १२ ॥

भावार्थः—तया मुग्धात्वेन ईक्षणसंवरणाद् गोपितोऽपि कामभावः कथान्तरव्याजेन हसितेन स्फुटीकृतः। अत एव निश्चिनोमि यत् तया शिष्टाचारेण संस्तम्भितप्रसरः काम ईक्षण-संवरणान्न व्यक्तीकृतः न च संवृतः ॥ १२ ॥

विदूषकः—(विहस्य=हासं कृत्वा) किं दृष्टिमात्रेणैव, भवतः=तव, अङ्कम्=क्रोडम्, आरोहतु=अध्यारोहेत् (शनैः शनैः सर्वं भविष्यति नास्ति चापल्येन किमपि प्रयोजनमिति भावः)।

राजा—सखीभ्याम्=अनसूयाप्रियंवदाभ्यां सह, मिथः=रहसि, प्रस्थाने=पर्णशालां प्रति

जब मैं सामने रहता हूँ तो वह मेरी ओर से आँख फेर लेती है तथा किसी अन्य बात को लक्ष्य बनाकर हँसती है और इसी से वह अपनी कामप्रवृत्ति को विनय द्वारा रोकती है। इन सब चेष्टाओं से विदित होता है कि वह कामभाव को न तो प्रगट करती है और न छिपाती ही है॥ १२ ॥

विदूषक—(हँसकर) तो क्या आप चाहते थे कि देखने मात्र से ही वह आपकी गोद में आ बैठे ?

राजा—जब वह अपनी सखियों के साथ एकान्त में जाने लगी थी तब उन्होंने विलासपूर्वक मेरे प्रति अपने भाव को भलीभाँति प्रगट किया था। जैसे कि—

When I faced her, her glance was withdrawn, she laughed, (but the laugh) arose from some other cause. Hence her love, whose course was checked by modesty, was neither fully revealed, nor fully concealed. (12)

Jester—Certainly she won't mount your lap as soon as you are seen?

King—Again at mutual departure, her ladyship sufficiently displayed her feeling, though with bashfulness. For—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे
तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा।
आसीद्विवृत्तवदना च विमोचयन्ती
शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्॥ १३॥

विदूषकः—गहीदपाधेओ किदोसि तए। अदो अणुरक्कं तपोवणं त्ति तक्केमि।
[गृहीतपाथेयः कृतोऽसि तया। अतः अनुरक्तं तपोवनमिति तर्कयामि।]

गमनकाले, पुनरिति विशेषे, सलीलया=सविलासया (लीलाञ्चितलोललोचनया), तत्रभवत्या=सम्मानार्हया शकुन्तलया, मयि=मद्विषये, भावः=चित्तानुरागः, भूयिष्ठम्=अत्यधिकम्, आविष्कृतः=प्रकटितः। कीदृशः सः भाव इत्याह—तथाहीति।

अन्वयः—तन्वी कतिचित् पदानि गत्वा अकाण्डे दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षतः इति स्थिता तथा द्रुमाणां शाखासु असक्तमपि वल्कलं विमोचयन्ती विवृत्तवदना चासीत्॥ १३॥

दर्भाङ्कुरेणेति। तन्वी=कृशाङ्गी सा शकुन्तलां, कतिचित्=द्वित्राणि, पदानि=पदप्राप्य-स्थानानि, गत्वा=चलित्वा, अकाण्डे=अनवसरे (वस्तुतो दर्भाङ्कुरावेधेऽपि), दर्भाङ्कुरेण=कुशाङ्कुरेण, चरणः=पादः, क्षतः=विद्धः, इति=एवमुक्त्वैव, स्थिता=मामवलोकयितुमवस्थिता (दर्भाङ्कुरोद्धरण-व्याजेन गतिं निवर्तितवती), तथा, द्रुमाणां=वृक्षाणाम्, शाखासु=विटपेषु, असक्तमपि=अलग्नमपि, वल्कलं=परिहिततरुत्वचम्, विमोचयन्ती=मोचनव्यापारं नाटयन्ति, विवृत्तं=मदवलोकनार्थं प्रत्यावृतं, वदनं=मुखं, यस्याः सा विवृत्तवदना, चासीत्=मामवलोकयितुं स्थितासीत्। अत्र प्राच्याः हेतुरलङ्कार इति नव्याः च स्वभावोक्तिरलङ्कार इति मन्यन्ते। वसन्ततिलकं वृत्तम्। व्याजोक्तिरलङ्कार इति कश्चित्॥ १३॥

भावार्थः—तन्वङ्गी सा शकुन्तला पर्णशालां प्रतिगमनकाले वस्तुतो दर्भाङ्कुरावेधेऽपि दर्भाङ्कुरेण मदीयः पादः विदीर्णः इत्युक्त्वैव दर्भाङ्कुरोद्धरणव्याजेन मामवलोकयितुं स्वगतिं निवर्तितवती। तथा तरुणां शाखासु अलग्रमपि परिहितवल्कलं विमोचयन्ती विवृत्तवदना चासीत्। अत एव तर्कयामि यत् साऽपि मयि बद्धानुरागाऽस्ति॥ १३॥

विदूषकः—तया=शकुन्तलया, गृहीतं=लब्धं, पाथेयं=मार्गे व्ययसाधनं धनं भोज्यं वा येन

कुछ ही पग चलकर वह तन्वी यह कहकर रुक गई थी कि उसके पाँव में कुश का अङ्कुर गड़ गया है। इसके पश्चात् वृक्ष की शाखा में न उलझने पर भी अपने वल्कल को छुड़ाने के बहाने से मेरी ओर मुँह किये वह खड़ी रही थी॥ १३॥

विदूषक—तब तो उन्होंने मुख मोड़ने आदि के रूप में तुम्हें पाथेय (यात्रा का व्यय) भी दे डाला है। इससे तो प्रतीत होता है कि सारा तपोवन ही तुम पर अनुरक्त हो गया है।

Having gone only a few steps, that slim Śakuntalā stopped without any proper reason, saying her foot was pricked with a Darbha-shoot; and remained with her face turned towards me, (seemingly) extricating her bark-garment, though it was not actually entangled in the branches of trees. (13)

Jester—Then indeed be provided with provender by her.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—सखे! तपस्विभिः कैश्चित् परिज्ञातोऽस्मि। चिन्तय तावत् केनापदेशेन पुनराश्रमपदं गच्छामः?

विदूषकः—को अबरो अवदेसो, णं भवं राआ। [कः अपरः अपदेशः, ननु भवान् राजा।]

राजा—ततः किम्?

विदूषकः—णीवारच्छट्ठभाअं तावसा मे उवहरंतु त्ति। [नीवारषष्ठभागं तापसा मे उपहरन्तु इति।]

राजा—मूर्ख! अन्यमेव भागधेयमेते तपस्विनो मे निर्वपन्ति, यो रत्नराशीनपि विहायाभिनन्द्यते। पश्य—

गृहीतपाथेयः, कृतोऽसि=विहितोऽसि वदनविवृत्त्यादिना, अतः=शकुन्तलाया अनुरक्तत्वादेव, तपोवनम्=इदं धर्मारण्यम्, अनुरक्तम्=अनुरागवत् त्वयि जातम्, इति तर्कयामि=सम्भावयामि।

राजा—सखे!=भो मित्र! कैश्चित्, तपस्विभिः=तापसैः, परिज्ञातोऽस्मि=अहं तपोवनमागत इति परिचितोऽस्मि। चिन्तय=विचारय, तावत्, केन अपदेशेन=व्याजेन, पुनः=भूयः, आश्रमपदं=धर्मारण्यं, गच्छामः=प्रविशामः। (यदि मृगयाकाले कैश्चित् तपस्विभिः परिज्ञातोऽस्मि तदा रहसि प्रच्छन्नभावेन आश्रमप्रवेशे तत्र अकस्माच्च तपस्विभिर्दृष्टस्यापि मे अन्यव्यपदेशेन दोषमार्जनं भविष्यति, किन्तु तपस्विभिः परिज्ञातदशायाम् आश्रमप्रवेशे न दोषमार्जनं सम्भवम्।)

विदूषकः—कः अपरः=अन्यः, अपदेशः=व्याजः, ननु=यतः, भवान्=त्वम्, राजा असि इति शेषः।

राजा—ततः=राजत्वादेव, किं=को वापदेशो वर्तितुमर्हति?

विदूषकः—नीवाराणां=तदाख्यधान्यानां, षष्ठं भागं=षष्ठमंशम् (राजकीयकरस्वरूपं), तापसाः=तपस्विनः, मे=मह्यम्, उपहरन्तु=ददतु (इति व्यपदेशमाश्रित्य प्रविशतु भवान् इति भावः)।

राजा—मित्र! कुछ तपस्वियों ने मुझे पहचान लिया है अतः अब यह विचारो कि फिर किस प्रकार आश्रम में जायें?

विदूषक—दूसरे बहाने का क्या मतलब? आप राजा हैं (जहाँ चाहें जा सकते हैं)।

राजा—तो इससे (राजा होने से) क्या?

विदूषक—कहिए कि सब तपस्वी नीवार घास का छठा भाग मुझे कर रूप में दें।

And it seems as the whole penance grove has become your favourite.

King—Friend! I have been recognised by some ascetics. Just think with what pretext we can again enter into the region of the hermitage.

Jester—what other pretext? you are the king.

King—What then?

Jester—*(You can enter)* Saying let the ascetics bring our sixth part (as tax) of the wild grains.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदुत्तिष्ठति वर्णेभ्यो नृपाणां क्षयि तद्धनम्।
तपःषड्भागमक्षय्यं ददत्यारण्यका हि नः ॥ १४॥

(नेपथ्ये) हन्त! सिद्धार्थौ स्वः।

राजा—(कर्णं दत्त्वा) अये! प्रशान्तस्वरैस्तपस्विभिर्भवितव्यम्।

राजा—मूर्ख! अन्यमेव=षष्ठभागातिरिक्तमेव, भागधेयं=करम्, एते तपस्विनः=तापसाः, मे=मह्यम्, निर्वपन्ति=समर्पयन्ति। यः=भागधेयः, रत्नराशीन्=मणिसमूहानपि, विहाय=अविगणय्य, अभिनन्द्यते=अस्माभिः प्रशस्यते। पश्य—

अन्वयः—नृपाणां वर्णेभ्यः यत् उत्तिष्ठति तद्धनं क्षयि किन्तु आरण्यकाः नः अक्षय्यं तपः षड्भागं ददति हि ॥ १४॥

यदिति। नृपाणां=राज्ञाम्, वर्णेभ्यः=ब्राह्मणादिभ्यः, यत्=धनम्, उत्तिष्ठति=कररूपेण कोषागारे आगच्छति, तद्धनं=शस्यादिकरभूतम्, क्षयि=विनाशि किन्तु, आरण्यकाः= अरण्यवासिनस्तपस्विनः, नः=अस्मभ्यम्, अक्षय्यम्=अविनश्वरम्, तपसः=स्व-स्वसञ्चिततपस्याया धर्मानुष्ठानस्य वा, षड्भागं=षष्ठांशम्, ददति हि=अप्रत्यक्षरूपेणार्पयन्त्येव। अत्र तपःषड्भागस्य प्रकृष्टतया वर्णनाद् व्यतिरेकालङ्कारः ॥ १४॥

भावार्थः—इतरवर्णेभ्यः कररूपप्रदत्तं विनाशि धनादधिकम् एते तपस्विनः तपस्यारूपं अविनश्वरं स्वार्जितधनस्य षष्ठांशम् अस्मभ्यम् अप्रत्यक्षरूपेणार्पयन्त्येव। अत एव तापसेभ्यः करग्रहणच्छलेन पुनराश्रमप्रवेशो नितरामसम्भाव्य एव ॥ १४॥

(नेपथ्ये=यवनिकापृष्ठभागे—) हन्ति=इति हर्षे, सिद्धार्थौ=कृतकृत्यौ, स्वः=भवावः (आवां भवावः) (सिद्धार्थत्वं च राजर्षेर्झटिति दर्शनादिति ज्ञेयम्)।

राजा—(कर्णं दत्त्वा=नेपथ्योत्त्थवचनमाकर्ण्य) अये=इति सम्भ्रमे, प्रशान्ताः=अनुद्धताः,

---

राजा—मूर्ख! ये तपस्वी मुझे कुछ दूसरा ही 'कर' देते हैं जो रत्नराशि से भी बढ़कर है। साधारणतया विभिन्न वर्णों से जो कर प्राप्त होता है वह विनाशशील होता है, किन्तु ये तपस्वी अपने तप का वह छठा भाग कर रूप में अप्रत्यक्षतः हमें देते हैं जिसका कभी नाश नहीं होता ॥ १४॥

(नेपथ्य में) हन्त! हम दोनों की कामना पूर्ण हुई।

राजा—(कान देकर) ओह! इस प्रकार का शान्त स्वर तो तपस्वियों का ही हो सकता है।

King—Fool! another share accrues from the protection of these (anchorites) which deserves to be greeted leaving aside even heaps of jewels. The wealth (in the shape of tax) which arises to kings from the castes is perishable. The asceties, dwelling in the penance grove indeed give us the sixth part of their penance, which is eternal (incapable of destruction.) (14)

(Behind the scenes)—Ah! we have gained our object.

King—(Listening) Oh! such a calm voice, this must be of ascetics.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दौवारिकः—(प्रविश्य) जअदु जअदु भट्टा। एदे दुवे इसिकुमारआ पडिहारभूमिं उवत्थिदा। [जयतु जयतु भर्त्ता। एतौ द्वौ ऋषिकुमारौ प्रतिहारभूमिम् उपस्थितौ।]

राजा—अविलम्बं प्रवेशय तौ।

दौवारिकः—जं भट्टा आणवेदि। (इति निष्क्रम्य, ऋषिकुमाराभ्यां सह पुनः प्रविश्य) इदो इदो भअंता। [यत् भर्त्ता आज्ञापयति। इत इतो भवन्तौ।]

(उभौ राजानं विलोकयतः।)

एकः—अहो! दीप्तिमतोऽपि विश्वसनीयताऽस्य वपुषः। अथवा उपपन्नमेतदस्मिन् ऋषिकल्पे राजनि। कुतः—

स्वराः येषां तैः प्रशान्तस्वरैः=शिष्टकोमलस्वरैः (मधुरस्वरयुतैः), अत एव तपस्विभिः=तापसैः, भवितव्यम् (कोमलस्वरयुतेयं वाणी तपस्विनामेव भवितुं शक्यते इति तर्कयामि)।

दौवारिकः—द्वारपालः, (प्रविश्य=रङ्गे आगत्य) जयतु जयतु, भर्त्ता=स्वामी, एतौ दृश्यमानौ, द्वौ ऋषिकुमारौ=ऋषिबालकौ, प्रतिहारभूमिम्=द्वारप्रदेशम्, उपस्थितौ=सम्प्राप्तौ।

राजा—तौ=मुनिकुमारौ, अविलम्बं=शीघ्रं, प्रवेशय=आनय।

दौवारिकः—यत्=यथा, भर्त्ता=प्रभुः, आज्ञापयति=निर्दिशति। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रम्य=बहिर्गत्वा, ऋषिकुमाराभ्यां=मुनिबालकाभ्यां सह, पुनः=भूयः, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) इत इतो भवन्तौ=पूज्यौ अनेन मार्गेण आगच्छताम्।

(उभौ=मुनिकुमारौ, राजानं=दुष्यन्तं, विलोकयतः=अवलोकनेन तस्य भावं विभावयतः।)

दौवारिक—(प्रवेशकर) स्वामी की जय हो, जय हो। द्वार पर दो तपस्वी कुमार उपस्थित हैं।

राजा—उन्हें शीघ्र भीतर ले आओ।

दौवारिक—महाराज की जो आज्ञा (जाकर और दो तपस्वी बालकों के साथ पुनः आकर) आप दोनों इधर आइए इधर।

(दोनों राजा को देखते हैं।)

एक—ओह! तेजस्वी होते हुए भी इसके शरीर में विश्वास की योग्यता विद्यमान है अथवा ऋषितुल्य इस राजा में यह विशेषता आना उचित ही है। क्योंकि—

***Door keeper**—(Entering)* May your majesty be victorious, be victoricaus. Here are two hermit youths arrived at the ground of the gate.

King—Let them enter without delay.

Door keeper—As you command your majesty *(Going out and again entering with the hermit youths)* This way, this way your honours.

(Both look at the king)

One (First)—Oh the confidence-inspiring nature of his body though resplendent! or this is befitting a king who is just like a sage because—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाऽप्याश्रमे सर्वभोग्ये
रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं सञ्चिनोति।
अस्यापि द्यां स्पृशति वशिनश्चारणद्वन्द्वगीतः
पुण्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः॥ १५॥

एकः—अहो=इत्याश्चर्ये, 'अस्य=राज्ञो दुष्यन्तस्य, दीप्तिमतोऽपि=महातेजःशालिनोऽपि, वपुषः=देहस्य, विश्वसनीयता=सद्व्यवहारकारित्वेन प्रसन्नत्वं, (प्रायेण दीप्तिमतः प्रचण्डप्रकृतिकतया उद्वेजकत्वमेव दृश्यते, परमस्य तु राज्ञो दीप्तिमत्त्वेऽपि तद्वैलक्षण्येन प्रसन्नता एव दृश्यते इत्याश्चर्यम्) अथवा, एतत्= दीप्तिमतोऽपि विश्वसनीयत्वम्, उपपन्नम्=युक्तम्, अस्मिन्=दृश्यमाने, ऋषिकल्पे=मुनिसदृशे, राजनि= दुष्यन्ते। कुतः—

अन्वयः—अमुना सर्वभोग्ये आश्रमे वसतिः अध्याक्रान्ता, तथा अयमपि रक्षायोगात् प्रत्यहं तपः सञ्चिनोति तथा वशिनः अस्य केवलं राजपूर्वः पुण्यः मुनिरिति शब्दः मुहुः चारणद्वन्द्वगीतः द्यां स्पृशति॥ १५॥

अध्याक्रान्ता इति। अमुना=राज्ञा दुष्यन्तेनापि, न केवलं मुनिना (एवं सर्वत्रेति बोध्यम्), सर्वभोग्ये=सकलभोगास्पदे (वनितासम्भोगादिभोगास्पदे), धार्मिकजनाश्रयणीये, आश्रमे= गार्हस्थ्याश्रमे, तपोवनस्थित आश्रमे वा, वसतिः=स्थितिः, अध्याक्रान्ता=अधिकृता (यथा मुनय आश्रमे निवसन्ति तथैवायमपि आश्रमे निवसति अत आश्रमवासित्वसाम्येनायं मुनिरेवेति भावः)। राजपक्षे-सर्वभोग्ये=सर्वाश्रमभोग्ये, आश्रमे=गृहस्थाश्रमे, तथा अयमपि=राजा दुष्यन्तोऽपि, रक्षैव योगः=उपायः, अथवा रक्षाया योगः=उद्योगः, रक्षायोगस्तस्मात् रक्षायोगात्=प्रजापरिपालनात्, पक्षे— रक्षार्थं=शरीररक्षार्थं, योगः=ध्यान-धारणादि-अष्टाङ्गरूपः, तस्मात् रक्षायोगात्, प्रत्यहं=प्रतिदिनं, तपः=कृच्छ्रचान्द्रायणादिरूपं तपः, पक्षे-लोकोत्तरं धर्मञ्च, सञ्चिनोति=अर्जयति (एवं तपः-सञ्चयनादिनाऽयं मुनिरेवेति भावः)। तथा वशिनः=जितेन्द्रियस्य, अस्य=राज्ञो दुष्यन्तस्यापि (अस्य वशित्वं प्रजारक्षणरञ्जनादिरूपधर्मसञ्चयादिना बोध्यम्), केवलं=विशेषेण (प्रकृतऋषिभ्य इत्यर्थः),

---

ये भी सर्वभोग्य (सब कुछ भोगने योग्य अथवा सबके भोगने योग्य) आश्रम में रहते हैं। प्रजा-पालनादि रूप तप द्वारा पुण्य का संचय करते हैं। इन्द्रियजित् होने के कारण 'मुनि' यह पावन नाम धारण करते हैं। बस मुनियों से बढ़कर विशेषता यह है कि ये ऋषि से पूर्व राजा शब्द विशेषकर धारण करते हैं और वही राजर्षि शब्दचारण युगल द्वारा गाया जाकर स्वर्ग का स्पर्श करता है अर्थात् यह राजर्षि शब्द अन्तरिक्ष में भी उक्त वैशिष्ट्य के कारण गूंजता है॥ १५॥

By him too residence has been taken in a stage of life where every thing is to be enjoyed (also punningly, in a hermitage which is open to all); he too every day collects merit by his application to the protection of his subjects (also punningly, by the practice of yoga for protecing the world); of him too, who exercises control (over his kingdom) (also punningly who has control over organ of senses the sacred title of 'hermit', only preceded by 'Royal' repeatedly reaches heaven, being chanted by couples of minstrels. (15)

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीयः—सखे! अयं स बलभित्सखो दुष्यन्तः ?

प्रथमः—अथ किम्?

द्वितीयः—तेन हि—

नैतच्चित्रं, यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्री-
मेकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति।
आशंसन्ते समितिषु सुराः सक्तवैरा हि दैत्यै-
रस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे॥ १६॥

राजा इति शब्दः पूर्वस्मिन् यस्य स राजपूर्वः=राजोपपदयुक्तः, पुण्यः=पवित्रः, मुनिरिति शब्दः= राजर्षिरिति शब्दः, मुहुः=पुनः, चारणानां=कुशीलवानां, द्वन्द्वं=स्त्रीपुंसयुगलं, तेन गीतः=कीर्तितः, चारणद्वन्द्वगीतः सन्, द्यां=स्वर्गमन्तरिक्षं वा, स्पृशति=स्पर्शं करोति, प्रयाति। अत्र आश्रमे सर्वभोग्य इत्यादि श्लिष्टपदैरनेकार्थाभिधानात् श्लेषः, केवलं 'राजपूर्वः' इति मुन्यपेक्षयाधिक्याभिधानात् व्यतिरेकालङ्कारः। मन्दाक्रान्ता वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—अमुना राज्ञा दुष्यन्तेनापि वनितासम्भोगादिभोगास्पदे गार्हस्थ्याश्रमे स्थितिः अधिकृता। यथा मुनय आश्रमे निवसन्ति तथैवायमपि आश्रमे एव निवसति। आश्रमवासित्वेनायमपि मुनिरेव। तथा मुनिवत् अयमपि प्रजापरिपालनात् धर्मं सञ्चिनोति। तथा वशिनः अस्य राज्ञो दुष्यन्तस्यापि केवलं राजपूर्वः पवित्रः मुनिरिति शब्दः राजर्षिरित्यास्पदः, चारणद्वन्द्वगीतः सन् अन्तरिक्षपर्यन्तं तस्य कीर्त्तिं तनोति॥ १५॥

द्वितीयः—सखे! मित्र! अयं=अयमेव, सः=प्रसिद्धः, बलं=तन्नामासुरं, भिनत्ति=विदारयतीति बलभित्=इन्द्रः, तस्य सखा=मित्रम्, बलभित्सखः, दुष्यन्तः=तन्नामकः।

प्रथमः—अथ किम्=किमन्यत् (यदुक्तं तदेवेत्यर्थः)।

द्वितीयः—तेन हि=तेनैव हेतुना—

अन्वयः—नगरपरिघप्रांशुबाहुः अयम् एक उदधिश्यामसीमां कृत्स्नां धरित्रीं भुनक्ति, एतन्न चित्रम्। हि दैत्यैः सक्तवैराः सुराः समितिषु अस्य अधिज्ये धनुषि च पौरुहूते वज्रे विजयम् आशंसन्ते॥ १६॥

नैतदिति। नगरस्य=नगरद्वारस्य, यौ परिघौ=अर्गलौ, तद्वत् प्रांशू=उन्नतौ, बाहू=भुजौ, यस्य स तथाभूतः, अयं=दुष्यन्तः, एकः=एकाकी एव, उदधेः=सागरस्य, श्यामः=नीलिमावद् भासमान-

---

दूसरा—सखे! क्या यही इन्द्र का मित्र दुष्यन्त है।

पहला—और क्या?

दूसरा—इसी से तो—

नगरद्वार की अर्गला की भाँति लम्बी भुजा वाले ये दुष्यन्त यदि समुद्रवेष्टित श्याम सीमा वाली पृथ्वी का उपभोग करते हैं तो इसमें किसी प्रकार के आश्चर्य की बात नहीं है,

---

Second—Is this that Dushyanta, the friend of Indra?

First—Certainly.

Second—Then indeed—

There is no wonder if this king with arms long like a city's bolts, alone guards the entire earth, with its boundaries dark an

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभौ—(उपगम्य) विजयस्व राजन्!

राजा—(आसनादुत्थाय) अभिवादये भवन्तौ।

उभौ—स्वस्ति भवते। (इति फलान्युपनयतः।)

राजा—(सप्रणामं परिगृह्य) आगमनप्रयोजनं श्रोतुमिच्छामि।

जलभागः, स एव सीमा=मर्यादा, यस्यास्ताम् उदधिश्यामसीमां, कृत्स्नां=समग्राम्, धरित्रीम्=पृथिवीं, भुनक्ति=पालयति, एतन्न चित्रम्=नाश्चर्यम् (सामान्यत एकस्यैव पृथिवीपालने आश्चर्यत्वेऽपि एतद्विषयेनाश्चर्यम्), हि=यतः, दैत्यैः=असुरैः, सक्तं=सम्भृतं, वैरं=द्वेषः, येषान्ते सक्तवैराः, सुराः=देवाः, समितिषु=युद्धेषु, अस्य=दुष्यन्तस्य, अधिज्ये=अधिगतगुणे, धनुषि=कार्मुके, पुरु=अत्यन्तं, हुतं=यज्ञकर्मणि हव्यं, यस्य सः पुरुहूतः=शतमख इन्द्रः, तस्येदमिति तस्मिन् पौरुहूते=माहेन्द्रे, वज्रे=कुलिशे च (धनुषः प्राथम्येनाभिधानात्तस्यैव वज्रापेक्षया प्राधान्यं), विजयम्= विशेषेण जयम्, आशंसन्ते=आकाङ्क्षन्ति। अत्र प्रस्तुतस्य दुष्यन्तधनुषोऽप्रस्तुतस्य पुरुहूते वज्रस्य चैक-विजयक्रियया सहाभिसम्बन्धाद्दीपकालङ्कारः। मन्दाक्रान्ता वृत्तम्॥ १६॥

भावार्थः—नगरपरिघप्रांशुबाहुः पुरुहूतसमवीर एक एव राजा दुष्यन्तः पृथिवीं पालयतीति नास्ति विस्मयावसरः। यतः युद्धविषयकसमितिषु असुरैः सक्तवैराः सुराः अस्य अधिज्यकार्मुके पौरुहूते वज्रे च विजयम् आकाङ्क्षन्ति (धनुषः प्राथम्येनाभिधानात्तस्यैव वज्रापेक्षया प्राधान्यं, वज्रस्य तु पश्चान्निर्देशात् धनुषोऽपेक्षया गौणत्वं मन्यमानाः सुराः अस्य विजयम् आशंसन्ते इति भावः)॥ १६॥

उभौ—(उपगम्य=पूर्वं समीपं गत्वा) राजन्!=भो नृप! विजयस्व=सर्वेषु क्षेत्रेषु विजयं लभस्व।

राजा—(आसनात्=स्वाधिष्ठितपीठात्, उत्थाय=उत्थितो भूत्वा) (आसनादुत्थायेत्याद्या-चारेणादरातिशयो द्योत्यते) भवन्तौ=युवाम्, अभिवादये=नमस्करोमि।

उभौ—भवते=तुभ्यम्, स्वस्ति=मङ्गलम्, शुभमस्तु भवते इत्यर्थः। (इति=इत्युक्त्वा, फलानि, उपनयतः=अर्पयतः।)

क्योंकि दैत्यों के साथ विरोध करने वाले देवता युद्ध के अवसर पर चढ़ी हुई प्रत्यंचा वाले इसके धनुष और इन्द्र के वज्र में ही विजय की आकांक्षा करते हैं॥ १६॥

दोनों—(पास जाकर) महाराज की विजय हो!

राजा—(आसन से उठकर) आप दोनों को प्रणाम करता हूँ।

दोनों—आपका मंगल हो (यह कहकर फल भेंट करते हैं)।

राजा—(प्रणामपूर्वक उन फ़लों को स्वीकार कर) आपके आगमन का कारण सुनना चाहता हूँ।

---

account of the oceans, for the gods, with deeprooted enimity with the demons, expect victory in battles from his strung bow and the thunder-bolt of Indra. (16)

Both—(Approaching) O' king! be victorious.

King—(Rising from his seat) I salute you both.

Both—May it be well to you (blessings to you). *(Saying this they present fruit to the king)*

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभौ—विदितो भवानिहस्थस्तपस्विनाम्। ते च भवन्तमभ्यर्थयन्ते।

राजा—किमाज्ञापयन्ति?

ऊभौ—तत्रभवतः कण्वस्य कुलपतेरसान्निध्यात् रक्षांसि नः इष्टिविघ्नेमुत्पादयन्ति, तत् कतिपयदिवसमात्रं सारथिद्वितीयेन भवता सनाथीक्रियतामाश्रम इति।

राजा—अनुगृहीतोऽस्मि।

राजा—(सप्रणामं=प्रणामपूर्वकम्, परिगृह्य=स्वीकृत्य) आगमनप्रयोजनम्=अत्रागमन-कारणं, श्रोतुम्=आकर्णयितुम्, इच्छामि।

उभौ—भवान् इहस्थः=अस्मिन् तपोवने एव स्थितः (इत्येवं रूपेण), तपस्विनाम्=तपोवनवासिनां तापसानाम्, विदितः=अवगतः, ते च=तपस्विनः, भवन्तम्=त्वाम्, अभ्यर्थयन्ते=प्रार्थयन्ते।

राजा—किमाज्ञापयन्ति=कः निदेशः मत्कृतेति भावः।

उभौ—तत्रभवतः=पूज्यस्य, कुलपतेः=अयुतशिष्यपोषकस्य, कण्वस्य=महर्षेः कण्वस्य, असान्निध्यात्=सान्निध्याभावात्, रक्षांसि=राक्षसाः, नः=अस्माकम्, इष्टिविघ्नम्=यागव्याघातम्, उत्पादयन्ति=जनयन्ति, तत्=तस्माद् हेतोः, कतिपयदिवसमात्रं=कियन्त्यपि दिनानि (न पुनर्दीर्घ-कालपर्यन्तम्), सारथिरेव द्वितीयो यस्य सः, तेन सारथिद्वितीयेन=अन्यान् जनान् विसृज्य केवलेन सारथिनैव सह, भवता=त्वया, आश्रमः=कण्वाश्रमः, सनाथीक्रियताम्=स्वामियुक्तः क्रियताम् (इति ते भवन्तमभ्यर्थयन्ते)।

राजा—अनुगृहीतोऽस्मि=कृतकृत्योऽस्मि अनुदेशेनेति भावः।

दोनों—तपस्वियों को यह विदित हो गया है कि आप यहाँ हैं अतएव वे आप से कुछ प्रार्थना करते हैं।

राजा—उनकी क्या आज्ञा हैं?

दोनों—पूज्य कुलपति महर्षि कण्व के यहाँ उपस्थित न होने के कारण राक्षस हमारे यज्ञ में बाधा डालते हैं। अतः आप अपने सारथी के साथ मात्र कुछ दिनों के लिए इस आश्रम को सनाथ करें।

राजा—मैं अनुगृहीत हूँ।

King*—*(Receiving with a bow) I want to hear the purpose of your arrival (here).

Both—You are known to the dwellers of the hermitage as being here. They therefore request you.

King—What do they command?

Both—That due to the absence of the chancellor of this hermitage, the great sage Kanva, demons are causing obstruction to our sacrifies. So, for a few days let the hermitage be made to have a protector by you, accompanied by your charioteer.

King—I am obliged.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(अपवार्य) एस दाणिं भअदो अणुऊलो गलहत्थो। [एष इदानीं भवतः अनुकूलः गलहस्तः।]

राजा—(स्मितं कृत्वा) रैवतक! मद्वचनादुच्यतां सारथिः, सबाणकार्मुकं रथमुपस्थापयेति।

दौवारिकः—जं देवो आणवेदि। (इति निष्क्रान्तः।) [यत् देव आज्ञापयति।]

उभौ—(सहर्षम्)—

अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि।
आपन्नाभयसत्रेषु दीक्षिताः खलु पौरवाः॥ १७॥

विदूषकः—(अपवार्य=परावर्त्तनेन मुनिकुमारावश्रावयित्वा) इदानीम्=आश्रमवासोपायचिन्ताकाले, एषः=प्रार्थनारूपः, भवतः अनुकूलः=भवदीयकार्यसिद्धौ सहायकः, गलहस्तः=गले बलपूर्वकहस्तदानेन कर्मणि नियोगः (इदानीं मुनिभिः राक्षासापसारणकर्मणि बलपूर्वकस्ते नियोगः स्वाभीष्टसिद्धिजनकत्वात् प्रीतिकरः संवृत्त इति भावः)।

राजा-(स्मितं कृत्वा=किञ्चिद् विहस्य) रैवतक!=दौवारिक! बाणेन कार्मुकेण=धनुषा च सहेति सबाणकार्मुकम्, रथं=स्यन्दनम्, उपस्थापय=मत्समीपमानय, इति मद्वचनात्=मम शासनात्, सारथिः, उच्यतां=सूच्यताम्।

दौवारिकः—यत्=यथा, देवः=भवान्, आज्ञापयति=निर्दिशति।

उभौ—(सहर्षम्=प्रसन्नतापूर्वकम्)

अन्वयः—पूर्वेषाम् अनुकारिणि त्वयि इदं युक्तरूपम्। (तथा हि) पौरवाः आपन्नाभयसत्रेषु दीक्षिताः खलु॥ १७॥

अनुकारिणीति। पूर्वेषाम्=पूर्वनृपाणाम्, अनुकारिणि=अनुकरणकर्त्तरि (सदृशे), त्वयि=

विदूषक—(मुख मोड़कर, मुनिकुमारों को न सुनाते हुए) इस समय यह तुम्हारे अनुकूल गलहस्त उपस्थित हो गया (मुनियों ने बलपूर्वक तुम्हें इस काम में लगाकर तुम्हारी इच्छापूर्ति का साधन उपस्थित कर दिया)।

राजा—(हँसकर) रैवतक! मेरी आज्ञानुसार सारथी से जाकर कहो कि धनुष-बाण सहित रथ को यहाँ लाए।

द्वारपाल—स्वामी की जो आज्ञा। (चला जाता है।)

दोनों—(हर्षपूर्वक) अपने पूर्वजों के समान आपका इस प्रकार आश्वासन देना

Jester—(Aside) Here is now you are engaged forcibley in such a work favourable to you (Here is now a request favourable to you).

King—(Smiling) Raivātaka! Let the charioteer be addressed in my name that—'Bring me the chariot with the bow and arrows.'

Door-keepr—As your majesty commands. ***(Exit)***

Both—(With joy) This is exceedingly worthy of you, who imitate your ancestors; the descendants of Purū are indeed

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सप्रणामम्) गच्छतां भवन्तौ; अहमनुपदमागत एव।

उभौ—विजयस्व। (इति निष्क्रान्तौ।)

राजा—माधव्य! अप्यस्ति ते कुतूहलं शकुन्तलादर्शनं प्रति।

विदूषकः—पढमं अपरिवाधं आसी; सांपदं रक्खसवुत्तंतेण सपरिवाधं। [प्रथममपरिबाधमासीत्; साम्प्रतं राक्षसवृत्तान्तेन सपरिबाधम्।]

दुष्यन्ते, इदं=मुनिवचनपालनं तेष्वभयप्रदानं च, युक्तरूपम्=अतिशयेन युक्तम्, अनुरूपमेवेत्यर्थः। तथाहि—पौरवाः=पुरुवंश्या नृपतयः, आपन्नानाम्=आपद्युक्तानाम्, अभयमेव सत्रं=यागः, तेषु विषये विपन्नाभयप्रदानरूपयज्ञकर्मणि, दीक्षिताः=धृतव्रताः, खल्विति प्रसिद्धौ। अत्र पूर्वार्द्धे काव्यलिङ्गम्, उत्तरार्द्धे रूपकम्, परन्तु उत्तरार्द्धगतकारणद्वारा प्रथमार्द्धगतकार्यस्य समर्थनादर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः ॥ १७ ॥

भावार्थः—ययातिपूर्वादि पूर्वनृपाणां रूपचारित्र्यशौर्यपावित्र्यदानादिभिरनुकरणकर्तरि त्वयि इदम् अभयप्रदानरूपं कार्यमनुरूपमेव। तथाहि—पुरुवंश्या नृपतयः विपन्नाभयप्रदानरूपयज्ञकर्मणि धृतव्रता एव सन्तीति प्रसिद्धः ॥ १७ ॥

राजा—(सप्रणामम्=प्रणामपूर्वकम्) भवन्तौ=युवाम्, गच्छताम्=मुनिजननिवेदनाय गच्छताम्, अहं=दुष्यन्तः, पदस्य पश्चादनुपदम्=भवतः पृष्ठतः, आगत एव=प्राप्त एव (आगत इति अतीतत्वेन निर्देशो विलम्बाभावं द्योतयति)।

उभौ—विजयस्व=विजयं लभस्व (इति निष्क्रान्तौ=प्रस्थितौ)।

राजा—माधव्य! अपि=प्रश्नार्थकः, अस्ति=विद्यते, ते=तव, कुतूहलं, शकुन्तला=कण्वकन्या, दर्शनं प्रति=दर्शनार्थम्?

विदूषकः—प्रथमम्=पूर्वम्, अपरिबाधं=बाधारहितम्, आसीत् कुतूहलमिति शेषः, साम्प्रतम्=इदानीम्, राक्षसवृत्तान्तेन=राक्षसोपद्रवसमाचारेण, सपरिबाधं=बाधासहितमेव कुतूहलं वर्तते।

आपके अनुरूप ही है, क्योंकि पुरुवंशी राजा आपद्ग्रस्त जनों का भय दूर करने के लिए आयोजित अभय-यज्ञ में सदैव ही दीक्षित रहते आये हैं ॥ १७ ॥

राजा—(प्रणामपूर्वक) आप लोग जाइए, मैं आपके पीछे-पीछे ही आ रहा हूँ।

दोनों—विजयी बनो (दोनों चले जाते हैं)।

राजा—माधव्य! क्या शकुन्तला को देखने का तुम्हें भी कौतूहल है?

विदूषक—पहले तो कोई बाधा नहीं थी परन्तु अब राक्षसों का वृत्तान्त सुनकर दर्शन विषयक कुतूहल बाधा युक्त हो गया है।

---

ordained in the sacrifices of affording freedom from fear to the distressed. (17)

King*—*(With a bow) Let your honours go ahead. I also come just upon your heels.

Both—Be victorious. ***(Excunt)***

King—Mādhavya! have you any curiosity to see Śakuntalā?

Jester—At first it was without any obstacle but now by the account of the demons it has become full of obstacle.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—मा भैषीः, ननु मत्समीप एव वर्त्तिष्यसे।

विदूषकः—एस तुह रधचक्क-रक्खीभूदोम्हि, जइ ण कोवि आअच्छिअ विग्घं करेदि। [एष तव रथचक्ररक्षीभूतोऽस्मि, यदि न कोऽपि आगत्य विघ्नं करोति।]

दौवारिकः—(प्रविश्य) जअदु जअदु भट्टा। सज्जो रधो भत्तुणो विजअप्पआणं अवेक्खदि। एस उण णअरादो देवीणं आणत्तिहरो करभओ आअदो। [जयतु जयतु भर्त्ता। सज्जो रथः भर्त्तुर्विजयप्रयाणमपेक्षते। एष पुनर्नगराद् देवीनामाज्ञप्तिहरः करभक आगतः।]

राजा—(सादरम्) किमम्बाभिः प्रेषितः ?

राजा—मा भैषीः=भयं मा कुरु, नन्विति सम्बोधने, मत्समीप एव=मत्पार्श्वे एव, वर्त्तिष्यसे=स्थास्यसि (मत्समीपावस्थाने तु राक्षसेभ्यो भयं ते न भविष्यति)।

विदूषकः—एषः=पुरतः स्थितः (अहमिति भावः), तव=भवतः, रथस्य चक्रे रक्षतीति तद्भूतः रथचक्ररक्षीभूतः=रथचक्ररक्षकः (युध्यमानस्य भवतः रथचक्ररक्षार्थम् इति भावः), अस्मि=भवामि। यदि=चेत्, न कोऽपि, विघ्नं=रथरक्षासम्बन्धे उपद्रवम्, करोति=जनयति।

दौवारिकः—(प्रविश्य=मञ्चे आगत्य प्रवेशं वा विधाय) जयतु-जयतु भर्त्ता=स्वामी, विजयलाभं करोतु, सज्जः=सन्नद्धः, रथः=स्यन्दनम्, भर्त्तुः=स्वामिनो महाराजस्य, विजयप्रयाणं= विजययात्राम्, अपेक्षते=प्रतीक्षते। पुनः=अन्तरम् (निवेद्यमिदमस्ति), यत् एषः=पुरतः स्थितः, नगरात्=राजधानीतः, देवीनां=राजमातॄणाम्, आज्ञप्तिम्=आदेशं, हरतीति तच्छीलं=समाचारवाहकः, करभकः=तन्नामा दूतः, आगतः=अत्राश्रमे समायातः।

राजा—डरो मत, तुम मेरे पास ही रहोगे।

विदूषक—मैं तुम्हारे रथ के पहिये का रक्षक हो गया हूँ, यदि कोई आकर विघ्न उपस्थित न करे तो।

द्वारपाल—(प्रवेश करते हुए) स्वामी की जय हो। सजा हुआ (युद्ध-सामग्री से) रथ आपकी विजय-यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा है। इसके अतिरिक्त राजधानी से राजमाताओं का समाचार लाने वाला यह करभक भी आया है।

राजा—(आदरपूर्वक) क्या माताओं ने भेजा है ?

King—Do not fear, you will be near me.

Jester—I have become the guard of the wheel of your chariot, if no one creates any obstacle (untill any hindrance comes forth, I will remain with you as a protector of your chariot's wheel, during war).

Door-keeper—*(Entering)* The chariot is ready and is waiting (abiding) for your majesty's start for victory. There however, has arrived from the capital, Karbhaka, carrying the command of your majesty's mothers.

King—*(Reverently)* Is he sent by our mothers?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दौवारिकः—अध इं ? [अथ किम् ?]

राजा—तेन हि प्रवेश्यताम्।

दौवारिकः—तह। (इति निष्क्रम्य पुनः करभकेण सह प्रविश्य) अरभअ ! एसो भट्टा उवसप्पदु भवं। [तथा। करभक! एष भर्त्ता उपसर्पतु भवान्।]

करभकः—(उपसृत्य प्रणम्य च) जअदु जअदु भट्टा। देवीओ आणवेंति। [जयतु जयतु भर्त्ता। देव्य आज्ञापयन्ति।]

राजा—किमाज्ञापयन्ति ?

करभकः—आआमिणि चउट्ठदिअसे पुत्तपिंडपालणो णाम उववासो भविस्सदि, तहिं दीहाउणा अवस्सं अम्हे संभावइदव्वा त्ति। [आगामिनि चतुर्थदिवसे पुत्रपिण्डपालनो नाम उपवासो भविष्यति, तस्मिन् दीर्घायुषाऽवश्यं वयं सम्भावयितव्या इति।]

राजा—(सादरम्=आदरपूर्वकम्) किमम्बाभिः=जननीभिः, प्रेषितः=प्रहितः।

दौवारिकः—अथ किम्=एवमेतत्।

राजा—तेन हि=अम्बाभिः प्रेषितत्वेनैव हेतुना, प्रवेश्यताम्=समागम्यताम्।

दौवारिकः—तथा=एवमेव करोमि। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रम्य=बहिःगत्वा, पुनः=भूयः, करभकेण=तन्नामकदूतेन सह, प्रविश्य=आगत्य) करभक! एष भर्त्ता=स्वामी, भवान्=त्वम्, उपसर्पतु=समीपे गच्छतु।

करभकः—(उपसृत्य=पार्श्वे गत्वा, च=तथा, प्रणम्य=नमस्कारं कृत्वा) जयतु जयतु भर्त्ता। देव्यः=अम्बाः, आज्ञापयन्ति=निर्दिशन्ति।

राजा—किमाज्ञापयन्ति=किं निर्दिशन्ति ? (क आदेशः मत्कृतेति भावः।)

करभकः—आगामिनि चतुर्थदिवसे=चतुर्थसंख्याकदिने, पुत्रपिण्डानां=पुत्रेण दास्यमानानां

द्वारपाल—और क्या ?

राजा—तो उसे भीतर भेजो।

द्वारपाल—जैसी आज्ञा। (ऐसा कहकर जाता है और फिर करभक के साथ प्रविष्ट होकर) करभक! ये स्वामी (विराजमान) हैं, आप उनके पास पहुँचिए।

करभक—(पास जाकर तथा प्रणाम करके) स्वामी की जय हो, जय हो। देवियाँ आज्ञा देती हैं।

राजा—क्या आज्ञा देती हैं ?

करभक—आने वाले चौथे दिन 'पुत्रपिण्डपालन' नाम का उपवास होगा, उस दिन

Door-Keeper—Just so.

King—Well, let him be ushered (to show in).

Door keeper—All right. *(Going out and entering with Karabhka)* Karabhaka! Here is his majesty. You please approach.

Karabhaka—May your majesty be victorious, be victorious. The mothers command.

King—What is their command?

Karabhaka—On the coming fourth day, falls the fast,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—इतस्तपस्विनां कार्यम्, इतो गुरुजनाज्ञा, उभयमप्यनतिक्रमणीयम्; तत् किमत्र प्रतिविधेयम्?

विदूषकः—भो! तिसंकु विअ अंतरा चिट्ठ। [भोः त्रिशङ्कुरिव अन्तरा तिष्ठ।]

राजा—सत्यमाकुलीभूतोऽस्मि—

कृत्ययोर्भिन्नदेशत्वाद् द्वैधीभवति मे मनः।
पुरः प्रतिहतं शैलैः स्रोतः स्रोतोवहां यथा॥ १८॥

पिण्डानां, पालनं=रक्षणं, यस्मात् स तथाभूतः, नाम=नामकः, उपवासः=व्रतविशेषः, भविष्यति (आत्मनो मरणात् पूर्वं पुत्रमरणे पिण्डलोपाशङ्कया तन्निवृत्त्यर्थोऽयं व्रतविशेषः), तस्मिन्=व्रते, दीर्घायुषा=आयुष्मता त्वया, अवश्यम्=अवश्यमेव, वयम्=अम्बाः, सम्भावयितव्याः=आगमनेन परितोषणीयाः। पाठान्तरे क्वचित्—'प्रवृत्तपारणो मे उपवासो भविष्यति' इत्यपि लभ्यते, तत्र—उपवासान्ते पारणा=व्रताङ्गभोजनं भविष्यतीत्यर्थः।

राजा—इतः=अस्मिन् तपोवने, तपस्विनां=तापसानां, कार्यं=राक्षसोपद्रवनिराकरणरूपं कार्यम्, इतः=अन्यत्र नगरे, गुरुजनानां=मातॄणाम्, आज्ञा=नगरगमनायाऽऽदेशः, उभयमपि=द्वयोरपि, अनतिक्रमणीयम्=अनुल्लङ्घनीयम् (समप्राधान्यत्वात् द्वयोरप्यनुष्ठानमावश्यकमेव), तत्=तस्मात्, अत्र=अस्मिन् विषये, अथवा—अस्यां दशायां, किं प्रतिविधेयम्=कः प्रतिकारः करणीयः।

विदूषकः—भोः=भोः मित्र! त्रिशङ्कुरिव=एतन्नामकसूर्यवंशीयः कश्चिन्नृप इव, अन्तरा=मध्ये, तिष्ठ=स्थिरो भव (यथा राजा त्रिशङ्कुर्न दिवं न च भूमिमन्तरैव तिष्ठति तथैव त्वमपि अन्तरा तिष्ठ)।

राजा—सत्यम्=यथार्थमेव, (अहम्) आकुलीभूतः=व्यग्रीभूतः, अस्मि—

अन्वयः—कृत्ययोः भिन्नदेशत्वात् मे मनः द्वैधी भवति, पुरः शैलैः प्रतिहतं स्रोतोवहां स्रोतो यथा॥ १८॥

दीर्घायु (अर्थात् आप) को अवश्यमेव आकर हमें परितोष देना चाहिए।

राजा—इधर तपस्वियों का कार्य, उधर गुरुजन की आज्ञा, दोनों ही अलंघ्य हैं; अतएव इस विषम स्थिति में क्या प्रतिकार करना चाहिए?

विदूषक—मित्र! बस त्रिशंकु की तरह बीच में ही लटके रहना चाहिए।

राजा—सत्य ही मैं व्याकुल हो रहा हूँ।

शिलाओं के सामने पड़ जाने से जैसे नदी का प्रवाह दो भागों में विभक्त होकर बहने लगता है, उसी प्रकार मेरा मन भी भिन्न-भिन्न स्थानाश्रित दो कामों की ओर अग्रसर हो रहा है।

---

named 'Putra pinda palana' (protection of the son's cake i.e. rice ball), on the occasion we shall be honoured by the long lived one without fail (Your presence is essential at the occasion).

King—On the one hand is the work of the hermits, on the other hand the command of the mothers. Both are unavoidable. Which is the remedy here?

Jester—Stay in between (mid-way) like Trishanku.

King—I am realy perturbed—

Owing to the difference of places of the two duties, my mind

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(विचिन्त्य।) सखे! माधव्य! त्वमप्यम्बाभिः पुत्र इव गृहीतः, स भवानितः प्रतिनिवृत्त्य तपस्विकार्यव्यग्रतामस्माकमावेद्य तत्रभवतीनां पुत्रकार्यमनुष्ठातुमर्हति।

विदूषकः—भो! मा रक्खसभीरुअं मं अवगच्छ! [भो! मा राक्षसभीरुकं माम् अवगच्छ।]

राजा—(स्मितं कृत्वा) भो महाब्राह्मण! कथमिदं त्वयि सम्भाव्यते?

कृत्ययोरिति। कृत्ययोः=राक्षसोपद्रवनिराकरण-मातृआज्ञापालनरूपयोः कार्य्ययोः, भिन्नौ=परस्परविपरीतौ, देशौ=आश्रयस्थाने, ययोस्तौ तथोक्तत्वात् भिन्नदेशत्वात्, मे=मम, मनः=अन्तःकरणम्, द्वैधीभवति=नैकत्र कर्मणि स्वजते। पुरः=अग्रतः, शैलैः=शिलासङ्घातैः, प्रतिहतं=प्रतिरुद्धम्, स्रोतोवहां=सरिताम्, स्रोतो यथा=प्रवाह इव द्वैधीभवति। अत्र श्रौती उपमा लाटानुप्रासश्च एतेषां संसृष्टिः॥ १८॥

(विचिन्त्य=विचार्य) सखे माधव्य!=मित्र माधव्य! अम्बाभिः=जननीभिः, त्वमपि, पुत्र इव गृहीतः=मानितः, स भवान्=पुत्रत्वेन गृहीतस्त्वम्, इतः=अस्मात् स्थानात्, प्रतिनिवृत्त्य=गत्वा, तपस्विनां कार्ये व्यग्रतां=व्यासक्तताम्, अस्माकम्, आवेद्य=विज्ञाप्य, तत्रभवतीनां=पूज्यानाम्, पुत्रकार्यमनुष्ठातुं=कर्त्तुमर्हति, मत्प्रतिनिधिरूपेण इति भावः।

विदूषकः—भो!=राजन्! माम्=मह्यम्, राक्षसभीरुकं=राक्षसभयकातरम्, मा=न, अवगच्छ=जानीहि।

राजा—(स्मितम्=ईषद् हास्यं, कृत्वा=विधाय) भो महाब्राह्मण!=ब्राह्मणश्रेष्ठ! इदं=राक्षसभीरुत्वं, त्वयि कथं सम्भाव्यते=कथमपि न सम्भाव्यते इति भावः।

(सोचकर)—सखे माधव्य! तुमको भी मेरी माताओं ने पुत्रवत् ही माना है, अतः तुम यहाँ से लौट जाओ और 'मैं मुनियों के कार्य में फँसा हूँ' यह उन्हें समझाकर पूज्या माताओं के पुत्र सम्बन्धी कार्य को निपटा दो।

विदूषक—अरे! मुझे राक्षसों से डरने वाला मत समझो।

राजा—(हँसकर) हे महाब्राह्मण! मैं तुम्हारे सम्बन्ध में ऐसा सोच ही कैसे सकता हूँ?

---

is divided into two, like the stream of a river, divided into two streams, struck against a rock in front of it. (18)

(Thinking) Dear Mādhavya! you have been received by my mothers as a son. Hence, having returned from here and reported me as bussy with the work of ascetics, you please perform the duties of a son for respected mothers.

Jester—O' friend! you do not consider me to be afraid of the demons.

King—*(With a smile)* O great Brahmana! How I can think such things about you (How is this possible in your honour)?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—तेण हि राआणुअ विअ गच्छिदुं इच्छेमि। [तेन हि राजानुज इव गन्तुमिच्छामि।]

राजा—ननु तपोवनोपरोधः परिहरणीय इति सर्वानेवानुयात्रिकांस्त्वयैव सह प्रेषयिष्यामि।

विदूषकः—(सगर्वम्) जुअराओम्हि दाणिं संवुत्तो। [युवराजोऽस्मि इदानीं संवृत्तः।]

राजा—(आत्मगतम्) चपलोऽयं ब्राह्मणवटुः। कदाचिदिमामस्मत् प्रार्थनामन्तःपुरिकाभ्यो निवेदयेत्। भवत्वेवं तावद्वक्ष्यामि। (विदूषकस्य हस्तं गृहीत्वा प्रकाशम्) सखे माधव्य! ऋषिगौरवादाश्रमपदं प्रविशामि, न खलु सत्यमेव तापसकन्यायामभिलाषो मे। पश्य—

विदूषकः—तेन हि=त्वत्प्रतिनिधित्वेन गमनमनुमतं चेत्तदा, राजानुज इव=भवत्कनिष्ठभ्राता इव साटोपेन गन्तुमिच्छामि।

राजा—ननु=अनुज्ञाने, तपोवनोपरोधः=लतावृक्षादित्रोटनभञ्जनादिनाऽऽश्रमपीडा, परिहरणीयः=निवारणीयः, इति हेतोः, सर्वान्=सकलान्, एव, अनुयात्रिकान्=अनुगतान् सेवकान् सैनिकांश्च, त्वयैव सह=त्वया सार्धमेव, प्रेषयिष्यामि (तपोवनस्योपरोधो मा भूदिति हेतोः सर्वान् त्वयैव सह प्रतिनिवर्तयिष्यामि)।

विदूषकः—(सगर्वम्=गर्वसहितम्) इदानीम्=साम्प्रतम्, (अहं) (मया सह गमनेन राजानुयात्रिकाणां ममानुयात्रिकत्वेनैव) युवराजः=राजकुमारः, संवृत्तोऽस्मि=भवामि।

राजा—(आत्मगतम्=स्वगतम्) अयं=सम्मुखस्थः, ब्राह्मणवटुः=ब्राह्मणबालकः, चपलः=अव्यवस्थितचित्तः, कदाचित्=सम्भावनायां, इमाम्=शकुन्तलाविषयिकाम्, अस्म-

---

विदूषक—तो फिर मैं राजा के छोटे भाई की तरह जाना चाहता हूँ।

राजा—मुझे इस तपोवन को हानि से बचाना है, अतः अपने सब अनुचरों को मैं तुम्हारे साथ ही भेज दूँगा।

विदूषक—(गर्व से) (तो) अब मैं युवराज बन गया हूँ।

राजा—(मन में) यह ब्राह्मण बालक चंचल है, कहीं मेरी शकुन्तलापरक लालसा को महल में रहने वाली रानियों से न कह दे, अतः इससे इस प्रकार कहता हूँ। (विदूषक का

Jester—Then, I want to go in the style in which it is proper for the king's younger brother to go.

King—Alright! I shall send the retinue (followers) even with you, as disturbance to the penance-grove has to be avoided.

Jester—*(With pride)* I have now become the crown prince.

King—*(To himself)* this brahmin chap is fickled natured. Perhaps, he might report our suit to the ladies in the harem. Well! I shall speak thus to him. *(Taking jester's hand in his hand, aloud)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो मृगशावैः सह वर्द्धितो जनः।
परिहासविजल्पितं सखे! परमार्थेन न गृह्यतां वचः॥ १९॥

विदूषकः—एवण्णेदं। [एवमेतत्।]

राजा—माधव्य! त्वमपि स्वनियोगमनुतिष्ठ, अहमपि तपोवनरक्षार्थं तत्रैव गच्छामि।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वितीयोऽङ्कः।

त्प्रार्थनाम्=मदीयां लिप्साम्, अन्तःपुरिकाभ्यः=अन्तःपुरस्थायिनीभ्यः स्त्रीभ्यः, निवेदयेत्= अस्मद्-वृत्तान्तप्रसङ्गेन कथयेत्। भवतु=अस्तु, तावद् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, वक्ष्यामि=कथयामि। (विदूषकस्य हस्तं गृहीत्वा=स्वकरे निधाय, प्रकाशम्=सर्वश्राव्यरूपेण) सखे माधव्य! ऋषि-गौरवात्=ऋषीणां सम्मानार्हत्वेन (तदनुरोधस्य सर्वतो रक्षणीयत्वात्), आश्रमपदम्=आश्रमं, प्रविशामि, न=नहि, खलु=निश्चयेन, सत्येमव, तापसकन्यायाम्= पूर्वोक्तकण्वदुहिताशकुन्तलायां, मे=मम, अभिलाषः=लालसाऽऽस्ति। पश्य=अवलोकय—

अन्वयः—वयं क्व मृगशावैः सह वर्द्धितः (अत एव) परोक्षमन्मथः जनः क्व? (अत एव) सखे! परिहासविजल्पितं वचः परमार्थेन न गृह्यताम्।

क्वेति। वयं=नागरिकाः जनाः, क्व=कुत्र (वर्त्तामहे), मृगशावैः=हरिणशिशुभिः, सह वर्द्धितः=प्रतिपालितः, (अत एव) परोक्षः=कैश्चिदपि करणैरगोचरीभूतः, मनो मथ्नातीति मन्मथः=कामः, येन सः परोक्षमन्मथः=एकान्ततोऽपि मुग्धः, जनः=शकुन्तलारूपजनः, क्व=कुत्र वर्त्तते? (महदन्तरम् उभयोर्मध्ये प्रत्यक्षत एवावलोक्यते) अत एव हे सखे!=भो वयस्य! परिहासेन=कौतुकेन, विजल्पितं=यदनर्थकमभिहितं, वचः=शकुन्तलानुरागविषयकं पूर्वोक्तं वचनजातम्, परमार्थेन= यथार्थरूपेण, न गृह्यताम्=नावधार्यताम् (प्रायशः परिहासगर्भवचनजातस्यालीकत्वादिति भावः)।

अत्र वयंमिति परोक्षमन्मथो जन इवि परस्परविरुद्धयोः सङ्घटनरूपो विषमालङ्कारः तथा परोक्षमन्मथत्वमुद्दिश्य मृगशावैः सह वर्द्धितत्वरूपस्य वाक्यार्थस्य हेतुत्वेन विधानाद् वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्। अनयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करश्च। केचित्तु परिकर इत्यपि मन्यन्ते। सुन्दरी वृत्तम्॥ १९॥

हाथ पकड़कर, प्रगट रूप से) सखे माधव्य! ऋषियों के गौरव का विचार करके ही मैं इस तपोवन में ठहरा हूँ। उस तपस्वी कन्या के सम्बन्ध में मेरी अभिलाषा सत्य नहीं है। देखो—

भला कहाँ हम और कहाँ कामभावना से सर्वथा अपरिचित हरिणों के बच्चों के साथ पली हुयी वह? अतएव हे सखे! हँसी में मैंने जो कुछ कहा है, उसे सत्य न मान लेना॥ १९॥

Dear Madhavya! out of respect for the sages I go to the hermitage. Infact I have no real longing for the hermit's daughter. Behold—

Where are we and where that person, who is brought up with young ones of the deer, to whome love is unknown? Dear! what I reaveled in jokes, kindly don't take that one as truth. (19)

Jester—Certainly.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावार्थः—वयं सकलकलाकोविदा नागरिका जनाः क्व तथा ऋषिकण्वेन हरिणशिशुभिः सह प्रतिपालितः (अत एव) एकान्ततोऽपि मुग्धः शकुन्तलारूपजनः क्वास्ति? अत एव हे सखे! मया परिहासेन यदनर्थकमभिहितं तद्वचनजातं यथार्थरूपेण मा गृहाण॥ १९॥

विदूषकः—एतत्=पूर्वोक्तरूपम्, एवं=परिहासविजल्पितमेव इति मन्ये, अत एव तन्मया परमार्थेन नावधृतम्।

राजा—माधव्य! त्वमपि, स्वनियोगम्=ममादेशं, नगरगमनाय आज्ञाम्, अनुतिष्ठ=परिरक्ष, परिपालय, अहमपि तपोवनरक्षार्थं, तत्रैव=शकुन्तलावाससमीपभूमावेव, गच्छामि।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वितीयोऽङ्कः।

विदूषक—ठीक है (ऐसा ही करूँगा)।

राजा—माधव्य! तुम अपने कर्त्तव्य का पालन करो। मैं भी तपोवन की रक्षा के लिए वहीं जाता हूँ।

(सब जाते हैं)

द्वितीय अङ्क समाप्त।

King—Mādhavya! you discharge your duty. I too go to penance grove to protect it.

(Exeunt omnes)

End of Act Second

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति कुशानादाय यजमानशिष्यः)

शिष्यः—(विचिन्त्य सविस्मयम्) अहो! महाप्रभावो राजा दुष्यन्तः; येन प्रविष्टमात्र एवाश्रमं तत्रभवति सारथिद्वितीये राजनि निरुपप्लवानि नः कर्म्माणि संवृत्तानि।

का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः।
हुङ्कारेणेव धनुषः स हि विघ्नान् व्यपोहति॥ १॥

(ततः=तदनन्तरम्, पूर्ववृत्तानन्तरम्, यागाय प्रवृत्तो यजमानः स चासौ शिष्यश्च यजमान-शिष्यः, अथवा यजमानस्य=याज्ञिकस्य मुनेः कण्वस्य, शिष्यः, कुशान्=दर्भान्, आदाय=गृहीत्वा, प्रविशति रङ्गेति शेषः।)

शिष्यः—(विचिन्त्य=किमपि विचार्य, सविस्मयम्=साश्चर्यम्) अहो=इत्याश्चर्ये, महान् प्रभावो यस्य सः महाप्रभावः=महातेजाः, राजा दुष्यन्तः, येन=हेतुना, प्रविष्टमात्रे एव=आश्रमेऽस्मिन् प्रवेशकाल एव, तत्रभवति=मान्ये, सारथिर्द्वितीयो यस्य तस्मिन् सारथिद्वितीये=मात्रैकेनैव सारथिना सह, राजनि=दुष्यन्ते, नः=अस्माकं, कर्म्माणि=यज्ञकार्याणि, निरुपप्लवानि=उपद्रवशून्यानि, संवृत्तानि=निष्पन्नानि।

अन्वयः—बाणसन्धाने का कथा? हि सः दूरतः धनुषः हुङ्कारेणेव ज्याशब्देनैव विघ्नान् व्यपोहति॥ १॥

का कथेति। बाणसन्धाने=धनुषि बाणारोपणे, का कथा=किमुच्यते (तत्प्रसङ्ग एव नास्तीत्यर्थः), हि=यतः, सः=राजा, दूरतः=दूरात्, धनुषः=कोदण्डस्य, हुङ्कारेणेव=हुङ्कारशब्देनेव, ज्याशब्देनैव=प्रत्यञ्चाध्वनिनैव, विघ्नान्=यज्ञीयविघ्नान् (अन्तरायभूतान्), व्यपोहति=अपसारयति। अत्र का कथेत्यर्थापत्यलङ्कारः, हुङ्कारेणेति उत्प्रेक्षा, अनयोर्मिथो नैरपेक्षेण संसृष्टिः। केचित् उपमया धनुषो मुनिसाम्यं गम्यते, अपरे—काव्यलिङ्गमिति॥ १॥

(तदनन्तर कुश लिये हुए यजमान शिष्य (यज्ञ में प्रवृत्त शिष्य) प्रवेश करता है।)

शिष्य—(विस्मय के साथ) अहो! राजा दुष्यन्त बड़े प्रभावशाली हैं. केवल सारथी को अपने साथ लिये हुए इस राजा दुष्यन्त के यहाँ आते ही हमलोगों के यज्ञकार्य बिना किसी उपद्रव के सम्पन्न हो गये।

बाण के सन्धान की तो बात ही क्या, हुंकार सदृश केवल प्रत्यञ्चा की टंकार करते ही वह (राजा दुष्यन्त) समस्त विघ्नों को दूर कर दिया करता है॥ १॥

(Then enter a pupil sacrificer with sacred grass in his hand)

Pupil—(with surprise) Oh! of great prowess is king Duśyanta. Since his majesty the king Duśyanta has entered the hermitage, our rites have become free from all obstacles.

What speak of aiming the arrow? For, by the mere twang of his bow from afar, as if by the round of the bow, he dispels the obstacles. (1)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यावदेतान् वेदिसंस्तरणार्थं दर्भान् ऋत्विग्भ्य उपाहरामि। (परिक्रम्यावलोक्य च आकाशे) प्रियंवदे! कस्येदमुशीरानुलेपनं मृणालवन्ति च नलिनीदलानि नीयन्ते? (श्रुतिमभिनीय) किं कथयसि 'आतपलङ्घनाद्बलवदसुस्थशरीरा शकुन्तला, तस्याः शरीर-निर्वापणाय' इति? प्रियंवदे! यत्नादुपचर्य्यताम्, सा हि तत्रभवतः कुलपतेर्द्वितीय-मुच्छ्वसितम्। अहमपि तावद्वैतानिकं शान्त्युदकमस्या एव गौतमीहस्ते विसर्जयामि।

(इति निष्क्रान्तः।)

विष्कम्भकः।

भावार्थः—धनुषि बाणारोपणे का कथा? तत्प्रसङ्ग एव नास्ति, यतः सः कोदण्डीय-प्रत्यञ्चा ध्वनिनैव अन्तरायभूतान् यज्ञीयविघ्नान् दूरादेव अपसारयति॥ १॥

यावद् इति वाक्यालङ्कारे, एतान्=करस्थितान्, वेद्यां=यागार्थविरचितवेदिकायां, संस्तरणार्थं=पातनार्थम्, दर्भान्=कुशान्, ऋत्विग्भ्यः=याजकेभ्यः, उपनयामि=समर्पयामि। (परि-क्रम्य=यज्ञशालागमनार्थमीषत्पादप्रक्षेपं कृत्वा, अवलोक्य च=पुरतः दृष्ट्वा, आकाशे=निरालम्बे) (प्रियंवदया नलिनीपत्रानयनं विलोक्य रङ्गभूमौ प्रियंवदाभावेऽपि तामुद्दिश्य आकाशभाषितं करोति) प्रियंवदे! कस्य=जनस्य उपयोगाय, इदम्, उशीरानुलेपनम्=उशीरमूलघर्षितलेपद्रव्यम्, च=तथा, मृणालवन्ति=मृणालसनाथानि, नलिनीदलानि=कमलपत्राणि, नीयन्ते=प्राप्यन्ते, त्वयेति शेषः। (श्रुतिमभिनीय=श्रवणं रूपयित्वा) भावनया तदुत्तरमनूद्य पृच्छति—किं कथयसि? आतप-

---

तब तक वेदी पर बिछाने के लिए ये कुश ऋत्विजों को दे आऊँ। (**घूमकर तथा देखकर आकाश की ओर मुँह करके**) प्रियंवदे! तुम यह खस का लेप और मृणाल युक्त कमल के पत्ते किसके लिए ले जा रही हो? (**सुनने का अभिनय करके**) क्या कह रही हो? लू लग जाने से शकुन्तला का शरीर अस्वस्थ हो गया है, उसी को शान्ति पहुँचाने के लिए? प्रियंवदे! यत्नपूर्वक उसका उपचार (चिकित्सा) करो, क्योंकि वह पूज्य कुलपति का दूसरा प्राण है। तब तक मैं भी गौतमी के हाथों से यज्ञ का शान्तिजल उसके लिए भेजता हूँ। (**यह कहकर प्रस्थान करता है।**)

विष्कम्भक।

I shall just take these Darbha-blades to the priests for strewing (scattering) on the altar. *(Going round and observing, in the air)* Priyaṁvadā! for whom you are carrying this Uśira-unguent and the lotus-leaves with stalks? *(Acting as if he heard something)* What do you say? That Śakuntalā is excessively indisposed from injury inflicted by the heat, for cooling her body. I am carrying all these. Priyaṁvadā! attend her carefully as she is the other breath (second life) of his holiness the lord of sages. I shall also in the meanwhile send for her sacrificial soothing water through Gautamī. *(Exit)*.

End of the prelude.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति समदनावस्थो राजा)

राजा—(सचिन्तं निःश्वस्य)

जाने तपसो वीर्यं सा बाला परवतीति मे विदितम्।
न च निम्नादिव सलिलं निवर्त्तते मे ततो हृदयम्॥ २॥

लङ्घनात्—आतपेन=रवितापेन, लङ्घनात्=उद्यानपरिष्कारादिकरणात्, बलवत्=अत्यर्थम्, असुस्थम्=अप्रकृतिस्थं, शरीरं यस्याः सा बलवदसुस्थशरीरा, शकुन्तला=कण्वदुहिता, तस्याः=शकुन्तलायाः, शरीरनिर्वापणाय=देहसन्तापोपशमनाय इति। प्रियंवदे! यत्नादुपचर्य्यताम्=यत्नपूर्वकं तस्याः परिचर्या क्रियताम्; हि=यतः, सा=शकुन्तला, तत्रभवतः=पूज्यस्य, कुलपतेः=अयुतशिष्यपोषकस्य कण्वस्य, द्वितीयम्=अपरम्, उच्छ्वसितम्=जीवनम् (जीवनवद्वत्सला इत्यर्थः), तावत् अहमपि, वैतानिकं=यागसम्भवम्, शान्त्युदकम्=शान्त्यर्थमुदकम्, अस्या एव=शकुन्तलायै एव, गौतम्याः=तदाख्यायाः कस्याश्चित् तापस्याः, हस्ते विसर्जयामि=प्रेरयामि, केनचिदृत्विजेति शेषः।

विष्कम्भकः—विष्कभ्नाति=नियोजयति पूर्वापरकथाभागं यः सः विष्कम्भकः (कथाभागविशेषः)।

(ततः=तदनन्तरम्, मदनावस्थया सह वर्त्तत इति समदनावस्थः=स्मरदशाक्रान्तः, राजा=दुष्यन्तः, प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

राजा—(चिन्तया=शकुन्तलाविषयकचिन्तया, सह वर्त्तत इति सचिन्तम्, निःश्वस्य=दीर्घनिश्वासमुत्सृज्य)

अन्वयः—तपसः वीर्यं जाने सा बाला परवती इति मे विदितम्, निम्नात् सलिलम् इव ततः मे हृदयं न निवर्त्तते॥ २॥

जाने इति। तपसः=तपस्यायाः, वीर्यं=सामर्थ्यं, जाने=अवगच्छामि, सा बाला=शकुन्तला, परवती=पराधीना, इति=इत्यपि, मे=मम, विदितम्=ज्ञातम्, निम्नात्=नीचैर्भूतलभागात्, सलिलं=जलमिव, ततः=शकुन्तलातः, मे=मम, हृदयं=चेतः, न निवर्त्तते=न प्रत्यावर्त्तते (न तामुज्झितुं यतते)। अत्र प्रथमार्धे अप्रस्तुतप्रशंसा, द्वितीयार्धे तु श्रौतोपमालङ्कारः। आर्य्या जातिः॥ २॥

भावार्थः—अहं मुनीनां तपस्यायाः प्रभावं जानामि। कथितं हि पुरातनैः यत्— 'तत् सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमः' इति। इत्यपि विदितं यत् सा बाला (शकुन्तला) पराधीना अस्ति अत एव पराधीनतया स्वेच्छया प्रवर्त्तितुं सर्वथैवाक्षमास्ति। तथापि नीचैर्भूतलभागात् यथा सलिलं तथैव शकुन्तलातो मनो न निवर्तयितुं शक्नोमि॥ २॥

(इसके पश्चात् कामभावयुक्त राजा दुष्यन्त का प्रवेश)

राजा—(चिन्तायुक्त भाव से दीर्घ साँस लेकर) मैं तपस्या का बल जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि वह शकुन्तला पराधीन है, किन्तु फिर भी जैसे नीची भूमि से जल अपने आप ऊपर नहीं चढ़ता उसी प्रकार मेरा मन उसकी ओर से नहीं हटता॥ २॥

(Then enter the love-lorn king).

King—(In sorrowful mood, with deep breath) **I know the power of penance. It is also known to me that the girl i.e. Śakuntalā is not independent. Yet I am not able to withdraw my heart from her. (2)**

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भगवन्! मन्मथ! कुतस्ते कुसुमायुधस्य सतस्तैक्ष्ण्यमेतत्। (स्मृत्वा) आं ज्ञातम्—

अद्यापि नूनं हरकोपवह्निस्त्वयि ज्वलत्यौर्व इवाम्बुराशौ।
त्वमन्यथा मन्मथ! मद्विधानां भस्मावशेषः कथमेवमुष्णः॥ ३॥

अपि च—त्वया चन्द्रमसा च अतिविश्वसनीयाभ्यामभिसन्धीयते कामिजनसार्थः। कुतः—

भगवन्!=माहात्म्यशालिन्! मनो मथ्नातीति तत्सम्बोधने हे मन्मथ! ते=तव, कुसुमम्=पुष्पमात्रम्, आयुधम्=अस्त्रं, यस्य तस्य कुसुमायुधस्य, एतत्=ईदृशं, तैक्ष्ण्यम्=उग्रता, कुतः=कस्मात्? (भवतः कुसुमायुधत्वेन कुसुमधर्मस्य विपरीता उग्रता आश्चर्यजनयितृ एवेति विभावयामि।) (स्मृत्वा=स्मरणं कृत्वा) आं ज्ञातम्=विदितम्।

अन्वयः—हे मन्मथ! अम्बुराशौ और्वः हरस्य कोपवह्निः अद्यापि त्वयि ज्वलति इति नूनम्। अन्यथा भस्मावशेषः त्वं मद्विधानां कथम् एवं उष्णः भवसि इति शेषः॥ ३॥

अद्यापीति। हे मन्मथ=हे काम! अम्बुराशौ=समुद्रे, और्वः=वाडवाग्निरिव, हरस्य=शङ्करस्य, कोपवह्निः=क्रोधाग्निः, अद्यापि=इदानीमपि, त्वयि=मन्मथे, ज्वलति=दीप्यते, इति नूनम्=ध्रुवम्। अन्यथा=नो चेत्, भस्मैव अवशेषः, यस्य भस्मावशेषः=भस्ममात्रावशिष्टः, त्वम्=भवान्, मद्विधानां=मादृशानां (विरहकातराणामिति भावः), कथं=केन वा हेतुना, एवम्=अनेन प्रकारेण, उष्णः=सन्तापको भवसीति शेषः॥ ३॥

अत्र पूर्वार्द्धार्थं प्रति उत्तरार्द्धार्थस्य हेतुत्वात्काव्यलिङ्गालङ्कारः। अम्बुराशावौर्व इत्यत्र उपमाऽपि प्रतीयते। ममेत्यनभिधाय मद्विधेत्यभिधानादप्रस्तुतप्रशंसा, हरकोप एव वह्निरिति रूपकञ्च। नूनमित्युत्प्रेक्षाव्यञ्जकतयात्रोत्प्रेक्षालङ्कारः तथा च उष्णत्वेन वह्निमत्त्वसाधनान्मन्मथे हरकोपानलज्वलनसद्भावानुभवरूपवैचित्र्यज्ञानादनुमानालङ्कार इति केचित्। उपजातिः वृत्तम्॥ ३॥

भावार्थः—हे मन्मथ! सागरे वाडवाग्निरिव हरस्य कोपाग्निरिदानीमपि त्वयि ज्वलत्येव इति निश्चिनोमि। यद्येवं न स्यात् तर्हि भस्मावशेषः त्वं मद्विधानां विरहकातराणां कथम् अनेन प्रकारेण सन्तापको भवसि? इत्यनुमानेनापि नावागन्तुं शक्यते॥ ३॥

भगवन् मन्मथ! आप तो कुसुमायुध हैं फिर आप में इतनी प्रखरता कहाँ से आ गई? (विचारकर) ओह! समझ गया—

∴ समुद्र में वाडवाग्नि की भाँति भगवान् रुद्र का कोपानल आज भी आपके शरीर में धधक रहा है। ऐसा न होता तो हे मन्मथ! भस्मावशेष होने पर आप हम जैसे विरहातुर जनों के लिए कदापि इतने उष्ण (उग्र) न होते॥ ३॥

और भी—आप और चन्द्र दोनों ही संसार के बड़े विश्वासपात्र हैं, फिर भी आप दोनों मिलकर कामीजनों को सताते हैं। क्योंकि—

God of love! Though you are flower-weaponed, from where has this harshness came in you? *(Thinking)* Oh! understood—

Verily even now the fire of Hara's anger burns in you, like the submarine fire in the ocean, or, otherwise, of God of love! the termenter of the mind! how could you, whose remains are only ashes, be so hot to people like me? (3)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दो-
र्द्वयमिदमयथार्थं दृश्यते मद्विधेषु।
विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखै-
स्त्वमपि कुसुमबाणान् वज्रसारीकरोषि॥ ४॥

अपि च=अन्यच्च, त्वया=भवता मन्मथेन, चन्द्रमसा=चन्द्रेण च, अतिविश्वसनीयाभ्यां=मृदुत्वेनातिविश्वस्ताभ्याम् (सद्भ्यामित्यर्थः), कामिजनसार्थः=कामुकजनगोष्ठी, अभिसन्धीयते=तीव्रताप्रकाशनात् प्रतार्य्यते। कुतः—

अन्वयः—तव कुसुमशरत्वम् इन्दोः शीतरश्मित्वम्, इदं द्वयं मद्विधेषु अयथार्थं दृश्यते। (यतः) इन्दुः हिमगर्भैः मयूखैः अग्निं विसृजति, (तथा) त्वमपि कुसुमबाणान् वज्रसारीकरोषि॥ ४॥

तवेति। तव=भवतः (मन्मथस्य, वञ्चकस्येति यावत्), कुसुमानि=पुष्पाणि, शराः=सायकाः, यस्य तस्य भावस्तत्त्वं कुसुमशरत्वम्=पुष्पबाणसंज्ञत्वम्, इन्दोः=चन्द्रमसः, शीताः=शीतलाः, रश्मयः=मयूखाः, यस्य तस्य भावस्तत्त्वं शीतरश्मित्वं=हिमांशुसंज्ञत्वम् (न तापकारित्वमित्यर्थः), इदं द्वयम्=एतदुभयम्, मद्विधेषु=मादृशेषु विरहकातरेषु विषये, अयथार्थम्=अलीकम्, दृश्यते=ज्ञायते (तथाहि कुसुमशरस्यापि तव मामुद्दिश्याकुसुमशरत्वं जातं, शीतरश्मेरपीन्दोरुष्णरश्मित्वं जातत्वादुभयविशेषणमलीकमिति मन्ये)। (कथम्? इत्यस्य स्वयमेव उत्तरं ददाति—) (यतः) इन्दुः=चन्द्रः, हिमं गर्भे=अभ्यन्तरे, येषां तैस्तथोक्तैः, मयूखैः=रश्मिभिः, अग्निम्=अनलम्, विसृजति=विशेषेण वर्षति, (तथा च) त्वमपि=भवान् कुसुमायुधोऽपि, कुसुमबाणान्=पुष्परचितमृदुलबाणान्, वज्राणां सार इव सारः=बलं, येषां ते वज्रसाराः, अवज्रसारान् वज्रसारान् करोषीति वज्रसारीकरोषि=कुसुमरचितबाणेषु काठिन्यमाधाय प्रहरसि।

अत्र राज्ञ उन्मादव्यञ्जकत्वाद् गुणत्वं, चन्द्रप्रसङ्गस्य दृष्टान्तार्थकत्वाद् दृष्टान्तश्च। केचित्तु कुसुमशरत्वस्य शीतरश्मित्वस्य चोभयार्थत्वं प्रति परार्द्धवाक्यद्वयस्य हेतुत्वेनोपन्यासाद् वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्, अन्ये हिमगर्भमयूखेभ्योऽग्निविसर्गोत्पत्तेः कुसुमबाणेभ्यो वज्रवत्प्रहारोत्पत्तेश्च विषमालङ्कार इति मन्यन्ते। किञ्च एतेषामलङ्काराणाम् अङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। मालिनी नाम वृत्तम्॥ ४॥

भावार्थः—यद्यपि विश्वस्मिन् विश्वेऽस्मिन् भवतः कुसुमशरत्वं चन्द्रस्य च शीतरश्मित्वं प्रसिद्धम्, परन्तु एतदुभयं मद्विधेषु विरहीजनेषु विषये अलीकमिव दृश्यते। यतो हि चन्द्रः

आपका कुसुमायुध तथा चन्द्र का शीतरश्मि कहा जाना—ये दोनों बातें हम जैसों के लिए यथार्थ नहीं हैं, क्योंकि चन्द्रमा अपनी हिमगर्भ (बर्फीली) किरणों द्वारा आग बरसाता है और आप अपने पुष्पबाणों को वज्रसार की भाँति कठिनंतर बना रहे हैं॥ ४॥

Moreover , by you and by the moon, who are worthy of confidence, the whole host of lovers is deceived. Why so—

You are having arrows of flowers and the moon cool rays, both these are observed to be false in the case of persons like me. The moon discharges fire with its rays charged with cold and you also make your arrows of flowers as hard as thunderbolt itself. (4)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथवा—

अनिशमपि मकरकेतुर्मनसो रुजमावहन्नभिमतो मे।
यदि मदिरायतनयनां तामधिकृत्य प्रहरतीति ॥ ५ ॥

भगवन्! एवमुपालब्धस्य ते न मां प्रत्यनुक्रोशः।

वृथैव सङ्कल्पशतैरजस्त्रम्, अनङ्ग! नीतोऽसि मयाऽतिवृद्धिम्।
आकृष्य चापं श्रवणोपकण्ठे मय्येव युक्तस्तव बाणमोक्षः ॥ ६ ॥

स्वकीयहिमगर्भैः मयूखैः अनलं वर्षति तथा कुसुमायुधस्त्वमपि स्वकीयकुसुमबाणान् वज्रसारीकरोषि—वज्राणामिव कुसुमानां काठिन्यमाधाय प्रहरसि ॥ ४ ॥

अथवा=पक्षान्तरे—

अन्वयः—मकरकेतुः मदिरायतनयनां ताम् अधिकृत्य यदि प्रहरति इति अनिशं मे मनसः रुजम् आवहन् अभिमतः स्यादिति शेषः ॥ ५ ॥

अनिशमिति। मकरकेतुः=मकरध्वजः कामः, मदिरे=मत्ते, आयते=दीर्घे, नयने=नेत्रे, यस्यास्तां मदिरायतनयनां, ताम्=शकुन्तलाम्, अधिकृत्य=उद्दिश्य, यदि प्रहरति=(माम्) शरैर्विध्यति, इति=एवंविधे सति, अनिशं=निरन्तरम्, मे=मम, मनसः=चेतसः, रुजं=पीडाम्, आवहन्=दधदपि (उत्पादयन्नपि), अभिमतः=आनुकूल्येन हेतुना सम्मतः स्याद्। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः, आर्या जातिः ॥ ५ ॥

भावार्थः—मकरध्वजः कामः मदिरायतेक्षणां तां शकुन्तलामुद्दिश्य यदि मां शैरैर्विध्यति तदा निरन्तरं मम चेतसः पीडामुत्पादयन्नपि आनुकूल्येन हेतुना सम्मत एव (तदुपरि ममानुरागस्य सततं विद्यमानतया यथाहं कामेन पीडितः, तथैव मदुपरि अनुरागवशेन सा यदि कामेन पीडिता स्यात्, तदोभयानुरागस्य उभयपीडायाश्च समानतया अवश्यमुभयोः सङ्गमनं भविष्यत्येव इति निश्चिनोमि, अत एव तथाविधपीडा सम्मतैव) ॥ ५ ॥

भगवन्=सर्वशक्तिसम्पन्न! भो मन्मथ! एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, उपालब्धस्य=भर्त्सितस्य, मां प्रति=मामुद्दिश्य, ते=तव, अनुक्रोशः=कृपा, न=नोत्पद्यते। (केनचिद् दुःखितेन भर्त्सितो दुःखदः सन्तापितो भूत्वा तदुपरि कृपामातनोतीति तत्त्वयि न दृश्यते।)

अथवा—

यदि मीनकेतु कामदेव उस मदभरे नयनों वाली को उद्देश्य बनाकर मुझे अपने बाणों का निशाना बनाता है तो सतत मन में पीड़ा होते हुए भी वह हमें प्रिय ही लगता है ॥ ५ ॥

भगवन्! इस प्रकार (दुःखी मन से) मैं आपका तिरस्कार करता हूँ, फिर भी मेरे प्रति आपके मन में दया उत्पन्न नहीं होती?

Or—

The fish-bannerd God, though incessantly causing anguish to my mind, is acceptable to me, in as much as he strikes me with refrence to that hermit-girl Śakuntalā of long-maddenning eyes.

Respectable sir, though I insult you thus, even though you are not showing any mercy on me.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(सखेदं परिक्रम्य) क्वं नु खलु निरस्तविघ्नैस्तपस्विभिरनुज्ञातः खिन्नमात्मानं विनोदयामि। न च प्रियादर्शनादृते शरणमन्यत्। यावदेनामन्विष्यामि। (ऊर्ध्वमवलोक्य) इमामुग्रतपां वेलां प्रायेण लतावलयवत्सु मालिनीतीरेषु ससखीजना तत्रभवती शकुन्तला

अन्वयः—अनङ्ग! मया अजस्रं सङ्कल्पशतैः वृथैव अतिवृद्धिं नीतः असि, श्रवणोपकण्ठे चापम् आकृष्य तव मय्येव बाणमोक्षः युक्तः॥ ६॥

वृथैवेति। अनङ्ग=हे मदन! मया=दुष्यन्तेन, अजस्रं=सततम्, सङ्कल्पशतैः=बहुभिर्मनोरथैः (शकुन्तलामुद्दिश्य इति शेषः), वृथैव=निष्फलमेव, अतिवृद्धिम्=अतीव वैपुल्यम्, नीतः=प्रापितः, असि=त्वमिति शेषः। श्रवणोपकण्ठे=कर्णान्तिके, चापं=धनुः, आकृष्य=आकर्षणं कृत्वा, तव=भवतः, अनङ्गस्य, मय्येव=दुष्यन्ते एव, बाणमोक्षः=शरविक्षेपः, युक्तः=किमुचितः। अत्र काव्यलिङ्ग अलङ्कारः, उपजातिर्नाम वृत्तम्॥ ६॥

भावार्थः—भो मदन! मया शकुन्तलामुद्दिश्य बहुभिर्मनोरथैः त्वं सततं वृथैव अतिवृद्धिं नीतोऽसि। कर्णान्तिके चापमाकृष्य तव मय्येव बाणमोक्षः किं समुचितः? न कोऽपि पालकं प्रहरति परन्तु भवद्विचेष्टितं लोकमर्यादाविरुद्धत्वात् शङ्कां जनयति मे मनसि यद् मत्कृतं भवदीयपालनं सर्वथैवानुचितमासीदिति।

(खेदेन सहितं यथा स्यात्तथा सखेदं=सपरितापं, परिक्रम्य=सञ्चारमभिनीय) निरस्ता विघ्ना येषां तैर्निरस्तविघ्नैः=अपसारितयज्ञव्याघातैः, तपस्विभिः=मुनिभिः, अनुज्ञातः=पूर्ववद् यथेच्छ-भ्रमणादिविषये अनुमोदितः, अहं=दुष्यन्तः, क्व=कस्मिन् देशे, नुशब्दः खलुशब्दश्च वितर्के, खिन्नं=शकुन्तलाविरहेण परितप्तम्, आत्मानम्=स्वकीयं मनः, विनोदयामि=सन्तापापनोदं करोमि? प्रियायाः=शकुन्तलायाः, दर्शनादृते=दर्शनं विना, अन्यत्=किमपि अपरं, शरणम्=आश्रयस्थानं, न=नास्ति (प्रियादर्शनमेव शरणमिति भावः)। यावत्=इत्यवधारणे, एनां=शकुन्तलाम्, अन्विष्यामि=मार्गयिष्यामि। (ऊर्ध्वमवलोक्य=सूर्याभिमुखं दृष्ट्वा) इमाम्, उग्रम्=उत्कटं, तपती-

---

हे अनङ्ग! नित्य विविध प्रकार के व्यर्थ सङ्कल्प करके मैंने आपको अत्यधिक बढ़ाया है, इस स्थिति में क्या यह उचित है कि आप कानों तक धनुष खींचकर मुझे ही अपने बाणों का निशाना बनाएँ?॥ ६॥

(दुःखपूर्वक कुछ चलकर) विघ्न दूर हो जाने के पश्चात् मुनियों द्वारा यथेच्छ घूमने-फिरने की अनुमति मिल जाने पर मैं कहाँ जाकर अपने मन को प्रसन्न करूँ? प्रिया (शकुन्तला) के दर्शन के अतिरिक्त और कोई आश्रयस्थान मुझे तो नहीं सूझता। तो चलूँ उसी को ढूँढूँ। (ऊपर देखकर) इस भयंकर ऊष्मा के समय लतामण्डपों से वेष्टित मालिनी नदी के

O' cupid! daily having false fancies I have increased you too much, in this condition, is it proper for you to target your arrows on me drawing your bow close to the ear? (6)

(Walking round in fatigue) Where indeed can I, who am allowed to wander as per my desire, by the ascetics, being their sacrifical rite concluded without any obstacle, divert my fatigued self? I feel, there is no resort for me except a sight of my beloved. I shall just seek her. *(Looking up or at the sun)* Probably, Śakuntalā

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गमयति। भवतु, तत्रैव तावद् गच्छामि। (परिक्रम्यावलोक्य च) अनया बालपादपवीथ्या सुतनुरचिरं गतेति तर्कयामि। कुतः—

सम्मीलन्ति न तावद्बन्धनकोषास्तयावचितपुष्पाः।
क्षीरस्निग्धाश्चामी दृश्यन्ते किसलयच्छेदाः॥७॥

त्युग्रतपा ताम् उग्रतपाम्=प्रखरतापयुताम्, वेलाम्=समयम्, लतावलयवत्सु=लतामण्डपवेष्टितेषु, मालिनीतीरेषु=मालिनी नाम नद्याः तटभूमिषु, तत्रभवती=माननीया, शकुन्तला=कण्वदुहिता, प्रायेण=अधिकतरम्, ससखीजना, गमयति=गच्छति, यापयति, भवतु=अस्तु, तावद्, तत्रैव=स्निग्ध-छायायुते पुलिने, गच्छामि। (परिक्रम्य=सञ्चारमुपन्यस्य, च=तथा, अवलोक्य=दृष्ट्वा) सुतनु=शोभनाङ्गी सा शकुन्तला, अनया=परिदृश्यमानया, बालपादपवीथ्या=नवीनतरुलतापरिसरमार्गेण (बालाश्च ते पादपाः बालपादपास्तेषां वीथिस्तया), अचिरम्=अधुनैव, गता इति तर्कयामि=विभावयामि। कुतः=कथं विभावयामि? इत्यस्य हेतुमुत्थापयति—

अन्वयः—तया अवचितपुष्पाः अमी बन्धनकोषाः न तावत् सम्मीलन्ति, (तथा) अमी किसलयच्छेदाः क्षीरेण स्निग्धाः दृश्यन्ते॥७॥

क्षीरेति। तया=शकुन्तलया, अवचितानि=कराभ्यां लूनानि, पुष्पाणि=कुसुमानि, येषां ते अवचितपुष्पाः, अमी=परिदृश्यमानाः, बन्धनकोषाः=पुष्पबन्धनाधारभूता वृन्तोदर्ध्वभागाः, न तावत्=नेदानीमपि, सम्मीलन्ति=सङ्कुचन्ति, (तथा) अमी=परिदृश्यमानाः, किसलयच्छेदाः=पल्लवखण्डाश्च, क्षीरेण=निर्यासने, स्निग्धाः=सस्नेहाः, दृश्यन्ते=उपलक्ष्यन्ते। अत्र स्वभावोक्तिः समुच्चयालङ्कारश्च। आर्य्या जातिः॥७॥

भावार्थः—सुतन्वा शकुन्तलया अवचितपुष्पाः (अत एव) एतेषां परिदृश्यमानाः पुष्पबन्धनाधारभूता वृन्तोदर्ध्वभागा इदानीमपि न सङ्कुचन्ति तथा पल्लवखण्डाश्च क्षीरेण स्निग्धाः दृश्यन्ते (सुचिरं पत्रत्रोटने तु तत्प्रवृत्तनिर्य्यासशोषणसम्भवाद्रुक्षतैवाऽभविष्यदिति भावः), अत एव विभावयामि यत् अचिरादेव सा स्थानादस्मात् प्रतिनिवृत्ता इति॥७॥

तट पर शकुन्तला-प्रायः अपनी सखियों के साथ जाती है। अच्छा, तो वहीं जाता हूँ। (घूमकर और देखकर) इस छोटे-छोटे वृक्षों की प्रगदण्डी से वह कोमलाङ्गी शकुन्तला अभी-अभी गई है, मुझे ऐसा आभास हो रहा है, क्योंकि—

जिन वृन्तों से उसने फूल तोड़े हैं वे अभी भी संकुचित नहीं हुए हैं एवं पत्रखण्ड भी अभी तक दूध से चिकने बने हुए हैं (अतः वह अभी यहाँ से गई है यह प्रतीत होता है।)॥७॥

is passing this time of intense heat on the banks of the Mālinī river possessed of bowers of creepers, together with her friends. Ther I shall just go. *(Walking round and observing)* I guess, that by this footpath, covered with tiny trees, that charming lady has recently gone. Because—

From which foot-stalks she had plucked the flowers, still those are not closed and the leaves too are greasy with its flowing milk or exudation. (7)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(स्पर्शं रूपयित्वा) अहो! प्रवातसुभगोऽयं वनोद्देशः।

शक्योऽरविन्दसुरभिः कणवाही मालिनीतरङ्गाणाम्।
अङ्गैरनङ्गतप्तैर्निर्दयमालिङ्गितुं पवनः॥ ८॥

(विलोक्य) हन्त! अस्मिन् वेतसलतामण्डपे सन्निहितया शकुन्तलया भवितव्यम्। तथाहि—

अभ्युन्नता पुरस्तादवगाढा जघनगौरवात् पश्चात्।
द्वारेऽस्य पाण्डुसिकते पदपङ्क्तिर्दृश्यतेऽभिनवा॥ ९॥

(स्पर्शं=वातस्पर्शम्, रूपयित्वा=अभिनीय) अहो! इति हर्षे विस्मये वा, अयं= परिदृश्यमानः, वनोद्देशः=वनैकभागः, प्रकृष्टः=प्रभूतः, वातः=मारुतः, यत्र प्रवातः, अत एव सुभगः=सुखकरः, अथवा प्रवातेन=तादृशगुणशालिना वातेन, सुभगः=मनोहरः (अस्तीति शेषः)।

अन्वयः—अरविन्दसुरभिः तथा मालिनीतरङ्गाणां कणवाही पवनः अनङ्गतप्तैः अङ्गैः निर्दयम् आलिङ्गितुं शक्यः॥ ८॥

शक्य इति। अरविन्दानाम्=कमलानाम्, सुरभिः=सुगन्धिः, इति अरविन्दसुरभिः, तथा मालिन्याः=तन्नामसरितः, तरङ्गाणाम्=वीचीनाम्, कल्लोलानाम्, कणवाही=जलबिन्दुः, परागकण-वाहीश्च (शैत्यसुरभिः सम्पन्नः), पवनः=मारुतः, अनङ्गेन=कामेन, तप्तैः=सन्तप्तैः (कामजनितदाह-युक्तैः), अङ्गैः=शरीरावयवैः, निर्दयं=गाढम्, आलिङ्गितुं=परिसेवितुम्, शक्यः=योग्यः। अत्र गम्योत्प्रेक्षा स्वभावोक्तिश्च। आर्य्या जातिः॥ ८॥

भावार्थः—मया दुष्यन्तेन कमलसुरभिः मालिनीतरङ्गकणवाही शीतलमन्दसुगन्धितवातः कामजनितदाहयुक्तैः शरीरावयवैः आतृप्ति परिसेवितुं योग्यः। रमणीयेऽस्मिन् वनोद्देशे शीतलमन्द-सुगन्धितवायुना एवं कामजनितदाहपीडितः मदीयः शरीरः किञ्चिच्छर्म प्राप्स्यतीति मन्ये॥ ८॥

(विलोक्य=दृष्ट्वा) हन्त=इति हर्षे, अस्मिन्=परिदृश्यमाने, वेतसलतामण्डपे=वेत्रवल्ली-विरचितमण्डपे, सन्निहितया=अवस्थितया, शकुन्तलया=मुनिकन्यया, भवितव्यम्। तथाहि—

(स्पर्श का अभिनय करके) अरे! वन के इस भाग में बड़ी अच्छी वायु प्रवाहित हो रही है (अथवा शीतल मन्द सुगन्ध वायु के कारण यह वन-भाग अतीव सुखकर हो रहा है।)

कमलों के स्पर्श से सुगन्धित, मालिनी की लहरों के कणों को उड़ाने के कारण शीतल वायु का काम सन्तापित अङ्गों द्वारा गूढ़ आलिङ्गन करने के लिए मैं सर्वथा योग्य हूँ॥ ८॥

(देखकर) अच्छा, इस बेंत के लतामण्डप में शकुन्तला को अवश्य होना चाहिए; क्योंकि—

(feigning touch) Oh! how delightful is this place of forest by (reason of) the fresh breeze.

It is possible for me to embrace closely the breeze, fragrant with lotuses and wafting particles of the waves of the Mālinī river, with limbs inflamed by love. (8)

(Observing) Most probably she is present in this bower of creepers, enclosed by canes. For—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यावद्विटपान्तरेणावलोकयामि। (तथा कृत्वा सहर्षम्) अये! लब्धं नेत्रनिर्वाणम्। एषा मनोरथप्रिया मे सकुसुमास्तरणं शिलापट्टमधिशयाना सखीभ्यामुपास्यते। भवतु, लताव्यवहितः शृणोमि विश्वस्तकथितान्यासाम्। (इति विलोकयन् स्थितः।)

अन्वयः—अस्य पाण्डुसिकते द्वारे पुरस्तात् अभ्युन्नता पश्चात् जघनगौरवात् अवगाढा अभिनवा पदपंक्तिः दृश्यते ॥ ९ ॥

अभ्युन्नतेति। अस्य=लतामण्डपस्य, पाण्डुः सिकता यस्मिन् तस्मिन् पाण्डुसिकते=पाण्डुरवर्णबालुकाविशिष्टे, द्वारे=प्रवेशमार्गे, पुरस्तात्=पादाग्रभागे, अभ्युन्नता=कियदंशेन समुन्नता, तथा पश्चात्=पार्ष्णिभागे, जघनस्य=श्रोणीपुरोभागस्य, गौरवात्=गुरुत्वाद्, अवगाढा=किञ्चिन्निम्ना, अभिनवा=सद्यः चिह्निता, पदपंक्तिः=चरणन्यासजन्यचिह्नश्रेणी, दृश्यते=विलोक्यते (अत एव तया अत्रैव भवितव्यम्)। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः, साध्यस्य प्रतीतेरनुमानञ्च। आर्य्या जातिः ॥ ९ ॥

भावार्थः—अस्य लतामण्डपस्य पाण्डुसिकते द्वारे वर्तमाना अभिनवा पदपंक्तिः पादाग्रभागे अभ्युन्नता तथा पार्ष्णिभागे गौरवात् किञ्चिन्निम्ना प्रगटयति यत् शकुन्तलया अत्रैव भवितव्यम् ॥ ९ ॥

यावत्=यावत्कालपर्यन्तम्, विटपान्तरेण=शाखावकाशेन, अवलोकयामि=पश्यामि। (तथा कृत्वा=तथैव विधाय, सहर्षम्) अये=इति हर्षे, नेत्रयोः=नयनयोः, निर्वाणम्=निवृत्तिः, नेत्रनिर्वाणम्, लब्धम्=प्राप्तम्। एषा, मे=मम, मनोरथेन=अभिलाषामात्रेणैव, प्रिया=हृदयवल्लभा (अपरिणीतत्वाद् न तु तत्त्वेन कल्पिता) मनोरथप्रिया, कुसुमान्येवास्तरणम्=उत्तरच्छदः, तेन सह वर्त्तत इति तत् सकुसुमास्तरणम्, शिलापट्टम्=पाषाणखण्डम्, अधिशयाना=अधितिष्ठन्ती, सखीभ्याम्=अनसूया-प्रियंवदाभ्याम्, उपास्यते=शुश्रूष्यते। भवतु, लतया व्यवहितः लताव्यवहितः=लतापृष्ठे गोपित-सर्वावयवः, आसाम्=अनसूयाप्रियंवदाभ्यां सह शकुन्तलायाः, विश्वस्तकथितानि=रहस्यवार्त्ताः, शृणोमि=श्रोष्यामि (इति=एवं, विलोकयन्=पश्यन्, स्थितः)।

इस लतामण्डप के द्वार की उज्ज्वल बालुका-राशि पर आगे की ओर ऊँची तथा जघनभाग के भार से पीछे की ओर झुकी हुई पदपंक्ति दिखायी दे रही है ॥ ९ ॥

तब तक वृक्षों की आड़ से देखूँगा। (**वैसा करके हर्षपूर्वक**) ओ! नेत्रों को मोक्ष (आनन्द) मिल गया। यह मेरी हृदयवल्लभा फूलों के बिस्तर से ढँकी चट्टान पर लेटी हुई है और दोनों सखियाँ उसकी सेवा कर रही हैं। अच्छा, लता के पीछे छिपकर इनकी विश्वासपूर्ण (गोपनीय) बातें सुनूँ। (**देखता हुआ खड़ा हो जाता है।**)

At its entrance, where there is white sand, appears a fresh line of foot-steps, raised infront and depressed behind owing to the heaviness of the buttocks. (9)

I shall just observe through the interstice of the branches. *(Walking round and doing the same joyfully)* Ah! I obtained the highest delight of my eyes. Here the dearest of my desire, lying on a slab of stone, possessing a covering of flowers, is being served upon by her two friends. Well, I shall hear their confidential utterances. *(Stands gazing)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति यथोक्तव्यापारा सह सखीभ्यां शकुन्तला)

सख्यौ—(उपवीज्य) हला सउंतले! अवि सुहाअदि दे णलिणीवत्तवादो? [हला शकुन्तले! अपि सुखयति ते नलिनीपत्रवातः?]

शकुन्तला—(सखेदम्) किं वीजअंति मं पियसहीओ? [किं वीजयतो मां प्रियसख्यौ?]

(सख्यौ सविषादं परस्परमवलोकयतः।)

राजा—बलवदसुस्थशरीरा तत्रभवती दृश्यते। (सवितर्कम्) तत् किमयमातपदोषः स्यात्, उत यथा मे मनसि वर्त्तते। (साभिलाषं निर्वर्ण्य) अथवा कृतं सन्देहेन—

(ततः=तदनन्तरम्, यथोक्तः व्यापारो यस्याः सा यथोक्तव्यापारः=यथानिर्दिष्टव्यापारा, शकुन्तला=कण्वपुत्री, सखीभ्याम्=अनसूयाप्रियंवदाभ्यां सह, प्रविशति=रङ्गे समायाति, उपस्थिता भवति।)

सख्यौ—(उपवीज्य=व्यजनं कृत्वा) हला शकुन्तले! अपि=प्रश्ने, ते=तव (तुभ्यम्), नलिनीपत्रवातः=कमलिनीदलवीजनजनितपवनः, सुखयति=सुखमुत्पादयति?

शकुन्तला—(सखेदम्=खेदपूर्वकम्) प्रियसख्यौ! मां=शकुन्तलाम्, किं वीजयतः=व्यजनं कुरुतः? (किमित्यादि नायिकोक्त्या वीजनादिकं तया न ज्ञातम् इति 'मूर्च्छावस्था सूचिता' इति केचित्।)

(सख्यौ सविषादं=विषण्णतापूर्वकं, परस्परम्=अन्योन्यं, अवलोकयतः=पश्यतः।)

राजा—(शकुन्तलायास्तथाविधामवस्थां सख्योश्च तादृशीं प्रवृत्तिञ्चावलोक्याह) बलवत्=अधिकम्, असुस्थं=सुस्थतारहितं, शरीरं यस्याः सा असुस्थशरीरा, तत्रभवती=मान्या

(इसके बाद पूर्वोक्त व्यापार युक्त शकुन्तला सखियों के साथ मञ्च पर आती है)

दोनों सखियाँ—(पंखा झलकर) सखी शकुन्तला! कमल के पत्तों की हवा तो अच्छी लगती है न?

शकुन्तला—(खेदपूर्वक) सखियो! आप दोनों क्या झल रही हैं?

(दोनों सखियाँ विषादपूर्वक एक-दूसरी को देखती हैं।)

राजा—मान्या शकुन्तला का शरीर अतीव अस्वस्थ दिखाई पड़ रहा है। (तर्क-वितर्क करते हुए) तो क्या यह लू लगने के कारण है अथवा जैसे मेरे मन में कामजन्य सन्ताप है, उसी प्रकार इसे भी है? (चावपूर्वक देखकर) अथवा सन्देह करना व्यर्थ है।

(Then enter Śakuntalā engaged as described with her two girl friends)

Both friends—(Having fanned her) Dear Śakuntalā! does the air of lotus-leaves give you pleasure?

Śakuntalā—What! are my friends fanning me?

(Both girl-friends gesticulating sorrow, stare at each other)

King—Śakuntalā appears to be unwell. *(With a guess)* Can

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्तनन्यस्तोशीरं प्रशिथिलमृणालैकवलयं
प्रियायाः साबाधं तदपि कमनीयं वपुरिदम्।
समस्तापः कामं मनसिजनिदाघप्रसरयो-
र्न तु ग्रीष्मस्यैवं सुभगमपराद्धं युवतिषु॥ १०॥

शकुन्तला, दृश्यते=शयनवीजनादिना ज्ञायते। (सवितर्कम्=सविकल्पं तर्कयति) तत्=अस्वास्थ्यम्, किमयम्=दृश्यमानमस्वास्थ्यम्, आतपस्य=ग्रीष्मस्य, दोषः, आतप एव दोष इति वा, किं स्यादिति सम्भावनायाम्, उत=अथवा, यथा मे मनसि वर्त्तते=यौवनाविर्भावान्मदजनितसन्ताप एवायमिति यन्मया सम्भावितं तथैव तत् स्यादिति भावः। (साभिलाषं=सस्पृहं, निर्वर्ण्य=निरीक्ष्य) अथवा, सन्देहेन=संशयेन, कृतम् अलम्=नास्त्यत्र सन्देहलेशावसर इति भावः।

अन्वयः—स्तनन्यस्तोशीरं प्रशिथिलमृणालैकवलयं प्रियायाः इदं वपुः साबाधं तदपि कमनीयं मनसिजनिदाघप्रसरयोः तापः समः कामं तु युवतिषु ग्रीष्मस्य अपराद्धम् एवं न॥ १०॥

स्तनेति। स्तनयोः=कुचयोः, न्यस्तं=दत्तम् (तापोपशमनायेति भावः), उशीरं=नलदानुलेपः, यत्र तत्तादृशम्, तथा प्रशिथिलं=देहदौर्बल्यातिशयात् श्लथीभूतं, मृणालः=पद्मखण्डमेव, एकम्= अनन्यं, वलयं यत्र तत् प्रशिथिलमृणालैकवलयम्, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, इदं=परिदृश्यमानम्, वपुः=शरीरम्, साबाधम्=पीडया सहितं वर्त्तते, तदपि=सरुजं प्रतीयमानमपि, कमनीयम्=मनोहरमेव दृश्यते। मनसिजः=कामः, निदाघः=ग्रीष्मः, तयोः प्रसरौ=वेगौ, तयोः मनसिजनिदाघप्रसरयोः, तापः=दाहः, समः=तुल्यः, कामम्=इत्यनुमतम्। तु=किन्तु, युवतिषु=तरुणीषु, ग्रीष्मस्य=निदाघस्य, अपराद्धं=तापकष्टप्रदत्वादपराधः, एवम्=ईदृशम्, सुभगं=सौन्दर्याधायकत्वात्सम्पादकम् न भवति॥ १०॥

भावार्थः—तापोपशमनाय स्तनन्यस्तनलदानुलेपनं तथा देहदौर्बल्यातिशयात् प्रशिथिल-मृणालैकवलयमण्डितम् इदं परिदृश्यमानं शकुन्तलायाः शरीरं पीडया सहितमपि कमनीयमेव प्रतिभाति। मनसिजनिदाघप्रसरयोः दाहतुल्य इत्यनुमतम्, किन्तु तरुणीषु विषये ग्रीष्मस्य अपराद्धम् एवं सुभगं—सौन्दर्याधायकत्वात्सम्पादकं न भवति। अस्याः कामतापेनैवेदमस्वास्थ्यमिति भावः। अत्र व्यतिरेकाऽलङ्कारः, केचित्तु—कामप्रकृतिकत्वेनानुमीयमानत्वादनुमानालङ्कार इति। शिखरिणी नाम वृत्तम्॥ १०॥

वक्ष (स्तनों) पर खस का लेप किया हुआ है, मृणाल (कमलनाल) से निर्मित कंगन ढीला पड़ गया है। यद्यपि इसका शरीर अत्यधिक पीड़ायुक्त है तथापि सुन्दर दिखाई देता है। काम और ग्रीष्म दोनों का ताप समान है, यह मैं मानता हूँ तथापि ग्रीष्म तरुणियों पर इस प्रकार का सुन्दर अपराध नहीं कर सक... ॥ १०॥

---

this then be the fault of excess heat or sunstock or is it as in my mind *(Observing with a longing)* or, away with doubt.

Indeseribably charming is this distressed form of my beloved with the Uśeera applied to the bosom and with the single bracelet of lotus-stalk loose. Granted that the suffering caused by love and advance of summer is similar; but injury is not inflicted uopn young maidens by the summer in such a charming way:.(10)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्) अंणसूए! तस्स राएसिणो पढमदंसणादो आरंभिअ पज्जुच्छुअमणा सउंतला; ण क्खु से अण्णणिमित्तो आतंको भवे। [अनसूये तस्य राजर्षेः प्रथमदर्शनादारभ्य पर्युत्सुकमनाः शकुन्तला; न खल्वस्या अन्यनिमित्त आतङ्को भवेत्।]

अनसूया—सहि! मम वि एआरिसी आसंका हिअअस्स। भोदु, पुच्छिस्सं दाव णं। (प्रकाशम्) सहि! पुच्छिदव्वासि किं पि। वलीओ क्खु दे अंगाणं संदावो। [सखि! ममापि एतादृशी आशङ्का हृदयस्य भवतु, प्रक्ष्यामि तावदेनाम्। सखि! प्रष्टव्याऽसि किमपि। बलीयान् खलु ते अङ्गानां सन्तापः।]

राजा—वक्तव्यमेव—

शशिकरविशदान्यस्यास्तथाहि दुःसहनिदाघशंसीनि।
भिन्नानि श्यामिकया मृणालनिर्म्माणवलयानि॥ ११॥

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्=सख्याः कर्णे) अनसूये! तस्य=पूर्वोक्तस्य, राजर्षेः=दुष्यन्तस्य, प्रथमदर्शनादारभ्य, पर्य्युत्सुकमनाः=कामेनोत्कण्ठमाना, शकुन्तला=अस्मत्सखी, खलु=इति निश्चयेन, अस्याः=शकुन्तलायाः, अन्यन्निमित्तः=निदानं, यस्य सोऽन्यनिमित्तः, आतङ्कः=सन्तापः, न भवेत् इति तर्कयामि।

अनसूया—सखि! ममापि हृदयस्येति सम्बन्धः। एतादृशी=राजर्षेर्दर्शनात् प्रभृति पर्य्युत्सुकमनस्त्वेन शकुन्तलाया राजर्षिनिमित्तकोऽयमातङ्कः, इति आशङ्का=वितर्कः। भवतु, तावदेनाम्=शकुन्तलाम्, प्रक्ष्यामि। (प्रकाशम्=इति मनसि विचार्य्य पृच्छति) सखि=शकुन्तले! किमपि प्रष्टव्यासि=त्वत्सकाशाद् किमप्यहं ज्ञातुमिच्छामि इति भावः, ते=तव, अङ्गानाम्=अवयवानां, सन्तापः=पीडा, बलीयान्=प्रबलतरः, खलु (अतो द्रष्टव्यत्वमिति भावः)।

राजा—वक्तव्यमेव=अङ्गानां सन्तापः बलीयान् इत्येवं प्रष्टव्यमेव।

प्रियंवदा—(धीरे से) अनसूये! उन राजर्षि के प्रथम दर्शन से ही शकुन्तला उत्कंठित है, उसे इसके अतिरिक्त अन्य सन्ताप हो ही नहीं सकता।

अनसूया—सखी! मेरे हृदय में भी इसी प्रकार की आशंका है। अच्छा तो इसी से पूछती हूँ। सखी! मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ, क्योंकि तुम्हारे अङ्गों में भयंकर सन्ताप हो रहा है।

राजा—पूछना ही चाहिए। क्योंकि—

चन्द्र-रश्मियों के समान इसके उज्ज्वल मृणालकङ्कण काले होकर दुःसह सन्ताप को सूचित कर रहे हैं।

Priyaṁvadā*—*(Aside) From very begining of the first sight of that royal sage, Śakuntalā is as though uneasy. May it indeed be that this condition of her is on that account only.

Anasūyā—Dear! I also have the same doubt. Well, I shall ask from her only. *(Loudly)* Dear! I want to ask you something because your limbs are suffering excessively.

King—She must be enquired. For—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(पूर्वार्द्धेन शयनादुत्थाय) हला! भण, जं वत्तुकामाऽसि। [हला! भण, यद् वक्तुकामाऽसि।]

अनसूया—हला सउंतले! अलब्भंतरा अम्हे दे मणोगदस्स वुत्तंतस्स; किंतु जादिसी इदिहासकधाणुबंधेसुं कामिअणाणं अवत्था सुणीअदि, तादिसी तुह त्ति तक्केमि। ता कधेहि किं निमित्तं दे अअं आआसत्ति। विआरं परमत्थदो अआणिअ अणारंभो किल पदीआरस्स। [हला शकुन्तले! अलब्धान्तरा वयं ते मनोगतस्य वृत्तान्तस्य; किन्तु यादृशी इतिहासकथानुबन्धेषु कामिजनानामवस्था श्रूयंते, तादृशी तवेति तर्कयामि। तत् कथय, किन्निमित्तं ते अयम् आयास इति। विकारं परमार्थतः अज्ञात्वा अनारम्भः किल प्रतीकारस्य।]

अन्वयः—तथाहि शशिकरविशदानि अस्याः मृणालनिर्माणवलयानि श्यामिकया भिन्नानि दुःसहनिदाघशंसीनि॥ ११॥

शशिकरेति। तथाहि=तेन एव रूपेण, शशिनः=चन्द्रस्य, कराः=रश्मय इव, विशदानि=स्वच्छानि, अस्याः=शकुन्तलायाः, मृणालनिर्माणवलयानि—मृणालैः निर्माणं येषां तानि च तानि वलयानि चेति=बिसनिर्मितकङ्कणानि, श्यामिकया=अङ्गतापजनितकृष्णरेखया, भिन्नानि=संसक्तानि सन्ति, दुःसहनिदाघशंसीनि—दुःसहं निदाघं शंसन्ति=द्योतयन्तीति दुःसहनिदाघशंसीनि=असह्य-सन्तापसूचकानि संवृत्तानि। अत्र लुप्तोपमा, उत्तरार्द्धे वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्, अनुमानमित्यपरे। आर्या जातिः॥ ११॥

भावार्थः—तेन एव रूपेण चन्द्ररश्मय इव स्वच्छानि अस्याः शकुन्तलायाः बिस निर्मित-कङ्कणानि अङ्गतापजनितकृष्णरेखया भिन्नानीव प्रतीयन्ते तथा च ते दुःसहसन्तापसूचकान्यपि संवृत्तानि॥ ११॥

शकुन्तला—(पूर्वार्द्धेन=शरीरस्य पूर्वभागेन, शयनादुत्थाय=शय्यायाः उत्थाय) हला=सखि! भण=कथय, यत्=किमपि, वक्तुकामासि=वक्तुमिच्छसि।

अनसूया—हला शकुन्तले! न लब्धं=न परिज्ञातम्, अन्तरं=तत्त्वं, याभिस्ताः अलब्धान्तरा=अनवगतरहस्या, वयं, ते=तव, मनोगतस्य=हृदयस्थितस्य, वृत्तान्तस्य=विषयस्य,

---

शकुन्तला—(शरीर का अगला भाग शय्या से ऊपर उठाकर) सखी! बोलो, क्या कहना चाहती हो?

अनसूया—सखी शकुन्तला! तुम्हारे मनोगत भावों में प्रवेश कर पाने में तो मैं असमर्थ हूँ, किन्तु ऐतिहासिक कथाओं में कामियों की जो दशा सुनी जाती है, वैसी ही दशा तुम्हारी भी प्रतीत होती है। इस स्थिति में तुम्हीं बताओ कि तुम्हारा यह सन्ताप किस कारण

Her bracelet of lotus stalk, bright as moon rays, turning black, informing her excessive suffering.

Śakuntalā—*(Raising her front portion from her bed)* Dear! speak, what ever you want to speak.

Anasūyā—Dear Śakuntalā, though I am unable to enter into your hearty thoughts, but as I heard in the historical stories, about the conditions of lovers or lustful person, I find your condition to be very similar. In this condition please let me know the reason of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अनसूययाऽपि मदीयस्तर्कोऽवगतः।

शकुन्तला—बलीओ आआसो, ण सक्कणोमि सहसा णिवेदिदुं। [बलीयानायासः, न शक्नोमि सहसा निवेदयितुम्।]

प्रियंवदा—सुठ्ठु क्खु एसा भणादि, किं एदं अत्तणो उबद्दवं णिगूहसि, अणुदिअसं क्खु परिहीअसि। अंगेसु लावण्णमई छाआ केवलं तुमं ण मुंचदि। [सुष्ठु खल्वेषा भणति, कमेतमात्मन उपद्रवं निगूहसि, अनुदिवसं खलु परिहीयसे। अङ्गेषु लावण्यमयी छाया केवलं त्वां न मुञ्चति।]

किन्तु=तथापि, यादृशी, इतिहासकथानाम्=पुरावृत्तोपाख्यानानाम्, अनुबन्धेषु=गोष्ठीषु, कामिजनानां=कामपीडितानाम्, अवस्था=दशाविशेषः, श्रूयते=आकर्ण्यते, तादृशी अवस्था, तवेति=तवास्ति, इति=इत्थम्, तर्कयामि=सम्भावयामि। तत्=तस्मात्, कथय=ब्रूहि, किन्निमित्तं=किमर्थम्, ते=तव, अयम्=पुरतः दृश्यमानः, आयासः=शरीरसन्तापः, परमार्थतः=तत्त्वतः, विकारं=रोगम्, अज्ञात्वा=अविज्ञाय, प्रतीकारस्य=चिकित्सायाः, अनारम्भः=आरम्भो नास्ति, किलेति प्रसिद्धौ।

राजा—अनसूयापि, मदीयस्तर्कः=सन्तापः, काममूलक इत्यभ्यूहः, अवगतः=परिज्ञातः, मम यथैव सम्भावनाऽस्ति तथैवानया पृच्छ्यत इति भावः।

शकुन्तला—बलीयान्=बलवत्तरः, आयासः=सन्तापः, सहसा=अकस्मादेव, सत्वरेति भावः, निवेदयितुम्=तत्त्वतो ज्ञापयितुम्, न शक्नोमि=न समर्था भवामि।

प्रियंवदा—एषा=अनसूया, सुष्ठु=युक्तियुक्तं, भणति=कथयति, खलु इति निश्चयेन, किमेतम्, आत्मनः=स्वस्य, उपद्रवं=विकारम्, निगूहसि=संवृणोषि (नैतदयुक्तमिति), अनुदिवसं=प्रतिदिनम्, परिहीयसे=क्रमशः क्षीयसे, खलु, अङ्गेषु=अवयवेषु, लावण्यं=प्रकृतं, यत्र सा लावण्यमयी=लावण्यप्रचुरा, छाया=कान्तिः, केवलं=मात्रं, त्वाम्, न मुञ्चति=न परित्यजति।

राजा—प्रियंवदा, अवितथं=सत्यम्, आह=ब्रवीति। तथाहि—

है ? जब तक भलीभाँति विकार का परिज्ञान न हो जाय तब तक उसका प्रतिकार किया ही नहीं जा सकता।

राजा—अनसूया भी मेरे विचार जान गयी है।

शकुन्तला—बड़ा सन्ताप है, सहसा उसे बता पाने में मैं भी असमर्थ हूँ।

प्रियंवदा—यह ठीक ही तो कह रही है। तुम अपना उपद्रव (रोग) छिपा क्यों रही हो ? तुम दिन-दिन घुलती जा रही हो। केवल लावण्यमयी छाया तुम्हें नहीं छोड़ रही है।

राजा—प्रियंवदा सत्य कह रही है। क्योंकि—

---

your suffering? Before proper diagnosis a remedy or treatment can not be prescribed.

King—Anasūyā has recongnised my idea too.

Śakuntalā—Too much suffering is mine, I am unable to describe it atonce.

Priyaṁvadā—What she says is very correct. Why do you hide your suffering? Day by day you are slimming. Only loveliness (beauty) of your limbs is not separating from you.

King—Priyaṁvadā is very correct. Because—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अवितथमाह प्रियंवदा। तथाहि—

क्षामक्षामकपोलमाननमुरः काठिन्यमुक्तस्तनं
मध्यः क्लान्ततरः प्रकामविनतावंसौ छविः पाण्डुरा।
शोच्या च प्रियदर्शना च मदनग्लानेयमालक्ष्यते
पत्राणामिव शोषणेन मरुता स्पृष्टा लता माधवी॥ १२॥

शकुन्तला—(निश्वस्य) कस्स वा अण्णस्स कधइस्सं, किंतु आआसहेतुआ वो भविस्सं। [**कस्य वा अन्यस्य कथयिष्यामि, किन्तु आयासहेतुका वो भविष्यामि।**]

अन्वयः—आननं क्षामक्षामकपोलम् उरः काठिन्यमुक्तस्तनं मध्यः क्लान्ततरः अंसौ प्रकामविनतौ छविः पाण्डुरा अत एव मदनग्लाना इयं पत्राणां शोषणेन मरुता स्पृष्टा माधवी लता इव शोच्या च प्रियदर्शना च आलक्ष्यते॥ १२॥

क्षामेति। आननम्=शकुन्तलायाः मुखम्, क्षामक्षामौ=अतिशयेन क्षीणौ, कपोलौ=गण्डौ, यस्य तत् क्षामक्षामकपोलमाननम्, तथा उरः=वक्षःस्थलम्, काठिन्यमुक्तौ=काठिन्येन रहितौ, स्तनौ यस्य तत् काठिन्यमुक्तस्तनम्, तथा मध्यः=कटिदेशः, अतिशयेन क्लान्त इति क्लान्ततरः= नितरां दुर्बलः, तथा अंसौ=स्कन्धौ, प्रकामविनतौ=प्रकर्षेणावनतौ, तथा छविः=देहकान्तिः, पाण्डुरा= पाण्डुवर्णा, अत एव मदनग्लाना=कामविकृता, इयं शकुन्तला, पत्राणां=पल्लवानां, शोषणेन=सारशोषं कुर्वता, मरुता=वायुना, स्पृष्टा=लङ्घिता, माधवी लता इव=तन्नाम वल्लीव, शोच्या=शोचनीया च, प्रियं=मनोज्ञं, दर्शनं=प्रतिकृतिः, यस्याः सा प्रियदर्शना च, आलक्ष्यते= परिदृश्यते।

अत्र शोच्या च प्रियदर्शना चेति विरोधाभासः, मदनेन क्लिष्टेति शोच्यत्वे हेतुत्वोपादनात् काव्यलिङ्गम् उपमा च, स्वभावोक्तिरिति केचित्। केचित् आननादेर्बहुविधहेतोरुपन्यासात् समुच्चयालङ्कार इति। शब्दालङ्कारोऽनुप्रासोऽत्र। शार्दूलविक्रीडितं छन्दः॥ १२॥

भावार्थः—शकुन्तलायाः मुखम् अतिशयक्षीणकपोलयुक्तमस्ति तथा वक्षःस्थलं सर्वथा काठिन्यरहितं-उरोजयुक्तमस्ति। कटिप्रदेशस्तु क्लान्ततरः तथा स्कन्धौ प्रकर्षेणावनतौ। देहकान्तिस्तु पाण्डुरा इव प्रतिभाति। अत एव कामविकृता इयं शकुन्तला सारशोषं कुर्वता मरुता स्पृष्टा माधवीवल्लीव शोच्या प्रियदर्शना च आलक्ष्यते॥ १२॥

शकुन्तला के मुखमण्डल के दोनों कपोल भीतर धँस गये हैं। वक्षःस्थल के स्तन कठोरता-हीन हो गये हैं। कटिप्रदेश दुर्बल हो गया है। कन्धे अत्यधिक झुक गये हैं। शरीर की कान्ति पीली पड़ गयी है। इस प्रकार पत्तों को सुखाने वाली हवा के लगने से मुरझाई हुई माधवीलता के समान यह शकुन्तला भी शोचनीय तथा दर्शनीय उभयरूपा दिखायी देती है॥ १२॥

The cheeks of Śakuntalā have emaciated (became lean), the thickness of the breasts of the chest totally disappeared. The middle portion of her body i.e. the loins or buttocks withered (faded), the shoulders have bent down. The complexion has became very pale. Thus, by the touches of emaciating breeze as appears Mādhavī creeper very attractive and deplorable accordingly this Śakuntalā too appears pleasing and pitiable due to sickness of passion. (12)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—सहि! जेव णिब्बंधो। सिणिद्धजणसंविभत्तं क्खु, दुक्खं सज्जवेअणं भोदि। [सखि! अत एव निर्बन्धः। स्निग्धजनसंविभक्तं खलु दुःखं सह्यवेदनं भवति।]

राजा—

पृष्टा जनेन समदुःखसुखेन बाला
नेयं न वक्ष्यति मनोगतमाधिहेतुम्।
दृष्टो विवृत्य बहुशोऽप्यनया सतृष्ण-
मत्रोत्तरश्रवणकातरतां गतोऽस्मि॥ १३॥

शकुन्तला—(निश्वस्य) अन्यस्य=युवाभ्यामपरस्य, कस्य=जनस्य (समीपे), कथयिष्यामि=न कस्यापीत्यर्थः। किन्तु आयासहेतुका=समदुःखसुखत्वात् परिश्रमहेतुभूता, वः=युष्माकम्, भविष्यामि। मत्सन्तापस्याशक्यप्रतिक्रियत्वात् युवयोः कृते दुःखप्रदा एव भविष्यामि। अत एव कथयामि इति भावः।

उभे—अनसूया-प्रियंवदे—सखि! अत एव=आवयोः समीपे कथनीयत्वादेव, निर्बन्धः=तवायासनिमित्तं श्रोतुमाग्रहः। खलु=यस्मात्, दुःखं=क्लेशः, स्निग्धजनेषु=वयस्यजनेषु, संविभक्तं=सम्यक् विभज्यार्पितं सत्, सह्या=सोढुं शक्या, वेदना=पीडा, उपभोगः, यस्य तत् सह्यवेदनं=शिथिलं, भवति।

राजा—अन्वयः—समदुःखसुखेन जनेन पृष्टा इयं बाला मनोगतम् आधिहेतुं न वक्ष्यति-किन्तु अनया विवृत्य सतृष्णं दृष्टोऽपि अत्र उत्तरश्रवणकातरतां गतोऽस्मि॥ १३॥

पृष्टा इति। समे=सदृशे, दुःखसुखे यस्य तथाभूतेन, जनेन=सखीद्वयेन, पृष्टा=जिज्ञासिता, इयं बाला=मुग्धा शकुन्तला, मनोगतम्=मनसि विद्यमानम्, आधेः=मनस्तापस्य, हेतुं=कारणम्, न वक्ष्यति=न कथयति। किन्तु अनया=शकुन्तलया, विवृत्य=वदनं परावृत्य, सतृष्णं=सस्पृहं, यथा स्यात्तथा बहुशः=असकृत्, दृष्टोऽपि=एवं वीक्षणेनाहमेवाधिहेतुरिति निश्चिन्वानोऽपि, अत्र=सखी-

---

शकुन्तला—(साँस भरकर) (तुम से नहीं तो) और किससे कहूँगी, किन्तु कहने से तुमलोगों को कष्ट होगा।

दोनों सखियाँ—सखि! इसीलिए तो हम आग्रह करती हैं; क्योंकि अपने प्रियजनों में दुःख बाँट देने से उसकी वेदना सह्य हो जाती है।

राजा—इसके सुख-दुःख में बराबर हिस्सा बँटाने वाली सखियों के कारण पूछने पर यह अपनी मनोगत पीड़ा का कारण नहीं बतायेगी, ऐसा नहीं है अर्थात् अवश्य बतायेगी। किन्तु उस समय इस मुग्धा बाला ने फिर-फिर कर कई बार मुझे देखा था। (अतः मैं ही

Śakuntalā—Friend! To whom else shall I tell? I shall now be a cause of trouble to you.

Both—Just for this reason indeed is our importunity. For, grief, shared with affectionate people becomes tolerable in its poignancy.

King—Questioned by persons who equally share her joy and sorrow, it can not be that this girl will not speak out the cause of her anguish, lying in her mind. Though longingly looked at by her

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—जदोपहुदि तवोवणरक्खिदा सो राएसी मम दंसणपधं गदा……। (इत्यर्द्धोक्तेन लज्जां नाटयति।) [यतःप्रभृति तपोवनरक्षिता स राजर्षिर्मम दर्शनपथं गतः ।……]

उभे—कधेदु कधेदु पिअसही। [कथयतु कथयतु प्रियसखी।]

शकुन्तला—तदा पहुदि तग्गदेण अहिलासेण एआवदवत्थम्हि संवुत्ता। [ततः प्रभृति तद्गतेन अभिलाषेण एतावदवस्थाऽस्मि संवृत्ता।]

उभे—दिट्ठिआ दे अणुरूए वरे अहिलासो। अधवा साअरं उज्झिअ कहिं महाणईए पविसिदव्वं। [दिष्ट्या ते अनुरूपे वरे अभिलाषः। अथवा सागरमुज्झित्वा कस्मिन् महानद्या प्रवेष्टव्यम्।]

प्रश्ने, उत्तरस्य=प्रतिवचनस्य, श्रवणे=श्रवणविषये, कातरताम्=अधीरताम्, गतोऽस्मि=प्राप्तोऽस्मि। अत्र शालात्वेन मनोगतं बहिः प्रकाशयिष्यंत्येवेति हेतुहेतुमद्भावात् काव्यलिङ्गम्। उत्तरार्द्धे विभावनाविशेषोक्त्योः सन्देहसंङ्करः। वसन्ततिलकं नाम वृत्तम्॥ १३॥

भावार्थः—समदुःखसुखेन (सुखदुःखे समभागभूतेन) सखीद्वयेन जिज्ञासिताऽपि इयं बाला शकुन्तला मनसि विद्यमानं मनस्तापहेतुं न कथयति। किन्तु अनया (शकुन्तलया) वदनं परावृत्य सतृष्णं बहुशः वीक्षणेनाहमेवाधिहेतुरिति निश्चिन्वानोऽपि अत्र सखीप्रश्ने, उत्तरस्य श्रवणविषये कातरतां गतोऽस्मि। अधीरतया उत्तरं श्रोतुं कामये॥ १३॥

शकुन्तला—यतःप्रभृति=यत्कालमारभ्य, तपोवनरक्षिता=आश्रमरक्षकः, सः=प्रसिद्धः, राजर्षिः=मुनिकल्पो राजा दुष्यन्तः, मम, दर्शनपथं गतः=दृग्गोचरीभूतः (इत्यर्धोक्ते लज्जां नाटयति= व्रीडाम् अभिनयति)।

उभे—कथयतु कथयतु=प्रमोदातिशयोपलब्ध्या द्विर्वचनम्; प्रियसखी।

शकुन्तला—ततःप्रभृति=तत्कालमारभ्य, तद्गतेन=दुष्यन्तगतेन, अभिलाषेण=कामनया, एतावती=इदमाकारा, अवस्था=दशा, यस्याः सा तथाभूता, संवृत्तास्मि=प्राप्ताऽस्मि।

इसके रोग का कारण हूँ, यह जानते हुए भी) मैं इस समय इसका उत्तर सुनने के लिए अधीर हो रहा हूँ॥ १३॥

शकुन्तला—जब से तपोवन के रक्षक राजर्षि दृग्गोचर हुए हैं…… (आधा वाक्य कहकर लज्जित होने का अभिनय करती है।)

दोनों—प्रिय सखी! कहो-कहो।

शकुन्तला—उसी समय से उन राजर्षिपरक अभिलाषाओं के द्वारा मैं इस अवस्था को प्राप्त हुई हूँ।

---

many times by turning her face. But at this juncture I have become very anxious to hear what she says. (13)

Śakuntalā—Friend! from the very moment that royal sage, the protector of the penance-grove, crossed the path of my sight *(Acts bashfulness, when half said)*

Both—Dear friend! tell, tell (what happened next).

Śakuntalā—From that moment I have been reduced to this condition owing to my desire having turned to him.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सहर्षम्) श्रुतं यच्छ्रोतव्यम्।

स्मर एव तापहेतुर्निर्वापयिता स एव मे जातः।
दिवस इवाभ्रश्यामस्तपात्यये जीवलोकस्य॥ १४॥

शकुन्तला—ता जइ वो अणुमदं तदो तधा पउत्तिदव्वं, जधा तस्स राएसिणो अणुकंपणीआ होमि त्ति। अण्णधा सुमरेध मं। [**तद् यदि वामनुमतम् ततस्तथा प्रवर्त्तितव्यम्, यथा तस्य राजर्षेरनुकम्पनीया भवामीति। अन्यथा स्मरतं माम्।**]

उभे—दिष्ट्या=भाग्यात्, ते=तव, अनुरूपे=योग्यपात्रे, अभिलाषः=आसक्तिः, जात इति शेषः। अथवा, महानद्या=गङ्गाप्रभृत्या, सागरं=महोदधिम्, उज्झित्वा=त्यक्त्वा, कस्मिन् प्रवेष्टव्यम्=न तदतिरिक्ते कस्मिंश्चिदपि इत्यर्थः।

राजा—(सहर्षम्=प्रसन्नतापूर्वकम्) यत् श्रोतव्यम्=श्रवणीयम् आसीत्, तत् श्रुतम्=आकर्णितम्। पुनः हर्षातिरेकेणात्मनः कृतार्थतासम्पादकं स्मरमभिनन्दयन् कथयति—

अन्वयः—तपात्यये जीवलोकस्य अभ्रश्यामः दिवस इव स्मर एव मे तापहेतुः (आसीत्), पुनरिदानीं स एव निर्वापयिता जातः॥ १४॥

स्मरेति। तपस्य=ग्रीष्मस्य अत्यये=अपगमे, तपात्यये=वर्षारम्भे, जीवलोकस्य=प्राणिवर्गस्य, अभ्रेण=मेघेन, श्यामः=कृष्णवर्णः, दिवस इव, स्मरः=कन्दर्प एव, मे=मम, तापस्य=सन्तापस्य, हेतुः=उत्पादकः, आसीत् इति शेषः, पुनरिदानीम्, सः=स्मर एव, निर्वापयिता=तापनिवृत्तिकारयिता, जात इति शेषः। अत्र—य एव तापहेतुः स एव तापनिर्वापयिता इति विरोधाभासः। केचित्तु—'तापजनकस्तु तापोपशमकः' इति विरुद्धकार्यसङ्घट्टनया विषमोऽलङ्कारः, श्रौती उपमा च। आर्य्या जातिः॥ १४॥

भावार्थः—यथा ग्रीष्मकालीनो दिवसः तीक्ष्णरश्मिसमधिकृततया जीवलोकस्य सन्तापमुत्पादयन् ग्रीष्मावसाने सच्छायः स एव दिवसः सन्तापोपशमने जनको भवति, तथैव स्मरः शकुन्तलोद्देशेन ममान्तस्तापमुत्पादयन्नपि अधुना मदुद्देशेन शकुन्तलायाः सन्तापं जनयन् ममाशा-पूरणाङ्कुरप्रकाशनेन सर्वं मेऽन्तस्तापमपाकरोति॥ १४॥

दोनों—सौभाग्य से अपने अनुरूप वर के लिए ही तुम्हारे मन में अभिलाषा उत्पन्न हुई है, अथवा समुद्र को छोड़कर महानदी और कहाँ जाकर विलीन हो सकती है?

राजा—(हर्षपूर्वक) जो सुनना चाहिए था, वह सुन लिया।

जो दिन ग्रीष्मकाल में संसार के प्राणियों को ताप से झुलसाता है, वही दिन ग्रीष्म के अन्त में मेघों से श्यामल होकर उस सन्ताप को दूर कर दिया करता है। ठीक उसी की भाँति पहले कामदेव ने स्वयं मेरे हृदय में सन्ताप उत्पन्न किया और अब स्वयं ही उसे मिटा भी दिया॥ १४॥

Both—Fortunately your desire, having turned to a suitable person or where can a great river disappears itself except in an ocean?

King—(Joyfully) What is worth hearing is heard.

Love himself was the cause of my affliction, he himself has become my cooler, as (becomes) a day dark with clouds at the end of summer, to the living beings. (14)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अहो विमर्शच्छेदि वचनम्। एतदेव कामफलम्, यत्नफलमन्यत्। एतावद-वस्थाऽपि मां सुखयति।

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्) अणसूए! दूरगदो से मणोरहो, अक्खमा इअं काल-हरणस्स। [अनसूये! दूरगतः अस्या मनोरथः, अक्षमा इयं कालहरणस्य।]

शकुन्तला—तद्=अभिलषितत्वम्, यदि वां=युवयोः, अनुमतम्=अभीष्टम् (यदीदृशी मे अभिलाषा युवाभ्यां रोचते) ततः=तदा, तथा प्रवर्तितव्यम्=तेनैव रूपेण यतितव्यम्, यथा=येन प्रकारेण, तस्य राजर्षेः=मुनितुल्यस्य, अनुकम्पनीया=दयनीया, भवामीति। अन्यथा=युवयोरनु-मततया यत्नाभावेन तस्याननुकम्पनीयत्वे सतीत्यर्थः। मां स्मरतम्=मरणस्य निश्चयात्मकत्वात् स्मृतिमात्रेणानुभवतम्।

राजा—अहो! विमर्शं=संशयं, छिनत्तीति विमर्शच्छेदि, (अस्याः) वचनम्=कथनम्। एतदेव=परस्परं प्रति परस्परानुरागोत्कर्ष एव उत एतत् पर्यन्तमेव, कामफलं=कामसाध्यम्, अन्यत्=परिणयादिना सङ्गमादिकम्, यत्नफलम्=चेष्टासाध्यम् (तथा च येन येन विना यत्नकरणे प्रवृत्तिर्नासीत् कामदेवेन तत्तत् निष्पादितमेव, इदानीं समागमायास्माभिर्यत्नविधानं साम्प्रतमिति भावः)। एतावदवस्थापि=मय्यनुरागप्रदर्शनमात्रपर्य्यन्ता अवस्था यस्याः सा, तथाभूताऽपि, मां सुखयति=अनुरागपूर्णोद्गारात् मां सुखं करोति।

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्=अप्रकाशम्) अनसूये! अस्याः=शकुन्तलायाः, मनोरथः= अभिलाषः, दूरम्=अनासन्नम् राजानमिति यावत्, गतः=विषयीचकार। अत एव यं कालहरणस्य= कालक्षेपस्य, अक्षमा=अनर्हा (कालक्षेपे हि सखी अस्माकं म्रियेतैवेति)।

शकुन्तला—यदि तुम दोनों को मेरा चुनाव पसन्द है तो—ऐसा यत्न करो, जिससे मैं उन राजा की कृपापात्री बन जाऊँ, अन्यथा मेरा स्मरण करना (अर्थात् मैं उनके वियोग में जीवित नहीं बचूँगी)

राजा—ओह, इसके वचन सब सन्देहों को दूर करने वाले हैं। कामदेव का वास्तविक फल यही है। प्रयत्न का (संगमरूप) फल दूसरा है। यद्यपि यह अतीव विषमावस्था में पहुँच गई है फिर भी मुझे सुख ही देती है।

प्रियंवदा—(कान में) अनसूया! इसकी अभिलाषा बहुत दूर तक पहुँच चुकी है अतः यह समय नहीं बिता सकेगी।

Śakuntalā—If my selection is approved by you then take necessary steps, so that I may be commiserated by that royal sage otherwise, certainly you have to weep for me.

King—The declaration removes all doubts. This much is the result of kāma (cupid) and the rest depends on effort. Though she had reached a miserable condition, yet gives me pleasure too.

Priyaṁvadā—(Aside) Anasūyā! far advanced (in love), this Śakuntalā is incapable of (bearing any) loss of time.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—पिअंबदे! को णु उवाओ भवे, जेण अबिलंबिदं णिहुदं च सहीए मणोरहं सम्पादेम्ह। [प्रियंवदे! को नु उपायो भवेत्, येन अविलम्बितं निभृतञ्च सख्या मनोरथं सम्पादयावः।]

प्रियंवदा—णिहुदं त्ति चिंतणीअं, सिग्घं त्ति ण दुक्करं। [निभृतमिति चिन्तनीयम्, शीघ्रमिति न दुष्करम्।]

अनसूया—कधं विअ? [कथमिव?]

प्रियंवदा—णं सो वि राएसी इमस्सिं जणे सिणिद्धदिट्ठिआ सूइदाहिलासो इमेसुं दिअसेसुं पजाअरकिसो विअलक्खीअदि। [ननु सोऽपि राजर्षिः अस्मिन् जने स्निग्धदृष्ट्या सूचिताभिलाषः एषु दिवसेषु प्रजागरकृश इव लक्ष्यते।]

अनसूया—नुरिति प्रश्ने, को उपायो भवेत्, येन=उपायेन, अविलम्बितम्=शीघ्रम्, निभृतञ्च=गुप्तञ्च, यथा भवति तथा, मनोरथं=सख्या मनोरथविषयीभूतं दुष्यन्तसङ्गमम्, सम्पादयावः= सफलतां नयावः।

प्रियंवदा—निभृतं=गुप्तम्, इति चिन्तनीयम्=विचारणीयम्, शीघ्रमिति=शीघ्रं सम्पादनम्, न दुष्करम्=कठिनम्, अनायाससाध्यम्।

अनसूया—कथमिव?=कीदृशमेतत्?

प्रियंवदा—नन्वनु प्रश्ने, सोऽपि राजर्षिः=दुष्यन्तोऽपि, अस्मिन् जने=प्रियसख्यां शकुन्तलायाम्, स्निग्धदृष्ट्या=प्रणयदृष्ट्यर्पणेन, सूचितः=व्यंजितः, अभिलाषः=अनुरागः, यस्य सः तादृशः, प्रजागरेण=रात्रिजागरणात्, कृशः=क्षीणाङ्ग इव, लक्ष्यते=परिदृश्यते। दुष्यन्तस्यापि तस्यामासक्तिवशात् शीघ्रता न दुःसाध्येति भावः।

अनसूया—प्रियंवदा! कौन-सा उपाय किया जाय, जिससे गुप्त रीति से शीघ्र इसकी इच्छा की पूर्ति हो सके।

प्रियंवदा—गुप्त रूप से ही कठिन है किन्तु शीघ्र कठिन नहीं है।

अनसूया—कैसे?

प्रियंवदा—वह राजर्षि भी अपनी स्निग्ध दृष्टि द्वारा अपनी अभिलाषा प्रगट कर चुके हैं और इधर कई दिनों से रात्रि में जागते रहने से वे भी कमजोर से दीखते हैं।

Anasūyā—Priyaṁvadā! But what would be the means by which we could fulfil the desire of our friend without delay and secretly.

Priyaṁvadā—As for 'secretly', it may require thought, as for quickly' it can easily be done.

Anasūyā—How possibily?

Priyaṁvadā—That royal sage, whose longing for this (Śakuntalā) is indicated by his affectionate look, appears these days to be reduced through regualar wakefulness.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(आत्मानमालोक्य) सत्यमित्थम्भूत एवास्मि। तथाहि—

अशिशिरतैरन्तस्तापैर्विवर्णमलीमसं
निशि निशि भुजन्यस्तापाङ्गप्रवर्त्तिभिरश्रुभिः।
अनतिलुलितज्याघाताङ्कात् मुहुर्मणिबन्धनात्
कनकवलयं स्रस्तं स्रस्तं मया प्रतिसार्य्यते॥ १५॥

राजा—(आत्मानम्=स्वशरीरम्, आलोक्य=दृष्ट्वा) आत्मावलोकनेन प्रियंवदोक्तं याथातथ्यं विभाव्याह—सत्यम्=सत्यमेव, इत्थम्भूतः=ईदृशीमवस्थामापन्नः प्रजागरकृश एवास्मि संवृत्तः। तथाहि—

अन्वयः—अन्तस्तापैः अशिशिरतैः निशि निशि भुजन्यस्तापाङ्गप्रवर्त्तिभिः अश्रुभिः विवर्णमलीमसं कनकवलयम् अनतिलुलितः ज्याघाताङ्कात् मणिबन्धनात् स्रस्तं स्रस्तं मया मुहुः प्रतिसार्य्यते॥ १५॥

अशिशिरेति। अन्तस्तापैः=अन्तस्थमदनोत्तापैः, अशिशिरतैः=अत्यन्तमुष्णैः, निशि निशि=तद्दर्शनादारभ्य सर्वासु रात्रिषु, भुजे=उपाधानीकृते वामबाहौ, न्यस्तात्=स्थापितात्, अपाङ्गात्=नेत्रप्रान्तात्, प्रवर्त्तिभिः=निर्गच्छद्भिः, अश्रुभिः=नयनवारिभिः, विवर्णं=कुत्रचिदंशे कान्तिरहितं, मलीमसं=कुत्रचिदंशे मलिनञ्च, यद्वा—विवर्णं=विकृतवर्णम्, अत एव मलीमसं=मलिनीभूतम्, कनकस्य वलयं कनकवलयम्=सुवर्णकटकम्, अनतिलुलितः=कनकवलयावरणेनानभिव्यक्तः, ज्यायाः=मौर्व्याः, आघातेन अङ्कः=चिह्नं, यत्र तत् तस्मात् ज्याघाताङ्कात्, मणिर्बध्यतेऽस्मिन्निति मणिबन्धनं, तस्मात् मणिबन्धनात्=हस्तप्रकोष्ठभागात्, स्रस्तं स्रस्तं=गलितं गलितं (अतिकृशतया हस्तप्रकोष्ठदेशमागतम्), मया=दुष्यन्तेन, मुहुः=पुनः पुनः, प्रतिसार्य्यते=स्वस्थानस्थं क्रियते। अत्र स्वभावोक्तिः काव्यलिङ्गञ्च। हरिणी वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—अन्तस्तापैः, अत्यन्तमुष्णैः तद्दर्शनादारभ्य सर्वासु रात्रिषु भूपृष्ठशयने उपधानीकृते वामबाहौ स्थापितात् नेत्रप्रान्तभागाद् प्रवर्त्तिभिः अश्रुभिः विकृतवर्णमत एव मलिनीभूतम्,

---

राजा—(अपने आप को देखकर) सत्य ही मैं ऐसा ही हो गया हूँ; क्योंकि—

रात्रि में हाथ का तकिया बनाकर सोने से हार्दिक सन्ताप के कारण नेत्रकोण से प्रवाहित होने वाले आँसुओं से मणिबन्ध का रंग ही बदल गया है। धनुष की डोरी खींचने से मणिबन्ध में पड़ा हुआ चिह्न सोने के कड़े के कारण दिखाई नहीं देता। दुर्बलता के कारण सोने का कड़ा बार-बार खिसक जाता है, जिसे मुझे फिर से उसके स्थान पर पहुँचाना पड़ता है (इन सब कारणों से जान पड़ता है कि मैं सचमुच दुर्बल हो गया हूँ)॥ १५॥

King—Indeed, I have become just so. For—

This golden bracelet, which ordinarily did not touch the scar created by the bow string, is being repeatedly pushed back by me from the wrist, as it now and then slips down there. The bracelet which has its jewels, now rendered pale by the tears, hot on account of internal anguish and flowing night after night from the corner of my eye resting on my left arm. (15)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(विचिन्त्य) हला! मअणलेहणं दाणिं से करीअदु, अहं तं सुमणोगोविदं कदुअ देवदासेवावदेसेण तस्स रण्णो हत्थं पावइस्सं। [हला! मदनलेखनमिदानीमस्याः क्रियताम्, अहं तत् सुमनोगोपितं कृत्वा देवतासेवापदेशेन तस्य राज्ञो हस्तं प्रापयिष्यामि।

अनसूया—सहि! रोअदि मे सुउमारो एसो पओओ। किं वा सउंतला भणादि? [सखि! रोचते मे सुकुमार एष प्रयोगः। किं वा शकुन्तला भणति?]

शकुन्तला—सहीणिओओ वि विकप्पीअदि? [सखीनियोगोऽपि विकल्प्यते?]

प्रियंवदा—तेण हि अत्तणो उवण्णासाणुरूअं चिंतेहि ललिदपदावलिबंधं गीदिअं। [तेन हि आत्मन उपन्यासानुरूपां चिन्तय ललितपदावलिबन्धां गीतिकाम्।]

कनकवलयं कनकवलयावरणेनानभिव्यक्तः ज्याघाताङ्कात् मणिबन्धनात् अतिकृशतया हस्तप्रकोष्ठ-देशमागतं (वलयम्) मया मुहुः प्रकोष्ठरूप-स्वस्थानस्थं क्रियते॥ १५॥

प्रियंवदा—(विचिन्त्य=विचार्य) हला=सखि! अस्याः=शकुन्तलायाः, मदनलेखनम्=आत्मनः कामाविर्भावव्यञ्जिका पत्रिका, क्रियताम्=विधीयताम्, अहं, तत्=पत्रम्, सुमनोभिः=पुष्पैः, गोपितं=संवृतं कृत्वा, देवतासेवापदेशेन=देवार्चनव्याजेन, तस्य=पूर्वोक्तस्य, राज्ञः=दुष्यन्तस्य, हस्तं=करं, प्रापयिष्यामि।

अनसूया—सखि! रोचते=प्रीतिमुत्पादयति, मे=मह्यम्, एषः=त्वयोक्तः, सुकुमारः=मृदुलः, अनायाससाध्यः, प्रयोगः=प्रतिविधानम्। किं वा शकुन्तला भणति=शकुन्तलायै राचते न वायं प्रयोगः।

शकुन्तला—सख्योः=युवयोः, नियोगः=आदेशोऽपि, विकल्प्यते=कर्त्तव्योऽकर्तव्यो वेति द्वैधीक्रियते? नैवेति भावः।

प्रियंवदा—तेन हि=अस्मच्चिन्तितोपाये तव सम्मतत्वेनैव, उपन्यासानुरूपां=योजना-नुरूपाम्, ललिता=सुकोमला, माधुर्यादिगुणप्रधाना, या पदावलिः=पदपंक्तिः, तया बन्धः=रचना,

---

प्रियंवदा—(सोचकर) सखी! इस (उद्देश्य की पूर्ति के लिए) तुमं एक कामलिपि लिखो। मैं उसे फूलों के भीतर छिपाकर देवपूजा के बहाने से राजा के पास पहुँचा दूँगी।

अनसूया—सखी! मुझे यह सुकुमार-प्रयोग (कोमल उपाय) अच्छा लगता है किन्तु शकुन्तला क्या कहती है?

शकुन्तला—सखी के निर्देश पर भी क्या कुछ विचार करूँगी?

प्रियंवदा—यदि ऐसा है तो अपनी अवस्था के अनुरूप एवं सुललित पदों वाली एक गीति सोचो।

Priyaṁvadā—(Thinking) Dear! Let a love-letter be prepared for him. This, after concealing under flowers, I shall deliver it into his hand, under the pretext of (its being) an offering presented to the deity.

Anasūyā—I like this delicate measure. But waht does Śakuntalā say?

Śakuntalā—Will your command be doubted?

Priyaṁvadā—Well, then just think of some beautiful compositions, introduced by an allusion to your self.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—चिंतेमि, किन्तु अवहीरणाभीरुअं वेवदि मे हिअअं। [चिन्तयामि, किन्तु अवधीरणाभीरुकं वेपते मे हृदयम्।]

राजा—(विहस्य)

अयं स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुको विशङ्कसे भीरु! यतोऽवधीरणाम्।
लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्॥ १६॥

यस्यास्तां ललितपदावलिबन्धाम्, गीतिकाम्=गीतिम्, चिन्तय=निरूपय (तां हि गीतिकां राजर्षेर्हस्तं व्याजेन प्रापयिष्यामीत्याशयः)।

शकुन्तला—चिन्तयामि, किन्तु अवधारणाभीरुकं=अवज्ञाभीतं सत्, मे=मम, हृदयम्, वेपते=कम्पते।

राजा—(विहस्य)

अन्वयः—हे भीरु! यतः अवधीरणां विशङ्कसे सोऽयं ते सङ्गमोत्सुकः तिष्ठति। हि प्रार्थयिता श्रियं लभेत वा न वा परन्तु ईप्सितः श्रिया कथं दुरापः भवेत्॥ १६॥

अयमिति। हे भीरु=वृथा भीतितरले! यतः=यस्मात्, अवधीरणाम्=अवहेलाम्, विशङ्कसे=वितर्कयसे, सोऽयं जनः=दुष्यन्तः, ते=तव, सङ्गमे=सम्मेलने, उत्सुकः=उत्कण्ठितः सन्, तिष्ठति=त्वदाज्ञामात्रमपेक्षते। तथाहि—प्रार्थयिता=प्रार्थी (श्रीकामो जनः), श्रियं=लक्ष्मीम्, लभेत वा=प्राप्नुयाद्वा, न वा=न लभेद्वा, परन्तु ईप्सितः=आसुमिष्टः श्रीकामो जनः, श्रिया=लक्ष्म्या, कथं दुरापः=दुर्लभः भवेत्॥ १६॥

भावार्थः—हे अवधीरणाभयशीले शकुन्तले! यस्मात् जनात् त्वम् अवहेलां विशङ्कसे, सोऽयं जनः तव सङ्गमोत्सुकः सन् त्वदाज्ञामात्रमपेक्षते। तथाहि—श्रीकामो जनः श्रियं लभेत वा न वा परन्तु ईप्सितः (श्रीकामो) जनः श्रिया कथं दुरापः भवेत्। त्वां प्रार्थयितुमें त्वं दुर्लभैव न पुनस्त्वया प्रार्थ्यमानोऽहं ते दुर्लभः, अतो मम सुलभत्वेन तव तु दुर्लभत्वेन च मत्तोऽवधीरणा मा शङ्कय, परन्तु वैपरीत्येन मम त्वत्तोऽवधीरणा सम्भाव्यैवेत्याशयः। अत्र अर्थान्तरन्यास अलङ्कारः, वंशस्थविलं वृत्तञ्च॥ १६॥

शकुन्तला—सोचूँगी तो सही, परन्तु तिरस्कार के भय से मेरा हृदय काँपता है।

राजा—(हँसकर) ओ भीरु! तुम जिसके द्वारा अपमान की शङ्का करती हो, वह स्वयं तुमसे मिलने के लिए उत्कण्ठित होकर खड़ा है। प्रार्थी व्यक्ति लक्ष्मी को पाता भी है और नहीं भी पाता, किन्तु लक्ष्मी जिसे स्वयं पाना चाहेगी भला वह उसके लिए दुर्लभ कैसे हो सकेगा?॥ १६॥

***Śakuntalā*—Dear, I shall think out. But my heart trembles for fear of repudiation.**

***King*—*(With joy)* Here stands he, eager for union with you from whom, O timid one! you apprehend repudiation. The suitor may or may not obtain riches (Goddess Laxmi) but how can the wished one be difficult for Lamxi to obtain. (16)**

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

अयं स यस्मात् प्रणयावधीरणामशङ्कनीयां करभोरु! शङ्कसे।

उपस्थितस्त्वां प्रणयोत्सुको जनो न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्॥ १७॥

सख्यौ—अइ अत्तगुणावमाणिणि? को णाम संदावणिव्वाणहेतुअं सारदीयं ज्जोण्णं आदवत्तेण णिवारेदि? [अयि आत्मगुणावमानिनि! को नाम सन्तापनिर्वाणहेतुकां शारदीं ज्योत्स्नाम् आतपत्रेण निवारयति।]

अपि च=अन्यच्च—

अन्वयः—हे करभोरु! यस्मात् अशङ्कनीयां प्रणयावधीरणां शङ्कसे सोऽयं प्रणयोत्सुकः त्वाम् उपस्थितः। हि रत्नं न अन्विष्यति किन्तु तत् मृग्यते॥ १७॥

अयं सेति। करभस्य=करिशावकस्य, ऊरू इवोरू यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ हे करभोरु! यस्मात्=जनात्, अशङ्कनीयाम्=शङ्कया अविषयीभूताम्, प्रणयस्य=रतिप्रार्थनायाः, अवधीरणाम्=अवहेलाम्, शङ्कसे=सन्दिह्यसि, सोऽयं जनः=दुष्यन्तः, प्रणयोत्सुकः=त्वयि रतिप्रार्थनार्थमुत्सुकः सन्, त्वामुपस्थितः=त्वत्समीपमेवागतः, हि=यस्मात्, रत्नं=मणिः, न अन्विष्यति=ग्रहीतारं न मृगयते, किन्तु=तद्रत्नमेव, मृग्यते=अन्विष्यते, ग्रहीतृभिरित्यर्थः॥ १७॥

अत्रापि अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः वंशस्थविलं वृत्तञ्च॥ १७॥

भावार्थः—हे करभोरु! यस्माज्जनात् प्रणयावहेलां शङ्कसे, सोऽयं जनः (दुष्यन्तः) प्रणयोत्कण्ठितः सन् त्वत्समीपमेवागतः। हि रत्नं न कदापि ग्रहीतारं मृगयते किन्तु तद्रत्नमेव ग्रहीतृभिरन्विष्यते,अत एवावहेलाशङ्का वृथैवेति भावः॥ १७॥

सख्यौ—अनसूया-प्रियंवदे चेति, अयीति सम्बोधने, आत्मगुणावमानिनि=स्वगुण-गौरवानुभिज्ञे! (त्वद्गुणैरेव स क्रीतोऽतोऽवधीरणाशङ्काऽपि नेति भावः) को नाम=को नु खलु लोकः (न कोऽपीत्यर्थः), सन्तापनिर्वाणहेतुकाम्—सन्तापस्य=ग्रीष्मतापस्य, निर्वाणे=उपशमे, हेतुरेव हेतुका तां हेतुकां=हेतुभूताम्, शरदि भवां शारदीम्=शरत्कालसम्बन्धिनीम्, ज्योत्स्नां=

और भी—

हे करभोरु! तुम जिस व्यक्ति के द्वारा सन्देह के अयोग्य प्रार्थना-भङ्ग की आशङ्का करती हो, यह वही व्यक्ति तुम से प्रणय-निवेदन करने के लिए उत्कण्ठित होकर खड़ा है। वस्तुतः रत्न किसी को भी नहीं ढूँढ़ता बल्कि इच्छुक व्यक्ति स्वयं उसे ढूँढ़ता है॥ १७॥

दोनों सखियाँ—ओ अपनी गुणगरिमा से अनभिज्ञ शकुन्तले! संसार में भला ऐसा कौन होगा जो सन्ताप को दूर करने वाली चन्द्रमा की चाँदनी को छतरी लगाकर अपने ऊपर पड़ने से रोके।

Here stands he, eager for espousing with you from whom O' possessor of excellent thigh, you apprehend doubtless repudiation. Actually jems never wander in search of a buyer, but a desirous himself makes affort to get it. (17)

Friends—O slighter of your excellences, who possibly would ward off, with the help of an umbrella, the autumnal moon-light, that cools the body.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(सस्मितम्) णिओइदाम्हि। (इत्युपविष्टा चिन्तयति।) [नियोजिताऽस्मि।]

राजा—स्थाने खलु विस्मृतनिमेषेण चक्षुषा प्रियामवलोकयामि। यतः—

उन्नमितैकभ्रूलतामाननमस्याः पदानि रचयन्त्याः।
पुलकाञ्चितेन कथयति मय्यनुरागं कपोलेन॥ १८॥

शकुन्तला—हला! चिंतिदा मए गीदिआ। असण्णिहिदाणि उण लेहणसाहणाणि। [हला! चिन्तिता मया गीतिका। असन्निहितानि पुनः लेखनसाधनानि।]

चन्द्रिकाम्, आतपत्रेण=क्षत्रेण, निवारयति=निषिध्यति। (दुष्यन्तश्चन्द्रिकामिव परमसुन्दरीं त्वां स्वकामसन्तापोपशमैककारणभूतां प्राप्य स्वप्नेऽप्यवज्ञया न प्रत्याख्यास्यत इत्याशयः।)

शकुन्तला—(सस्मितम्=समन्दहासम्) नियोजिताऽस्मि=पूर्वं नियोगमात्रं कृतमिदानीन्तु शङ्कापरिहारपुरस्कारेण सोपपत्तिकं मदनलेखविषये प्रवर्त्तिताऽस्मि इत्याशयः। (इति=एवं, उपविष्टा=कुसुमशय्यात उत्थाय, चिन्तयति=मदनलेखरचनामात्मनि मनो निदधाति।)

राजा—स्थाने खलु=युक्तमेव, विस्मृतः निमेषो येन तेन विस्मृतनिमेषेण, चक्षुषा=नेत्रेण, प्रियां=मनोरथप्रियां शकुन्तलाम्, अवलोकयामि=पश्यामि। यतः—

अन्वयः—पदानि रचयन्त्याः अस्याः उन्नमितैकभ्रूलताम् आननं पुलकाञ्चितेन कपोलेन मयि अनुरागं कथयति॥ १८॥

उन्नमितैकेति। पदानि=स्मरलेखयोग्यान्, रचयन्त्याः=स्मरलेखे निवेशयन्त्याः, अस्याः=शकुन्तलायाः, उन्नमिता=उदञ्चिता, एका भ्रूलता यस्य तत् उन्नमितैकभ्रूलताम्, आननम्=अनतिजीवत्यनेनेत्यन्वर्थं मुखम्, पुलकाञ्चितेन=रोमाञ्चाकलितेन, कपोलेन=गण्डस्थलेन, मयि=मद्विषये, अनुरागं=प्रीतिम्, कथयति=सूचयति। अत्र अनुमानालङ्कारः, केचित्तु सन्देहसङ्करम्, अपरे तु स्वभावोक्तिश्च। आर्य्या जातिः॥ १८॥

भावार्थः—स्मरलेखयोग्यान् सुबन्तादिप्रयोगान् ऊहापोहाभ्यां मदनलेखे निवेशयन्त्याः अस्याः शकुन्तलायाः उन्नमितैकभ्रूलताम् आननं, रोमाञ्चाकलितेन कपोलेन मद्विषये प्रीतिं कथनेनेव स्पष्टं प्रकाशयति॥ १८॥

शकुन्तला—(मुस्कराकर) तो मैं इस काम में लगा दी गई। (बैठकर सोचती है)

राजा—मैं जो अपने प्रियतमा को टकटकी लगाकर देख रहा हूँ वह उचित ही है; क्योंकि यह कामपत्र के लिए पदरचना कर रही है और इसकी एक भौं ऊँची उठी हुई है। इस दशा में इसका मुख रोमाञ्चित कपोल द्वारा मेरे प्रति अनुराग प्रगट कर रहा है॥ १८॥

शकुन्तला—सखी! मैंने गीतिका सोच ली है, किन्तु लेखन-सामग्री पास में नहीं है।

Śakuntalā—*(Smilingly)* I am now made busy by you. *(Sits up and meditates)*

King—Exactly, indeed, do I gaze at my beloved with eyes that have forgotten winking. Why so?

Her face, as she composes the words, with one creeper like eye-brow raised, discloses her affection for me with the horripilated cheek. (18)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—णं इमस्सिं सुओदरसुउमारे णलिणीवत्ते पदच्छेदभत्तीए णहेहिं आलिहीअदु। [नन्वस्मिन् शुकोदरसुकुमारे नलिनीपत्रे पदच्छेदभक्त्या नखैरालिख्यताम्।]

शकुन्तला—(यथोक्तं रूपयित्वा) हला! सुणध दाव संगदत्था ण वत्ति। [हला! शृणुतं तावत् सङ्गतार्था न वेति।]

उभे—अवहिद म्ह। [अवहिते स्वः।]

शकुन्तला—(वाचयति)

तुज्झ ण आणे हिअअं, मम उण मअणो दिवा वि रत्तिं वि।
णिक्किव! दावइ बलिअं, तुह हत्थमणोरहाइं अंगाइं॥ १९॥

शकुन्तला—हला! चिन्तिता=विचारिता (चिन्तयाऽऽरचिता), मया=शकुन्तलया, गीतिकां=ललितपदावलिबन्धं गीतम्। असन्निहितानि=असन्निकटवर्त्तीनि, लेखनसाधनानि=मसि-लेखन्यादीनि (अतः केनोपायेन गीतिकां पत्राङ्कितां करोमीति भावः)।

प्रियंवदा—ननुरनुज्ञायाम्, अस्मिन्=तव पुरःस्थिते, शुकस्य=तन्नाम पक्षिणः, उदरमिव=क्रोडदेशवत्, सुकुमारे=सुकोमले, नलिनीपत्रे=कमलिनीपत्रे, नखैः=नखकोटिभिः, पदच्छेद-भक्त्या—पदानां छेदः=विच्छेदः, पृथक् पृथक् पदविभाग इति यावत्, तद्रूपा या भक्तिः=रचनाविशेषः, तया स्थाने स्थाने=पदं विच्छेदं कृत्वेत्यर्थः, लिख्यतां सा गीतिका इति।

शकुन्तला—(यथोक्तं=प्रियंवदोपदिष्टानुरूपम्, रूपयित्वा=नाट्येन नखैर्लिखित्वा) हला प्रियसखि! शृणुतं=युवां श्रुत्वा परीक्षेथाम्, तावत्, सङ्गताः=युक्ताः, अर्थाः=वाच्यादयः, यस्याः सा सङ्गतार्था, न वा=असङ्गतार्था वेत्यर्थः।

उभे—अवहिते=श्रवणाय दत्तावधाने, स्वः=भवावः।

शकुन्तला—(वाचयति=पठति)

प्रियंवदा—अच्छा तो इस तोते के पेट की भाँति कोमल कमलपत्र पर एक-एक पद अलग कर नाखून से (वह गीतिका) लिखो।

शकुन्तला—(कहे हुए ढंग से करके) सखी! सुनो (और बताओ) इसका अर्थ सङ्गत भी है या नहीं?

दोनों सखियाँ—हम ध्यान से सुन रही हैं।

शकुन्तला—(पढ़ती है)

हे निर्दयी! मैं तुम्हारे मन की दशा तो नहीं जानती, किन्तु मैंने अपनी समस्त

Śakuntalā—Dear friends! the substance of a song is thought out by me. But materials of writings are not available or not really at hand.

Priyaṁvadā—You, then engrave the letters with your nails on this lotus-leaf, delicate like a parrot's breast.

Śakuntalā—*(Gesticulating as said)* Friends! now hear whether the meaning is consistent or not.

Both—We are attentive.

Śakuntalā—*(Reads)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[तव न जाने हृदयं मम पुनर्मदनो दिवाऽपि रात्रिमपि।
निष्कृप! तापयति बलीयस्तव हस्तमनोरथानि अङ्गानि॥ १९॥]

राजा—अवसरः खल्वयमात्मानं दर्शयितुम्। (सहसोपसृत्य)

तपति तनुगात्रि! मदनस्त्वामनिशं मां पुनर्दहत्येव।
ग्लपयति यथा शशाङ्कं न तथा हि कुमुद्वतीं दिवसः॥ २०॥

अन्वयः—हे निष्कृप! तव हृदयं न जाने पुनः मदनः तव हस्तमनोरथानि मम अङ्गानि दिवाऽपि रात्रिमपि बलीयः तापयति॥ १९॥

तवेति। हे निष्कृप=दयाशून्य! तव=भवतः, हृदयं=हृदयस्थरहस्यं, चेतसः दशाम्, न जाने=नावगच्छामि (तव चित्तं मय्यनुरक्तं न वेति, मदनो ममेव तव हृदयं सरुजं करोति न वेति च नावगच्छामि), पुनः=किन्तु, मदनः=मन्मथः, तव हस्ते मनोरथः=अभिलाषः, येषां तानि तव हस्त-मनोरथानि, मम अङ्गानि, दिवाऽपि=समग्रदिवसेऽपि (दिवसमपि व्याप्य), रात्रिमपि= रजनीमपि व्याप्य, निरन्तरमेव, बलीयः=अतिबलवत्, तापयति=व्यथयति। अत्र श्लेषानुप्रासौ, विप्रलम्भः शृङ्गारो रसः। गीतिर्नामच्छन्दः ("आर्य्या पूर्वार्द्धसमं यस्या अपरार्द्धमपि च हंसगते। छन्दो-विदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते"॥— श्रुतबोध ४४)॥ १९॥

भावार्थः—हे दयाशून्य! तव चित्तं मय्यनुरक्तं न वेति, मदनो ममैव तव हृदयमपि सरुजं करोति न वा इति च नावगच्छामि। किन्तु कामदेवः तव हस्तमनोरथानि मम अङ्गानि सततमेव भृशं तापयत्येव॥ १९॥

राजा—अवसरः=समयः, खलु=इति निश्चयेन, आत्मानं दर्शयितुम्=स्वं प्रकटीकर्त्तुम्। (सहसा=अतर्कितम्, उपसृत्य=नायिकासमीपम् आगत्य) (अवसरान्वेषी नायकोऽवसरं प्राप्य नायिकाकथनोत्तरदानव्याजेन स्वकीयामवस्थां निवेदयति।)

अन्वयः—तनुगात्रि! मदनः त्वाम् अनिशं तपति पुनः मां दहत्येव। हि दिवसः यथा शशाङ्कं ग्लपयति तथा कुमुद्वतीं न॥ २०॥

तपतीति। तनूनि=कृशानि, गात्राणि यस्यास्तत्सम्बुद्धौ हे तनुगात्रि! मदनः=स्मरः, त्वाम्

अभिलाषा तुम्हारे हाथों में सौंप दी है। ऐसी अवस्था में कामदेव मेरे सारे अङ्गों को दिन-रात बहुत व्यथा पहुँचाता है॥ १९॥

राजा—प्रकट होने का यही अवसर है (सहसा सामने आकर)

ओ दुर्बल शरीरवाली! तुम्हें तो कामदेव दिन-रात केवल सन्ताप ही देता है किन्तु मुझे तो वह (सर्वथा) जलाये ही डालता है। दिन जिस प्रकार चन्द्रमा को मलिन करता है, उस प्रकार कुमुदिनी को नहीं॥ २०॥

I know not your heart; but the god of love, O ruthless one! exceedingly heats or gives pain, even by day and at night always, the limbs of mine, whose desires are centred in you only. (19)

King—This is the proper time is disslore myself *(Hastily approaching)*

You, O slender-limbed one! the god of love troubles you; but he incessantly burns me. The day does not indeed so cause the lotus-plant to fade as it does the moon. (20)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्यौ—(विलोक्य सहर्षमुत्थाय) साअदं जधासमीहिदफलस्स अविलंबिणो मणोरहस्स। [स्वागतं यथासमीहितफलस्य अविलम्बिनो मनोरथस्य।]

शकुन्तला—(उत्थातुमिच्छति)

राजा—अलमलमायासेन।

सन्दष्टकुसुमशयनान्याशु विमर्दितमृणालवलयानि।
गुरुपरितापानि न ते गात्राण्युपचारमर्हन्ति॥ २१॥

अनिशं=सततं, दिवापि रात्रिमपि चेति भावः, तपति=सन्तापयति, पुनः=किन्तु, मां=मां दुष्यन्तं तु, दहत्येव=दग्धीकरोत्येव, हि=तथाहि, दिवसः=वासरः, यथा=येनैव रूपेण, शशाङ्कं=चन्द्रमसं, ग्लपयति=ग्लानिं नयति (शोभारहितं करोति), तथा=तेन रूपेण, कुमुद्वतीम्=कुमुदिनीम्, न ग्लपयति=वैवर्ण्यादिकं न प्रापयति। अत्र दृष्टान्तालङ्कारः, शशाङ्ककुमुद्वतीरूपकर्मद्वयाभिधानात् तुल्ययोगिता च, प्रतिवस्तूपमालङ्कार इति केचित्। आर्य्या जातिः॥ २०॥

भावार्थः—समानसन्तापदायको दिवसो यथा चन्द्रमसो वैवर्ण्यादिकं करोति तथा तत्प्रेयस्याः कुमुदिन्या न करोति, तथैव मदनोऽपि त्वां तु अनिशं सन्तापमात्रं ददति किन्तु मां तु दग्धीकरोत्येव॥ २०॥

सख्यौ—(विलोक्य=दृष्ट्वा, सहर्षमुत्थाय=राज्ञः सम्मानप्रदर्शनाय उत्थानं विधाय आसनादिति शेषः) यथासमीहितं=यथाभिलषितं, फलं=शकुन्तला-दुष्यन्तयोः सङ्गमरूपं सम्भाव्यमानं फलं, यस्मात्तथाभूतस्य, अविलम्बिनः=उपायचिन्तनकाल एवाविलम्बमुपनतस्य, मनोरथस्य=अभिलाषभूतस्य, भवत इत्यर्थः, स्वागतम्=शुभागमनम्।

शकुन्तला—(उत्थातुमिच्छति=राज्ञः सम्मानप्रदर्शनाय उत्थातुम् आरभते।)

राजा—आयासेन=उत्थानपरकपरिश्रमेण, अलम्=पर्याप्तम्, अलमलमिति अत्यन्तनिषेधे द्विरुक्तिः (सुखमुपविशेति भावः)।

अन्वयः—सन्दष्टकुसुमशयनानि आशु विमर्दितमृणालवलयानि अत एव गुरुपरितापानि ते गात्राणि उपचारं नार्हन्ति॥ २१॥

सन्दष्टेति। सन्दष्टं=ग्लानतया स्वेदार्द्रतया च संश्लिष्टं, कुसुमशयनं=पुष्पशय्या, येषु वा

सखियाँ—(देखकर और हर्षपूर्वक उठकर) जिनके द्वारा अपनी कामना पूरी हो सकती है, उन्हीं आपको सहसा आया हुआ देखकर (हम केवल यही कह सकती हैं) आपका स्वागत है।

शकुन्तला—(उठना चाहती है।)

राजा—बस-बस प्रयास न करो।

जिनके संचालन से पुष्पों की शय्या मर्दित हो गई है तथा जिनका मृणालकंकण भी

***Friends**—(Observing and rising with joy)* Welcome to (the object of our friends) desire which makes no delay (in arriving).

***Śakuntalā**—(Desires to stand or rise)*

King—Off-off with your effort.

Your limbs, which have the bed of flowers sticking on to them, which have quickly crushed bracelets of lotus-stalks and

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(ससाध्वसमात्मगतम्) हिअअ! तधा उत्तम्मिअ दाणिं ण किंपि पडिवज्जसि। [हृदय! तथा उत्तम्य इदानीं न किमपि प्रतिपद्यसे।]

अनसूया—इदो सिलादलेक्कदेसं अणुगेह्णदु महाभाओ। [इतः शिलातलैकदेशमनुगृह्णातु महाभागः।]

शकुन्तला—(किञ्चिदपसरति।)

राजा—(उपविश्य) कच्चित् सखीं वो नातिबाधते शरीरताप: ?

यस्तानि, आशु=सद्य एव, विमर्दितानि=घृष्टानि, मृणालवलयानि=बिसनिर्मितकटकानि, येषु तानि विमर्दितमृणालवलयानि, अत एव गुरुः=बलवान्, परितापः=सर्वतोभावेन सन्तापः, येषु तानि, ते=तव, गात्राणि=अङ्गानि, उपचारं=सत्कारं, नार्हन्ति। अत्र उपचारानर्हत्वं प्रति गुरुपरितापस्य हेतुत्वेनोपन्यासात् पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गालङ्कारः, परिकरालङ्कार इति केचित्। आर्य्या जातिः ॥ २१ ॥

भावार्थः—सन्दष्टकुसुमशयनानि सद्य एव विमर्दितानि मृणालवलयानि अत एव प्रबलसन्तापयुक्तानि तव अङ्गानि उपचारं—सत्काराय अभ्युत्थानादिकं नार्हन्ति ॥ २१ ॥

शकुन्तला—(ससाध्वसम्=ससम्भ्रमम्, आत्मगतम्=मनसि) हृदय! तथा=तेन प्रकारेण, उत्तम्य=उत्कण्ठितं भूत्वा, इदानीं=सम्प्रति मनोरथप्राप्तिसमये, न किमपि प्रतिपद्यसे=न स्वकर्त्तव्यं निश्चिनोषि।

अनसूया—इतः=अस्मिन् प्रान्ते, शिलातलस्य=प्रस्तरपट्टोपरिभागस्य, एकदेशम्=एकभागम्, अनुगृह्णातु=उपवेशनद्वारा सनाथीकरोतु, महाभागः=सौभाग्यशाली भवान्।

शकुन्तला—(किञ्चिद्=स्वल्पम्, अपसरति=राज्ञे स्थानप्रदानाय अपसरति।)

राजा—(उपविश्य=निर्दिष्टं स्थानं स्वीकृत्य) शरीरतापः=गात्रसन्तापः, वः=युष्माकम्, सखीम्=शकुन्तलाम्, नातिबाधते=नात्यन्तं पीडयति कच्चित्=किम् ?

विमर्दित हो गया है एवं जिन्हें अतिशय सन्ताप सन्तापित कर रहा है ऐसे आपके अंग सत्कारादि लोकाचार (सम्मानप्रदर्शन) करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं ॥ २१ ॥

शकुन्तला—(लज्जापूर्वक मन में) हृदय! इस प्रकार उत्कण्ठित होकर अब (मनोरथ-प्राप्ति के समय) क्या करना चाहिए, इस पर विचार क्यों नहीं करते ?

अनसूया—महाभाग! इसी शिलातल पर आप भी एक ओर विराजिए।

शकुन्तला—(कुछ खिसक जाती है।)

राजा—(बैठकर) अब तो शरीर ताप आपकी सखी को विशेष कष्ट नहीं दे रहा है ?

---

whose suffering is great, do not deserve (to observe) any customary ceremony. (21)

Śakuntalā—*(Bashfully, to herself)* O heart, thus being anxious, now, why not you think, what is to be done here after.

Anasūyā—O fortunate one! Please occupy one portion of this stone slab.

Śakuntalā—*(Moves a little)*

King—*(Sitting)* Does the heat of body not give much pain to your friend now?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(सस्मितम्) दाणिं लद्धोषधो उवसमं गमिस्सदि। [इदानीं लब्धौषध उपशमं गमिष्यति।]

शकुन्तला—(सलज्जा तिष्ठति।)

प्रियंवदा—महाभाअ! दोण्णंपि वो अण्णोण्णाणुराओ पच्चक्खो; सहीसिणेहो उण मं पुणरुत्तवादिणीं करेदि। [महाभाग! द्वयोरपि युवयोः अन्योन्यानुरागः प्रत्यक्षः; सखीस्नेहः पुनर्मां पुनरुक्तवादिनीं करोति।]

राजा—भद्रे! नैतत् परिहार्य्यम्। विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति।

प्रियंवदा—तेण हि सुणादु अज्जो। [तेन हि शृणोतु आर्य्यः।]

प्रियंवदा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) इदानीं=सम्प्रति (त्वत्समागमे सतीत्यर्थः), लब्धम् औषधं यस्य येन वा सः लब्धौषधः=प्राप्तभेषजः, उपशमं=शान्तिं, गमिष्यति=प्राप्स्यति।

शकुन्तला—(सलज्जा तिष्ठति=सलज्जभावेन तिष्ठति।)

प्रियंवदा—महाभाग=सुभाग्यवान्! द्वयोरपि युवयोः= न त्वेकतरस्येत्यर्थः, अन्योन्यानुरागः=पारस्परिकं प्रेमः, प्रत्यक्षः=स्पष्टमनुभूतः, पुनः=तथात्वेऽपि, सखीस्नेहः=शकुन्तलोपर्य्यस्माकं नैसर्गिकः प्रणयः, पुनरुक्तं यथा स्यात्तथा वदितुं शीलं यस्यास्तां पुनरुक्तवादिनीम्=पिष्टपेपणकर्तुं शीलम् अधिकवादिनीं वा, करोति=विदधाति। (पुनरुक्तिर्यथाऽनुपादेया तद्वत् स्वतः प्रस्फुटितस्यार्थस्य कथनद्वारा प्रकाशो नितरामनुपादेय एवेति भावः।)

राजा—भद्रे=साधुशीले! एतत्=त्वया विवक्षितं वाक्यं, न परिहार्य्यम्=न त्यक्तव्यम् (त्यक्तुं योग्यम्), हि=यतः, विवक्षितं=वक्तुमिष्टं कथनम्, अनुक्तम्=अकथितं सत्, अनुतापम्= मनस्तापम्, जनयति=उत्पादयति।

प्रियंवदा—तेन हि=तस्माद् हेतोरेव, आर्यः=भवान्, शृणोतु=आकर्णयतु।

प्रियंवदा—(मुस्कराकर) अब औषधि पाकर शान्त हो जायेगा।

शकुन्तला—(लज्जापूर्वक बैठी रहती है।)

प्रियंवदा—महाभाग! यद्यपि आप दोनों का अनुराग प्रत्यक्ष है तथापि अपनी सखी का स्नेह मुझे फिर वही बात दुहराने के लिए विवश करता है।

राजा—भद्रे! आप अपना कथन न रोकें (जो कहना हो कहें), क्योंकि यदि कोई बात कहने की इच्छा की जाय परन्तु कही न जाय तो उससे (श्रोता) को दुःख होता है।

प्रियंवदा—तो सुनिये श्रीमन्!

Priyaṁvadā*—*(With smile) That will decrease after getting medicine (in your shape).

Śakuntalā*—*(Remains bashful)

Priyaṁvadā—Your mutual affection is obvious to both of you. But love for my friend compels me to speak something superfluous or repeat it again.

King—Gentle lady! this (speech) should not be suppressed. For what is wished to be said causes remorse if unsaid.

Priyaṁvadā—Then hear me please, sir.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अवहितोऽस्मि।

प्रियंवदा—अस्समवासिणो जणस्स रण्णा अत्तिहरेण होदव्वं त्ति णं एसो धम्मो। [आश्रमवासिनो जनस्य राज्ञा आर्त्तिहरेण भवितव्यम् इति, नन्वेष धर्म्मः।]

राजा—अस्मत्परं किन्तत् ?

प्रियंवदा—तेण हि इअं णो पिअसही तुमं ज्जेव उद्दिसिअ भअवदा मअणेण इमं अवत्थंतरं पाविदा, ता अरिहसि अब्भुववत्तीए जीविदं से अवलंबइदुं। [तेन हि इयं नः प्रियसखी त्वामेव उद्दिश्य भगवता मदनेन इदमवस्थान्तरं प्रापिता, तदर्हसि अभ्युपपत्त्या जीवितमस्या अवलम्बयितुम्।]

राजा—भद्रे! साधारणोऽयं प्रणयः। सर्वथाऽनुगृहीतोऽस्मि।

राजा—अवहितः=श्रवणाय कृतमनोऽभिनिवेशः, अस्मि=भवामि।

प्रियंवदा—आश्रमवासिनः=तपोवननिवासिनः, जनस्य, आर्तिहरणे=पीडाहरणे, राज्ञा=शासकेन, भवितव्यम्, इति, एष धर्मः=राजनीतिः, नन्वित्यवधारणे।

राजा—तत्=राज्ञ आश्रमवासिन आर्तिहरणौचित्यम्, अस्मत्परं=मद्गोचरं, किं=किमस्ति ?

प्रियंवदा—तेन हि=राज्ञ आर्तिहरणौचित्येनैव हेतुना (अर्हसीति क्रियया सहान्वयः), नः=अस्माकम्, इयं-पुरोवर्त्तिनी, प्रियसखी=शकुन्तला, त्वामेवोद्दिश्य='तं हि राजानं पतित्वेन लभेय' इति सखीमनोरथमभिसन्धाय, इदं=वर्त्तमानम्, अवस्थान्तरम्=दशाविशेषम्, भगवता=लोकातिशयितप्रभावेन, मदनेन-कामदेवेन, प्रापिता=आरोपिता। अभ्युपपत्त्या=अनुग्रहेण, अस्याः=प्रियसख्याः, जीवितम्=जीवनम्, अवलम्बयितुं=धारयितुं, अर्हसि=अधिकारी भवसि। राज्ञ आर्ति-हरणौचित्येनैव हेतुना अस्याःपि कामबाधानिवारणं भवदीयं कर्तव्यमिति भावः।

राजा—मैं (सुनने के लिए) सावधान हूँ।

प्रियंवदा—राजा का धर्म है कि वह आश्रमवासियों की पीड़ा दूर करे।

राजा—इससे बढ़कर और क्या ?

प्रियंवदा—यह हमारी प्रिय सखी आपके ही कारण कामदेव द्वारा इस अवस्था को पहुँचाई गई है, अतः कृपाकर आप इसके जीवन की रक्षा करें।

राजा—यह प्रार्थना तो दोनों ओर से एक ही प्रकार की है। मैं सर्वथा आपका अनुगृहीत हूँ।

King—I am ready to hear.

Priyaṁvadā—That the king should become the remover of the suffering of the distressed, specially of the habitants of the hermitage. This is his duty.

King—Nothing higher than this.

Priyaṁvadā—Well, then, this dear friend of ours has been kept into this pitiable condition by the mighty God of love, due to you. Therefore, it is your duty to sustain her life by showing favour.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(अनसूयामवलोक्य) हला! अलं वो अंतेउरविरहवज्जुस्सुएण राएसिणा उवरुद्धेण। [हला! अलं वाम् अन्तःपुरविरहपर्य्युत्सुकेन राजर्षिणा उपरुद्धेन।]

राजा— इदमनन्यपरायणमन्यथा हृदयसन्निहिते! हृदयं मम।
यदि समर्थयसे मदिरेक्षणे! मदनबाणहतोऽपि हतः पुनः॥ २२॥

राजा—भद्रे! अयं=जीवितावलम्बनरूपः, प्रणयः=प्रार्थना, साधारणः=उभयोरप्यावयोः समानः। सर्वथा=सर्वप्रकारेण, अनुगृहीतोऽस्मि=अनुकम्पितो भवामि। (यथा भवतीभिरेतदर्थमहमभ्यर्थ्ये तथा मयाऽपि एतदनुग्रहार्थं भवत्यौ प्रार्थनीये। सम्प्रति शकुन्तलासङ्गमसम्भवेन जीवनावलम्बनसम्भवात् भवत्कृपया अनुगृहीतोऽस्मीति मन्ये।)

शकुन्तला—(अनसूयां=स्वसखीम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा) हला! वां=युवयोः, अन्तःपुराणाम्=अन्तःपुरवासिनीनां रमणीनां, विरहेण पर्य्युत्सुकेन=उत्कण्ठितेन, राजर्षिणा=दुष्यन्तेनेति, उपरुद्धेन=मत्समागमायानुरुद्धेन, अलम् (मत्समागमनाय युवाभ्यां राज्ञोऽनुरोधो न करणीय इत्यर्थः)।

राजा—दुष्यन्तः भाविप्रणयभङ्गशङ्कामपनेतुं कथयति—

अन्वयः—हृदयसन्निहिते! अनन्यपरायणम् इदं मम हृदयम् अन्यथा यदि समर्थयसे तदा मदिरेक्षणे! मदनबाणहतोऽपि पुनः हतः अस्मि॥ २२॥

इदमिति। हे हृदयसन्निहिते=चेतोऽवस्थिते! अन्यस्यां परायणमन्यपरायणं तन्नभवतीत्यनन्यपरायणम्=अनन्यरमण्याश्रयम्, इदं=त्वय्यनुरक्तम्, मम=दुष्यन्तस्य, हृदयं=चेतः, अन्यथा=अन्यरमणीनिष्ठम्, यदि समर्थयसे=यदि कल्पयसि, तदा मदिरे इव ईक्षणे यस्यास्तत्सम्बोधने हे मदिरेक्षणे=मदमत्तनेत्रे! मदनस्य=कामस्य, बाणैर्हतः=विद्धः, अपि पुनरत्यन्तं हतः=विद्धः, अस्मि (अहमिति शेषः)। अत्र काव्यलिङ्गं लाटानुप्रासश्चालङ्कारौ। द्रुतविलम्बितं वृत्तम्॥ २२॥

भावार्थः—सम्प्रति मम हृदयं सर्वविषयजातं परित्यज्य त्वय्येव वर्तते, तत्रापि चेत्त्वमन्य-

---

शकुन्तला—(अनसूया को देखकर) सखी! अन्तःपुर के वियोग से उत्कण्ठित राज़र्षि से इस प्रकार अनुरोध करना अथवा उन्हें रोकना ठीक नहीं है।

राजा—हे हृदयस्था प्रियतमे! यदि एकमात्र तुम्हारे में लगे हुए इस मेरे मन को तुम किसी दूरे रूप में निरूपित करोगी तो हे मदिर नेत्रों वाली! कामबाण से मारा हुआ मैं और भी अधिक मारा जाऊँगा॥ २२॥

King—Good lady! This request is common (to both of us). I am favoured in every way.

Śakuntalā—*(Looking at Anasūyā)* Dear! what is the use of pressing the royal sage, who is anxious owing to separation from his herm?

King—If you, O gentle lady, who is living in my heart, deem this heart, which is devoted to none else, as otherwise, then O maiden of bewitching eyes, struck by Kāma's (God of love) arrows, I am struck again. (22)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—बहुवल्लहा क्खु राआणो सुणीअंति। ता जधा इअं णो पिअसही बंधुअणसोअणीआ ण होदि, तधा करिस्सदि।[बहुवल्लभाः खलु राजानः श्रूयन्ते। तद् यथा इयं नः प्रियसखी बन्धुजनशोचनीया न भवति तथा करिष्यति।]

राजा—भद्रे! किं बहुना?

परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य नः।
समुद्ररसना चोर्व्वी सखी च युवयोरियम्॥ २३॥

थात्वमाशङ्कसे तर्हि अहं मदनबाणहतोऽपि पुनरत्यन्तं विद्धः इति मन्ये। मर्मच्छेदिनी ते आशङ्का सर्वथाऽसह्या एवेति भावः॥ २२॥

अनसूया—बह्वी वल्लभाः=प्रियाः, येषां ते बहुवल्लभाः, राजानः=भूपालाः, श्रूयन्ते= श्रवण-पथमागताः (सन्तीति शेषः), तत्=तस्मात्, यथा=येन प्रकारेण, नः=अस्माकम्, प्रियसखी= शकुन्तला, बन्धुजनानाम्=अस्मदादीनाम्, शोचनीया=शोकविषया, न भवति तथा करिष्यति भवानिति शेषः। (भवतो बहुवल्लभत्वादस्यां कालेनानादरः शङ्कास्पदं स यथा न भवति तथाऽस्माकं प्रियसख्यामुपतिष्ठेति प्रार्थना।)

राजा—भद्रे=साधुशीले! किं बहुना=किं प्रचुरेण व्याहृतेन—

अन्वयः—परिग्रहबहुत्वेऽपि नः कुलस्य द्वे प्रतिष्ठे; समुद्ररसना उर्वी च, इयं युवयोः सखी च॥ २३॥

परिग्रहेति। परिगृह्यन्त इति परिग्रहाः=पत्न्यः, तासां बहुत्वेऽपि=प्राचुर्येऽपि (अनल्पत्वेऽपि), नः=अस्माकम्, कुलस्य=वंशस्य, द्वे=इमौ द्वौ (परिग्रहौ), प्रतिष्ठे= सगौरव-स्थितिहेतू, समुद्रः=सागर एव, रसना=मेखला, यस्याः सा समुद्ररसना, उर्व्वी=पृथिवी च, इयं= परिदृश्यमाना, युवयोः सखी=शकुन्तला च। अत्र तुल्ययोगिता दीपकश्चालङ्कारौ। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २३॥

भावार्थः—परिग्रहबहुत्वेऽपि उर्व्वीपतित्वेन यथाऽहं गौरवान्वितो भवामि तथा युवयोः सख्याः पतित्वेनापि आत्मानं गौरवान्वितं समर्थय इति। रघुवंशेऽपि—

अनसूया—सुनते हैं कि राजाओं की अनेक प्रेयसी होती हैं, इस स्थिति में जिस प्रकार हमारी प्रिय सखी बन्धुजनों के शोक का कारण न बने, ऐसा उपाय कीजिए।

राजा—भद्रे! अधिक कहने से क्या लाभ—

बहुत-सी स्त्रियों के रहते हुए भी मेरे वंश में गौरव के मात्र दो ही स्थल हैं। एक समुद्र की मेखलायुक्त पृथ्वी तथा दूसरी आपकी यह प्रिय सखी॥ २३॥

Anasūyā—It is heard that kings have many beloveds. So, please act in such a way that our dear friend will not have to be pitied by her kinsmen.

King—Good lady! why say much?

Though (I am) possessed of many wives, two are the main stay remaining in two places of my family the earth—girdled (enclosed) with seas and this friend of yours. (23)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—णिव्वुदम्ह। [निर्वृते स्वः।]

शकुन्तला—(हर्षं सूचयति।)

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्) अणसूए! पेक्ख पेक्ख मेहवादाहदं विअ गिह्मे मोरीं क्खणे क्खणे पच्चाअदजीविदं पिअसहीं। [अनसूये! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व मेघवाताहतामिव ग्रीष्मे मयूरीं क्षणे क्षणे प्रत्यागतजीवितां प्रियसखीम्।]

शकुन्तला—हला! मरिसावेध लोअपालं, जं अम्हेहिं विस्सद्धप्पलाविणीहिं उवआरादिक्कमेण भणिदं। [हला! मर्षयतं लोकपालम्, यदस्माभिर्विस्त्रब्धप्रलापिनीभिः उपचारातिक्रमेण भणितम्।]

'कलत्रवन्तमात्मानमवरोधे महत्यपि।
तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः॥' (१/३५)

तथैव अत्रापि—मम परिग्रहबहुत्वेऽपि युष्मदीया सख्येव सर्वासु पत्नीषु सर्वथा विशिष्टादरपात्रं प्रेमास्पदं च भविष्यतीत्यत्र न संशयलेशोऽपि हृदा कर्तव्य इति भावः॥ २३॥

उभे—अनसूया प्रियंवदा चेति राज्ञो वचनमाकर्ण्य सानन्दमाहतुः—निर्वृते=सुखिते, स्वः=भवावः, आवामिति शेषः।

शकुन्तला—(हर्षं=प्रसन्नतां, सूचयति=अभिनयति।)

प्रियंवदा—(जनान्तिकम्=सख्याः कर्णे) अनसूये! ग्रीष्मे=ग्रीष्मर्तौ, मेघवातेन=मेघागमनकालीनानिलेन, आहतां=संस्पृष्टाम्, मयूरीमिव=मयूरपत्नीमिव, क्षणे-क्षणे=क्रमशः, प्रत्यागतजीवितां=पुनरागतप्राणाम्, प्रियसखीम्=शकुन्तलाम्, प्रेक्षस्व-प्रेक्षस्व=पश्य-पश्य। (यथा मयूरी ग्रीष्मोष्मणा गतप्राणप्राया सती सुखदमेघवायुना प्रत्यागतप्राणा भवति तथेयमावयोः प्रियसखी कामज्वरदाहेन सन्तप्ता सती सम्प्रति प्रियतमस्य राज्ञ आश्वासेन तत्समागमसुखाशया प्रत्यागतजीविताम् इव दृश्यते इति भावः।)

शकुन्तला—हला=सखि! लोकपालं=राजानं, मर्षयतं=क्षमयतम्, आत्मनोऽपराधमोचनं कारयताम्। यत्=यतः, विस्त्रब्धप्रलापिनीभिः=निःशङ्कं यथा स्यात्तथाऽयथार्थवादिनीभिः

दोनों—तो अब हम निवृत्त (निश्चिन्त) या सुखी हुई।

शकुन्तला—(प्रसन्नता प्रगट करती है)

प्रियंवदा—(कान में) अनसूया! देखो-देखो ग्रीष्म काल में बदली की हवा लगने से प्रसन्न मयूरी की भाँति क्षण-क्षण में हमारी प्रिय सखी भी पुनर्जीवित-सी होती दिखायी पड़ रही है।

शकुन्तला—सखी! हमें राजर्षि से क्षमा माँगनी चाहिए, क्योंकि हमलोगों ने यथेच्छ बकवास करके शिष्टाचार का उल्लंघन करते हुए बहुत-सी बातें कह डाली हैं।

Both—We are assured now.

Śakuntalā—(Shows happiness)

Priyaṁvadā—(Aside) Anasūyā! see, see our friend who is getting new life like a peahen who becomes happy with the touches of cloudy wind in summer season.

Śakuntalā—Dear! we must ask for excuse from the king, for

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्यौ—(सस्मितम्) जेण तं मंतिदं सो ज्जेव मरिसावेदु, अण्णस्स को अच्चओ। [येन तन्मन्त्रितं स एव मर्षयतु अन्यस्य कः अत्ययः ।]

शकुन्तला—अरिहदि क्खु महाराओ इमं विसोढुम्। परोक्खं वा ण किं को मंतेदि। [अर्हति खलु महाराज इमं विषोढुम्। परोक्षं वा न किं को मन्त्रयति ।]

राजा—(सस्मितम्)

अपराधमिमं ततः सहिष्ये यदि रम्भोरु! तवाङ्गसङ्गमृष्टे।
कुसुमास्तरणे क्लमापहेऽत्र स्वजनत्वादनुमन्यसेऽवकाशम्॥ २४॥

(अस्माभिः), उपचारातिक्रमेण=यथोचितकर्त्तव्यमर्यादोल्लङ्घनेन, भणितम्=कथितम्, प्रलपितम्। यदस्मै बहुश उपालम्भो दत्तः तस्याऽस्माभिर्मार्जना कारयितव्या।

सख्यौ—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) येन=जनेन, तन्मन्त्रितम्=उपचारमतिक्रम्य, भणितम्=कथितम्, स एव=जनः, मर्षयतु=तज्जन्यापराधं क्षमयतु, अन्यस्य=जनस्य, कः अत्ययः=दोषः (त्वयैवापराधः कृतः त्वमेव क्षमायाचनामपि कुरु इति भावः)।

शकुन्तला—इमम्=उपचारातिक्रमणजनितापराधम्, विसोढुम्=प्रमार्ष्टुम्, अर्हति, महाराजः=भवान्, खल्वित्यनुनये। परोक्षम्=अप्रत्यक्षम् (अक्ष्णां परमिति परोक्षम्), कः=जनः, किं न मन्त्रयति=व्याहरति।

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्)

अन्वयः—रम्भोरु! यदि तवाङ्गसङ्गमृष्टे (अत एव) क्लमापहे अत्र (पुरःस्थिते) कुसुमास्तरणे स्वजनत्वात् अवकाशम् अनुमन्यसे ततः इमम् अपराधं सहिष्ये॥ २४॥

अपराधमिति। रम्भे=कदलीस्तम्भौ, इव ऊरू यस्याः तत्सम्बोधनं हे रम्भोरु=कदलीवत् शीत-सुखदस्पर्शयुक्ता ऊरूधारिणीत्यर्थः, यदि=चेत्, तव अङ्गानां, सङ्गेन=सम्पर्केण, मृष्टे=परिशोधिते विमर्दिते वा, अत एव, क्लमं=सन्तापम्, अपहन्तीति क्लमापहे=कामदाहनाशके, अत्र=अस्मिन् पुरःस्थिते, कुसुमास्तरणे=पुष्परचितशय्यायाम्, स्वजनत्वात्=आत्मीयत्वबुद्ध्या, अवकाशम्=मदवस्थानम्, अनुमन्यसे=अनुजानासि, ततः=तदा, इमम्=त्वयोक्तम्, उपचाराति-

---

सखियाँ—(मुस्कराकर) जिसने ऐसा किया हो (शिष्टाचार के विपरीत कहा-सुना हो) वही क्षमा माँगे, दूसरे का इसमें क्या दोष है?

शकुन्तला—महाराज! आप हमारे इस अपराध को क्षमा करें। पीठ पीछे भला कौन क्या नहीं कहता?

राजा—(मुस्कराकर) हे रम्भोरु! तुम्हारे अङ्ग-स्पर्श से पवित्र एवं कामदाह को दूर

---

we have told so many things frankly transgrassing the good manners of the society.

Friends—(Smiling) Who had committed that mistake, that one can ask for pardon. What is the fault of the others in this matter.

Śakuntalā—Excuse us of king! always people have something wrong to say behind a great person.

King—(Smiling) O charming lady, having thighes like the trunk of plantain! If you spare some place for me on this flowery

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(सोपहासम्) णं एत्तिकेण उण तुट्ठो भविस्सदि? [ननु एतावता पुनस्तुष्टो भविष्यति?]

शकुन्तला—(सरोषमिव) विरम विरम दुव्विणीदे! एतावदवत्थं गदाए मए कीलसि। [विरम विरम दुर्विनीते! एतावदवस्थां गतया मया क्रीडसि।]

अनसूया—(बहिः सदृष्टिक्षेपम्) पिअंबदे! एस तवस्सिमिअपोदओ इदो तदो दिस्सदिट्ठी नूणं मादरं पब्भट्टं अस्सेसदि; ता संजोजेमि णं। [प्रियंवदे! एष तपस्विमृगपोतकः इतस्ततो दत्तदृष्टिः नूनं मातरं प्रभ्रष्टामन्विष्यति; तत् संयोजयामि एनम्।]

क्रमणजनितं त्वदीयापराधम्, सहिष्ये=क्षमिष्ये। अन्यथा तु न केनाप्युपायेनेति भावः। अत्र काम-क्लमापहत्वं प्रति 'तवाङ्गसङ्गमृष्टे' इति पदार्थस्य हेतुत्वेनोपन्यासात् पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्। औपच्छन्दसिकं वृत्तम्॥ २४॥

भावार्थः—हे रम्भोरु! यदि तवाङ्गसम्पर्कपरिशोधिते कामदाहनाशके अस्मिन् कुसुमास्तरणे-आत्मीयमिति मत्वा किञ्चित् स्थानं प्रदास्यसि तदा त्वत्कृत-उपचारातिक्रमण-जनितमराधं सहिष्ये अन्यथा तु न केनाप्युपायेन॥ २४॥

प्रियंवदा—(सोपहासम्=सपरिहासम् व्यङ्ग्यपूर्वकं वा) नन्विति प्रश्ने, एतावता=एतावन्मात्रेण शय्यायामवकाशप्रदानेनैव, तुष्टः=सन्तुष्टः, कृतार्थः, भविष्यति=भवानिति शेषः।

शकुन्तला—(सरोषम्=सकोपम् इव, कृत्रिमं रोषं प्रदर्शयन्) दुर्विनीते=दुःशिक्षिते, विरम-विरम=स्वकीयां वाचं वशमानय, निग्रहेति भावः, एतावदवस्थाम्=ईदृक् शोचनीयां दशाम्, गतया=प्राप्तया, मया=मया सह, क्रीडसि=परिहासं करोषि। इदं तु महदनुचितम्।

अनसूया—(बहिः=बाह्यदेशे, सदृष्टिक्षेपम्=किञ्चिद् व्याजकरणाय दृष्टिक्षेपणं कृत्वा), प्रियंवदे! एषः=पुरतः स्थितः, तपस्विः=अनुकम्पार्हः, चासौ मृगपोतकः=क्षुद्रहरिणशावः, चेति

करने वाली इस पुष्पशय्या पर यदि अपना समझकर कर थोड़ा-सा स्थान दे दोगी तो मैं तुम्हारे उपचारातिक्रमणजन्य अपराध को क्षमा कर दूँगा॥ २४॥

प्रियंवदा—(उपहासपूर्वक) क्या इतने से ही सन्तुष्ट हो जायेंगे?

शकुन्तला—(प्रकुपित की भाँति) चुप, चुप दुर्विनीते! इस दुरवस्था में पहुँची हुई मेरे साथ ऐसा मजाक कर रही है।

अनसूया—(बाहर की ओर दृष्टि डालकर) प्रियंवदा! तपस्वियों द्वारा पाला हुआ यह मृगछौना इधर-उधर दृष्टि डाल रहा है। जान पड़ता है कि यह अपनी बिछुड़ी हुई माँ को ढूँढ़ रहा है। तो चलूँ, इसे इसकी माँ से मिला दूँ।

---

bed, which is sanctified with the touch of your limbs and is remover of sufferings then only I can excuse your faults, which you committed by transgressing the social laws. (24)

Priyaṁvadā*—*(Jocularly) Will you be satisfied with this much only?

Śakuntalā*—*(Acting angry) Stop-stop O ill-mannered! you are cutting jokes with me, who has reached this pitiable condition.

Anasūyā*—*(Casting a glance) Priyaṁvadā, there is the eager

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—हला! चवलो क्खु एसो, ण एणं संजोजइदुं एआइणी पारेसि, ता अहंपि सहाअत्तणं करिस्सं। (इत्युभे प्रस्थिते) [हला! चपलः खल्वेषः, न एनं संयोजयितुमेकाकिनी पारयसि, तदहमपि सहायत्वं करिष्यामि।]

शकुन्तला—हला! इदो अस्मदो ण वा गन्तुं अणुमस्से, जदो असहाइणी म्हि। [हला! इतः अन्यतो न वां गन्तुमनुमन्ये, यतोऽसहायिन्यस्मि।]

उभे—(सस्मितम्) तुमं दाव असहाइणी, जाए पहवीणाहो समीवे वट्टदि। [त्वं तावदसहायिनी यस्याः पृथिवीनाथः समीपे वर्त्तते। (इति निष्क्रान्ते।)

तपस्विमृगपोतकः, इतस्ततः=सर्वासु दिक्षु, दत्तदृष्टिः=अवलोकनपरायणः, नूनम्=निश्चितम्, प्रभ्रष्टाम्=असावधानतया एनं परित्यज्य दिगन्तरप्राप्ताम्, मातरं=जननीम्, अन्विष्यति=अनुसन्धानं करोति। तत्=तस्मात्, संयोजयामि=मात्रा सह मेलयामि, एनम्=मृगशावम्।

प्रियंवदा—हला=सखि! एषः=मृगशावः, चपलः=चञ्चलः, खलु=इति निश्चयेन, अत एव, एनं=मृगपोतकम्, संयोजयितुम्=मात्रा सह मेलयितुम्, एकाकिनी=अनन्यसहाया सति, न पारयसि=न शक्नोषि, तत्=तस्मात्, अहमपि, सहायत्वं=तव साहाय्यम्, करिष्यामि। (इति=एवं, उभे=सखीद्वयम्, प्रस्थिते=मञ्चाद् प्रस्थिते)।

शकुन्तला—हला=सखि! इतः=अस्मात् स्थानात्, अन्यतः=अन्यत् स्थानम् (अन्यत्र), वां=युवाम्, गन्तुम्=यातुं, न अनुमन्ये=न अनुजानामि। यतः, सहायोऽस्या अस्तीति सहायिनी, न सहायिनी असहायिनी=एकाकिनी, अस्मि=भवामि! एकाकिनीं मां विहाय इदानीं युवयोर्गमन-मसङ्गतमिति भावः।

उभे—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) त्वं तावद्, असहायिनी=एकाकिनी, यस्याः=तव, समीपे=पार्श्वे, पृथिवीनाथः=पृथिवीपालः, वर्त्तते=विद्यते। राजा दुष्यन्तसहायत्वेऽपि त्वं कथम् एकाकिनी इति कथयसि? (इत्युक्त्वा निष्क्रान्ते=सख्यौ रङ्गात् प्रस्थितेति भावः।)

प्रियंवदा—सखी! यह बड़ी चञ्चल है। तुम अकेली इसे इसकी माँ से न मिला सकोगी। (अतः चलो) मैं भी (इस कार्य में) तुम्हारी सहायता करूँगी। (ऐसा कहकर दोनों का प्रस्थान।)

शकुन्तला—सखी! मैं तुम्हें यहाँ से जाने की आज्ञा नहीं दूँगी, क्योंकि मैं अकेली हूँ।

दोनों—(मुस्कराकर) जिसके पास स्वयं पृथिवीपति बैठे हों वह भला अकेली कैसे? (दोनों प्रस्थान करती हैं।)

---

young antelope turning his eyes here and there and searching his mother, let me help him to join his mother.

Priyamvadā—Dear! it is very naughty. You alone can not join it with its mother. Let me join you; to help you to join it with its mother.

Śakuntalā—Friends! I won't permit you to leave this place or go from here, as I am alone.

Both—(Smiling) Where is the lord of earth himself, how can she be alone?

CCO. Vasiṣṭha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—कधं गदाओ ज्जेव पिअसहीओ। [कथं गते एव प्रियसख्यौ।]

राजा—सुन्दरि! अलमावेगेन; नन्वयमाराधयिता जनस्ते सखीभूमौ वर्त्तते। तदुच्यताम्—

किं शीकरैः क्लमविमर्द्दिभिरार्द्रवातं
सञ्चालयामि नलिनीदलतालवृन्तम्।
अङ्के निधाय चरणावुत पद्मताम्रौ
संवाहयामि करभोरु! यथासुखं ते॥ २५॥

शकुन्तला—कथमिति प्रश्ने सम्भ्रमे वा, प्रियसख्यौ, गते एव=न तु व्याजेन तिरोभूय स्थिते।

राजा—सुन्दरि! आवेगेन=सखीजनासान्निध्यहेतुकेन सम्भ्रमेण, अलं=पर्याप्तम् (मास्त्विन्त्यर्थः), ननु=इति अनुनये, अयम्=पुरतःस्थितः, आराधयिता=प्रीणयिता, जनः=पुरुषः दुष्यन्तः, सखीभूमौ=सखीपदे, वर्त्तते=तिष्ठति (अहमेव ते सखीवत् शुश्रूषां करणार्थं प्रस्तुतोऽस्मि अत आवेगं मा कुरु)। तद्=तस्मात्, उच्यताम्=कथय—

अन्वयः—करभोरु! क्लमविमर्द्दिभिः शीकरैः आर्द्रवातं नलिनीदलतालवृन्तं सञ्चालयामि किम् उत पद्मताम्रौ ते चरणौ अङ्के निधाय यथासुखं संवाहयामि॥ २५॥

किं शीकरैरिति। हे करभोरु!—करभाविव=मणिबन्धात् कनिष्ठिकाङ्गुलिपर्य्यन्तप्रदेशाविव, ऊरू यस्यास्तत्सम्बोधने हे करभोरु! क्लमं=शरीरतापं, विशेषेण मर्द्दयितुं=नाशयितुं, शीलं येषां ते तैः क्लमविमर्द्दिभिः=तापनिवारकैः, शीकरैः=जलकणैः, आर्द्रः=क्लिन्नः, आर्द्रवत् शीतलः, वातः=वायुः, यस्य तत् आर्द्रवातम्, नलिन्याः=पद्मलतायाः, दलं=पत्रमेव, तालवृन्तम्=व्यजनम्, नलिनीदलतालवृन्तम्, सञ्चालयामि=आन्दोलयामि, किमिति प्रश्ने। उत=अथवा, पद्मे=कुशेशये, इव ताम्रौ=अरुणौ, पद्मताम्रौ=रक्तौ, ते=तव, चरणौ=पादौ, अङ्के=क्रोडे (उत्सङ्गे), निधाय=निवेश्य, यथासुखम्=येन प्रकारेण ते सुखं स्यात् तेनैव प्रकारेण, संवाहयामि=मर्द्दयामि। अत्र नलिनीदले तालवृन्तत्वारोपस्य प्रकृतवीजनोपयोगित्वात् परिणामालङ्कारः किञ्च पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमपि, तथा च साभिप्रायविशेषणत्वेन परिकरोऽपि। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २५॥

शकुन्तला—क्या मेरी प्रिय सखियाँ वस्तुतः चली गईं?

राजा—सुन्दरी! घबराओ नहीं, तुम्हारा यह सेवक उन सखियों के स्थान पर (सेवा करने के लिए) उपस्थित है। तो कहो—

हे रम्भोरु! थकावट को दूर करने वाले, जलबिन्दुओं से भीगे हुए कमलिनी के पत्तों से पंखा झलूँ या कमल जैसे लाल-लाल तुम्हारे पाँवों को अपनी गोद में रखकर तुम्हें सुखी करने के लिए उन्हें धीरे-धीरे दबाऊँ?॥ २५॥

Śakuntalā—Why, have my friends gone realy?

King—O beautiful one! do not be anxious. Is not this person, your adorer, near you?

Shall I set in motion the moist breezes by means of fans of cool lotus-leaves to dissipate your languor fatigue, or shall I, O round-thighed maiden, lay those feet red as lotuses in my lap and press them so as to relieve your fatigue? (25)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—ण माणणीएसु जणेसु अत्ताणं अवराहइस्सं। (इत्यवस्थासदृशमुत्थाय प्रस्थातुमिच्छति।) [न माननीयेषु जनेषु आत्मानमपराधयिष्यामि।]

राजा—(अवष्टभ्य) सुन्दरि! अपरिनिर्वाणो दिवसः, इयञ्च ते शरीरावस्था।

उत्सृज्य कुसुमशयनं नलिनीदलकल्पितस्तनावरणा।
कथमातपे गमिष्यसि परिबाधाकोमलैरङ्गैः॥ २६॥

(इति बलान्निवारयति।)

भावार्थः—ममैवात्र ते शुश्रूषाकरणे विद्यमानत्वात् सख्योः प्रस्थानेऽपि न ते परिचर्यायां कापि त्रुटिर्भविष्यतीति निदर्शयन् पृच्छति राजा यत्—हे करभोरु! शरीरतापनाशकैः जलकणैः आर्द्रवातं नलिनीदलव्यजनं तवोपरि आन्दोलयामि किम् उत पद्मवत् कमनीयारुणौ तव चरणौ मदीय उत्सङ्गे निधाय मन्दं-मन्दं संवाहयामि किम्?॥ २५॥

शकुन्तला—माननीयेषु=पूज्येषु, जनेषु, आत्मानं, न अपराधयिष्यामि=नापराधिनं करिष्यामि। अयं पादसंवाहनादिरूपोपचारो मास्त्वित्यर्थः। (इति=एवम्, अवस्थासदृशं=निज-दौर्बल्यानुरूपम्, उत्थाय, प्रस्थातुं=गन्तुमिच्छति न तु प्रस्थिता इत्यर्थः।)

राजा—(अवष्टभ्य=शकुन्तलां अभिरुध्य) सुन्दरि! दिवसः=वासरः, अपरिनिर्वाणः= अवसानं न गतः (इदानीमपि प्रखरतापोऽस्ति), इयञ्च=ईदृशी च, ते=तव, शरीरावस्था=दैहिकदशा, अत एव ईदृग् रुग्णप्रायशारीरिकदशायां गमनमनुचितमेवेति भावः।

अन्वयः—नलिनीदलकल्पितस्तनावरणा त्वं कुसुमशयनम् उत्सृज्य परिबाधाकोमलैः अङ्गैः आतपे कथं गमिष्यसि?॥ २६॥

उत्सृज्येति। नलिनीदलेन=पद्मिनीपत्रेण, कल्पितं=रचितं, स्तनयोरावरणं=तापप्रशमनायाच्छादनं, यस्याः सा नलिनीदलकल्पितस्तनावरणा, त्वम्, कुसुमशयनम्=पुष्पमयीं शय्याम्, उत्सृज्य=त्यक्त्वा, परिबाधया=परितः सन्तापेन, कोमलैः=मार्दवं गतैः (दुर्बलैः), अथवा परितः

शकुन्तला—मैं आप जैसे माननीय व्यक्ति के निकट अपने आपको अपराधिनी नहीं बनाऊँगी। (यह कहकर अपनी अवस्थानुसार धीरे से उठकर जाना चाहती है।)

राजा—(शकुन्तला को रोककर) अभी दिन नहीं बीता है और तुम्हारे शरीर की यह दशा है—

तुम्हारे दोनों स्तन कमल के पत्तों से ढँके हुए हैं, इस स्थिति में तुम फूलों के बिस्तर को छोड़कर इस पीड़ा से दुबर्ल शरीर से धूप में किस प्रकार जाओगी?॥ २६॥

(यह कहकर बलपूर्वक जाने से रोकता है।)

Śakuntalā—I will not offend against those whom I am bound to pay respect. *(Saying thus gets up and desires to leave)*

King—(Stop her) O beautiful one! the day is not yet cool, and such is your condition.

Leaving the bed of flowers where lotus leaves formed the covering of your bosom, how will you go in the sun, with your limbs slandered so languid by suffering. (26)

(Saying this, he forcibly draws her back)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—मुंच मुंच मं, ण क्खु अत्तणो पहवामि; अथवा सहीमेत्तसरणा किं दाणिं एत्थ करिस्सं। [मुञ्च मुञ्च माम्, न खलु आत्मनः प्रभवामि; अथवा सखीमात्रशरणा किमिदानीमत्र करिष्यामि ?]

राजा—धिग् व्रीडितोऽस्मि।

शकुन्तला—ण क्खु अहं महाराअं भणामि, देव्वं उवालहामि।[न खलु अहं महाराजं भणामि; दैवमुपालभे।]

राजा—अनुकूलकारि दैवं कथमुपालभ्यते ?

शकुन्तला—कधं दाणिं ण उवालहिस्सं, जं मं अत्तणो अणीसं कदुअ परगुणेहिं लोहावेदि।[कथमिदानीं न उपालप्से, यन्मामात्मनः अनीशां कृत्वा परगुणैर्लोभयति।]

बाधाः यस्याः सा-परिबाधा इति शकुन्तलाविशेषणम्, अङ्गैः=अवयवैः, आतपे=घर्म्मे, कथं गमिष्यसि=यास्यसि ? अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, आर्य्या जातिः ॥ २६ ॥

भावार्थः—सुतरां स्वस्थोऽपि वस्त्रावरणादिकं त्यक्त्वाऽऽतपे गन्तुमसमर्थो भवति मानवः, त्वं तु स्वभावतः कोमलाङ्गी, तत्रापि कामदाहेन दग्धा—भृशं पीडिता अत एव ईदृगवस्थापन्ना त्वं कुसुमशयननलिनीदलादिकं त्यक्त्वा कथमन्यत्र गन्तुं शक्नोषि ?॥ २६ ॥

(इति=एवमुक्त्वा, बलात्=बलपूर्वकम्, निवारयति शकुन्तलामितिशेष)

शकुन्तला—मुञ्च-मुञ्च=बलात्कारेण मां मा स्पृश, सम्भ्रमे द्विरुक्तिः, मां=शकुन्तलाम्, खलु इति निश्चयेन, नात्मनः प्रभवामि=प्रभुर्भवामि (स्वत एव आत्मनः प्रभुत्वाभावात् तव मनोरथपूरणाय समर्था भवामीति भावः)। अथवा=उत (यद्वा), सखीमात्रं=सख्यावेव, शरणं= नियन्तृत्वे नावलम्बनं, यस्याः सा सखीमात्रशरणा, अत्र=अस्मिन् विषये, इदानीम्=सम्प्रति, किं करिष्यामि ? गमनमन्तरेत्यर्थः। गमनमेव सङ्गतम्।

राजा—धिगिति आत्मनिन्दायाम्, व्रीडितः=लज्जितः, अस्मि=भवामि। (तथैवाहूय पश्चात् प्रत्याख्यातत्वेन विफलमनोरथत्वाल्लज्जयात्मानं भर्त्सयामि इति भावः)।

शकुन्तला—छोड़ो-छोड़ो—मैं स्वयं अपने अधीन नहीं हूँ। अथवा केवल ये सखियाँ ही मेरी सहायिका हैं। फिर मैं अकेली यहाँ रहकर क्या करूँगी ?

राजा—ओह! मैं लज्जित हो गया।

शकुन्तला—मैं महाराज को कुछ नहीं कहती, अपने भाग्य को कोसती हूँ।

राजा—अनुकूल कार्य करने वाले भाग्य को क्यों कोसती हो ?

शकुन्तला—क्या न उपालम्भ दूँगी, वह मुझे पराधीन बनाकर दूसरे के गुणों पर लुब्ध करता (ललचाता) है।

Śakuntalā—Leave me, leave me O king! I am not under my own control (or independent) or these friends are my refuge, what will I do remaining here alone.

King—Oh, I am ashamed.

Śakuntalā—I am not telling you any thing but cursing my luck.

King—Why are you cursing your favourable luck?

Śakuntalā—Why not, I blame (the luck) when this making me dependent, attracts towards the qualities of others.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(स्वगतम्)

अप्यौत्सुक्ये महति दयितप्रार्थनासु प्रतीपाः
काङ्क्षन्त्योऽपि व्यतिकरसुखं कातराः स्वाङ्गदाने।
आबाध्यन्ते न खलु मदनेनैव लब्धान्तरत्वा-
दाबाधन्ते मनसिजमपि क्षिप्तकालाः कुमार्य्यः॥ २७॥

(शकुन्तला गच्छत्येव)

शकुन्तला—अहम्=शकुन्तला, महाराजं=त्वं, दुष्यन्तम्, न भणामि=न कथयामि, खल्विति निश्चयेन, (अपितु) दैवम्=अदृष्टम्, उपालभे=तिरस्करोमि।

राजा—अनुकूलं=स्वाभिमतं, करोति=प्रतिपादयतीति अनुकूलकारि=अभिमतार्थ-साधीत्यर्थः, दैवम्=अदृष्टम्, कथमुपालभ्यते=निन्द्यते त्वयेति शेषः) (आवयोः परस्परसम्मेलनद्वारा दैवस्यानुकूलकारित्वाद् तन्निन्दाऽऽनावश्यकीति भावः।)

शकुन्तला—कथम्, इदानीं=सम्प्रति (दैवम्), न उपालप्से=उपालम्भो न देयमिति भावः। यत्=यस्मात्, आत्मनोऽनीशाम्=अस्वतन्त्राम्, कृत्वा=विधाय, परगुणैः=अन्यदीयशौर्यादिभिः, लोभयति=परस्मिन्ननुरागं जनयति।

राजा—(स्वगतम्=आत्मगतम्, अस्पष्टम्)

अन्वयः—महति औत्सुक्ये अपि दयितप्रार्थनासु प्रतीपाः व्यतिकरसुखं काङ्क्षन्त्योऽपि स्वाङ्गदाने कातराः; अत एव क्षिप्तकालाः कुमार्य्यः लब्धान्तरत्वात् मदनेनैव न खलु आबाध्यन्ते किन्तु मनसिजमपि आबाधन्ते॥ २७॥

अप्यौत्सुक्य इति। महति=विपुले, औत्सुक्ये=रन्तुमाग्रहे सत्यपि, दयितस्य=वल्लभस्य, प्रार्थनासु=याचनासु (रतिविषयक इत्यर्थः), प्रतीपाः=पराङ्मुख्यः, व्यतिकरसुखम्=सङ्गमसुखम्, [काङ्क्ष]न्त्योऽपि=अभिलषन्त्योऽपि, स्वाङ्गदाने=रत्यर्थं तत्साधनावयवार्पणे, कातराः=भीरुकाः (लज्जया कातराः), अत एव क्षिप्तः=अतिक्रान्तः (समुपस्थितोऽपि मौग्ध्येन रमणविनेति भावः), कालः=मदनस्य चरितार्थतासमयः,याभिस्ताः क्षिप्तकालाः, कुमार्य्यः=अविवाहिता योषितः,

---

राजा—(मन में) ये कुमारियाँ प्रिय समागम के लिए अतीव उत्कण्ठित होते हुए भी अपने प्रियतम से (उसे सामने पाकर) प्रतिकूल व्यवहार करती हैं; यद्यपि इनके मन में मिलन सुख की अभिलाषा रहती है तथापि अङ्ग-समर्पण में कातरता दिखलाती हैं—यह देखकर प्रतीत होता है कि अवसर पाकर केवल कामदेव ही उनको कष्ट नहीं देता अपितु समय बिता कर वे भी कामदेव को सताती हैं॥ २७॥

(शकुन्तला चलती ही जाती है)

King—(Himself) These madains, even being more anxious for joining with their lovers, are behaving otherwise. Though they have great desire for amorous pleasures, yet, show fear in presenting the limbs, as such it seems that the god of love not only pinning for them when ever he gets chance, but these too give him pain by wasting the proper time.

(Śakuntalā forwards)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—न कथमात्मनः प्रियं करिष्ये। (उपसृत्य पटान्तमवलम्बते।)

शकुन्तला—पौरव! रक्ख रक्ख विणअं, इदो तदो इसिओ संचरंति। [पौरव! रक्ष रक्ष विनयम्, इतस्ततः ऋषयः सञ्चरन्ति।]

राजा—सुन्दरि! अलं गुरुजनाद् भयेन न ते विदितधर्मा तत्रभवान् कण्वः खेदमुपयास्यति। यतः—

गान्धर्वेण विवाहेन बह्व्योऽथ मुनिकन्यकाः।
श्रूयन्ते परिणीतास्ताः पितृभिश्चानुमोदिताः॥ २८॥

लब्धान्तरत्वात्=प्राप्तावकाशतया, मदनेनैव=केवलं सरेणैव, न खलु आबाध्यन्ते=नैव प्रपीड्यन्ते, किन्तु मनसिजं=कामदेवमपि, आबाध्यन्ते=पीडयन्ति। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसा सन्देहालङ्कारश्च॥ २७॥

भावार्थः—शकुन्तलाया महति प्रणयौत्सुक्ये सत्यपि, लज्जया वल्लभस्य रत्यर्थं प्रार्थनायां विषये पराङ्मुखतया तथा सुरतसुखमभिलषन्त्या अपि तत्साधनीभूतावयवार्पणे कातरता च प्रतीयते, अत एव सा शकुन्तला लब्धावकाशेन मदनेन पीडिता भूत्वापि स्वयं हि मदनं तदभिमताननुष्ठानद्वारा पीडयति इत्थं परस्परेण महान् संग्रामो जात इति भावः॥ २७॥

(शकुन्तला, गच्छत्येव=दुष्यन्तानुरोधं तिरस्कृत्य गच्छत्येव।)

राजा—आत्मनः=स्वस्य, प्रियं=सुखकरं, कथं न करिष्ये=किमर्थं नानुष्ठास्यामि। (उपसृत्य=कतिचिद् पदानि धृत्वा, पटान्तरम्=वस्त्राञ्चलम्, अवलम्बते=गृह्णाति।)

शकुन्तला—पुरोरपत्यं पुमान् तत्सम्बोधनम्—पौरव!=पुरुवंशप्रभव! विनयम्=सौजन्यं मर्यादां वा, रक्ष-रक्ष=पालय-पालय, इतस्ततः=सर्वतः, ऋषयः=तापसाः, सञ्चरन्ति=पर्यटन्ति (यदि कश्चित् ईदृशं व्यापारमवलोक्य पितुः समीपे सूचयेत् तर्हि महाननर्थो भवेदिति भावः)।

राजा—सुन्दरि=शोभनरूपसम्पन्ने! गुरुजनात्=पितुः, भयेन, अलम्=पर्याप्तम्, भयं मा कृथा इत्यर्थः, विदिताः=अवगताः, धर्माः=लोकाचाराः, येन सः विदितधर्मा, तत्रभवान्=पूज्यः, ते=त्वत्सम्बन्धे, अस्मिन् समागमविषये, खेदं=पश्चात्तापं, न उपयास्यति=न प्राप्स्यति। गान्धर्व-विवाहस्य शास्त्रसम्मतत्वात् तव चिन्ता सर्वथैव निरर्थकेति भावः। यतः—

राजा—अब क्यों न मैं अपना प्रिय कर लूँ? (आगे बढ़कर आँचल पकड़ता है।)

शकुन्तला—पौरव! शिष्टाचार की रक्षा कीजिए, (देखिए) इधर-उधर ऋषि आ-जा रहे हैं।

राजा—सुन्दरी! गुरुजनों से न डरो, क्योंकि लोकाचार से परिचित भगवान् कण्व

King—Why not I do my wished one now. *(Forwarding and catching the corner of her garment)*

Śakuntalā—O, descendent of Purū! keep yourself within the bounds of modesty. See the sages are moving here and there.

King—O beautiful one! do not fear your elders. For the revered father of this hermitage, Kaṇva, who knows the law will not take exception to it (when he sees it). Moreover—

Many daughters of the sages are heard to have been married

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(दिशोऽवलोक्य) कथं प्रकाशं निर्गतोऽस्मि? (शकुन्तलां हित्वा पुनस्तैरेव पदै-र्निवर्त्तते)।

शकुन्तला—(पदान्तरे प्रतिनिवृत्य साङ्गभङ्गम्) पौरव! अणिच्छापूरओ वि संभासण-मेत्तपरिचिदो अअं जणो ण विसुमरिदव्वो। [**पौरव! अनिच्छापूरकोऽपि सम्भाषणमात्रपरिचितः अयं जनः न विस्मर्त्तव्यः।**]

अन्वयः—बह्व्यः मुनिकन्यकाः गान्धर्वेण विवाहेन परिणीताः। अथ पितृभिः ताः अनुमोदिताः इति श्रूयन्ते॥ २८॥

गान्धर्वेणेति। बह्व्यः=अनेकाः, मुनिकन्यकाः=तापसकुमार्य्यः, गान्धर्वेण विवाहेन= 'करस्पर्शस्तु गान्धर्वः' इति लक्षणलक्षितेनोद्वाहेन, परिणीताः=पुरुषैः समूढाः, अथ किन्तु= परिणयानन्तरमपि, पितृभिः=तद्गुरुजनादिभिः, ताः=परिणीताः कन्यकाः, अनुमोदिताः= अभिनन्दिताः, समर्थिताः, इति श्रूयन्ते=इतिहासपुराणादिपरकाख्यानेषु आकर्ण्यन्ते। अत्र अप्रस्तुत-प्रशंसाऽलङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २८॥

भावार्थः—सुन्दरि! न भेतव्यम्, यतः बह्व्यः तापसकुमार्य्यः गान्धर्वेण विवाहेन परिणीताः। परिणयानन्तरमपि ताः कन्यकाः पितृभिः न भर्त्सिता अपितु अभिनन्दिता एव एवम् इतिहासपुराणादिषु श्रूयन्ते॥ २८॥

(दिशोऽवलोक्य=इतस्ततो दृष्ट्वा) कथं, प्रकाशम्=लतामण्डपाद् बहिःप्रदेशम्, निर्गतोऽस्मि =निःसृतोऽस्मि (शकुन्तलानुसरणे इति भावः), शकुन्तलां हित्वा=त्यक्त्वा, पुनस्तैरेव पदैः=यैरेव पदैः प्रकाशं गतस्तैरेवेत्यर्थः, विवर्तते=प्रत्यागच्छति लतागृहे।

शकुन्तला—(पदान्तरे=अन्यस्मिन् पदसञ्चारे तत्समये एवेत्यर्थः, प्रतिनिवृत्त्य=परिवृत्य, अङ्गभङ्गेन सहितं साङ्गभङ्गम्=अङ्गानि किञ्चिद्वक्रीकृत्य) पौरव! न इच्छायाः पूरक इति अनिच्छापूरकः अपि=अपूरिताभिलाषोऽपि, सम्भाषणमात्रेण=आलोपेनैव, परिचितः=विदितः, अयं जनः=शकुन्तलारूपः, न विस्मर्तव्यः=न मनसः परिहरणीयः।

तुम्हारे इस कार्य से अप्रसन्न न होंगे, क्योंकि सुनते हैं कि अनेकानेक ऋषिकन्याओं ने गान्धर्व विवाह किया और उनके इस कार्य का उनके गुरुजनों ने अनुमोदन ही किया॥ २८॥

(इधर-उधर देखकर) क्या मैं प्रकाश में आ गया? (शकुन्तला को छोड़कर पुनः (लतामण्डप में) लौट जाता है।)

शकुन्तला—(एक पैर आगे बढ़ाकर लौटती है और अङ्गभङ्गी के साथ) पौरव! अपनी इच्छा पूरी न होने पर भी सम्भाषण मात्र से परिचित इस जन को भूलियेगा नहीं।

---

by the ceremony called 'Gandharva', and even their fathers have approved of them. (28)

(Watching around) Have I come in an open place? *(Returns back, leaving Śakuntalā)*

Śakuntalā—*(Puts a step forward, then turning to the king with style)* O, descendent of Purū! though your desire is not fulfilled yet do not forget this man, who has come to your contact through conversation.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—सुन्दरि!

त्वं दूरमपि गच्छन्ती हृदयं न जहासि मे।
दिवावसाने च्छायेव पुरो मूलं वनस्पतेः॥ २९॥

शकुन्तला—(स्तोकमन्तरं गत्वा आत्मगतम्) हद्धी हद्धी! इमं सुणिअ ण मे चलणा पुरमुहा पसरंति। भोदु, इमेहिं पज्जंतकुरुवएहिं ओवारिदसरीरा भविअ पेक्खिस्सं दाव से भावाणुबन्धं। [हा धिक् हा धिक्! इदं श्रुत्वा न मे चरणौ पुरोमुखौ प्रसरतः। भवतु, एभिः पर्यन्तकुरबकैः अपवारितशरीरा भूत्वा प्रेक्षिष्ये तावदस्य भावानुबन्धम् (तथा कृत्वा स्थिता)।

राजा—कथमेवं प्रिये! अनुरागैकरसं मामुत्सृज्य निरपेक्षैव गतासि।

राजा—सुन्दरि!

अन्वयः—दिवावसाने वनस्पतेः छाया पुरः दूरं गच्छन्त्यपि मूलम् इव त्वं पुरः गच्छन्त्यपि मे हृदयं न जहासि॥ २९॥

त्वमिति। दिवावसाने=सूर्यास्तमनवेलायां, वनस्पतेः=वृक्षस्य, छाया=अनातपः, पुरः= अग्रतः, दूरं गच्छन्त्यपि, मूलं=वृक्षमूलं, इव, त्वम्, पुरः=दूरं गच्छन्त्यपि, मे=मम, हृदयं=मानसं, न जहासि=न मुञ्चसि। अत्र पूर्णोपमाऽलङ्कारः॥ २९॥

भावार्थः—सूर्यास्तमनवेलायां यथा पादपच्छाया पुरः दूरं गच्छन्त्यपि वृक्षमूलं न जहाति तथैव मां परित्यज्य पुरः गच्छन्त्यपि त्वं मम हृदयं न मुञ्चसि॥ २९॥

शकुन्तला—(स्तोकमन्तरं गत्वा=किञ्चिद्दूरं गत्वा, आत्मगतम्=निजमनसि) हा धिक्! हा धिक्! इदं=राजोक्तं, श्रुत्वा=आकर्ण्य, मे=मम, चरणौ=पादौ, पुरोमुखौ=अग्रे, न प्रसरतः=न चलतः, भवतु=अस्तु, एभिः=पुरतः स्थितैः, पर्यन्तकुरबकैः=प्रान्तवर्तिभिः कुरुबकाख्यवृक्षैः, अपवारितं शरीरं यस्याः सा अपवारितशरीरा=अन्तर्हितदेहा, भूत्वा, तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, अस्य=राज्ञः, भावस्य=हृदयस्थविचारस्य, अपरिपुष्टानुरागस्य, अनुबन्धनम्=अनुवृत्तिम्, प्रेक्षिष्ये=पश्यामि।

राजा—हे प्रिये! अनुरागः=रतिरेव, एकः=केवलः, रसः=आस्वादः, यस्य तम् अनुरागै-

---

राजा—सुन्दरी! जैसे सन्ध्या के समय छाया वृक्ष से आगे खिसककर भी उसके मूलभाग को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार तुम आगे जाने पर भी मेरा हृदय नहीं छोड़ रही हो।

शकुन्तला—(भीतर जाकर अपने मन में) हाय धिक्कार है, धिक्कार है, यह कथन सुनकर तो मेरे पाँव आगे ही नहीं बढ़ते। अच्छा, तो इस कुरुबक के पीछे छिपकर इसके भावों को देखती हूँ। (उसी प्रकार खड़ी हो जाती है।)

राजा—प्रिये! भला ऐसा क्यों ? अपने प्रेम से डूबे हुए मुझे इस प्रकार निःस्पृह होकर क्यों एकाकी छोड़कर (इस प्रकार) चली गई हो ?

King—O timid one! as the shadow of the tree in the evening even marching forward never leaves its root, similarly marching forward you too do not leave my heart. (29)

Śakuntalā—*(Entering inside)* Oh, very bad. Hearing this my feet do not move forth. Well, I shall see his feelings, hiding myself behind this kuruvāka.

King—How O beloved of mine! without any longing you

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनिर्दयोपभोगस्य रूपस्य मृदुनः कथम्।
कठिनं खलु ते चेतः शिरीषस्येव बन्धनम्॥ ३०॥

शकुन्तला—एदं सुणिअ ण मे अत्थि विभवो गच्छिदुं। [इदं श्रुत्वा न मे अस्ति विभवो गन्तुम्।]

राजा—सम्प्रति प्रियाशून्ये किमस्मिन् लतामण्डपे करोमि ? (अग्रतोऽवलोक्य) हन्त ! व्याहतं मे गमनम्।

करसम्, माम्=दुष्यन्तम्, एवम्=अनेन प्रकारेण एकाकीत्यर्थः, कथं=केन प्रकारेण, निरपेक्षैव= निःस्पृहैव, गतासि=प्रस्थानं करोषि ? अहो तव हृदयं कठिनतरं खल्विति।

अन्वयः—अनिर्दयोपभोगस्य मृदुनः शिरीषस्य बन्धनम् इव (अनिर्दयोपभोगस्य) ते रूपस्य चेतः कथं कठिनम्॥ ३०॥

अनिर्दयोपेति। अनिर्दयम्=अतिकोमलत्वेनागाढं, यथा स्यात्तथा उपभोगः यस्य तस्य अनिर्दयोपभोगस्य, मृदुनः=सुकुमारस्य, शिरीषस्य=शिरीषपुष्पस्य, बन्धनं=वृन्तम्, इव=यथा (अनिर्दयोपभोगस्य=अजातगाढालिङ्गनचुम्बनादिव्यापारस्य), मुदुनः, ते=तव, रूपस्य=आकारस्य सम्बन्धि, चेतः=हृदयम्, कथं कठिनम्=केन प्रकारेण काठिन्ययुतम्? अत्र पूर्णोपमाऽ-लङ्कारः॥ ३०॥

भावार्थः—अनिर्दयोपभोगस्य सुकुमारशिरीषपुष्पस्य वृन्तमिव अनिर्दयोपभोगस्य तव सुकोमलरूपस्य हृदयं कथमीदृग् कठिनम्?॥ ३०॥

शकुन्तला—इदं=राज्ञ ईदृशं स्निग्धवचनम्, श्रुत्वा=आकर्ण्य, मे=मम, गन्तुम्=इतो यातुं, विभवः=शक्तिः, न अस्ति=न विद्यते।

राजा—सम्प्रति=इदानीम्, प्रियया=शकुन्तलया, शून्ये=विरहिते, अस्मिन्=पुरतःस्थिते, लतामण्डपे=वल्लीगृहे, किं करोमि? (इतो गमनमेव न्याय्यम् इति भावः) (अग्रतः=पुरतः,

---

जिस प्रकार अतीव सुकुमार शिरीष पुष्प का वृन्त कठिन होता है उसी प्रकार कोमल और गाढ़ भाव से उपभोग योग्य तुम्हारे इस रूप की विद्यमानता में तुम्हारा हृदय भला किस प्रकार इतना कठिन है ?॥ ३०॥

शकुन्तला—यह सुनकर तो मुझमें चलने की शक्ति ही नहीं रही।

राजा—अब प्रियाविहीन इस लतामण्डप में ठहरकर मैं क्या करूँ? (सामने देखकर) अरे मेरे प्रस्थान में रुकावट आ गई।

---

have gone from here leaving me (your lover) alone, who is drown fully in your love.

As the most delicate Śireeṣa flower has a hard foot-stalk, similarly in the presence of very delicate and closly enjoyable your form, how your heart is so cruel or hard. (30)

Śakuntalā—Hearing this, I have become two weak to move.

King—Now, why should I stay in this creepers pavilion, which is dejected by my beloved. *(Watching forth)* Oh, my movement is obstructed. For—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मणिबन्धाद्गलितमिदं संक्रान्तोशीरपरिमलं तस्याः।
हृदयस्य निगडमिव मे मृणालवलयं स्थितं पुरतः॥ ३१॥
(सबहुमानमादत्ते।)

शकुन्तला—(हस्तं विलोक्य) अम्मो! दोव्वल्लसिढिलदाए परिब्भट्टं एदं मिणाल-वलअं ण मए परिण्णादं। [अहो! दौर्बल्यशिथिलतया परिभ्रष्टमेतत् मृणालवलयं न मया परिज्ञातम्।]

अवलोक्य=दृष्ट्वा) हन्त=इति हर्षे, व्याहतं=विघ्नाभिभूतम्, मे=मम, गमनम्=प्रयाणम्। गन्तुं न पारयामीति भावः।

अन्वयः—तस्याः मणिबन्धात् गलितं संक्रान्तोशीरपरिमलं मे हृदयस्य निगडम् इव इदं मृणालवलयं पुरतः स्थितम्॥ ३१॥

मणिबन्धादिति। तस्याः=शकुन्तलायाः, मणिबन्धात्=वलयधारणदेशात्, गलितं= विस्रस्तम्, संक्रान्तः=गात्रसम्पर्कात् संलग्नः, उशीरस्य=वीरणमूलानुलेपनस्य, परिमलः= गन्धप्रकर्षः, यस्मित् तत् संक्रान्तोशीरपरिमलम्, तथा मे=मम, हृदयस्य=चेतसः, निगडं=बन्धनशृङ्खला इव, इदं=पुरोदृश्यमानम्, मृणालवलयं=मृणालनिर्मितं हस्ताभरणं कटकं, पुरतः=अग्रतः, स्थितम्= वर्तते। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमपीति केचित्। आर्य्या जातिः॥ ३१॥

भावार्थः—शकुन्तलायाः वलयधारणदेशात् विस्रस्तं तद्गात्रसम्पर्कात् उशीरगन्धभरितम् इदं मृणालवलयं ममाग्रे तिष्ठति॥ ३१॥

(सबहुमानम्=आदरातिशयसहितम्, आदत्ते=गृह्णाति।)

शकुन्तला—(हस्तं=स्वकरं, विलोक्य=दृष्ट्वा) अहो=इति विस्मये, दौर्बल्येन=शरीरस्य कृशतया, कृशता च=कामदाहजनिता या शिथिलता=श्लथता, तया दौर्बल्यशिथिलतया, परिभ्रष्टं= हस्ताद्विगलितम्, एतत्=अलक्षीभूतं (राज्ञः करस्थितम्), मृणालवलयं=मृणालनिर्मितहस्ताभरणम्, न मया परिज्ञातम्=न लक्षितम्।

खस की सुगन्ध से सना हुआ यह कमलनाल का कंगन प्रियतमा शकुन्तला के मणिबन्ध से गिरकर हमारे हृदय के बन्धन के समान सामने पड़ा हुआ है॥ ३१॥

(आदरपूर्वक उठा लेता है।)

शकुन्तला—(अपना हाथ देखकर) ओह! शारीरिक कमजोरी तथा कामदाहजनित दुर्बलता के कारण यह मृणालवलय मेरे हाथ से खिसक गया और मुझे पता भी नहीं चला।

Scented with the fragrance of fragrant root of uśeera (a plant) this bracelet made of the fibrous root a lotus of my beloved Śakuntalā, slipped from her wrist and now laying before as if it is an iron chain for my heart. (31)

(picks up with respect)

Śakuntalā—(Looking her hand) Oh, due to weakness, when this bracelet made of fibrous root of a lotus had slipped from my wirst, not recognised by me.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(मृणालवलयमुरसि निक्षिप्य) अहो स्पर्शः !

अनेल लीलाभरणेन ते प्रिये! विहाय कान्तं भुजमत्र तिष्ठता।
जनः समाश्वासित एष दुःखभागचेतनेनापि सता न तु त्वया॥ ३२॥

शकुन्तला—अदो वरं ण समत्थम्हि विलंबिदुं। भोदु, एदेण ज्जेव अवदेसेण अत्ताणं दंसइस्सं। [अतः परं न समर्थास्मि विलम्बितुम्। भवतु, एतेनैव अपदेशेन आत्मानं दर्शयिष्यामि।] (इत्युपसर्पति)

राजा—(मृणालवलयं=बिसतन्तुनिर्मितं कटकं, उरसि=हृदये, निक्षिप्य=निधाय) अहो इति प्रसन्नतार्थे, स्पर्शः=सुखदस्पर्शः, अस्य वलयस्येति शेषः।

अन्वयः—प्रिये! कान्तं भुजं विहाय अत्र तिष्ठता अनेन ते लीलाभरणेन अचेतनेन सताऽपि दुःखभाक् एषः जनः समाश्वासितः तु त्वया न॥ ३२॥

अनेनेति। हे प्रिये! कान्तम्=मनोज्ञम्, भुजं=करम्, विहाय=त्यक्त्वा, अत्र=तिरस्कृतप्रदेशे, तुच्छभूमौ, तिष्ठता=अवस्थितेन, अनेन=मत्समीपवर्त्तिना, ते लीलाभरणेन=तव विलासालङ्कारेण, अचेतनेन=चैतन्यशून्येन, सताऽपि, दुःखं भजतीति दुःखभाक्=वियोगदुःखितः, एषः=मल्लक्षणो जनः, समाश्वासितः=सुस्थीकृतः, तु=किन्तु सचेतनया त्वया न समाश्वासितः। अत्र विभावना-विशेषोक्त्योः सन्देहसङ्करः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ ३२॥

भावार्थः—हे प्रिये! तव कमनीयकरं विहाय अत्र तुच्छभूमौ पतितेन अनेन जडेन, तव लीलाभरणेन यथाऽऽग्रहं समाश्वासितः तथा सचेतनया त्वया एष वियोगतापतापितः जनः न समाश्वासितः॥ ३२॥

शकुन्तला—अतः परम्=इदृक् करुणाप्लावितकथनश्रवणानन्तरम्, विलम्बितुम्=

राजा—(कमलनाल के कंगन को हृदय से लगाकर) अहो! इसका स्पर्श कितना सुखकर है—

हे प्रिये! तुम्हारे कमनीय हाथों को छोड़कर यहाँ तुच्छ स्थान में पड़े हुए तुम्हारे इस मृणालवलय ने जड़ होकर भी इस दुःखभाजन व्यक्ति को आश्वासन दिया है परन्तु तुमने चेतन होकर भी ऐसा कुछ नहीं किया है॥ ३२॥

शकुन्तला—इसके पश्चात् अब मैं (इनसे मिलने में) विलम्ब नहीं कर सकती। अच्छा तो इसी बहाने अपने आपको (इन्हें) दिखाऊँ (इनके पास पहुँचूँ)। (यह कहकर पास पहुँचती है)

King—*(The bracelet made of fibrous root of a lotus keeping at his heart)* O, how comfortable is its touch.

O My beloved! leaving your charming hand and laying at this meanest place this bracelet made of fibrous root of a lotus, even being a dull one this grieved man has been satisfied, but being a sentient you have not done any such thing. (32)

Śakuntalā—After (hearing this) I can not delay. Shall I show myself on this pretext? *(approaches)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(दृष्ट्वा सहर्षम्) अये! जीवितेश्वरी मे प्राप्ता परिदेवनानन्तरं प्रसादेनोप-कर्त्तव्योऽस्मि खलु दैवस्य।

पिपासाक्षामकण्ठेन याचितञ्चाम्बु पक्षिणा।
नवमेघोज्झिता चास्य धारा निपतिता मुखे॥ ३३॥

शकुन्तला—(राज्ञः सम्मुखे स्थित्वा) अज्ज! अद्धपधे सुमरिअ एदस्स हत्थब्भंसिणो मिणालवलअस्स किदे पडिणिवुत्तम्हि कधिदं मे हिअएण तुए गहिदंत्ति। ता णिक्खिव एदं,

---

विलम्बमापादयितुं, न समर्थाऽस्मि=न शक्ताऽस्मि; भवतु, एतेनैव=मृणालवलयानयनरूपेणैव, अपदेशेन=व्याजेन छलेन वा, आत्मानं दर्शयिष्यामि। (इति=इत्थमुक्त्वा, उपसर्पति=उपगच्छति।)

राजा—(दृष्ट्वा=शकुन्तलाम् अवलोक्य, सहर्षम्=हर्षपूर्वकम्) अये! इति हर्षे सम्भ्रमे वा, मे=मम, जीवितेश्वरी=प्राणेश्वरी, प्राप्ता=उपस्थिता, परिदेवानानन्तरम्=तदर्थं कृतविलापानन्तरम्, दैवस्य=नियतेः, प्रसादेन=प्रियासमागमरूपानुग्रहेण, उपकर्त्तव्यः=उपकारभाजनीकृतोऽस्मि, खल्विति निश्चयेन।

(स्वेच्छया प्रियाया मत्समीपागमनात् उपकारभाजनीकृतोऽस्मि इति भावः।)

अन्वयः—पिपासाक्षामकण्ठेन पक्षिणा अम्बु याचितञ्च नवमेघोज्झिता धारा अस्य मुखे निपतिता च॥ ३३॥

पिपासेति। पिपासया=तृष्णया, क्षामः=शुष्कः, कण्ठो यस्य स तथोक्तेन पिपासाक्षाम-कण्ठेन, पक्षिणा=चातकेन, अम्बु=जलम्, याचितञ्च=प्रार्थितञ्च, नवमेघेन=वर्षणप्रवणेन जलदेन, उज्झिता=विसृष्टा, धारा=जलधारा, अस्य=तृषितचातकस्य, मुखे=मुखगह्वरे, निपतिता=प्रविष्टा च। अत्र चकारद्वयेन याचनपतनक्रिययोः समानकालताप्रतीतेः क्रियासमुच्चयोऽलङ्कारः। अप्रस्तुत-प्रशंसाऽलङ्कारश्चापि प्रतीयते। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ ३३॥

भावार्थः—यथा पिपासाकुलितस्य चातकस्य जलयाचना समकालमेव तल्लाभे महान् हर्षः सम्भवति तथैव ममापि शकुन्तलादर्शनप्रार्थना संमकालमेव तद्दर्शनलाभात् महांन् हर्षः जात इति भावः॥ ३३॥

राजा—(देखकर हर्ष के साथ) अरे! मेरी प्राणेश्वरी आ गई। इतना दुःख देकर भी दैव ने कृपा करके मेरा उपकार ही किया है।

प्यासे चातक ने क्षीण कण्ठ होकर जल के लिए प्रार्थना की और नवीन मेघ ने उसके मुख में जलधार उडेल दी। अर्थात् मेरी प्रार्थना के साथ ही मेरी प्रिया को यहाँ भेज दिया॥ ३३॥

शकुन्तला—(राजा के सामने जाकर) आर्य! आधे मार्ग में ध्यान आया और मैं

King—(with joy) Oh, the mistress of my life has arrived. After giving this much sufferings, the fortune at least favoured me.

By weakened throught due to thirst the bird cātaka (name of bird which is supposed to live only on rain drops) begged some water and the new cloud over throwed the stream of water in its mouth i.e. with the request of mine the fortune sent my beloved here. (33)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा मं अत्ताणं च मुणिअणेसुं पआसइस्सदि। [आर्य्य! अर्द्धपथे स्मृत्वा एतस्य हस्तभ्रंशिनो मृणालवलयस्य कृते प्रतिनिवृत्तास्मि; कथितं मे हृदयेन, त्वया गृहीतमिति। तन्निक्षिप एतम्, मा मामात्मानञ्च मुनिजनेषु प्रकाशयिष्यति।]

राजा—एकेनाभिसन्धिना प्रत्यर्पयामि।

शकुन्तला—केण उण ? [केन पुनः ?]

राजा—यदीदमहमेव यथास्थानं निवेशयामि।

शकुन्तला—आं, का गदी। भोदु एवं दाव। [आः, का गतिः। भवतु एतत् तावत्।] (इत्युपसर्पति)

शकुन्तला—(राज्ञः=दुष्यन्तस्य, सम्मुखे=अग्रे, स्थित्वा) अर्द्धं पन्था इत्यर्द्धपथस्तस्मिन् अर्द्धपथे=मध्यमार्गे, स्मृत्वा=लतामण्डपे मृणालवलयं भ्रंशमिति स्मृत्वा, एतस्य=तव पार्श्ववर्तिनः, हस्तभ्रंशिनः=करात् स्खलितस्य, मृणालवलयस्य=कमलनालनिर्मितकटकस्य, कृते=निमित्तम्, प्रतिनिवृत्तास्मि=प्रत्यागतास्मि। मे=मम, हृदयेन=अन्तःकरणेन, कथितम्=भणितम्, त्वया=भवता, गृहीतमिति=लब्धमिति। तत्=तस्मात्, एतत्=मृणालवलयम्, निक्षिप=समर्पय, माम्=शकुन्तलाम्, आत्मानम्=स्वञ्च, मुनिजनेषु=तापसजनेषु, मा प्रकाशयिष्यति=न सूचयिष्यति।

राजा—एकेन=एकेनैव, अभिसन्धिना=उद्देशेन उत केनचित् पणेनैव, प्रत्यर्पयामि=प्रदाष्यामि।

शकुन्तला—केन पुनः ?=केन पणेन ?

राजा—यदि, अहमेव=केवलमहमेव न तु त्वम्, यथास्थानं=स्थानमतिक्रम्य, तव हस्ते इत्यर्थः, निवेशयामि=परिधापयामि।

इसी हाथ से गिरे हुए मृणालवलय के लिए लौट आई हूँ; मेरे हृदय ने बताया कि उसे आपने पाया है। अतः उसे मुझे दे दीजिए एवं मुझे तथा स्वयं को मुनिजनों के समक्ष प्रकाशित न कीजिए (अर्थात् ऐसा कुछ कीजिए जिससे मुनिजन मुझे और आपको न देख पायें)।

राजा—एक ही शर्त पर इसे लौटाऊँगा।

शकुन्तला—किस शर्त पर ?

राजा—कि मैं ही इसे यथास्थान पहनाऊँगा।

शकुन्तला—ओह! और उपाय भी क्या है ? ऐसे ही सही। (और आगे खिसक आती है।)

Śakuntalā*—*(Reaching to the king and facing him) O Noble One! In the middle way it came to my notice and returned for this bracelet made of the fibrous root of a lotus; my heart informed me that you have got it. Please return it to me and do not exhibit me and yourself before the sages.

King—Only on one condition, I will return it.

Śakuntalā—What is that?

King—That I, myself will place it at the proper place.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—इतः शिलापट्टैकदेशं संश्रयावः।

(इत्युभौ परिक्रम्योपविष्टौ।)

राजा—(शकुन्तलाया हस्तमादाय) अहो स्पर्शः!

हरकोपाग्निदग्धस्य दैवेनामृतवर्षिणा।
प्ररोहः संम्भृतो भूयः किंस्वित् कामतरोरयम्?॥ ३४॥

शकुन्तला—आः=इति पीडासूचकमव्ययम्, का गतिः=कः उपायः, नोपायान्तरमिति भावः। भवतु एतत् तावत्=त्वमेव करे वलयं निवेशय। (इति=एवमुक्त्वा, उपसर्पति=राजानमुपगच्छति।)

राजा—इतः=अस्मिन् पार्श्वे, शिलापट्टस्य=प्रस्तरखण्डस्य, एकदेशम्=भागमेकम्, संश्रयावः=उपविशावः। (इति=एवम्, उभौ=शकुन्तलादुष्यन्तौ, परिक्रम्य=चंक्रमणं कृत्वा, उपविष्टौ।)

राजा—(शकुन्तलायाः=स्वप्रेयस्याः, हस्तं=करम्, आदाय=गृहीत्वा) अहो=अतिशयसुखप्रदत्वादाश्चर्यकरः, स्पर्शः=करस्पर्शानुभवः।

अन्वयः—अयं हरकोपाग्निदग्धस्य कामतरोः अमृतवर्षिणा दैवेन भूयः सम्भृतः प्ररोहः किंस्वित्॥ ३४॥

हरेति। अयम्=हस्तः, हरस्य=शिवस्य, कोपाग्निना=क्रोधोत्पन्नानलेन, दग्धस्य=भस्मीकृतस्य, हरकोपाग्निदग्धस्य, काम एव तरुस्तस्य कामतरोः=मदनवृक्षस्य, अमृतवर्षिणा= पीयूषवर्षिणा, दैवेन=भागधेयेन, भूयः=पुनरपि (दहनात् परमपि), सम्भृतः=उत्पादितः, प्ररोहः=अङ्कुरः, किंस्वित्=सवितर्कप्रश्ने (शकुन्तलायाः हस्तरूपेण कामरूपस्य वृक्षस्याङ्कुर उत्पादितः किमिति भावः)। अत्र रूपकालङ्कारः किंस्विदिति सवितर्कप्रश्नेन सन्देहालङ्कारोऽपि। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ ३४॥

राजा—आओ, इस चट्टान पर एक ओर बैठ जायें।

(यह कहकर दोनों घूमकर बैठ जाते हैं।)

राजा—(शकुन्तला का हाथ पकड़कर) ओह! कितना सुखदस्पर्श है (इस हाथ का)।

कामरूपी वृक्ष, जो भगवान् भव के कोपानल से भस्म हो गया था, क्या उसे फिर से विधाता ने अमृत वर्षा कर हाथ रूपी अङ्कुर के रूप में उत्पन्न किया है॥ ३४॥

Śakuntalā—Oh, there is no way. Well, as you please. *(approaches near)*

King—Let us occupy a portion of this stone slab. *(Roaming and sitting down)*

King—*(Seizing Śakuntalā's hand)* Oh, how beautiful is it's touch. The tree in the shape of God of love, which was burnt in the anger-fire of lord Śivā, seems, to have become green again due to raining of nectar by the God creator, or the God creator produced this sprout in the shape of hand (of Śakuntalā) by showering nectar on the ashes of God of love. (34)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(स्पर्शं रूपयित्वा) तुवरदु तुवरदु अज्जउत्तो। [त्वरतां त्वरताम् आर्यपुत्रः।]

राजा—(सहर्षमात्मगतम्) इदानीमस्मि विश्वसितः, भर्त्तुराभाषणपदमेतत्। (प्रकाशम्) सुन्दरि! नातिश्लिष्टः सन्धिरस्य मृणालवलयस्य; यदि तेऽभिमतम् तदन्यथा घटयिष्यामि।

शकुन्तला—(स्मितं कृत्वा) जधा दे रोअदि।[यथा ते राचते।]

राजा—(सव्याजं विलम्ब्य प्रतिमोच्य) सुन्दरि! दृश्यताम्—

भावार्थः—अयं पुरोवर्ती शकुन्तलाहस्त एवं प्रतिभाति यथा अस्याः हस्तरूपेण पुरा हरकोपाग्निदग्धस्य कामवृक्षस्य अङ्कुर एवोत्पादितः अमृतवर्षिणा दैवेनेति॥ ३४॥

शकुन्तला—(स्पर्शं रूपयित्वा=पुरुषस्पर्शजनितविकारं रोमाञ्चादिना अभिनीय) आर्य्यस्य=पूजनीयस्य, पुत्रः आर्य्यपुत्रः, त्वरताम् त्वरताम्=यथास्थानेन मृणालवलयनिवेशनाय शीघ्रतां कुरु।

राजा—(सहर्षमात्मगतम्=प्रसन्नतापूर्वकं स्वमनसि) इदानीम्=सम्प्रति, विश्वसितः= जाताश्वासः (तस्यां मम पत्नीत्वविषये इति भावः), अस्मि=भवामि। एतत्=आर्य्यपुत्रेति पदम्, भर्तुः=स्वामिनः, आभाषणपदं=प्रयोगयोग्यपदम् ('सर्वस्त्रीभिः पतिर्वाच्य आर्य्यपुत्रेति यौवने' इति न्यायात् शकुन्तला मां पतित्वेनैवाभिमन्यते)। (प्रकाशम्=स्पष्टम्) सुन्दरि! नातिश्लिष्टः=न सम्यक् श्लेषं गतः (न यथावत् सुष्ठु प्रकारेण वा मिलितः), सन्धिः=उभयकोटिसंयोगस्थलम्, मृणालवलयस्य=तव बिसनिर्मित कटकस्य, यदि, ते=तव, अभिमतम्=सम्मतम्, तद्=तदा, अन्यथा=पृथग्विधम्, घटयिष्यामि=योजयिष्यामि।

शकुन्तला—(स्पर्श का अभिनय कर) आर्य्यपुत्र! शीघ्रता कीजिए, शीघ्रता कीजिए।

राजा—(हर्षपूर्वक, मन में) अब मैं आश्वस्त हुआ; क्योंकि यह शब्द पति के लिए ही प्रयुक्त होता है। (प्रगट) सुन्दरी! इस मृणालंवलय का सन्धिस्थल उचित नहीं प्रतीत होता, अतः यदि तुम कहो तो इसे दूसरी तरह बनाकर पहनाऊँ?

शकुन्तला—(मुस्कराकर) जैसी आपकी रुचि।

राजा—(बहाने से विलम्ब कर और कंगन पहनाकर) सुन्दरी! देखो—

Śakuntalā—*(Acting the sense of touch)* Hurry up, hurry up please O Ārya Putra.

King—*(Joyfully, aside)* Now I am satisfied, because the word is used for husband only. *(Openly)* O timid one! the joint of this bracelet appears improper, if you permit I will make it in other way.

Śakuntalā—*(Smiling)* As you please.

King—*(By refusal being late and then placing the bracelet in her hand)* O, timid one! see,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयं स ते श्यामलतामनोहरं विशेषशोभार्थमिवोज्झिताम्बरः।
मृणालरूपेण नवो निशाकरः करं समेत्योभयकोटिमाश्रितः॥ ३५॥

शकुन्तला—ण दाव णं पेक्खामि; पवणकंपिदकण्णुप्पलरेणुणा कलुसीकिदा मे दिट्ठी। [न तावदेनं प्रेक्षे, पवनकम्पितकर्णोत्पलरेणुना कलुषीकृता मे दृष्टिः।]

राजा—(सस्मितम्) यद्यनुमन्यसे, तदहमेनां वदनमारुतेन विशदां करवाणि।

शकुन्तला—(स्मितं कृत्वा=ईषद्धासपूर्वकम्) यथा=येन रूपेण, ते=तव (तुभ्यम्), रोचते=प्रीणयति।

राजा—(सव्याजं=सापदेशं, विलम्ब्य=विलम्बं कृत्वा, प्रतिमोच्य=प्रतिधाप्य) सुन्दरि! दृश्यताम्—इत्यस्य श्लोकेनायमिति पदेन साकमन्वयः।

अन्वयः—अयं सः नवः निशाकरः विशेषशोभार्थमिवोज्झिताम्बरः श्यामलता मनोहरं ते करं मृणालरूपेण समेत्य उभयकोटिम् आश्रितः॥ ३५॥

अयमिति। अयं=दृश्यमानः, सः=प्रसिद्धः, नवः=नवोदितः, निशाकरः=चन्द्रः, विशेष-शोभार्थमिव=आत्मनोऽधिकतरसौन्दर्यसम्पादनार्थमिव, उज्झितं=त्यक्तम्, अम्बरम्=आकाशं, येन सः विशेषशोभार्थमिवोज्झिताम्बरः सन्, श्यामलतया=आकाशतुल्यश्यामवर्णत्वेन, श्यामलता= ज्योतिष्मती इति केचित्, मनोहरं=कमनीयम्, ते=तव, करं=हस्तं, मृणालरूपेण, समेत्य=आगत्य, उभयकोटिम्=अग्रभागद्वयम्, आश्रितः=आश्रित्य स्थितः। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः वंशस्थविलं च वृत्तम्॥ ३५॥

भावार्थः—निशाकरः मृणालवलयछद्मना आत्मनोऽधिकतरसौन्दर्यसम्पादनार्थं श्यामलता मनोहरं त्वद्धस्तमाश्रित इति भावः॥ ३५॥

शकुन्तला—तावद् एनं=मृणालरूपी निशाकरं, न प्रेक्षे=न द्रष्टुं शक्नोमि। पवनेन=वायुना, कम्पितयोः=स्पन्दितयोः, कर्णोत्पलयोः=कर्णाभरणभूतकमलयोः; रेणुना=परागेन, पवनकम्पित-कर्णोत्पलरेणुना, मे=मम, दृष्टिः=लोचनम्, कलुषीकृता=आवृता, अत एव नैनं द्रष्टुं शक्नोमि।

यह नवोदित चन्द्रमा विशेष सौन्दर्य पाने के लिए मानों आकाश को छोड़कर तुम्हारे श्यामल अथच सुन्दर हाथ में आ पड़ा है और मृणाल रूप से उसके दोनों भाग जुड़ गये हैं अर्थात् वह नवोदित चन्द्र मृणालवलय के रूप में तुम्हारे श्यामल कर में पूर्णचन्द्र की शोभा पा रहा है॥ ३५॥

शकुन्तला—मैं इसे नहीं देख पा रही हूँ; क्योंकि कर्णाभरण रूपी कमल की रज से मेरी दृष्टि कलुषित हो गई है।

राजा—(मुस्कराकर) यदि आज्ञा दो तो मैं फूँक मारकर उसे साफ कर दूँ।

This newly risen moon to achieve more beauty, had reached to your blackish and charming hand leaving the sky and in the shape of this bracelet made of fibrous root of a lotus. (35)

Śakuntalā—I am unable to see it, as the pollen of the lotuses, which I put into my ears as earings, has fallen into my eyes.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—तदो अणुकंपिदा भवेअं, किंतु उण अहं ण दे वीससेमि। [ततः अनुकम्पिता भवेयम्, किन्तु पुनरहं न ते विश्वसिमि।]

राजा—मा मैवम्। नवो हि परिजनः सेव्यानामादेशात् परं न वर्त्तते।

शकुन्तला—अअं ज्जेव अच्चादरो अविस्सासजणओ। [अयमेव अत्यादरः अविश्वासजनकः।]

राजा—(स्वगतम्) नाहमेवं रमणीयमात्मनः सेवावसरं शिथिलयिष्ये। (मुख-मुन्नमयितुं प्रवृत्तः)

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) यदि=चेत्, अनुमन्यसे=अनुजानासि, तत्=तस्मात्, अहम्, एनां=रेणुकलुषितां दृष्टिम्, वदनमारुतेन=मुखवायुना, विशदां=निर्मलाम्, करवाणि=करिष्यामि।

शकुन्तला—ततः=तदा, अनुकम्पिता=अनुगृहीता, भवेयम्, किन्तु पुनरहं, ते=तव, न विश्वसिमि=विशङ्के इति भावः।

राजा—मा मैवम्= न खलु न खल्वेवम्। हि=यतः, नवः=नूतनः, परिजनः=सेवकः, सेव्यानामादेशात् परम्=उपासनीयानाम् आज्ञाव्यतिरिक्तम्, न वर्त्तते=नाचरति।

शकुन्तला—अयमेवात्यादरः=आदरातिशयः, अविश्वासजनकः=त्वयि मे विश्वासं नोत्पादयति।

राजा—(स्वगतम्=आत्मगतम्) अहम्=दुष्यन्तः, एवम्=अनायासोपलब्धम् एवंविधं, आत्मनः=स्वस्य, रमणीयम्=शोभनम्, सेवावसरम्=उपचारकरणेऽवकाशम्, न शिथिलयिष्ये=न वृथा करिष्ये। (मुखम्=शकुन्तलाया आननम्, उन्नमयितुम्=उत्तोलयितुम्, प्रवृत्तः=आरब्धवान्।)

शकुन्तला—तो मैं अनुगृहीत हूँगी, किन्तु मुझे आपका विश्वास नहीं है।

राजा—नहीं, नहीं ऐसा न कहो। एक नया सेवक स्वामी की आज्ञा से आगे नहीं बढ़ सकता।

शकुन्तला—यही अत्यधिक आदर अविश्वास का कारण है।

राजा—(मन में) मैं अपनी सेवा के इस रमणीय अवसर को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा। (शकुन्तला का मुख ऊपर उठाना चाहता है।)

King—(Smiling) If you permit, I will clear it with the air of my mouth (or hissing or blowing).

Śakuntalā—Then I shall be obliged, but I have no trust in you.

King—No, no, don't say so, a new servant can not exceed the limit of his masters order.

Śakuntalā—This much respect is the cause of my unreliablity.

King—(To himself) I will not loose myself this beautiful chance of service. *(Tries to raise her mouth)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शकुन्तला प्रतिषेधं रूपयन्ती विरमति।)

राजा—अयि मदिरेक्षणे! अलमस्मदविनयाशङ्कया।

शकुन्तला—(किञ्चित् दृष्ट्वा व्रीडावनतमुखी तिष्ठति।)

राजा—(अङ्गुलीभ्यां मुखमुन्नमय्य आत्मगतम्)

चारुणा स्फुरितेनायमपरिक्षतकोमलः।
पिपासतो ममानुज्ञां ददातीव प्रियाऽधरः॥ ३६॥

(शकुन्तला प्रतिषेधं=मुखोत्तोलनस्य निषेधम्, रूपयन्ती=दर्शयन्ती, विरमति= निवर्त्तते।)

राजा—अयि मदिरे=मत्तखञ्जनौ पक्षिणौ, ताविव ईक्षणे=नेत्रद्वयं, यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ हे मदिरेक्षणे! अस्मत्=अस्मत्तः, अविनयाशङ्कया=असभ्यतापूर्णव्यवहारभयेन, अलम्=तादृशीमाशङ्कां मा कुरु (विना तवादेशेन न किञ्चित् करिष्यामि)।

शकुन्तला—(किञ्चिद् दृष्ट्वा=मुखविवर्त्तनेन राज्ञोपरि स्वल्पतरं दृष्टिपातं कृत्वा, व्रीतावनतमुखी=लज्जानम्रमुखी, तिष्ठति।)

राजा—(अङ्गुलीभ्यां=मध्यमानामिकाभ्याम्, मुखमुन्नमय्य=वदनमुत्तोल्य, आत्मगतम्=स्वगतम्)

अन्वयः—अपरिक्षतकोमलः अयं प्रियाधरः चारुणा स्फुरितेन पिपासतः मम अनुज्ञां ददातीव॥ ३६॥

चारुणेति। न परिक्षत इति अपरिक्षतः=दन्तैरदष्टपूर्वः, अत एव कोमलः=सुकुमारः, अयम्=पुरोवर्त्ती, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, अधरः=अधरोष्ठः, प्रियाधरः, चारुणा=मनोहरेण, स्फुरितेन=निष्पन्दितेन, पिपासतः=पातुमिच्छतः, मम=मत्सम्बन्धे, अनुज्ञाम्=अनुमतिम्, ददातीव=प्रयच्छतीवेत्युत्प्रेक्षालङ्कारः॥ ३६॥

(शकुन्तला रुकने का अभिनय कर घूमती है)

राजा—ओ मादक नयनों वाली! मेरी ओर से किसी प्रकार के अशिष्ट व्यवहार की आशङ्का न करो।

शकुन्तला—(उचटती हुई दृष्टि डालकर, लज्जा से मुँह झुकाकर बैठ जाती है।)

राजा—(अँगुलियों से मुख ऊपर उठाकर, मन में)

आज से पूर्व दन्तक्षत न किये जाने से कोमल प्रियतमा शकुन्तला का यह अधरोष्ठ मधुर स्पन्दन (स्फुरण) द्वारा मानो मुझ प्यासे को पान करने की अनुमति दे रहा है॥ ३७॥

(Śakuntalā acts to stop, turns back)

King—O maddening eyed, do not afraid or doubt of any evil (uncivilized) behavior from my side.

Śakuntalā—*(Throws a little sight and sits ashamed)*

King—*(Raising her mouth up with his fingers, to himself)*

(It seems as) The lower lip of my beloved, which is being unhurt so for, (by teeth) and that's why very delicate, through its sweet throbbing permitting me, a thirsty person to drink or enjoying it.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—परिण्णाणमंथरो विअ अज्जउत्तो। [परिज्ञानमन्थर इव आर्य्यपुत्रः।]

राजा—कर्णोत्पलसन्निकर्षादीक्षणमूढोऽस्मि। (इति मुखमारुतेन चक्षुः सेवते।)

शकुन्तला—भोदु, पइदित्थदंसणम्हि संबुत्ता। लज्जेमि उण अणुवआरिणी पिअआरिणो अज्जउत्तस्स। [भवतु, प्रकृतिस्थदर्शनास्मि संवृत्ता। लज्जे पुनरनुपकारिणी प्रियकारिण आर्यपुत्रस्य।]

राजा—सुन्दरि! किमन्यत्—

भावार्थः—अननुभूतचुम्बनत्वात् कस्यचिदपि दन्तैरदष्टपूर्व अत एव कोमलः प्रियाशकुन्तलाया अधरोष्ठः मनोहरेण मामकीयस्पर्शजनितस्पन्दनेन चुम्बनाभिलाषिणः मत्कृते पानानुमतिं प्रयच्छतीवेति तर्कयामि॥ ३६॥

शकुन्तला—परिज्ञाने=सम्यगर्वबोधे, मन्थरः=गतिशून्यः, इव=यथा, आर्य्यपुत्रः=भवान्।

राजा—कर्णोत्पलयोः=करणाभरणीभूतयोरुत्पलयोः, सन्निकर्षात्=सान्निध्यात् हेतोः, ईक्षणमूढः=नेत्रविज्ञानविषये सन्दिग्धवानस्मि किमिमे ईक्षणे कर्णोत्पले वेति विशेषनिरूपणेऽसमर्थोऽस्मि इत्याशयः। अथवा कर्णोत्पलस्य सन्निकर्षात्=सामीप्यात्, ईक्षणमूढः=रेणुभिरन्धीकरणात् दर्शनाक्षमोऽस्मि इत्यर्थः (कियन्मात्रो विलम्बो जात इत्यवधारणे असमर्थोऽस्मि इति भावः)। (इति=इत्युक्त्वा, मुखमारुतेन=वदनीयपवनेन, चक्षुः=नेत्रम्, सेवते=रेण्वपसारणेन परिष्करोतीत्यर्थः।)

शकुन्तला—भवतु=विरमतु भवान्, प्रकृतिस्थदर्शना=रेणूनामपगमात् स्वाभाविकदृष्टिसम्पन्ना, संवृत्ताऽस्मि=जातास्मि। पुनः=किन्तु, प्रियकारिणः=उपकारिणः, आर्य्यपुत्रस्य=भवतः (सम्बन्धे), अनुपकारिणी=किञ्चिदप्यकरणात्, अहं=शकुन्तला, लज्जे=लज्जामनुभवामि। (उपकारिणः प्रत्युपकारकरणमुचितं परं न किमपि कुर्वन् महद् व्रीडाभारात् अहं लज्जे।)

राजा—सुन्दरि=शोभने! अन्यत्=अपरम्, किम्=उपकर्त्तव्यमस्तीति शेषः।

शकुन्तला—आप तो मानो आत्मविस्मृत होते जा रहे हैं।

राजा—इस कर्णाभरणभूत कमल के पास रहने से मैं तुम्हारी आँखें नहीं देख पाता। (मुखवायु से नेत्र में फूँक मारता है।)

शकुन्तला—बस, मेरी आँख ठीक हो गई किन्तु आपने मेरा यह प्रिय कार्य किया और मैंने इसके बदले में आपका कोई उपकार नहीं किया, यह सोच कर मुझे लज्जा आती है।

राजा—सुन्दरी! और क्या उपकार करना चाहती हो—

Śakuntalā—O my husband (Āryaputra) it seems as you are forgetting yourself.

King—As your lotus earing is very near to my eyes, so, I became unable to see your eyes properly. *(Blowing with the air of his mouth)*

Śakuntalā—Well, my vision is clear now, but I am ashamed to think that I have not done any good to that gentleman who helped me nicely.

King—O timid one! what more you want to do?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इदमप्युपकृतिपक्षे सुरभि मुखं ते यदाघ्रातम्।
ननु कमलस्य मधुकरः सन्तुष्यति गन्धमात्रेण॥ ३७॥

शकुन्तला—(सस्मितम्) असंतोसे उण किं करेदि? [असन्तोषे पुनः किं करोति?]

राजा—इदम्। (इति व्यवसितः।)

(शकुन्तला वक्त्रं ढौकते।)

(नेपथ्ये) चक्कवाअवहु! आमंतेहिं सहचरं, णं उअत्थिदा रअणी। [चक्रवाकवधु! आमन्त्रयस्व सहचरम्, ननु उपस्थिता रजनी।]

अन्वयः—यत् ते सुरभि मुखम् आघ्रातम् इदमपि उपकृतिपक्षे (यथेष्टमिति शेषः), ननु मधुकरः कमलस्य गन्धमात्रेण सन्तुष्यति॥ ३७॥

इदमिति। यत् ते=तव, सुरभि=सौरभवत्, मुखम्=आननम्, आघ्रातम्=मया फुत्कारदान-व्याजेनाऽऽघ्रातम्, इदमपि=एतदाघ्राणमपि, उपकृतिपक्षे=त्वत्कर्तृकोपकारकोटौ, यथेष्टं गण्यतामिति शेषः। ननु=यतः, मधुकरः=भ्रमरः, कमलस्य=पद्मस्य, गन्धमात्रेण= गन्धग्रहणमात्रेणैव, सन्तुष्यति= सन्तुष्टो भवति॥ अत्र केचित् प्रतिवस्तूपमाऽलङ्कारः, अपरे तु दृष्टान्तालङ्कारमिति मन्यन्ते। उपगीति नामेयमार्य्या॥ ३७॥

भावार्थः—मधुपानार्थी भ्रमरः कमलस्य मधुनोऽलाभेऽपि तद्गन्धमात्रमाघ्रायैव यथा सन्तुष्टो भवति तथाऽधरपातुकामोऽप्यहं तव वदनगन्धमाघ्रायैव सन्तुष्टोऽस्मि संवृत्तः। निश्चिनोमि यत् त्वत्कृत अयं महानुपकारः॥ ३७॥

शकुन्तला—(संस्मितम्=सेषद्धासम्) पुनः=किन्तु, असन्तोषे=सन्तोषाभावे, किं करोति= किं व्यवस्यति, मधुकर इति शेषः।

राजा—इदम्=मधुकरः करोतीति शेषः। (असन्तुष्टः भ्रमरः कमलमधुपाने व्यवसितो भवतीति शेषः) (इति=एवमुक्त्वा, व्यवसितः=चुम्बनीयकृताध्यवसायः। (नाट्येऽधरपाना-देर्निषेधात् न तु चचुम्ब)।

(शकुन्तला वक्त्रं=मुखं, ढौकते=अन्यत्र चालयति, हस्ताङ्गुलीद्वारा संवृणोति।)

मैंने तुम्हारे सुगन्धित मुख को सूँघ लिया, यह क्या प्रत्युपकार नहीं है; क्योंकि भ्रमर केवल कमल की सुगन्ध से ही सन्तुष्ट हो जाया करता है॥ ३७॥

शकुन्तला—(मुस्कराकर) यदि वह सन्तुष्ट नहीं होता तब क्या करता है?

राजा—यह करता है (मुख चूमने की चेष्टा करता है)।

(शकुन्तला हाथ से अपना मुँह ढाँप लेती है।)

(नेपथ्य में) अरी चकवी! अपने सहचर को बिदा करो, क्योंकि रात हो गयी है।

When I smelt your scented mouth, is not this reservice of mine? Because a black bee always satisfies with the smell of lotus only. (37)

Śakuntalā—*(Smiling)* If not satisfied then what will he do?

King—He does this. *(Acts to kiss)*

(Śakuntalā hiding her face with her fingers)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(कर्णं दत्त्वा ससम्भ्रमम्) अज्जउत्त! एसा क्खु तादकण्णस्स धम्म-कणीअसी मम वुत्तंतोवलंभणणिमित्तं अज्जा गोदमी आअच्छदि; ता विडवांतरिदो होहि। [आर्यपुत्र! एषा खलु तातकण्वस्य धर्मकनीयसी मम वृत्तान्तोपलम्भननिमित्तम् आर्या गौतमी आगच्छति; तद्विटपान्तरितो भव।]

राजा—तथा। (इत्येकान्ते स्थितः)

(ततः प्रविशति पात्रहस्ता गौतमी)

गौतमी—जादे! अच्छाहिदं सुणिअ आअदा, एदं सांतिउदअं। (दृष्ट्वा समुत्थाप्य च) इध देवदासहाइणी चिट्ठसि? [जाते! अत्याहितं श्रुत्वा आगता, एतत् शान्त्युदकम्। इह देवतासहायिनी तिष्ठसि?]

(नेपथ्ये=परोक्षे) हे चक्रवाकवधु=हे चक्रवाकभार्य्ये! सहचरं=प्रियम्, आमन्त्रयस्व=सादरमामन्त्र्य विसृज (प्रियजनस्य प्रस्थानकाले सादरामन्त्रणौचित्यादिति भावः), ननु=यस्मात्, रजनी=युवयोर्वियोगकारिणी रात्रिः, उपस्थिता=सम्प्राप्ता खलु।

शकुन्तला—(कर्णं दत्त्वा=नेपथ्योत्थं वचनं श्रुत्वा, ससम्भ्रमम्=सत्वरम्; चक्रवाकबन्धु-व्याजेन गौतम्याः तत्रागमनं निशम्य सत्वरम्) आर्यपुत्र! खल्विति निश्चयेन, एषा=पुरोवर्त्तिनी, तातकण्वस्य=मम पितुः कुलगुरोः कण्वस्य, धर्म्मकनीयसी=धर्मभगिनी, आर्य्या=पूज्या, गौतमी=गौतमस्यापत्यं स्त्री, मम वृत्तान्तस्य=वार्तायाः, उपलम्भननिमित्तम्=परिज्ञानार्थम्, आगच्छति=समायाति। तत्=तस्मात्, विटपान्तरितः=तरुमूलाच्छादितकलेवरः, भव।

राजा—तथा=यथा ते रोचते (इत्युक्त्वा, एकान्ते=निर्जने, स्थितः)।

(ततः=तदनन्तरम्, पात्रं=शान्त्युदकभाजनं, हस्ते यस्याः सा पात्रहस्ता, गौतमी=कण्वधर्म्मभगिनी, प्रविशति मञ्चेति शेषः।)

शकुन्तला—(कान देकर, घबराहट के साथ) आर्य्यपुत्र! यह पिता कण्व की कनिष्ठ धर्मभगिनी आर्या गौतमी मेरा समाचार लेने यहाँ आ रही हैं, अतः आप इस वृक्ष के पीछे छिप जायें।

राजा—जैसी तुम्हारी इच्छा। (यह कहकर एकान्त स्थल में छिप जाता है।)

(इसके बाद हाथ में पात्र लिये हुए गौतमी का प्रवेश)

गौतमी—पुत्री! तुम्हें भयंकर दशा में सुनकर यहाँ आई हूँ। यह शान्तिजल है। (देखकर और उठाकर) तू क्या यहाँ देवताओं के सहारे बैठी हुई है?

(Behind the curtain) O, wife of Cakravāka! permit your companion to go because night has arrived.

Śakuntalā—*(Hearing with anxiety)* Āryaputra! father's younger sister-in-law revered Gauttamī is comming so, you please hide yourself behind the tree.

King—As you command. *(Thus stands in a lonly place)*

(Then enters Gauttamī having water pot in her hand)

Gauttamī—Daughter, hearing that your are suffering too much, I have come here. This is soothing water. *(Looking and*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—दाणिं ज्जेव अणसूआपिअंबदाओ मालिणीं ओदीण्णाओ। **[इदानीमेव अनसूयाप्रियंवदे मालिनीमवतीर्णे।]**

गौतमी—(शान्त्युदकेन शकुन्तलामभ्युक्ष्य) जादे! णिराबाधा मे चिरं जीव। अवि लहुसंदाबाइं अंगाइं? **[जाते! निराबाधा मे चिरं जीव। अपि लघुसन्तापानि अङ्गानि?]** (इति स्पृशति।)

शकुन्तला—अम्मो! अत्थि विसेसो। **[अहो! अस्ति विशेषः।]**

गौतमी—परिणदो दिअसो, ता एहि उडअं ज्जेव गच्छम्ह **[परिणतो दिवसः, तदेहि उटजमेव गच्छावः।]**

गौतमी—जाते=वत्से! अत्याहितं=सन्तापजनिता महाभीतिः, श्रुत्वा=आकर्ण्य, आगता= अत्र समागतास्मि, एतत्=इदम्, शान्त्युदकम्=सन्तापापहम् अभिमन्त्रितं जलम्। (दृष्ट्वा= इतस्ततोऽवलोक्य, समुत्थाप्य च=शकुन्तलामुटजं नेतुं हस्तधारणपूर्वकमुत्तोल्य च) इह=अत्र, देवतासहायिनी=देवतामात्रसहाया (एकाकिनी), तिष्ठसि=वर्त्तसे, किमिति शेषः।

शकुन्तला—इदानीमेव=अधुनैव, अनसूया च प्रियंवदा च=अनसूया-प्रियंवदे, मालिनीं= तदाख्यां नदीम्, अवतीर्णे=स्नानाय जलानयनाय च गते।

गौतमी—(शान्त्युदकेन=अभिमन्त्रितेन तापशमनार्थमानीतेन जलेन, शकुन्तलाम्, अभ्युक्ष्य=अभिषिच्य) जाते=वत्से! निराबाधा=निरोगा, मे=मत्सम्बन्धिनी त्वम्, चिरं जीव=दीर्घा-युष्यं लभस्व, अपीति प्रश्ने, लघुः=शान्त्युदकाभ्युक्षणात्, स्वल्पः, सन्तापः=दाहः, येषु तानि लघु-सन्तापानि, अङ्गानि संवृत्तानि किम्? (इति स्पृशति)

शकुन्तला—अहो! अस्ति विशेषः=पूर्वापेक्षया ईषदुपशमः।

शकुन्तला—अभी-अभी अनसूया और प्रियंवदा मालिनी नदी की ओर गई हैं।

गौतमी—(शान्तिजल शकुन्तला पर छिड़क कर) पुत्री! तू बिना किसी बाधा के चिरकाल तक जीवित रह। अब तो अङ्गों का ताप कम है न? **(ऐसा कहकर शकुन्तला के अङ्गों का स्पर्श करती है।)**

शकुन्तला—हाँ, पहले की अपेक्षा पर्याप्त कम है।

गौतमी—अब सन्ध्या हो गई है, आओ पर्णशाला में चलें।

---

raising her up) Are your sitting here with the help of gods i.e. alone?

Śakuntalā—Just now Anasūyā and Priyaṁvadā have gone at the bank of river Malinī.

Gauttamī—***(Sprinkling holi water on Śakuntalā)*** My child long live without any suffering. Is the fever of your body (limbs) a llittle abated?

Śakuntalā—Yes mother, there is a change for the better in me.

Gauttamī—Child! The day is departing (night is approaching), come, let us both go to the cottage. ***(They start)***

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(कथञ्चिदुत्थाय स्वगतम्) हिअअ! पढमं सुहावणदे मणोहरे कालहरणं करेसि; संपदं अणुभव दाव दुक्खं। (पदान्तरे प्रतिनिवृत्य प्रकाशम्) लदाघर! संदावहर! आमंतेमि तुमं पुणो वि परिभोअत्थं। [**हृदय! प्रथमं सुखोपनते मनोरथे कालहरणं करोषि, साम्प्रतमनुभव तावद् दुःखम्।** (पदान्तरे प्रतिनिवृत्य प्रकाशम्) [**लतागृह! सन्तापहर! आमन्त्रयामि त्वां पुनरपि परिभोगार्थम्।** (इति निष्क्रान्ते।)

राजा—(पूर्वं स्थानमुपेत्य सनिश्वासम्) अहो! विघ्नवत्यः प्रार्थितानां सिद्धयः। मया हि—

गौतमी—दिवसः=वासरः, परिणतः=अवसानं गतः, तद्=तस्मात्, एहि=आगच्छ, उटजं= कुटीरम् एव, गच्छावः=आवां गच्छावः।

शकुन्तला—(कथञ्चित्=कृच्छ्रेण, उत्थाय=शय्यातः इति शेषः) प्रथमम्=इतःपूर्वम्, सुखोपनतेः—सुखेन=अनायासेन, उपगते=समीपागते (प्राप्ते), मनोरथे=मनोरथविषयीभूते कान्ते, कालहरणं करोषि=अनापदेशेन कालक्षेपं करोषि। साम्प्रतम्=इदानीम्, तावत्, दुःखं=विरहजनितां कामपीडाम्, अनुभव=सहस्व। (पदान्तरे=कतिपयपदसञ्चारं कृत्वा, प्रतिनिवृत्त्य=तत्क्षणं निवृत्त्य, लतागृह=निकुञ्ज! (अत्र तदन्तरगतः प्रियतमो ध्वन्यते), सन्तापहर!=सन्तापनाशक! पुनरपि= भूयोऽपि, परिभोगार्थम्=एकत्रवासार्थम्, त्वम्=लतागृहं दुष्यन्तं च, आमन्त्रये=निवेदयामि। (इति= इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ते)

राजा—(पूर्वस्थानं=शकुन्तलया सहोपभुक्तं लतागृहस्थं शिलातलम्, उपेत्य=प्राप्य, सनिःश्वासम्=दीर्घं निःश्वस्य) अहो=इति विषादे, प्रार्थितानाम्=अभिलषितानाम्, अर्थानाम्= प्रयोजनानाम्, सिद्धयः=निष्पत्तयः, विघ्नवत्यः=बहुविघ्नाः। हि=यस्मात्, मया=मुखमुन्नमितं न तु चुम्बितमिति श्लोकेन सहान्वयः—

शकुन्तला—(**कठिनतापूर्वक उठते हुए मन में**) हृदय! अनायास अपने प्रिय को पाकर भी तुमने व्यर्थ समय बिताया है अतः अब दुःख भोगो। (**कुछ पग चलकर और लौटकर—प्रगट**) हे मेरे सन्तापनाशक लतागृह! परिभोग के लिए मैं फिर भी तुम्हें निमन्त्रित करती हूँ। (**दोनों का प्रस्थान**)

राजा—(**पहले स्थान पर आकर लम्बी साँस लेकर**) अहो! अभीष्ट सिद्धि में बहुत से विघ्न आ जाते हैं; क्योंकि—

Śakuntalā—(Rising up with difficulty, to herself)

O My heart, even before, when the object of your desire come itself so readily, you did not find courage (to accept it), why then this anguish now when seperated and (consequently) filled with repentence. *(Taking a step and standing still, aloud)* O bower of creepers, O remover of my sufferings, I bid you farewell (hoping) to be once more happy (under your shade). *(Both exits)*

King—(Returning to the former place, having a sigh) How the accomplishment of one's wishes is best with obstacles.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुहुरङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं प्रतिषेधाक्षरविक्लवाभिरामम् ।
मुखमंसविवर्त्ति पक्ष्मलाक्ष्याः कथमप्युन्नमितं, न चुम्बितं तु॥ ३८॥

क्व नु खलु सम्प्रति गच्छामि। अथवा इहैव प्रियापरिभुक्ते लतामण्डपे मुहूर्त्तं तिष्ठामि। (सर्वतोऽवलोक्य)

तस्याः पुष्पमयी शरीरलुलिता शय्या शिलायामियं
कान्तो मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नखैरर्पितः।

अन्वयः—मुहुः अङ्गुलिसंवृताधरोष्ठं प्रतिषेधाक्षरविक्लवाभिरामम् अंसविवर्त्ति पक्ष्मलाक्ष्याः मुखं कथमप्युन्नमितम्, तु न चुम्बितम्॥ ३८॥

मुहुरिति। मुहुः=वारं-वारम्, अङ्गुलिभिः संवृतः=आवृतः, अधरोष्ठः=निम्नोष्ठः, यत्र तत् अङ्गुलिसंवृताधरोष्ठम्, प्रतिषेधाक्षरैः=निषेधबोधकवर्णैः, विक्लवं=विह्वलं, तथापि अभिरामम्=मनोज्ञम्, अथवा—प्रतिषेधाक्षरैर्यः विक्लवः=वैक्लव्यम्, स्पष्टमनुच्चारणं, तेन अभिरामं=मनोहरम्, तथा अंसे=स्कन्धोपरिभागे, विवर्त्तते=चुम्बनभयात् लज्जयैव वा परावर्तत, इति अंसविवर्त्ति, पक्ष्माणि=नेत्रलोमानि, अनयोः सन्तीति पक्ष्मले=प्रशस्तलोमशालिनी, अक्षिणी=दृशौ, यस्यास्त-स्यास्तथोक्तायाः=शकुन्तलायाः, मुखम्=आननम्, कथमपि=व्याजेन, कृच्छ्रेण, उन्नमितम्=चुम्बनार्थमुत्तोलितं, तु=किन्तु, न चुम्बितम्=नास्वादितम्। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः औपच्छन्द-सिकञ्च वृत्तम्॥ ३८॥

भावार्थः—वारं-वारं मत्कर्तृकचुम्बनप्रतिषेधकरणाय अधरोष्ठं सङ्गोपयन्तीं तथा च प्रति-षेधाक्षरजन्यवैक्लव्याभिरामम् अंसविवर्त्ति पक्ष्मलाक्ष्याः शकुन्तलायाः मुखम् अक्षिपरिमार्जनव्याजेन मया कथमपि कृच्छ्रेण उन्नमितम्, किन्तु प्रमादातिशयान्न चुम्बितम् इति भावः॥ ३८॥

सम्प्रति=इदानीम्, क्व नु=कुत्र, खल्विति निश्चयेन वितर्के वा, गच्छामि। अथवा=उत, इहैव=अत्रैव, प्रियया=शकुन्तलया, परिभुक्ते=व्यवहृते, लतामण्डपे=निकुञ्जे, मुहूर्तं=क्षणोऽर्द्धम्, तिष्ठामि। (सर्वतोऽवलोक्य परितः दृष्ट्वा)

उस लम्बी पलकों से युक्त आँखों वाली प्रिया ने बार-बार अपने अधरोष्ठ को अँगुलियों से ढाँपा था तथा निषेधपरक अक्षरों का उच्चारण करते समय जो अतीव मनोहर लग रही थी एवं जिसका मुख कई बार कन्धों के ऊपर तक आ गया था—उस अपनी प्रिया के मुख को मैं किसी प्रकार ऊपर तो उठा पाया परन्तु चूम नहीं सका॥ ३८॥

अब मैं कहाँ जाऊँ? अच्छा, इस प्रिया द्वारा सेवित लतामण्डप में ही थोड़ी देर बैठूँ। (चारों ओर देखकर)

इस शिला पर उसके शरीर से कुचले हुई फूलों का बिस्तर है, कमलदल पर नाखूनों से लिखा हुआ यह काम सम्बन्धी लेख है तथा उसके हाथ से फिसल कर गिरा हुआ यह

For the face of that (maiden) with soft eye-lashes, which had the lower lip repeatedly covered by her fingers, which looked beautiful as it stammered words of denial and which was turned on one side, was some how raised by me but not kissed. (38)

On this stony slab there is her bed made of flowers and pressed by her body, carved with the help of nails on the lotus leaf,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हस्ताद् भ्रष्टमिदं बिसाभरणमित्यासज्यमानेक्षणो
निर्गन्तुं सहसा न वेतसगृहादीशोऽस्मि शून्यादपि॥ ३९॥

(विचिन्त्य) अहो धिगसम्यक् चेष्टितं प्रियां समासाद्य कालहरणं कुर्वता मया। तदिदानीम्—

रहः प्रत्यासत्तिं यदि सुवदना यास्यति पुन-
र्न कालं हास्यामि, प्रकृतिदुरवापा हि विषयाः।

अन्वयः—तस्याः शरीरलुलिता इयं शिलायां पुष्पमयी शय्या, (तथा) नलिनीपत्रे नखैरर्पितः एषः कान्तः मन्मथलेखः, (तथा) हस्ताद् भ्रष्टम् इदं विसाभरणम् (तिष्ठतीति शेषः); इति आसज्यमानेक्षणः (अहम्) शून्यात् अपि वेतसगृहात् सहसा निर्गन्तुं न ईशः॥ ३९॥

तस्या इति। तस्याः=शकुन्तलायाः, शरीरेण=देहेन, लुलिता=विमर्द्दिता, शरीरलुलिता, इयं=दृश्यमाना, शिलायाम्=उपलखण्डोपरि, पुष्पमयी=पुष्परचिता, शय्या=तल्पम्, (तथा) नलिनीपत्रे=पद्मपत्रे, नखैः=कररुहैः, अर्पितः=अङ्कितः, एषः=पुरःस्थितः, कान्तः=कमनीयः, मन्मथलेखः=मदनसम्बन्धी लेखः, (तथा) हस्ताद्=करात्, भ्रष्टं=गलितम्, इदं=पुरोवर्त्ति, बिसाभरणम्=मृणालवलयम् (तिष्ठतीति शेषः), इति=इति हेतौ, आसज्यमानेक्षणः—आसज्यमाने=प्रियाया वस्तुत्वादेव द्रष्टुं प्रवृत्ते, ईक्षणे=चक्षुषी, यस्य सः तथोक्तः (अहम्), शून्यात्=प्रियतमाविरहितात् अपि, वेतसगृहात्=वेतसमण्डपात्, सहसा=हठात्, निर्गन्तुं=बहिः गन्तुम्, न ईशः=न समर्थः। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ३९॥

भावार्थः—सम्मुखस्थशिलायां तस्याः शरीरविमर्द्दितां पुष्परचितशय्याम्, तथा पद्मपत्रनखाङ्कितमन्मथलेखं किञ्च हस्ताद् भ्रष्टमिदं मृणालवलयम् अवलोक्य प्रियाविरहितवेतसगृहात् सहसा निर्गन्तुं नाहमस्मि समर्थः इति॥ ३९॥

(विचिन्त्य=विचार्य्य) अहो इति विषादे, प्रियां=शकुन्तलाम्, समासाद्य=प्राप्य, कालहरणं=कालक्षेपम्, कुर्वता मया असम्यक्=असाधु, चेष्टितम्=अनुष्ठितम्। तत्=तस्मात्, इदानीम्=अधुना—

मृणाल का कंगन है (इन सबको देखकर) प्रियाहीन होने पर भी इस लतामण्डप से मैं अचानक बाहर निकल पाने में समर्थ नहीं हो रहा हूँ॥ ३९॥

(विचार कर) हाय, मैंने अपनी प्रिया को पाकर भी व्यर्थ समय खोकर उचित नहीं किया। इसीलिए इस समय—

यदि वह सुन्दर मुखवाली शकुन्तला मुझे एकान्त में मिल जाय तो अब मैं समय को व्यर्थ न जाने दूँगा; क्योंकि विषयभोग स्वभावतः ही दुर्लभ होते हैं अतः प्राप्त होते ही इनका

---

there is the article for God Kāma and this is the bracelet made of lotus fibers, seeing all these I feel myself helpless to go out of this bower of creeper, though it is without my beloved. (39)

Oh! even finding my beloved nearer I wasts time, it was quite improper. So, now—

If, the possessor of beautiful face met me once again in some lonly place, I will not waste the time aimlessly. Sensual enjoy-

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इति क्लिष्टं विघ्नैर्गणयति च मे मूढहृदयं
प्रियायाः प्रत्यक्षं किमपि च तथा कातरमिव॥ ४०॥

(नेपथ्ये) भो भो राजन्!

सायन्तने सवनकर्मणि सम्प्रवृत्ते
वेदिं हुताशनवतीं परितः प्रकीर्णाः।

अन्वयः—सुवदना यदि रहः प्रत्यासत्तिं यास्यति पुनः तदा कालं न हास्यामि, हि विषयाः प्रकृतिदुरवापाः। विघ्नैः क्लिष्टं मे मूढहृदयम् इति गणयति च प्रियायाः प्रत्यक्षं तथा किमपि कातरमिव आसीद् इति शेषः॥ ४०॥

रह इति। सुष्ठु वदनं यस्याः सा सुवदना=सुन्दरमुखी, सा शकुन्तला, यदि=पुनरपि, रहः=विविक्ते स्थाने (एकान्ते), प्रत्यासत्तिं=मम सन्निकर्षं, यास्यति=प्राप्स्यति, पुनः=भूयः, तदा, कालं=समयं, न हास्यामि=न परिहरिष्यामि। हि=यस्मात्, विषयाः=इन्द्रियार्थाः, प्रकृत्या=स्वभावेनैव, दुरापाः=दुर्लभाः, विघ्नैः=प्रत्यूहैः, क्लिष्टम्=अभिलषितार्थालाभेन व्याहतम्, मे=मम, मूढहृदयं=कर्तव्यताज्ञानशून्यं चेतः, इति=इत्थं, गणयति=विचारयति, च=परञ्च, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, प्रत्यक्षं=समक्षम्, तथा=तादृशं, किमपि=अनिर्वचनीयम्, कातरमिव=कर्त्तव्यविक्लवमिव, आसीदिति। अत्र कातरमिव इत्युत्प्रेक्षा तथा च प्रथमचरणद्वये सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। शिखरिणी वृत्तम्॥ ४०॥

भावार्थः—अत एव अधुना पुनरपि यदि मे प्रियतमा सह रहसि साक्षात्कारो भवेत् तथा विना रमणं कालक्षेपं न करिष्यामि। यतो हि भोगपदार्थाः स्वभावेनैव दुर्लभा भवन्ति अत एव ते प्राप्तिमात्रेण भोक्तव्याः। परन्तु विघ्नैः क्लिष्टं मम कर्तव्यताज्ञानशून्यं चेतः इदानीं प्रियाया असद्भावावस्थायाम् इत्थं विचारयति परन्तु प्रेयस्याः शकुन्तलायाः सन्निधौ तु कर्तव्यविक्लवमिव आसीत्॥ ४०॥

(नेपथ्ये=परोक्षे) भो-भो राजन्! सम्भ्रमे द्विरुक्तिः—

अन्वयः—सायन्तने सवनकर्मणि सम्प्रवृत्ते हुताशनवतीं वेदिं परितः प्रकीर्णाः (अत एव) बहुधा भयम् आदधाना सन्ध्याभ्रकूटकपिशाः पिशिताशनानां छायाः चरन्ति॥ ४१॥

सायन्तन इति। सायं भवः सायन्तनः, तस्मिन् सायन्तने=सायंकाले, सायं निवर्त्तनीये इत्यर्थः, सवनकर्मणि=यजनकर्मणि, संप्रवृत्ते=प्रारब्धे सति, हुताशनवतीम्=अग्नियुक्ताम्, वेदिं=

उपभोग कर लेना चाहिए। विघ्नों से बाधित मेरा कर्तव्यज्ञानशून्य (मूढ़) मन अब इस प्रकार सोच रहा है परन्तु प्रिया के सामने न जाने क्यों उस प्रकार कातर हो गया था॥ ४०॥

(नेपथ्य में) राजन्! राजन्!

सायंकालीन अग्निहोत्र के आरम्भ होते ही प्रज्वलित अग्नियुक्त वेदी के चारों ओर

---

ments are rarely available, so a man should enjoy these when ever he finds them. Perturbed by the obstacles, this infatuated heart of mine, now thinking thus, but in the presence of my beloved why this heart was so timid? (40)

(Behind the Curtain)

King! King! The evening sacrificial rite being commenced,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छायाश्चरन्ति बहुधा भयमादधानाः
सन्ध्याभ्रकूटकपिशाः पिशिताशनानाम्॥ ४१ ॥

राजा—(आकर्ण्य सावष्टम्भम्) भो भोस्तपस्विनः! मा भैष्ट मा भैष्ट, अयमहमागत एव।

(इति निष्क्रान्तः।)

इति तृतीयोऽङ्कः।

यज्ञीयवेदिकाम्, परितः=चुतुर्षु पार्श्वेषु, प्रकीर्णाः=व्याप्ताः, अत एव, बहुधा=नानाविधोपद्रवकरणेन, भयं=भीतिम्, आदधानाः=उत्पादयन्त्यः, सन्ध्याभ्रकूटवत्=सायंतनजलदसमूहवत्, कपिशाः= कृष्णरक्ताः, पिशिताशनानाम्=राक्षसानाम्, छायाः=प्रतिबिम्बानि, चरन्ति=इतस्ततो भ्रमन्ति। अत्र सन्ध्याभ्रकूटकपिशा इति लुप्तोपमा तथा परितः प्रकीर्णा अत एव भयमादधाना इति हेतुहेतुमद्भावात्काव्यलिङ्गम्। वसन्ततिलका वृत्तम्॥ ४१ ॥

भावार्थः—सायन्तने अग्निहोत्रे प्रारब्धे सति हुताशनवर्ती वेदिं परितः व्याप्ताः भयमादधाना, सायन्तनजलदसमूहवत् कृष्णरक्ताः राक्षसानां छाया इतस्ततो गतागतं कुर्वन्ति। तथा च माया-कृतादृश्यशरीरा अपि राक्षसा यज्ञीयांग्निसन्निकर्षात् पतन्तीभिश्छायाभिरनुमीयन्तेऽत एव तेषां विनाशायाशु यत्नः करणीय इति सत्वरमागम्यतामिति भावः॥ ४१ ॥

राजा—(आकर्ण्य=नेपथ्योत्थं वाक्यं श्रुत्वा, सावष्टम्भम्=सधैर्यम्) भो भोस्तपस्विनः! मा भैष्ट मा भैष्ट=राक्षसेभ्यो भयं न कार्य्यम्? अयमहम्=साहाय्यकारी राजा दुष्यन्तः, आगत एव= राक्षसवधाय आगच्छाम्येव। (इति=एवमुक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः)

इति तृतीयोऽङ्कः।

सायंकाल मेघसमूह की भाँति पिङ्गलवर्ण के भयदायक राक्षसों के विविध प्रकार के प्रतिबिम्ब (यहाँ) चक्कर लगाने लगे हैं (इन्हें भगाने के लिए आप शीघ्र यहाँ आयें)॥ ४१ ॥

राजा—(नेपथ्य में कहे गये शब्दों को सुनकर, धैर्यपूर्वक) ओ तपस्वियों! आप लोग भयभीत न हों, यह मैं आ पहुँचा हूँ। (यह कहकर चला जाता है।)

तृतीय अंक समाप्त।

---

the shadows of evil spirits, brown as evening clouds and scattered around the all, which possesses the fire (kindled) are roaming about, inspiring terror in various ways. (41)

King—(Having heard with haughtiness) O ascetics, don't be affraid, here I came. *(Exit)*

Thus end of act Third

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशतः कुसुमावचयमभिनयन्त्यौ सख्यौ।)

अनसूया—हला पिअंबदे! जइ वि गंधव्वेण विवाहविहिणा णिव्वुत्तकल्लाणा पिअसही सउंतला अणुरूवभत्तिभाइणी संवुत्ता, तहवि मे ण णिव्विदं हिअअं। [हला प्रियंवदे! यद्यपि गान्धर्वेण विवाहविधिना निवृत्तकल्याणा प्रियसखी शकुन्तला अनुरूपभर्तृभागिनी संवृत्ता, तथापि मे न निर्वृत्तं हृदयम्।]

प्रियंवदा—कहं विअ? [कथमिव?]

अनसूया—अज्ज सो राएसी इट्ठिपरिसमत्तीए इसिहिं विसज्जिदो अत्तणो णअरं पविसिअ अंतेउरसमागमादो इमं जणं सुमरेदि ण वेत्ति। [अद्य स राजर्षिः इष्टिपरिसमाप्त्या ऋषिभिर्विसर्जितः आत्मनो नगरं प्रविश्य अन्तःपुरसमागमादिमं जनं स्मरति न वेति।]

अस्मिन्नाटकेऽयमेवाङ्कः सर्वेष्वप्यङ्केषु श्रेष्ठतर इति मानाः विद्वांसः कथयन्ति यत्—

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्राऽपि च शकुन्तलम्।
तत्र रम्यश्चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'॥

(ततः=तदनन्तरम्, प्रविशतः=आभ्यन्तरं प्रविशतः, कुसुमानामवचयं=वृक्षेभ्यः कुसुमचयनम्, अभिनयन्त्यौ=रूपयन्त्यौ, सख्यौ=अनसूया-प्रियंवदेति।)

अनसूया—हला प्रियंवदे=सखि प्रियंवदे! यद्यपि, गान्धर्वेण=वधूवरयोः परस्पराङ्गीकारपूर्वकेण, विवाहविधिना=परिणयानुष्ठानेन, निवृत्तं=निष्पन्नम्, कल्याणं=मङ्गलं, मनोरथसिद्धिः, यस्याः सा निवृत्तकल्याणा, प्रियसखी=अस्माकं प्रियसखी शकुन्तला, अनुरूपम्=योग्यम्, भर्त्तारं=पतिं, भजत इत्यनुरूपभर्तृभागिनी=योग्यपतिसङ्गता, संवृत्ता=जाता, तथापि, मे=मम, हृदयम्=चेतः, न निर्वृतम्=न सुस्थीभूतम्।

प्रियंवदा—कथमिव=न निर्वृत्तं ते हृदयम्?

अनसूया—अद्य=अस्मिन्नेव दिने, स राजर्षिः=दुष्यन्तः, इष्टिपरिसमाप्त्या=यागसमापनेन

(फूल चुनने का अभिनय करते हुए दोनों सखियों का प्रवेश)

अनसूया—सखी प्रियंवदा! यद्यपि प्रिय सखी शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हो जाना अच्छा ही हुआ और उसने अपने अनुरूप पति भी पाया है तथापि मेरा मन प्रसन्न नहीं है।

प्रियंवदा—भला क्यों?

अनसूया—यज्ञ समाप्त हो जाने के कारण ऋषियों ने आज उन राजर्षि को आश्रम से

(Then enter the two friends gesticulating the gathering of flowers)

Anasūyā—Dear Priyaṁvadā! Though I am comforted at the thought that Śakuntalā has become united with a worthy husband, her happiness being achieved by the Gandharva form of marriage, yet this much is to be thought about.

Priyaṁvadā—How it is possible?

Anasūyā—Having completed their sacrifice, dismissed

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—एत्थ दाव वीसत्था होहि। णहि तादिसा आकिदिविसेसा गुणविरहिणो होंति। एत्तिअं उण चिंतणीअं, तादो तीत्थजात्तादो पडिणिउत्तो इमं वुत्तंतं सुणिअ ण आणे किं पडिवज्जिस्सदित्ति। [अत्र तावत् विश्वस्ता भव। नहि तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरहिणो भवन्ति। एतावत् पुनश्चिन्तनीयम्, तातस्तीर्थयात्रातः प्रतिनिवृत्तः इमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति।]

अनसूया—जधा मं पुच्छसि, तधा अभिमदं तादस्स। [यथा मां पृच्छसि तथा अभिमतं तातस्य।]

प्रियंवदा—कधं विअ ? [कथमिव ?]

हेतुना, ऋषिभिः=आश्रमवासिभिः, तपस्विभिः, विसर्जितः=राजधानीं गमनाय अनुज्ञातः, आत्मनः= स्वस्य, नगरं=पत्तनं, प्रविश्य=गत्वा, अन्तःपुरसमागमात्=अन्तःपुरस्थलीसम्भोगात्, इमं जनं= शकुन्तलाम्, स्मरति न वा=कार्याधिक्यतया विपुलान्तःपुरतया च स्मरिष्यति न वा इति।

प्रियंवदा—अत्र=अस्मिन् विषये (राज्ञः शकुन्तलास्मृतौ), तावत्, विश्वस्ता=निःसन्देहा भव, हि=यतः, तादृशाः=दुष्यन्तसदृशाः, आकृतिविशेषाः=सामुद्रिकोक्तलक्षणलक्षिताः, गुण- विरहिणः=निर्गुणाः न भवन्ति; 'यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति' इति न्यायेन गुणानुरागिण एव भवन्ति। पुनः=किन्तु, एतावत्=एतत्, चिन्तनीयम्=विचारणीयम्, तातः=पिता कण्वः, तीर्थयात्रातः= तीर्थाटनतः, प्रतिनिवृत्तः=प्रत्यागतः सन्, इमं वृत्तान्तं=दुष्यन्तशकुन्तलायाः गान्धर्वविवाहम्, श्रुत्वा= आकर्ण्य, न जाने किं प्रतिपत्स्यते=किं कल्पयिष्यते।

अनसूया—यथा=यादृशं, मां पृच्छसि=मां जिज्ञास्यसे, तथा=तादृशं वृत्तमेव, तातस्य=पितुः कण्वस्य, अभिमतम्=सम्मतम्। दुष्यन्तशकुन्तलायाः परिणयः तातस्यानुमतमेवेति भावः।

प्रियंवदा—कथमिव=कथं तातस्याभिमतम् ?

विदा कर दिया है। अब वे अपनी राजधानी में जाकर और अपनी रानियों से समागम के पश्चात् इस वनवासिनी शकुन्तला को स्मरण करते हैं या नहीं ?

प्रियंवदा—तुम इस विषय में आश्वस्त रहो, क्योंकि उस प्रकार की आकृति-विशेष वाले व्यक्ति गुणहीन नहीं होते। पिता (कण्व) तीर्थयात्रा से लौट आये हैं, इस वृत्तान्त को सुनकर न जाने क्या सोचेंगे ?

अनसूया—यदि मुझसे पूछो तो यह कार्य पिता के मनोनुकूल ही है।

प्रियंवदा—भला कैसे ?

---

today by the ascetics, whether the royal sage having entered his capital, would remember or not our dear Śakuntalā, owing to his association with the ladies in the harem.

Priyaṁvadā—Be satisfied in this matter, because, distinguished characters are never without virtues (formed of them). But I do not know what father will now feel after hearing of this affair.

Anasūyā—So for as I am concerned, it will be approved of by him.

Priyaṁvadā—How possibly?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—अणुरूवस्स वरस्स हत्थे कण्णआ पडिवादणीअत्ति, अअं दाव पढमो कप्पो। तं जइदेव्वं संपादेदि, णं कअत्थो गुरुअणो। [अनुरूपस्य वरस्य हस्ते कन्यका प्रतिपादनीयेति; अयं तावत् प्रथमं कल्पः। तं यदि दैवं सम्पादयति, ननु कृतार्थो गुरुजनः।]

प्रियंवदा—एवण्णेदं। (पुष्पभाजनं विलोक्य) सहि! अवचिदाइं क्खु बलिकम्मज्जत्ताइं कुसुमाइं। [एवमेतत्। सखि! अवचितानि खलु बलिकर्मपर्याप्तानि कुसुमानि।]

अनसूया—णं सउंतलाए वि सोहग्गदेवदाओ अच्चिदव्वाओ, ता अवराइं वि अवचिणुम्ह। [ननु शकुन्तलाया अपि सौभाग्यदेवता अर्चितव्याः तदपराण्यपि अवचिनुवः।]

प्रियंवदा—जुज्जदि। [युज्यते।] (इति तदेव कर्माभिनयतः)

अनसूया—अनुरूपस्य=योग्यस्य, वरस्य=वरणीयपुरुषस्य, हस्ते=करे, कन्यका=अप्राप्तयौवना बालिका, प्रतिपादनीया=समर्पणीया इति। तावत् अयमुपरोक्तः, प्रथमः=मुख्यः, कल्पः=विधिः (प्रथमसम्पादनीयकृत्योऽयमिति भावः), तम्=प्रथमं कल्पं, यदि, दैवं=भागधेयं, सम्पादयति=अनायासेन घटयति, नन्विति निश्चये, गुरुजनः=पुत्रादिः, कृतार्थः=कृतकृत्यः (अत एव तातो रुष्टो न भविष्यति अपितु तुष्ट एव भविष्यतीति)।

प्रियंवदा—एवमेतत्=यत्त्वया निश्चितं तत्तथ्यमेव। (पुष्पभाजनम्=पुष्पधारकं पात्रम्, विलोक्य=दृष्ट्वा) सखि! बलिकर्मपर्याप्तानि=पूजोपहारकर्मोपयुक्तानि, कुसुमानि=पुष्पाणि, अवचितानि=लूनानि, खल्विति निश्चयेन।

अनसूया—नन्विति सम्बोधने, शकुन्तलाया अपि=अस्माकं प्रियसख्या अपि, सौभाग्यदेवता=भर्तृसुभगत्वसम्पादकदेवता (अपि), अर्चितव्याः=आराधयितव्याः, तद्=तस्मात्, अपराण्यपि=अन्यान्यपि कुसुमानि, अवचिनुवः=लूनीवः।

अनसूया—'अनुरूप वर के हाथ में कन्या को सौंपना चाहिए' यह प्रथम कर्त्तव्य है। फिर यदि दैव स्वयं यह कार्य बना दे तो निश्चय ही गुरुजन स्वयं को कृतकृत्य ही मानेंगे।

प्रियंवदा—ऐसा ही है। (फूलों की डलिया को देखकर) सखी! पूजा के लिए पर्याप्त पुष्प चुन लिये हैं।

अनसूया—क्योंकि शकुन्तला के सौभाग्य-देवता की भी पूजा करनी है, अतः आओ शेष पुष्प भी चुन लें।

प्रियंवदा—ठीक है। (उसी कर्म अर्थात् पुष्पचयन का अभिनय करती है)

Anasūyā—That a daughter is to be given to a suitable and proper person—this is just the first aim. If fortune itself accomplishes that, why! the elders have their object fulfilled without effort.

Priyaṁvadā—It is so. *(Looking at the flower-basket)* Dear! we have gathered flowers enough for the offering.

Anasūyā—But, the deity that watches over the fortune of our dear friend Śakuntalā will have to be worshipped by us, so, let us gather the rest of flowers too.

Priyaṁvadā—Very well. *(They act doing the same)*

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) अयमहं भोः !

अनसूया—(कर्णं दत्त्वा) सहि। अदिधिणा विअ णिवेदिदं। [सखि! अतिथिना इव निवेदितम्।]

प्रियंवदा—णं उडए सण्णिहिदा सउंतला। [ननु उटजे सन्निहिता शकुन्तला।]

अनसूया—आं, अज्ज उण असण्णिहिदा हिअएण। तेन हि भोदु, एत्तिकेहिं कुसुमेहिं पओअणं। [आम्, अद्य पुनरसन्निहिता हृदयेन। तेन हि भवतु, एतावद्भिः कुसुमैः प्रयोजनम्।] (इति प्रस्थिते)

(पुनर्नेपथ्ये) आः, कथमतिथिं मां परिभवसि ?

प्रियंवदा—युज्यते=उपयुक्तमेव त्वं भणसि। (इति=इत्थमुक्त्वा, तदेव=पुष्पावचय-रूपमेव, अभिनयतः=आङ्गिकव्यापारेण दर्शयतः।)

(नेपथ्ये=परोक्षे) भोः=तपस्विनः, अयमहम्=भवदतिथिः। (उटजद्वारमागम्यातिथ्यं परिग्रहीतुमिच्छतो दुर्वाससः उक्तिरियम्।

अनसूया—(कर्णं दत्त्वा=आकर्ण्य) सखि! अतिथिना=आगन्तुकेन, इव=इति प्रतीतौ, निवेदितम्=विज्ञापितम्।

प्रियंवदा—ननु=इति सम्बोधने, उटजे=कुटीरे, सन्निहिता=उपस्थिता, शकुन्तला, सैव सपर्य्यां विधास्यतीति भावः।

अनसूया—आम्, आमिति स्मरणे, अद्य=अधुना, पुनरपि, हृदयेन असन्निहिता=हृदयशून्या (उटजगतशरीरा अपि भर्तृगतहृदया), तेन हि=उटजस्य जनशून्यत्वेनैव हेतुना, भवतु=अस्तु, एतावद्भिः=इयद्भिरेव, कुसुमैः=पुष्पैः, प्रयोजनम्=उद्देश्यम्, एतैरेव पुष्पैः प्रयोजनं सिद्धं भवत्वित्यर्थः। (इति प्रस्थिते=प्रस्थातुमारभेते)

(नेपथ्य में) ओ तपस्वियो! यह मैं हूँ (अर्थात् यहाँ आ पहुँचा हूँ)।

अनसूया—(कान देकर) सखी! जान पड़ता है यह किसी अतिथि ने कहा है।

प्रियंवदा—कुटिया में शकुन्तला है ही।

अनसूया—हाँ, है तो सही परन्तु मन से वहाँ नहीं है। इसलिए अब रहने दो, इतने ही फूलों से हमारा उद्देश्य पूरा हो जायेगा (प्रस्थान)।

(पुनः नेपथ्य में) ओह! तू कैसे मेरे जैसे अतिथि का निरादर करती है ?

(Behind the scenes again) It is I—Hola.

Anasūyā—*(Listening)* It seems, as some guest announcing himself.

Priyaṁvadā—Well, Śakuntalā is near the cottage (she will attend him i.e. the guest).

Anasūyā—Ofcourse, though she is there, but not there with her heart today. Well, these flowers are enough to solve our purpose. *(They start away)*

(Behind the scenes again) Ah, thou that art disrespectful to a guest like me, who is a treasure house of penance.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोनिधिं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥ १ ॥

प्रियंवदा—हद्दी हद्दी! तं ज्जेव संवुत्तं, जं मए चिंतिदं। कस्सिंपि पूआरिहे अवरद्धा सुण्णहिअआ सउंतला। [हा धिक् हा धिक्! तदेव संवृत्तम्, यन्मया चिन्तितम्। कस्मिन्नपि पूजार्हे अपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।]

अनसूया—(पुरोऽवलोक्य) ण क्खु जस्सिं कस्सिं पि, एसो दुब्बासा सुलहकोबो महेसी, तधा सविअ अविरलपादतुवराए गदीए पडिणिउत्तो। [न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि, एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः, तथा शप्त्वा अविरलपादत्वरया गत्या प्रतिनिवृत्तः।]

(नेपथ्ये=परोक्षे, पुनः=भूयः) आः=इति कोपसूचकमव्ययम्, अतिथिम्=अभ्यागतम्, मां=दुर्वाससम्, कथं=कथमित्थं, परिभवसि=उपेक्षितवचनत्वान्नाद्रियसे?

अन्वयः—अनन्यमानसा (त्वम्) यं विचिन्तयति (सती) उपस्थितं तपोनिधिं मां न वेत्सि प्रमत्तः प्रथमं कृतां कथाम् इव सः बोधितः अपि सन् त्वां न स्मरिष्यति॥ १ ॥

विचिन्तयन्तीति। नास्ति अन्यस्मिन्=दुष्यन्तातिरिक्ते विषये, मानसं=मनः, यस्याः सा अनन्यमानसा, त्वम्, यम्=जनं, दुष्यन्तमिति यावत्, विचिन्तयन्ती=विशेषेण ध्यायन्ती सती, उपस्थितम्=उटजद्वारे समागतम्, तपोनिधिम्—तपांसि निधीयन्ते=धार्यन्तेऽस्मिन्निति तपोनिधिम्, मां=दुर्वाससम्, सुलभकोपमिति यावत्, न वेत्सि=नावगच्छसि, प्रमत्तः=प्रकृष्टो मत्तः, प्रथमं=पूर्वम्, कृताम्=अभिहिताम्, कथाम्=वाचमिव, सः=जनः, बोधितोऽपि=तत्तल्लिङ्गेन स्मारितोऽपि, त्वाम्=शकुन्तलाम्, न स्मरिष्यति=नानुभविष्यति। अत्र विचिन्तनादेरज्ञानादिहेतुत्वात् काव्यलिङ्गम्, तपोनिधिमिति परिकरः, उत्तरार्द्धे पूर्णोपमा। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १ ॥

भावार्थः—यं चिन्तयति त्वं तपोनिधिं माम् अभ्युत्थानादिना न सत्करोषि, मत्शापात् सः बोधितोऽपि त्वां तथैव न स्मरिष्यति यथा प्रमत्तः प्रथमं कृतां कथां न स्मरति॥ १ ॥

प्रियंवदा—हा धिक् हा धिक्! इति निर्वेदविषादयोः, यन्मया चिन्तितम्=वितर्कितम्, तदेव=वितर्कितमेव, संवृत्तम्=सञ्जातम्। कस्मिन्नपि पूजार्हे=पूजनीये, अपराद्धा=कृतापराधा (पूज्यपूजोल्लङ्घनेति भावः), शून्यहृदया=हृदयरहिता, शकुन्तला=अस्माकं प्रियसखि।

अनन्य भाव से जिसका चिन्तन करती हुई तू मुझ तपोनिधि अतिथि को पहचान तक नहीं रही है, वह व्यक्ति बार-बार याद दिलाने पर भी तुझे उसी प्रकार भूल जायेगा जैसे कोई प्रमादी अपनी पहले कही हुई बात को भूल जाता है॥ १ ॥

प्रियंवदा—धिक्कार है, धिक्कार है! वही हुआ जो मैंने सोचा था। जान पड़ता है—किसी पूजनीय व्यक्ति के साथ शून्यहृदया शकुन्तला कोई अपराध कर बैठी है।

He on whom thou art meditating in the mind, regardless of every thing else, while thou perceivest not me, rich in penance, to have arrived as guest, will not remember thee, though reminded, like a drunken man the words previously spoken. (1)

Priyaṁvadā—Alas! Alas! the same has happened, as I thought. The absent minded Śakuntalā has offended some person deserving worship.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—को अण्णो हुदवदाओ पहवदि दहिदुं। ता गच्छ वाएसुं पडिअ णिउत्तावेहि। जाव से अहुं पि अग्घोदअं उपकंपेमि। [**कोऽन्यो हुतवहात् प्रभवति दग्धुम्। तद् गच्छ, पादयोः पतित्वा निवर्त्तय। यावदस्या अहमपि अर्घ्योदकमुपकल्पयामि।**]

अनसूया—तह। [**तथा।**] (इति निष्क्रान्ता)

प्रियंवदा—(पदान्तरे स्खलितं रूपयन्ती) अम्मो! आवे अक्खलिदीए गदीए परिब्भट्ठं मे अग्गहत्थादो पुप्फभाअणं। [**अहो! आवेगस्खलितया गत्या परिभ्रष्टं मे अग्रहस्तात् पुष्पभाजनम्।**] (इति पुष्पावचयं रूपयति।)

अनसूया—(पुरः=अग्रतः, अवलोक्य=दृष्ट्वा, शप्तारं दुर्वाससं दृष्ट्वा) यस्मिन् कस्मिन्नपि= तुच्छजने, नैव अपराद्धा शकुन्तला। तर्हि कस्मिन्नित्यत्राह—एषः=पुरोगतः, सुलभकोपः—सुलभः= स्वाभाविकः, कोपो यस्य सः सुलभकोपः=स्वभावेनैव चण्डकोपः, महर्षिः=महामुनिः, दुर्वासाः= दुर्वासेति नामधेयः। तथा=पूर्वोक्तप्रकारेण, शप्त्वा=शापं दत्त्वा, अविरलपादत्वरया—अविरलाः= घनाः, पादाः=पादन्यासाः, यस्यां सा तथाभूता त्वरा यस्यां सा तया, गत्या=गमनेन, प्रतिनिवृत्तः= आश्रमात् पराङ्मुखो भूत्वा प्रस्थितः।

प्रियंवदा—हुतं=हव्यं, तस्य वहः, तस्मात् हुतवहात्=अग्नेः, अन्यः=अपरः, कः=पदार्थः, दग्धुं=ज्वालयितुम्, प्रभवति=प्रभुर्भवति, न कोऽपीत्यर्थः। यथा हुतवह एव क्षिप्रं दग्धुं प्रभवति तथैव अत्यल्पदोषादपि दुर्वासा एव शप्तुं प्रभवति इति भावः। तद्=तस्मात्, गच्छ दुर्वाससः समीपम्, पादयोः=चरणयोः, पतित्वा=दण्डवद् भूमौ पतित्वा, निवर्त्तय=शापपातनाद् रुणद्धि। यावद्= यावत्कालपर्यन्तम्, अहमपि अस्य कृते, अर्घ्योदकम्=सत्कारोपनयनम्, उपकल्पयामि=आहरामि।

अनसूया—तथा=त्वत्कथनानुसारमेव विधास्यामि। (इति इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ता=दुर्वाससं निवर्त्तयितुं निर्गता।)

अनसूया—(सामने देखकर) किसी ऐसे-वैसे के साथ नहीं, अपितु शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाले महर्षि दुर्वासा के साथ; (क्योंकि वे ही) उक्त प्रकार से शाप देकर शीघ्रतापूर्वक कदम बढ़ाते हुए यहाँ से गये हैं।

प्रियंवदा—अग्नि के सिवाय और कौन पदार्थ को जला सकता है ? अतः जाओ और उनके चरणों में गिरकर उन्हें लौटाओ। तब तक मैं भी उनके लिए अर्घ्यजल तैयार कर लेती हूँ।

अनसूया—ठीक है (जैसा तुम कह रही हो वैसा ही करूँगी) (चली जाती है)।

Anasūyā*—*(Looking forward) Not indeed any ordinary person. This is Durvāsā, the easily irritable great sage. Having cursed in that way he returned with a gait, quick, impetuous and difficult to be checked.

Priyaṁvadā—Who else but fire is only able to burn. Go, and bowing at his feet, persuade him to return. Whilst I shall make ready the water for worship.

Anasūyā—I will. ***(Exit)***

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—(प्रविश्य) सहि! सरीरी विअ कोवो कस्स अणुणअं सो गेण्हदि। किंच उण सो अणुकंपिदो मए। [सखि! शरीरीव कोपः कस्य अनुनयं स गृह्णाति। किञ्च पुनः स अनुकम्पितो मया।]

प्रियंवदा—एदं ज्जेव तस्सिं बहुदरं। ता कधेहि कधं तए पसादिदो? [एतदेव तस्मिन् बहुतरम्। तत् कथय कथं त्वया प्रसादितः ?]

अनसूया—जदो णिउत्तिदुं ण इच्छदि, तदो पाएसुं पडिअ विण्णविदो मए—भअवं पढमं त्ति पेक्खिअ अविण्णाद-तवपहावस्स दुहिदिजणस्स अअं अवराहो भअदा

प्रियंवदा—(पदान्तरे=अर्घ्योदकमानेतुम् एकं पदं क्षिप्त्वा अपरपादन्यासे, स्खलितं=गतिवैलक्षण्यम्, रूपयन्ती=अभिनयद्वारा दर्शयन्ती) अहो इत्याश्चर्ये खेदे च, आवेगेन=त्वरया, स्खलितया=विपर्य्यस्तया, आवेगस्खलितया, गत्या=गमनेन, मे=मम, अग्रहस्तात्=कराग्रभागात्, परिभ्रष्टम्=स्खलितम्, पुष्पभाजनम्=पुष्पाधारभूतं पात्रम्। (इति=एवमुक्त्वा, पुष्पावचयम्=पुष्प-चयनम्, रूपयति।)

अनसूया—(प्रविश्य=रङ्गभूमौ समागत्य) सखि! शरीरी=मूर्त्तिमान्, कोपः=क्रोध इव, सः=दुर्वासाः, कस्यानुनयं=प्रार्थनावाक्यम्, गृह्णाति=स्वीकरोति, न कस्यापीत्यर्थः। किञ्च=तथापि, पुनः=भूयः, सः=दुर्वासाः, मया, अनुकम्पितः=प्रसादितः। अतिदुःसाध्यं मया साधितमिति भावः।

प्रियंवदा—एतदेव=अनुकम्पनमेव, तस्मिन्=प्रकृतिक्रूरे दुर्वाससि, बहुतरम्=अत्यधिक-मिति ज्ञेयम्। तत्=तस्मात्, कथय=ब्रूहि, कथं=केनोपायेन, त्वया=भवत्या, प्रसादितः=प्रसन्नता-मानीतः ?

अनसूया—यदा (सः), निवर्त्तितुम्=आश्रमं प्रत्यावर्त्तुम्, न इच्छति=न वाञ्छति, तदा=तर्हि, पादयोः=चरणयोः, पतित्वा, विज्ञापितः=निवेदितः, भगवन्! प्रथमम्=आद्यम्, इति प्रेक्ष्य=

प्रियंवदा—(ठोकर खाकर गिर पड़ती है) ओह! तेजी से चलने के कारण मेरी अँगुलियों से फूल की डलिया छूटकर गिर गई। (यह कहकर फूल चुनने का अभिनय करती है।)

अनसूया—(प्रवेश कर) मूर्तिमान् कोप जैसे वे दुर्वासा भला किसी की प्रार्थना सुन सकते हैं, परन्तु फिर भी मैंने उन्हें प्रसन्न कर ही लिया।

प्रियंवदा—उनमें इतना (परिवर्तन ला देना) ही बहुत है। अच्छा, बताओ तुमने उन्हें कैसे प्रसन्न किया ?

अनसूया—जब वे लौटने के लिए राजी न हुए तब मैंने उनके चरणों में गिरकर

Priyaṁvadā—(She stumbles at the next step) As I stumbled in my excitment, the flower basket fell down from my hands. ***(She acts the gathering up of the flowers)***

Anasūyā—(Entering) Dear! whose entreaties would this ill-tampered person accept? Hence, I softened him a little.

Priyaṁvadā—Even that is a good deal for him. Please tell me how you pleased him.

Anasūyā—When he would not return, I prayed to him, fall-

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मरिसिदव्वो त्ति। [यदा निवर्त्तितुं न इच्छति, तदा पादयोः पतित्वा विज्ञापितो मया—भगवन्! प्रथममिति प्रेक्ष्य अविज्ञाततपःप्रभावस्य दुहितृजनस्य अयमपराधो भवता मर्षयितव्य इति।]

प्रियंवदा—तदो तदो ? [ततस्ततः ?]

अनसूया—तदो तेण भणिदं, ण मे वअणं अण्णधा भविदुं अरिहदि। किंतु आहरणाहिण्णाणदंसणेण से सावो णिउत्तिस्सदि त्ति मंतअंतज्जेव अंतरिदो। [ततस्तेन भणितम्, न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति। किन्तु आभरणाभिज्ञानदर्शनेन अस्याः शापो निवर्त्तिष्यतीति मन्त्रयन्नेवान्तरितः।]

प्रियंवदा—सक्कं दाणिं समास्ससिदुं। अत्थि तेण राएसिणा संपत्थिदेण अत्तणो णामांकिदं अंगुलीअअं सुमरणीअं त्ति सउंतलाए हत्थे सअं ज्जेव परिधाविदं। एसो ज्जेव तस्मिं

आद्यमपराधं इति मत्वा, न विज्ञातस्तपः प्रभावो येन तस्य अविज्ञाततपःप्रभावस्य=अविज्ञात-तपोमहिम्नः, दुहितृजनस्य=आत्मजातुल्यायाः शकुन्तलायाः, अयमपराधः=अवैधाचरणजनितो दोषः, त्वया=भवता, मर्षयितव्यः=क्षन्तव्यः (अविज्ञाततपःप्रभावाशकुन्तलाया 'एकोऽपराधः क्षन्तव्यः' इति न्यायेन भवताऽपि अयं मर्षयितव्य एव)।

प्रियंवदा—ततस्ततः=तदनन्तरं किमभूत् ?

अनसूया—ततः=तदा, तेन=दुर्वाससा, भणितम्=कथितम्, मे=मम, वचनम्=कथनम्, अन्यथा=मिथ्या, भवितुं न अर्हति, किन्तु=तथापि, अभिज्ञायते अनेनेति अभिज्ञानम्=स्मारकम्, आभरणरूपं यदभिज्ञानं, तस्य दर्शनेन=अवलोकनेन, आभरणाभिज्ञानदर्शनेन, अस्याः=शकुन्तलायाः, शापः, निवर्त्तिष्यतीति=अपसारितो भविष्यतीति, इति=एवम्, मन्त्रयन्=कथयन् एव, अन्तरितः= अन्तर्हितः (अनेन दुर्वाससो योगप्रभावं दर्शितम्)।

प्रियंवदा—इदानीम्=सम्प्रति (शापान्तश्रवणे सतीत्यर्थः), समाश्वसितुम्=आश्वासयितुम्,

---

निवेदन किया—भगवन्! यह पहला ही अपराध है, यह विचार कर आपकी तपस्या के प्रभाव को न जानने वाली अपनी पुत्री तुल्य (शकुन्तला) के इस अपराध को आपको क्षमा कर ही देना चाहिए।

प्रियंवदा—तब क्या हुआ ?

अनसूया—तब उन्होंने कहा—'मेरा कथन अन्यथा नहीं हो सकता। किन्तु किसी गहने को दिखाने से इसका शाप हट जायेगा' (अर्थात् उस समय उसका स्मरण हो आयेगा)। यह कहते-कहते ही वे अन्तर्धान हो गये।

प्रियंवदा—अब हम धैर्य धारण कर सकती हैं। राजर्षि दुष्यन्त आश्रम से विदा होते

---

ing down myself at his feet—"Sir!, considering it is the first time, this one offence of the daughter (i.e. Śakuntalā), who did not recognize the polency of penance, should be forgiven by your reverance."

Priyamvadā—Then, further?

Anasūyā—Then, while just saying this 'my word does not deserve to be otherwise; but the curse will cease at the sight of an ornament of recognition' he disappeared.

Priyamvadā—Now it is possible to take consolation. There

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साहीणो उवाओ भविस्सदि। [शक्यमिदानीं समाश्वसितुम्। अस्ति तेन राजर्षिणा सम्प्रस्थितेन आत्मनो नामाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति शकुन्तलाया हस्ते स्वयमेव परिधापितम्। एष एव तस्मिन् स्वाधीन उपायो भविष्यति।]

अनूसया—सहि! एहि, देवकज्जं दाव से णिव्वत्तेह्यं। [सखि! एहि, देवकार्यं तावदस्या निवर्त्तयावः।] (इति परिक्रामतः)

प्रियंवदा—(अवलोक्य) अणसूए! पेक्ख दाव, वामहत्थविणिहिदवअणा आलिहिदा विव पिअसही तग्गदाए चिंताए अत्ताणं पि ण विभावेदि, किं उण आगंतुअं। [अनसूये! प्रेक्षस्व तावत्, वामहस्तविनिहितवदना आलिखितेव प्रियसखी तद्गतया चिन्तया आत्मानमपि न विभावयति, किं पुनरागन्तुकम्।]

शक्यमस्माभिरिति शेषः। अस्ति=विद्यते (तस्याः पार्श्वे), तेन राजर्षिणा=दुष्यन्तेन, सम्प्रस्थितेन=प्रस्थानसमये (प्रस्थातुमारब्धवता इत्याशयः), आत्मनः=स्वस्य, नामाङ्कितमङ्गुलीयकम्=नामाक्षरैः चिह्नितम् अङ्गुलीयकम्; स्मरणीयमिति=स्मरणाय हितमिति कृत्वा, शकुन्तलाया हस्ते=करे, स्वयमेव=आत्मनैव, परिधापितम्। एष एव=अङ्गुलीयकमेव, तस्मिन्=शापविमोचने, स्वाधीनः=आत्मायत्तः, उपायः=कौशलम्, भविष्यति।

अनसूया—सखि! एहि=आगच्छ, अस्याः=शकुन्तलायाः, देवकार्य्यम्=दैवानुकूलकरणाय करणीयं पूजनादिकम्, निवर्त्तयावः=समापयावः। (इति=एवमुक्त्वा, परिक्रामतः=पादक्षेपं कुरुतः, पर्णशालागमायेति भावः।)

प्रियंवदा—(अवलोक्य=दृष्ट्वा) अनसूये! तावत्, प्रेक्षस्व=अवलोकय, वामहस्ते=सव्य-पाणौ, विनिहतं=विन्यस्तं, वदनं यया सा वामहस्तविनिहितवदनाः=वामकरार्पितमुखमण्डला इत्यर्थः, आलिखितेव=चित्राङ्कितेव, प्रियसखी=शकुन्तला, तद्गतया=भर्तृगतया, चिन्तया, आत्मान-

---

समय अपने नाम की अँगूठी स्वयं शकुन्तला की अंगुली में अपना स्मरण कराने के लिए पहना गये थे। यही (अँगूठी) उसके अपने आधीन उपाय होगा अर्थात् उस अँगूठी को यथा-समय दिखाकर वह अपने शाप को हटा सकेगी।

अनसूया—सखी! चलो, इसका (शकुन्तला का) देवकार्य सम्पन्न करें। (यह कहकर दोनों घूमती हैं।)

प्रियंवदा—(देखकर) अनसूया! देखो, प्रिय सखी शकुन्तला बायें हाथ पर मुख टिकाये हुए चित्रलिखित की भाँति (स्थिर) बैठी है। अपने प्रिय के ध्यान में यह इस प्रकार

---

is a ring marked with his own name, fastened on Śakuntalā's finger as a souvenir by the royal sage himself when departed from the hermitage. In that ring Śakuntalā will have the remedy in her power.

Anasūyā—Dear, come. Let us just perform her worship of the deity. *(The both walk round)*

Priyaṁvadā—(Looking) Anasūyā! just see, our friend is as though drawn in a picture, with her face resting on her left hand.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—हला! दोण्णं ज्जेव णो हिअए एसो वुत्तंतो चिट्ठदु। रक्खणीआ क्खु पहदिपेलवा पिअसही। **[हला! द्वयोरेवावयोर्हृदये एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु। रक्षणीया खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।]**

प्रियंवदा—को दाव उष्णोदएण णोमालिअं सिंचदि? **[कस्तावदुष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति? (इत्युभे निष्क्रान्ते)।**

(विष्कम्भकः)

(ततः प्रविशति सुप्तोत्थितः कण्वशिष्यः)

मपि=स्वमपि, न विभावयति=नावगच्छति, किम्पुनरागन्तुकम्=अतिथिम्, विभाव्यतीत्यनुषज्यते। आत्मविस्मृतया अनया कुटीरद्वारे समुपस्थितो दुर्वासा न विदित इत्यत्र नास्ति आश्चर्यलेशावसरः।

अनसूया—हला=सखि! आवयोः=उभयोरावयोः, द्वयोरेव हृदये=चेतसि, एषः=दुर्वाससोऽभिसम्पातरूपः, वृत्तान्तः, तिष्ठतु=स्थिरीभवतु; एष वृत्तान्तः नान्यस्य कस्यचिद् वक्तव्य इत्यर्थः। प्रकृत्या=स्वभावेनैव, पेलवा=कोमला, प्रियसखी=शकुन्तला, रक्षणीया खलु=अवश्यमेव रक्षणीया। (यदि कर्णपरम्परया शकुन्तला इमं वृत्तान्तं श्रोष्यति तदा सा सद्य एव विनशिष्यतीति भावः।)

प्रियंवदा—तावत्, कः=पुरुष, उष्णोदकेन=तप्तवारिणा, नवमालिकां=तदाख्यां स्वभावतः कोमलां लतां, सिञ्चति=जलदानेन तर्पयति, न कोऽपीत्यर्थः। यथा उष्णोदकेन नवमालिकायाः सेचनं न सम्भवं तथैव शकुन्तलायाः सविधे एतद् वृत्तान्तकथनमपि नोचितम्। (इत्युभे=अनसूया-प्रियंवदे, निष्क्रान्ते=प्रस्थिते।)

(विष्कम्भकः)

(ततः=तदनन्तरम्, सुप्तोत्थितः—सुप्तं=स्वापः, तस्मादुत्थित इति सुप्तोत्थितः=प्रतिबुद्धः, कण्वशिष्यः=कण्वनामकमहर्षेः शिष्यः, प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

डूबी हुई है कि इसे स्वयं अपना ही ध्यान नहीं है, फिर भला आगन्तुक के विषय में कैसे जानेगी?

अनसूया—सखी! यह (शाप विषयक) वृत्तान्त हम दोनों के हृदयों तक ही रहना चाहिए; क्योंकि स्वभावतः कोमल शकुन्तला के जीवन को तो हमें बचाना ही है।

प्रियंवदा—भला कौन उष्ण जल से नवमालिका की बेल को सींचना चाहेगा? **(दोनों का प्रस्थान।)**

(विष्कम्भक)

Owing to her obsession with her husband she is not conscious of even herself, what then of a guest.

Anasūyā—Dear, let this incident rest in the heart of us two only. Because, our dear friend, who is very delicate by nature, should indeed be protected.

Priyaṁvadā—Who possibly would sprinkle the Navamālikā with hot water? *(Both went out)*

(End of the Prelude)

(Then enter a pupil who has risen from sleep)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिष्यः—वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि तत्रभवता प्रवासात् प्रतिनिवृत्तेन कण्वेन। तत् प्रकाशं निर्गत्यावलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्या इति। (परिक्रम्यावलोक्य च) हन्त! प्रभाता रजनी। तथाहि—

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनामाविष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां लोको नियम्यत इवैष दशान्तरेषु॥ २॥

शिष्यः—प्रवासात्=सोमतीर्थात्, प्रतिनिवृत्तेन=प्रत्यागतेन, तत्रभवता=पूज्येन, कण्वेन=तन्नामकुलपतिना, वेलायाः=होमसमयस्य, उपलक्षणम्=अश्विन्यादिताराभिरुपलक्ष्य ज्ञानम्, आदिष्टोऽस्मि=आज्ञप्तोऽस्मि। तत्=तस्मात्, प्रकाशम्=उटजाद्बहिर्भागम्, निर्गत्य=निष्क्रम्य, रजन्याः=रात्रेः, कियदवशिष्टम्=कियत्कालं शेषोऽस्तीत्यवलोकयामि (विलम्बे तु धर्मकर्म-कालातिक्रमे महानपराधो भवेदिति भावः)। (परिक्रम्य=अग्रे कतिपयैः पदैः सञ्चर्य, अवलोक्य=दिशो नक्षत्राणि च विलोक्य) हन्त=इति हर्षे, प्रभाता=प्रभातप्राया, रजनी=रात्री, रजनी प्रभाते परिणता इति। तथाहि=यतः—

अन्वयः—ओषधीनां पतिः एकतः अस्तशिखरं याति, तथा अरुणपुरःसरः अर्कः एकतः आविष्कृतः तेजोद्वयस्य युगपत् व्यसनोदयाभ्याम् एषः लोकः दशान्तरेषु नियम्यते एव॥ २॥

यातीति। ओषधीनां=तृणज्योतिर्लतानां, पतिः=प्रभुः चन्द्रः, एकतः=एकस्यां दिशि (पश्चिमदिग्भागे), अस्तस्य=अस्ताचलस्य, शिखरम्=चूडाम्, अस्तशिखरम्, याति=गच्छति, तथा अरुणः= अनूरुः, पुरःसरः=अग्रगामी, यस्य सः अरुणपुरःसरः, अर्क=सूर्यः, एकतः=एकस्यां दिशि, पूर्वदिग्भागे इत्यर्थः, आविष्कृतः=प्रादुर्भूतः, तेजोद्वयस्य=चन्द्र-सूर्ययोरित्यर्थः, युगपत्= एकदा,

---

(इसके पश्चात् सोकर उठे हुए कण्व के शिष्य का प्रवेश)

शिष्य—प्रवास से लौटे हुए पूज्य कण्व ने समयावधारण के लिए मुझे आज्ञा दी है, अतः बाहर जाकर देखूँ कि रात कितनी बाकी है। (चलकर और देखकर) ओह! रात प्रभात में बदल गई है (रात बीत गई है), क्योंकि—

एक ओर चन्द्रमा उदय हो रहा है और दूसरी ओर सूर्य अरुण को आगे कर प्रकाशित (उदय) हो रहा है। एक ही समय में दो तेजों का उदय और अस्त मानो विश्व को इस बात का ज्ञान कराते हैं कि कोई स्थिति सदा एक समान नहीं रहती। अर्थात् दो तेजों का एक ही समय में उदय और अस्त होना किसी अवस्था-विशेष की अनित्यता का परिज्ञान अथवा ईश्वरीय नियम की प्रतीति कराते हैं॥ २॥

Pupil—I am commanded by his reverence Kaṇva, who has returned from his piligrimage, to assertain the time. Going out into the open air, I shall just observe as to how much of the night remains. *(Going round and observing)* Oh! it is dawn. For—

On one side the lord of the herbs (the moon) descerds to the peak of the setting mountain; on the other rises the sun, who has manifested Aruṇa, his forerunner. By the simultaneous fall and rise of the two luminaries, the world is as though instructed in the various changes of its condition. (2)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वतीयं दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनेन दुःखानि नूनमतिमात्रदुरुद्वहानि॥ ३॥

समानकाले एव, व्यसनोदयाभ्याम्=अस्तोदयाभ्याम् (विपत्सम्पद्भ्याञ्च), एषः लोकः=भुवनः (सर्वोऽपि जनः), दशान्तरेषु=सुखदुःखात्मकावस्थाविशेषेषु, नियम्यते एव=शिक्ष्यत एव। अत्र यथासंख्या दृष्टान्तश्चालङ्कारौ, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २॥

भावार्थः—चन्द्राकौं स्वकीयास्तोदयाभ्यां सूचयतः यत् सर्वेषामेवेत्थं क्षयोदयौ स्तः। न कोऽप्यत्र बहुकालस्थायीति। स्वस्वसम्पत्तिविपत्तिदशायां हर्षशोकाभ्यां वैवश्यं मा भूदिति चन्द्रार्काभ्यां सूच्यत एवेति भावः॥ २॥

अपि च=अन्यच्च—

अन्वयः—शशिनि अन्तर्हिते संस्मरणीयशोभा सैव इयं कुमुद्वती दृष्टिं न नन्दयति। (तथाहि) नूनम् अबलाजनेन इष्टप्रवासजनितानि दुःखानि अतिमात्रं दुरुद्वहानि॥ ३॥

अन्तरिति। शशिनि=चन्द्रमसि, अन्तर्हिते=अन्तर्धानं गते, संस्मरणीया=सम्यक् स्मरणार्हा, शोभा=सौन्दर्यं, यस्याः सा संस्मरणीयशोभा=विनष्टकान्तिः, सैव=या पूर्वं कुसुमादयासीत् उत सुमनसम्पद्वैशिष्ट्याद् दर्शनीयशोभाऽऽसीत् सैव, इयं कुमुद्वती=कुमुदिनी, दृष्टिं=नेत्रं, न नन्दयति=न प्रीणयति। (तथाहि) नूनम्=निश्चितम्, अबलाजनेन=नारीजनेन (जनशब्देन जातिमात्रस्य ग्रहणम्), इष्टस्य=भर्तुः (वल्लभस्य), प्रवासेन=देशान्तरगमनेन, जनितानि=उत्पादितानि, इष्टप्रवासजनितानि, दुःखानि, अतिमात्रम्=अत्यन्तमेव, दुरुद्वहानि=दुःसहानि भवन्तीति शेषः। अत्र केचित् कौ=पृथिव्यां मुद्वती=हर्षयुक्ता, सैव=शकुन्तला एव, शशिनि=लक्षणया चन्द्रसदृशे, अथवा चन्द्रवंशोद्भवत्वात् शशिनि=दुष्यन्ते, अन्तर्हिते=असन्निहिते, सति, संस्मरणीयशोभा=विरहपीडया विगतकान्तिः, दृष्टिं न नन्दयति=प्रीणयति। अत्र पूर्वार्धे समासोक्तिः, उत्तरार्द्धे तु काव्यलिङ्गम्, इत्येतेषाम् अङ्गाङ्गिभावेन साङ्कर्यम्। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ३॥

भावार्थः—शशिनि अन्तर्हिते संस्मरणीयशोभा कुमुद्वती या पूर्वं विकसितकुसुमा, दर्शनीयशोभाऽऽसीत्, सैव अधुना दृष्टिं न प्रीणयति। अबलाजनेन इष्टप्रवासजनितानि दुःखानि अत्यन्तमेव दुःसहानि भवन्ति अत एव चन्द्रवंशीयदुष्यन्ते असन्निहिते सति संस्मरणीयशोभा शकुन्तलापि इदानीं दृष्टिं न नन्दयति॥ ३॥

और भी—चन्द्रमा के अस्त हो जाने से कुमुदिनी का वह सौन्दर्य जो चन्द्र की विद्यमानता में अतीव आह्लादक था—अब मात्र स्मरण करने की वस्तु रह गया है और अब वह नेत्रों को आनन्दित नहीं करती। वस्तुतः अपने प्रिय के विरह का दुःख स्त्रियों के लिए निश्चय ही अतीव दुःखदायी होता है॥ ३॥

Moreover—

The moon having disappeared, the same lotus-plant, whose beauty has now become an object of memory only, no longer pleases my sight. The sorrows of women, produced by the separation of loved persons, are indeed, beyond measure, very hard to bear. (3)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या
दार्भं मुञ्चत्युटजपटलं वीतनिद्रो मयूरः।
वेदिप्रान्तात् खुरविलिखितादुत्थितश्चैष सद्यः
पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वाङ्गमायच्छमानः॥४॥

अपि च=किञ्च—

अन्वयः—अग्रसन्ध्या कर्कन्धूनाम् उपरि (पतित्वा स्थितमिति शेषः) तुहिनं रञ्जयति, (तथा) वीतनिद्रः मयूरः दार्भम् उटजपटलं मुञ्चति। (तथा) खुरविलिखितात् वेदिप्रान्तात् उत्थितः एषः हरिणश्च सद्यः स्वाङ्गम् आयच्छमानः पश्चात् उच्चः भवति॥४॥

कर्कन्धूनामिति। अग्रा चासौ सन्ध्येति अग्रसन्ध्या=प्रातःसन्ध्या, कर्कन्धूनाम्=बदरीणाम् (तत्पत्राणामित्यर्थः), उपरि=पतित्वा स्थितम्, तुहिनम्=हिमम्, रञ्जयति=स्वकीयरक्तवर्णत्वेन सरागीकरोति, तथा—वीता=विगता, निद्रा यस्य सः वीतनिद्रः, मयूरः, दार्भं=दर्भैः=कुशैर्निर्मितम्, उटजस्य=पर्णशालायाः, पटलम्=आच्छादनं, उटजपटलं, मुञ्चति=त्यजति। प्रभातागमनमवलोक्य उटजपटलं परित्यज्य भूमिमवरोहति। तथा खुरविलिखितात्=अल्पखनितात् (निद्रितदशायां क्षुण्णात्), वेदिप्रान्तात्=वेदिपरिसरप्रान्तदेशात्, उत्थितः एष हरिणश्च, सद्यः=तत्कालम्, उत्थानक्षणे एव, स्वाङ्गं=निजशरीरावयवम्, आयच्छमानः=प्रसारयन् सन्, पश्चात्=तदनन्तरम् (अपरकाय-प्रदेशे), उच्चः=दीर्घदेहो भवति। अत्र स्वभावोक्तिः उत्तरार्द्धे, प्रथमार्द्धे तु तद्गुणालङ्कारः, मन्दाक्रान्ता वृत्तम्॥४॥

भावार्थः—प्रभाते प्रातःकालीनसन्ध्या बदरीणामुपरिस्थितं हिमं रञ्जयति, वीतनिद्रमयूरः कुशनिर्मितमुटजाच्छादनं परित्यज्य भूमिमवरोहति तथा निद्रितदशायां क्षुण्णात् वेदिपरिसरप्रान्तदेशात् उत्थित एष हरिणश्च उत्थानक्षणे एव स्वकीयशरीरावयं प्रसारयन् सन् पश्चात् उच्चैर्भवति। एभिर्लक्षणैर्ज्ञायते यत् प्रभाता रजनी इति पूर्वेण सहान्वयः॥४॥

इसके अतिरिक्त भी—

प्रातःकालीन सन्ध्या बेर की पत्तियों पर पड़ी हुई ओस की बूँदों को अपने रंग में रंग रही है। मयूर जागकर कुशनिर्मित कुटीर की छत से नीचे उतर आया है और यह हरिण भी अपने खुर से खुदी हुई वेदी के पार्श्वभाग से उठकर तथा तत्काल अपने अङ्गों को बढ़ाकर (अंगड़ाई लेकर) फिर खड़ा हो रहा है॥४॥

And also—

The dawn dying the drops of mist, fallen on the leaves of the jujube tree. The awakened peacock getting down from the roof of cottage made of kuśa grass and the deer also, rising up from the earth anointed with his own hoof or from the nearor portion of an altar which is anointed with his own hoof immediately extending the limbs of his body and then elevating as it is (all these show that the dawn has come) (4)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च—

पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः
क्रान्तं येन क्षयिततमसा मध्यमं धाम विष्णोः।
सोऽयं चन्द्रः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखै-
रत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा ॥ ५ ॥

अनसूया—(अपटीक्षेपेण प्रविश्य) एव्वं णाम विसअपरम्मुहस्स जणस्स ण णिपडिदं, जधा तेण रण्णा सउंतलाए अणज्जं आचरिदं त्ति। [एवं नाम विषयपराङ्मुखस्य जनस्य न निपतितम्, यथा तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितमिति।]

अन्वयः—क्षयिततमसा येन क्षितिधरगुरोः सुमेरोः मूर्ध्नि पादन्यासं कृत्वा विष्णोः मध्यमं धाम क्रान्तम् अयं च चन्द्रः अल्पशेषैः मयूखैः गगनात् पतति। (तथाहि) महतामपि अत्यारूढिः अपभ्रंशनिष्ठा भवति ॥ ५ ॥

पादेति। क्षयितानि=विनाशितानि, तमांसि=तिमिराणि शत्रुसैन्यानि च येन, तेन क्षयित-तमसा, येन=चन्द्रेण केनचित् राज्ञा वा, क्षितिं धरतीति क्षितिधरः, क्षितिधरेषु=पर्वतेषु राजसु च, गुरोः=श्रेष्ठस्य प्रभावशालिनश्च, क्षितिधरगुरोः, सुमेरोः=तन्नामकपर्वतस्य कस्यचित् राज्ञश्च मूर्ध्नि= मस्तके शिखरे च, पादन्यासं=किरणपातं चरणनिक्षेपञ्च, कृत्वा=विधाय, विष्णोः=त्रिविक्रमस्य तद्वत् प्रभावशालिनः नृपतिविशेषस्य च, मध्यमं धाम=मध्यमविक्रमाक्रान्तं गगनं, राजधानीमध्यस्थित-मन्तःपुरभवनञ्च, क्रान्तम्=व्याप्तम्, स्वायत्तीकृतञ्च, अयं=पुरःस्थितः, स चन्द्रः=रजनीशः, अल्पाः शेषाः येषां तैः अल्पशेषैः=अल्पमात्रावशिष्टैः, मयूखैः=किरणैः, गगनात्= आकाशात् स्वस्थानात् च, पतति=अस्तं याति, भ्रश्यति च। तथाहि—महतामपि=उन्नतानामपि जनानाम्, अत्यारूढिः= दूरारोहणम्, अपभ्रंशः=पतनमेव, निष्ठा=अन्तःदशा, यस्याः सा अपभ्रंशनिष्ठा भवति। न कोऽपि चिरावस्थानाय भवतीति भावः। अत्र समासोक्तिरलङ्कारः। मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ॥ ५ ॥

भावार्थः—क्षयिततमसा येन चन्द्रेण पर्वतश्रेष्ठस्य सुमेरोः पर्वतस्य मूर्ध्नि पादन्यासं कृत्वा विष्णोः मध्यमविक्रमाक्रान्तं गगनं क्रान्तं सैवायं चन्द्रः, अल्पशेषैर्मयूखैः गगनात् पतति अस्तं याति। तथाहि-उन्नतानामपि जनानां दूरारोहणम् अपभ्रंशनिष्ठा (पतनमेव अन्तःदशा) भवति। अत्युच्छ्रितो न कोऽपि चिरावस्थानाय भवतीति भावः ॥ ५ ॥

जिसने अन्धकार को नष्ट कर पर्वतश्रेष्ठ सुमेरु के शिखर पर अपनी किरणें डालकर सारे आकाश पर अधिकार जमा लिया था, वही चन्द्रमा अब अपनी थोड़ी-सी किरणों के साथ आकाश से गिर रहे हैं। प्रायः बड़े व्यक्ति भी जब उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं तब उनका भी पतन होता ही है ॥ ५ ॥

अनसूया—(बिना परदा हटाये—प्रविष्ट होकर) एक विषय से निवृत्त व्यक्ति के

The moon, who occupied the whole sky, by throwing its rays on the peak of great mountain Sumeru, now falling down with its remaining few rays. Even the greatone's when they reach to the hight of their progress, then the fall takes place in their life too, for it is but natural. (5)

Anasūyā*—*(Without removing curtain, entering) The person

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिष्यः—यावदुपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि। (इति निष्क्रान्तः)

अनसूया—णं पहादा रअणी। ता सिग्घं सअणं परिच्चआमि। अथवा लहु लहु उत्थिदावि किं करिस्सं, ण मे उइदेसु पदाहकरणीएषु हत्थपाआ प्पसरंति। कामो दाणिं सकामो भोदु। जेण असच्चसंधे जणे पिअसही सुद्धहिअआ पदं कारिदा।[ननु प्रभाता रजनी। तत् शीघ्रं शयनं परित्यजामि। अथवा लघु लघु उत्थितापि किं करिष्यामि। न मे उचितेषु प्रभात-करणीयेषु हस्तपादं प्रसरति। काम इदानीं सकामो भवतु, येन असत्यसन्धे जने प्रियसखी शुद्धहृदया पदं कारिता।

अनसूया—(अपटीक्षेपेण=जवनिकामनपसार्य, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) नाम=इति दुष्यन्तकुत्सने, विषयपराङ्मुखस्य—विषयाः=इन्द्रियेभ्यः भोक्तव्या अर्थाः, तेभ्यः पराङ्मुखस्य=विमुखस्य, जनस्य=मादृशस्य तापसजनस्य, सम्बन्धे, एवम्=इत्थं सदाचरणम्, इत्थं दुःखं वा, न निपतितम्=कदाचिदपि नोपस्थितम्, यथा=येन रूपेण, तेन राज्ञा दुष्यन्तेन, अनार्य्यम्=निन्द्यम्, आचरितम्=अनुष्ठितम्। (यतः स तथा प्रतिज्ञाय स्वान्तःपुरं प्राप्यैनां न स्मरति।)

शिष्यः—(स्वकर्त्तव्यं विचार्य शिष्यः कथयति) यावदित्यवधारणे, होमवेलां=होमवेला उपस्थितेति, गुरवे=कण्वे, निवेदयामि। (इति=एवमुक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः)

अनसूया—नन्विति निश्चयेन, प्रकृष्टं भातं=प्रकाशः, यस्याःसा प्रभाता=अल्पावशेषा, रजनी=रात्रिः, तत्=तस्मात् प्रभातत्वेनैव हेतुना, शीघ्रम्=त्वरितमेव, शय्यतेऽस्मिन्निति शयनं=शय्याम्, परित्यजामि। अथवा—लघु-लघु=शीघ्रम्, उत्थितापि=शयनादुत्थितापि, किं करिष्यामि= असामर्थ्याद्धेतोः न किमपि करिष्यामि। (यतः) मे=मम, उचितेषु=अभ्यस्तेषु, प्रभातकरणीयेषु= प्रातःकृत्येषु, हस्तौ च पादौ चेति हस्तपादं न प्रसरति=न प्रचलति। कामः=स्मरः, इदानीम्=अधुना, सकामः=पूर्णमनोरथः, भवतु (कामस्य वामस्वभावत्वात् तस्यैवाभिलाषः पूर्य्यतामिति भावः)।

साथ कभी ऐसा होता नहीं देखा गया—जैसी दुष्टता उस राजा ने शकुन्तला के प्रति की है। (जैसी दुष्टता उस राजा ने शकुन्तला के साथ की है वैसी कभी विषयवासना से दूर व्यक्ति के साथ कभी किसी ने नहीं की होगी।)

शिष्य—तो चलूँ, होम का समय हो गया है, इसकी सूचना गुरुजी को दूँ। (चला जाता है)

अनसूया—अच्छा, तो दिन निकल आया। अतः मैं भी शीघ्र बिस्तर छोड़ देती हूँ। अथवा इतनी जल्दी उठकर भी क्या कर लूँगी; क्योंकि नित्य किये जाने वाले कामों के लिए भी मेरे हाथ-पाँव नहीं फैल (हिलडुल) रहे हैं। कामदेव की इच्छा पूरी हो, जिसने सरल स्वभाववाली मेरी सखी को एक झूठ बोलने वाले व्यक्ति के हाथों सौंप दिया है।

---

who is away from worldly pleasurs, never face such sufferings, as that king behaved unsocial in case of Śakuntalā.

Pupil—I will just inform the teacher the time of sacrifice is come. (Exit)

Anasūyā—Oh, the morning has come, so I shall leave the bed immediately although, quickly awaken, what shall I do? My hands and feet move not readily to the usual occupations of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(स्मृत्वा) अथवा ण तस्स राएसिओ अवराहो, दुव्वासासावो क्खु एसो पहवदि। अण्णधा कधं सो राएसी तादिसाइं मंतिअ एत्तिअस्स कालस्स वात्तामात्तं पि ण विसज्जेदि। **अथवा न तस्य राजर्षेरपराधः, दुर्वासःशापः खल्वेष प्रभवति। अन्यथा कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वा एतावतः कालस्य वार्त्तामात्रमपि न विसर्जयति।**

(विचिन्त्य) ता इदो अहिण्णाणं अंगुलीअअं से विसज्जेम। अथवा दुक्खसीले तवस्सिजणे को अब्भत्थीअदु। णं सहीगामी दोसो त्ति व्ववसाइदुं पि ण पारेम्ह। तादकण्णस्स वा प्पवासपडिणिउत्तस्स दुस्संतपरिणीदं आवण्णसत्तं सउंतलं णिवेदिदुं। ता एत्थ दाणिं किं णु क्खु अम्हेहिं करणिज्जं। **तदितोऽभिज्ञानमङ्गुरीयकं विसर्जयामः। अथवा दुःखशीले तपस्विजने कः अभ्यर्थताम्। ननु सखीगामी दोष इति व्यवसाययितुमपि न पारयामः। तातकण्वस्य वा**

येन=कामेन हेतुना वा, असत्या सन्धा=प्रतिज्ञा, यस्य तस्मिन् असत्यसन्धे=मिथ्याप्रतिज्ञे, जने=दुष्यन्ते, शुद्धहृदया=सरलचित्ता, प्रतारणादिदोषरहिता, प्रियसखी=शकुन्तला, पदं=स्थानं व्यवसायं वा, कारिता (एष एव कामस्याभिलाष आसीदिति भावः।)

(स्मृत्वा=विचार्य्य) अथवा न=नैव, तस्य राजर्षेः=दुष्यन्तस्य, अपराधः=दोषः, खल्विति निश्चये, एषः=दृश्यमानः दुःखः, दुर्वाससः=तन्नामकस्य रोषमूर्तेः, शापः=अभिशापः, प्रभवति=प्रभुर्भवति (स्वसामर्थ्यमाविष्करोति), अन्यथा, कथं=केन प्रकारेण, स राजर्षिः=दुष्यन्तः, तादृशानि='शीघ्रमेव त्वामितो नेष्यामि' इत्यादि, मन्त्रयित्वा=कथयित्वा, एतावतः कालस्य=एतावन्तं कालमभिव्याप्येत्यर्थः, वार्तामात्रमपि=कुशलादिवृत्तान्तमपि, न विसर्जयति=अत्राश्रमपदे न प्रेषयति। (दुर्वासःशापहेतुकमेव तस्य राजर्षेर्विस्मरणमिति नास्त्यत्र तस्यापराध इति।)

(विचिन्त्य=स्मृत्वा) तत्=तस्मात्, इतः=आश्रमात्, अभिज्ञायतेऽनेनेति अभिज्ञानम्=स्मृतिचिह्नम्,अङ्गुरीयकम्=अङ्गुलीयम्, विसर्जयामः=तस्य राजर्षेः समीपे प्रेषयामः (तामवलोक्य प्रियसखीं स्मरिष्यतीति भावः)। अथवा, दुःखशीले=सर्वदा तपःक्लेशपरायणे, तपस्विजने= दुःख-शीलेषु=तपस्विजनेषु मध्ये, कः=तपस्विजनः, अभ्यर्थताम्=राजान्तिके प्रेषणाय प्रार्थ्यताम् (तपोऽनुष्ठानं त्यक्त्वा न कोऽपि गच्छेदिति भावः)। नन्वित्यवधारणे, दोषः अपराधः, सखीगामी=

(स्मरण करके) अथवा उस राजा का कोई अपराध नहीं है, यह सब दुर्वासा के शाप का ही प्रभाव है। यदि ऐसा न होता तो वह राजर्षि इस प्रकार (भरोसे की बातें) कहकर क्या इतना समय बीत जाने पर अपना कोई समाचार तक न भेजता?

(विचार कर) तो क्यों न स्मृतिचिह्नरूपा इस अंगूठी को वहाँ भेज दें। अथवा दुःखी (तप में संलग्न) तपस्विजनों के लिए किसके पास प्रार्थना की जाये। 'यह हमारी सखी

---

the morning. Let the God of love now enjoy his triumph, who persuaded simple girl to repose confidence in that perfidious man.

(Remembering) Or does the imprecation of Durvāsā's curse the change? How else could the good king say such (pleasent) thing and then not send so much as a letter or message for such a long time.

(Thinking) Therefore we must send him from here the ring (which) he has left as a token. And who, among the ascetics inured

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्। तदत्र इदानीं किन्नु खलु अस्माभिः करणीयम्।]

प्रियंवदा—(प्रविश्य) अणसूए! तुवर तुवर सउंतलाए पत्थाणकोदूहलं णिव्वत्तिदुं। [अनसूये! त्वरस्व त्वरस्व शकुन्तलायाः प्रस्थानकौतूहलं निर्वर्त्तयितुम्।]

अनसूया—(सविस्मयम्) सहि! कधं विव? [सखि! कथमिव?]

प्रियंवदा—सुणाहि, दाणिं ज्जेव सुहसुत्तिआपुच्छणणिमित्तं सउंतलाए सआसं गदम्हि। [शृणु, इदानीमेव सुखसुप्तिकाप्रच्छननिमित्तं शकुन्तलायाः सकाशं गतास्मि।]

शकुन्तलागतः (अज्ञातचरित्रे पुंसि शकुन्तला कथमात्मानं समर्पितवतीत्यपराधः), इति व्यवसाय-यितुम्=अवधारयितुमपि, न पारयामः=न शक्नुमः। वा=अथवा, तातकण्वस्य=महर्षेः कण्वस्य, प्रवासात्=सोमतीर्थादिति, प्रतिनिवृत्तस्य=प्रत्यागतस्य, दुष्यन्तेन परिणीताम्=ऊढाम्, आपन्नं=गर्भे प्राप्तं, सत्त्वं=जन्तुः, यया ताम् आपन्नसत्त्वाम्=गर्भवतीम्, शकुन्तलाम्, निवेदयितुम्= सूचयितुम्, ज्ञापयितुम् (लज्जाशङ्काभ्यामिति भावः), तत्=तस्मात्, अत्र=अस्मिन् विषये प्रकरणे किन्नु खलु करणीयम्=किं विधेयमस्माभिः (न किमपि कर्तव्यमस्तीति प्रतिपत्तिमूढाः स्म इति भावः)।

प्रियंवदा—(प्रविश्य=प्रवेशं कृत्वा) त्वरस्व त्वरस्व इति हर्षात् सम्भ्रमे वीप्सा, शकुन्त-लायाः=अस्माकं प्रियसख्याः, प्रस्थाने=पतिगृहगमनकाले, यत् कौतूहलं=कौतुककरमाङ्ग-लिकाचारः, प्रस्थानकौतूहलम्, तत् निवर्तयितुम्=सम्पादयितुम्।

अनसूया—(सविस्ययम्=साश्चर्यम्) सखि! कथमिव=कथमेतत्?

शकुन्तला का दोष है' यह निर्णय कर पाना भी हमारे लिए कठिन ही है। इधर यात्रा से लौटे हुए तात कण्व को यह बताना भी कठिन है कि शकुन्तला दुष्यन्त से विवाह कर गर्भवती हो चुकी है। इस स्थिति में अब हमें क्या करना चाहिए? (यह निर्णय न कर पाने के कारण हम किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी हो गई हैं।)

प्रियंवदा—(प्रवेशकर) अनसूया! शकुन्तला की विदाई का मंगल कार्य पूरा करने के लिए शीघ्रता करो, शीघ्रता करो।'

अनसूया—(आश्चर्यपूर्वक) सखि! कैसे?

प्रियंवदा—सुनो, अभी-अभी मैं शकुन्तला को सुखपूर्वक नींद आई या नहीं यह जानने के लिए शकुन्तला के पास गई थी।

---

to hardship, should be implored? And because the blame lies with my friend, I can not, although I have made up my mind, summon up courage to tell father Kaṇva, who has returned from his pilgrimage that Śakuntalā is married to Duśyanta and is pregnant. What shall we do then under the circumstances?

Priyaṁvadā—(Entering) Hasten my dear, hasten to perform the festive solemnities at Śakuntalā's departure.

Anasūyā—(Surprisingly) How is this, my dear?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—तदो तदो ? [ततस्तः ?]

प्रियंवदा—तदो णं लज्जावणदमुहीं परिस्सइअ सअं तादकण्णेण एव्वं अहिणंदिदं, 'वच्छे! दिट्ठिआ धूमोवरुद्धदिट्ठिणो वि जजमाणस्स पावअस्स ज्जेव मुहे आहुदी णिपडिदा, सुसिस्सपरिदिण्णा विअ विज्जा असोअणीआसि मे संवुत्ता। अज्ज ज्जेव तुमं इसिपरिरक्खिदं कारिअ भत्तुण्णो सआसं विसज्जेमि त्ति। [तत एनां लज्जावनतमुखीं परिष्वज्य स्वयं तातकण्वेन एवमभिनन्दितम्—'वत्से! दिष्ट्या धूमोपरुद्धदृष्टेरपि यजमानस्य पावकस्यैव मुखे आहुतिर्निपतिता, सुशिष्यपरिदत्तेव विद्या अशोचनीयासि मे संवृत्ता। अद्यैव त्वाम् ऋषि-परिरक्षितां कृत्वा भर्त्तुः सकाशं विसर्जयामि।]

प्रियंवदा—शृणु=आकर्णय, इदानीमेव=अधुनैव, सुखसुप्तिका=सुखेन निद्रा, तस्याः प्रच्छननिमित्तम्=जिज्ञासार्थम्, शकुन्तलायाः, सकाशं=समीपं, गतास्मि।

अनसूया—ततस्ततः=तदा किमभूत् ?

प्रियंवदा—ततः=तदा, लज्जावनतमुखीं=लज्जया अधोवदनाम्, एनां=शकुन्तलाम्, परिष्वज्य=आलिङ्ग्य, तातेन=पित्रा, कण्वेन=तन्नामककुलगुरोः, स्वयमात्मना एव, एवम्=वक्ष्यमाणरूपम्, अभिनन्दितम्=सानन्दं प्रशंसितम्, वत्से=पुत्रि! दिष्ट्या=भाग्येन, धूमोपरुद्धदृष्टेः—धूमेन=यज्ञीयधूमेन, उपरुद्धा=व्याहता, दृष्टिः=दर्शनक्रिया, यस्य तस्य, यजमानस्य=होमकर्त्तुः, आहुतिः=हवनीयपदार्थम्, पावकस्यैव=हुतवहस्यैव, मुखे=मुखभागे (हवनकुण्डे), पतिता, शोभनः=शमदमादिगुणसम्पन्नः, शिष्य इति सुशिष्यस्तस्मै परिदत्ता=अर्पिता, विद्या=ज्ञानमिव (त्वम्), मे=मम, अशोचनीया=न दुःखहेतुका, (इति) संवृत्तासि=जानासि। (अत एव) अद्यैव=

अनसूया—तब फिर क्या हुआ ?

प्रियंवदा—तब लज्जा से सिर झुकाये (खड़ी) शकुन्तला का आलिंगन करते हुए पिता कण्व ने (उसके कार्य का) अभिनन्दन करते हुए कहा—'पुत्री! हवनीय धूम से रुँधि हुई दृष्टि वाले यजमान की आहुति (इधर-उधर न गिरकर) अग्नि के मुख में ही पड़ी है। सुयोग्य शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम मेरे लिए अब चिन्ता का कारण नहीं रही हो (अर्थात् तुम्हें सुयोग्य पात्र के हाथ गया हुआ देखकर मैं निश्चिन्त हो गया हूँ)। आज ही मैं तुम्हें ऋषियों के संरक्षण में तुम्हारे पति के पास पहुँचा दूँगा।

Priyaṁvadā—Hear me, I just went to Śakuntalā to find out if she had slept comfortably.

Anasūyā—What happened next?

Priyaṁvadā—Then father Kaṇva on his own accord embraced her, while she hung her head in shame, congratulated her thus "O' my child! the offering of that sacrificer fell directly into the mouth of the fire, whose sight was impeded by the smoke. Like knowledge imparted to an excellent pupil thou art not to be sorrowed for. Today only I will send you to your husband escorted by hermits.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—सहि! केण उण आचक्खिदो तादकण्णस्स अअं वुत्तंतो? [सखि! केन पुनराख्यातस्तातकण्वस्यायं वृत्तान्तः ?]

प्रियंवदा—अग्गिसरणं पविट्ठस्स किल सरीरं विणा छंदोमईए वाआए। [अग्निशरणं प्रविष्टस्य किल शरीरं विना छन्दोमय्या वाचा।]

अनसूया—(सविस्मयम्) कधं विअ। [कथमिव ?]

प्रियंवदा—सुणाहि। [शृणु।] (संस्कृतमाश्रित्य)

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥ ६॥

अस्मिन्नेव दिवादिने, त्वाम्, ऋषिभिः=सहगामिऋषिभिः (शार्ङ्गरवादिभिः), परिरक्षिताम्=उपगूढां तत्सहायां वा, भर्त्तुः=स्वामिनः, सकाशं=समीपम्, विसर्जयामि=प्रेषयामि।

अनसूया—सखि! पुनः=किन्तु, (कथय) केन=जनेन, तातकण्वस्य कृते, आख्यातः= उक्तः, अयं वृत्तान्तः=शाकुन्तलेयवृत्तः।

प्रियंवदा—अग्निशरणम्=अग्निहोत्रगृहम्, प्रविष्टस्य=प्रयातस्य, किलेति श्रुतवार्त्तायाम्, शरीरं विना=अशरीरिण्या, छन्दोमय्या=छन्दः=वृत्तं, तन्मय्या=पद्यात्मिकया, वाचा=वाक्येन (आख्यातोऽयं वृत्तान्त इत्यनेन पूरणीयम्)।

अनसूया—(सविस्मयम्=साश्चर्यम्) कथमिव=कीदृशमिव (शरीरादेव वाक् प्रत्यक्षी-भवति अत्र तु न तथेत्याश्चर्येण सहितमिति भावः)।

प्रियंवदा—शृणु=आकर्णय (संस्कृतम्=देववाणीम्, आश्रित्य=अवलम्ब्य)—

अन्वयः—ब्रह्मन् दुष्यन्तेन आहितं तेजः भुवः भूतये दधानां तनयाम् अग्निगर्भां शमीमिव अवेहि॥ ६॥

दुष्यन्तेनेति। ब्रह्मन्=हे विप्र (कण्व)! दुष्यन्तेन=तन्नामकराज्ञा, आहितम्=निषिक्तम्, तेजः=रेतः, भुवः=पृथिव्याः, भूतये=अभ्युदयाय, दधानां=धारयन्तीम्, तनयाम्=शकुन्तलाम् (तनोति

अनसूया—सखी! आखिर यह समाचार पिता कण्व को किसने सुनाया?

प्रियंवदा—जब वे यज्ञशाला में बैठे थे, उसी समय छन्दोबद्ध आकाशवाणी ने कहा था—

अनसूया—(आश्चर्यपूर्वक) अशरीरी नभोवाणी ने कैसे?

प्रियंवदा—सुनो (संस्कृत का सहारा लेकर)—

हे ब्रह्मन्! जिसके भीतर अग्नि छिपी रहती है उसी शमी वृक्ष के समान आप की

Anasūyā—But who told father Kaṇva, about it?

Priyaṁvadā—An incorporeal metrical speech, when he had entered the fire-sanctuary.

Anasūyā—*(Astonished)* How it happened?

Priyaṁvadā—Hear me *(Adopting Sanskrit)*—

Know, Brāhmaṇa, that your daughter bears, for earth's

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—(प्रियंवदामाश्लिष्य) सहि! पिअं मे पिअं। किंतु अज्ज ज्जेव सउंतला णीअदि त्ति उक्कंठासाहारण्णं परिदोषं अणुभवेमि। [**सखि! प्रियं मे प्रियम्। किन्तु अद्यैव शकुन्तला नीयत इति उत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि।**]

प्रियंवदा—सहि! अम्हे कधं पि उक्कंठां विणोदइस्सामो, सा दाणिं तवस्सिणी णिव्वुदा होदु। [**सखि! वयं कथमपि उत्कण्ठां विनोदयिष्यामः, सा इदानीं तपस्विनी निर्वृता भवतु।**]

कुलमिति तनया, तां तनयाम्=कन्याम्), अग्निःगर्भे=अभ्यन्तरे, यस्यास्ताम् अग्निगर्भाम्, शमीमिव=शमीवृक्षमिव, अवेहि=जानीहि। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः ॥ ६ ॥

भावार्थः—हे ब्रह्मन्! तव प्रभावादेवास्य मनोरथस्य सिद्धिः। यतः सोमवंशोद्भवेन अमितगुणशालिना राज्ञा दुष्यन्तेन तव दुहितायाः गर्भे निषिक्तं शुक्रं पृथिव्याः भूतये एवास्ति। ('अष्टाभिश्च सुरेन्द्राणाम्' इत्यादि स्मृत्युक्तनृपशुक्रस्यान्वर्थकत्वात् भुवो भूतये एवेति भावः।) तं शुक्रं स्वगर्भे दधानामात्मजां स्वकीयां यज्ञकर्मणि प्रयोज्याम् अग्निगर्भां शमीमिव अवेहि। यथासमये सा पृथिव्याः भूतये महत्तमं पुत्रं जनयिष्यतीति भावः ॥ ६ ॥

अनसूया—(प्रियंवदाम्=तन्नामकप्रियसखीम्, आश्लिष्य=आलिङ्ग्य) सखि! प्रियं मे प्रियम्=इदम् इति अतीवानन्ददायकं वृत्तं त्वया अभिहितम् इति भावः। किन्तु=कश्चिद्विशेषोऽस्तीत्यर्थः, अद्य=अस्मिन्नेव दिवसे, एव इत्यवधारणे, शकुन्तला नीयते=पतिगृहं प्राप्यते ऋषिभिः, इति=अस्माद्धेतोः, उत्कण्ठया=विषादेन (वियोगभयेनेति यावत्), साधारणम्=समानम् (उत्कण्ठासहितमिति भावः), परितोषम्=आनन्दम् (शकुन्तलायाः प्रियसमागमो भविष्यतीति बुद्ध्येति भावः), अनुभवामि=भुञ्जे। (शीघ्रमेव भर्तृसङ्गता सती विरहदुःखात् निर्वृत्ता भविष्यतीत्यनुभवन् आनन्दिताऽस्मीति भावः।)

प्रियंवदा—सखि! वयम्, कथमयि=केनापि प्रकारेण, उत्कण्ठां=प्रियसखीवियोगजनितं

कन्या ने संसार के कल्याण के लिए दुष्यन्त द्वारा निश्यूत तेज को अपने गर्भ में धारण किया है, इसे जान लीजिए ॥ ६ ॥

अनसूया—(प्रियंवदा का आलिंगन कर) सखी! यह बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ। किन्तु आज ही शकुन्तला को ले जाया जायेगा (यह जानकर) उत्कण्ठा के समान आनन्द का अनुभव करती हूँ।

प्रियंवदा—सखी! हम तो किसी प्रकार उसके वियोग-दुःख को सह लेंगी परन्तु इस वियोगिनी तपस्विनी को तो सुख मिले।

---

prosperity, the glorious seed implanted by Duṣyanta, as the Sami tree is pregnant with fire. (6)

Anasūyā—(Embracing Priyaṁvadā) I am so glad my dear, and yet my joy is mingled with sorrow when I think that Śakuntalā is going to be taken away by the sages to her husband's house only today.

Priyaṁvadā—Dear, any how we will dissipate all anxiety, but, let the grieved girl be made happy.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—तेन हि एदस्सिं चुअसाहावलंबिदे णारिएलसमुग्गए एदण्णिमित्तं ज्जेव मए कालहरणक्खमा केसरगुंडा णिक्खित्ता चिट्ठदि। ता इमं णलिणीवत्तसंगदं करेहि। जाव से अहं पि गोरोअणं तित्थमित्तिअं दुव्वाकिसलआइं मङ्गलसमालहणं विरएमि। [तेन हि एतस्मिन् चूतशाखावलम्बिते नारिकेलसमुद्गके एतन्निमित्तमेव मया कालहरणक्षमा केसर-गुण्डा निक्षिप्ता तिष्ठति। तदिमां नलिनीपत्रसङ्गतां कुरु। यावदस्या अहमपि गोरोचनां तीर्थमृत्तिकां दूर्वाकिसलयानि मङ्गलसमालम्भनं विरचयामि।]

(प्रियंवदा तथा करोति। अनसूया निष्क्रान्ता।)

(नेपथ्ये) गौतमि! आदिश्यन्तां शार्ङ्गरव-शारद्वतमिश्राः वत्सां शकुन्तलां नेतुं सज्जी-भवन्तु भवन्त इति।

विषादं (तज्जनितां मनोवेदनाम्), विनोदयिष्यामः=परिहरिष्यामः, (परन्तु येन केनापि उपायेन) इदानीम्=अधुना, तपस्विनी=प्रियवियोगार्त्ता, सा=शकुन्तला, निर्वृता=वल्लभसंयोगेन सुस्थिता, भवतु।

अनसूया—तेन हि=शकुन्तलायाः पतिगृहे गन्तव्यत्वेन हेतुना, एतस्मिन्=पुरोदृश्यमाने, चूतस्य=आम्रवृक्षस्य, शाखायामवलम्बिते=डोरकेण बध्वा स्थापिते, चूतशाखावलम्बिते, नारिकेल-समुद्गके=नारिकेलकपालरचितसम्पुटके, एतन्निमित्तमेव=शकुन्तलायाः पतिगृहे गमनकाले प्रसाधनार्थमेव, मया=अनसूयया, कालहरणक्षमा=दीर्घकालेनापि विकृतिमनापद्यमाना, केसर-गुण्डा=नागकेसरकुसुमरेणुः, निक्षिप्ता=स्थापिता, तिष्ठति=विद्यते। तदिमां=केसरगुण्डाम्, नलिनी-पत्रसङ्गतां=पद्मलतापत्रस्थाप्यां, कुरु=विधेहि। यावत्=यत्कालमभिव्याप्य, अस्याः= शकुन्तलायाः, सम्बन्धे, अहमपि, गोरोचनां=तिलकाद्यर्थां, तीर्थमृत्तिकाम्=गङ्गादितीर्थसम्भूतां मृदं, दूर्वाणां किसलयानि=पल्लवान् (यद्वा दूर्वाः किसलयानि=आम्रपल्लवानि चेति) दूर्वाकिसलयानि, मङ्गल-समालम्भनं=मङ्गलालङ्करणं, मङ्गलानुलेपनम्, विरचयामि=एकत्रीकरोमि।

(प्रियंवदा तथा करोति=केसरगुण्डां नारिकेलसमुद्गकादानीय नलिनीपत्रसङ्गता करोति। (अनसूया, निष्क्रान्ता=निर्गता, गोरोचनादिविरचनायेति भावः।)

अनसूया—यदि ऐसा है तो मैंने इस आम की शाखा में लटके हुए नारियल के खोल (आवरण) में इसी कार्य के लिए ही कई दिन पूर्व नागकेसर की पराग रख छोड़ी थी।. तुम अब उसे कमल के पत्ते पर रखो (तब तक मैं) इसके लिए गोरोचन, तीर्थ की मिट्टी और दूब के अङ्कुर आदि (से तैयार होने वाला) माङ्गलिक लेप तैयार करती हूँ।

(प्रियंवदा उसी प्रकार करती है। अनसूया का प्रस्थान)

Anasūyā—Well, then, in this cocoa-nut casket hanging on the branch of that mango tree. I have put a Kesara-dust which is capable of keeping fresh for a long time, with this very object. Therefore keep it in a lotus leaf, while I prepare, for her auspicious decorations such as yellow Orpiment, holy earth (clay) and Dūrvā-sprouts.

(Priyaṁvadā does as staled) (Anasūyā went out) (Behind the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—अणसूए! तुवर तुवर। एदे क्खु हत्थिणाउरगामिणो इसिओ सद्दाविअंति। [अनसूये! त्वरस्व त्वरस्व। एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दायन्ते।]

अनसूया—(समालम्भनहस्ता प्रविश्य) सहि! एहि गच्छम्ह। [सखि! एहि गच्छाव:।] (इति परिक्रामतः।)

प्रियंवदा—(विलोक्य) एसा सुज्जोदए किदमज्जणा पडिच्छिदणीवारभाअणाहिं सोत्थिवाअणिआहिं तावसीहिं अहिणंदीअमाणा चिट्ठदि सउंतला, ता उवसप्पह्माणं। [एषा सूर्योदये कृतमज्जना प्रतीष्ठनीवारभाजनाभिः स्वस्तिवाचनिकाभिः तापसीभिरभिनन्द्यमाना तिष्ठति शकुन्तला, तदुपसर्पाव एनाम्।] (इत्युभे तथा कुरुतः।)

(नेपथ्ये=परोक्षे) गौतमि! शार्ङ्गरवशारद्वतमिश्राः—शार्ङ्गस्य=शृङ्गरचितस्य चापस्य, रवः=शब्दः इव रवः=कण्ठध्वनिः, यस्य सः शार्ङ्गरवः=एतन्नामकः कण्वशिष्यः, शारद्वतः—तन्नाम्नः कस्यचिन्मुनेरपत्यं पुमान् शारद्वतः=एतन्नामकः कण्वशिष्यः, गौरादितास्त्वार्य्यमिश्रा इति भूरिप्रयोगः, आदिश्यन्ताम्=अनुमन्यन्ताम्, वत्सां=दुहितां, शकुन्तलाम्,. नेतुं=पतिगृहं प्रापयितुं, सज्जीभवन्तु= उद्युक्ता भवन्तु, भवन्तः गौरवार्थे बहुवचनम्।

प्रियंवदा—अनसूये! त्वरस्व-त्वरस्व=सम्भ्रमेण द्विर्वचनम्, खल्विति निश्चयेन, एते= दृश्यमानाः, हस्तिनापुरं गमिष्यन्तीति हस्तिनापुरगामिनः, ऋषयः=मुनयः, शब्दायन्ते=आहूयन्ते (कोलाहलं कुर्वन्ति)।

अनसूया—(समालम्भनहस्ता—समालम्भनम्=अलङ्करणादिकं, हस्ते यस्याः सा समालम्भनहस्ता, प्रविश्य=रङ्गे प्रवेशं विधाय) सखि! एहि=आगच्छ, गच्छावः=शकुन्तलामलङ्कर्तुं गच्छावः। (इति=इत्युक्त्वा, परिक्रामतः=सञ्चरतः।)

प्रियंवदा—(विलोक्य=दृष्ट्वा) एषा=दृश्यमाना, सूर्योदये=प्रभाते, कृतमज्जना—कृतं मज्जनं

(नेपथ्य में) गौतमी! शार्ङ्गरव-शारद्वत आदि ऋषियों से कहो कि आप लोग पुत्री शकुन्तला को ले जाने के लिए तैयार हो जायें।

प्रियंवदा—अनसूया! शीघ्रता कर, शीघ्रता कर, हस्तिनापुर जाने वाले ऋषि कोलाहल कर रहे हैं।

अनसूया—(अलङ्करण-सामग्री हाथ में लेकर प्रविष्ट होकर) सखी! चले चलें। (यह कहकर घूमती हैं)

प्रियंवदा—(देखकर) यह शकुन्तला सूर्योदय के समय स्नान करके बैठी है और

---

curtain) Gautamī! Let Śārṅgrava & Śāradvata be ordered to be ready to escort Śakuntalā.

Priyaṁvadā—Anasūyā! make haste, make haste. Here indeed the sages going to Hastinapura are making noise.

Anasūyā—(Entering with decorations in hand) Dear, come, let us go. ***(Both walk round)***

Priyaṁvadā—(Looking) Here stands Śakuntalā, who has bathed over head just at sun-rise and who is being congratulated

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टव्यापारा सपरिवारा शकुन्तला।)

शकुन्तला—भअवदीओ वंदामि। [भगवतीर्वन्दे।]

गौतमी—जादे! भत्तुणो बहुमाणसुहहेतुअं देवीसद्दं अहिगच्छ। [जाते! भर्त्तुर्बहुमान-सुखहेतुकं देवीशब्दमभिगच्छ।

तापस्यः—वरप्पसविणी होहि। [वीरप्रसविनी भव।]

(इत्याशिषो दत्त्वा गौतमीवर्जं सर्वा निष्क्रान्ताः।)

यया सा कृतमज्जना=कृतस्नाना, प्रतीष्ठनीवाराभिः=मङ्गलार्थं गृहीतमुनिधान्यतण्डुलाभिः, स्वस्ति-वचनेन कल्याणकरआशीर्वचनेन, संसृष्टा इति स्वस्तिवाचनिकास्ताभिः स्वस्तिवाचनिकाभिः, अभिनन्द्यमाना=आशिषा संवर्ध्यमाना, शकुन्तला तिष्ठति। तद्=तस्मात्, एनाम्=शकुन्तलाम्, उपसर्पावः। (इत्युक्त्वा, उभे=अनसूया-प्रियंवदे, तथा कुरुतः=उपगच्छतः।)

(ततः=तदनन्तरम्, यथानिर्दिष्टव्यापारा=कृतमज्जनाभिनन्दनादिक्रिया, सपरिवारा=तापसीभिः परिवृता, शकुन्तला प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

शकुन्तला—भगवतीः=युष्मान् तपस्विनीः, वन्दे=प्रणमामि।

गौतमी—जाते=वत्से! भर्त्तुः=पत्युर्दुष्यन्तस्य, बहुमानेन=अत्यादरेण, यत् सुखं तस्य हेतुकं भर्त्तुर्बहुमानसुखहेतुकं, देवीशब्दम्=देवीति संज्ञाम्, अभिगच्छ=लभस्व।

तापस्यः—वीरं=शूरं, प्रसोतुं शीलं यस्याः सा वीरप्रसविनी भव=शूरं तनयं जनयस्व।

इति=एवम्, आशिश्ने दत्त्वा, गौत्तमीं वर्ज्जयित्वेति=गौत्तमीवर्जं=गौत्तमीम् विहाय, सर्वा निष्क्रान्ताः=निर्गताः।

नीवार धान्य हाथ में लिये आशीर्वाद देने के लिए आयी हुई तापसियाँ उसका अभिनन्दन कर रही हैं। अतः चलो इसके पास चलें। (दोनों शकुन्तला के पास जाती हैं।)

(इसके पश्चात् यथोक्त कार्यरत शकुन्तला का परिवार सहित प्रवेश)

शकुन्तला—मैं आप सब देवियों को प्रणाम करती हूँ।

गौतमी—पुत्री! पति के आदर तथा सुख के कारणभूत (हेतुक) देवी संज्ञा को प्राप्त करो (पट्टमाहिषी बनो)।

तापसियाँ—वीर पुत्र की माता बनो।

(इस प्रकार आशीर्वाद दे कर गौतमी को छोड़कर अन्य सबका प्रस्थान।)

---

by the hermit-women, who possess wild rice placed in their hands and are pronouncing benedications. Let us approach her. *(They move near)*

(Then enters Śakuntalā engaged as described with some hermit women as her family)

Śakuntalā—I salute you all.

Gautamī—Daughter! may you obtain the title of "Great Queen" indicative of your husbands high esteem (of you).

Hermit-women—May you give birth to a hero.

(After bestowing blessings, exeunt all except Gautamī)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्यौ—(उपगम्य) सम्मज्जणं दे भूदं। [सम्मज्जनं ते भूतम्?]

शकुन्तला—साअदं पिअसहीणं? इदो णिसीदध। [स्वागतं प्रियसख्योः! इतो निषीदतम्।]

सख्यौ—(उपविश्य) हला! उज्जुआ दाव होहि, जाव दे मंगलसमालहणं करेम्ह। [हला! ऋजुका तावत् भव, यावत्ते मङ्गलसमालम्भनं कुर्वः।]

शकुन्तला—उइदं पिं एदं अज्ज बहु मणिदव्वं, जदो दुल्लहं दाव पुणो मे पिअसहीमंडणं भविस्सदि। [उचितमप्येतत् अद्य बहु मन्तव्यम्, यतो दुर्लभं तावत् पुनर्मे प्रियसखीमण्डनं भविष्यति।] (इति बाष्पं विसृजति।)

सख्यौ—सहि! ण जुत्तं मंगलकाले रोदिदुं। [सखि! न युक्तं मङ्गलकाले रोदितुम्।] (इत्यश्रूणि प्रमृज्य नाट्येन प्रसाधयतः।)

सख्यौ—(उपगम्य=पार्श्वे गत्वा) समज्जनं=सर्वौषधिजलेन मङ्गलार्थं स्नानम्, ते=तव, भूतम्=जातम्।

शकुन्तला—प्रियसख्योः=अनसूया-प्रियंवदयोः, स्वागतम्=शुभागमनम्, इतः=अस्मिन् स्थाने, निषीदतम्=उपविशतम्।

सख्यौ—(उपविश्य) हला=सखि! ऋजुका=अवक्रा, तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, भव, यावत्=यावत्कालमभिव्याप्य, ते=तव, मङ्गलसमालम्भनं=माङ्गलिकानुलेपनादिकं, कुर्वः।

शकुन्तला—उचितमपि=चिराभ्यस्तमपि, एतत्=भवत्कृतमण्डनम् अनुलेपनादिकं वा, बहुमन्तव्यम्=समादरणीयम्, यतः=यस्मात् हेतोः, मे=मम (सम्बन्धे), पुनः=भूयः, प्रियसखी-मण्डनम्=युष्मत्कर्तृकम् अलङ्करणं, दुर्लभं=दुष्प्रापं, भविष्यति। (इति बाष्पं विसृजति=रोदति।)

सख्यौ—सखि! मङ्गलकाले=पतिगृहे माङ्गलिकयात्राकाले, रोदितुम्=क्रन्दितुम्, न

सखियाँ—(पास आकर) तुम्हारा स्नान हो गया है क्या?

शकुन्तला—प्रिय सखियों का स्वागत है। आओ यहाँ बैठो।

सखियाँ—(बैठकर) सखी! जरा सीधी हो जाओ जिससे हम तुम्हारा माङ्गलिक अनुलेपन आदि कर दें।

शकुन्तला—यह उचित है, तथापि इसका मैं आज विशेष आदर करूँगी, क्योंकि आज के बाद प्रिय सखियों के हाथ से सुसज्जित होना दुर्लभ हो जायेगा। (यह कहकर रोती है।)

सखियाँ—सखी! मङ्गल के समय रोना ठीक नहीं (ऐसा कहकर आँसू पोंछकर उसे अभिनय के साथ सजाती हैं।)

Friends—*(Approaching)* Have you finished your happy bath?

Śakuntalā—Welcome to my friends. Sit here.

Friends—*(Sitting down)* **Dear, be favourable or a little straight. We shall perform your auspicious decoration.**

... this is to be highly valued decoration by

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—सहि! आहरणारिहं दे रुअं अस्समसुलहेहिं पसाहणेहिं विप्पआरीअदि। [सखि! आभरणार्हं ते रूपम् आश्रमसुलभैः प्रसाधनैः विप्रकार्य्यते।]

(प्रविश्य आभरणहस्त ऋषिकुमारः)—इदमलङ्कारजातम्, अलंक्रियतामायुष्मती।

(सर्वा विलोक्य विस्मिताः।)

गौतमी—वच्छ हारीद! कुदो इदं आसादिदं? [वत्स! हारीत! कुत इदमासादितम्?]

हारीतः—तातकण्वप्रभावात्।

गौतमी—किं माणसी सिद्धी? [किं मानसी सिद्धिः?]

युक्तम्=नोचितम्। (इति=एवमुक्त्वा, अश्रूणि=नयनाम्बूनि, प्रमृज्य=दूरीकृत्य, नाट्येन, प्रसाधयतः=वेशं रचयतः।)

प्रियंवदा—सखि! आभरणार्हम्=अलङ्कारयोग्यम्, ते=तव, रूपम्=सौन्दर्यम् (आकृतिः), आश्रमसुलभैः=आश्रमे अनायासलभ्यैः, प्रसाधनैः=प्रसाध्यते यैस्तैः अलङ्करणैः, विप्रकार्य्यते=विकृतीक्रियते। (प्रविश्य=प्रविशं विधाय, आभरणहस्तः=आभरणं करे धृत्वेत्यर्थः, ऋषिकुमारः=मुनिबालकः) इदमलङ्कारजातम्=आभरणसमूहः, अलंक्रियतां=भूष्यताम्, आयुष्मती=प्रशस्तायुः-शालिनी शकुन्तला।

सर्वाः—(विलोक्य=दृष्ट्वा, विस्मिताः=सञ्जातविस्मयाः।)

गौतमी—वत्स=पुत्र हारीत! कुतः=कस्मात्, इदम्=अलङ्कारजातम्, आसादितम्=गृहीतम् (लब्धम्)।

हारीत—तातः=जनकः, कण्वस्य=तन्नामकमहर्षेः, प्रभावात्=शक्तेः, आसादितमिति।

गौतमी—मानसी=मनःकृता, सिद्धिः=निष्पत्तिः किम्? (किं मनःसङ्कल्पमात्रेण अस्याभरणजातस्य लाभ इत्यर्थः।

प्रियंवदा—सखी! आभरण योग्य तुम्हारा यह रूप आश्रम-सुलभ प्रसाधन सामग्री से तिरस्कृत-सा हो रहा है।

(ऋषिकुमार का हाथ में गहने लिये हुए प्रवेश) ये गहने हैं, इनसे आयुष्मती शकुन्तला का शृंगार करो।

(सभी देखकर चकित होती हैं।)

गौतमी—वत्स हारीत! ये तुम्हें कहाँ से मिले?

हारीत—पिता कण्व के प्रभाव से।

गौतमी—क्या मानसी सिद्धि द्वारा?

Friends—Dear! It is not proper for you to weep on an auspicious occasion. *(Wiping off the tears they act decorating)*

Priyaṁvadā—The beauty that deserves ornaments is massed by decorations easily available in a hermitage.

(Entering with ornaments in hands) Here are ornaments, let her ladyship be adorned.

(All amazed at the sight)

Gautamī—Child Hareeta! whence are these?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हारीतः—न खलु, श्रूयताम्, तत्रभवता कण्वेन वयमाज्ञप्ताः शकुन्तलाहेतोर्वनस्पतिभ्यः कुसुमान्याहरतेति। ततश्च—

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै-
र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयच्छायापरिस्पर्द्धिभिः ॥ ७ ॥

हारीतः—न खलु=नैव मानसी सिद्धिः, श्रूयताम्=आकर्ण्यताम्। तत्रभवता=पूज्येन, कण्वेन=तन्नाममहर्षिणा, वयमाज्ञप्ताः=निर्दिष्टाः, शकुन्तलाहेतोः=तत्प्रसाधनार्थम्, वनस्पतिभ्यः=वृक्षेभ्यः, कुसुमानि=पुष्पाणि, आहरत=आदत्त इति। ततश्च=अस्मासु कुसुमोच्चयोद्युक्तेषु—

अन्वयः—केनचित् तरुणा इन्दुपाण्डु माङ्गल्यं क्षौमम् आविष्कृतम्, (तथा) केनचित् चरणोपरागसुभगः लाक्षारसः निष्ठ्यूतः, (तथा) अन्येभ्यः आपर्वभागोत्थितैः किसलयच्छायापरिस्पर्द्धिभिः वनदेवताकरतलैः नः आभरणानि दत्तानि ॥ ७ ॥

क्षौममिति। केनचित् तरुणा=वृक्षेण, इन्दुवत्=चन्द्रवत्, पाण्डु=शुभ्रवर्णम्, इन्दुपाण्डु, माङ्गल्यम्=मङ्गलकर्मणि साधु, क्षौमं=पट्टांशुकम्, आविष्कृतम्=स्वदेहात् प्रकटितम् (स्वदेहान्निःसार्य समर्पितम्), (तथा) केनचित्=अन्येन तरुणा, चरणयोः=पादयोः, उपरागः=रञ्जनं, तत्र सुभगः=सुन्दरः, चरणोपरागसुभगः, लाक्षारसः=आलक्तकद्रवः, निष्ठ्यूतः=उद्गीर्णः (वनमवद्बहिष्कृत्य प्रदत्तः), (तथा) अन्येभ्यः=वृक्षान्तरेभ्यः, आपर्वभागं=मणिबन्धपर्य्यन्तम्, मर्यादिकृत्य उत्थितैः=बहिर्निःसृतैः, आपर्वभागोत्थितैः, किसलयानां=तरुपत्राणां, छायां=कान्तिं, परिस्पर्द्धन्ते=अनुकुर्वन्तीति तच्छीलैः किसलयच्छायापरिस्पर्द्धिभिः=पल्लवशोभानुकारिभिः, वनदेवताकरतलैः—

हारीत—नहीं, सुनिये—पूज्य कण्व ने हमें आज्ञा दी कि शकुन्तला के श्रृंगार के लिए फूल चुन लाओ। और तभी—

किसी वृक्ष ने चन्द्रवत् शुभ्र माङ्गलिक रेशमी वस्त्र उत्पन्न करके दिये, किसी वृक्ष ने पाँव रंगने के लिए अतीव सुन्दर महावर निकाल कर दिया और इसी प्रकार अन्य वृक्षों ने मणिबन्ध प्रदेश तक बाहर निकले हुए पल्लवों के समान सुन्दर वनदेवताओं के हाथों से हमें ये आभरण आदि समर्पित किये ॥ ७ ॥

Hārīta—From father Kaṇva's prowess.

Gautamī—Is it a mental creation?

Hārīta—Not indeed! Listen—we were ordered by reverence Kaṇva thus—"Bring flowers for the sake of Śakuntalā. Then, now—

An auspicious silk-garment, white like the moon, was produced by a certain tree, lac dye suited for the decoration of the feet was exuded by another, from others were presented to us ornaments by the palms of wood-nymphs, protruded as far as the wrist and emulating with the sprouting of delicate leaves. (7)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियंवदा—(शकुन्तलां विलोक्य) हला! कोडरसंभवा वि महुअरी पोक्खरमहुज्जेव अहिलसदि। [हला! कोटरसम्भवापि मधुकरी पुष्करमध्वेव अभिलषति।]

गौतमी—जादे! इमाए अब्भुभववत्तीए सूइदा भत्तुणो गेहे अणुहोदव्वा राअलच्छी। [जाते! अनया अभ्युपपत्त्या सूचिता भर्तुर्गेहे अनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।]

(शकुन्तला लज्जां नाटयति।)

हारीतः—यावदिमां वनस्पतिसेवामभिषेकार्थं मालिनीमवतीर्णाय तत्रभवते कण्वाय निवेदयामि। (इति निष्क्रान्तः।)

वनदेवतानां करतलैः=पाणिभिः, नः=अस्मभ्यम्, आभरणानि=अलङ्करणानि, दत्तानि=समर्पितानि। अत्र समासगा लुप्तोपमा, शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ७॥

भावार्थः—वृक्षाणां स्थावरत्वेऽपि कण्वतपःप्रभावात् शकुन्तलालङ्करणार्थं केनचित् वृक्षेण पट्टांशुकं, केनापि वृक्षविशेषेण चरणप्रसाधनार्थम् आलक्तकरसः तथा च वृक्षान्तरेभ्यः वनदेवता-करतलैः शकुन्तलार्थम् अस्मभ्यं नानाविधालङ्करणानि समर्पितानि॥ ७॥

प्रियंवदा—(शकुन्तलां, विलोक्य=दृष्ट्वा) हला=सखि! कोटरे=वृक्षाणां गर्ते, सम्भवः= उत्पत्तिः यस्याः सा कोटरसम्भवा, अपि, मधुकरी=भ्रमरी, पुष्करस्य=कमलस्य, मधु एव, अभि-लषति=आस्वादितुमभिलषति।

गौतमी—जाते=पुत्री! अनया अभ्युपपत्त्या=वसनभूषणादिप्रदानरूपेण वनदेवतानुग्रहेण, राजलक्ष्मीः=राजसम्पद्, भर्तुर्गेहे=स्वामिनो गृहे, त्वया अनुभवितव्या=भोक्तव्या, इति सूचिता= विज्ञापिता।

(शकुन्तला, लज्जां=व्रीडां, नाटयति=अभिनयति।)

हारीतः—यावद्=यावत्कालपर्यन्तम्, इमां=घटनाम्, अभिषेकार्थं=स्नानाय, मालिनीम-वतीर्णाय=मालिनीनद्यास्तटे गताय, तत्रभवते=माननीयाय, कण्वाय, निवेदयामि=विज्ञापयामि (तेन तस्य महान् सन्तोषो भविष्यतीति भावः)। (इति=एवमुक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः।)

प्रियंवदा—(शकुन्तला को देककर) वृक्ष-कोटर में उत्पन्न होनेवाली भ्रमरी भी कमल मधु की ही अभिलाषा करती है।

गौतमी—वत्से! वनदेवताओं के इस अनुग्रह से सूचित होता है कि तुम अपने स्वामी के घर में राजलक्ष्मी का उपभोग करोगी।

(शकुन्तला लज्जा का अभिनय करती है।)

हारीत—तब तक मैं (वनदेवताओं के अनुग्रह की बात) स्नानार्थ मालिनी के तट पर गये हुए माननीय कण्व को बतला आऊँ। (प्रस्थान)

Priyaṁvadā*—*(Looking at Śakuntalā) Friend, even born in a hollow of a tree the black bee desirous only Lotus honey.

Gautamī—Child! by this condescension is indicated the royal fortune to be enjoyed by you in your husband's house.

(Śakuntalā gesticulates bashfulness)

Hārīta—Let me report the service of the trees to reverred Kaṇva, who has descended for his bath at the bank of Mālinī river.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—सहि ! अणणुभूदभूसणो अअं जणो कधं तुमं अलंकरेदि। (चिन्तयित्वा विलोक्य च) चित्तपरिचएण दाणिं दे अंगेसु आहरणविणिओअं करेम्ह। [सखि! अननुभूतभूषणः अयं जनः कथं त्वामलङ्करोति। चित्रपरिचयेन इदानीं ते अङ्गेषु आभरणविनियोगं कुर्वः।]

शकुन्तला—जाणामि वो णिउणत्तणं। [जानामि वां निपुणत्वम्।]

(सख्यौ नाट्येनालङ्कारान् विनियुञ्जाते।)

(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः कण्वः।)

कण्वः—(विचिन्त्य)

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।

अनसूया—सखि! अननुभूतानि=अपरिचितानि, भूषणानि=आभरणानि, येन सः अननुभूतभूषणः, अयं जनः=मल्लक्षणो जनः, कथमलङ्करोति=कथमलङ्कर्त्तुमर्हति। (चिन्तयित्वा=विचार्य्य, विलोक्य च=दृष्ट्वा च) चित्रपरिचयेन=चित्राङ्कितस्त्रीसंस्थाननिवेषितानामाभरणानां दर्शनोत्पन्नज्ञानेन, इदानीम्=अधुना, ते=तव, अङ्गेषु=करपादाद्यवयवेषु, आभरणनियोगं=यथास्थाने प्रसाधनहेतुकम् अलङ्करणप्रयोगं, कुर्वः=आवां विधास्यावः।

शकुन्तला—वां=युवयोः, निपुणत्वं=प्रावीण्यं, सर्वेषु कार्यव्यापारेषु नैपुण्यम्, जानामि।

(सख्यौ नाट्येन=अभिनयेन, अलङ्कारान्=आभरणानि, विनियुञ्जाते= परिधापयतः।)

(ततः=तदनन्तरम्, पूर्वं स्नातः पश्चादुत्तीर्णः=स्नानोत्तीर्णः, मालिनीनदीतो निर्वर्तितस्नानविधिः, कण्वः=तन्नामकमुनिः, प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

कण्वः—(विचिन्त्य=विचार्य)

अन्वयः—अद्य शकुन्तला यास्यति इति हृदयम् उत्कण्ठया संस्पृष्टम्, कण्ठः स्तम्भित-

---

अनसूया—सखी ! क्योंकि इस व्यक्ति ने (मैंने) कभी गहने नहीं पहने हैं अतः तुम्हें वह भला कैसे अलंकृत करे ? (विचार कर और देखकर) चित्र से (कौन-सा गहना कहाँ पहना जाता है यह) परिचय प्राप्त कर उसी के अनुसार तुम्हारे अङ्गों में गहने पहनाऊँगी।

शकुन्तला—मैं तुम दोनों की निपुणता जानती हूँ।

(दोनों सखियाँ अभिनय द्वारा अलङ्कार पहनाती हैं।)

(इसके बाद स्नान करके कण्व आते हैं।)

कण्व—(सोचकर) आज शकुन्तला जायेगी इसलिए विषाद ने हृदय पर अधिकार

Anasūyā—Dear! I have never used ornaments. By my acquaintance with the art of painting I shall make the arrangement of ornaments on your limbs.

Śakuntalā—I know your skill.

Both friends—*(Act decorating her)*

(Then enter Kaṇva come up from bathing)

Kaṇva—*(Thinking)*

At the thought that Śakuntalā will go today only, my heart is

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥ ८ ॥

(इति परिक्रामति)

सख्यौ—हला सउंतले! अवसिदमंडणासि, संपदं परिहेहि क्खोमजुअलं। [हला शकुन्तले! अवसितमण्डनासि, साम्प्रतं परिधेहि क्षौमयुगलम्।]

बाष्पवृत्तिकलुषः, दर्शनं चिन्तया जडम्; अरण्यौकसः मम स्नेहात् ईदृशं वैक्लव्यं तावत् (अत एव) नवैः तनयाविश्लेषदुःखैः गृहिणः कथं न पीड्यन्ते ॥ ८ ॥

यास्यत्यद्येति। अद्य=अस्मिन् दिने, शकुन्तला, यास्यति=भर्तृगृहं गमिष्यति, (इति हेतोः) हृदयं=मम मनः, उत्कण्ठया=औत्सुक्येन, उन्मनस्कतया, संस्पृष्टम्=आक्रान्तम्, कण्ठः=स्वरः, स्तम्भिततया=कथञ्चिदन्तर्निरुद्धया, बाष्पाणाम्=अश्रुजलानां, वृत्त्या=उद्गमनेन, कलुषः=अस्पष्टः (गद्गद इति), स्तम्भितबाष्पदृष्टिकलुषः, दर्शनं=दृष्टिः, चिन्तया=शकुन्तलावियोगभावनया, जडम्=विषयग्रहणाक्षमम्, अरण्यं=वनमेव, ओकः=आवासः, यस्य तस्यापि अरण्यौकसः अपि, मम=कण्वस्य, स्नेहात्=वात्सल्यातिशयात्, ईदृशम्=एवंविधमनुभूयमानम्, वैक्लव्यम्=विह्वलत्वम्, तावत्=सर्वतोभावेन जातमिति शेषः, अत एव नवैः=नूतनैः, तनयायाः=कन्यायाः, विश्लेषदुःखैः= विच्छेदजकष्टैः, गृहिणः=गृहस्थाश्रमिणो जनाः, कथं न पीड्यन्ते=क्लिश्यन्ते। अत्र पूर्वार्धे कारण-द्वैविध्यात् समुच्चयालङ्कारः, उत्तरार्धेऽर्थापत्तिश्च, इत्यनयोः परस्परनैरपेक्ष्येण संसृष्टिः। शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम् ॥ ८ ॥

भावार्थः—शमदमादिगुणसम्पन्नस्य विषयपराङ्मुखस्य तपस्विजनस्य कन्याविश्लेष-दुःखसम्भवे यदीदृशि स्थितिः, तदा संसारेषु गाढतरं लिप्तत्वात् मायया अभिभूयमानस्य गृहस्थस्य तादृशं दुःखमनिवार्यमेव सम्भवतीति भावः ॥ ८ ॥

विशेषः—नाटकेऽस्मिन् अयं हि श्लोकः सर्वोत्तम इति प्रसिद्धिः। यथाहि—

'कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशकुन्तलम्।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥
यास्यत्यद्येति तत्रापि श्लोकः सर्वमनोहरः'॥

(इति परिक्रामति=शकुन्तलासमीपं प्रतीति शेषः।)

कर लिया है। आँसुओं के वेग से गला रुध गया है और चिन्ता के कारण दृष्टि भी धुँधली हो गई है। वनवासी होने पर भी जब मुझे कन्या के बिछोह के कारण इतनी विकलता है तब भला गृहस्थजन कन्यावियोगजनित नवदुःख से व्यथित क्यों न होते होंगे? ॥ ८ ॥

(शकुन्तला की ओर घूमते हैं)

---

deeply touched with anxiety, my throat is choked with the flow of tears checked there in; my preception is paralysed with grief. If such, oh! is the affliction, through affection, of even me whose abode is the forest, how excessively might house-holders be tormented by the fresh pangs of separation from their daughters?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शकुन्तला उत्थाय नाट्येन परिधत्ते।)

गौतमी—जादे! एस दे आणन्द-बाप्प-परिवाहिणा लोअणेण परिस्सजंतो विअ गुरु उवत्थिदो, ता समुदाआरं पडिवज्जस्स। [जाते! एष ते आनन्दबाष्पपरिवाहिना लोचनेन परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः, तत् समुदाचारं प्रतिपद्यस्व।]

(शकुन्तला सव्रीडं वन्दनां करोति।)

कण्वः—वत्से!

ययातेरिव शर्म्मिष्ठा भर्त्तुर्बहुमता भव।
पुत्रं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि॥ ९॥

सख्यौ—हला=सखि शकुन्तले! अवसितं=समासं, मण्डनं=भूषणं, यस्याः सा अवसित-मण्डना असि=परिहितभूषणासि, साम्प्रतम्=इदानीम्, क्षौमयुगलम्=पट्टवस्त्रयुग्मम्, परिधेहि=धारय।

(शकुन्तला, उत्थाय=गृहीत्वा, नाट्येन=अभिनयेन, (क्षौमयुगलं) परिधत्ते=धारयति।)

गौतमी—जाते=पुत्रि! एषः=पुरतः स्थितः, ते=तव, आनन्देन=भर्तृसंयोगलाभाशाजनितेन सुखेन, यो बाष्पः=निर्गत आनन्दबाष्पः, तं परिवहति=धारयतीति तच्छीलेन आनन्दबाष्पपरिवाहिना, लोचनेन=नेत्रेण, परिष्वजमान इव=आलिङ्गन्निव, गुरुः=जनकः, उपस्थितः=प्राप्तः, तत्=तस्मात्, समुदाचारं=शिष्टाचारं, प्रतिपद्यस्व=कुरु (अन्यमनस्कतया कर्त्तव्यावमूढा मा भूः)।

(शकुन्तला, सव्रीडं=सलज्जम्, वन्दनां=प्रणतिं, करोति।)

कण्वः—वत्से!

अन्वयः—ययातेः शर्मिष्ठा इव भर्त्तुः बहुमता भव। (तथा) सा पूरुमिव त्वमपि सम्राजं पुत्रम् अवाप्नुहि॥ ९॥

ययातेरिति। ययातेः=ययातिर्नाम सोमवंशीयः कश्चिद्राजा, शर्मिष्ठा=तन्महिषी इव, भर्त्तुः=

सखियाँ—सखी शकुन्तला! तुम्हारा शृंगार हो चुका है, अतः अब रेशमी वस्त्रयुगल धारण करो।

(शकुन्तला उठाकर अभिनयपूर्वक पहनती है।)

गौतमी—पुत्री! आनन्दाश्रुपूर्ण नेत्रों द्वारा आलिङ्गन करने के लिए ही मानो तुम्हारे पिता (यहाँ) आये हैं अतः (उनके प्रति उचित) शिष्टाचार का पालन करो।

(शकुन्तला लज्जापूर्वक वन्दना करती है।)

कण्व—पुत्री! जैसे शर्मिष्ठा ययाति की अतीव मान्या थी उसी प्रकार तुमें भी अपने

Friends—Dear Śakuntalā! Your decoration is over. Now put on this pair of silken garments.

(Śakuntalā rising up and puts them on)

Gautamī—Daughter! Here has arrived your father, (embracing you), as it were, with his eye overflowing with joy. Just observe the customary salutation.

Kaṇva—Daughter!

Be highly thought of by your husband, as Śarmiṣṭhā was by

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—जादे ? वरो क्खु एसो, ण आसिसो। [जाते! वरः खल्वेषः, न आशीः।]

कण्वः—वत्से ! इतः सद्योहुतानग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व।

(सर्वे तथा कारयितुं परिक्रामन्ति)

कण्वः—वत्से !

अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धैर्वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥ १०॥

स्वामिनो दुष्यन्तस्य, बहुमता=माननीया, भव। तथा सा=शर्मिष्ठा, पूरुं=तन्नामकं पुत्रमिव, त्वमपि, सम्राजं=चक्रवर्तिनम्, पुत्रम्=तनयम्, अवाप्नुहि=प्राप्नुहि। अत्रोपमालङ्कारः, वृत्तमुपजातिभेद इति च॥ ९॥

भावार्थः—यथा शर्मिष्ठा भर्तुः बहुमताऽऽसीत् तथैव त्वमपि भव, तथा च शर्मिष्ठा यथा चक्रवर्त्तिनं पूरुमलभत् तथैव त्वमपि चक्रवर्त्तिनं तनयमवाप्नुहि॥ ९॥

गौतमी—जाते!=पुत्रि! एषः=पित्रा अभिहितः, खल्विति निश्चयेन, वरः=वरदानम्, तपः-प्रभावं वाग्व्यापारोऽयमिति भावः, न आशीः=न तु आशीर्वादः (पितुर्वाक्प्रयोगः वरः खलु नियतेष्टफलकत्वादिति भावः)।

कण्वः—वत्से=जाते! इतः=अत्र देशे, सद्योहुतान्=आज्येन सद्यस्तर्पितान्, यद्वा शकुन्तलाभ्युदयार्थे विशेषतो हुतान्, अग्नीन्, प्रदक्षिणीकुरुष्व=दक्षिणावर्त्तेन भ्रमणं कुरु।

(सर्वे जनाः, तथा कारयितुं=कण्वोक्तं विधातुं, परिक्रामन्ति=पादविन्यासं कुर्वन्ति।)

कण्वः—वत्से=पुत्रि !

अन्वयः—वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः, समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः, (तथा) हव्यगन्धैः दुरितम् अपघ्नन्तः अमी वैतानाः वह्नयः पावयन्तु॥ १०॥.

अमीति। वेदिं परितः=वेद्याः समन्तात्, क्लृप्तानि=रचितानि, धिष्ण्यानि=स्थानानि, येषां

स्वामी के आदर की पात्र बनो तथा जिस तरह शर्मिष्ठा ने सम्राट् पुरू को पुत्र रूप में प्राप्त किया था उसी प्रकार तुम भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त करो॥ ९॥

गौतमी—पुत्री ! यह तुम्हारे पिता का वरदान है, आशीर्वाद नहीं।

कण्व—पुत्री ! अभी-अभी आहुति द्वारा पूजित अग्नि की प्रदक्षिणा कर लो।

(सब उसे प्रदक्षिणा कराने के लिए घूमते हैं।)

कण्व—बेटी ! जिस वेदी के चारों ओर के स्थान विभिन्न कार्यों के लिए नियत है,

---

emperor Yayāti, obtain you also s son, who would be a universal monarch, as she (did) pooru. (9)

Gautamī—Daughter! this is indeed a boon not merely a benedication or blessing.

Kaṇva—Daughter! Go round the fires here, which have oblations just offered to them.

(All walk round to do so or as desired)

Kaṇva—Child!

May these sacrificial fires, that have their place assigned

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शकुन्तला प्रदक्षिणं करोति।)

कण्वः—वत्से! प्रतिष्ठस्वेदानीम्। (सदृष्टिक्षेपम्) क्व नु ते शार्ङ्गरव-शारद्वतमिश्राः?

शिष्यौ—(प्रविश्य) भगवन्! इमौ स्वः।

कण्वः—वत्सौ! भगिन्याः पन्थानमादेशयतम्।

शिष्यौ—इत इतो भवती।

(सर्वे परिक्रामन्ति।)

यैर्वा ते क्लृप्तधिष्ण्याः=होमान्तरं प्रतिदिनमेकीभूतः पुनर्होमकाले पृथक् कल्पितस्थाना इत्यर्थः, समिधः=दह्यमानकाष्ठानि, एषां सन्तीति समिद्वन्तः, प्रान्तेषु=अग्रेः प्रान्तभागेषु, संस्तीर्णाः=विकीर्णाः, दर्भाः=कुशाः, येषां ते संस्तीर्णदर्भाः, हव्यगन्धैः=आज्यादिगन्धैः, दुरितं=पापम्, अपघ्नन्तः= नाशयन्तः, अमी=दृश्यमानाः, वितानस्य इमे इति वैतानाः=यज्ञसम्बन्धिनः, वह्नयः= गार्हपत्या-दयस्त्रिविधा अग्नयः, त्वाम्, पावयन्तु=पवित्रीकुर्वन्तु। अत्र परिकरालङ्कारः। उपजातिवृत्तम्॥ १०॥

भावार्थः—प्रथमाधानसमय एव त्रिधा कल्पितस्थानाः समिद्वन्तः हव्यगन्धैः पापं नाशयन्तः अमी गार्हपत्यादयस्त्रिविधा अग्नयः त्वां पावयन्तु।

(शकुन्तला, प्रदक्षिणं=दक्षिणावर्त्तेन भ्रमणं करोति।)

कण्वः—वत्से! इदानीम्=अधुना, प्रतिष्ठस्व=गच्छ। (सदृष्टिक्षेपम्=दृष्टिघातपूर्वकम्) ते=पूर्वमादिष्टाः, शार्ङ्गरवशारद्वतमिश्राः, क्व नु वर्त्तन्त इति शेषः।

शिष्यौ—(प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) भगवन्! इमौ स्वः=उभौ शार्ङ्गरवशारद्वतौ तिष्ठावः।

कण्वः—वत्सौ=पुत्रौ, भगिन्याः=शकुन्तलायाः, पन्थानम्=पतिगृहगमनमार्गम्, आदेश-यतम्=युवां दर्शयतः।

समिधा रखी हुई है, वेदी के चारों ओर कुश बिछी (छितराई) हुई है और प्रज्वलित अग्नि हवनीय पदार्थों के गन्ध से पापों को अपसारित कर रही है—ऐसी यज्ञाग्नि तुम्हें भी पवित्र करे॥ १०॥

(शकुन्तला प्रदक्षिणा करती है।)

कण्व—पुत्री! अब प्रस्थान करो। (दृष्टि डालकर) शार्ङ्गरव-शारद्वत आदि कहाँ हैं?

दोनों शिष्य—(प्रविष्ट होकर) भगवन्! हम यहाँ हैं।

कण्व—पुत्रो! अपनी बहन को मार्ग दिखाओ।

दोनों शिष्य—देवी! इधर (इस मार्ग से) आइए।

(सब घूमते हैं।)

---

around the altar, that are furnished with sacrificial fuel, that have Kuśa grass strewn at their edges and that drive away sin by means of the odours of oblations, purify you. (10)

(Śakuntalā goes around)

Kaṇva—Daughter, now start on *(Casting a glance round)* where are thou Śārṅgrava & Śāradvata?

Both pupil—(Approaching) your holiness! here we are.

Kaṇva—Boys! show the way to your sister.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः—भो भोः ! सन्निहितवनदेवतास्तपोवनतरवः !

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वसिक्तेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आदौ वः कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥ ११ ॥

शिष्यौ—इतः इतः=अनेन मार्गेण, भवती=भगिनी शकुन्तला प्रयातु इति भावः। (सर्वे=मञ्चस्था जनाः, परिक्रामन्ति=पादन्यासं कुर्वन्ति।)

कण्वः—भो भोः=इति सम्बोधने! सन्निहिताः वनदेवता येषु ते सन्निहितवनदेवता=वनदेवतानामाश्रयभूता इत्यर्थः, तपोवनतरवः=तपोवनस्थपादपाः—

अन्वयः—या युष्मासु असिक्तेषु प्रथमं जलं पातुं न व्यवस्यति, प्रियमण्डनापि या स्नेहेन भवतां पल्लवं न आदत्ते, (तथा) वः कुसुमप्रवृत्तिसमये आदौ यस्याः उत्सवः भवति सा इयं शकुन्तला पतिगृहं याति; सर्वैः अनुज्ञायताम्॥ ११ ॥

पातुमिति। या=शकुन्तला, युष्मासु=तपोवनतरुषु, असिक्तेषु=अकृतजलसेकेषु, प्रथमं=पूर्वम् (आदौ), जलं पातुं न व्यवस्यति=जलं पातुं न प्रवर्त्तते (प्राथमिकेऽपि जलपाने मनोऽपि न करोतीत्यर्थः), प्रियं=प्रीतिकरं, मण्डनम्=अलङ्करणं (भूषणं वा), यस्याः सा प्रियमण्डना=अलङ्कारप्रियापि, या=शकुन्तला, स्नेहेन=प्रेम्णा, भवताम्=तपोवनतरूणाम्, पल्लवम्=नवं किसलयम्, न आदत्ते=न गृह्णाति, (तथा) वः=युष्माकम्, कुसुमप्रवृत्तिसमये=पुष्पोद्गमकाले, आदौ=सर्वेषामेव पूर्वम्, यस्याः=शकुन्तलायाः, उत्सवः=आनन्दः, भवति, सा इयं= पुरःस्थिता शकुन्तला, पतिगृहं=स्वामिगेहम्, याति=गच्छति, सर्वैः=युष्माभिः सम्भूय, अनुज्ञायताम्=अनुमन्यताम्। अत्र अचेतनेषु चेतनव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः तथा तरून् प्रति शकुन्तलायाः स्नेहाधिक्यप्रतिपादनकार्ये कारणत्रयोपन्यासात् समुच्चयालङ्कारश्च। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ११ ॥

भावार्थः—या शकुन्तला युष्मासु तपोवनतरुषु असिक्तेषु जलपाने मनोऽपि न करोतिस्म,

---

कण्व—ओ वनदेवताओं से अधिष्ठित आश्रम के वृक्षो!

जो तुम्हें सींचे बिना पहले जल भी नहीं पीना चाहती थी, जो अलङ्कार-प्रिय होने पर भी स्नेह के कारण तुम्हारे लाल-लाल कोमल पत्तों तक को नहीं तोड़ती थी, तुम्हारे पहले-पहले फूलने पर जो उत्सव मनाती थी वही शकुन्तला आज अपने पति के घर जा रही है; आप सब उसे जाने की अनुमति दीजिए॥ ११ ॥

Pupils—This way, this way, your ladyship.

(All walk around)

Kaṇva—O, neighbouring trees of the penance grove, where deities dwelling like in an abode—

She, who does not proceed to drink water first, when you are not watered, who, though fond of decoration, does not pluck a sprout out of affection for you, who considers a festival at the time of the first appearance of your flowers, that Śakuntalā is today going to her husband's abode. Let her be permitted by you all. (11)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(आकाशे)

रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः
छायाद्रुमैर्नियमितार्कमरीचितापः ।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः॥ १२॥

(सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति।)

अलङ्कारप्रियापि या भवतां काचित् हानिर्भवेदिति धिया पल्लवमपि नादत्ते स्म, युष्माकं पुष्पोद्गमकाले अस्मदादीनां सर्वेषामेव पूर्वं यस्या उत्सवः भवति स्म सा इयं पुरःस्थिता शकुन्तला पतिगृहं याति; युष्माभिः पतिगृहप्रयाणानुरूपं स्नेहानुरूपं चानुगमनमस्याः क्रियताम् अनुज्ञायताञ्च इति भावः॥ ११॥

(आकाशे=साधारणमानवादृश्यरूपत्वादाकाशं परिलक्ष्य)

अन्वयः—अस्याः पन्थाः कमलिनीहरितैः सरोभिः रम्यान्तरः छायाद्रुमैः नियमितार्कमरीचितापः कुशेशयरजोमृदुरेणुः शान्तानुकूलपवनः (अत एव) शिवश्च भूयात्॥ १२॥

रम्यान्तर इति। अस्याः=शकुन्तलायाः, पन्थाः=मार्गः, कमलिनीभिः=पद्मलताभिः, हरितैः=हरितवर्णैः, सरोभिः=वापीभिः, रम्यं=कमनीयम्, अन्तरं=मध्यदेशः, यस्य सः रम्यान्तरः, छायाप्रधाना द्रुमाः छायाद्रुमास्तैः छायाद्रुमैः=छायायुक्तवृक्षैः, नियमितः=निवारितः, अर्कमरीचीनाम्=रविकिरणानाम्, तापो यत्र सः नियमितार्कमरीचितापः, कुशे=जले, शेरते इति कुशेशयानि=कमलानि, तेषां रजांसीव मृदवः=कोमलाः, रेणवो यत्र सः कुशेशयरजोमृदुरेणुः, शान्तः=सौम्यः, अनुकूलः=सुखकरः, पवनः=वायुः, यस्मिन् सः शान्तानुकूलपवनश्च, भूयात्=भवतु, अत एव शिवः=मङ्गलकरश्च भूयात्। अत्र तुल्ययोगिता-उपमा-परिकर-काव्यलिङ्गाश्चालङ्काराः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १२॥

भावार्थः—यात्रायां सर्वविधसुखप्राप्त्यर्थमाशंसनेयं महर्षिकण्वस्य। मध्ये कमलिनी हरितसरःप्राप्तेः पिपासानिवृत्तिः, छायाद्रुमलाभात् श्रमक्लमनाशः, पद्मरागरेणुलाभात् आमोदः मनस्फूर्तिश्च, शान्तपवनाप्तेः सुखस्पर्शतया गमने श्रमनिवृत्तिः पवनस्यानुकूलत्वे च मङ्गललाभ इति भावः॥ १२॥

(सर्वे, सविस्मयम्=साश्चर्यम्, आकर्णयन्ति=शृण्वन्ति।)

(आकाश में)

कमल के पत्तों से भरे हुए हरे रङ्ग के सरोवरों से तुम्हारा मार्ग सुन्दर बने, सूर्य की किरणों के ताप के निरोधक विशाल वृक्ष तुम्हें धूप से बचायें, कमलपुष्प का पराग तुम्हें सुगन्ध से भर दे तथा वायु शान्त और अनुकूल हो और तुम्हारा मार्ग मङ्गलमय हो॥ १२॥

(सब विस्मयपूर्वक सुनते हैं)

(In the air)

May her path, with its intervals pleasant with lakes that are green due to lotus beds, with the heat of the sun's rays moderated by shady trees and with the dust soft like pollen of lotuses, have a gentle and favourable breeze and be prosperous. (12)

(All hear with surprise) or *(All listen with wonder)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—(कोकिला शब्दं सूचयित्वा) भगवन्!

अनुमतगमना शकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
परभृतविरुतं कलं यतः प्रतिवचनीकृतमेभिरात्मनः॥ १३॥

गौतमी—जादे! णादिजणसिणिद्धाहिं अणुण्णादगमणासि तपोवणदेवदाहिं। ता पणम भअवदीणं। [जाते! ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनासि तपोवनदेवताभिः। तत् प्रणम भगवतीः।]

शार्ङ्गरवः—(कोकिलाशब्दं=पिकानुकारीशब्दं, सूचयित्वा=निरूप्य) भगवन्!

अन्वयः—इयं शकुन्तला वनवासबन्धुभिः तरुभिः अनुमतगमना यतः एभिः कलं परभृत-विरुतम् आत्मनः प्रतिवचनीकृतम्॥ १३॥

अनुमतेति। इयं=पुरःस्थिता, शकुन्तला, वनवासेन=वने एकत्रावस्थित्या, बन्धुभिरिव बन्धुभिः=भ्रातृभूतैः वनवासबन्धुभिः, तरुभिः=पादपैः, अनुमतम्=अनुज्ञातम्, गमनं=प्रस्थानं, यस्याः सा अनुमतगमना, जातेति शेषः, यतः=यस्माद्धेतोः, एभिः=तरुभिः, फलं=मधुरास्फुटं, परैः=काकैः, भ्रियते=परिपाल्यते, इति परभृतः=कोकिलः, तस्य विरुतं=रवः, परभृतविरुतम्, आत्मनः= स्ववर्गस्य, प्रतिवचनीकृतम्=भवदनुज्ञाप्रार्थनस्य प्रत्युत्तरवदुपन्यस्तम्। अत्र परिणामोपमा रूप-कश्चालङ्कारौ। अपरवक्त्रं वृत्तम्—'अयुजि ननरला गुरुः समे तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ'॥ १३॥

भावार्थः—शार्ङ्गरवः पिकशब्दमाकर्ण्य निवेदयति गुरवे यत् अत्राश्रमे भ्रातृभूतैः पादपैः भवदनुज्ञाप्रार्थनामाकर्ण्य कोकिलशब्दमाध्यमेन स्ववर्गस्य प्रत्युत्तरमुपन्यस्तम्। एभिः अनुज्ञाता शकुन्तला पतिगृहं प्रस्थितुमिति भावः॥ १३॥

गौतमी—जाते=पुत्रि! ज्ञातिजनवत् स्निग्धाभिः=त्वयि स्नेहयुक्ताभिः, ज्ञातिजनस्निग्धाभिः, वनदेवताभिः, अनुज्ञातं गमनं यस्याः सा अनुज्ञातगमना=अभिमतप्रस्थाना असि। तत्=तस्मात्, भगवतीः=माहात्म्यवतीः, वनदेवताः=तपोवनदेवताः, प्रणम=नमस्कुरु।

शार्ङ्गरव—(कोयल की कूक की ओर निर्देश कर)

भगवन्! तपोवन में शकुन्तला के साथ रहने वाले बन्धुस्वरूप वृक्ष-समूह ने शकुन्तला को (पतिगृह) जाने की अनुमति दे दी है, क्योंकि उन्होंने अव्यक्त मधुर कोकिल ध्वनि द्वारा आपको प्रत्युत्तर दे दिया है॥ १३॥

गौतमी—बान्धवों के समान स्नेही वनदेवताओं ने तुम्हें (पतिगृह) जाने की अनुमति दे दी है, अतः उन्हें प्रणाम करो।

Śārṅgrava—*(Acting as if he heard the note of a cuckoo)*

Here Śakuntalā has her departure approved by the trees, her companions of forest life; since a sweet note of the cuckoo has, by them, been made an answer to this effect. (13)

Gautamī—Daughter! you have your departure sanctioned by the deities of the penance-grove, who are as affectionate as kinsmen. Salute them.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(सप्रणामं परिक्रम्य जनान्तिकम्) हला पिअंवदे! अज्जउत्तदंसणोस्सुआए वि अस्समपदं परिच्चअंतीए दुक्खदुक्खेण चलणा मे पुरमुहा ण णिवडंति। [हला प्रियंवदे! आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अपि आश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखदुःखेन चरणौ मे पुरोमुखौ न निपततः।]

प्रियंवदा—ण केवलं तुमं ज्जेव तवोवणविरहकादरा, तुए उवत्थिदविओअस्स तवोवणस्सवि अवत्थं पेक्ख दाव। [न केवलं त्वमेव तपोवनविरहकातरा; त्वयोपस्थित-वियोगस्य तपोवनस्यापि अवस्थां प्रेक्षस्व तावत्।]

उग्गिण्णदब्भकवला मई परिच्चत्तणत्तणा मोरी।
ओसरिअपांडुपत्ता मुअंति अस्सुं विअ लदाओ॥

शकुन्तला—(सप्रणामं=प्रणामपुरस्सरं, परिक्रम्य=किञ्चिद् गमनं नाटयित्वा, जनान्तिकम्=सख्यान्तिके) हला प्रियंवदे! आर्य्यपुत्रस्य=स्वामिनः (पत्युर्दुष्यन्तस्य), दर्शने, उत्सुकायाः=उत्कण्ठितायाः, अपि, आश्रमपदम्=इदं तपोवनं, परित्यजन्त्या=परित्यज्य भर्तुर्गेहे व्रजन्त्या, दुःखदुःखेन=अतिकष्टेन (अति दुःखेन), मे=मम, चरणौ=पादौ, पुरोमुखौ=सम्मुखौ सन्तौ, न निपततः=न गच्छतः।

प्रियंवदा—न=नहि, त्वमेव=शकुन्तला एव, केवलम्=मात्रम्, तपोवनस्य=आश्रमस्य, विरहेण=विश्लेषदुःखेन, कातरा=व्याकुलीभूता, तपोवनविरहकातरा, (अपितु) त्वया=भवत्या, उपस्थितः=प्रस्तुतः, वियोगस्य=विरहस्य, त्वयोपस्थितवियोगस्य, तपोवनस्यापि=आश्रमस्यापि, तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, अवस्थां=दशाम्, प्रेक्षस्व=अवलोकय।

अन्वयः—मृगी उद्गीर्णदर्भकवला, मयूरी परित्यक्तनर्तना, अपसृतपाण्डुपत्राः लताः अश्रु मुञ्चन्ति इव॥ १४॥

उद्‌गीर्णेति। मृगी=हरिणी, उद्गीर्णः=व्यमितः (मुखान्निर्गलितः), दर्भकवलः=कुशग्रासः,

---

शकुन्तला—(प्रणाम कर, घूमकर प्रियंवदा से धीरे से) सखी प्रियंवदा! यद्यपि आर्यपुत्र को देखने की मेरी विशेष उत्कण्ठा है, तथापि आश्रम छोड़कर जाते हुए मेरे पाँव आगे पड़ते ही नहीं हैं।

प्रियंवदा—तपोवन के विरह से केवल तुम्ही दुःखी नहीं हो बल्कि तुम्हारे कारण उपस्थित उस विरह के कारण स्वयं आश्रम की भी क्या दशा है, जरा उसे भी तो देखो—

हरिणी अपने मुख से कुश का ग्रास उगल रही है, मयूरी ने नाचना बन्द कर दिया है और पीले पत्तों के बहाने से मानो लताएँ आँसू ही गिरा रही हैं॥ १४॥

Śakuntalā—(Moving round with a bow—aside) Dear Priyaṁvadā! though I am anxious to see my husband, my feet move forward with difficulty, as I leave the region of the hermitage.

Priyaṁvadā—It is not merely that you are distressed at the thought of separation from the penance-grove, a similar condition is just observed even in the case of the penance-grove. For—

The deer have their mouthfuls of Darbha grass dropped

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[उद्गीर्णदर्भकवला मृगी परित्यक्तनर्तना मयूरी।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्ति अश्रु इव लताः॥ १४॥]

शकुन्तला—(स्मृत्वा) ताद! लदावहिणीं दाव माहवीं आमंतइस्सं। [तात! लताभगिनीं तावत् माधवीमामन्त्रयिष्ये।]

कण्वः—वत्से! अवैमि ते तस्यां सौहार्दम्। इयं सा दक्षिणे पश्य।

शकुन्तला—(उपेत्य लतामालिङ्ग्य) लदावाहिणी! पच्चालिंगस्स मं साहामएहिं बाहुहिं। अज्ज पहुदि दूरवत्तिणी क्खु दे भविस्सं। ताद! अहं विअ इअं तुए चिंतणीआ। [लताभगिनि! प्रत्यालिङ्ग मां शाखामयैर्बाहुभिः। अद्य प्रभृति दूरवर्त्तिनी खलु ते भविष्यामि। तात! अहमिव इयं त्वया चिन्तनीया।]

यया सा उद्गीर्णदर्भकवला, मयूरी=मयूरपत्नी, परित्यक्तं=वर्जितं, नर्त्तनं=नृत्यं, यया सा परित्यक्त-नर्त्तना। अपसृतानि=पतितानि, पाण्डूनि=पाण्डु(ईषद्पीताभ)वर्णानि, पत्राणि यासां ताः अपसृत-पाण्डुपत्राः, लताः=वल्लीः, अश्रुजलं=नयनबाष्पं, मुञ्चन्तीव=त्यजन्तीव। अत्र समुच्चयालङ्कारः, गाथा (अत्रानुक्तं गाथा) वृत्तञ्च॥ १४॥

भावार्थः—तव विरहपर्युत्सुकतया मृगी कुशग्रासं मयूरी च नृत्यव्यापारं परित्यजति तथा तव विरहशोकोदयात् पाण्डुपत्रमोचनव्याजेन लताः बाष्पं त्यजन्तीव प्रतीयतेति भावः॥ १४॥

शकुन्तला—(स्मृत्वा=स्मरणं कृत्वा, किञ्चित् विचार्य्य इत्यर्थः) तात=पितः! लता चासौ भगिनी चेति तां लताभगिनीम्=भगिनीरूपां (तुल्यां वा) लताम्, माधवीम्=तन्नाम्नीम्, तावत्=तावत्कालपर्यन्तं, मन्त्रयिष्ये=सम्भाषिष्ये।

कण्वः—वत्से=पुत्रि! ते=तव, तस्यां=माधवीलतायां, सौहार्दम्=सोदर्यस्नेहम्, अवैमि=जानामि। इयं सा=माधवीलता, दक्षिणे=दक्षिणदिग्भागे वर्त्तते। पश्य=अवलोकय।

शकुन्तला—(उपेत्य=लतान्तिकं प्राप्य, लताम्=माधवीम्, आलिङ्ग्य=आश्लिष्य)

शकुन्तला—(स्मरण करके) पिताजी! जरा मैं अपनी भगिनी रूपा माधवीलता से बात कर लूँ (मिल लूँ)।

कण्व—बेटी! में जानता हूँ कि उस पर तेरा कितना स्नेह है। देख, यह दाई ओर है।

शकुन्तला—(लता के पास पहुँच कर और उसे आलिंगन कर) लता बहन! अपनी शाखा रूपी भुजाओं से मुझे अलिंगन करो, क्योंकि आज से मैं तुमसे अलग हो रही हूँ। पिताजी! मेरे ही समान इसका भी ध्यान रखियेगा।

---

down, the hen (peacock) have given up their dancing; the creepers, from which pale leaves are cast, are as though shedding tears. (14)

Śakuntalā—*(Remembering)* Father I shall just bid farewell to my creeper-sister Mādhavī.

Kaṇva—I know your sister's affection for it. Just here it is to the right side.

Śakuntalā—*(Approaching and embressing the creeper)*

Creeper-sister! Embrace me in return with your arms of branches, from this day onwards I will be away from you. Father!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः—वत्से!

सङ्कल्पितं प्रथममेव मया त्वदर्थं
भर्त्तारमात्मसदृशं स्वगुणैर्गतासि।
अस्यास्तु सम्प्रति वरं त्वयि वीतचिन्तः
कान्तं समीपसहकारमिमं करिष्ये॥ १५॥

लताभगिनी!=भगिनीरूपा लता! मां=शकुन्तलाम्, शाखामयैः=शाखारूपेणावस्थितैः, बाहुभिः, प्रत्यालिङ्ग=परिष्वजस्व। खल्विति निश्चयेन, अद्य प्रभृति=अस्मात् दिनादारभ्य, ते=तव (त्वत्कृते), दूरवर्तिनी=दूरस्था, भविष्यामि। तात! अहमिव=यथाऽहं तथैव, इयं=माधवीलताऽपि, त्वया= भवता, चिन्तनीया=सस्नेहं द्रष्टव्या (मत्स्थानपातित्वादहमिव सस्नेहं परिरक्षणीया)।

कण्वः—वत्से=पुत्रि!

अन्वयः—मया प्रथममेव त्वदर्थं सङ्कल्पितम् आत्मसदृशं भर्त्तारं स्वगुणैः गता असि। (अत एव) सम्प्रति त्वयि वीतचिन्तः (अहम्) कान्तं इमं समीपसहकारम् अस्याः वरं करिष्ये॥ १५॥

सङ्कल्पितमिति। मया=कण्वेन, प्रथममेव=तव यौवनारम्भात् पूर्वमेव, त्वदर्थं सङ्कल्पितम्= अपि नाम सकलगुणसम्पन्नो मत्सुतां परिणयेदिति मनसा विभावितम्, आत्मसदृशं=स्वानुरूपम्, भर्त्तारं=स्वामिनम्, स्वगुणैः=स्वकीयसौन्दर्यादिगुणैः, गतासि=प्राप्तासि, अत एव सम्प्रति=इदानीम्, त्वयि=त्वद्विषये, वीता चिन्ता येन सः वीतचिन्तः=अनुरूपवरलाभान्निश्चिन्तः, (अहम्) कान्तं= रम्यम्, इमं=पुरोदृश्यमानम्, समीपवर्त्ती सहकारः समीपसहकारस्तं समीपसहकारं=सन्निहित आम्रतरुम्, अस्याः=माधवीलतायाः, वरं=भर्त्तारं, करिष्ये=कल्पयिष्ये। अत्र तुल्ययोगिता समासोक्तिः समालङ्काराश्च। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—मया त्वदीयपरिणयाद् पूर्वमेव मनसा विभावितं यत् लोकोत्तरगुणसम्पन्नः मत्सुतां परिणयेदिति। त्वं तु स्वानुरूपं भर्त्तारं स्वकीयसौन्दर्यादिगुणैः प्राप्तासि। अत एव सम्प्रति इयं तव पुरोवर्त्तिनी अतिप्रियतमा नवमालिका, कान्तसमीपवर्त्तिसहकारेण सह योजयित्वा अस्याः परिणयं विधायेत्यर्थः, भूयोऽपि वीतचिन्तः भविष्यामि इति भावः॥ १५॥

कण्व—पुत्री! मेरा सङ्कल्प था कि तुझे किसी योग्य वर को सौंपूँ परन्तु तूने अपने ही गुणों से अपने अनुरूप वर को प्राप्त कर लिया। अब मैं क्योंकि तुम्हारी ओर से निश्चिन्त हो गया हूँ अतः इस माधवीलता का भी अब इस पार्श्ववर्ती मनोहर आम्ररूपी वर के साथ विवाह कर दूँगा॥ १५॥

---

you should take care of it like me (As you were taking care for me similarly you please take care of it in my absence, considering it as my own sister).

Kaṇva—Daughter! by your good qualities you have obtained a husband worthy of you, as originally planned by me for your sake. Now I am free from anxiety about you. So, I will marry this Mādhavī creeper to this nearly mango tree, which is very attractive and is a suitable groom. (15)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदितः प्रस्थानं प्रतिपद्यस्व।

शकुन्तला—(सख्यावुपेत्य) हला! एसा दोण्णं पि वो हत्थे णिक्खेवो। [हला! एषा द्वयोरपि वां हस्ते निक्षेपः।]

सख्यौ—अअं जणो दाणिं कस्स हत्थे समप्पिदो? [अयं जनः इदानीं कस्य हस्ते समर्पितः?] (इति बाष्पं विसृजतः।)

कण्वः—अनसूये! प्रियंवदे! अलं रुदितेन। ननु भवतीभ्यामेव शकुन्तला स्थिरीकर्त्तव्या। (इति सर्वे परिक्रामन्ति।)

शकुन्तला—(विलोक्य) ताद! एसा उडअपज्जंतचारिणी गब्भहारमंथरा मिअबहू जदा सुहप्पसवा भविस्सदि, तदा मे कंपि पिअणिवेदअं विसज्जइस्ससि, मा एदं

तत्=तस्मात्, इतः=अस्मात् प्रदेशात्, प्रस्थानं=हस्तिनापुरगमनमार्गम्, प्रतिपद्यस्व=अवलम्बस्व।

शकुन्तला—(सख्यौ=अनसूया-प्रियंवदेति, उपेत्य=प्राप्य) हला=सखि! एषा माधवीलता, वां=युवाम्, द्वयोरपि=उभयोरपि, हस्ते=करे, निक्षेपः=निक्षेपवत्समर्पणम्। इतः परं युवाभ्यामेवास्याः रक्षणावेक्षणादिकं कर्त्तव्यमिति भावः।

सख्यौ—(अनसूया=प्रियंवदे) अयम्=अनसूयारूपः प्रियंवदारूपश्च जनः, इदानीम्=साम्प्रतम्, कस्य=पुरुषविशेषस्य, हस्ते=करे, समर्पितः=निक्षिप्तः। त्वदेकस्नेहपाशबद्धाः, त्वदाश्रयाश्च वयं तव प्रस्थाने कामाश्रयामो इति ब्रूहि। (इति=एवमुक्त्वा, बाष्पम्=अश्रूणि, विसृजतः=विसर्जनं कुरुतः।)

कण्वः—अनसूये! पियंवदे! अलं रुदितेन=रोदनं मा कुरुतम्, नन्वित्यवधारणे, भवतीभ्यामेव=युवाभ्यामेव, शकुन्तला, स्थिरीकर्तव्या=सान्त्वनीया। (इति=एवमुक्त्वा, सर्वे, परिक्रामन्ति=हस्तिनापुरगमनं सूचयितुं पादक्षेपं कुर्वन्ति।)

अब तुम यहाँ से प्रस्थान करने का विचार करो।

शकुन्तला—(सखियों के पास पहुँचकर) सखी! मैं इसे (माधवीलता को) तुम दोनों के हाथों सौंपती हूँ।

सखियाँ—किन्तु इस व्यक्ति को अर्थात् हमें किसके हाथों सौंप रही हो? (यह कहकर दोनों रोती हैं।)

कण्व—अनसूया! प्रियंवदा! रोओ मत। तुम दोनों को ही (वस्तुतः) शकुन्तला को धैर्य दिलाना चाहिए। (सब चलते हैं।)

So, from here you please start (set out on your way).

Śakuntalā—*(Approaching her friends)* Friends! I hand over the Mādhavī creeper to you both.

Friends—In whose hand is this person (viz. ourselves) placed. *(They shed tears)*

Kaṇva—Anasūyā! Priyaṁvadā! enough of weeping. By you yourselves Śakuntalā has to be steadied. *(All walk round)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विसुमरिस्ससि। [तात! एषा उटजपर्यन्तचारिणी गर्भभारमन्थरा मृगवधूर्यदा सुखप्रसवा भविष्यति, तदा मे कमपि प्रियनिवेदकं विसर्जयिष्यसि, मा इदं विस्मरिष्यसि।]

कण्वः—वत्से! नेदं विस्मरिष्यामि।

शकुन्तला—(गतिभेदं रूपयित्वा) अम्भो! को णु क्खु एसो पदक्कंतो विअ मे पुणो पुणो वसणंते सज्जदि? [अहो! को नु खलु एष पदाक्रान्त इव मे पुनः पुनर्वसनान्ते सज्जते?] (इति परावृत्यावलोकयति)

कण्वः—वत्से!

शकुन्तला—(विलोक्य=दृष्ट्वा) तात! एषा=मद्वियोगकातरीभूता पुरःस्थिता, उटजस्य=पर्णशालायाः, पर्य्यन्ते=प्रान्तभागे, चरतीति सा उटजपर्य्यन्तचारिणी, गर्भभारेण मन्थरा गर्भभार-मन्थरा=गर्भभारातिशयात् मन्दगमना, मृगवधूः=मृगी, यदा=यस्मिन् काले, सुखप्रसवा भविष्यति=सुखेन प्रसविष्यते, तदा, मे=मम समीपे, कमपि जनं, प्रियनिवेदकम्=प्रसवाख्यायकं जनं, विसर्जयिष्यसि=प्रेरयिष्यसि, इदं=मत्कथनं, मा विस्मरिष्यसि।

कण्वः—वत्से!=दुहिते! इदं=त्वत्कथनं, न=नैव, विस्मरिष्यामि=विस्मृतिपथं प्रापयिष्यामि।

शकुन्तला—(गतिभेदं=गमनस्य प्रकारविशेषं, रूपयित्वा=नाटयित्वा) अहो=इत्याश्चर्ये, नु खलु=वितर्कबोधौ, क एषः, पदाक्रान्त इव=पादलग्न इव, मे=मम, पुनः पुनः=भूयोभूयः, वस्त्रान्ते=वस्त्राञ्चलभागे, सज्जते=लगति। (इति=एवमुक्त्वा, परावृत्य=घूर्णित्वा, अवलोकयति=पश्यति तज्ज्ञानार्थमिति भावः।

कण्वः—वत्से=पुत्रि!

शकुन्तला—(देखकर) पिताजी! पर्णशाला के प्रान्तभाग में विचरण करने वाली, गर्भ के भार से मन्दगति वाली इस मृगी को जब सुख से प्रसव हो जाये (तब) इस प्रिय समाचार को सुनाने वाले किसी व्यक्ति को मेरे पास अवश्य भेजियेगा। इस बात को भूलियेगा नहीं।

कण्व—पुत्री! मैं इस बात को नहीं भूलूँगा।

शकुन्तला—(चलते-चलते रुकावट का अभिनय कर) ओहो! यह कौन मेरे पाँवों से लिपटकर मेरा आँचल खींच रहा है? (यह कहकर पलटकर देखती है।)

कण्व—पुत्री!

Śakuntalā—Father! when this doe, roaming in the neighbourhood of the hut, slow by the pregnancy becomes safely delivered, then you will send some one to announce the happy news to me.

Kaṇva—I will not forget it.

Śakuntalā—*(Gesticulating obstruction to motion)* who indeed may this be that clings to my garments. *(Turns round and watches)*

Kaṇva—Daughter!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्द्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥ १६॥

शकुन्तला—वच्छ! किं मं सहवासपरिच्चाइणीं अणुबंधेसि णं अचिरप्पसूदोवरदाए जणणीए विणा जधा मए बड्ढिदोसि, तधा दाणिं पि मए विरहिदं तादो तुमं चिंतइस्सदि। ता णिउत्तस्स। [**वत्स! किं मां सहवासपरित्यागिनीमनुबध्नासि, ननु अचिरप्रसूतोपरतया जनन्या विना यथा मया वर्द्धितोऽसि, तथा इदानीमपि मया विरहितं तातस्त्वां चिन्तयिष्यति। तन्निवर्त्तस्व।**] (इति रुदती प्रस्थिता।)

अन्वयः—त्वया यस्य कुशसूचिविद्धे मुखे व्रणविरोपणम् इङ्गुदीनां तैलं न्यषिच्यत श्यामाकमुष्टिपरिवर्द्धितकः पुत्रकृतकः सः अयं मृगः ते पदवीं न जहाति॥ १६॥

यस्येति। त्वया=मातृभूतया शकुन्तलया, यस्य=पुत्ररूपस्य मृगस्य, कुशानां सूचिभिः= तीक्ष्णाग्रभागैः, विद्धे=क्षतविक्षतीभूते, मुखे=आनने (वक्त्रान्त इति भावः), व्रणविरोपणं=क्षतनाशकं, इङ्गुदीनां=तदाख्यानां फलानां, तैलं=स्नेहं, न्यषिच्यत=निषिक्तम्, श्यामाकानां=तृणधान्यविशेषाणां, मुष्टिभिः=परिमाणविशेषैः, मुष्टिपरिमितैः, परिवर्द्धितकः=सादरं पुत्रवत् परिपोषितः, कृत्रिमः पुत्र इति पुत्रकृतकः, सः=तथाविधः, अयं=त्वत्पालितः, मृगः=हरिणः, ते=तव, पदवीं=भर्तृगृहगमनमार्गं, न जहाति=न परित्यजति। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १६॥

भावार्थः—न कोऽपि अन्य अपितु स्नेहात् त्वया वर्द्धितः पूर्वोपकृतिस्मरणेन कृतज्ञतया, भविष्यद्वियोगाशङ्कया विह्वलत्वाद् अयं पुत्ररूपहरिण एवं तव भर्तृगृहगमनमार्गं न जहाति। स एवं वस्त्रं कर्षति इति भावः॥ १६॥

शकुन्तला—वत्स=पुत्र! किं मां=शकुन्तलाम्, सहवासम्=एकत्रवासं, परित्यक्तुं शीलं यस्याः सा तां सहवासपरित्यागिनीम्, अनुबध्नासि=अनुगच्छसि (तव मया न प्रयोजनम् इति भावः), ननु=अवधारणे, अचिरं=सद्यः, प्रसूतं यया सा अचिरप्रसूता चासौ उपरता=मृता, चेति सा तया अचिरप्रसूतोपरतया, जनन्या विना=मात्रा विना, स्तन्यपानादिकविनेत्यर्थः, यथा=येन प्रकारेण,

---

कुश के नुकीले अग्रभाग से मुख में घाव हो जाने पर जिसके मुखस्थ व्रण में तुम इङ्गुदी का लेप लगाया करती थी और जिसे तुमने मुट्ठी भर श्यामक घास खिला-खिलाकर पाला था, वही तुम्हारा कृत्रिम पुत्र रूप यह हरिण तुम्हारा मार्ग रोक रहा है॥ १६॥

शकुन्तला—पुत्र! तुम मुझ सहवास त्याग कर जाने वाली का मार्ग क्यों रोक रहे हो? प्रसव के तत्काल बाद तुम्हारी माँ के मर जाने पर जैसे मैंने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा

That fawn, here, your adopted son, on whose mouth when it pricked, with the points of kusha-grass, the sore-healing oil of Iṅgudī fruit was applied (sprinkled) by you and was lenderly reared (breeded) with handful of Śyāmaka grain, does not abandon (give up) your path. (16)

Śakuntalā—Child! why do you follow me who am leaving your company. In absence of your mother, who recently brought

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः—वत्से! अलं रुदितेन, स्थिरा भव, इतः पन्थानमालोकय—

उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
बाष्पं कुरु स्थिरतया शिथिलानुबन्धम्।
अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे
मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति॥ १७॥

मया=शकुन्तलया, वर्द्धितोऽसि=पालितोऽसि, तथा=तेनैव प्रकारेण, इदानीमपि=मद्वियोगकालेऽपि, मया विरहितं=परित्यक्तम्, तातः=कण्वः, त्वाम्=मृगं, चिन्तयिष्यति=रक्षणावेक्षणविषये भावयिष्यति। (जननीवियोगे तवाहं शरणमिदानीं मद्वियोगे तव तातो शरणं भविष्यतीति भावः।) तत्=तस्मात्, निवर्तस्व=मां त्यक्त्वा आश्रमे याहीति भावः। (इति रुदति प्रस्थिता)

कण्वः—वत्से! रुदितेन=रोदनेन, अलम्=पर्याप्तम्, स्थिरा भव=धैर्यमवलम्बस्व, इतः= सम्मुखे, पन्थानम्=मार्गम्, आलोकय=पश्य।

अन्वयः—उत्पक्ष्मणोः नयनयोः उपरुद्धवृत्तिं बाष्पं स्थिरतया शिथिलानुबन्धं कुरु। खलु अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे मार्गे ते पदानि विषमीभवन्ति॥ १७॥

उत्पक्ष्मणोरिति। उत्=उद्गतानि, पक्ष्माणि ययोः उत्पक्ष्मणोः, नयनयोः=नेत्रयोः, उपरुद्धा= प्रतिबद्धा, वृत्तिः=दर्शनशक्तिः, येन तम् उपरुद्धवृत्तिम्, बाष्पम्=अश्रुजलम्, स्थिरतया=धैर्याव- लम्बनेन, शिथिलः=मन्दीभूतः, अनुबन्धः=उत्पत्तिः, यस्य तं शिथिलानुबन्धम्, कुरु। रोदनं मा कुरु इति भावः। पुनरत्र हेतुमाह—खलु=यतः, अलक्षितः=अदृष्टः (अश्रुभरितत्वात्), नतोन्नतः= नीचोच्चः, भूमिभागः=भूमिसन्निवेशः, यस्मिन् तस्मिन्—नतोन्नतभूमिभागे, मार्गे=पथि, ते=तव, पदानि=पदविन्यासाः, विषमीभवन्ति=असमाना भवन्ति (स्खलन्तीति भावः)। अत्र काव्य- लिङ्गमलङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १७॥

किया था उसी प्रकार अब मेरे चले जाने के बाद पिताजी तुम्हारी चिन्ता करेंगे, अतः अब लौट जाओ। (यह कहकर रोती हुई जाती है।)

कण्व—पुत्री! रोओ नहीं, स्थिर हो जाओ। इधर मार्ग की ओर देखो—

आँसुओं के कारण पलकों के ऊपर उठ जाने से नेत्रों की देखने की शक्ति रुक-सी गई है अतः तुम धैर्य धारण कर आँसुओं को रोको। क्योंकि (यदि तुमने ऐसा न किया तो) आँसुओं के कारण नीची-ऊँची भूमि स्पष्टतया दिखायी न देने के कारण मार्ग में चलते समय तुम्हारे पाँव फिसल (विषम हो) सकते हैं॥ १७॥

---

you forth, you indeed have been carefully reared. Even now, when separated from me, father will look after you. Just return. *(Proceeds weeping)*

Kaṇva—Daughter! do not weep, console yourself. See the way this side—

By means of firmness stop the flow of your tears, that obstruch the movement of your eyes, whose eye-lashes are turned up. Really, your steps are becoming uneven on this path where the depressed and elevated portions of ground are not noticed by you.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिष्यौ—भगवन्! 'ओदकान्तं स्निग्धोऽनुगम्यत' इति श्रूयते। तदिदं सरसीतीरम्, अत्र नः सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हसि।

कण्वः—तेन हीमां क्षीरवृक्षच्छायामाश्रयामः।

(सर्वे तथा नाटयन्ति।)

कण्वः—किन्नु खलु तत्रभवतो दुष्यन्तस्य युक्तरूपं सन्देष्टव्यम्। (इति चिन्तयति)

भावार्थः—यात्रावसरे तत् खल्वमङ्गलसूचकं क्वचिद्वेदनाजनकञ्च भवेत्, अतः मार्गमवलोकनाय दर्शनविघातकं बाष्पं निवारय। अन्यथा अलक्षितनीचोच्चभूमिभागे मार्गे तव पदानि असमाना भविष्यन्तीति भावः ॥ १७ ॥

शिष्यौ—भगवन्=ज्ञानादिभिर्नित्ययुक्त! ओदकान्तम्=जलावधि, स्निग्धः=स्नेहास्पदीभूतो जनः, अनुगम्यते=अनुसरणं करोति, इति परम्परया श्रूयते=आकर्ण्यते। तत्=तस्मात्, इदं=पुरःस्थितं, सरसीतीरम्=जलस्य समीपदेशः, अत्र=अस्मिन् प्रदेशे, नः=अस्मान्, सन्दिश्य=दुष्यन्तसमीपे गत्वास्माभिः किं वक्तव्यम्? तद् सन्दिश्य=वाचिकमुपदिश्य, प्रतिगन्तुमर्हसि=आश्रमं प्रतिनिवर्तताम्।

कण्वः—तेन=यद्येवं तर्हि, इमं=पुरोवर्त्तिनीम्, क्षीरीवृक्षछायाम्=दुग्धस्रावी सघनपादपच्छायाम्, आश्रयामः=संश्रयामः।

(सर्वे तथा=क्षीरीवृक्षच्छायाश्रयणं, नाटयन्ति=नाट्येन कुर्वन्ति।)

कण्वः—किन्नु इति वितर्के, खल्विति विमर्शे, तत्रभवतः=माननीयस्य, दुष्यन्तस्य (समीपे) युक्तरूपम्=अतिशयेन युक्तम् (अनुरूपम्), सन्देष्टव्यम्=सन्देशरूपेण स्वकीयवृत्तं प्रेषणीयम्। (इति=इत्युक्त्वा, चिन्तयति=विमर्शति।)

शिष्य—भगवन्! सुनते हैं कि प्रियजन जलवाले स्थान (जलाशय) तक पहुँचाने जाते हैं। तो यह बावली का तट है अतः आप हमें जो कुछ कहना-सुनना है वह बताकर लौट जाइए।

कण्व—यदि ऐसा है तो चलो इस क्षीरी वृक्ष की छाया में बैठें।

(सब बैठने का अभिनय करते हैं।)

कण्व—माननीय राजा दुष्यन्त के लिए कौन-सा सन्देश भेजा जाय? (सोचने लगते हैं।)

Pupil—Respected sir! it is heard that a beloved person should be followed as far as the waters brink. So, this is the bank of a lake. Having given us your message here, it behoves you to return.

Kaṇva—Then, let us resort to the shade of some Kṣīri (Milky) tree.

(All acts accordingly)

Kaṇva—What may be the message which we should most appropriately send to his honour Duśyanta? *(Meditates)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसूया—सहि! अस्समपदे ण अत्थि को वि चित्तवंतो, जो तुए विरहिज्जंतो ण ताम्मदि। पेक्ख दाव। [सखि! आश्रमपदे नास्ति कोऽपि चित्तवान्, यस्त्वया विरह्यमाणो न ताम्यति। प्रेक्षस्व तावत्।]

पुडइणि वत्तंतरिअं वाहरिओ वि ण हु वाहरेइ पिअं।
मुह उव्वूढमिणालो तई दिट्ठिं देइ चक्कओ॥ १८॥
[पुटकिनीपत्रान्तरितां व्याहृतोऽपि न खलु व्याहरति प्रियाम्।
मुख उद्व्यूढमृणालस्त्वयि दृष्टिं ददाति चक्रवाकः॥ १८॥]

कण्वः—वत्स! शार्ङ्गरव! इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्याभिधातव्यः।

अनसूया—सखि! आश्रमपदे=अत्र तापसाश्रमे, नास्ति=न विद्यते, कोऽपि जनः, चित्तवान्=चेतनः पदार्थः, यः जनः, त्वया=शकुन्तलया, विरह्यमाणः=त्याज्यमानः, न ताम्यति=न कातरो भवति। (सर्वमेव सत्त्वं त्वत्प्रयाणे व्याकुलमिति भावः) तावत् प्रेक्षस्व=पश्य—

अन्वयः—व्याहृतोऽपि चक्रवाकः पुटकिनीपत्रान्तरितां प्रियां न खलु व्याहरति, मुख उद्व्यूढमृणालः त्वयि दृष्टिं ददाति॥ १८॥

पुटकिनीति। व्याहृतोऽपि=प्रियया आहूतोऽपि, चक्रवाकः=तन्नामा पक्षी, पुटकिन्याः=पद्मिन्याः, पत्रैः=दलैः, अन्तरिताम्=आभ्यन्तरीकृताम्, पुटकिनीपत्रान्तरिताम्=पद्मिनीदलैरावृतदेहाम्, प्रियाम्=चक्रवाकीम्, न खलु व्याहरति=नैव प्रतिवक्ति (प्रत्युत्तरं ददाति), मुखे=वदने, उद्व्यूढं=भक्षणायोत्तोल्य धृतं, मृणालं येन सः उद्व्यूढमृणालः, त्वयि=शकुन्तलायाम्, दृष्टिं ददाति। त्वद्गतचित्ततया मुखगतमपि मृणालं न भक्षयतीति भावः। अत्र परिसंख्यालङ्कारः, आर्य्या जातिः॥ १८॥

भावार्थः—प्रियया आहूतोऽपि चक्रवाकः पद्मिनीपत्रान्तरितां चक्रवाकीम् उत्तरं न ददाति। अल्पज्ञानवतः पक्षिमात्रस्येदृगवस्थत्वे विशिष्टज्ञानवतो मनुष्यस्य त्वद्विरहकातरता अवश्यं भाव्यैवेति भावः॥ १८॥

अनसूया—सखी! इस तपोवन में कोई ऐसा सचेतन प्राणी नहीं है जो तुम्हारे वियोग से खिन्न न हो। जरा देखो—

यद्यपि चकवी आवाज देती (बुलाती) है तथापि कमलिनी के पत्तों में छिपी हुयी प्रिया को चकवा कोई उत्तर नहीं देता। वह अपने मुख में मृणाल उठाये हुए केवल तुम्हें ही निहार रहा है॥ १८॥

कण्व—वत्स शार्ङ्गरव! तुम हमारी आज्ञानुसार शकुन्तला को आगे करके राजा दुष्यन्त से इस प्रकार कहना।

Anasūyā—Dear! there is no living being in this penance-grove. Who is not sad due to your separation. Just see—

Though the female cakrawāka calling her mate but he does not give any reply to her, who is hidden under lotus leaves. Lifting lotus stalk in his mouth he only observes you. (18)

Kaṇva—Śārṅgarava, thus should that king be addressed by you in my name, having presented Śakuntalā before.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—आज्ञापयतु भवान्।

[पाठान्तरमपि क्वचिल्लभ्यते यथा—]

शकुन्तला—(जनान्तिकम्) हला पेक्ख! णलिणी पत्तमेत्तांतरिदं वि सहअरं अदेक्खंती आदुरा चक्कवाई आरउदि। दुस्करं क्खु अहं करेमि! [हला! पश्य! नलिनीपत्र-मात्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति। दुष्करं खल्वहं करोमि।]

अनुसूया—सहि! मा एव्वं मंतेहि। [सखि! मैवं मन्त्रय]

एसा वि पिएण विणा गमेइ रअणिं विसाअदिहअरम्।
गरुअं पि विरहदुक्खं आसाबंधो सहावेदि॥
[एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति॥]

कण्वः—वत्स शार्ङ्गरव! शकुन्तलां पुरस्कृत्य=अग्रतः कृत्वा, त्वया=भवता, मद्वचनात्=मद्वचनमाश्रित्य, स राजा=दुष्यन्तः, इति=एवं, अभिधातव्यः=वक्तव्यः।

शार्ङ्गरवः—आज्ञापयतु=निर्दिशतु, भवान्।

शकुन्तला—(जनान्तिकम्=सख्याः कर्णे) हला=सखि! पश्य! नलिनीपत्रमात्रान्तरित-मपि=मात्रकमलिनीदलावृतमपि, सहचरं=भर्त्तारं चक्रवाकम्, अपश्यन्ति=अनवलोकयन्ति, आतुरा=विक्षुब्धा, चक्रवाकीः=चक्रवाकपत्नी, आरटति=किमपि प्रलपति। अहं=पुनरहं, दुष्करं=कठिनं, खल्विति निश्चयेन, करोमि।

अनसूया—सखि! मैवं मन्त्रय=एवं मा चिन्तय—

अन्वयः—एषा अपि विषाददीर्घतरां रजनीं प्रियेण विना गमयति। आशाबन्धः गुरु अपि विरहः साहयति।

शार्ङ्गरव—आप आज्ञा दीजिए।

शकुन्तला—(सखी के कान में) सखी! देख, कमलदल मात्र में छिपे हुए अपने प्रिय को न देख पाकर चक्रवाकी दुःख से विलाप कर रही है। मैं निश्चय ही एक कठिन कार्य कर रही हूँ।

अनसूया—सखी! ऐसा न कहो।

यह भी अपने प्रिय के बिना दुःख से दीर्घ होने वाली रात को बिताती ही है। आशा का बन्धन (विरही को) असह्य विरह को भी सहने में समर्थ बना देता है।

Śārṅgarava—Let your reverance command.

Śakuntalā—(Aside) Dear! observe, not seeing her mate though hidden by a mere lotus-leaf, the female-cakravāka is crying in distress. I certainly am doing what is difficult to do.

Anasūyā—Dear! do'nt say so.

Even she without her mate passes the night, grown longer through grief. The bond of hope, makes persons bear the sorrow of separation, though it is very difficult to bear.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः— अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलञ्चात्मन-
स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिञ्च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्याधीनमतः परं न खलु तत्स्त्रीबन्धुभिर्याच्यते॥ १९॥

एषापीति। एषापि=चक्रवाकी अपि, विषादेन=वियोगदुःखेन, दीर्घतरां=महत्तराम्, रजनीं=क्रीडायोग्यां रात्रिम्, प्रियेण विना=चक्रवाकेन विना, गमयति=अतिवाहयति। आशाबन्धः=आशारूपं बन्धनम्, गुर्वपि=दुर्वहमपि, विरहं दुःखं=प्रियावियोगदुःखं, साहयति=विरहिजनं दुःखं सोढुं समर्थयति। (विरहिणश्च पुनः समागमेच्छया महदपि दुःखं सहन्ते इति भावः।)

कण्वः—

अन्वयः—अस्मान् संयमधनान् साधु विचिन्त्य (तथा) आत्मनः उच्चैः कुलं (विचिन्त्य) तथा त्वयि अस्याः कथमपि अबान्धवकृतां तां प्रवृत्तिञ्च त्वया इयं दारेषु सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकं दृश्या अतःपरं भाग्याधीनं स्त्रीबन्धुभिः तत् न खलु याच्यते॥ १९॥

अस्मानिति। अस्मान्=अस्याः आत्मीयान्, संयमः=तपः, एव धनं येषां तान् संयमधनान्=तपोधनान्, साधु=सम्यक्, विचिन्त्य=मनसा पर्यालोच्य, तथा, आत्मनः=स्वस्य, उच्चैः=उन्नतं, कुलं=वंशञ्च, विचिन्त्य, तथा त्वयि अस्याः=शकुन्तलायाः, कथमपि=केनापि प्रकारेण, बान्धवैः=पित्रादिबन्धुजनैः, कृतेति बान्धवकृता, न बान्धवकृता अबान्धवकृता, ताम् अबान्धवकृताम्=शकुन्तलया स्वयमेव विहिताम्, अथवा—कथमपि=वाक्यप्रयोगेन, बान्धवैः=अस्माभिः, अकृतां=स्वयं गान्धर्वविधिना कृताम् (कन्याप्रदानाधिकृतैरस्माभिः अकृताम्), ताम्=तादृशीम्, स्नेह-प्रवृत्तिम्=अनुरागोत्पत्तिम्, च (विचिन्त्य), त्वया=भवता, इयं=शकुन्तला, दारेषु=भार्य्यासु मध्ये, सामान्या=सर्वजनसुलभा, या प्रतिपत्तिः=गौरवबुद्धिः, तत्पूर्वकम्=तत्पुरस्कारेण, सामान्यप्रतिपत्ति-पूर्वकम्=अपरा भार्या यथा इयं शकुन्तलापि तथैवेति समानताज्ञानपूर्वकमेव, दृश्या=द्रष्टव्या, अतःपरं=सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकदर्शनमात्रादधिकम्, भाग्याधीनं=कन्यायाः सुखदुःखबहुमतत्वादिकं वा अदृष्टप्रयुक्तमेव, स्त्रीबन्धुभिः=कन्यानां पित्रादिबान्धवजनैः, तत्=विशेषप्रतिपत्त्यादर्शनम्, न खलु याच्यते=नैव प्रार्थ्यते। अत्र तुल्ययोगिता-काव्यलिङ्ग-अप्रस्तुतप्रशंसाश्चालङ्काराः। एतेषामलङ्काराणां परस्परनैरपेक्ष्येण संसृष्टिः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १९॥

कण्व—हमारे पास केवल तपस्या रूपी धन है तथा आपका वंश भी उच्च है एवं आपके प्रति शकुन्तला को प्रेम हुआ है और उसके परिणामस्वरूप बिना स्वजनों के समर्पण के उसने जो गान्धर्व रीति से आप से विवाह किया है—इन सब बातों को भलीभाँति विचारकर आप इसे भी अपनी दूसरी रानियों के समान ही देखियेगा। इससे अधिक आदर पाना भाग्य के अधीन है और उसके लिए कन्या के स्वजन प्रार्थना भी नहीं कर सकते॥ १९॥

Kaṇva—Having well thought of us as rich in self control, and of your high family, and of the flow of affection of her's towards you by no means brought about by relatives, this Śakuntalā should be looked upon by you, among your other wives, with the commen respect. Further then this depends upon fate, that indeed, should not be expressed by the kinsmen of a girl. (20)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—गृहीतोऽयं सन्देशः।

कण्वः—(शकुन्तलां विलोक्य) वत्से! त्वमिदानीमनुशासनीयासि। वनौकसोऽपि वयं लौकिकज्ञा एव।

शार्ङ्गरवः—भगवन्! न खलु कश्चिदविषयो नाम धीमताम्।

कण्वः—सा त्वमितः पतिगृहं प्राप्य—

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।

भावार्थः—अस्मान् तपोधनान् सम्यक् पर्यालोच्य तथा आत्मन आभिजात्यविभूत्यादिभिरुन्नतं कुलञ्च विचिन्त्य तथा त्वयि अस्याः कथमपि अबान्धवकृतां तादृशीम् अनुरागोत्पत्तिं च विचिन्त्य त्वत्समीपे प्रेषिता इयं मे दुहिता त्वया सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमेव द्रष्टव्या, न पुनस्ता राजकन्यकाः इयं तु मुनिकन्येति भेदबुद्ध्या ताभ्योऽधमत्वेन दृश्या। अतः परं यत्प्राप्तव्यं तत्तु भाग्याधीनम्, अत एव कन्यानां पित्रादिबान्धवजनैः तत् सन्तानवात्स्यादीप्सितमपि प्रार्थनामात्रेणालभ्यत्वान्नैव प्राथ्यर्ते॥ १९॥

शार्ङ्गरवः—अयं=भवदुक्तं, सन्देशः=सन्दिष्टार्थः, गृहीतः=अवधृतः (एतमेवार्थं राजानं बोधयामः।)

कण्वः—(शकुन्तलां=दुहितां, विलोक्य=दृष्ट्वा) वत्से! इदानीं=सम्प्रति, पतिगृहप्रवेशसमये, त्वम्, अनुशासनीयासि=गार्हस्थ्यविषये उपदेष्यासि। वयम्, वनम् ओकः=आश्रयः, येषान्ते, वनौकसः=आश्रमवासिनः, अपि, लौकिकज्ञा=लोकवृत्तज्ञा एव।

शार्ङ्गरवः—भगवन्=गुरुदेव! धीमतां=प्रशस्तबुद्धिशालिनां जनानां, कश्चिद्=कोऽपि पदार्थः, न खल्वविषयः=नैव बुद्धेरगोचरः, नामेति सम्भावनायाम् (वनवासित्वेऽपि बुद्धिमत्तया भवान् सम्यगुपदेष्टुमर्हतीति भावः।)

शार्ङ्गरव—यह सन्देश हमने ग्रहण कर लिया।

कण्व—(शकुन्तला को देखकर) बेटी! अब तुम्हें कुछ शिक्षा देनी है। हमलोग आश्रमवासी होते हुए भी लौकिक विषयों को जानते हैं।

शार्ङ्गरव—भगवन्! बुद्धिमानों के लिए कोई विषय अज्ञेय नहीं होता।

कण्व—यह तुम यहाँ से अपने पति के घर पहुँचकर—

गुरुजनों की सेवा करना, सौतों के साथ सखी के समान बर्ताव करना, यदि स्वामी

Śārṅgarava—The message has been received.

Kaṇva—Daughter! you have now to be instructed. Though we have our abode in the forest yet we know the customes of the worldly life.

Śārṅgarava—Actually there is nothing out of province to the intelligent.

Kaṇva—You, then, having gone to your husband's house from here—

Serve your elders, behave like a dear friend towards your co-

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोगेष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥ २०॥

गौतमी वा किं न मन्यते।

कण्वः—सा त्वम्=शकुन्तला, इतः=आश्रमात्, पतिगृहं=स्वामिनो गृहं, प्राप्य=गत्वा, प्रविश्य वा—

अन्वयः—गुरून् शुश्रूषस्व, सपत्नीजने प्रियसखीवृत्तिं कुरु, विप्रकृतापि रोषणतया भर्तुः प्रतीपं मा स्म गमः, परिजने भूयिष्ठं दक्षिणा भव, भोगेषु अनुत्सेकिनीभव। एवं युवतयः गृहिणीपदं यान्ति, वामाः कुलस्य आधयः भवन्ति॥ २०॥

शुश्रूषस्वेति। गुरून्=पूज्यान् श्वश्रूश्वसुरादिगुरुजनान्, शुश्रूषस्व=सादरं परिचर्यां कुरु। समानः पतिः यस्याः सा एव जनः, तस्मिन् सपत्नीजने=इतरपत्नीषु विषये, प्रियसखीवृत्तिं=प्रियवयस्या सदृशं व्यवहारं कुरु। विप्रकृतापि=भर्त्रैवावमानिताऽपि, रोषणतया=कोपनतया, भर्तुः=स्वामिनः, प्रतीपं=प्रतिकूलं, मा स्म गमः=न गच्छ (प्रतिकूलवर्तिनी मा भव)। परिजने=दास-दास्यादिपरिचारकवर्गे, भूयिष्ठम्=अतिशयेन, दक्षिणा=उदाराशया भव। भोगेषु=सुखेषु, अनुत्सेकिनी=अगर्विता भव। एवम्=अनेन प्रकारेण वर्त्तमाना, युवतयः=तरुण्यः, गृहिणीपदं=गृहिण्याः पदं स्थानं वा, गृहिणीति व्यपदेशं, यान्ति=प्राप्नुवन्ति, किन्तु वामाः=उक्ताद्विरुद्धा-चरणशीला युवतयः, कुलस्य=पत्युः पित्रोश्च वंशस्य, आधयः=मनस्तापजनिका भवन्ति। अत्र निदर्शना, अर्थान्तरन्यासः, रूपकं हेत्वलङ्कारोऽपि च दृश्यते। इत्येतेषां परस्परं नैरपेक्ष्येण संसृष्टिः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ २०॥

भावार्थः—पतिगृहं प्राप्य गुरून् शुश्रूषस्व, सपत्नीजने प्रियसखीवृत्तिं कुरु। भर्त्रैवावमानि-तापि कोपनतया भर्तुः प्रतिकूलवर्त्तिनी मा भव। यथा परिजनास्त्वय्यनुरागिणो भवन्ति तथा दाक्षिण्यं कुरु (स्वकीयामुदारतां दर्शय)। अनेम रूपेण वर्त्तमाना तरुण्यः गृहिणीपदं प्राप्नुवन्ति, किन्तु वामाः (उक्ताद्विरुद्धवर्तिन्यः) युवतयः कुलस्य मनस्तापजनिका भवन्ति। तस्मादुक्तविपरीता मा भव॥ २०॥

कालिदासस्य सर्वस्वभूतेषु श्लोकचतुष्टयेषु मध्येऽयमेकतमः सर्वस्वभूतः श्लोकः।

अपमान भी करे तो क्रोधवश उनके प्रतिकूल व्यवहार न करना, सेवकों के प्रति उदारता का व्यवहार करना और भोगों को भोगते हुए अगर्वित रहना। इस प्रकार का आचरण करनेवाली युवतियाँ अनायास ही गृहिणी पद को प्राप्त कर लेती हैं, किन्तु इसके विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ तो पिता और पति दोनों के कुल के लिए मनस्ताप उत्पन्न करने वाली होती हैं॥ २०॥

गौतमी की क्या राय है (मैं शकुन्तला से ठीक कह रहा हूँ या नहीं)?

---

wives, (rival or co-wives) though ill treated by your husband, do not go against him in anger, be extremely courteous towards your servants, be not puffed up in fortune; in this way do young woman attain the position of house wives, the perverse are the curse (cause of mental warries) of their family. (20)

Or how does Gautamī think?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—एत्तिओ क्खु वहुजणे उबदेसो। जादे! एदं क्खु हिअए करेहि, मा विसुमरिस्ससि। [एतावान् खलु वधूजने उपदेशः। जाते! एतत् खलु हृदये कुरु, मा विस्मरिष्यसि।]

कण्वः—वत्से! एहि परिष्वजस्व मां सखीजनञ्च।

शकुन्तला—ताद! इदो ज्जेव किं पिअसहीओ णिउत्तिस्संति! [तात! इत एव किं प्रियसख्यौ निवर्त्तिष्येते?]

कण्वः—वत्से! इमे अपि प्रदेये, तत्र युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी गमिष्यति।

शकुन्तला—(पितुरङ्कमाश्लिष्य) कधं दाणिं तादस्स अंकाइं परिब्भट्टा मलअपव्वदादो उम्मुलिदा चंदणलदा विअ देसंतरे जीविदं धारइस्सं? [कथमिदानीं तातस्य अङ्कात् परिभ्रष्टा मलयपर्वतादुन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि?]

गौतमी वा किं न मन्यते=मनसि करोति, एवं वा न वा इत्यर्थः।

गौतमी—एतावान्=उक्तरूप एव (इयन्मात्रमेव), खल्विति निश्चयेन, वधूजने=वधूजन-विषये, उपदेशः, जाते=पुत्रि! एतत्=उपदेशम्, खल्विति निश्चयेन, हृदये कुरु=मनसि संरक्ष, मा विस्मरिष्यसि=कदाप्येनं विस्मृतिपथं मा प्राप्नुहि।

कण्वः—वत्से! एहि=आगच्छ, परिष्वजस्व=आलिङ्ग, मां=कण्वं, सखीजनञ्च= अनसूयाप्रियंवदे चेति।

शकुन्तला—तात! इत एव=अस्मात् स्थानादेव, प्रियसख्यौ=अनसूया-प्रियंवदे, निवर्त्तिष्येते=आश्रमपदं गमिष्यतः, किमिति प्रश्ने।

कण्वः—वत्से! इमे=तव सहचरीभूते=अनसूया-प्रियंवदेऽपि, प्रदेये=प्रदातव्ये (यथा त्वं तथा इमे अपि पात्रसात्कर्त्तव्ये), तत्=तस्मात्, अनयोः=तव सख्योः, तत्र=राजधान्याम्, गन्तुं न युक्तम्=न उचितम्। त्वया सह=सार्धं, गौतमी=मम धर्मभगिनी, गमिष्यति।

गौतमी—बहुओं के लिए इतना ही उपदेश पर्याप्त है। बेटी! यह उपदेश सदैव मन में रखना, भूलना नहीं।

कण्व—पुत्री! आओ और मुझसे तथा अपनी सखियों से गले मिलो।

शकुन्तला—पिताजी! क्या मेरी सखियाँ यहीं से लौट जायेगीं?

कण्व—पुत्री! मुझे इन्हें भी तो (उत्तम वर के हाथों में) सौपना है। इस कारण इनका वहाँ जाना उचित नहीं है। तुम्हारे साथ गौतमी जायेगी।

Gautamī—This much advice for brides is enough. Daughter, remember this forever or preserve it in your mind forever.

Kaṇva—Daughter embrace me and your friends.

Śakuntalā—Father! will my friends return just from here?

Kaṇva—They too have to be given away. It is not proper for them to go there. Gautamī will go with you.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः—वत्से! किमेवं कातरासि?

> **अभिजनवतो भर्त्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे**
> **विभवगुरुभिः कृत्यैरस्य प्रतिक्षणमाकुला।**
> **तनयमचिरात्प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं**
> **मम विरहजां न त्वं वत्से! शुचं गणयिष्यसि॥ २१॥**

शकुन्तला—(पितुः=जनकस्य, अङ्कं=क्रोडं, आश्लिष्य=आलिङ्ग्य) कथम्=केन प्रकारेण, इदानीम्=सम्प्रति, तातस्य=पितुः, अङ्कात्=क्रोडात्, परिभ्रष्टा=च्युता, मलयपर्वतात्=मलयाचलात्, उन्मूलिता=उत्पाटिता, चन्दनलतेव=चन्दनतरुरिव, देशान्तरे=भिन्नदेशे, जीवितम्=जीवनम्, धारयिष्यामि=जीविष्यामीत्यर्थः।

कण्वः—वत्से! एवम्=अनेन प्रकारेण, कातरा=विक्लवा, किमसि=कथं भवसि?

अन्वयः—अभिजनवतः भर्त्तुः श्लाघ्ये गृहिणीपदे स्थिता (तथा) अस्य विभवगुरुभिः कृत्यैः प्रतिक्षणं आकुला सती अचिरात् प्राची पावनम् अर्कमिव (पावनं) तनयं प्रसूय मम विरहजां शुचं वत्से! त्वं न गणयिष्यसि॥ २१॥

अभिजनवत इति। अभिजनवतः=कुलीनस्य, भर्त्तुः=स्वामिनः, श्लाघ्ये=प्रशंसनीये, गृहिण्याः पदं गृहिणीपदं, तस्मिन् गृहिणीपदे=गृहिणीलक्षणाधिकारे (महादेवीपदे), स्थिता=प्रतिष्ठिता सती, तथा अस्य=पत्युः, विभवेन=धनसम्पत्त्या, गुरुभिः=महद्भिः, विभवगुरुभिः, कृत्यैः=नित्यनैमित्तिककाम्यरूपैःकर्मभिः, प्रतिक्षणं=सर्वदा, आकुला=व्यग्रा सती, अचिरात्=अविलम्बेनैव, प्राची=पूर्वादिग्, पावनम्=जगत्पवित्रकरम्, अर्कं=सूर्यमिव, पावनं=पवित्रताजनकं, तनयं=पुत्रम्, प्रसूय=जनयित्वा, मम=कण्वस्य, विरहजां=मद्वियोगजनितां, शुचं=शोकम्, वत्से!=पुत्री! त्वं

शकुन्तला (पिता की गोद से लिपटकर) मलयपर्वत से उखाड़ी हुई चन्दनलता (चन्दन के क्षुप) के समान अब मैं आपकी गोद से वियुक्त होकर देशान्तर में कैसे जीवन धारण कर सकूँगी।

कण्व—पुत्री! क्यों इस प्रकार व्याकुल हो रही हो?

श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न स्वामी की आदरणीया गृहिणी बनकर, अपार सम्पदा से परिपूर्ण गृहस्थी को सम्हालने में व्यग्र रहकर जैसे पूर्व दिशा संसार को पवित्र बनाने वाले सूर्य को जन्म देती है उसी प्रकार कुछ ही दिनों में पवित्र पुत्र की माता बनकर तुम हमारे विरह से उत्पन्न शोक को कभी स्मरण भी न करोगी॥ २१॥

Śakuntalā**—*(Embracing her father)*** How now, dropped from my father's lap, like a sandal plant from the side of the Malaya, I support life in another country (place)?

Kaṇva**—**Daughter! why are you so unhappy?

Stationed in the honourable position of the house-wife of a husband of noble race, and distracted every moment with his affairs grand by reason of his prosperity, and having in a short time given birth to a holy son, like the east giving birth to the sun, you will not, child! Mind the sorrow arising from separation from me.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(पितुः पादयोः पतित्वा) ताद! वंदामि। [तात वन्दे!]

कण्वः—वत्से! यदहमिच्छामि, तदस्तु ते।

शकुन्तला—(सख्यावुपगम्य) सहीओ! एध, दुवे वि मं समं उज्जेव परिस्सजध। [सख्यौ! एतम्, द्वे अपि मां सममेव परिष्वजेथाम्।]

सख्यौ—(तथा कृत्वा) सहि! जइ णाम सो राएसी पच्चहिण्णणमंथरो भवे, तदो से इमं अत्तणो णामधेअंकिदं अंगुलिअअं दंसइस्ससि। [सखी! यदि नाम स राजर्षिः प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, तदा अस्य इदमात्मनो नामधेयाङ्कितमङ्गुरीयकं दर्शयिष्यसि।]

न गणयिष्यसि=न ज्ञास्यसि। अत्र श्रौतीपूर्णोपमालङ्कारः, तथा काव्यलिङ्गं समुच्चयश्चापि। इत्येतेषामलङ्काराणामङ्गाङ्गित्वेन साङ्कर्यम्। तथात्र श्रुतिवृत्त्यनुप्रासौ शब्दालङ्कारौ। हरिणी वृत्तम्॥ २१॥

भावार्थः—महादेवीपदप्राप्त्या अनन्यनिर्वाह्यतत्तत्कार्यव्यग्रतया पावनतमपुत्रोत्पत्त्या च मद्वियोगदुःखं नानुभविष्यसि इत्याशयः। तस्मात् किमेवं कातरासीति भावः॥ २१॥

शकुन्तला—(पितुः=जनकस्य, पादयोः=चरणयोः, पतित्वा=उपनम्य) तात! वन्दे= प्रणमामि।

कण्वः—वत्से=दुहिते! यद्=महत्सौभाग्यादिकम्, अहम्=कण्वः, (त्वत्कृते) इच्छामि= कामये, तत्=तत्सर्वम्, ते=तव, अस्तु=सर्वमभीष्टं ते भवतु।

शकुन्तला—(सख्यौ=अनसूया-प्रियंवदेति, उपगम्य=निकटमेत्य) सख्यौ=युवाम्, एतम्=आगच्छतम्, द्वे अपि=उभे अपि (युवाम्), सममेव=युगपदेव, परिष्वजेथाम्=आलिङ्गतम्।

सख्यौ—(तथा कृत्वा=यथोक्तं विधाय, आश्लिष्य इत्यर्थः) सखि! यदि नाम=यदि वा, नामेति विकल्पे, स राजर्षिः=दुष्यन्तः, प्रत्यभिज्ञाने=सेयं शकुन्तलेति ज्ञाने, मन्थरः=विलम्बमानः, प्रत्यभिज्ञानमन्थरः, भवेत्, तदा=तर्हि, अस्य समीपे, इदम्=कराङ्गुलिस्थितम्, आत्मनः=स्वस्य, (तस्यैव राज्ञः) नामधेयाङ्कितं=नामाक्षराङ्कितम्, अङ्गुरीयकम्=मुद्रिकाम्, दर्शयिष्यसि।

शकुन्तला—(पिता के चरणों में गिरकर) पिताजी! प्रणाम करती हूँ।

कण्व—बेटी! मेरी जो इच्छा है वह तुम्हारे लिए पूर्ण हो।

शकुन्तला—सखियो! आओ, तुम दोनों एक साथ मुझसे गले मिलो।

दोनों सखियाँ—(आलिंगन करके) सखी! यदि वे राजर्षि तुम्हें पहचानने में विलम्ब करें तो उनके नाम की यह अँगूठी उन्हें दिखा देना।

Śakuntalā—(Falls at the feet of her father) Father! I salute you.

Kaṇva—May that be yours which I wish.

Śakuntalā—(Approaching the friends) Friends! embrace me both of you simultaneously.

Friends—(Acting the same) Friend! if possibly that king is slow to recognise you, then show him that ring bearing his own name.

CC-O. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—इमिणा वो संदेसेण कंपिदं मे हिअअं। [अनेन वां सन्देशेन कम्पितं मे हृदयम्।]

सख्यौ—सहि! मा भाआहि। सिणेहो पावमासंकदि। [सखि! मा विभेहि। स्नेहः पापमाशङ्कते।]

शार्ङ्गरवः—भगवन्! दूरमधिरूढः सविता, तत्त्वरयात्रभवतीम्।

शकुन्तला—(भूयः पितुरङ्कमाश्लिष्य आश्रमाभिमुखीभूय च) ताद! कदा णु क्खु भूओ तवोवणं पेक्खिस्सं। [तात! कदा तु खलु भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये।]

कण्वः—वत्से!

शकुन्तला—वां=युवयोः, सन्देशेन=उक्तकथनेन, मे=मम, हृदयं कम्पितम् (राजकर्तृक-विस्मरणसम्भावनया इत्याशयः)।

सख्यौ—सखि! मा विभीहि=भयं मा कुरु, स्नेहः=प्रेमातिशयः, पापम्=पापजन्यम-मङ्गलम्, आशङ्कते=आशङ्काविषयं करोति (स्नेहवान् जनः सर्वदा स्निग्धजनेऽनिष्टाशङ्कां करोतीति भावः)।

शार्ङ्गरवः—भगवन्! सविता=सूर्यः, दूरम्=उदयस्थानादनल्पान्तरमाकाशम्, अधिरूढः= आरूढः, तत्=तस्मात् कारणात्, तत्रभवतीम्=पूज्यां शकुन्तलाम्, त्वरय=गमनाय शीघ्रं प्रेरय (वर्धताकालेन आतपाक्रमणेन क्लेशो भविष्यतीति भावः)।

शकुन्तला—(भूयः=पुनः, पितुः=जनककण्वस्य, क्रोडम्=उत्सङ्गमाश्लिष्य=आलिङ्ग्य, च=तथा, आश्रमाभिमुखीभूय=आश्रमं पश्यन्) तात! कदा भूयः=पुनः कदा, नु=प्रश्ने, खलु= निश्चितम्, तपोवनम्=आश्रमपदं, प्रेक्षिष्ये=द्रक्ष्यामि।

कण्वः—वत्से=जाते!

शकुन्तला—तुम्हारी बात से तो मेरा हृदय काँपने लगा है।

सखियाँ—सखी! भय न करो। प्रेम अमङ्गल की आशङ्का करता ही है।

शार्ङ्गरव—भगवन्! सूर्य बहुत ऊँचा उठ आया है अतः मान्या शकुन्तला को शीघ्रता करने के लिए कहिए।

शकुन्तला—(पुनः पिता की गोद से लिपटकर तथा आश्रम की ओर देखकर) पिताजी! अब फिर कब मैं इस तपोवन को देख सकूँगी?

कण्व—पुत्री!

Śakuntalā—My heart trembles at this suspicion of yours.

Friends—Dear, be not afraid. Excessive affection apt to suspect evil.

Śārṅgarava—The sun has ascended to another division of the sky. Let your ladyship make haste.

Śakuntalā—*(Again embracing her father's lap and facing the penance grove)* Father! when may I indeed see the penance grove again?

Kaṇva—Daughter!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूत्वा चिराय सदिगन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं प्रसूय।
तत्सन्निवेशितधुरेण सहैव भर्त्रा
शान्त्यै करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्॥ २२॥

गौतमी—जादे! परिहीअदि दे गमणवेला, ता निउत्तावेहि पिदरं। अधवा चिरेण वि एसा ण णिउत्तिस्सदि, ता णिउत्तदु भवं। [जाते! परिहीयते ते गमनवेला, तन्निवर्त्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि एषा न निवर्त्तिष्यते, तन्निवर्त्ततां भवान्।]

अन्वयः—चिराय सदिगन्तमहीसपत्नी भूत्वा अप्रतिरथं दौष्यन्तिं तनयं प्रसूय तत्सन्निवेशितधुरेण भर्त्रा सहैव अस्मिन् आश्रमे शान्त्यै पुनः पदं करिष्यसि॥ २२॥

भूत्वेति। चिराय=दीर्घकालपर्यन्तम्, दिगन्तैः सहेति सदिगन्ता=समग्रा, या मही=पृथिवी, तस्याः सपत्नी=समानभर्तृका, सदिगन्तमहीसपत्नी, भूत्वा, तथा न विद्यते प्रतिरथः=स्वसमानयोद्धा, यस्य तम् अप्रतिरथम्=प्रतियोगिशून्यम्, दुष्यन्तस्यापत्यं पुमान् दौष्यन्तिस्तं दौष्यन्तिम्=दुष्यन्तस्यौरसं, तनयं=पुत्रम्, प्रसूय=उत्पाद्य, तस्मिन्=सुते, सन्निवेशिता=समर्पिता, धूः=साम्राज्यभारः, येन तेन तत्सन्निवेशितधुरेण, भर्त्रा=पत्या दुष्यन्तेन सहैव, अस्मिन् आश्रमे=तपोवने, शान्त्यै=शान्तिलाभाय, पुनः=भूयः, पदम्=स्थितिम्, करिष्यसि। अत्र मह्यमपि पत्नीत्वारोपात् रूपकालङ्कारः तथा च तस्याः तत्सन्निवेशनं तत्र च भारनिवेशनम् इति मालादीपकालङ्कारः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २२॥

भावार्थः—इदानीं सत्यपि विच्छेदे पश्चादत्र दीर्घकालावस्थानसम्भवान्नैवमत्यन्तो विषादः कार्यः। परम्परयैव राजानो वानप्रस्थे राज्यभारं पुत्रे निक्षिप्य शान्तिलाभाय वने समायान्त्यैव तदैव त्वमपि पुनः अत्रागच्छसि इति भावः॥ २२॥

गौतमी—जाते=वत्से! ते=तव, गमनवेला=प्रस्थानसमयः, परिहीयते=ईदृशालोचनेनाति-

---

बहुत काल तक दिगन्त भूमण्डल की सौत बनी रहकर तथा जिसका कोई प्रतियोगी न हो ऐसे दुष्यन्त के औरस पुत्र को जन्म देकर तथा (यथासमय) उस पर राज्य का सारा भार डालकर अपने पति के साथ शान्ति प्राप्त करने के लिए फिर तुम यहाँ निवास करोगी॥ २॥

गौतमी—पुत्री! प्रस्थान का समय बीता जा रहा है, अतः पिताजी को लौटा दो। अथवा यह तो विलम्ब होने पर भी आगे नहीं बढ़ेगी, चुप नहीं होगी। अतः श्रीमन् आप ही लौट जाइए।

Having become for a long time the co-wife of the earth bounded by the four quarter angles and having settled your son Duṣyanta; an unrivalled warrior, you will make your abode in this hermitage again along with your husband, who will have transferred the responsibility of his government and family on him.

Gautamī—Child! the time of your departure is passing away, send back your father or even for a long time she will again and again speak in this way. Let your severance return.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कण्वः—वत्से! उपरुध्यते मे तपोऽनुष्ठानम्।

शकुन्तला—तवच्चरणवावारेण णिरुक्कंठो तादो, अहं उण उक्कंठाभाइणी संबुत्ता। [तपश्चरणव्यापारेण निरुत्कण्ठस्तातः, अहं पुनरुत्कण्ठाभागिनी संवृत्ता।]

कण्वः—वत्से! मामेवं जडीकरोषि। (निःश्वस्य)

अपयास्यति मे शोकः कथं नु वत्से! त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः॥ २३॥

क्रामति। तत्=तस्मात्, पितरं=जनकं, निवर्तय=प्रत्यावर्तय। अथवा=यद्वा, चिरेणापि=दीर्घकालेनापि, एषा=शकुन्तला, न निवर्त्तिष्यते=परिहापयिष्यति भवन्तम्। तत्=तस्मात्, भवान्=त्वम्, निवर्त्तताम्=प्रत्यावर्त्तताम्।

कण्वः—वत्से=जाते! मे=मम, तपोऽनुष्ठानम्=तपश्चर्यादिकम्, उपरुध्यते=अतिवर्त्तते (ईदृशविलम्बेन परिहीयते, तन्मां विसर्जयेति भावः)।

शकुन्तला—तपश्चरणव्यापारेण=निरन्तरतपोऽनुष्ठानकर्मणा, निरुत्कण्ठः=मद्विरहप्रयुक्तविषादहीनः, तातः=मदीयः जनकः, अहं पुनः=अहन्तु, उत्कण्ठाभागिनी=तातविरहप्रयुक्तविषादविकला, संवृत्ता=जाता।

कण्वः—वत्से=जाते! माम्=कण्वम्, एवम्=अनेन प्रकारेण, इत्थं स्वानुरागप्रकाशनेन, जडीकरोषि=कार्यान्तरेष्वपटूवीकरोषि। (निःश्वस्य=दीर्घमुष्णं श्वासं त्यक्त्वा)

अन्वयः—नु हे वत्से! त्वया रचितपूर्वम् (सम्प्रति) उटजद्वारे विरूढं नीवारबलिं विलोकयतः मे शोकः कथम् अपयास्यति॥ २३॥

अपयास्यतीति। नु इति सम्बोधनसूचकमव्ययम्, त्वया=भवत्या, रचितपूर्वं=पूर्वं निर्मितं (विहङ्गमानां भक्षणायेति शेषः), (सम्प्रति) उटजद्वारे=पर्णशालाद्वारे, विरूढम्=अङ्कुरितम्, नीवारबलिं=नीवाररूपं भूतबलिं, विलोकयतः=पश्यतः, मे=मम, शोकः=विषादः, कथं=केन प्रकारेण, अपयास्यति= निवर्त्तिष्यते? अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः, आर्य्या जातिः॥ २३॥

कण्व—पुत्री अब मेरे तपोनुष्ठान कार्य में बाधा पड़ रही है।

शकुन्तला—तपोनुष्ठानादि में व्यग्र रहने के कारण पिताजी के हृदय में (मेरे लिए) कोई उत्कण्ठा (दुःख) नहीं रह गया है, परन्तु मैं तो अतीव उत्कण्ठित (दुःखी) हूँ।

कण्व—क्यों ऐसी बातें कहकर मुझे जड़ बना रही हो? (ठण्डी साँस भरकर)

पर्णशाला के द्वार पर तुम्हारे द्वारा रोपे हुए नीवार को—जो कि आश्रमस्थ प्राणियों के

Kaṇva—Child! the practice of my penance is being interrupted.

Śakuntalā—Remaining contineuously bussy with his penance etc. my father feels no sorrow in my separation but this separation causes sorrow for me.

Kaṇva—Daughter! Why, saying such, making me as stunned. (with a sigh) "How possibly will my grief, daughter! be

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गच्छ, शिवास्ते सन्तु पन्थानः।

(इति निष्क्रान्ताः शकुन्तलया सह गौतमी-शार्ङ्गरव-शारद्वतमिश्राः।)

सख्यौ—(चिरं विचिन्त्य सकरुणम्) हद्दी! हद्दी! अंतरिदा सउंतला वणराइहिं। [हा धिक्! हा धिक्! अन्तरिता शकुन्तला वनराजिभिः।]

कण्वः—(सनिःश्वासम्) अनसूये! प्रियंवदे! गता वां सहचरी; निगृह्य शोकावेगं मामनुगच्छतम्।

(सर्वे प्रस्थिताः।)

भावार्थः—त्वया उटजद्वारे रचितपूर्वं नीवारबलिं विलोकयतः तन्नीवारबलीनामेव सततं स्मारकत्वात् मम शोको वर्धिष्यत एवेति भावः॥ २३॥

गच्छ=पतिगृहं प्रति याहि, ते=तव, पन्थानः शिवाः=क्षेमङ्कराः, सन्तु=भवन्तु।

(इति=एवमुक्ते सति, शकुन्तलया सह गौतमी-शार्ङ्गरव-शारद्वतमिश्राः, निष्क्रान्ताः= निर्गताः रङ्गाद्बहिः।)

सख्यौ—(चिरं=चिरकालपर्यन्तम्, विचिन्त्य=विचार्य्य, सकरुणम्=सखेदम्) हा धिक् हा धिक्=इत्यात्मनिन्दायाम्, शकुन्तला, वनराजिभिः=वनश्रेणीभिः, अन्तरिता=तिरोहिता, दृष्टिपथात् अपनीता।

कण्वः—(सनिःश्वासम्) अनसूये! प्रियंवदे! वां=युवयोः, सहचरी=सखी, गता, शोका- वेगं=शोकबलम्, निगृह्य=अनुरुध्य, मामनुगच्छतम्।

(सर्वे प्रस्थिताः=उटजं प्रति प्रस्थातुमारभन्ते।)

लिए बलीरूप में डाला गया था—देख-देखकर भला मेरा शोक कैसे दूर हो सकेगा? अच्छा जाओ, तुम्हारा मार्ग मंगलमय हो।

(शकुन्तला के साथ गौतमी, शार्ङ्गरव तथा शारद्वत का प्रस्थान।)

सखियाँ—(देर तक सोचकर करुणा के साथ) धिक्कार है, धिक्कार है। शकुन्तला वनपंक्ति के झुरमुट में छिपकर आँखों से ओझल हो गई।

कण्व—(दीर्घ साँस लेकर) अनसूये! प्रियंवदे! तुम्हारी सखी चली गयी। अपने शोक के वेग को रोककर तुम दोनों मेरे साथ आओ।

(सबका प्रस्थान)

---

assuaged (calm), as I look at the oblation of Nīwāra grains, offered previously by you, and now growing at the door of the cottage? Go, may your path be auspicious. (23)

(Exeunt Śakuntalā with Gautamī, Śārṅgarava, Śaradvata etc. all)

Friends—(Thinking for a long with sorrow) Alas! alas! Śakuntalā is concealed from over sight by the line of forests (woods).

Kaṇva—(With a sigh) Anasūyā! Priyaṁvadā! your companion has gone. Restraining your grief, follow me.

(Exeunt all)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—ताद! सउंतलाविरहिदं सुण्णं विअ तवोवणं पविसम्ह। [तात! शकुन्तला-विरहितं शून्यमिव तपोवनं प्रविशामः।]

कण्वः—स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी। (सविमर्शं परिक्रम्य) हन्त भोः! शकुन्तलां पतिगृहे विसर्ज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्। कुतः—

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातोऽस्मि सद्यो विशदान्तरात्मा चिरस्य निक्षेपमिवार्पयित्वा॥ २४॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

इति चतुर्थोऽङ्कः।

उभे—अनसूया-प्रियंवदे, तात! शकुन्तलाविरहितं=रहितम्, शून्यमिव=जनपूर्णत्वेऽपि शकुन्तलाविरहितत्वेन शून्यवत् प्रतीयमानं, तपोवनम्=आश्रमपदं, प्रविशामः।

कण्वः—स्नेहप्रवृत्तिः=स्नेहप्रवाहः, एवंदर्शिनी=इत्थं प्रत्यायनी, स्निग्धजनवियोगे जनाकुलोऽपि प्रदेशः शून्यवत् प्रतिभाति उत शून्यताव्यञ्जको भवतीति भावः। (सविमर्शं=सचिन्तम्, परिक्रम्य=पर्णशालां प्रति कियन्तं पदविन्यासं कृत्वा) हन्त इति हर्षे, भो इति दैवं प्रति सम्बुद्धिः। शकुन्तलाम्=दुहितरं, पतिगृहे=दुष्यन्तावासे, विसर्ज्य=सम्प्रेष्य, इदानीम्=सम्प्रति, स्वास्थ्यम्=नैश्चिन्त्यम् (प्रकृतिस्थता), लब्धम्=प्राप्तम्। कुतः—

अन्वयः—कन्या अर्थः परकीयः एव, अद्य तां परिग्रहीतुः सम्प्रेष्य चिरस्य निक्षेपम् इव अर्पयित्वा सद्यः विशदान्तरात्मा जातोऽस्मि॥ २४॥

अर्थ इति। कन्या अर्थः=कन्यारूपं धनम्, परकीयः=परस्वामिक एव, अद्य=अस्मिन् दिवसे, ताम्=कन्याम्, परिग्रहीतुः=परिणेतुः, सम्प्रेष्य=तन्निकटे विसर्ज्य, चिरस्य=चिरकालात्, निक्षेपम्=न्यासीकृतम्, धनं=परस्वामिकं द्रव्यम्, अर्पयित्वा=तत्स्वामिने प्रत्यर्प्य इव, सद्यः=तत्क्षणात्, विशदः अन्तरात्मा यस्यासौ विशदान्तरात्मा=प्रसन्नचित्तः जातोऽस्मि=अभवम्। अत्र रूपकोत्प्रेक्षयोः संसृष्टिरिति केचित्। श्रौतोपमेति कश्चित्। उपजातिर्वृत्तम्॥ २४॥

दोनों सखियाँ—पिताजी! शकुन्तला के बिना हमलोग मानो इस सूने तपोवन में प्रवेश कर रहे हैं।

कण्व—स्नेह के प्रवाह (आधिक्य) से हां ऐसा प्रतीत होता है। (विचारपूर्वक घूमकर) शकुन्तला को उसके पति के घर भेजकर अब मैं स्वयं को स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ। क्योंकि—

Friends (Both)—Father, we are entering the penance grove which bereft (deprived) of Śakuntalā appears as though desolate.

Kaṇva—The course of affection views it thus. *(Walking round ponderingly)* Heigh Ho! sending Śakuntalā to her husband's abode, I feel my self very easy or healthy. Why—

Actually, a girl (daughter) is only another's property, sen-

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावार्थः—यथा कश्चिज्जनः स्वपार्श्वे न्यासरूपेण निक्षिप्तं धनं, तत्स्वामिने प्रत्यर्प्य तत्कालमेव प्रसन्नचित्तो भवति तथैवाहमपि कन्यारूपं धनं यत् मनस्विभिः परकीय एव इति प्रतिपादितं तामद्य तद्वरस्य निकटे सम्प्रेष्य सर्वथा कृतकृत्योऽहम् इत्यनुभवामि॥ २४॥

(इति-एवमुक्त्वा, सर्वे-अभिनेतृवर्गाः, निष्क्रान्ताः-रङ्गभूमित इति शेषः।)

इति चतुर्थोऽङ्कः।

"कन्यारूपी धन वास्तव में पराया ही होता है" अतः आज उसे उसके स्वामी के पास भेजकर—जैसे कोई किसी की बहुत दिनों की रखी हुई धरोहर उसके स्वामी को लौटा कर आनन्दित होता है उसी प्रकार मैं भी आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ॥ २४॥

(सबका प्रस्थान)

चतुर्थ अङ्क समाप्त।

---

ding her today to her husband's abode, this my inner soul has become exceeding by serene, like the one who has restored a deposit. (24)

(Exeunt all)

Thus End of Act Fourth

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति कञ्चुकी)

कञ्चुकी—अहो बत! कीदृशीं वयोऽवस्थामापन्नोऽस्मि।

आचार इत्यधिकृतेन मया गृहीता या वेत्रयष्टिरवरोधगृहेषु राज्ञः।
काले गते बहुतिथे मम सैव जाता प्रस्थानविक्लवगतेरवलम्बनाय॥ १॥

(ततः=तदनन्तरम्, कञ्चुकी—कञ्चुकः=वारबाणोऽस्याऽस्तीति कञ्चुकी=अन्तःपुरचरो वृद्धविप्रविशेषः, प्रविशति=रङ्गे समापतति।)

कञ्चुकी—अहो=इत्याश्चर्ये, बत इति खेदे, कीदृशीम्=अवर्णनीयां, वयोऽवस्थां=वार्धक्यकृतां दशाम्, आपन्नोऽस्मि=प्राप्तोऽस्मि।

अन्वयः—राज्ञः अवरोधगृहेषु अधिकृतेन मया आचारः इति हेतोः या वेत्रयष्टिः गृहीता बहुतिथे काले गते सैव प्रस्थानं विक्लवगतेः अवलम्बनाय जाता॥ १॥

आचार इति। राज्ञः=दुष्यन्तस्य, अवरोधगृहेषु=अन्तःपुरगृहेषु, अधिकृतेन=अध्यक्षतया नियुक्तेन, मया=अशक्तेन कञ्चुकिना, आचारः=अस्माकं कञ्चुकिनामयं व्यवहारः, इति हेतोः, (साधारणपुरुषोत्सारणाद्यर्थमवरोधाधिकृतानां वेत्रयष्टिग्रहणस्याचारत्वादित्यर्थः, न तु शरीरदौर्बल्यादि हेतुना) या वेत्रयष्टिः=वेत्रदण्डः, गृहीता=पूर्वं धृता, बहुतिथे=अत्यधिके, काले=आयुर्लक्षणे, गते=अतीते (पूर्णवार्धक्ये प्रविष्टे सति), सैव=आचारगृहीतैव वेत्रयष्टिः, प्रस्थाने=स्थानान्तरप्राप्तिकाले, विक्लवा=विवशा, गतिः=पादविन्यासः, यस्य तस्य स्थानविक्लवगतेः=स्खलितचरणस्य मम, अवलम्बनाय=आश्रयाय, जाता=अभूत्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्। वसन्तलिकं वृत्तम्॥ १॥

भावार्थः—या यष्टिः मया पूर्वं स्वकीयाचाररक्षणाय धृता सैवाधुना आश्रयाय जाता। तथा च सम्प्रतीदृक् वृद्धत्वमापन्नं, यद्देहदौर्बल्यात् यष्टिं विना एकमपि पदं चलितुं न शक्नोमीति भावः॥ १॥

(इसके पश्चात् कञ्चुकी का प्रवेश)

कञ्चुकी—हाय! आज मैं किस प्रकार अवस्था के फेर में पड़ गया हूँ—

राजा के अन्तःपुर के अध्यक्ष रूप में नियुक्त होकर (सामान्य लोगों के प्रवेश को रोकने के लिए) मैंने छड़ी हाथ में पकड़ी थी, परन्तु बहुत समय बीत जाने के बाद चलने में विवश हो जाने के कारण वही छड़ी मेरे लिए सहारा बन गई है॥ १॥

(Then enter the chamberlain)

Chamberlain—Alas! I am indeed reduced to such a state. Being appointed in the inner apartments of the king's harem, that very cane-staff, which was taken by me, because it was the custom, has, much time having elapsed, become useful for the support for me, whose gait is faltering in walking. (1)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यावदभ्यन्तरगताय देवाय स्वमनुष्ठेयमकालक्षेपार्हं निवेदयामि। (स्तोकमन्तरं गत्वा) किं पुनस्तत्? (विचिन्त्य) आं ज्ञातम्, कण्वशिष्यास्तपस्विनो देवं द्रष्टुमिच्छन्ति। भोः! चित्रमेतत्।

क्षणात् प्रबोधमायाति लङ्घ्यते तमसा पुनः।
निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखेव जरतो मतिः॥ २॥

(परिक्रम्यावलोक्य च) एष देवः—

यावदिति वाक्यालङ्कारे, अभ्यन्तरगताय=अन्तःपुरस्थिताय, देवाय=राज्ञे, स्वम्=आत्मसम्बन्धीयम् (तदीयम्), अनुष्ठेयम्=कर्तव्यम्, अकालक्षेपार्हम्=विलम्बासहम्, निवेदयामि=सूचयामि। (स्तोकम्=अल्पम्, अन्तरं=दूरं गत्वा) किं पुनस्तत्=यन्निवेदयामि तदनुष्ठेयं पुनः किमिति भावः, (विचिन्त्य=विचार्य्य) आं ज्ञातम्=स्मृतम्, कण्वशिष्यास्तपस्विनो देवं=राजानं, द्रष्टुम्=अवलोकयितुं, इच्छन्ति=वाञ्छन्ति। भोः इति विषादे, एतत्=क्षणात् विस्मरणं स्मरणञ्च, चित्रम्=आश्चर्यम्।

अन्वयः—जरतः मतिः निर्वास्यतः प्रदीपस्य शिखेव क्षणात् प्रबोधम् आयाति, पुनः क्षणात् तमसा लङ्घ्यते॥ २॥

क्षणादिति। जरतः=जराक्रान्तस्य वृद्धजनस्य, मतिः=बुद्धिः, निर्वास्यतः=निर्वाणं प्राप्स्यतः, उपमेयपक्षे—अचिरं मरिष्यतः, प्रदीपस्य शिखेव, क्षणात्, प्रबोधम्=उन्मेषं दीप्तिञ्च, आयाति=प्राप्नोति, पुनः क्षणात्, तमसा=मोहेन अन्धकारेण वा, च, लङ्घ्यते=आव्रियते, एतच्चित्रम्। अत्र श्लेषानुप्राणितोपमालङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २॥

भावार्थः—वृद्धस्य मतिः प्रदीपस्य शिखा इव क्षणात् प्रबोधमुन्मेषं दीप्तिं वा प्राप्नोति पुनः क्षणात् मोहेन (तमसा) आव्रियते इति चित्रम् एव सर्वथा प्रतिभाति॥ २॥

(परिक्रम्य=किञ्चित् पादन्यासं कृत्वा, अवलोक्य च=राजानं च दृष्ट्वा) एष देवः=समीपतर इत्यर्थः, अस्य अग्रिमेण श्लोकेन सह सम्बन्धः—

तब तक मैं भीतर गये हुए महाराज से अविलम्ब सूचनीय कार्य सूचित कर दूँ। (कुछ भीतर जाकर) अरे वह क्या (कार्य) था? (सोचकर) ओह! याद आ गया। कण्व महर्षि के शिष्य कुछ तपस्वी स्वामी के दर्शन करना चाहते हैं। अरे यह कितनी विचित्र बात है कि—

बुझने वाले दीपक की शिखा के समान बूढ़ों की बुद्धि भी क्षणभर में ज्ञान (प्रकाश) सम्पन्न तथा क्षणभर में अन्धकार (मोह) ग्रस्त हो जाती है॥ २॥

(घूमकर तथा (राजा को) देखकर) यह महाराज—

Let me fulfil my duty by reporting to his majesty, who had gone into inner apartment of his harem. *(Entering to some extent)* Oh, what was that work? *(Remembering)* Oh, I rember. Some hermit pupils of sage Kaṇva wants to see his majesty. How strange is this—

Like the flame of a lamp, the talent of the aged people become in a very moment very bright and in the next moment very dark (dull) due to delusion. (2)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा निषेवते श्रान्तमना विविक्तम्।
यूथानि सञ्चार्य रविप्रतप्तः शीतं गुहास्थानमिव द्विपेन्द्रः ॥ ३ ॥

भोः ! सत्यं धर्मकार्यमनतिपात्यं देवस्य, तथापि शङ्कितवानस्मि इदानीमेव धर्मासनादुत्थिताय देवाय कण्वशिष्यागमनं निवेदयितुम्। अथवा कुतो विश्रामो लोकपालानाम्? तथाहि—

अन्वयः—स्वाः प्रजा इव प्रजाः तन्त्रयित्वा श्रान्तमनाः एष देवः यूथानि सञ्चार्य रविप्रतप्तः द्विपेन्द्र शीतं विविक्तं निषेवते ॥ ३ ॥

प्रजा इति। स्वाः=स्वकीयाः, प्रजाः=सन्ततीरिव, प्रजाः=स्वाधिकारवासिनो जनान्, तन्त्रयित्वा=तेषां नियन्त्रणं विधाय, शासनेन साधुपथे स्थापयित्वा, श्रान्तं=परिश्रान्तिमत्, मनो यस्य सः श्रान्तमनाः=उद्विग्नचित्तः सन्, एष देवः=राजा दुष्यन्तः, यूथानि=स्ववर्ग्यान् गजान्, सञ्चार्य्य=आहारविहारादिकार्येषु यथास्थाने व्यापार्य, रविणा प्रतप्तः रविप्रतप्तः=सूर्यतापितः, द्विपेन्द्रः=गजराजः, शीतं=शीतलं, गुहास्थानम्=पर्वतकन्दरम्, विविक्तम्=विजनम्, निषेवते=अधिवसति। अत्र यमकोपमालङ्कारौ, उपजातिः वृत्तम् ॥ ३ ॥

भावार्थः—यथा कश्चिद् गजराजः स्ववर्ग्यान् गजान्—आहारविहारादिव्यापारेषु यथास्थाने व्यापार्य सूर्यतापेन तापितः सन् शीतलं गुहास्थानम् एकाकी एव निषेवते तथैव एषः दुष्यन्तः स्वकीयाः सन्ततीरिव स्वाधिकारवासिनो जनान् स्वकीयोत्तमं शासनेन साधुपथे स्थापयित्वा उद्विग्नचित्तः सन् अत्र एकान्ते अधिवसति ॥ ३ ॥

भोः ! सम्बोधने, देवस्य=राज्ञो दुष्यन्तस्य, धर्मकार्यं=धर्मार्थं कर्म, अतिपातोऽत्ययः=कालक्षेपः, तस्यार्हमित्यतिपात्यं तदन्यदनतिपात्यम्=अनतिक्रमणीयमिति अनतिपात्यं=झटिति निवेद्यमिति भावः (मयेति शेषः)। इति सत्यं=स्वीकरोमि इत्यर्थः, इदानीमधुनैव, धर्मासनाद्=

जैसे गजराज अपने साथ के दूसरे हाथियों को उपयुक्त स्थान पर पहुँचाकर (विभिन्न कार्य जैसे आहर विहारादि में लगा) स्वयं धूप से सन्तप्त होकर शीतल पर्वत की गुफा में जाकर आराम करता है, उसी प्रकार ये महाराज भी अपनी सन्तान के समान प्रिय प्रजा को ठीक मार्ग पर लगाकर स्वयं उद्विग्न हो जाने के कारण यहाँ एकान्त का सेवन कर रहे हैं ॥ ३ ॥

अरे ! हमारे प्रभु धर्मकार्य का कभी भी उल्लंघन नहीं करेंगे, यह सत्य है तथापि अभी-अभी न्यायासन से उठे हुए महाराज को कण्व के शिष्यों के आगमन की सूचना देते हुए शङ्का होती है। अथवा—लोकपालों को भला विश्राम कहाँ ? क्योंकि—

(Walking round and observing) Here his majesty. Having looked after the subjects as after his own children, is enjoying solitude with his mind fatigued, as the chief of the elephants scorched by the sun, resorts to a cool cave of a mountain after engaging his herd in some proper place and work. (3)

Oh! true it is that his majesty can not set aside a religious duty. Yet I do not feel inclined to report to him who has just now risen from his judgement-seat, the arrival of Kaṇva's pupils,

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति।
शेषः सदैवाहितभूमिभारः षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः ॥ ४॥

(इति परिक्रामति।)

(ततः प्रविशति राजा विदूषको विभवतश्च परिवारः)

राजा—(अधिकारखेदं निरूप्य) सर्वः प्रार्थितमधिगम्य सुखी सम्पद्यते जन्तुः; राज्ञान्तु चरितार्थता दुःखोत्तरैव। कुतः—

विचारासनात्, उत्थिताय=उत्थायारब्धविश्रामाय, देवाय=राज्ञे दुष्यन्ताय, कण्वशिष्यागमनं, निवेदयितुं=सूचयितुं, शङ्कितवानस्मि=भीतोऽस्मि। अथवा—लोकपालानां=जगत्पालयितॄणां राज्ञां, विश्रामः=परिश्रमापनोदं, कुतः ? तथाहि—

अन्वयः—भानुः सकृत् युक्ततुरङ्ग एव तथा गन्धवहः रात्रिन्दिवं प्रयाति, शेषः सदैव आहितभूमिभारः (तिष्ठति) तथैव षष्ठांशवृत्तेः अपि एषः धर्मः ॥ ४॥

भानुरिति। भानुः=सूर्यः, सकृत्=जीवनकाले एकवारमेव, युक्ताः=विश्वभ्रमणाय रथे नियमिताः, तुरङ्गाः=अश्वाः, येन सः युक्ततुरङ्गः, एव (तिष्ठति), तथा, गन्धवहः=पवनः, रात्रिश्च दिवा च द्वयोः समाहारः रात्रिन्दिवम्=अहोरात्रमेव, प्रयाति=प्रवहति, तथैव, शेषः=नागराजः, सदैव, आहितः=धृतः, भूमिभारो येन सः आहितभूमिभारः, वहति, तथैव, षष्ठांशः=प्रजोत्पादितद्रव्यस्य षष्ठो भागः, स एव वृत्तिः=जीविका, यस्य तस्य षष्ठांशवृत्तेः=राज्ञः अपि, एषः=सततपरिश्रमरूपः, धर्मः=आचारः। अत्र मालाप्रतिवस्तूपमालङ्कारः। इन्द्रवज्रा वृत्तम् ॥ ४॥

भावार्थः—सूर्यगन्धवहादीनामिव राज्ञ अपि अविरतपरिश्रमरूप एव धर्मः। राज्ञः कथञ्चिदपि विश्रामासम्भवादनिवार्यमेव कण्वशिष्यागमनं निवेदयितुमर्हामीत्याशयः ॥ ४॥

(इति=एवमुक्त्वा, परिक्रामति=पादक्रमं करोति।)

(ततः=तत्पश्चात्, प्रविशति=रङ्गे समायाति, राजा, विदूषकः, विभवतः=ऐश्वर्यानुसारात्, परिवारः।)

जैसे सूर्य के रथ में एक बार ही घोड़े जोते गये हैं तथा जैसे वायु दिन-रात प्रवाहित होता है एवं जैसे शेषराज सदा भू-भार वहन करते हैं वैसे ही प्रजा से षष्ठांश-आय प्राप्त करने वाले राजा का भी धर्म है (कि वह विश्राम शब्द को ही भूला दे) ॥ ४॥

(ऐसा कहकर घूमता है)

(इसके पश्चात् राजा-विदूषकादि का वैभव युक्त परिवार सहित प्रवेश।)

(which will again causes him disturbance) or there is no rest for the kings. Why—

The sun has his horses yoked but once; the wind blows day and night, Śeṣa the king of serpents has the load of the earth placed on him for ever, such is the duty also of him whose sustenance is on the sixth part of the production of the people i.e. sixth part of revenue. (4) *(Walking round)*

(Then enter the king with jester with luxurious family)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औत्सुक्यमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा
क्लिश्नाति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव।
नातिश्रमापनयनाय यथा श्रमाय
राज्यं स्वहस्तधृतदण्डमिवातपत्रम्॥ ५॥

राजा—(अधिकारखेदं=स्वकर्त्तव्यनिबन्धनं, निरूप्य=नाटयित्वा) सर्वः=समस्तो जन्तुः, प्रार्थितम्=अभिलषितम्, अधिगम्य=लब्ध्वा, सुखी=प्रसन्नः, सम्पद्यते=भवति। तु=परन्तु, राज्ञां=नृपाणाम्, चरितार्थता=कृतकार्यता, दुःखमेवोत्तरं यस्याः सा दुःखोत्तरा=दुःखमात्रप्रधाना एव (अन्येभ्यो राजानो निकृष्टतरा इत्याशयः)। कुतः—

अन्वयः—प्रतिष्ठा औत्सुक्यमात्रम् अवसादयति, ततः लब्धपरिपालनवृत्तिः क्लिश्नाति। अतः स्वहस्तधृतदण्डम् आतपत्रमिव राज्यं यथा श्रमाय भवति तथा अतिश्रमापनयनाय न भवति॥ ५॥

औत्सुक्येति। प्रतिष्ठा=ख्यातिः, औत्सुक्यमात्रम्=केवलामुत्कण्ठाम्, अवसादयति=समापयति, ततः, लब्धस्य=प्राप्तस्य, परिपालनवृत्तिः=अभिरक्षणव्यापारः, क्लिश्नाति=पीडयत्येव, अतः=अस्माद्धेतोः, स्वहस्तेन धृतो दण्डो यस्य तत् स्वहस्तधृतदण्डम्, आतपत्रं=छत्रमिव, राज्यं, यथा=येन रूपेण, श्रमाय=परिश्रमाय, भवति, तथा=तेन रूपेण, अतिश्रमापनयनाय=श्रमस्यातिप्रशमनाय, न भवति (राज्यं यत्परिमितं श्रममुत्पादयेत् तत्परिमितं श्रमं नैव नाशयेदिति भावः।) अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम् उपमा च। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ५॥

भावार्थः—ख्यातिः केवलमुत्कण्ठामेव समापयति, ततः प्राप्तस्य परिपालनवृत्तिः क्लिश्नाति। अतः स्वकीयकरगृहीतदण्डम् आतपत्रमिव राज्यं यथा परिश्रमाय भवति तथाऽतिशयेन श्रमापनयनाय; आनन्दप्राप्तये न भवति॥ ५॥

राजा–(अधिकार से खिन्न होने का भाव प्रगट करते हुए) संसार के सभी प्राणी अपनी अभिलषित वस्तु पाकर सुखी होते हैं, किन्तु राजाओं की अभीष्ट पूर्ति उत्तरोत्तर दुःखदायिनी ही होती जाती है, क्योंकि—

प्रतिष्ठा (नवराज्योपलब्धिपरक) केवल उत्कण्ठा को शमित करती है परन्तु प्राप्त की हुई प्रतिष्ठा के परिपालन में बुरी तरह कष्ट भोगना होता है। अतः (मेरे विचार में) राज्य हाथ में पकड़े हुए छत्र के दण्ड के समान होता है, वह जितना परिश्रम कराता है उतना सुख नहीं पहुँचाता॥ ५॥

The king—(Gesticulating the fatigue of his office) Every being becomes happy on attaining the desired object. But in the case of kings the state of having their desired objects achieved is only followed by trouble.

Attainment of the desired object destroys all eagerness; the very business of guarding what has been obtained worries. A kingdom, the administration of which is in one's own hands, is not for the complete removal of fatigue as it is for (causing) fatigue, like an umbrella, the pole of which is held in one's own hand. (5)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये वैतालिकौ—) जयति जयति देवः।

एकः— स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः
प्रतिदिनमथवा ते सृष्टिरेवंविधैव।
अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥ ६॥

नेपथ्ये—रङ्गस्य पृष्ठभागे, वैतालिकौ=स्तुतिपाठकौ, देवः=अस्माकं राजा दुष्यन्तः, जयति जयति=सर्वोत्कर्षेण वर्तताम्।

एकः—अन्वयः—प्रतिदिनं (त्वम्) स्वसुखनिरभिलाषः लोकहेतोः खिद्यसे अथवा ते सृष्टिः एवंविधा एव। हि पादपः मूर्ध्ना तीव्रं उष्णम् अनुभवति किन्तु संश्रितानां छायया शमयति॥ ६॥

स्वसुखेति। प्रतिदिनं=सर्वदैव, (त्वम्) स्वस्य-आत्मनः, यत्सुखं=सुखानुभवः, तत्र निरभिलाषः=निस्पृहः सन्, लोकहेतोः=प्रजानां सुखसाधनार्थम्, खिद्यसे=खेदं प्राप्नोषि, अथवा—नैतमद्भुतमित्यर्थः, ते=तव, सृष्टिः=विधातृनिर्माणम्, एवंविधा=एवंप्रकारैव, (परसुखोत्पादनपरैव। दृष्टान्तैष स्वकीयं कथनं पोषयति=अनुभवतीति) हि=तथाहि, पादपः=वृक्षः, मूर्ध्ना=शिखरेण, तीव्रं=दुःसहम्, प्रखरम्, उष्णम्=आतपम्, अनुभवति=सहते, किन्तु छायया=छायादानेन, संश्रितानाम्=आत्मानमाश्रितानां जनानाम्, परितापं=सन्तापं, शमयति=नाशयत्येव। अत्र दृष्टान्तालङ्कारः स्वभावोक्तिश्च। मालिनी नाम वृत्तम्॥ ६॥

भावार्थः—यथा हरितः पादपः स्वशिरसा असह्यमातपमुत्तोलयन् स्वकीयसघनछायादानद्वारा स्वकीयाधोभागे आश्रितानां सन्तापं निवारयति, तथा त्वमपि खिद्यमानात्मा सन् सामादिप्रयोगद्वारा परखेदमपनयसीत्याशयः॥ ६॥

द्वितीय—(अपरः वैतालिकः)—

(नेपथ्य में दो वैतालिक) महाराज़ की जय हो, जय हो।

एक—आप, अपने सुख से निस्पृह रहकर अपनी प्रजा को सुखी बनाने के लिए सदा परिश्रमरत रहते हैं अथवा भगवान् ने आपका निर्माण ही इसी उद्देश्य से किया है। जैसे वृक्ष स्वयं अपने सिर पर असह्य धूप को सहन करता है और अपनी छाया में बैठे हुए के ताप को दूर कर देता है (ठीक वही दशा आपकी है)॥ ६॥

दूसरा वैतालिक—आप राजदण्ड धारण करके कुमार्गगामियों का नियन्त्रण करते हैं,

---

(Behind the scene two bards) May your majesty be victorious.

First bard—Indifferent to your own happiness, you toil every day for the sake of the people, or your life is just of this kind. Indeed, the tree suffers with its head intense heat, while it relieves by its shade the fatigue of those that resort to it. (6)

Second bard—Holding the power of punishment you

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीयः— नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः
प्रशमयसि विवादं कल्पसे रक्षणाय।
अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः संविभक्ता-
स्त्वयि तु परिसमाप्तं बन्धुकृत्यं जनानाम्॥ ७॥

राजा—(आकर्ण्य साश्चर्यम्) एतेन कार्यानुशासनपरिश्रान्ताः पुनर्नवीकृताः स्मः।

विदूषकः—(विहस्य) भो! गोविंदारअत्ति भणिदस्स विसभस्स किं परिस्समो णस्सदि? [भोः! गोवृन्दारकेति भणितस्य वृषभस्य किं परिश्रमो नश्यति?]

अन्वयः—आत्तदण्डः सन् विमार्गप्रस्थितान् नियमयसि, विवादं प्रशमयसि तथा रक्षणाय कल्पसे। तथा ज्ञातयः अतनुषु विभवेषु संविभक्ता तु जनानां बन्धुकृत्यं त्वयि परिसमाप्तम्॥ ७॥

नियमयसीति। आत्तः=गहीतः, दण्डो येन सः आत्तदण्डः=धृतराजदण्डः, सन्, विमार्गे=कुपथे, प्रस्थितान्=प्रवृत्तान्, विमार्गप्रस्थितान्, नियमयसि=नियन्त्रयसि, कुमार्गान्निवर्त्तयसि, विवादं=विरोधं कलहं वा, प्रशमयसि=निवारयसि, तथा रक्षणाय=दैवमानुषाद्यापद्भ्यः, प्रजानां पालनाय वा, कल्पसे=प्रभवसि। तथा ज्ञातयः=स्वजनाः, अतनुषु=प्रभूतेषु, विभवेषु=धनधान्यादिषु विषये, संविभक्ताः=सम्यग् विभज्य त्वया विवादान्निवर्तिताः, (क्वचित् 'सन्तु नाम' इति पाठान्तरम्, तत्र—नामेति सम्भावनायाम्, सन्तु=भवन्तु इत्यर्थः) तु=परन्तु, जनानाम्=प्रजानाम्, बन्धुकृत्यं=बन्धूचितं कर्म, त्वयि=त्वय्येव, परिसमाप्तम्=पर्य्यवसितम् (सर्वतोभावेन तेषां हितसाधनात् इति भावः)। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं दीपकञ्चालङ्कारौ। मालिनी नाम वृत्तम्॥ ७॥

भावार्थः—राजदण्डं धृत्वा त्वया कुमार्गगामीनां नियन्त्रणं विधाय पारस्परिकं विरोधं शमयित्वा, दैवमानुषाद्यापद्भ्यः स्वकीयां प्रजां परिरक्ष्य, स्वजनाः प्रभूतेषु धनधान्यादिषु विषये विभज्य त्वया विवादान्निवर्त्तिताः। अत एव सर्वतोभावेन तेषां हितसाधनात् बन्धुकृत्यं त्वय्येव पर्यवसितम्॥ ७॥

राजा—(आकर्ण्य=श्रुत्वा, साश्चर्यम्=सविस्मयम्) एतेन=वैतालिककथनेन, कार्य्यानुशासनेन=राजकर्मचारिषु कर्त्तव्योपदेशेन, परिश्रान्ताः=परिश्रमणोद्यमविक्लवाऽपि वयम्, पुनर्नवीकृता स्म=पुनर्नवोद्यमीकृताः स्म।

विवाद को मिटाते हैं तथा जनसामान्य की रक्षा करते हैं। भाई-बन्धुओं में विवाद होने पर आप सब स्वजनों को प्रभूत धन देकर विवाद समाप्त करा देते हैं। इस प्रकार प्रजा के हितार्थ भाई का कार्य आप ही सम्पादित करते हैं॥ ७॥

राजा—(सुनकर आश्चर्यपूर्वक) इसे सुनकर शासनकार्य से जो थकावट आ गई थी, वह समाप्त हो गई और मेरा उत्साह फिर से नया हो गया।

विदूषक—(हँसकर) अरे! यदि बैल को वृषभराज (यूथयति) कह दिया जाय तो क्या उसकी थकान मिट जायेगी?

---

restrain those who have accepted a wrong way, settle disputes and contribute to protection. Let there be kinsman for sooth when riches are abundant, but in you is consummated the duty of a relative for the subjects. (7)

The king—(Hearing with surprise) Hearing this, my tiredness has disappeared and we are again fresh.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सस्मितम्) ननु क्रियतामासनपरिग्रहः।

(उभावुपविष्टौ, परिजनश्च यथास्थानं स्थितः।)

(नेपथ्ये वीणाशब्दः)

विदूषकः—(कर्णं दत्त्वा) भो वअस्स! संगीदसालब्भंतरे कण्णं देहि, ताल-लअसुद्धाए वीणाए सलसंजोओ सुणीअदि। जाणे तत्थभोदी हंसवदी वण्णपरिचअं करेदि त्ति। [भो वयस्य! सङ्गीतशालाभ्यन्तरे कर्णं देहि, काललयशुद्धाया वीणायाः स्वरसंयोगः श्रूयते। जाने तत्रभवती हंसवती वर्णपरिचयं करोतीति।]

विदूषकः—(विहस्य=मध्यमं हासं कृत्वा) भोः। इति सम्बुद्धिः, गवां वृन्दारकः= यूथपतिः, गोवृन्दारकः, इति भणितस्य=इति कथनमात्रेण, प्रशंसितस्य वृषभस्य, किं परिश्रमो नश्यति=शाम्यति ? कथमपि नेत्यर्थः।

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) ननु इति अनुज्ञायाम्, आसनपरिग्रहः=आसनोपवेशनम्, क्रियताम्।

(उभौ=राजा-विदूषकौ, उपविष्टौ, परिजनश्च=अनुचरवर्गश्च, यथास्थानम्=उपयुक्तस्थाने, स्थितः।) (नेपथ्ये=यवनिकाभ्यन्तरे, वीणाशब्दः।)

विदूषकः—(कर्णं दत्त्वा=श्रवणाय श्रोत्रं निधायेत्यर्थः) भो वयस्य=मित्र! सङ्गीतं='नृत्यं गीतञ्च वाद्यञ्च त्रयं सङ्गीतमुच्यते' इति लक्षणलक्षितं, तदर्था शाला=गृहम्, इति सङ्गीतशाला, तस्या अभ्यन्तरे=अन्तर्भागे, कर्णं देहि=श्रवणाय श्रोत्रं निधेहि। तालः=गीतस्य कालक्रियामानम्, लयः=गीतवाद्ययोः साम्यम्, ताभ्यां शुद्धायाः=निर्दोषायाः, काललयशुद्धायाः, वीणायाः=वल्लक्याः, स्वरैः=षड्जादिभिः, संयोगः=सम्यग् योजना, स्वरसंयोगः, श्रूयते=आकर्ण्यते। जाने=मन्ये, तत्रभवती=माननीया, हंसवती=तन्नामिका, वर्णस्य=सा-रे-ग-म इति वर्णस्य, परिचयम्=अभ्यासं, करोति।

राजा—(मुस्कराकर) आप आसन ग्रहण कीजिए।

(दोनों बैठते हैं और परिजन यथास्थान खड़े रहते हैं।)

(परदे के पीछे वीणा की ध्वनि)

विदूषक—(कान देकर) मित्र! जरा संगीतशाला के भीतर कान दीजिए। ताल-लय से शुद्ध वीणा का स्वर सुनायी देता है। जान पड़ता है माननीया हंसवती संगीत के वर्णों का अभ्यास कर रही हैं।

Jester—(With a smile) Dear if I call a bull the king of bulls, will his fatigue disappeare?

The king—(With a smile) Please occupy your seat.

(Both sit, retinue remain at proper places)

(Behind the scene the sound of Veenā i.e. the lute appears)

Jester—(listening) Dear, please divert your ears towards the inner portion of the concert hall, the correct sound of the lute coming forth. It seems that her majesty Haṁsavatī making practice of letters of music.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—तूष्णीम्भव, यावदाकर्णयामि।

कञ्चुकी—(विलोक्य) अन्यासक्तो देवः, तदवसरं प्रतिपालयामि।

(इत्येकान्ते स्थितः)

(नेपथ्ये गीयते)

अहिणव-महु-लोह-भाविदो तह परिचुंबिअ चूअमंजरिं।
कमलवसदिमेत्तणिव्वुदो महुअर विह्मरिदोसिणं कहं॥ ८॥

[अभिनवमधुलोभभावितस्तथा परिचुम्ब्य चूतमञ्जरीम्।
कमलवसतिमात्रनिर्वृतो मधुकर! विस्मृतोऽस्येनां कथम्॥ ८॥]

राजा—तूष्णीम्भव=मौनी भव, यावत्=यत्कालमभिव्याप्य, आकर्णयामि=शृणोमि।

कञ्चुकी—(विलोक्य=राजानं दृष्ट्वा) अन्यासक्तः=अन्यस्मिन् विषये कृतमनोयोगः, देवः=प्रभुः दुष्यन्तः, तत्=तस्मात्, अवसरं=निवेदनावकाशम्, प्रतिपालयामि=प्रतीक्षिष्ये। (इति=एवं विचार्य, एकान्ते=एकस्मिन् निर्जने भागे, स्थितः।)

(नेपथ्ये=यवनिकाभ्यन्तरे गीयते)

अन्वयः—मधुकर! अभिनवमधुलोभभावितः सन् तथा चूतमञ्जरीं परिचुम्ब्य इदानीं कमलवसतिमात्रनिर्वृतः एनां कथं विस्मृतोऽसि॥ ८॥

अभिनवेति। हे मधुकर=भृङ्ग! अभिनवस्य=अचिरोद्भूतस्य, मधुनः=रसस्य, लोभेन भावितः=विमोहितः सन्, (अपरत्र) अभिनवस्य=नवलतरुणीजनस्य, मधुनः=मधुरिमसुरतस्य, लोभेन भावितः=विमोहितः, अभिनवमधुलोभभावितः सन्, तथा=तेन प्रकारेण (यथा स्वाभिलाषपूर्त्तिर्भवति तथैव सर्वतोभावेन), चूतमञ्जरीम्=आम्रमञ्जरीम्, अन्यत्र परमरमणीयां

राजा—जरा मौन रहो जिससे सुन सकूँ।

कञ्चुकी—(देखकर) अभी महाराज अन्य कार्य में व्यस्त हैं, तब तक मैं समय की प्रतीक्षा करता हूँ। (यह कहकर एक ओर ठहरता है।)

(नेपथ्य में गायन होता है)

ओ भ्रमर! तुमने नूतन रस के लोभ में पड़कर आम की मञ्जरी को चूमा था, अब केवल कमल पर निवास करने से सन्तुष्ट होकर उस आम की मंजरी को तुम क्यों भुला बैठे हो?॥ ८॥

The King—Please keep quiet, so that I may hear it clearly.

Chamberlain—*(Observing)* At present his majesty the king is bussy with some other work, so I will wait for the suitable time (to tell). *(saying so, stands at one place)*

(A song arises behind the scene)

O' bee! due to covetousness you have just kissed the cluster or flower buds of a mango tree but now being satisfied with residing on the lotus flower. Why have you forgotten the cluster of the mango? (8)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अहो! रागपरिवाहिणी गीतिः।

विदूषकः—भो वअस्स! किं दाव से गीदिआए अवि गहीदो भअदा अक्खरत्थो? [भो वयस्य! किं तावदस्या गीतिकाया अपि गृहीतो भवता अक्षरार्थः ?]

राजा—(सस्मितम्) सकृत्कृतप्रणयोऽयं जन इत्यक्षरार्थः। तदहं देवीं हंसवती-मन्तरेण उपालम्भनमागतोऽस्मि। सखे! माधव्य! मद्वचनादुच्यतां देवी हंसवती, सम्यगुपालब्धोऽस्मीति।

रमणीम्, परिचुम्ब्य=आस्वाद्य, इदानीम्=अधुना, कमले=पद्मे, वसतिमात्रेण=केवलावस्थित्या न तु मधुरास्वादनेनेति भावः, निर्वृतः=सन्तुष्टः सन्, अपरत्र-कमले=परिणतवयस्तया कमलवत्सुदृश्यमात्रे न तु रसभरिते अन्यमहिलाजने, वसतिमात्रेण=केवलावस्थित्या, निर्वृतः=सन्तुष्टः सन्, एनां=क्षण-मास्वादितरसाम्, चूतमञ्जरीम्, अन्यत्र—परिचुम्बितपूर्वां शकुन्तलां हंसवतीं वा, कथं विस्मृतो-ऽसि=विस्मर्तुमारभमाणोऽसि। अत्र अपरवक्त्रं नाम वृत्तम्॥ ८॥

भावार्थः—अभिनवसुखकरवस्तुनः सर्वथैव विस्मरणीयत्वात् तवायं विस्मरणप्रकारोऽ-त्यन्तनिन्द्य इति भावः॥ ८॥

राजा—अहो=इत्याश्चर्ये, रागपरिवाहिणी=अतिहृद्या, गीतिः=गानम्।

विदूषकः—भो वयस्य! तावत्, किं भवता=त्वया, अस्याः=गीतिकायाः ज्ञानस्य, अपि, अक्षरार्थः=व्यङ्ग्यार्थः, गृहीतः=अवगतः।

राजा—(सस्मितम्=समन्दहासम्) सकृत्=एकवारं, कृतः प्रणयः=रतिकेलिपरिचयः, यस्मिन्, सकृत्कृतप्रणयः, अयं=हंसवतीलक्षणो जनः, अथवा—कृतः प्रणयो येनास्याम् एवम्भूतः अयं जनः=अहमिति, इति=इत्थम्, अक्षरार्थः=अक्षरप्रतिपाद्यो गूढार्थः, तदहं=दुष्यन्तः, देवीं हंसवतीमन्तरेण=हंसवतीं विना, उपालम्भनं=यथोक्तं तिरस्कारम्, आगतोऽस्मि=प्राप्तोऽस्मि। सखे= मित्र माधव्य! मद्वचनात्=मदीयकथनं श्रुत्वा मत्सकाशात्, देवी हंसवती, उच्यताम्=कथ्यताम् (महाराज एवमाहेति), सम्यक्=सम्पूर्णं यथा स्यात्तथा, उपालब्धोऽस्मि=तिरस्कृतोऽस्मि।

राजा—अरे! कैसा अनुराग की धारा बहाने वाला गीत है।

विदूषक—मित्र! क्या आपने इस गीत का व्यङ्ग्यार्थ भी जान लिया?

राजा—(मुस्कराकर) इस व्यक्ति से मैंने केवल एक बार प्रेम किया है, यही इस गीत का अर्थ है और इसी से रानी हंसवती द्वारा मैं तिरस्कृत हुआ हूँ। मित्र माधव्य! तुम मेरी ओर से देवी हंसवती से कहो कि मैं तुम्हारे द्वारा भलीभाँति उपालम्भ का पात्र बना हूँ।

The king—What a beautiful song, advancing the affection.

Jester—Dear friend! have you understood or recognized the real meaning of this song?

The king—*(Smiling)* I loved this person only once, this much is the meaning of this song and by this only I am insulted by Haṁsavatī. Dear Mādhavya! you just tell her majesty Haṁsavatī on my behalf that by you I have indeed become a censurable one.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—जं भवं आणवेदि। (उत्थाय) भो वअस्स! गहीदो तुए परकीएहिं हत्थेहिं सिहंडए अच्छभल्लो, ता वीदराअस्स असरणस्स णत्थि मे मोक्खो। [यद्भवानाज्ञापयति। भो वयस्य! गृहीतस्त्वया परकीयाभ्यां हस्ताभ्यां शिखण्डके अच्छभल्लः। तद्वीतरागस्य अशरणस्य नास्ति मे मोक्षः।]

राजा—सखे! गच्छ, नागरिकवृत्त्या सान्त्वयैनाम्।

विदूषकः—का गई? [का गतिः?] (इति निष्क्रान्तः)

राजा—(स्वगतम्) किन्नु खलु गीतमेवविधमाकर्ण्य इष्टजनविरहादृतेऽपि बलवदुत्कण्ठितोऽस्मि। अथवा—

विदूषकः—यद्=यथा, भवान्=त्वम्, आज्ञापयति=निर्दिशति। भो वयस्य=हे सखे! त्वया=भवता, (उत्थाय) परकीयाभ्याम्=अन्यदीयाभ्याम्, हस्ताभ्याम्=कराभ्याम्, शिखण्डके=शिखायाम् (शिखावच्छेदेनेत्यर्थः), अच्छभल्लः=भालूकः, गृहीतः=धृतः। तत्=तस्मात्, वीतरागस्य=विगतक्लेशादिकस्य, अथवा—त्यक्तजीवनानुरागस्य, अशरणस्य=निराश्रयस्य, मे=मम, मोक्षः=हंसवतीसकाशाद् मुक्तिः, नास्ति। (अच्छभालूकस्येव तदानीं हंसवत्या व्यवहारेण मम दुर्दशा सम्भवादिति।)

राजा—सखे! गच्छ=तस्याः पार्श्वे याहि, नागरिकवृत्त्या=विदग्धव्यवहारेण, एनां हंसवतीम्, सान्त्वय=प्रसादय, कोपान्निवर्तय।

विदूषकः—का गतिः=गमनं विना कः उपायः? (इति=एवमुक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः।)

राजा—(स्वगतम्=स्वमनसि) किन्नु इति वितर्के, खल्विति निश्चितम्, एवंविधं=उपालम्भपूर्णम् ईदृक्, गीतं=गानम्, आकर्ण्य=श्रुत्वा, इष्टजनस्य=प्रणयिजनस्य, विरहात्=विप्रयोगात्, ऋते=विनाऽपि, इष्टजनविरहादृतेऽपि, बलवत्=अत्यन्तम्, उत्कण्ठितः=व्याकुलितः, अस्मि। अथवा=यद्वा—

विदूषक—जैसी आपकी आज्ञा। (उठकर) आपने दूसरे के हाथों से भालू की चोटी पकड़ी है, इस स्थिति में जीवन से निराश मुझ गरीब का बचना कठिन है।

राजा—मित्र! उसे जाकर नागरिक-वृत्ति (शहरी ढंग) से समझाओ।

विदूषक—और गति ही क्या है? (अर्थात् जाना ही पड़ेगा) (प्रस्थान)

राजा—(मन में) इस प्रकार का गीत सुनकर किसी प्रिय के विरह से दुःखी न होते हुए भी मैं इस प्रकार उत्सुक क्यों हूँ? अथवा—

Jester—As your majesty command. Dear friend you have caught hold a bear by its lock hair (through other's hand), in this situation my survival appears very difficult.

King—Friend! Go, and console her in a civilized manner.

Jester—There is no other way. *(Exits)*

The King—*(To himself)* Hearing such a song though I am not at all anxious due to seperation of some affectionate one of mine, why I am striving so badly. Or—

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुको भवति यत् सुखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं
भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि॥ ९॥

(इत्यस्मृतिनिमित्तमुन्मनस्कत्वं रूपयति।)

कञ्चुकी—(उपसृत्य) जयति जयति देवः। एते खलु हिमगिरेरुपत्यकारण्यवासिनः कण्वसन्देशमादाय सस्त्रीकास्तपस्विनः सम्प्राप्ताः। श्रुत्वा देवः प्रमाणम्।

अन्वयः—सुखितोऽपि जन्तुः रम्याणि वीक्ष्य मधुरान् शब्दाँश्च निशम्य यत् पर्य्युत्सुकः भवति तत् नूनं चेतसा अवोधपूर्वं भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि स्मरति॥ ९॥

रम्याणीति। सुखितोऽपि=विरहविरहितोऽपि, जन्तुः=प्राणी, रम्याणि=सुन्दराणि उद्यान-प्रमदादीनि, वीक्ष्य=अवलोक्य, मधुरान्=प्रियान् कर्णसुखदान्, शब्दाँश्च, निशम्य=श्रुत्वा, यत्=यस्मात्, पर्य्युत्सुकः=उत्कण्ठितः भवति, तत्=तस्मात्, नूनं=निश्चितमेव, चेतसा=मनसा करणेन, अबोधपूर्वम्=अबुद्धिपूर्वकम्, यथा स्यात्तथा, भावस्थिराणि=स्वभावादेवाक्षयाणि, जननान्तर-सौहृदानि=पूर्वजन्मानुभूतान् प्रणयादिसम्बन्धविशेषान्, स्मरति=स्वभावादनुध्यायति। अत्र विभावना अप्रस्तुतप्रशंसा नामालङ्कारौ। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ९॥

भावार्थः—प्रस्तुतलोकोत्कण्ठाहेतुभूतप्रणयिजनविश्लेषदुःखाभावेऽपि जन्मान्तरीयप्रणय-स्मृतेरियमुत्कण्ठा जातेति भावः॥ ९॥

(इति=एवं, अस्मृतिः=उत्कण्ठाहेतोरस्मरणं, निमित्तं=हेतुः, यस्य तत् अस्मृतिनिमित्तम्, उन्मनस्कत्वम्=उत्कण्ठां, रूपयति=अभिनयति।)

कञ्चुकीयः—(उपसृत्य=अन्तिकं प्राप्य) जयति जयति देवः। एते=मत्पृष्ठानुगामिनः, खल्विति वितर्के, हिमगिरेः=हिमालयस्य, उपत्यकायाम्=आसन्नभूमौ, यदरण्यं तत्र वसन्तीति

सर्वथा सुखी प्राणी भी रमणीय वस्तु को देखकर अथवा मधुर शब्द को सुनकर जो उत्कण्ठित होता है, वह निश्चय ही जन्मान्तर के स्वाभाविक प्रेम का अनुभव अथवा स्मरण करता है॥ ९॥

(ऐसा कहकर राजा स्मरण करने की उन्मनस्कता का अभिनय करता है।)

कञ्चुकी—(पास आकर) महाराज की जय हो। हिमालय की तलहटी के वन में रहने वाले ये मुनि दो स्त्रियों के साथ महर्षि कण्व का कोई सन्देश लेकर आये हैं। मेरी प्रार्थना

A living being though completely happy, seeing an attractive thing or hearing a pleasant voice, when becomes anxious, really he memorise the real love (affection) of other life. (9)

(Saying so, acts a excited for not remembering)

Chamberlain—(Approaching) May your majesty be victorious. Here indeed, have arrived ascetics, accompanied by women, inhabiting the penance grove adjoining the Himālaya

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सविस्मयम्) किं कण्वसन्देशहारिणः सस्त्रीकास्तपस्विनः ?

कञ्चुकी—अथ किम् ?

राजा—तेन हि विज्ञाप्यतां मद्वचनादुपाध्यायः सोमरातः, अमूनाश्रमवासिनः श्रौतेन विधिना सत्कृत्य स्वयमेव प्रवेशयितुमर्हतीति। अहमप्येतांस्तपस्विदर्शनोचितप्रदेशे प्रति- पालयामि।

हिमगिरेरुपत्यकारण्यवासिनः, तपस्विनः=तापसाः, कण्वस्य=महर्षेः कण्वस्य, सन्देशम्=वाचिकम्, आदाय=गृहीत्वा, सस्त्रीकाः=स्त्रीभ्यां सहिताः, सम्प्राप्ताः=अत्रागताः, उपस्थिताः। श्रुत्वा=आकर्ण्य, देवः=भवान्, प्रमाणं=कर्त्तव्यनिश्चयकृत् भवतु।

राजा—(सविस्मयम्=साश्चर्यम्) किं कण्वसन्देशहारिणः=महर्षेः कण्वस्य वाचिक- मादाय, सस्त्रीकाः=स्त्रीजनसहितास्तपस्विनः समागताः, किम् इति प्रश्ने।

कञ्चुकीयः—अथ किम्=एवमेव।

राजा—तेन हि=यद्येवं तर्हि, मद्वचनात्=मदीयनिदेशात्, उपाध्यायः=शिक्षकः, सोमरातः= तदाख्यः पुरोहितः (राज्ञोऽध्यापक एव तदानीं पुरोहित आसीदिति बोध्यम्), विज्ञाप्यताम्=कथ्यताम्, अमून्=समागतान्, आश्रमवासिनस्तपस्विनः, श्रौतेन=वेदोक्तेन, विधिना= विधानेन, सत्कृत्य= पूजयित्वा, स्वयमेव=आत्मनैव (न त्वन्यद्वारेण), प्रवेशयितुम्=अभ्यन्तरप्रवेष्टुम्, अर्हतीति। अहम्= दुष्यन्तोऽपि, एतान्=कण्वाश्रमवासिनस्तपस्विनः, तपस्विदर्शनोचितप्रदेशे=पावनस्थले, यज्ञ- शालायाम् इति यावत्, प्रतिपालयामि=प्रतीक्षे।

सुनकर महाराज अपने कर्तव्य का निश्चय करें। अर्थात् विचार करें कि उन्हें वह सुनना चाहिए या नहीं।

राजा— (आश्चर्य के साथ) क्या महर्षि कण्व का सन्देश लेकर कुछ ऋषि स्त्रियों के साथ यहाँ आये हैं ?

कञ्चुकी—जी हाँ महाराज (और क्या)।

राजा—यदि ऐसा है तो हमारी ओर से अध्यापक सोमरात से कहो कि वे इन ऋषियों का वैदिक पद्धति से स्वागत कर अपने साथ यहाँ (मेरे पास) लायें। मैं भी तपस्वियों से भेंट करने योग्य स्थान पर बैठकर उनकी प्रतीक्षा करता हूँ।

---

mountain, bringing with them a message from sage Kaṇva. Having heard, your majesty is the authority to decide what is to be done.

The King—(With surprise) What! ascetics accompanied by women, bringing a message from sage Kaṇva.

Chamberlain—What then.

The king—Then, indeed, let the preceptor, Somarata, be thus requested at my words (on my behaf). It bahoves you to introduce even by yourself these dwellers of the hermitage, after having honoured them according to the form enjoined by the Vedās. I also wait for them, staying in the place suited to the visit of hermits.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कञ्चुकी—यथाज्ञापयति देवः (इति निष्क्रान्तः)।

राजा—(उत्थाय) वेत्रवति! अग्निशरणमार्गमादेशय।

प्रतिहारी—इदो इदो एदु देवो। (परिक्रम्य) एसो अहिणवसम्मज्जणरमणीओ सण्णिहिदहोमधेणु अग्गिसरणालिंदोः; ता आरोहदु देवो। [इत इत एतु देवः। एषः अभिनव-सम्मार्जनरमणीयः सन्निहितहोमधेनुः अग्निशरणालिन्दः, तदारोहतु देवः।]

राजा—(आरुह्य परिजनांसावलम्बी तिष्ठन्) वेत्रवति! किमुद्दिश्य तत्रभवता कण्वेन मत्सकाशमृषयः प्रेषिताः ?

कञ्चुकीयः—यथा=येन प्रकारेण, आज्ञापयति=आज्ञां करोति, देवः=भवान्। (इति= इत्युक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः।)

राजा—(उत्थाय आसनादिति शेषः) वेत्रवति! अग्निशरणमार्गम्=यज्ञशालामार्गम्, आदेशय=वचनेन प्रदर्शय।

प्रतीहारी—इत इतः अमुनानेन मार्गेण, एतु=आगच्छतु, देवः=भवान्। (परिक्रम्य) एषः=पुरतःस्थितः, अभिनवसम्मार्जनेन=सद्यःकृतपरिष्कृतिना, रमणीयः=शोभनः, अभिनव-सम्मार्जनरमणीयः, सन्निहिता=समीपवर्त्तिनी, होमधेनुः=यज्ञीयसाधनसाधिका धेनुर्यत्र सः सन्निहित-होमधेनुः, अग्निशरणस्य=अग्निशालायाः, अलिन्दः=बहिर्द्वारप्रकोष्ठम्। तत्= तस्मात्, आरोहतु= निःश्रेणिमधिरोहतु, एनम्, देवः=भवान्।

राजा—(आरुह्य, परिजनस्य=कस्यचित् परिचारकजनस्य, अंसं=स्कन्धम्, अवलम्बते तच्छीलः परिजनांसावलम्बी=कस्यचित् सेवकस्य स्कन्धे करं धृत्वा, तिष्ठन्=उपविशन्) वेत्रवृति= प्रतीहारी! किमुद्दिश्य=किमभिसन्धाय, तत्रभवता=पूज्येन, कण्वेन=महर्षिणा, मत्सकाशम्= मत्समीपम्, ऋषयः=तपस्विनः, प्रेषिताः=प्रेरिताः—

कञ्चुकी—जैसी महाराज की आज्ञा। (चला जाता है)

राजा—(उठकर) वेत्रवती! यज्ञशाला का मार्ग बताओ।

प्रतिहारी—इधर, इधर महाराज! (चलकर) यह अभी धोने से सुन्दर और पार्श्ववर्ती यज्ञीय धेनु से युक्त यज्ञशाला का बाहरी द्वार है, अतः आप ऊपर चढ़ें।

राजा—(सेवक के कन्धे का सहारा लेकर ऊपर चढ़कर) वेत्रवती! महर्षि कण्व ने किसलए मेरे पास ऋषि भेजे हैं ?

Chamberlain—As your majesty commands. *(Exit)*

The king—*(Rising)* Vetravatī! show the way to the fire chamber.

Door-keeper—This way, this way, may your majesty come. This is due to recent wash, very charming and accompanied by a cow suitable for yajña. This is its main-gate. So, you please mount or your majesty may mount here.

The king—*(Ascending, stands leaning on the shoulders of the attendent)* Vetravatī with what object may the ascetics have been sent to me by his holiness Kaṇva.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किन्तावद् व्रतिनामुपोढतपसां विघ्नैस्तपो दूषितं ?
धर्मारण्यचरेषु केनचिदुत प्राणिष्वसच्चेष्टितम् ?।
आहोस्वित् प्रसवो ममापरिचितैर्विष्टम्भितो वीरुधा-
मित्यारूढबहुप्रतर्कमपरिच्छेदाकुलं मे मनः ॥ १० ॥

प्रतीहारी—देवस्स भुअदंडणिव्वुदे अस्समपदे कुदो एवं; किंतु सुचरिताहिणंदिणो इसीओ देवं सभाजइदुं आअदेत्ति तक्केमि। [देवस्य भुजदण्डनिर्वृते आश्रमपदे कुत एवम्; किन्तु सुचरिताभिनन्दिन ऋषयः देवं सभाजयितुमागता इति तर्कयामि।]

अन्वयः—विघ्नैः उपोढं तपसां व्रतिनां तपः किन्तावद् दूषितम्, उत केनचित् धर्मारण्यचरेषु प्राणिषु असत् चेष्टितम्, आहोस्वित् मम अपरिचितैः वीरुधां प्रसवः विष्टम्भितः इति आरूढ-बहुप्रतर्कम् मे मनः अपरिच्छेदाकुलं भवतीति शेषः ॥ १० ॥

किन्तावदिति। विघ्नैः=व्याघातैः राक्षसादिभिर्वा, उपोढं=धृतं, तपः=त्रिविधं कर्म्म, यैस्ते तेषाम् उपोढतपसाम्, व्रतिनाम्=याज्ञिकानाम्, तपः=यागादि, किं तावत्, दूषितम्=व्याहतम्। उत= अथवा, केनचित्=दुष्टेन, धर्मारण्यचरेषु=तपोवनविहारिषु, प्राणिषु=हरिणादिजीवेषु विषये, असत्= हिंसादि, चेष्टितम्=आचरितम्, आहोस्वित्=किं वा, मम अपरिचितैः=अजातमत्परिचयैः जनैः, वीरुधां=लतानां, प्रसवः=पुष्पं फलं वा, विष्टम्भितः=प्रतिबन्धं प्रापितः, इति=अनेन प्रकारेण, आरूढाः=उद्भूताः, बहवः=नानाविधाः, प्रतर्काः=संशयाः, यस्मिन् तत् आरूढबहुप्रतर्कम्, मे=मम, मनः=अन्तःकरणम्, अपरिच्छेदेन=एकतरानवधारणेन, आकुलं=व्याकुलं, अपरिच्छेदाकुलं भवतीति शेषः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ १० ॥

भावार्थः—राक्षसादिभिः उपोढतपसां याज्ञिकतापसानां तपः दूषितम्, अथवा केनचित् दुष्टेन तपोवनविहारिषु प्राणिषु विषये असदाचरितम्, किं वा ममापरिचितैः जनैः लतानां प्रसवः प्रतिबन्धं प्रापितः, इत्यादिकमनेकविधं चिन्तयन् मम मनः एकतरानवधारणेन तदवधारणार्थं विह्वलं भवति ॥ १० ॥

प्रतीहारी—देवस्य=भवतः, भुजदण्डेन=बाहुदण्डेन, निर्वृते=सुस्थीकृते, आश्रमपदे=

क्या उन तपस्वियों की तपस्या में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित हो गई है अथवा धर्मारण्य में इच्छानुसार विचरण करने वाले प्राणियों के साथ किसी ने असद्व्यवहार किया है या किसी मेरे अपरिचित ने आश्रम की लताओं के फल-फूल आदि को नष्ट कर डाला है ? इस प्रकार अनेकानेक तर्क-वितर्क मेरे मन में उठ रहे हैं, किन्तु कोई निर्णय न कर पा सकने के कारण मेरा मन व्याकुल हो रहा है ॥ १० ॥

प्रतिहारी—महाराज के भुजदण्ड से सुरक्षित उस तपोवन में इस प्रकार की बाधाएँ

It is indeed that the penance of those, who have taken a vow and have developed austerities, has been censured by obstacles? or has someone acted wickedly towards animals moving freely in the religious forest? or is the produce of creepers stopped owing to my misdeeds? by some unknown person to me? My mind, in which many doubts have thus arisen, is distressed owing to indecision.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशतः गौतमीसहितौ शकुन्तलामादाय कण्वशिष्यौ पुरतश्चैषां पुरोहितकञ्चुकिनौ।)

कञ्चुकी—इत इतो भवन्तः।

शार्ङ्गरवः—सखे! शारद्वत!

महाभागः कामं नरपतिरभिन्नस्थितिरसौ
न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते।

तपोवनक्षेत्रे, एवम्=असदाचरणम्, कुतः=कस्मात् भवितुमर्हति? किन्तु सुचरितेन=भवतः सत्कार्येण, अभिनन्दन्ति=सन्तुष्यन्तीति ये ते सुचरिताभिनन्दिनः, ऋषयः=तापसाः, देवं=भवन्तम्, सभाजयितुम्= सम्मानयितुम्, आगताः=प्राप्ताः, इति=एवं, तर्कयामि=सम्भावयामि।

(ततः=तदनन्तरं, प्रविशतः=प्रवेशं कुरुतः, गौतमी=एतन्नाम्नी कण्वधर्मभगिनी, सहितौ, शकुन्तलामादाय=गृहीत्वा, कण्वशिष्यौ=शार्ङ्गरवशारद्वतौ, पुरतः=अग्रतश्च, एषां=कण्वशिष्यादीनाम्, पुरोहितः=दुष्यन्तकुलगुरुः, कञ्चुकी।

कञ्चुकी—इत इतो भवन्तः=अमुनानेन मार्गेण यूयम्।

शार्ङ्गरवः—सखे=मित्र शारद्वत!

अन्वयः—असौ महाभागः नरपतिः कामम् अभिन्नस्थितिः तथा—वर्णानां कश्चिदपकृष्टोऽपि अपथं न भजते। तथापि शश्वत् परिचितविविक्तेन मनसा इदं जनाकीर्णं गृहं हुतवहपरीतम् इव मन्ये॥ ११॥

महाभाग इति। असौ=पुरतःस्थितः, महान्=विपुलः, भागः=भागधेयं, यस्य सः महाभागः ('आरम्भोत्पत्तिमामृत्योः कलङ्को यस्य नो भवेत्। स्याच्चैवानुपमाकीर्त्तिर्महाभागः स उच्यते'॥),

---

उपस्थित ही कैसे हो सकती हैं। मुझे तो यही जान पड़ता है कि आपके सद्व्यवहार से सन्तुष्ट होकर ये आपका अभिनन्दन करने आये हैं।

(इसके बाद शकुन्तला को लेकर गौतमी सहित कण्व के शिष्यों का प्रवेश, इनके सामने पुरोहित और कञ्चुकी का आगमन।)

कञ्चुकी—आप लोग इधर से आइए।

शार्ङ्गरव—मित्र शारद्वत!

यह महाभाग्यवान् राजा कभी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता। इसके राज्य में रहने वाले चारों वर्णों के मनुष्यों में से कोई भी कुपथगामी नहीं होता (सदाचार का उल्लंघन नहीं करता)।

Door-keeper—I conjecture that pleased (your) good deeds, the sages have come to congratulate your majesty.

(Then enter sages, accompanied by Gautamī, leading Śakuntalā forward and the chamberlain and preceptor in thier front)

Chamberlain—This way, this way may your honours come.

Śarṅgrava—Śaradvata—

Granted that this glorious king swerves (remains away or deviate) from his duty, and due to this not one even though the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथापीदं शश्वत्परिचितविविक्तेन मनसा
जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव॥ ११॥

शारद्वतः—शार्ङ्गरव! स्थाने खलु पुरप्रवेशात्तवेदृशः संवेगः। अहन्तु—

अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्।
बद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसङ्गिनमवैमि॥ १२॥

नरपतिः=राजा दुष्यन्तः, कामं=सम्यक्, अभिन्ना=अव्याहता, स्थितिः=लोकमर्यादा, येन सः अभिन्न-स्थितिः=अनुल्लङ्घिताचारपद्धतिः, तथा=एवम्, वर्णानाम्=ब्राह्मणक्षत्रियादीनाम्, कश्चिदपकृष्टोऽपि=जात्या कर्म्मणा वा पतितो निकृष्टो वाऽपि, अपथं=कुमार्गं, सदाचारलङ्घनादिकम्, न भजते=नैवाश्रयति, राजशासनादिति भावः। तथापि=राजप्रजयोरीदृक्शिष्टाचारे सत्यपि, शश्वत्=सर्वदा, परिचितम्=आजन्मसेवितं, विविक्तं=विजनस्थानं, येन तेन अपरिचितविविक्तेन, मनसा=चित्तेन, इदम्=एतत्, जनाकीर्णं=लोकसङ्कुलम्, गृहं=राजसदनं, हुतवहेन=वह्निना, परीतं= व्याप्तमिव, मन्ये=सम्भावयामि। अत्र च विभावनाविशेषोक्त्योः सन्देहसङ्करालङ्कारः। 'हुतवहपरीतं गृहमिव' इत्यंशे उपमा। शिखरिणी नाम वृत्तम्॥ ११॥

भावार्थः—असौ महाभागः राजा दुष्यन्तः कदापि स्वकीयां मर्यादां न त्यजति। तथा अस्य शासने ब्राह्मणक्षत्रियादीनां मध्ये कश्चिद् जात्या कर्म्मणा वा निंकृष्टोऽपि सदाचारलङ्घनादिकं न करोति। तथापि सततारण्यनिवासत्वात् जनाकुलम् इदं नगरं राजसदनं वा वह्निना व्याप्तमिव मन्ये॥ ११॥

शारद्वतः—शार्ङ्गरव! स्थाने=युक्तम्, पुरप्रवेशात्=नगरप्रवेशात्, तव=भवतः, ईदृशः संवेगः=उद्वेगः (खल्विति वितर्के) (तथा च चित्तं परिचयविवशमिति तवैवं प्रतीतिर्युक्तैव ममापि तथैवोदयात् इति भावः)। अहन्तु=अहं पुनः—

अन्वयः—स्नातः अहम् इह सुखसङ्गिनम् अभ्यक्तम् इव अवैमि। तथा शुचिः इह सुखसङ्गिनम् अशुचिम् इव अवैमि। तथा प्रबुद्धः अहम् इह सुखसङ्गिनम् जनं सुप्तमिव अवैमि। तथा स्वैरगतिः जनम् इह सुखसङ्गिनं बद्धमिव अवैमि॥ १२॥

फिर भी चिरकाल तक एकान्तवास के अभ्यस्त होने के कारण मैं इस जनाकुल नगर (महल) को अग्नि से घिरे हुए घर की भाँति मानता हूँ॥ ११॥

शारद्वत—शार्ङ्गरव! राजभवन में (राजधानी में) प्रविष्ट होकर तुम्हारा इस प्रकार उद्विग्न होना उचित ही है, किन्तु मैं तो—

मैं यहाँ के व्यक्तियों को उसी प्रकार समझता हूँ जैसे स्नान किया हुआ व्यक्ति तेल

---

lowest, among the four main classes, resorts to the wrong path never the less with my mind perpetually accustomed to solitude I regard this place swarmed with men as a house enveloped (surrounded) in fire. (11)

Śardvata—Śarṅgarva! Rightly have you become thus sice entering the city. I also—

Regard the people here, who are addicted to pleasure, as one

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरोधाः—अत एव भवद्विधा महान्तः ।

शकुन्तला—(दुर्निमित्तमभिनीय) अम्मो! किं मे वामेदरं णअणं विप्फुरदि? [अहो! किं मे वामेतरत् नयनं विस्फुरति ?

गौतमी—जादे! पडिहदं, अमंगलं, सुहाइं दे होंतु। [जाते! प्रतिहतममङ्गलम्, सुखानि ते भवन्तु।] (इति परिक्रामन्ति)

अभ्यक्तमिति। स्नातः=कृतस्नानः, अहम्, इह=राजधान्याम्, सुखसङ्गिनं=कृतस्नानतयैव प्राप्तपावित्र्यसुखं जनम्, अभ्यक्तं=तैलाक्तदेहमिव, अवैमि=अवगच्छामि। तथा शुचिः=पवित्रोऽहम्, इह=राजधान्याम्, सुखसङ्गिनं=भगवत्स्मरणादिना एव पावित्र्यवन्तं जनम्, अशुचिम्=अपवित्रमिव अवैमि। तथा प्रबुद्धः=जागृतोऽहम्, इह=राजधान्याम्, सुखसङ्गिनम्=उपभुज्यमानजागरणावस्थोपस्थितसुखं जनं, सुप्तम्=निद्रितमिव, अवैमि। तथा स्वैरा=स्वाधीना, गतिर्यस्य सः स्वैरगतिः, अहम्, इह=राजधान्याम्, सुखसङ्गिनम्=निर्भुक्ततयावस्थानात्सुखभोगिनं जनम्, बद्धमिव=निगडितमिव, अवैमि। अत्रोपमालङ्कारः। आर्य्या जातिः ॥ १२ ॥

भावार्थः—अत्रागत्य तु कृतस्नानः अहं कृतस्नानतयैव प्राप्तपावित्र्यसुखं जनं तैलाक्तदेहमिव अवैमि। तथा पवित्रोऽहं भगवत्स्मरणादिना पावित्र्यवन्तं जनम् अपवित्रमिव अवैमि। प्रबुद्धोऽहम् उपभुज्यमानजागरणावस्थोपस्थितसुखं जनं सुप्तमिव अवैमि तथा स्वैरगतिः अहम् इह सुखसङ्गिनं जनं बद्धमिव अवैमि। हस्तपाददिभिरपि दुष्कार्य्यस्य बाधाप्रदानस्याकरिष्यमाणत्वादिति भावः ॥ १२ ॥

पुरोधाः—अत एव=शिथिलीकृतसांसारिकसुखत्वादेव, भवद्विधाः=भवादृशा मुनयः, महान्तः=लोकोत्तराः।

शकुन्तला—(दुर्निमित्तम्=दुर्लक्षणम्, अभिनीय=रूपयित्वा) अहो इत्युद्वेगे, किं=कथम्, मे=मम, वामेतरं=दक्षिणं, नयनं=नेत्रम्, विस्फुरति=स्पन्दते?

लगाये हुए व्यक्ति को, पवित्र अपवित्र को, जागता हुआ सोते हुए को और स्वतन्त्र परतन्त्र को देखता है।

पुरोधा—इसीलिए आप लोग महान् हैं।

शकुन्तला—(**अपशकुन का अभिनय करके**) अरे! न जाने क्यों मेरा दक्षिण नेत्र फड़क रहा है।

गौतमी—पुत्री! तुम्हारा अमङ्गल नष्ट हो। तुम्हें सब प्रकार का सुख मिले। (**यह कहकर वे घूमती हैं**)

---

who has had his bath regards the anoited, as one who is pure the impure, as one who is awake the sleeping, as one whose movements are free the bound. (12)

Preceptor—That's why you are considered as great ones.

Śakuntalā—*(Acting as if she had seen bad omen)* I do not know why my right eye fluttering?

Gautamī—Child! The misfortune struck back or driven

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरोधाः—(राजानं निर्दिश्य) भो भोस्तपस्विनः! असावत्रभवान् वर्णाश्रमाणां रक्षिता प्रागेव मुक्तासनः प्रतिपालयति वः, पश्यतैनम्।

शार्ङ्गरवः—भो महात्मन्! काममेतदभिनन्दनीयम्; तथापि वयमत्र मध्यस्थाः।

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥ १३॥

गौतमी—जाते=वत्से! प्रतिहतम्=विध्वस्तम्, अमङ्गलम्=अनिष्टं अशुभम्, ते=तव, सुखानि=मङ्गलानि, भवन्तु। (इति=इत्युक्त्वा, परिक्रामन्ति=पादक्षेपं कुर्वन्ति।)

पुरोधाः—(राजानं=दुष्यन्तं, निर्दिश्य=अङ्गुल्या निर्देशं कृत्वा, भो भोस्तपस्विनः! सम्भ्रमे द्विरुक्तिः, तपस्विनः=तापसाः! असौ=पुरतः स्थितः, अत्रभवान्=सर्वमान्यः, वर्णाश्रमाणाम्=ब्राह्मणक्षत्रियादीनां तथा च ब्रह्मचर्यगार्हस्थ्यादीनाम्, रक्षिता=पालयिता, प्रागेव=भवदत्रागमनात् पूर्वमेव, मुक्तमासनं येन सः मुक्तासनः=आसनं परित्यज्य, वः=युष्मान्, प्रतिपालयति=प्रतीक्षते। एनं=राजानं, पश्यत=अवलोकयत।

शार्ङ्गरवः—भो महात्मन्=महानुभाव! एतत्=राज्ञः पूर्वोक्तमाचरणम्, कामं=पर्याप्तमेव, अभिनन्दनीयम्=प्रशंसाविषयीभूतम् (स्तुत्यम्), तथापि=पर्याप्तप्रशंसार्हत्वेऽपि, अत्र=एतस्मिन् अभिनन्दनविषये, वयम्=कण्वशिष्याः (तापसाः), मध्यस्थाः=तटस्थाः।

अन्वयः—तरवः फलोद्गमैः नम्राः भवन्ति, घनाः नवाम्बुभिः दूरविलम्बिनः भवन्ति, सत्पुरुषाः समृद्धिभिः अनुद्धताः भवन्ति। एषः परोपकारिणां स्वभाव एव॥ १३॥

भवन्तीति। तरवः=पादपाः, फलानाम् उद्गमैः=उत्पत्तिभिः, नम्राः=तत्फलभरेण विनताः भवन्ति, घनाः=मेघाः, नवाम्बुभिः=नवजलसञ्चयैः, दूराद् विलम्बन्ते इति दूरविलम्बिनः=भूमिनिकटवर्तिनो भवन्ति, तथा सन्तः=साधवः, च ते पुरुषाश्चेति सत्पुरुषाः=सज्जनाः, समृद्धिभिः=

पुरोधा—(राजा की ओर सङ्केत करके) ओ तपस्वियो! वर्ण और आश्रम के रक्षक हमारे माननीय महाराज आप लोगों के आने से पूर्व ही आसन से उठकर आप लोगों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इनके दर्शन कीजिए।

शार्ङ्गरव—ओ महात्मा! महाराज का यह व्यवहार अभिनन्दनीय है परन्तु हम तो इस विषय में उदासीन हैं। क्योंकि—

फल लग जाने पर वृक्ष झुक जाते हैं, नवीन जल भर लेने पर मेघ भूमि की ओर

---

away. You may receive all kinds of happiness or pleasures. *(They walk round)*

Purodhā—O, ascetics! here his majesty! the protector of all the four classes and the orders, is waiting you, having risen from his seat even before your arrival. Behold him.

O, Great one! true, this is commendable, yet we are indifferent in this matter. Why—

Trees become bent on account of the rising fruit, clouds hang a long way down owing to fresh waters; good men become

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतिहारी—देव! पसण्णमुहा इसीओ दीसंति। [देव! प्रसन्नमुखा ऋषयो दृश्यन्ते।]

राजा—(शकुन्तलां निर्वर्ण्य) अये! अत्र—

केयमवगुण्ठनवती नातिपरिस्फुटशरीरलावण्या।
मध्ये तपोधनानां किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्॥ १४॥

धनसम्पत्तिभिः, अनुद्धताः=गर्वशून्याः भवन्ति। एषः=नम्रत्वम्, परोपकारिणाम्=परोपकारदत्तमनसां, स्वभावः=प्रकृतिः, एव। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासः किञ्च अप्रस्तुतात् प्रस्तुतस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसापि तथा च क्रियारूपकधर्माभिसम्बन्धात् तुल्ययोगितापि। वंशस्थविलं वृत्तञ्च॥ १३॥

भावार्थः—फलवन्तो वृक्षाः, जलपूर्णाः मेघाः, ऐश्वर्यशालिनः साधवः परोपकारनिरताश्च जनाः सर्वदा नम्रा एव भवन्तीति तेषां नैसर्गिकस्वभाव एव इति भावः॥ १३॥

प्रतीहारी—देव=स्वामिन्! प्रसन्नानि मुखानि येषान्ते प्रसन्नमुखाः, ऋषयः=तापसाः, दृश्यन्ते=प्रतीयन्ते।

राजा—(शकुन्तलां=कण्वदुहितां, निर्वर्ण्य=विशेषेणावलोक्य) अये=इति सम्भ्रमे, अत्र= स्थानेऽस्मिन्, ममाग्रे इत्यर्थः।

अन्वयः—पाण्डुपत्राणां मध्ये किसलयम् इव तपोधनानां मध्ये नातिपरिस्फुटशरीरलावण्या इयम् अवगुण्ठनवती का?॥ १४॥

केयमिति। पाण्डूनि=परिणततया पाण्डुरवर्णानि, यानि पत्राणि तेषां पाण्डुपत्राणाम्= पीताभपत्राणां मध्ये, किसलयमिव=नवपल्लवमिव, तपोधनानां=तापसानां मध्ये, नातिपरिस्फुटम्= अनतिव्यक्तम् (गात्रस्थावरणात्), शरीरस्य लावण्यं=सौन्दर्यं, यस्याः सा नातिपरिस्फुटशरीर-लावण्या, इयम्=मत्पुरःस्थिता, अवगुण्ठनवती=शिरःप्रच्छादनवती, का=इयं पुरो विलसन्ती नारी का? अत्र श्रौतोपमालङ्कारः, वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमपि। आर्या जातिः॥ १४॥

लटक (झुक) जाते हैं; इसी प्रकार सत्पुरुष समृद्धि पाकर नम्र हो जाते हैं। वस्तुतः परोपकारियों का स्वभाव ही ऐसा होता है॥ १३॥

प्रतिहारी—देव! ऋषि प्रसन्नमुख जान पड़ते हैं।

राजा—(देखकर) अरे यहाँ—

पीले पत्तों के मध्य लाल-लाल किसलय की भाँति जिसका शारीरिक सौन्दर्य अभी पूर्णतः प्रस्फुटित नहीं हुआ है ऐसी कौन यह घूंघट वाली नारी ऋषियों के मध्य स्थित है॥ १४॥

---

the reverse of arrogant by riches, this is the very natural of the benefactors of others. (13)

Door-keeper—Your majesty! the sages appear to have cheerful complexions.

The king—(Observing Śakuntalā)

Who could she be, possessed of a veil and with the loveliness of her body not fully manifested, (remaining) among the ascetics like a tender sprout among pale leaves? (14)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—भट्टा! कुदूहलगब्भो पडिहदो ण मे तक्को पसरदि। दंसणीआ उण से आकिदी लक्खीअदि। [भर्त्तः! कुतूहलगर्भः प्रतिहतो न मे तर्कः प्रसरति। दर्शनीया पुनरस्या आकृतिर्लक्ष्यते।]

राजा—भवतु, अनिर्वर्ण्यं खलु परकलत्रम्।

शकुन्तला—(उरसि हस्तं दत्त्वा स्वगतम्) हिअअ! किं एब्वं वेवसि? अज्जउत्तस्स तादिसभावाणुबंधं सुमरिअ धीरत्तणं दाव अवलंबस्स। [हृदय! किमेवं वेपसे? आर्यपुत्रस्य तादृशभावानुबन्धं स्मृत्वा धीरत्वं तावदवलम्बस्व।]

पुरोधाः—(पुरो गत्वा) स्वस्ति देवाय। देव! एते खलु विधिवदर्चितास्तपस्विनः; कश्चिदेतेषु उपाध्यायसन्देशोऽस्ति, तं देवः श्रोतुमर्हति।

भावार्थः—यथा पाण्डुपत्राणां मध्ये रक्ताभं किसलयं पृथगेव प्रतिभाति तथैव तापसानां मध्ये अविकसितशरीरलावण्या शिरःप्रच्छादनवती (अवगुण्ठनवती) इयं पुरो विलसन्ती नारी काऽस्ति?

प्रतिहारी—भर्त्तः=स्वामिन्! कुतूहलम्=आश्चर्यं, गर्भे यस्य सः कुतूहलगर्भः=दर्शनीयाकृतिर्वनितेत्याश्चर्यम्, इति, मे=मम, तर्कः=विचारः, केयं भवितुमर्हतीत्यूहः, प्रतिहतः=कुतूहलोपहितः सन्, न प्रसरति=न प्रसारमाप्नोति। पुनः=किन्तु, दर्शनीया=दर्शनयोग्या, अस्याः=ललनायाः, आकृतिः=स्वरूपः, लक्ष्यते=दृश्यते।

राजा—भवतु=इयं या वा का वा भवत्वित्यर्थः, परकलत्रं=परभार्य्याम्, अनिर्वर्ण्यम्=अनवलोकनीयम्, खल्विति निश्चितम्।

शकुन्तला—(उरसि=वक्षसि, हस्तं निधाय=धृत्वा) हृदय! एवम्=अनेन प्रकारेण, किं वेपसे=कथं कम्पसे? आर्यपुत्रस्य=भर्त्तुः, तादृशभावानुबन्धं=पूर्वानुभूतानुरागप्रवाहं, स्मृत्वा=स्मरणपथमानीय, धीरत्वं=धैर्यम्, तावद् अवलम्बस्व=आश्रय। धीरं तावद् भव इति भावः।

पुरोधाः—(पुरः=अग्रे, गत्वा=प्राप्य) देवाय=भवते, स्वस्ति=मङ्गलमस्तु, एते=

प्रतिहारी—महाराज! कुतूहलवश—इससे जानने की इच्छा होते हुए भी मेरी तर्क-शक्ति आगे नहीं बढ़ती, तथापि इसकी आकृति दर्शनीय-सी प्रतीत होती है।

राजा—होने दो, परायी स्त्री को देखना उचित नहीं।

शकुन्तला—(हृदय पर हाथ रखकर) हृदय! तुम इस प्रकार काँप क्यों रहे हो? महाराज के इस अटूट प्रेम का स्मरण कर थोड़ा धैर्य धारण करो।

पुरोहित—(आगे बढ़कर) महाराज का कल्याण हो। ये विधिवत् पूजित तपस्वी हैं। इनके पास इनके गुरु का कोई सन्देश है; उसे आप सुन लीजिए।

Door-keeper—Your majesty! my conjecture, pregnant with curiosity, does not work. But her form indeed appears lovely.

King—Let it be. The wife of another ought not to be eyed.

Śakuntalā—*(Placing her hand on her heart to herself)* My heart! why do you thus tremble? Considering the affection of my husband, just be patient.

Preceptor—Here are the ascetics, worshipped according to

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अवहितोऽस्मि।

शिष्यौ—(हस्तमुद्यम्य) भो राजन्! विजयतां भवान्।

राजा—सर्वानभिवादये वः।

शिष्यौ—स्वस्ति देवाय।

राजा—अपि निर्विघ्नं तपः?

शिष्यौ— कुतो धर्मक्रियाविघ्नः सतां रक्षितरि त्वयि।
तपस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति॥ १५॥

पुरोवर्त्तिनः, खल्विति निश्चयेन, विधिवद्=यथाविधि, अर्चिताः=पूजिताः, तपस्विनः=तापसाः, एतेषु=तपस्विषु, कश्चित्, उपाध्यायस्य=अध्यापकस्य कण्वस्य, सन्देशः=संवादः, अस्ति=विद्यते, तम्=सन्देशम्, देवः=भवान्, श्रोतुम्=आकर्णयितुम् अर्हति।

राजा—अवहितोऽस्मि=दत्तावधानोऽस्मि।

शिष्यौ—(हस्तमुद्यम्य=करमुत्तोल्य) भो राजन्! भवान्=त्वम्, विजयताम्=जयस्व।

राजा—वः=युष्मान् सर्वान्, अभिवादये=नमस्करोमि।

शिष्यौ—देवाय=भवते, स्वस्ति=मङ्गलमस्तु।

राजा—अपि=इति प्रश्ने, निर्विघ्नं तपः=युष्माकं तपः निर्विघ्नेन सम्पद्यते नु?

शिष्यौ—अन्वयः—त्वयि रक्षितरि सति सतां धर्मक्रियाविघ्नः कुतः? घर्मांशौ तपति सति तमः कथम् आविर्भविष्यति?॥ १५॥

कुत इति। त्वयि=दुष्यन्ते, रक्षितरि=परिपालयितरि सति, सतां=साधूनाम्, धर्मक्रियाणां=यागादिधर्मानुष्ठानां, विघ्नः=व्याघातः, कुतः=न कुतोऽपीत्यर्थः। घर्माः=उष्णाः, अंशवः=किरणाः,

---

राजा—मैं सुनने के लिए प्रस्तुत हूँ।

शिष्य—(हाथ उठाकर) महाराज! आपकी विजय हो।

राजा—मैं आप सबको प्रणाम करता हूँ।

शिष्य—आपका मंगल हो।

राजा—आपका तप निर्विघ्न हो रहा है।

शिष्य—आप जैसे रक्षक की विद्यमानता में भला हमारे तप में विघ्न कैसे आ सकता

---

the form. There is some message from their preceptor. It behoves your majesty to listen to it.

The king—I am ready to listen.

Pupils—(Raising up their hands) Be victorious, O' king.

The king—I salute you all.

Pupil—Be auspicious to you.

The king—Have the sages their penance free from obstacles?

Pupils—How can there be an obstacle to the religious

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(आत्मगतम्) सर्वथा अर्थवान् खलु मे राजशब्दः। (प्रकाशम्) तत्रभवान् कुशली कण्वः ?

शार्ङ्गरवः—राजन्! स्वाधीनकुशलाः सिद्धिमन्तः। स भवन्तमनामयप्रश्नपूर्वकमिदमाह।

राजा—किमाज्ञापयति भगवान्?

यस्य तस्मिन् घर्मांशौ=सूर्ये, तपति=जगत् सन्तापयति सति, तमः=तिमिरम्, कथम्=केन प्रकारेण, आविर्भविष्यति=प्रसरिष्यति। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—राज्येऽस्मिन् त्वयि रक्षितरि सति सर्वे एव सन्तः तेषां च क्रियामात्रविघ्नोऽपि न सम्भाव्यते सुतरां धर्मक्रियाणामपि विघ्नाभाव एव॥ १५॥

राजा—(आत्मगतम्=स्वमनसि) मे=मम, राजशब्दः=राजेत्यानुपूर्वीवर्णस्तोमः, सर्वथा=सर्वात्मना, अर्थवान्=सार्थकः, खल्विति निश्चयेन। (प्रकाशम्) तत्रभवान्=पूजनीयः, कण्वः=महर्षिः, कुशली=मङ्गलवान् ('मम पालनपद्धत्या सन्तुष्टाः सत्यः प्रकृतयो मामेवं स्तुवन्ति अतोऽहं धन्य (एवेत्याशयः)।

शार्ङ्गरवः—राजन्! सिद्धिमन्तः=सिद्धिसम्पन्नाः पुरुषाः, स्वाधीनम्=आत्मायत्तं, कुशलं=मङ्गलं, येषान्ते स्वाधीनकुशलाः (महर्षेः कण्वस्य सिद्धिमत्त्वात् स्वाधीनकुशलत्वमेवेति भावः)। सः=कण्वः, भवन्तम्=त्वम्, अनामयं=रोगविरहितं त्वं, प्रश्नपूर्वकम् अनामयप्रश्नपूर्वकम्=किमारोग्यमस्तीति आराज्ञ जिज्ञासापूर्वकम्, इदं=वक्ष्यमाणम्, आह=उक्तवान्—

'ब्राह्मणं कुशलं पृच्छेत् क्षत्रबन्धुमनामयम्।
वैश्यं क्षेमं समागम्य शूद्रमारोग्यमेव च'॥

राजा—भगवान् कण्वः किमाज्ञापयति=महर्षेः कः निदेशः ?

है ? जैसे सूर्य की विद्यमानता में अन्धकार का प्रसार सम्भव नहीं (वैसे ही आपके रहते विघ्न की आशङ्का नहीं हो सकती)॥ १५॥

राजा—(मन में) हमारे लिए राजा शब्द सर्वथा सार्थक है। (प्रगट) माननीय महर्षि कण्व सकुशल तो हैं।

शार्ङ्गरव—राजन्! सिद्धिसम्पन्न पुरुषों की कुशलता उनके अपनी अधीन होती है। उन्होंने आपके आरोग्य को पूछते हुए कहा है—

राजा—भगवान् कण्व क्या आज्ञा देते हैं ?

---

practices of the good men (saints), when you are the protector? How can darkness spread when the sun shines? (15)

The king—*(To himself)* My title 'Rājan' has indeed become significant. *(Aloud)* Is his holiness Kaṇva doing well?

Śārṅgarava—Persons of supernatural powers have their well being in their own control. He, with the previous enquiry regarding your health, says this to you—

The king—What does his holiness command?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—यन्मिथः समयादिमां मदीयां दुहितरं भवानुपयेमे; तन्मया प्रीतिमता युवयोरनुज्ञातम्। कुतः—

त्वमर्हतामग्रसरः स्मृतोऽसि नः शकुन्तला मूर्तिमतीव सत्क्रिया।
समानयंस्तुल्यगुणं वधूवरं चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः॥ १६॥

तदिदानीमापन्नसत्त्वेयं गृह्यतां सहधर्मचरणायेति।

शार्ङ्गरवः—यत्, मिथः=रहसि, इमां=पुरोवर्त्तिनीम्, मदीयाम्=मत्सम्बन्धिनीं, दुहितरं=पुत्रीम्, उपयेमे=परिणीतवान्, तत् कर्म, मया=कण्वेन, प्रीतिमता=परस्परानुरूपत्वात् सन्तुष्टेन, युवयोः=युवयोर्विषये, अनुज्ञातम्=अनुमतम्। कुतः—

अन्वयः—त्वम् अर्हताम् अग्रसरः नः स्मृतः असि। तथा शकुन्तला मूर्त्तिमती सत्क्रिया एव, अतः तुल्यगुणं वधूवरं समानयन् प्रजापतिः चिरस्य वाच्यं न गतः॥ १६॥

त्वमिति। त्वम्=भवान्, अर्हताम्=प्रशंसापात्राणां जनानाम्, अग्रसरः=अग्रगण्यः, नः=अस्माकम्, स्मृतः=अभिमतः, असि। तथा शकुन्तला=मद्दुहिता, मूर्त्तिमती=शरीरधारिणी, सत्क्रिया=सत्कारभूता एव। अतः, तुल्याः=अन्यूनातिरिक्ताः, गुणाः यस्य तत् तुल्यगुणं=समानगुणशालिनम्, वधूश्च वरश्चानयोः समाहारः वधूवरम्=दम्पतीयुगलम्, समानयन्=एकीकुर्वन्, विवाहविधिना संयोजयन्, प्रजापतिः=विधाता, चिरस्य=चिरादारभ्य प्रवृत्तम्, वाच्यम्=निन्दाम्, न गतः=न प्राप्तः। अत्र समालङ्कारः काव्यलिङ्गमपि च। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १६॥

भावार्थः—समानगुणशालित्वेनं परस्परानुरूपत्वात्, तथा च लोके—चिरकालप्रवृत्तमयोग्ययुगित्यपवादमसहमान इव प्रजापतिरिमां त्वाञ्च तुल्यगुणं वधूवरं निर्माय संयोजयंश्चेदानीं ममार्जेति भावः। एतेनेतः पूर्वमेवं गुणोपेतं वधूवरं नाभूदिति भावः॥ १६॥

शार्ङ्गरव—आपने जो एकान्त में (गान्धर्व विधि से) मेरी कन्या से विवाह किया है, उसके लिए हम आप दोनों पर प्रसन्न हैं और आपके इस कार्य का अनुमोदन करते हैं। क्योंकि—

हमारा विश्वास है कि आप प्रशंसनीय लोगों में अग्रगण्य हैं और हमारी पुत्री शकुन्तला मूर्तिमती सत्क्रिया ही है। आप दोनों समान गुणवालों का संयोग कराकर ब्रह्मा भी बहुत दिनों तक के लिए निन्दित होने से बच गये हैं॥ १६॥

अब यह गर्भवती है, अतः आप अपना धर्मकार्य सम्पादन करने के लिए इसे ग्रहण करें।

Śārṅgarava—That by mutual agreement you married this daughter of mine, that (your action) has been approved of by me; who love you both. Why—

You are known to us as the supreme of the worthy, and Śakuntalā is good action incarnate. Bringing togather a bride and a bride-groom of equal qualities, Brahmā, has, after a long time, not incurred censure. (16)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—भद्दमुह ! किंपि वत्तुकामह्मि, ण मे वअणावसरो अत्थि।[भद्रमुख! किमपि वक्तुकामास्मि, न मे वचनावसरोऽस्ति।]

राजा—आर्ये ! कथ्यताम्।

गौतमी—

णावेक्खिदो गुरुअणो इमिए ण तुए वि पुच्छिदो बंधू।
एक्कक्कस्स अ चरिए भणादु किं एक्क एक्कस्सिं॥ १७॥
[नापेक्षितो गुरुजनः अनया न त्वयापि पृष्टो बन्धुः।
एकैकस्य च चरिते भणतु किमेक एकस्मिन्॥ १७॥]

तत्=तस्मात् त्वया परिणयस्य कृतत्वात्, इदानीम्, आपन्नं=जठरे प्रासम्, सत्त्वं=जन्तुः, यया सा आपन्नसत्त्वा=गर्भिणी, इयं=शकुन्तला, सहधर्माचरणाय=मिलित्वा यज्ञादिसम्पादनाय, गृह्यताम्=स्वीक्रियताम्।

गौतमी—भद्रमुख—भद्राणां=सज्जनानां, मुखः=मुखवदग्रगण्यः, तत्सम्बुद्धौ हे भद्रमुख= सज्जनशिरोमणि ! किमपि=किञ्चित्, वक्तुं कामो यस्याः सा वक्तुकामाऽस्मि, न मे वचनावसरोऽस्ति= न मत्कृते कथनावकाशोऽस्ति।

राजा—आर्ये=पूज्ये ! कथ्यताम्=उच्यताम्।

गौतमी—अन्वयः—अनया गुरुजनः नापेक्षितः त्वयापि बन्धुः न पृष्टः, अत एव एकैकस्य एकस्मिन् चरिते एकः किं भणतु॥ १७॥

नापेक्षित इति। अनया=शकुन्तलया, गुरुजनः=पित्रादिज्येष्ठजनः, नापेक्षितः=दुष्यन्ता- यात्मसमर्पणसम्बन्धेऽननुज्ञापितः, त्वयापि=दुष्यन्तेनापि, बन्धुः=अस्याः स्वस्य वा स्वजनः, न पृष्टः=अस्याः पाणिग्रहणं कर्त्तुं न जिज्ञासितः। अत एव एकैकस्य=परस्परस्य शकुन्तलायाः तव

गौतमी—भद्रमुख ! मैं भी कुछ कहना चाहती हूँ, परन्तु मुझे कहने का अवसर ही नहीं मिल रहा है।

राजा—आर्ये ! आप कहिए।

गौतमी—न इसने अपने गुरुजनों की अपेक्षा की और न आपने ही अपने बन्धुओं से कुछ पूछा, अतः आप दोनों का कार्य एक ही प्रकार का हुआ है; फिर इस विषय में दूसरा कोई क्या कह सकता है ?॥ १७॥

Now, this is pragnent therefore accept her for the joint discharge of religious duties.

Gautamī—O, the head of the gentlemen! I am desirous of saying something but I am not geting any chance to say.

The king—Honourable lady! please say *(what ever you like to say).*

Her elders were not regarded by her, nor were her (or your own) kinsmen consulted by you too. In a matter done singly by each, waht should another say to either? (17)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(आत्मगतम्) किण्णु क्खु अज्जउत्तो भणिस्सदि? [किन्नु खलु आर्यपुत्रो भणिष्यति?]

राजा—(साशङ्कमाकर्ण्य) अये! किमिदमुपन्यस्तम्?

शकुन्तला—(आत्मगतम्) हद्दी हद्दी! सावलेवो से वअणावक्खेवो। [हा धिक् हा धिक्! सावलेपोऽस्य वचनावक्षेपः।]

शार्ङ्गरवः—किं नाम, किमिदमुपन्यस्तमिति? ननु भवन्त एव सुतरां लोकवृत्तान्त-निष्णाताः?

चेत्यर्थः, एकस्मिन्=गुरुजनानपेक्षणरूपाभिन्नात्मके, चरिते=अनुष्ठिते विषये, एकः=अन्यो जनः, किं भणतु=किं कथयतु (त्वं तां गृहाण सा च त्वां गृह्णातु इति किं कथयतु)। अत्र अर्थापत्तिरलङ्कारः। गाथेयम्॥ १७॥

भावार्थः—पूर्वं यथा परस्परानुरागवशात् बन्धुजनाननपेक्ष्यैव युवां परस्परं वव्राथे तथैवानुरागपूर्वकं परस्परं ग्रहीष्यथ इत्यत्र नास्माकमनुरोधापेक्षेति भावः॥ १७॥

शकुन्तला—(आत्मगतम्=स्वमनसि) किन्नु=न जाने किं, खल्विति वितर्के, आर्यपुत्रः=स्वामी, भणिष्यति=कथयिष्यति?

राजा—(आशङ्कया सहेति साशङ्कम्, आकर्ण्य=श्रुत्वा) अये इति सम्भ्रमे, किमिदं=शकुन्तलापरिणयरूपं वचनम्, उपन्यस्तं=वक्तुमारब्धम्।

शकुन्तला—(आत्मगतम्) हा धिग् हा धिगिति विषादे, तस्यातिशये द्विवचनम्। अस्य=राज्ञः, वचनावक्षेपः=वाग्विन्यासः, सावलेपः=सगर्वः)

(यदा राजा कथयति अस्योपन्यस्तस्यासम्बद्धत्वादर्थो नावबुध्यते तदाऽऽशङ्किता शकुन्तला कथयति यत् अस्य उक्तिः न सामान्या अपितु गर्वयुक्ता एव।)

शार्ङ्गरवः—किं=कथम्, नाम=सम्भवति (नामेति सम्भावनायाम्), अस्मदुच्चरितं

शकुन्तला—(मन में) अब देखें, आर्यपुत्र क्या कहते हैं?

राजा—(आशंका के साथ सुनकर) ओह! आप लोगों ने यह क्या झंझट खड़ा कर दिया?

शकुन्तला—(मन में) धिक्कार है! धिक्कार है!! इनकी बातें तो अभिमानपूर्वक जान पड़ती हैं।

शार्ङ्गरव—'कैसा झंझट खड़ा कर दिया' यह आप कैसे कह पाये? क्या आप ही लोग लोक-व्यवहार में निपुण हैं?

Śakuntalā*—*(To herself) What may indeed my lord say?

The king*—*(Hearing with suspicion) What is this brought before me?

Śakuntalā—Oh very bad, the import of his words is full of proud indeed.

Śārṅgarava—How indeed in this? You yourself are exceedingly well acquainted with the customes of the world.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सतीमपि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां जनोऽन्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते।
अतः समीपे परिणेतुरिष्यते प्रियाऽप्रिया वा प्रमदा स्वबन्धुभिः॥ १८॥

राजा—किमत्रभवती मया परिणीतपूर्वा?

शकुन्तला—(सविषादमात्मगतम्) हिअअ! संपदं संवुत्ता दे आसंका। [हृदय! साम्प्रतं संवृत्ता ते आशङ्का।]

जाननप्यजानन्निव कथं पृच्छसि इत्यर्थः। इदं=शकुन्तलारूपं, उपन्यस्तं=कण्वसविधे न्यासीकृतम्, किम् इति यदुक्तं तत् किं नाम? ननु=इति प्रश्ने, भवन्त एव=न तु तापसाः, सुतराम्=अस्मत्तोऽधिकतया, लोकवृत्तान्तेषु=लोकव्यवहारेषु, निष्णाताः=अभिज्ञाः।

अन्वयः—जनः ज्ञातिकुलैकसंश्रयां भर्तृमतीं सतीमपि अन्यथा विशङ्कते, अतः स्वबन्धुभिः प्रिया अप्रिया वा प्रमदा परिणेतुः समीपे इष्यते॥ १८॥

सतीमिति। जनः=लोकः, ज्ञातिकुलं=पितृकुलम्, एकं=केवलं, संश्रयते=अवस्थातुमवलम्बते, इति तां ज्ञातिकुलैकसंश्रयां=पितृगृहैकवासिनीम्, भर्ता=पतिः, अस्या अस्तीति तां भर्तृमतीं=सौभाग्यवतीम्, सतीं=साध्वीम्, अपीति विरोधे, अन्यथा=असतीत्वेन, विशङ्कते=विशेषेण शङ्कते, अतः=अस्मात् कारणात्, स्वबन्धुभिः=प्रमदायाः पित्राद्यात्मीयजनैः, प्रिया=मनोहारिणी, अप्रिया=अमनोहरा वा, प्रकृष्टो मदो यस्याः सा प्रमदा=युवतिः, परिणेतुः=वोढुः, समीपे=निकटे (अवस्थानाय), इष्यते=वाञ्छ्यते। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १८॥

भावार्थः—तथा चायमेव लोकवृत्तान्तोऽत्र भवन्त एव विशेषेणाभिज्ञा अत एव लोकापवादभीरुणा गुरुणा त्वयोपेक्षिता साध्वी भवतो धर्मपत्नीयं भवत्समीपं प्रापिता तदिदानीं प्रतिगृह्यतां सहधर्माचरणायेति।

राजा—अत्रभवती=मान्या शकुन्तला, मया=दुष्यन्तेन, परिणीतपूर्वा=पूर्वं परिणीता किम्? (किमिति प्रश्ने)

शकुन्तला—(सविषादम्=सखेदम्, आत्मगतम्) साम्प्रतम्=आर्यपुत्रे एवं वदति सति, ते=तव, आशङ्का=प्रत्याख्यानभयम्, संवृत्ता=उपस्थिता।

अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री को भले ही वह सर्वथा सती ही क्यों न हो संसार दूसरे ही (असती रूप में ही) देखता है। इसलिए वह अपने पति को प्रिय हो या अप्रिय उसके स्वजन उसे उसके स्वामी के घर ही (उसके पास ही) रखने की इच्छा करते हैं॥ १८॥

राजा—क्या ये मान्या मेरी पूर्व विवाहिता हैं?

शकुन्तला—(खेदपूर्वक मन में) हृदय! तुम्हारी आशङ्का अब उपस्थित (सच) हुई।

People suspect a married woman, whose only resort is her kinsmen's house, to be otherwise i.e. unchaste, though she is chaste. Hence a woman is desired by her kinsmen to be near her husband, though she may be liked or disliked by him. (18)

The King—Was this lady married by me before?

Śakuntalā—*(Sorrowfully to herself)* Heart! now, your doubt proved as right one.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—

किं कृतकार्यद्वेषाद् धर्मं प्रति विमुखतोचिता राज्ञः ?

राजा—कुतोऽयमसत्कल्पनाप्रसङ्गः ?

शार्ङ्गरवः—(सक्रोधम्)

मूर्च्छन्त्यमी विकाराः प्रायेणैश्वर्यमत्तानाम्॥ १९॥

राजा—विशेषेणाधिक्षिप्तोऽस्मि।

गौतमी—(शकुन्तलां प्रति) जादे! मुहुत्तअं मा लज्ज, अवणइस्संदाव दे अवगुंठणं, तदा भट्टा तुमं अहिजाणिस्सदि।[जाते! मुहूर्त्तकं मा लज्जस्व, अपनेष्यामि तावत्ते अवगुण्ठनम्, ततो भर्त्ता त्वामभिज्ञास्यति।] (इति तथा करोति)

शार्ङ्गरवः—कृते=स्वयमेवानुष्ठिते, कार्य्ये=शकुन्तलापरिणयरूपव्यापारे, द्वेषात्=केनापि कारणेन 'नैतत् साधु कृतम्' इत्यविहिताचारतया सम्यगवधारणात्, धर्म्मं प्रति=धर्माचरणं प्रति, विमुखता=परिणयानङ्गीकारात् पराङ्मुखता, किं राज्ञः=धर्मनियन्तुः, उचिता=युक्ता, कथमपि न इत्याशयः।

राजा—अयम्=उपस्थितः, असती=मिथ्याभूता, या कल्पना=भावना, तस्याः प्रसङ्गः= प्रसक्तिः, कस्माद् भवतीति शेषः। (मम सदैव धर्म्मं प्रत्युन्मुखत्वात् मिथ्याभूतमेतन्मयि न कदापि सम्भवतीति भवतामिदमनुचितमिति भावः।)

शार्ङ्गरवः—(सक्रोधम्=कोपेन सह) ऐश्वर्येण=वैभवेन, मत्तानाम्=गर्वितानाम्, जनानाम्, प्रायेण=सामान्यतः, अमी=कृतकार्य्यद्वेषादिरूपाः, विकाराः=स्वभावपरिवृत्तयः, मूर्च्छन्ति=उच्छ्रि- यन्ति (स्वयंकृतपरिणये सन्देहः ऐश्वर्यमदस्यायं प्रभावः)। अत्र अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः, आर्य्या जातिः॥ १९॥

राजा—विशेषेण=अतिशयेन, अधिक्षिप्तः=तिरस्कृतोऽस्मि।

शार्ङ्गरव—किये हुए कार्य के प्रति द्वेषवश धर्म से आपका इस प्रकार विमुख होना क्या उचित है ?

राजा—इस दूषित कल्पना का प्रसंग ही कैसे उपस्थित हुआ ?

शार्ङ्गरव—(क्रोधपूर्वक) ऐश्वर्य-मद में चूर लोगों के हृदय को यह विचार प्रायः मूर्च्छित किये रहता है॥ १९॥

राजा—मैं बहुत तिरस्कृत हो चुका हूँ।

Śārṅgarava—Is it dislike to a deed or aversion to duty or wilful insult?

The king—Where from this false imaginary insident has come up?

Śārṅgarava—*(With anger)* These aberrations generally take effect in those, who are intoxicated with power. (19)

The king—I am grossly censured (much blamed).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(शकुन्तलां निर्वर्ण्य स्वगतम्)

इदमुपनतमेवं रूपमक्लिष्टकान्ति
प्रथमपरिगृहीतं स्यान्न वेत्यध्यवस्यन्।
भ्रमर इव निशान्ते कुन्दमन्तस्तुषारं
न खलु सपदि भोक्तुं नापि शक्नोमि मोक्तुम्॥ २०॥

(इति विचारयन् स्थितः)

गौतमी—(शकुन्तलां प्रति) जाते=वत्से! मुहूर्तकं=क्षणमात्रम्, मा लज्जस्व=लज्जां मा कुरु, तावत् ते=तव, अवगुण्ठनम्=वक्त्रावरणं, अपनेष्यामि=अपसारयामि। तदा, भर्त्ता=दुष्यन्तः, त्वाम्, अभिज्ञास्यति=तव मुखदर्शनात् सेयमिति परिचयं प्राप्स्यति। (इति=एवमुक्त्वा, तथा करोति=अवगुण्ठनमपसारयति।)

राजा—(शकुन्तलां निर्वर्ण्य=विलोक्य, स्वगतम्)

अन्वयः—एवम् उपनतम् अक्लिष्टकान्तिः इदं रूपं प्रथमं परिगृहीतं स्यात् न वा इति अध्यवस्यन् (अहम्) निशान्ते अन्तस्तुषारं कुन्दं भ्रमर इव सपदि भोक्तुं न खलु शक्नोमि, मोक्तमपि न शक्नोमि॥ २०॥

इदमिति। एवम्=अनेन प्रकारेण, अप्रयत्नेनैव, उपनतम्=अग्रे उपस्थितम्, अक्लिष्टा=अम्लाना, कान्तिः=शोभा, यस्य अक्लिष्टकान्तिः, इदं=पुरोवर्त्ति, रूपम्=सौन्दर्यं (सौन्दर्याधानभूतरमणीविशेषं), प्रथमं=पूर्वम्, परिगृहीतम्=गान्धर्वविधिना मया परिणीतं स्यात्, न वा=न परिगृहीतम्, इति=अस्मिन् विषये, अध्यवस्यन्=निश्चेतुं व्यवस्यन् (अहम्), निशान्ते=प्रत्यूषे, अन्तः=मध्ये,

---

गौतमी—(शकुन्तला से) पुत्री! क्षणभर के लिए लज्जा को छोड़ो, मैं तेरा घूंघट उठाऊँगी, तब तुम्हारे पति तुम्हें पहचानेंगे। (वैसा ही करती है—घूंघट हटाती है।)

राजा—(शकुन्तला को देखकर मन में) जिसके भीतर तुषार विद्यमान हो ऐसे कुन्द के पुष्प को प्रातःकाल के समय जैसे भौंरा न भोग सकता है और न त्याग ही सकता है ठीक उसी प्रकार अनायास अपने सामने उपस्थित इस सौन्दर्य-राशि को पाकर भी 'मैंने इसे पहले अपनाया है या नहीं' इस सन्देह में पड़कर, मैं न तो इसका उपभोग ही कर सकता हूँ और न इसे त्याग ही सकता हूँ॥ २०॥

(इस प्रकार विचार करता हुआ बैठता है)

Gauttamī—Daughter! for a moment be not bashful. I shall just remove your veil. Then your husband will recognise you. ***(does as said)***

The king—(Observing Śakuntalā to himself) Not deciding whether this beautiful form, which is thus presented (before me) was or was not accepted (by me in marriage) before, I am indeed neither able, all of a sudden, to enjoy nor to abandon it, like a black bee at the break of day the kuṅda flower with due inside. (20)

(Remains reflecting)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—(स्वगतम्) अम्मो! धम्मावेक्खिणो भट्टिणो। ईदिसं णाम सुहोवणदं इत्थीरअणं पेक्खिअ को अण्णो विआरेदि। [अहो! धर्मावेक्षिणो भर्त्तारः। ईदृशं नाम सुखोपनतं स्त्रीरत्नं प्रेक्ष्य कोऽन्यो विचारयति।]

शार्ङ्गरवः—भो राजन्! किमिति जोषमास्यते?

राजा—भोस्तपस्विनः! चिन्तयन्नपि न खलु स्वीकरणमत्रभवत्याः स्मरामि, तत्कथमिमामभिव्यक्तसत्त्वलक्षणामात्मानमक्षत्रियं मन्यमानः प्रतिपत्स्ये?

तुषारः=नीहारः, यस्य तदन्तस्तुषारम्, कुन्दं=तदाख्यं कुसुमम्, भ्रमरः=द्विरेफ इव, सपदि=सहसा, भोक्तुम्=सेवितुम्, न खलु शक्नोमि (राजपक्षे शकुन्तलायाः परिकीयेति सन्देहात् परकीयस्य भोगे अपवादभयात्, भ्रमरपक्षे कुन्दस्यान्तस्तुषारत्वेन स्पष्टतया कृतेरपरिज्ञानात्तुषारस्य च भ्रमरस्यासह्य-त्वात्), मोक्तुम्=परित्यक्तुमपि, न शक्नोमि। अत्र श्रौतोपमालङ्कारेण सन्देहालङ्कारः सङ्कीर्यते, अनुप्रासश्च। मालिनी नाम वृत्तम्॥ २०॥

भावार्थः—अनायासेनोपलब्धमिदं रूपं संशयितचित्ततया स्वकीयपरकीयत्वसन्देहात् परकीयत्वस्य भोगे प्रत्यावायापादकत्वात्, परमसुखास्पदत्वेनात्मनः परिगृहीतत्वेन च पश्चादस्वीकारे नरकपातस्यावश्यम्भावात् सपदि न भोक्तुं शक्नोमि न च मोक्तुं शक्नोमि।

भ्रमरपक्षे—कुन्दस्यान्तस्तुषारत्वेन स्पष्टतयाकृतेरपरिज्ञानात्तुषारस्य भ्रमरस्यासह्यत्वात् तथा दर्शनेन मधुपानेच्छायाः प्रबलमुदयात् सपदि न भोक्तुं नापि मोक्तुं शक्नोमीति भावः॥ २०॥

(इति विचारयन्=वितर्कयन् स्थितः।)

प्रतीहारी—(स्वगतम्) राजानं प्रशंसयन् कथयति—अहो इति विस्मये। धर्ममवेक्षन्ते=सर्वथा पालनीयत्वेन धर्म्मं पश्यन्तीति धर्म्मावेक्षिणः, भर्त्तारः=राजानः, ईदृशं=परमरमणीयम्, सुखेन=अनायासेन, उपनतम्=उपगतम्, स्त्रीरत्नमिव=स्त्रीरत्नम्, उत्कृष्टस्त्रियम्, प्रेक्ष्य=दृष्ट्वा, कोऽन्यः=भर्तृभिन्नो जनः, विचारयति=गृह्णामि वा न वेति विमृशति। न कोऽपीत्यर्थः।

शार्ङ्गरवः—भो राजन्! भो इति अनादरसम्बोधने, जोषं=तूष्णीम्, किमिति=कथमिव, आस्यते=उपविश्यते।

राजा—भोस्तपस्विनः=तापसाः! चिन्तयन्नपि=विचारयन्नपि, अत्रभवत्याः=शकुन्तलायाः

प्रतीहारी—(मन में) स्वामी भी कितने धर्मापेक्षी होते हैं। यदि ऐसा न होता तो इस प्रकार अनायास उपस्थित इस प्रकार के स्त्रीरत्न को पाकर भला कौन (उसे अपनाने में) आनाकानी करता।

शार्ङ्गरव—ओ महाराज! आप (इस प्रकार) मौन क्यों हैं?

राजा—ओ तपस्वियो! बार-बार विचार करने पर भी मैं इस बात को स्मरण नहीं कर पा रहा हूँ कि मैंने कभी इन आर्या का पाणिग्रहण किया है। तब भला मैं स्वयं को क्षत्रिय न

Door-keeper—(To herself) Oh our lord's regard for righteousness! indeed, who else will deliberate on seeing such beauty, which thus easily brought?

Śārṅgarava—Oh king! why is it that you sit silent?

The king—O' ascetics! though thinking about it, I do not

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(स्वगतम्) हद्धी हद्धी। कधं परिणए ज्जेव संदेहो। भग्गा दाणिं दूरारोहिणी आसालदा। [हा धिक् हा धिक्! कथं परिणय एव सन्देहः। भग्ना इदानीं दुरारोहिणी आशालता।]

शार्ङ्गरवः—मा तावत्—

कृतावमर्शामनुमन्यमानः सुतां त्वया नाम मुनिर्विमान्यः।
मुष्टं प्रतिग्राहयता स्वमर्थं पात्रीकृतो दस्युरिवासि येन॥ २१॥

माननीयायाः, स्वीकरणम्=केनापि विधिना परिणयनम्, न खलु स्मरामि। तत्=तस्मात्, अभिव्यक्तं=स्पष्टमनुभूयमानम्, सत्त्वस्य=गर्भस्य, लक्षणं=चिह्नं, यस्यास्ताम्=अभिव्यक्तसत्त्वलक्षणाम्, इमाम्=शकुन्तलाम्, अक्षत्रियं=क्षत्रियजातीतरम्, आत्मानम्=मन्यमानः जानन्, प्रतिपत्स्ये=अङ्गीकरिष्ये? कथमपि न।

शकुन्तला—(स्वगतम्) हा धिक् हा धिक् इति द्विरुक्तिः विषादस्य चरमभावं सूचयति, परिणये एव=विवाहे एव, सन्देहः=संशयः, कथम्=केन प्रकारेण, इदानीं=राजसदनमासाद्य, दूरारोहिणी—दूरम्=अतिभूमिम्, आरोहतीति दूरारोहिणी=अतिवितता, आशैव लतेत्याशालता=वासनारूपा लता, भग्ना=विच्छिन्ना। (राजसदनमासाद्य, चक्रवर्तिनं तनयं प्रसूय राजमहिषी भूत्वा सर्वसुखमनुभविष्यामि इति आशालता भग्ना।)

शार्ङ्गरवः—मा तावद्=विपरीतमिदमित्यर्थः।

अन्वयः—कृतावमर्शां सुताम् अनुमन्यमानः मुनिः त्वया नाम विमान्यः मुष्टं स्वम् अर्थं प्रतिग्राहयता येन दस्युः इव पात्रीकृतोऽसि॥ २१॥

कृतावमर्शामिति। कृतः=त्वयैव विहितः, अवमर्शः=बलात् स्पर्शः सुरतं वा, यस्याः कृतावमर्शाम्, सुतां=तनयाम्, अनुमन्यमानः=क्रोधादिकमकृत्वैवानुमोदमानः, मुनिः=ऋषिः,

---

मानकर एक ऐसी स्त्री को कैसे स्वीकार कर सकता हूँ, जिसके गर्भवती होने के लक्षण स्पष्ट दिखायी दे रहे हों।

शकुन्तला—(स्वगत) हाय! हाय! तो क्या पाणिग्रहण में ही सन्देह है। तब तो ऊँचे चढ़ने वाली मेरी आशरूपी लता ही नष्ट हो गई।

शार्ङ्गरव—ऐसा नहीं।

आपने इस कन्या का स्पर्श किया है और महर्षि कण्व ने इस बात की सराहना की है, अतः आप उनका अपमान न करें; क्योंकि यह सब ऐसा ही है जैसे कोई किसी का धन चुरा

---

really recollect having accepted this lay in marriage. How then shall I, who suspect myself to be merely a nominal husband to her, who bears evident signs of pregnancy, accept her.

Śakuntalā—(To herself) The noble sir has doubts even as regards marriage. Whence now my high soaring hope?

Śārṅgarava—Indeed do not.

Rightly does the sage, who approves of his daughter, who is outraged, deserve to be disrespected by you-(the sage) who, urging

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शारद्वतः—शार्ङ्गरव! विरम त्वमिदानीम्। शकुन्तले! वक्तव्यमुक्तमस्माभिः, सोऽयमत्रभवानेवमाह, दीयतामस्मै प्रत्ययं प्रतिवचनम्।

शकुन्तला—(स्वगतम्) इमं अवत्थंतरं गदे तादिसे अणुराए किं वा सुमराविदेण। अधवा अत्ता दाणिं मे सोधणीओ होदु त्ति किंचिवदिस्सं। (प्रकाशम्) अज्जउत्त! (इत्यर्द्धोक्ते) अधवा संसइदो दाणिं एसो समुदाचारो। पोरव! जुत्तं णाम तुह पुरा अस्समपदे सब्भावुत्ताणहिअअं इमं जणं तधा समअंपुब्बअं संभाविअ संपदं ईदिसेहिं अक्खरेहिं पच्चाक्खदुं। [इदमवस्थान्तरं गते तादृशेऽनुरागे किं वा स्मारितेन; अथवा आत्मेदानीं मे शोधनीयो भवतु; इति किञ्चिद्वदिष्यामि। आर्य्यपुत्र! अथवा संशयित इदानीमेष समुदाचारः।

त्वया=भवता, मा तावद् विमान्यः=नावमाननीयः। (यतः) मुष्टं=चोरितम्, स्वं=स्वीयम्, अर्थम्=धनम्, प्रतिग्राहयता=कस्मैचित् प्रत्यर्पयता, येन=मुनिना, दस्युः=तस्कर इव, पात्रीकृतोऽसि=त्वं सम्प्रदानीकृतः असि। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः, विषमालङ्कारोऽपि च। उपजातिः॥ २१॥

भावार्थः—मुनेरनुमतिमगृहीत्वैव तदीयामात्मजां शकुन्तलां निर्जने गान्धर्वविधानेन परिणयन्नपि तज्ज्ञात्वात्मानुमत्यभावेऽपि विनापि रोषेण येन मुनिना त्वं तादृशपरिणयेऽगतिकप्रीत्या वरीकृतोऽसि, तादृशसरलचेतसस्तस्य मुनेर्दुहितुः प्रत्याख्यानेन त्वया विमाननकरणमतीवासङ्गतमिति तदनुरोधप्रत्याख्यानेन स च मुनिः कथमपि नावमाननीय इति भावः॥ २१॥

शारद्वतः—शार्ङ्गरव! त्वम्, इदानीम्=सम्प्रति, विरम=मौनमवलम्बस्व। शकुन्तले! वक्तव्यम्=त्वत्सम्बन्धे यत् कथनीयम्, अस्माभिः, तत् सर्वम्, उक्तम्=कथितम्, सोऽयम्=यमुद्दिश्योक्तः, सः=राजा दुष्यन्तः, एवं=भवत्याः श्रुतरूपम्, आह=ब्रवीति, अस्मै=राज्ञे, प्रत्ययप्रतिवचनं= विश्वासजनकमुत्तरम्, दीयताम्।

शकुन्तला—(स्वगतम्=अनतिप्रकाशम्) तादृशे=पूर्वानुभूते, अनुरागे=स्नेहे, इदम-

---

ले और धन का स्वामी उस चोर को पकड़कर भी उसे ही सारा धन सौंप दे। ठीक उसी प्रकार आपने ऋषि कण्व की कन्या को परोक्ष में गान्धर्व विधि से ग्रहण किया और इस समाचार को जानकर उन्होंने आप ही को इस कन्या के योग्य वर मानकर इसे आपके पास भेजा॥ २१॥

शारद्वत—शार्ङ्गरव! अब तुम चुप रहो। शकुन्तले! हमें तुम्हारे सम्बन्ध में जो कहना था कह चुके। (उसे सुनकर भी) ये महाराज ऐसा कह रहे हैं, अतः अब तुम्हीं इन्हें विश्वासजनक उत्तर दो।

शकुन्तला—(स्वगत) जबकि वह पुराना अटूट स्नेह इस विषमावस्था में आ पहुँचा है तब स्मरण दिलाने से भी क्या लाभ? अथवा इस समय अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए मैं

---

to accept his own property, that was stolen, has rendered you, like a robber (thief), a worthy recipient of it. (21)

Śāradwata—Śārṅgarava! stop you now. Śakuntalā! we have said what was to be said. Here his majesty says so. Let a convincing reply be given him by you.

Śakuntalā—*(To herself)* Such affection having gone to this

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पौरव! युक्तं नाम तव पुरा आश्रमपदे सद्भावोत्तानहृदयमिमं जनं तथा समयपूर्वकं सम्भाव्य साम्प्रतमीदृशैरक्षरैः प्रत्याख्यातुम्।]

राजा—(कर्णौ पिधाय) शान्तं शान्तम्—

व्यपदेशमाविलयितुं समीहसे मां च नाम पातयितुम्।
कूलङ्कषेव सिन्धुः प्रसन्नमोघं तटतरुञ्च॥ २२॥

वस्थान्तरं=वैपरीत्यदशाम्, गते=प्राप्ते सति, स्मारितेन=स्मरणोत्पादनायासेन, किं वा फलम्=किञ्चिदपि न। अथवा, आत्मा=स्वजीवात्मा, इदानीम्=सम्प्रति, शोधनीयः भवतु=निष्पापीकरणीयः भवतु (यदि मत्कृतविश्वासजनकोत्तरेणापि कदाचिद्राजा मां स्मरेदिति पश्चादात्मग्लानिर्भवेदिति भावः), इति हेतोः, प्रत्ययोत्पादनाय किञ्चिद्वदिष्यामि=कथयिष्यामि, राजानमुद्दिश्य इति भावः। आर्य्यपुत्र!=स्वामिन् (इत्यर्द्धोक्ते न तु पूर्णरूपेण उच्चार्य्य), अथवा, इदानीं=सम्प्रति परिणयानङ्गीकरणकाले, एषः=आर्यपुत्रपदप्रयोज्यः, समुदाचारः=शिष्टाचारपरकव्यवहारः, संशयितः=मद्विषये संशयापन्नः। पौरव!=हे पुरुवंशोद्भव! आश्रमपदे=तपोवने, पुरा, सद्भावोत्तानं हृदयं—सद्भावेन=तव सद्व्यवहारेण, उत्तानं=विपर्यस्तगाम्भीर्य्यं, हृदयं यस्य तम्, इमं जनं=माम्, तथा=तादृशेन वाक्येन, समयपूर्वकं=प्रतिज्ञापूर्वकम्, सम्भाव्य=आश्वास्य, साम्प्रतम्=इदानीम्, ईदृशैः='न खलु चिन्तयन्नपि स्वीकरणमत्रभवत्याः स्मरामि' इत्यादिरूपैः, अक्षरैः=वर्णैः, प्रत्याख्यातुम्=निराकर्त्तुम्, तव युक्तं नाम=उचितं नाम, नैव।

राजा—(कर्णौ पिधाय=श्रवणे कराभ्यामाच्छाद्य) शान्तम्, शान्तम्=अलीकम्, मिथ्यैतदिति भावः।

अन्वयः—कूलङ्कषा सिन्धुः प्रसन्नमोघं तटतरुञ्च इव प्रसन्नं व्यपदेशम् आविलयितुं मां च पातयितुं समीहसे॥ २२॥

व्यपदेशमिति। कूलं=तटं, कषति=भिनत्ति, इति कूलङ्कषा=तटभङ्गकारिणी, सिन्धुः=नदी,

---

कुछ कहूँगी। (प्रगट) आर्यपुत्र (इतना आधा कहकर ही) पौरव! उस समय आश्रम में अतीव सौम्य व्यवहार से उच्च आशाओं से भरे हुए हृदययुक्त इस व्यक्ति को शपथपूर्वक आश्वासन देकर अब इस प्रकार की बात कहना क्या आपके लिए उचित है?

राजा—(दोनों कान ढाँपकर) चुप रहो, चुप रहो (पाप शान्त हो)—

जैसे एक तटभंजनी नदी निर्मल जलप्रवाह को कलुषित तथा तटस्थ वृक्ष को गिराने का प्रयत्न करती है उसी प्रकार तुम भी हमारे विशुद्ध वंश को कलंकित और मुझे पतित बना देना चाहती हो॥ २२॥

---

changed state, what possibly (can be obtained) by reminding? My own self has now to be lamented this is settled here. *(Aloud)* My lord *(When half said)* when now the marriage is doubted, this is not the proper form. O' Purū's descendent! Is it indeed proper for you, having formerly in that way deceived this person, naturally open-minded, after an agreement in the hermitage, to repudiate her now with such words?

The king—(Shutting his ears) May sin be averted.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—भोदु, जइ परमत्थदो परपरग्गहसंकिणा तुए एव्वं पउत्तं, ता अहिण्णाणेण केण वि तुह आसंकं अवणइस्सं। [भवतु, यदि परमार्थतः परपरिग्रहशङ्किना त्वया एवं प्रवृत्तम्, तदभिज्ञानेन केनापि तव आशङ्कामपनेष्यामि।]

राजा—प्रथमः कल्पः।

शकुन्तला—(मुद्रास्थानं परामृश्य) हद्दी हद्दी! अंगुलीअअसूण्णा मे अंगुली। [हा धिक् हा धिक्! अङ्गुरीयकशून्या मे अङ्गुली।] (इति सविषादं गौतमीमुखमीक्षते)

प्रसन्नं=निर्दोषं स्वच्छं च, ओघं=वारिप्रवाहं, प्रसन्नमोघम्, तटतरुञ्च=तटस्थवृक्षञ्च, इव, प्रसन्नं=निर्दोषं, व्यपदिश्यते=समाजे कीर्त्यतेऽनेनेति स तं, व्यपदेशं=कुलम्, आविलयितुं=कलुषीकर्त्तुम्, ओघपक्षे—भज्यमानतीरमृत्तिकासंसर्गेणाविलीकर्त्तुम्, मां=दुष्यन्तम् (क्षत्रियधर्मसेविनम्), पातयितुं=परस्त्रीसंसर्गेण पतितं कर्त्तुं, तटतरुपक्षे—खातमूलमृत्तिकतया जले पतनप्रवणीकर्त्तुम्, समीहसे=सम्यग्रूपेण यतसे वाञ्छसि वा। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः, यथासंख्यञ्च। आर्य्या जातिः ॥ २२ ॥

भावार्थः—यथा तटभङ्गकारिणी नदी स्वकीयस्वच्छवारिप्रवाहं कलुषीकर्तुं तटस्थवृक्षञ्च पातयितुं समीहसे तथैव निर्दोषं मे कुलं मां च स्वसंसर्गेण कलुषीकर्त्तुं त्वं समीहसे इति भावः ॥ २२ ॥

शकुन्तला—भवतु=मद्वचनविरतिः, यदि, परमार्थतः=याथार्थ्येन, परस्य परिग्रहं=कलत्रं, शङ्कते, तेन परपरिग्रहशङ्किना=परस्त्रीसन्देहिना, त्वया=भवता, एवम्=उक्तविधया, प्रवृत्तम्=उपक्रान्तम्, तद्=तदा, अभिज्ञायते=परिचीयते, अनेनेति तेन अभिज्ञानेन=सम्यक्परिचायकेन, प्रत्ययहेतुनाऽङ्गुलीयकेनेति भावः, केनापि, तव आशङ्काम्=सन्देहम्, अपनेष्यामि=अपसारयिष्यामि।

राजा—प्रथमः=प्रधानः, कल्पः=न्यायः (अभिज्ञानप्रदर्शनं मम सन्देहनिराकरणे प्रधानोपायः।)

शकुन्तला—यदि सत्य ही आप मुझे परस्त्री समझकर ऐसा कह रहे हैं तो मैं किसी चिह्न को दिखाकर आपके सन्देह को दूर करने का प्रयत्न करूँगी।

राजा—यह प्रथम कार्य है। (मेरे सन्देह को दूर करने का यह प्रधान उपाय है।)

शकुन्तला—(अँगूठी पहनने के स्थान को टटोलकर) हाय हाय—मेरी अंगुली तो अँगूठी से शून्य है। (ऐसा कहकर सविषाद गौतमी की ओर देखती है)

Why do you seek to sully (to stain) my family and degrade this person (my self), like a river, dashing against its banks, does to render turbid (to make dirty) its lucid water and to fell the tree on the bank. (22)

Śakuntalā—Well, if you are really suspecting me to be the wife of another, you are saying in this way, then by some sign of recognition, I shall remove your doubt.

The king—This should be the first work (i.e. a good proposal).

Śakuntalā—*(Feeling at the place of the ring)* Oh alas! oh alas! void of the ring is my finger. *(Looks at Gautamī with sorrow)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—नूणं दे सक्कावदारे सचीतीत्थोदअं वंदमाणाए पब्भट्टं अंगुलीअअं। [नूनं ते शक्रावतारे शचीतीर्थोदकं वन्दमानायाः प्रभ्रष्टमङ्गुरीयकम्।]

राजा—(सस्मितम्) इदं तावत्प्रत्युत्पन्नमतित्वं स्त्रीणाम्।

शकुन्तला—एत्थं दाव विहिणा दंसिदं पउत्तणम्। अवरं दे कधइस्सं। [अत्र तावत् विधिना दर्शितं प्रभुत्वम्। अपरं ते कथयिष्यामि।]

राजा—श्रोतव्यमिदानीं संवृत्तम्।

शकुन्तला—णं एक्कदिअहे वेदसलदामंडवे णलिणीवत्तभाअणगदं उदअं तुह हत्थे सण्णिहिदं आसी। [ननु एकदिवसे वेतसलतामण्डपे नलिनीपत्रभाजनगतमुदकं तव हस्ते सन्निहितमासीत्।]

शकुन्तला—(मुद्रास्थानम्=अङ्गुलीयकधारणस्थानं, परामृश्य=स्पृष्ट्वा) हा धिक् हा धिक् इति विषादातिशये द्विरुक्तिः, मे=मम, अङ्गुली, अङ्गुरीयकशून्या=मुद्राविरहिता। (इति=इत्युक्त्वा, सविषादं=सखेदम्, गौतमीमुखम्=तापस्या आननम्, ईक्षते=अवलोकयति।)

गौतमी—नूनम्=निश्चितम्, ते=तव, शक्रावतारे=गङ्गातीरैकदेशे, शचीतीर्थस्य=इन्द्राणी-निर्मिततडागस्य, उदकं=तोयम्, वन्दमानाया=प्रणमन्त्याः, (तव) अङ्गुलीयकम्, प्रभ्रष्टम्=अङ्गुल्याः स्खलितम्।

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) इदं=कथनम्, तावत्, स्त्रीणाम्, प्रतिविषयमुत्पन्ना मतिर्यासां तासां भावस्तत्त्वं प्रत्युत्पन्नमतित्वम्=उपस्थितबुद्धित्वम्।

शकुन्तला—अत्र तावत्=साक्षात् अङ्गुरीयकदर्शने, विधिना=स्वेच्छापरिकल्पितलोक-तन्त्रेण, प्रभुत्वम्=अङ्गुरीयकहरणेन मद्वैमुख्ये सामर्थ्यम्, दर्शितम्=प्रकटितम्। अपरम्=अभिज्ञा-नानन्तरम्, ते=तुभ्यम्, कथयिष्यामि।

राजा—इदानीम्=साम्प्रतम्, श्रोतव्यम्=श्रवणार्हम्, संवृत्तम्=सञ्जातम्।

गौतमी—निश्चय ही शक्रावतार के शचीतीर्थ के जल को प्रणाम करते समय तुम्हारी अँगूठी फिसल कर गिर गई है।

राजा—(मुस्कराकर) यही स्त्रियों का प्रत्युत्पन्नमतित्व (तत्काल बात बना लेने की क्षमता) है।

शकुन्तला—इस विषय में तो विधि ने अपनी प्रभुता दिखा दी है, अब मैं दूसरी (परिचय कराने वाली) बात कहूँगी।

राजा—इस समय मैं (सब कुछ) सुनने के लिए तैयार हूँ।

***Gautamī*—In all probability your ring slipped as you were doing obeisance salutation to the water of the Śacītīrtha with in Śakrā-vatāra.**

***The king—(Smiling)* Here is what is called, 'women is ready witted'.**

***Śakuntalā*—Here ofcourse fate has shown its sovereignty. I shall tell you another thing.**

***The king*—It has now become a thing to be heard.**

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—शृणुमस्तावत्।

शकुन्तला—तक्खणं सो मे पुत्तकिदओ दीहापंगो णाम मिअपोदओ उवट्ठिदो। तदो तुए अअं दाव पढमं पिअदु त्ति अणुकंपिणा उवच्छंदिदो उदएण। ण उण सो अपरिचिदस्स दे हत्थादो उदअं उवगदो पादुं। पच्चा तस्सिं ज्जेव उदए मए गहिदे किदो तेर पणओ। एत्थंतरे विहसिअ तुए भणिदं, सव्वो सगणे वीससदि, जदो दुवे वि तुम्हे आरण्णआओ त्ति। [तत्क्षणं स मे पुत्रकृतको दीर्घापाङ्गो नाम मृगपोतक उपस्थितः। ततस्त्वया अयं तावत् प्रथमं पिबत्विति अनुकम्पिना उपच्छन्दित उदकेन। न पुनः सः अपरिचितस्य ते हस्तादुदकमुपगतः पातुम्। ततस्तस्मिन्नेवोदके मया गृहीते कृतस्तेन प्रणयः। अत्रान्तरे विहस्य त्वया भणितम्, सर्वः स्वगणे विश्वसिति, यतो द्वे एव युवामारण्यके इति।]

शकुन्तला—नन्विति सम्बोधने, एकदिवसे=दिने, वेतसलतामण्डपे, नलिनीपत्रं=कमल-लतापत्रमेव, भाजनं=पात्रं, तस्मिन् गतं=स्थितम्, नलिनीपत्रभाजनगतम्, उदकं=जलं, तव, हस्ते=करे, सन्निहितम्=सम्यक् स्थापितम् आसीत्।

राजा—शृणुमस्तावत्=आकर्णयामस्तावत्।

शकुन्तला—तत्क्षणं=तत्कालम्, सः=पूर्वोक्तः, मे=मम, पुत्रकृतकः=पुत्रत्वेन परि-कल्पितः, दीर्घौ=आयतौ, अपाङ्गौ=नेत्रप्रान्तौ, यस्य सः=दीर्घापाङ्गः, नाम=एतन्नामकः, मृगपोतकः=मृगशावः, उपस्थितः=समायातः। ततः=तदा, त्वया=भवता, अयं=मृगपोतकः, प्रथमं पिबतु=मुखप्रक्षालनादिकं पश्चात् सम्पाद्य इत्युक्त्वा, अनुकम्पिना=दयाशालिना त्वया, उदकेन=तेन नलिनीदलभाजनगतजलेन, उपच्छन्दितः=पानार्थं सादरम् अभ्यर्थितः। स पुनः=मृगपोतकः, अपरि-चितस्य=अजातपरिचयस्य, ते=तव, हस्तादुदकं पातुं नोपागतः। ततः=तदनन्तरम्, तस्मिन्नेवोदके=पूर्वोक्तनलिनीदलभाजनगते एव जले, मया=शकुन्तलया, गृहीते, तेन=मृगपोतकेन, प्रणयः=

शकुन्तला—एक दिन वेत्रलतामण्डप में आपके हाथ में कमलपत्र के दोने में जल था।

राजा—हाँ, हम सुन रहे हैं।

शकुन्तला—उसी समय मेरा कृत्रिम पुत्र दीर्घापाङ्ग नामक मृगशावक वहाँ आया। दयावश 'यह पहले जल पीओ' यह कहकर आपने उससे जल पीने का आग्रह किया, परन्तु उसने आपको अपरिचित समझकर जल नहीं पीया। इसके पश्चात् जब वही कमलिनी के पत्र में रखा हुआ जल मैंने अपने हाथ में लिया तो वह स्वयं उसे पीने के लिए मचल उठा। इस

Śakuntalā—Well! on one day in the bower of the bamboos, water lying in a lotus-leaf-vessel was present in your hand.

The king—Well, we are listening.

Śakuntalā—At that moment that young deer, which was adopted by me as a child, Dīrghāpānga named, arrived. He was coaxed with water by you, who observed with pity. 'Let him just drink first.' But through unfamiliarity he did not approach the vicinity (neighburhood) of your hand. Afterwards when the same

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा— आभिस्तावदात्मकार्य्यप्रवर्त्तिनीभिर्मधुराभिरनृतवाग्भिराकृष्यन्ते विषयिणः।

गौतम—महाभाअ! णारिहसि एव्वं मंतिदुं। तवोवणसंवड्ढिदो क्खु अअं जणो अणभिण्णो कइतवस्स। [महाभाग! नार्हसि एवं मन्त्रयितुम्। तपोवनसंवर्द्धितः खल्वयं जनः अनभिज्ञः कैतवस्य।]

राजा—अयि तापसवृद्धे!

स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषीणां सन्दृश्यते किमुत याः परिबोधवत्यः।
प्रागन्तरीक्षगमनात् स्वमपत्यजातमन्यद्विजैः परभृताः किल गोषयन्ति॥ २३॥

पानार्थमाग्रहः, कृतः। अत्रान्तरे, विहस्य=हासं कृत्वा, त्वया=भवता, भणितम्=कथितम्, सर्वः= सकल एव प्राणिसमुदायः, स्वगणे=आत्मीयवर्गे, विश्वसिति। यतः=यस्मात् कारणात्, युवां= मृगपोतकश्च त्वं च, एव आरण्यके वनवासिन्यौ इति।

राजा—आत्मकार्येषु=स्वोद्देश्येषु, प्रवर्तयितुं=पुरुषान् व्यापादयितुं, शीलं=स्वभावः, यासां ताभिरात्मकार्यप्रवर्त्तिनीभिः=स्वकार्यसाधिनीभिः, मधुराभिः=प्रियाभिः, आभिः=ईदृशीभिः, अनृत-वाग्भिः=असत्यकथनैः, विषयिणः=कामिनः पुरुषाः, आकृष्यन्ते=वशीक्रियन्ते।

गौतमी—महाभाग! एवम्=इत्थम्, मन्त्रयितुं=वक्तुम्, नार्हसि। अयं जनः=शकुन्तला, खलु, तपोवने=मुनीनामाश्रमे, संवर्द्धितः=प्रतिपालितः, कैतवस्य=कपटव्यवहारस्य, अनभिज्ञः= अज्ञाता। (छलप्रपञ्चमिथ्याभाषणादिदोषरहिते आश्रमे परिवर्द्धितत्वादनयाऽऽज्ञातकैतवया सत्यमेव भणितम्।)

राजा—तापसेषु=तपस्विजनेषु वृद्धेति तापसवृद्धेति तत्सम्बोधने हे तापसवृद्धे!

अन्वयः—अमानुषीणां स्त्रीणाम् अशिक्षितपटुत्वं सन्दृश्यते, याः परिबोधनवत्यः ताः किमुत? परभृताः अन्तरीक्षगमनात् प्राक् स्वम् अपत्यजातम् अन्यद्विजैः पोषयन्ति किल॥ २३॥

पर आपने हँसकर कहा—"सब लोग अपने आत्मीय पर ही विश्वास करते हैं, तुम दोनों ही वनवासी हो न।"

राजा—स्त्रियाँ अपना कार्य बनाने के लिए ऐसी मिथ्या और मधुर बातें कहकर ही कामीजनों को अपनी ओर आकर्षित किया करती हैं।

गौतमी—महाभाग! आपको ऐसा कहना शोभा नहीं देता; क्योंकि तपोवन में पालन-पोषण होने के कारण यह छल-कपट से सर्वथा अनभिज्ञ है।

राजा—अरी वृद्ध तपस्विनी!

---

water was taken by me, he made love to it. Then you thus said in joke 'All confide in their relatives, both of you are foresters.'

The king—Voluptuaries are allured by such and other honeyed words, full of falsehood of women, who seek to accomplish their own purpose.

Gautamī—Noble sir! It behoves you not to say so. Brought up in a penance-grove, this person is unacquainted with deceit.

The king—Old ascetic woman!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(सरोषम्) अणज्ज! अत्तणो हिअआणुमाणेण किल सव्वं पेक्खसि। को णाम अण्णो धम्मकंचुअव्वदेसिणो तिणच्छण्णकूवोवमस्स तुह अणुआरी भविस्सदि। [अनार्य! आत्मनो हृदयानुमानेन किल सर्वं प्रेक्षसे। को नाम अन्यो धर्मकञ्चुकव्यपदेशिनस्तृणच्छन्नकूपोपमस्य तव अनुकारी भविष्यति।]

स्त्रीणामिति। अमानुषीणाम्=मानुषीभिन्नानामपि, स्त्रीणाम्=स्त्रीजातेः, अशिक्षितपटुत्वम्= अनुपदिष्टवञ्चनाकौशलम् (नैसर्गिकं चातुर्य्यम्), सन्दृश्यते=संलक्ष्यते। याः परिबोधवत्यः= सर्वतोभावेन ज्ञानवत्यः (व्यवहारकुशला मानुष्यः), ताः किमुत? अशिक्षितपटुत्वे किं वक्तव्याः? परैः=काकैः, भ्रियन्ते=बाल्यकाले पुष्यन्ते, इति परभृताः=कोकिलस्त्रियः, अन्तरि=मध्ये, क्षयतीत्यन्तरीक्षम्, तस्मिन् गमनात्=उड्डयनात्, प्राक्=पूर्वम्, स्वम्=स्वकीयम्, अपत्यजातम्= सन्तानसामान्यम्, अन्यद्विजैः=काकैः (अपरपक्षिभिः), पोषयन्ति=पालयन्ति, किलेति लोकवार्तायाम्। अत्र अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः अप्रस्तुतप्रशंसा च। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २३॥

भावार्थः—कोकिलाः स्वान्यपत्यानि काककुलायेषु निक्षिपन्ति, काकाश्च स्वापत्यबुद्ध्या तानि पोषयन्ति—अन्तरिक्षगमनात् प्राक् इति प्रसिद्धिः, तथा च पक्षित्वे सत्यपि कोकिलाया ईदृशचातुर्य्यदर्शनात् मानुषीरूपायाः शकुन्तलायास्तपोवनवर्द्धितत्वेऽपि सङ्केतानृतवादित्वरूपं पटुत्वं भविष्यतीत्यर्थे नास्ति सन्देहावसर इति भावः॥ २३॥

शकुन्तला—(सरोषम्=सकोपम्) अनार्य=दुराचारिन्! आत्मनः=स्वस्य, हृदयानुमानेन= मम हृदयमिव परस्य हृदयमपि वञ्चनापरमेवेति कल्पने, सर्वं=जनम्, वञ्चकतापूर्णहृदयमिति भावः, प्रेक्षसे किल=पश्यसि किल। अन्यः कः=जनः, धर्म एव कञ्चुकः=बहिरङ्गावरणविशेषः, तेन व्यपदिशति=आत्मानं धार्मिकं प्रकटयतीति तस्य धर्मकञ्चुकव्यपदेशिनः=धर्मविचाररूपकञ्चुके प्रविष्टस्य (बहिर्धर्म्मावरणेनान्तःप्रतारणादि दोषमदर्शयतः), मया परभार्य्या नाङ्गीक्रियत इति दम्भ-

---

मनुष्य जाति से भिन्न पशु-पक्षी आदि की स्त्रियों में भी नैसर्गिक चातुरी पायी जाती है, फिर सब विषयों में बुद्धि रखने वाली मनुष्य जाति की स्त्रियों की तो बात ही दूसरी है। कोकिल आकाश में उड़ने की शक्ति आने से पूर्व अपने बच्चों का अन्य पक्षी (कौए) द्वारा पालन-पोषण करा लेती हैं॥ २३॥

शकुन्तला—(क्रोध के साथ) अरे अधम! (ओ अनार्य!) तुम अपने कपटपूर्ण हृदय के समान सबका हृदय समझता है। झूठे धर्म के आवरण से स्वयं को ढाककर तृण से आच्छादित कुँए के समान तुम जैसा पाखण्डी और कौन होगा?

Untaught cleverness is seen (even) of females other than human, what then of those who are possessed of reason? Indeed, the female cuckoos get their young ones reard by other birds, before they are able to fly in the space (sky). (23)

Śakuntalā—Ignoble man! you judge by the measure of your own heart. Who else now will undertake to imitate you, who wearing (entering) the cloak of virtue, resemble a well, covered up with grass?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(आत्मगतम्) वनवासादविभ्रमः पुनरत्रभवत्याः कोपो लक्ष्यते। तथाहि—

न तिर्यगवलोकितं भवति चक्षुरालोहितं
वचोऽतिपरुषाक्षरं न च पदेषु सङ्गच्छते।
हिमार्त्त इव वेपते सकल एव बिम्बाधरः
प्रकामविनते भ्रुवौ युगपदेव भेदं गते॥ २४॥

परायणस्य, अत एव तृणैः छन्नः=आवृतमुखः, यः कूपः स एवोपमा=उपमानं, यस्य तस्य तृणछन्न-कूपोपमस्य=तृणच्छन्नो हि कूपः स्थलबुद्ध्या जनान् पातयति तद्वदन्तर्नृशंसस्य, तव=भवतः अनुकारी=अनुकरणकर्त्ता, कोऽन्यो भविष्यति। त्वत्तुल्यो दुरात्मा नास्ति इति भावः।

राजा—(आत्मगतम्=स्वहृदये) वनवासात्=शैशवात् तपोवननिवासहेतोः, अविभ्रमः=शृङ्गारभांवजातविकारशून्यः, अत्रभवत्याः=माननीयायाः, कोपो लक्ष्यते=दृश्यते। (नागररमणीनां तु कोपो न विभ्रमं मुञ्चतीत्यस्या अपूर्व एवायं कोपोऽभिलक्ष्यत इति भावः।) तथाहि—

अन्वयः—(अत्रभवत्याः) अवलोकितं तिर्यग् न किन्तु चक्षुः आलोहितम् (भवति), वचः अतिपरुषाक्षरं च पदेषु न सङ्गच्छते, हिमार्त इव सकल एव बिम्बाधरः वेपते, प्रकामविनते भ्रुवौ युगपदेव भेदं गते॥ २४॥

न तिर्यगिति। अत्रभवत्याः=मुनिकन्यात्वेन मान्यायाः शकुन्तलायाः, अवलोकितं=दृष्टिः, तिर्यक् =वक्रं न (सविभ्रमकोपे तु नागरीणां दृष्टिर्वक्रैव स्यादिति भावः), किन्तु चक्षुः, आ समन्ताद् लोहितम् आलोहितम्=सम्यग्रक्तवर्णं सञ्जातम् (सविभ्रमकोपे तु नागररमणीनां चक्षुर्न सम्यक् लोहितं भवति इत्याशयः), वचः=अनार्य्य इत्यादि भाषितम्, अतिपरुषाणि=अतीव निष्ठुराणि, अक्षराणि=वर्णस्तोमः, यस्य तत् अतिपरुषाक्षरम्, च=किन्तु, पदेषु=लक्ष्येषु, मादृशेषु विषयेषु, न सङ्गच्छते=अतथ्यत्वान्न युज्यते (सविभ्रमकोपकाले तु—नागररमणीनां मुखेभ्य ईदृशं परुषाक्षरं नैव निर्याति निर्गमने तु तथ्यत्वात् पदेषु सङ्गच्छत एव इत्याशयः), हिमार्तः=शीतार्तः इव, सकलः=समग्रावयव एव, बिम्बाधरः=बिम्बफलोपमलोहितवर्णोष्ठः, वेपते=कम्पते, तथा प्रकामविनते=अतिनम्रीभूते,

---

राजा—(मन में) वनवासिनी होने के कारण इनके कोप में विलास का भाव लक्षित नहीं होता; क्योंकि—

इनके नेत्र लाल हो गये हैं पर वे वक्र नहीं होते, ये यद्यपि कठोर अक्षरों का प्रयोग करती हैं परन्तु वे मुझ पर घटित नहीं होते, सम्पूर्ण अधरोष्ठ इस प्रकार काँपता है मानो हिम से पीड़ित हो एवं दोनों भवें एक साथ ही टेढ़ी होकर झुक जाती हैं॥ २४॥

The king—(Himself) As this is forester, so, in her anger, there never appears any sign of or any feminine gesture indicative of amorous sentiment. For—

Though her eyes have become red but are not tortuous (curved), she uses though cruel (hard) words but they never effecting me. The complete lower lip trambles as if it effected by snow and the both eyebrows have bent down togather at a very moment being curved. (24)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपि च सन्दिग्धबुद्धिं मामधिकृत्य अकैतव इवास्याः कोपः सम्भाव्यते। तथा ह्यनया—

मय्येवमस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ
वृत्तं रहः प्रणयमप्रतिपद्यमाने।
भेदाद् भ्रुवोः कुटिलयोरतिलोहिताक्ष्या
भग्नं शरासनमिवातिरुषा स्मरस्य॥ २५॥

भ्रुवौ=भ्रूद्वयम्, युगपदेव=समसमयमेव, भेदं=भङ्गलक्षणम्, वक्रताम्, गते=प्राप्ते (सविभ्रमकोपे तु नागरीणां भ्रूयुगलं क्रमिकमेव भेदं गच्छति न तु युगपदेवेति भावः)। अत्र कोपस्याविभ्रमत्व-प्रतिपादनाय तिर्य्यगवलोकनादिरूपनानाविधकारणोपन्यासात् समुच्चयालङ्कारः। केचिदत्र स्वभावोक्तिरिति, हिमार्त्त इव इत्यत्रोत्प्रेक्षा, बिम्बाधर इत्यंशे उपमा। इत्येतेषामलङ्काराणां साङ्कर्य्यं बोध्यम्। श्लोकमिदं पृथ्वीच्छन्दसा निबद्धम्—'जसौ जसयला वसु ग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरु' इति पृथ्वीलक्षणम्॥ २४॥

अपि च=अन्यच्च, सन्दिग्धा=परिणयविषये संशयाकुला, बुद्धिर्यस्य तं सन्दिग्धबुद्धिम्, माम्=दुष्यन्तम्, अधिकृत्य=लक्ष्यीकृत्य, अस्याः=शकुन्तलायाः, कोपः=क्रोधः, अकैतव इव=कापट्यरहित इव, सम्भाव्यते=उत्प्रेक्ष्यते। तथाहि अनया=शकुन्तलया—

अन्वयः—एवम् अस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ मयि रहः वृत्तं प्रणयम् अप्रतिपद्यमाने सति अतिरुषा अतिलोहिताक्ष्या कुटिलयोः भ्रुवोः भेदात् स्मरस्य शरासनं भग्नमिव॥ २५॥

मय्येवमिति। एवम्=इत्थम्भूतेन, अस्मरणेन=भूतपूर्वपरिणयादिरूपवस्तूनामस्मृत्या, दारुणा=निष्ठुरा, चित्तवृत्तिः=मनोवृत्तिः, यस्य तस्मिन् अस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ, मयि=दुष्यन्ते, रहः=एकान्ते निर्जनतपोवनस्थाने, वृत्तं=सञ्जातम्, प्रणयम्=प्रीतिम्, अप्रतिपद्यमाने=धर्म्मध्वंस-भयेनास्वीकुर्वाणे सति, अतिरुषा=अतिक्रोधेन, अतिलोहिते=अत्यन्तरक्तवर्णे, अक्षिणी=नयनद्वयं, यस्याः सा अतिलोहिताक्ष्या, अनया=शकुन्तलया, कुटिलयोः=कुञ्चितयोः, भ्रुवोः भेदात्=भङ्गात्,

---

इसके अतिरिक्त मुझे सन्दिग्धबुद्धि समझकर यह जो क्रोध कर रही है—वह भी कपटरहित ही प्रतीत होता है। जैसे कि इसने—

मुझे (इसे स्वीकार करने की) बात याद नहीं आ रही है अतः मैं इसके लिए दारुण हृदय वाला हो गया हूँ। एकान्त में इसके साथ जो मेरा प्रेम हुआ था उसे क्योंकि मैं मानता नहीं अतः क्रोधातिशय से लाल-लाल नेत्र किये हुए इस रमणी ने मानो अपनी भवों के भेद से मुझ पर प्रहार करने वाले कामदेव के धनुष को ही तोड़ डाला है॥ २५॥

Rendering me of doubtful mind, her anger appears, like one free from fraud. For by her—

Where eyes are extremely red, the bow of Kāma is as though, in great anger, snapped asunder at me owing to the knitting of her curved eye-brows (on me) whose mental attitude is (according to her) dreadful owing to forgetfulness and who am not acknowledging the affection thaı developed in secret. (25)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(प्रकाशम्) भद्रे! प्रथितं दुष्यन्तस्य चरितम्, प्रजास्वपीदं न दृश्यत।

शकुन्तला—तुह्मे जेवप्पमाणं जानध धम्मत्थिदिं च लोअस्स।
लज्जाविणिज्जिदाओ जाणंति ण किंपि महिलाओ॥
[यूयमेव प्रमाणं जानीथ धर्मस्थितिञ्च लोकस्य।
लज्जाविनिर्जिता जानन्ति न किमपि महिलाः॥ २६॥]

सुट्ठु दाव अत्तच्छंदाणुचारिणी गणिआ समुवत्थिदा। [सुष्ठु तावदात्मच्छन्दानुचारिणी गणिका समुपस्थिता।]

स्मरस्य=कामस्य ('मयि प्रहर्तुः), शरासनं=धनुः, भग्नमिव=खण्डितमिव (धनुर्भङ्गात् स्मरस्य पुनः प्रहारसम्भावना न स्यादित्याशयः)। श्लोकेऽस्मिन् सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्ग-मपि। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २५॥

भावार्थः—इत्थम्भूत अस्मरणदारुणचित्तवृत्तौ मयि दुष्यन्ते निर्जनतपोवनस्थाने सञ्जात-प्रणयमप्रतिपद्यमाने सति कोपातिशयेन अतिलोहिताक्ष्या अनया शकुन्तलया भ्रुवोः भेदात् मयि प्रहर्तुः कामस्य शरासनं खण्डितमिव, इति तर्कयामि॥ २५॥

(प्रकाशम्=सर्वजनश्राव्यम्) भद्रे=कल्याणि! दुष्यन्तस्य=राज्ञः, चरितम्=आचरणम्, प्रथितम्=लोकेषु प्रसिद्धम्। चरित्रवान् एवायं इति लोकः जानात्येवेति भावः। इदं=चारित्र्यदोषं (असदाचरणम्), प्रजासु अपि=दुष्यन्तशासितजनेष्वपि, न दृश्यते=नोपलक्ष्यते। (तस्मात् यस्य प्रजा एवम्भूताः शासकस्य तस्य ममेदं कुतोऽपि न सम्भवतीत्याशयः।)

शकुन्तला—अन्वयः—यूयम् एव प्रमाणं लोकस्य धर्मस्थितिञ्च जानीथ। किन्तु लज्जा-विनिर्जिता महिलाः किमपि न जानन्ति॥ २६॥

यूयमिति। यूयं=लोकशासितारो राजान एव, प्रमाणं=विधिनिषेधात्मकं शास्त्रम्, लोकस्य=जनस्य, धर्म्मस्थितिं=धर्म्ममर्यादाञ्च, जानीथ=वित्थ। किन्तु, लज्जया विनिर्जिताः=पराभूताः, महिलाः=नार्य्यः, किमपि न जानन्ति=न ज्ञातुं शक्नुवन्ति (जानन्त्योऽपि लज्जाभिभवादेव किमपि

(प्रगट) भद्रे! दुष्यन्त का चरित्र विश्वप्रसिद्ध है, (उसकी) प्रजा में भी यह दोष (चरित्रहीनता) कहीं न दीखेगा।

शकुन्तला—आप ही लोग शास्त्र, लोक तथा धर्म की मर्यादा को जानते हैं और लज्जा से पराजित स्त्रियाँ कुछ जानती ही नहीं?॥ २६॥

ठीक है, (तब यही समझिये) मानो एक स्वेच्छाचारिणी वेश्या आपके सामने उपस्थित है।

(Aloud) Good lady! Duśyanta's character is quite well-known. Yet this in not seen in his subject, too.

Śakuntalā—It seems, that you people only know about the bounds of Śātrās (sacred treatise), worldly affairs and morality, yet the women defeated by washfulness, know nothing about it. (26)

well, (then consider) that as an adulteress (unchaste woman) is present bofore you.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—जादे! इमस्स पुरुवंसपच्चएण मुहमहुणो हिअअविसस्स इत्थं समुवगदासि। [जाते! अस्य पुरुवंशप्रत्ययेन मुखमधोर्हृदयविषस्य हस्तं समुपगतासि।]

(शकुन्तला पटान्तेन मुखमाच्छाद्य रोदिति।)

शार्ङ्गरवः—इत्थमप्रतिहतं चापल्यं दहति—

अतः परीक्ष्य कर्त्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः।
अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्॥ २७॥

वक्तुं नैव समर्था भवन्ति, अतः भवतः सर्वलोकप्रथितं चरितं सुपरिशुद्धं कथं वाहं ज्ञातुमर्हामि?) ॥ २६ ॥

सुष्ठु तावत्, आत्मच्छन्दानुचारिणी=स्वेच्छाचारिणी, गणिका=वेश्या, वारयोषित्, समुपस्थिता=सम्प्राप्ता।

गौतमी—जाते=वत्से! पुरुवंशप्रत्ययेन=पुरुवंशोऽतीव सदाशयो महत्त्वपूर्णश्चेति विश्वासेन, मुखे मधु=मधूपमं मधुरं वचनं, यस्य तस्य मुखमधोः, किन्तु हृदये विषं=विषोपमः, यस्य तस्य हृदयविषस्य, अस्य=राज्ञः, दुष्यन्तस्य, हस्तं=करे, समुपगतासि=निपतितासि।

(शकुन्तला पटान्तेन=वसनान्तेन, मुखम्=आननम्, आच्छाद्य=आवृत्य, रोदिति।)

शार्ङ्गरवः—इत्थम्=ईदृशम्, अप्रतिहम्=स्वजनैरप्रतिषिद्धम्, चापल्यम्=चपलताप्रयुक्तमनालोचितकारित्वम् (अज्ञातकुलशीले कन्याया आत्मसमर्पणमित्यर्थः), दहति=सन्तापयति।

अन्वयः—अतः विशेषात् परीक्ष्य रहः सङ्गतं कर्त्तव्यम्। अज्ञातहृदयेषु सौहृदम् एवं वैरीभवति॥ २७॥

अत इति। अतः=अस्माद्धेतोः (अनालोचितकारित्वस्य तापानुबन्धित्वात्), विशेषात्=विशेषतः, परीक्ष्य=कुलशीलादिकं निर्धार्य्य, रहः=एकान्ते, सङ्गतं=गान्धर्वविधिना परिणयम्,

---

गौतमी—पुत्री! तुम पुरुवंश के विश्वास से मुख में अमृत तथा हृदय में विष (रखने वाले) इस (दुष्ट) के हाथ जा पड़ी हो।

(शकुन्तला आँचल में मुख ढाँपकर रोने लगती है।)

शार्ङ्गरव—इस प्रकार की अबाध चपलता आत्मीय जनों को दुःख देती है—इसलिए भलीभाँति परीक्षा करने के पश्चात् ही एकान्त-मिलन करना चाहिए। क्योंकि किसी अज्ञात

Gautamī—Child! through confidence in Purū's race, committed yourself in the hands of such a person who possesses honey in his mouth but poison in his heart.

(Śakuntalā weeps covering her face with the skirt of her garment)

Sārṅgarava—Thus self-committed rashness, when not checked, burns.

Therefore a union, especially (when) in private (secret), should be formed after careful examination. Relation (friendship)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अयि भोः! किमत्रभवतीप्रत्ययादेवास्मानसम्भृतदोषैरधिक्षिपन्ति भवन्तः।

शार्ङ्गरवः—(सासूयम्) श्रुतं भवद्भिरधरोत्तरम्?

आजन्मनः शाठ्यमशिक्षितो यस्तस्याप्रमाणं वचनं जनस्य।
पराभिसन्धानमधीयते यैर्विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः॥ २८॥

कर्त्तव्यम्=करणीयं कन्ययेति शेषः। विपरीते बाधकं दर्शयति—अज्ञातेति। न ज्ञातं=नावगतं, हृदयं=मनः, येषां तेषु अज्ञातहृदयेषु पुरुषेषु, सौहृदं=प्रणयः, एवम्=उपस्थितवृत्तान्त इव, वैरीभवति=विद्वेषायते। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यासश्च। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २७॥

भावार्थः—अस्माद्धेतोः कुलशीलादिकं निर्धार्य्य एव एकान्ते परिणयादिकं कर्त्तव्यम्। या विपरीतमाचरति तस्याः सौहृदम् (अज्ञातहृदयेषु कृतप्रणयः) उपस्थितवृत्तान्त इव वैरीभवति। अत एव सावधानतया एवं करणीयमकरणीयं विच्चार्य कार्यं कर्त्तव्यम्॥ २७॥

राजा—अयि भोः! स्निग्धसम्बोधनम्, अत्रभवत्याः=पूजार्हायाः शकुन्तलायाः, प्रत्ययात्=विश्वासादेव, असम्भृतदोषैः=अकृतदोषैः, अस्मान्=माम्, अधिक्षिपन्ति=वञ्चकत्वेन निन्दन्ति, भवन्तः, किमिति प्रश्ने।

शार्ङ्गरवः—(सासूयम्=गुणेषु दोषारोपणमसूया तत्सहितम्) भवद्भिः=पुरोहितप्रभृतिभिः सभ्यगणैः, अधरोत्तरम्=अपकृष्टमुत्तरम्, श्रुतम्=आकर्णितम्।

अन्वयः—यः आजन्मनः शाठ्यम् अशिक्षितः तस्य जनस्य वचनं अप्रमाणं, यैः पराभिसन्धानं विद्येति अधीयते ते आप्तवाचः सन्तु किल॥ २८॥

आजन्मन इति। यः=जनः, आजन्मनः= जन्मन आरभ्य, शाठ्यं=शठतां, अशिक्षितः=नाध्यापितः, तस्य जनस्य=अशाठ्यवतो जनस्य, वचनं=कथनं, अप्रमाणम्—प्रमीयतेऽनेनेति प्रमाणं,

---

हृदय व्यक्ति से प्रेम कर लेने पर वह प्रेम इसी प्रकार शत्रुत्व रूप में परिणत हो जाया करता है॥ २७॥

राजा—अरे! क्या केवल इन मान्या की बातों पर विश्वास कर ही आप हम पर आक्षेप लगा रहे हैं?

शार्ङ्गरव—(असूयापूर्वक) क्या आप महानुभावों ने इनका विपरीत उत्तर सुना—

जिसने जन्म से लेकर आज तक कभी धूर्तता नहीं सीखी (जानी) उसकी बात (कथन) तो अप्रामाणिक माना जाय और जिसने विद्या पढ़ने के बहाने केवल धूर्तता ही सीखी है—उसके कथन को आप्तवाक्यवत् प्रामाणिक मान लिया जाय?॥ २८॥

---

towards those, whose hearts are checked or known, thus turns into hostility. (27)

The king—Ho! why do you, by merely trusting this lady, blaming us with words that involve censure?

Sārṅgarava—*(With scorn)* Have you heard the inversion of the proper order of things?

The statement of a person, who from his birth has never been taught deceit, is without authority, let those, for sooth, by whom

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अहो सत्यवादिनः! अभ्युपगतं तावदस्माभिः एवंविधा एवं वयम्, किं पुनरिमामभिसन्धाय लभ्यते?

शार्ङ्गरवः—विनिपातः।

राजा—विनिपातः पौरवैर्लभ्यत इत्यश्रद्धेयमेतत्।

शार्ङ्गरवः—भो राजन्! किमत्रोत्तरैः? अनुष्ठितो गुरुनियोगः, सम्प्रति प्रतिनिवर्त्तामहे वयम्।

तत्र भवतीत्यप्रमाणम्=अयथार्थज्ञानजनकम्। यैः=जनैः, पराभिसन्धानम्=परप्रतारणम्, विद्येति=विद्यात्वेन विभाव्येति, अधीयते=पठ्यते (यथा तथैव शठतापीति भावः), ते=जनाः, आप्ताः=विश्वासयोग्याः, वाचः=वाक्यानि, येषां ते आप्तवाचः=प्रामाणिकाः, सन्तु=भवन्तु, किलेति सम्भावनायाम्। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः, उपजातिर्वृत्तम्॥ २८॥

भावार्थः—आजन्मनस्तपोवनवासिन्या अविदितकैतवायाः शकुन्तलाया एव वचनं प्रमाणम्, न पुनर्विद्यारूपेण परप्रतारणामधीतवतां भवतां वचनं प्रमाणम्। तस्मात् शकुन्तलैव सत्यं वदति न पुनर्भवानिति भावः॥ २८॥

राजा—अहो सत्यवादिनः! अभ्युपगतम्=अङ्गीकृतम्, तावदस्माभिः=मया, एवंविधाः=भवदुक्तप्रकाराः परप्रतारणपरायणा एव, इमां=शकुन्तलाम्, अभिसन्धाय=प्रतार्य, किं=फलम्, पुनर्लभ्यते=अर्ज्यते? (सर्वत्र प्रतारणे किमपि फलं दृश्यते किन्तु अस्याः प्रतारणे कस्यचिद् फलस्यालाभाद् व्यर्थैव प्रतारणेति मन्ये।)

शार्ङ्गरवः—विनिपातः=अधोगतिः, इमामभिसन्धाय लभ्यत इत्यनुषङ्गः।

राजा—पौरवैः=पुरुवंशिभिः, विनिपातः=अधोगतिः, लभ्यते, इति=एतत्, अश्रद्धेयम्=अप्रत्ययनीयम् (प्रतारणायामपि तेषां नैव विनिपातः सम्भविष्यतीति भावः।)

राजा—ओ सत्यवादियो! मैं मानता हूँ कि आपके कथनानुसार मैं धोखेबाज हूँ, परन्तु इन्हें धोखा देकर मुझे क्या लाभ होगा?

शार्ङ्गरव—अधोगति (सत्यानाश)।

राजा—पुरुवंशियों की अधोगति भी भला कहीं सम्भव है? इस पर विश्वास ही नहीं हो सकता।

शार्ङ्गरव—राजन्! अब उत्तर-प्रत्युत्तर से क्या लाभ? हमने गुरु की आज्ञा पूरी कर दी, अब हम लौट रहे हैं—

---

the deceiving of others is studied as a science, be of authoritative words or the statement of those who have learnt deceiving the others as a science is acceptable an authority. (28)

The king—O' truth-teller! we for a while admit this. What however, is to be gained by having deceived this lady?

Śārṅgarava—Downfall.

The king—The downfall is saught after by Purū's descendants is not credible.

Śārṅgarava—O' king! what is the use of replying? The

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदेषा भवतः पत्नी त्यज वैनां गृहाण वा।
उपयन्तुर्हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी॥ २९॥

गौतमी! गच्छाग्रतः। (इति सर्वे प्रस्थिताः।)

शकुन्तला—अहं दाणिं इमिणा किदवेण विप्पलद्धा, तुह्मे वि मं परिच्चअध। [अहमिदानीमनेन कितवेन विप्रलब्धा, यूयमपि मां परित्यजथ।] (इत्यनुप्रस्थिता)

शार्ङ्गरवः—भो राजन्! अत्र=एतस्मिन् विषये, उत्तरैः=प्रतिवचनैः, किं=किं फलम्? गुरोः= कण्वस्य, नियोगः=आदेशः, अनुष्ठितः=सम्पादितः, अस्माभिरिति शेषः, सम्प्रति=इदानीम्, वयम्, प्रतिनिवर्त्तामहे=आश्रमं प्रति गच्छामः।

अन्वयः—तद् एषा भवतः पत्नी, एनां त्यज वा गृहाण वा। हि उपयन्तुः दारेषु सर्वतोमुखी प्रभुता॥ २९॥

तदिति। तद्=तस्मात् (यतो वयमनुष्ठितगुरुनियोगा गमनोत्सुकाश्च तस्मात्), एषा=शकुन्तला, भवतः पत्नी=गान्धर्वविधिना परिणीतत्वात् त्वयैव भार्या, अत एव एनां= शकुन्तलाम्, त्यज वा, गृहाण वा। हि=यतः, उपयन्तुः=वोढुः, दारेषु=पत्न्याम्, सर्वतोमुखी= सर्वप्रकारा, प्रभुता=कर्तृत्वं वर्त्तते। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २९॥

भावार्थः—दारेषु विषये पत्युः सर्वविधकर्तृत्वभावादस्यां विषये ग्रहणत्यागादिभिर्यथेच्छाचरणे स्वतन्त्रो भवान्, नास्माकमत्र विशेषवचनावसर इति भावः॥ २९॥

गौतमी! अग्रतः=पुरतः, गच्छ। (इति=इत्युक्त्वा, सर्वे=शार्ङ्गरवशारद्वतौ गौतमी च, प्रस्थिताः=निर्गताः।)

शकुन्तला—इदानीम्=साम्प्रतम्, अहम्=शकुन्तला, अनेन=पुरःस्थितेन, कितवेन=धूर्त्तेन राज्ञा, विप्रलब्धा=वञ्चिता, यूयमपि, मां=शकुन्तलां, परित्यजथ=परित्यज्य गच्छथ। (इत्यनुप्रस्थिता)

यह आपकी पत्नी है, आप इसे अपने पास रखिए अथवा छोड़ दीजिए; क्योंकि पत्नी पर पति की सब प्रकार से प्रभुता रहती है॥ २९॥

गौतमी! आगे चलो (बढ़ो)। (**सबका प्रस्थान**)

शकुन्तला—अभी इस धूर्त ने मुझे ठगा ही है, क्या आप लोग भी मुझे छोड़कर जा रहे हैं? (**उनके पीछे जाती है**)

---

preceptors command has been executed. We shall return (to the hermitage). So—

Here is your wife, abandon (refuse) her or accept, for authority over the wife is admitted to be all-extending. (29)

Gautamī! Go ahead. *(Thus all setting forth)*

Śakuntalā—How, have I been deceived by this villain? Do you also forsake me? *(Starts after)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गौतमी—(स्थित्वा परिवृत्यावलोक्य च) वच्छ! संगरव! अणुगच्छदि णो करुणपरिदेविणी सउंतला, पच्छादेसपरुसे भत्तरि किं करेदु तवस्सिणी। [**वत्स शार्ङ्गरव! अनुगच्छति नः करुणपरिदेविनी शकुन्तला, प्रत्यादेशपरुषे भर्त्तरि किं करोतु तपस्विनी।**]

शार्ङ्गरवः—(सरोषं प्रतिनिवृत्य) आः पुरोभागिनि! किमिदं स्वातन्त्र्यमवलम्बसे?

(शकुन्तला भीता वेपते।)

शार्ङ्गरवः—शकुन्तले! श्रृणोतु भवती!

यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि किं पुनरुत्कुलया त्वया।
अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः पतिगृहे तव दास्यमपि क्षमम्॥ ३०॥

गौतमी—(स्थित्वा=गमनान्निवृत्य, परिवृत्य=किञ्चित् परिक्राम्य, च अवलोक्य=दृष्ट्वा) वत्स शार्ङ्गरव! करुणेन=करुणरसेन, परिदीव्यति=विलपतीति सा करुणपरिदेविनी, शकुन्तला, नः=अस्मान्, अनुगच्छति=पश्चादागच्छति, प्रत्यादेशेन=प्रत्याख्यानेन, परुषे=दारुणे, प्रत्यादेशपरुषे, भर्त्तरि=स्वामिनि विषये, तपस्विनी=करुणाविक्लवा, किम्=अस्मदनुसरणादन्यत्, करोतु।

शार्ङ्गरवः—(सरोषम्=सकोपम्, प्रतिनिवृत्य) आः=कोपे, पुरोभागिनि=दोषैकदर्शिनी, किम्=कथम्, इदम्=अस्मदनुसरणरूपम्, स्वातन्त्र्यम्=स्वाधीनताम्, अवलम्बसे=आश्रयसि। (भर्तारमेवाश्रय, मास्माननुसर इति भावः।)

(शकुन्तला, भीता=भययुक्ता सति, वेपते=कम्पते।)

शार्ङ्गरवः—शकुन्तले! भवती=त्वम्, श्रृणोतु—

अन्वयः—क्षितिपः यथा वदति यदि त्वं तथासि तदा उत्कुलया त्वया किं पुनः? अथ तु यदि आत्मनः व्रतं शुचि वेत्सि तदा पतिगृहे दास्यं तव क्षमम्॥ ३०॥

गौतमी—(रुककर और घूमकर देखकर) पुत्र शार्ङ्गरव! शकुन्तला करुण विलाप करती हुई हमारे पीछे आ रही है। यह तपस्विनी इस प्रकार त्यागने के लिए उद्यत पति से और क्या कह सकती है?

शार्ङ्गरव—(क्रोध के साथ घूमकर) अरी दोषकर्त्री! अब क्या तू स्वतन्त्रता का अवलम्बन करना चाहती है?

(शकुन्तला भय से काँपती है।)

शार्ङ्गरव—शकुन्तले! सुनो—

यदि राजा दुष्यन्त जैसा कहते हैं, तुम वैसी ही हो तब तो तुम्हारे जैसी कुलबोरनी से

Gautamī—(Stoping, roaming about and observing) **Child Śārṅgarava! here Śakuntalā, weeping piteously, is following us. What can this poor girl do, when her husband is harsh repudiation?**

Śārṅgarava—(Turning angrily) **Wanton girl! do you resort to independence?**

(Śakuntalā trambles in fright)

***Śārṅgarava*—Śakuntalā! hear me—**

If you are as the king syas, what we have to do with you or

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिष्ठ, साधयामो वयम्।

राजा—भोस्तपस्विन्! किमत्रभवतीं विप्रलभसे? कुतः—

कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति पङ्कजान्येव।
वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः॥ ३१॥

यदीति। क्षितिपः=राजा दुष्यन्तः, यथा वदति=न खल्वहमिमां परिणीतवान् इति यद्ब्रवीति, यदि त्वम्, तथासि=तथाविधासि, तदा, उत्कुलया=उल्लङ्घितकुलाचारपद्धत्या, पांसलया, त्वया, किं पुनः=न किमपि फलम् (पुनरित्यत्र क्वचित् पितुरिति पाठः, तत्र पितुः कण्वस्येति ज्ञेयम्)। अथ=पक्षान्तरे, तुशब्दः पूर्वस्माद् विशेषे, यदि आत्मनः=स्वस्य, व्रतं=नियमाचरणं कृत्यं वा, शुचिं=पवित्रम्, वेत्सि=जानासि, तदा, पतिगृहे=दुष्यन्तसद्मनि, दास्यं=परिणये सन्देहात् दासीभावोऽपि, तव क्षमम्=हितम्। अत्रोत्प्रेक्षा सम्भावना चालङ्कारौ। द्रुतविलम्बितं नाम वृत्तम्॥ ३०॥

भावार्थः—दुष्यन्तेनापरिणीतत्वादन्यस्य तु पतित्वेनाश्रयणात् पापगर्भया व्यभिचारिण्या त्वयास्माकं न किञ्चित् प्रयोजनम्, अतस्त्वं यथेच्छमाचर न पुनरस्माननुगच्छेति भावः। किञ्च यदि राज्ञः यथा कथयति तत्सत्यं तदाऽऽस्माकमनुगमनं न त्वया कार्यम्। किन्तु यदि त्वमात्मनः व्रतं पवित्रमिति वेत्सि तदा त्वयात्रैव स्थित्वा दास्यमङ्गीकृत्य स्थातव्यम्, तदपि शुभाय एव भविष्यति॥ ३०॥

तिष्ठ=त्वमत्रैव वर्त्तस्व, वयं साधयामः=आश्रमपदं गच्छामः।

राजा— भोस्तपस्विन्!=भो तापस! अत्रभवतीं=मुनिकन्यात्वेन पूजनीयां शकुन्तलाम्, कथं विप्रलभसे=विरहयसि, परित्यज्य गच्छसि? कुतः—

अन्वयः—शशाङ्कः कुमुदानि एव बोधयति तथा सविता पङ्कजानि एव बोधयति। हि वशिनां वृत्तिः परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी (भवति)॥ ३१॥

कुमुदानीति। शशाङ्कः=चन्द्रः, कुमुदानि=कैरवाण्येव, बोधयति=उन्मीलयति तथा

क्या लाभ? किन्तु यदि तुम अपने चरित्र को पवित्र समझती हो तो तुम्हें दासी का काम करते हुए यहीं पतिगृह में ही रहना चाहिए क्योंकि वही तुम्हारे लिए हितकर है॥ ३०॥

तुम यहीं रुको, हमलोग जाते हैं।

राजा—ओ तपस्वी! आप इन मान्या को क्यों वियुक्त कर रहे हैं? क्योंकि—

चन्द्र केवल कुमुदिनी को और सूर्य मात्र कमल को ही प्रस्फुटित करता है। इसी प्रकार जितेन्द्रिय धार्मिक जनों की प्रवृत्ति परस्त्रीसंसर्ग से सर्वथा पराङ्मुखी ही रहती है॥ ३१॥

---

what has your father to do with you who have transgressed the family? if, on the other hand, you known your own vow to be pure, even meanest service in the house of your husband is sufficient for you. (30)

You stay here only (while) we are going.

The king—O' ascetic! why do you deceive this lady?

The moon awakens the night-lotuses only and the sun the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शार्ङ्गरवः—राजन्! अथ पूर्ववृत्तं व्यासङ्गाद्विस्मृतं भवेत्, तदा कथमधर्मभीरोर्दारा-परित्यागः ?

राजा—(पुरोधसं प्रति) भवन्तमेवात्र गुरुलाघवं पृच्छामि।

मूढः स्यामहमेषा वा वदेन्मिथ्येति संशये।
दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्रीस्पर्शपांशुलः ॥ ३२ ॥

सविता=सूर्यः, पङ्कजानि=कमलान्येव, बोधयति=प्रकाशयति, न पुनः कुमुदानि, हि=यतः, वशिनां= जितेन्द्रियाणां जनानाम्, वृत्तिः=मनोवृत्तिः (किं पुनः प्रवृत्तिरिति भावः), परपरिग्रहस्य=अन्य-कलत्रस्य, संश्लेषे=सम्पर्के, पराङ्मुखी=विमुखीभवति। अत्र दृष्टान्त-अप्रस्तुतप्रशंसा-अर्थान्तर-न्यासाश्चालङ्काराः। आर्या जातिः ॥ ३१ ॥

भावार्थः—यथा चन्द्रः कुमुदान्येव बोधयति न तु कमलानि, यथा सूर्यः कमलान्येव प्रकाशयति न तु कुमुदानि तथैव जितेन्द्रियाणां धार्मिकाणां मनोवृत्तिः अन्यकलत्रस्य सम्पर्के सर्वथैव पराङ्मुखीभवति ॥ ३१ ॥

शार्ङ्गरवः—राजन्! अथेति प्रश्ने, यद्वा—अथ=यदि, व्यासङ्गात्=कार्यातिशये व्यापृतचित्त-त्वाद्, अथवा—व्यासङ्गात्=मोहात्, पूर्ववृत्तम्=पूर्वचरित्रम्, विस्मृतम्=स्मृतिपथाद्विच्युतं भवेत्, तदा अधर्म्मभीरोः=पापाशङ्किनः भवतः, कथं दारापरित्यागः, यदि ते मनसि अधर्मात् भीतिरस्ति तदा दारपरित्यागः कथं क्रियते तत्राप्यधर्मसम्भवादिति।

राजा—(पुरोधसं=पुरोहितं, प्रति=उद्दिश्य) अत्र=अस्मिन् विषये, गुरुलघ्वोर्भावो गुरु-लाघवं=ग्रहणाग्रहणयोर्दोषस्य बलाबलम्, भवन्तमेव=त्वां पुरोहितं धर्मकर्मोपदेष्टारमेव, पृच्छामि।

अन्वयः—अहं मूढः स्यां वा एषा मिथ्या वदेत् इति संशये दारत्यागी (भवामि), आहो परस्त्रीस्पर्शपांशुलः (भवामि) ॥ ३२ ॥

मूढ इति। अहम्, मूढः=प्राप्तमोहः (विस्मृतविवाहवृत्तः), स्याम्=भवेयम्, वा=अथवा,

---

शार्ङ्गरव—यदि किसी कारण आप उस अतीतकालीन घटना को भूल गये हों तब क्या आप जैसे धर्मभीरु के लिए इस प्रकार अपनी भार्या का परित्याग करना उचित होगा?

राजा—(पुरोहित के प्रति) इस विषय में मैं आप ही से गौरव और लाघव की बात पूछता हूँ—

मैं विगत घटना भूल गया हूँ अथवा यही मिथ्या बोल रही है, इस दुविधापूर्ण स्थिति में मैं स्त्रीत्याग अथवा परस्त्रीगमन—किस दोष का भागी बनूँगा ? ॥ ३२ ॥

---

day lotuses alone. For, the disposition of those who possess control over their senses is averse (unwilling) to embracing another's wife. (31)

Śārṅgarava—But when you have forgotten what happened before owing to devotion to something else, then now could you be said to be apprehensive of sin?

The king—*(Address to preceptor)* You yourself I ask about the superiority and inferiority in this case.

In the doubt as to whether I may be infatuated (foolish) or

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरोधाः—(विचार्य) यदि तावदेवं क्रियताम्।

राजा—अनुशास्तु मां गुरुः।

पुरोधाः—अत्रभवती तावदाप्रसवादस्मद्गृहे तिष्ठतु।

राजा—कुत इदम्?

पुरोधाः—त्वं साधुनैमित्तिकैरुपदिष्टपूर्वः प्रथममेव चक्रवर्त्तिनं पुत्रं जनयिष्यसीति। स

एषा=शकुन्तला, मिथ्या=अनृतम्, वदेत्, इति संशये=सन्देहे, दारत्यागी=प्राप्तमोहः सन् पत्नीत्यागी भवामि? आहो=किं वा, परस्त्रीस्पर्शेन=परदारग्रहणेन, पांशुलः=कलङ्कितो भवामि? अत्रोत्प्रेक्षा-लङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ ३२॥

भावार्थः—स्वपत्नीत्याग-परदारग्रहणजनितोभयविधपापयोः कतरस्य गुरुत्वम् इति भवन्तमेव पृच्छामि। संशयितक्षेत्रे तु परदाराङ्गीकरणापेक्षया तस्याः त्याग एव वरं पातके लाघवादिति भावः॥ ३२॥

पुरोधाः—(विचार्य्य=विचिन्त्य) तावत्=तथा, अस्मिन् विषये संशयाकुलितोऽसीत्यर्थः, तदा, एवं=वक्ष्यमाणरूपम्, क्रियताम्=निश्चीयताम्।

राजा—गुरुः=भवान्, मां=दुष्यन्तं, अनुशास्तु=कर्त्तव्यमुपदिशतु।

पुरोधाः—अत्रभवती=मान्या शकुन्तला, आप्रसवात्=प्रसवपर्यन्तम्, अस्मद्गृहे=अस्माकं भवने, तिष्ठतु=निवसतु।

राजा—इदम्=अस्मद्गृहेऽवस्थानम्, कुतः=कस्माद्धेतोः भवतु?

पुरोधाः—निमित्तं=शुभाशुभलक्षणं, जानन्तीति नैमित्तिकाः=दैवज्ञाः, साधवः=निपुणाश्च, ते नैमित्तिकाश्चेति तैः साधुनैमित्तिकैः, प्रथमम्=आदावेव, चक्रवर्त्तिनं=सार्वभौमं, पुत्रं=तनयं,

---

पुरोहित—(विचार कर) यदि ऐसी बात है तो ऐसा करिए।

राजा—आप मुझे कर्त्तव्य का उपदेश दीजिए।

पुरोहित—ये मान्या उस समय तक हमारे घर में निवास करें, जब तक इन्हें प्रसव न हो जाय।

राजा—ऐसा क्यों किया जाय?

पुरोहित—आपको बहुत दिन पूर्व ही भलीभाँति निमित्त को जानने वाले दैवज्ञों ने बता दिया था कि आपका प्रथम पुत्र चक्रवर्ती होगा। इस स्थिति में यदि मुनि कण्व का

---

she may be telling a lie, shall I become the repudiator of my wife or defiled by contact with others wife. (32)

Preceptor—(Thinking) Well, then let this be done.

The king—May your honour instruct me.

Preceptor—Let this lady just stay in our house till delivery.

The king—What for?

Preceptor—You have been addressed by way of prediction by the fortune-teller, that at the very first you will get a son who will be an emperor. If that grand son of Kaṇva be endowed with

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चेन्मुनिदौहित्रस्तल्लक्षणोपपन्नो भविष्यति, ततोऽभिनन्द्य शुद्धान्तमेनां प्रवेशयिष्यसि। विपर्यये त्वस्याः पितुः समीपगमनं स्थितमेव।

राजा—यथा गुरुभ्यो रोचते।

पुरोधाः—(उत्थाय) वत्से! इत इतोऽनुगच्छ माम्।

शकुन्तला—भअवदि वसुंधरे! देहि मे अंतरं। [भगवति वसुन्धरे! देहि मे अन्तरम्।]

(इति सह पुरोधसा गौतमीतपस्विभिश्च रुदती निष्क्रान्ता।)

(राजा शापव्यवहितस्मृतिः शकुन्तलागतमेव चिन्तयति।)

जनयिष्यसि=उत्पादयिष्यसि, इति त्वमुपदिष्टपूर्वः=पूर्वमेव सूचितः, चेत्=यदि, सः=गर्भाज्जनिष्यमाणः, मुनिदौहित्रः=कण्वदौहित्रः, तल्लक्षणोपपन्नः=चक्रवर्त्तिलक्षणैर्युक्तः, भविष्यति=सम्भविष्यति, ततः=तदा, एनां=शकुन्तलाम्, अभिनन्द्य=आदृत्य, शुद्धान्तम्=अन्तःपुरम्, प्रवेशयिष्यसि। विपर्य्यये=वैपरीत्ये, तु, अस्याः=शकुन्तलायाः, पितुः=कण्वस्य, समीपगमनं=तपोवनं प्रति प्रत्यावर्तनम्, स्थितमेव=निश्चितमेव।

राजा—यथा गुरुभ्यः=पुरोहितादिभ्यः, रोचते=तथा भवन्तः कुर्वन्तु।

पुरोधाः—(उत्थाय) वत्से=पुत्री! इत इतः=अनेनानेन मार्गेण, मामनुगच्छ=मम पश्चादागच्छत।

शकुन्तला—भगवति वसुन्धरे=धरित्री! मे=मह्यम्, अन्तरम्=अवकाशम्, भवदुदरेति भावः, देहि=प्रयच्छ।

(इति=इत्युक्त्वा, पुरोधसा, गौतमी तपस्विभिश्च सह, रुदती=क्रन्दती, निष्क्रान्ता=निर्गता।)

नाती—जन्म के समय चक्रवर्ती लक्षणों से सम्पन्न हो तो आप इनका अभिनन्दन कर अपने रनिवास में ले जाइयेगा और इसके विपरीत लक्षणों वाला पुत्र उत्पन्न होने पर इनका अपने पिता के पास लौटना तो निश्चित है ही।

राजा—जैसा गुरुजनों को उचित प्रतीत हो, वही करें।

पुरोहित—(शकुन्तला को उठाकर) पुत्री! इधर, इधर मेरे पीछे चली आओ।

शकुन्तला—भगवति वसुन्धरे! मुझे स्थान दो।

(पुरोहित, गौतमी, शार्ङ्गरव आदि के साथ शकुन्तला का प्रस्थान)

(राजा दुर्वासा के शाप से लुप्त स्मृति की दशा में भी शकुन्तला के विषय में ही सोचता है।)

---

signs of that emperor, you will, having congratulaled her, cause her to enter your harem. But the reverse happening taking her to her father is already settled.

The king—As please the elders or preceptor.

Preceptor—Child! follow me this way.

Śakuntalā—Divine earth! give me an opening.

(Exits weeping with the preceptor & the hermits)

(The king, whose remembrance is confounded (obscured) by the curse, thinking over something related with Śakuntalā herself)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) आश्चर्यमाश्चर्यम्।

राजा—(कर्णं दत्त्वा) किन्नु खलु स्यात्?

पुरोधाः—(प्रविश्य सविस्मयम्) देव! अद्भुतं खलु संवृत्तम्।

राजा—किमिव?

पुरोधाः—देव! परावृत्तेषु कण्वशिष्येषु—

सा निन्दन्ती स्वानि भाग्यानि बाला बाहूत्क्षेपं रोदितुञ्च प्रवृत्ता।

(राजा, शापेन=दुर्वाससोऽभिसम्पातेन, व्यवहिता=तिरोहिता, स्मृतिर्यस्य सः शापव्यवहित-स्मृतिः, शकुन्तलागतमेव=तद्विषयमेव, चिन्तयति=चिन्तां नाटयति।)

(नेपथ्ये=परोक्षे) आश्चर्यमाश्चर्यम्=अद्भुतम् अद्भुतम्, अतीव विचित्रं सञ्जातम्।

राजा—(कर्णं=श्रोत्रेन्द्रियम्, दत्त्वा=अवहितीकृत्य) किन्नु इति वितर्के, खल्विति प्रश्ने, स्यादिति सम्भावनायाम्।

पुरोधाः—(प्रविश्य=रङ्गे समागत्य, सविस्मयम्=साश्चर्यम्) देव!=राजन्! अद्भुतम्=विचित्रं, खलु, संवृत्तम्=सञ्जातम्।

राजा—किमिव=कीदृशम्?

पुरोधाः—देव! कण्वशिष्येषु=शार्ङ्गरवशारद्वतादिषु, परावृत्तेषु=स्वाश्रमं प्रति प्रस्थितेषु (तेषां प्रस्थानानन्तरम्)····

अन्वयः—सा बाला स्वानि भाग्यानि निन्दन्ती बाहूत्क्षेपं रोदितुं च प्रवृत्ता।

सेति। सा=पत्या बन्धुभिश्च परित्यक्तत्वादशरणा, बाला=कर्तव्यनिर्धारणेऽसमर्था बाला शकुन्तला, स्वानि=स्वकीयानि, भाग्यानि=अदृष्टानि, निन्दन्ती=अधिक्षिपन्ती सती, बाह्वोरुत्क्षेपो यस्मिन् कर्मणि तद् यथा स्यात्तथेति बाहूत्क्षेपं, रोदितुं=क्रन्दितुं च, प्रवृत्ता=आरब्धवती।

(नेपथ्य में) आश्चर्य! आश्चर्य!!

राजा—(सुनकर) क्या हुआ होगा?

पुरोहित—(भीतर आकर विस्मर के साथ) देव! बहुत विचित्र बात हुई।

राजा—कैसी?

पुरोहित—देव! कण्वशिष्यों के लौट जाने पर वह बाला जब अपने भाग्य को कोसती हुई हाथों को झकझोरती हुई रो रही थी।

(Behind the scenes) Wonder! wonder!!

The king—(Listening) What indeed may it be?

Preceptor—(Entering with surprise) your majesty! a miraculous thing has happened.

The king—What is that?

Preceptor—Your majesty! when the pupils of Kaṇva had returned:

That young girl, upbraiding her fortunes began to weep, tossing up her arms—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—ततः किम्?

पुरोधाः—

स्त्रीसंस्थानञ्चाप्सरस्तीर्थमारादुत्क्षिप्याङ्के ज्योतिरेनां तिरोऽभूत्॥ ३३॥

(सर्वे विस्मयं रूपयन्ति।)

राजा—भगवन्! प्रागेवास्माभिरेषोऽर्थः प्रत्यादिष्टः, किं मृषा तर्केणान्विष्यते? विश्राम्यतु भवान्।

राजा—ततः किम्=तदनन्तरं किं सञ्जातम्?

पुरोधाः—अन्वयः—स्त्रीसंस्थानम् अप्सरस्तीर्थं ज्योतिः एनाम् अङ्के उत्क्षिप्य आरात् तिरोऽभूत्॥ ३३॥

स्त्रियाः संस्थानम्=आकृतिरिव संस्थानं यस्य तत् स्त्रीसंस्थानम्=ललनाकारम्, अप्सर एव तीर्थं=योनिरुत्पत्तिस्थानं, यस्य अप्सरस्तीर्थम्, ज्योतिः=कश्चित् तेजःपुञ्जः, एनां=शकुन्तलाम्, अङ्के=क्रोडे, उत्क्षिप्य=निधाय, आरात्=अस्माकं समीप एव, तिरोऽभूत्=अन्तर्धात्। अत्र चकारद्वयप्रयोगात् क्रियासमुच्चयालङ्कारः (प्रवृत्तिरोदनरूपक्रियाद्वयस्य यौगपद्यं), शालिनी वृत्तम्॥ ३३॥

भावार्थः—सा पत्या बन्धुभिश्च परित्यक्तत्वादशरणा शकुन्तला स्वकीयानि भाग्यानि निन्दन्ती सती बाहूत्क्षेपपूर्वकं यदा रोदितुमारब्धवती, तदैव ललनाकारम् अप्सरस्तीर्थं कश्चित्तेजःपुञ्जः एनां अङ्के निधाय अस्मद् पार्श्वे एव तिरोऽभूदित्याश्चर्यकरं वृत्तम्॥ ३३॥

(सर्वे=सर्वे तत्रस्थाः जनाः, विस्मयम्=आश्चर्यम्, रूपयन्ति=अभिनयन्ति।)

राजा—भगवन्! प्रागेव=इतोऽन्तर्धानात् पूर्वमेव, एषोऽर्थः=शकुन्तलालक्षणो विषयः, अस्माभिः=मया, प्रत्यादिष्टः=प्रत्याख्यातः, तर्केण=सा कुत्र गता कया वा नीता इति विचारेण, मृषा=मिथ्या, किमन्विष्यते=अनुसन्धीयते? अनुसन्धानं विहाय, भवान्=त्वम्, विश्राम्यतु=विश्रामं करोतु।

राजा—तब क्या हुआ?

तभी एक स्त्री सदृश आकारवाला मानो अप्सरा की सन्तान हो (अतीव सुन्दर) एक तेजःपुंज (सहसा आकर) उसे अपनी गोद में लेकर अन्तर्धान हो गया॥ ३३॥

(सब आश्चर्य का भाव प्रकट करते हैं।)

राजा—भगवन्! मैंने पहले ही इस बात को टाल दिया है। अब व्यर्थ का तर्क करके अनुसन्धान करने से क्या लाभ? आप अब विश्राम कीजिए।

The king—Then what happened?

Preceptor—And that very moment a luster, in the form of a woman, seems to have born from an apsarā, having lifted her up from a far, disappeared. (33)

(All gesticulate surprise)

The king—Revered sir! even before, that object has already been repudiated by us. Why it is being uselessly pursued by conjecture? Let your reverence take rest.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरोधाः—विजयस्व। (इति निष्क्रान्तः।)

राजा—वेत्रवति! पर्याकुलोऽस्मि, शयनीयगृहमार्गमादेशय।

प्रतीहारी—इदो इदो देवो। [इत इतो देवः।]

राजा—(परिक्रम्य स्वगतम्)

कामं प्रत्यादिष्टां स्मरामि न परिग्रहं मुनेस्तनयाम्।
बलवत्तु दूयमानं प्रत्याययतीव मां हृदयम्॥ ३४॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

इति पञ्चमोऽङ्कः।

पुरोधाः—विजयस्व=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तस्व। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्तः=निर्गतः मञ्चादिति शेषः।)

राजा—वेत्रवति! (प्रतिहार्या नाम्ना सम्बोधनम्) पर्य्याकुलः—अतिशयेन आकुलः=उत्कण्ठायुक्तः, अस्मि=भवामि। शय्यतेऽस्मिन्निति शयनीयं तच्च गृहञ्चेति तस्य मार्गम्=अध्वानम्, आदेशय=वचनेन सूचय (ज्ञापय)।

प्रतिहारी—इत इतः=अनेनानेन मार्गेण, देवः=भवानागच्छतु।

राजा—(परिक्रम्य=कियन्तं पादक्रमं कृत्वा, स्वगतम्=आत्मगतम्)

अन्वयः—प्रत्यादिष्टां मुनेः तनयां परिग्रहं कामं न स्मरामि, तु बलवत् दूयमानं हृदयं मां प्रत्याययतीव॥ ३४॥

काममिति। प्रत्यादिष्टाम्=सम्प्रत्येव निराकृताम्, मुनेः=कण्वस्य, तनयां=दुहितां शकुन्तलाम्, परिग्रहम्=परिणीतां स्वां पत्नीम्, कामं=सम्यक्, न स्मरामि=परिग्रहत्वेन पर्यात्तं न स्मरामि। तु=किन्तु, बलवत्=अत्यर्थमेव, दूयमानम्=क्लिश्यमानम्, हृदयं=मम चेतः, मां=दुष्यन्तम्, प्रत्याययतीव=परिग्रहत्वेन विश्वासमुत्पादयतीव। अत्र स्मरणरूपकारणाभावेऽपि दूयमानत्वरूपकार्योत्पत्तेर्विभावनालङ्कारः। आर्य्या जातिः॥ ३४॥

पुरोहित—आपकी विजय हो। (प्रस्थान)

राजा—वेत्रवति! मैं बहुत परेशान हो गया हूँ, शयनगृह का मार्ग दिखाओ।

वेत्रवति—महाराज! इधर पधारें, इधर।

राजा—(घूमकर मन में)

इस त्यागी हुई मुनिकन्या का मैंने कभी पाणिग्रहण किया है, यह बात यद्यपि स्मरण

Preceptor—Be victorious. ***(Exit)***

The king—Vetravatī! I am perturbed (uneasy), show me the way to the bedroom.

Vetravati—This way, this way may your majesty proceed.

The king—***(Walking round. To himself)***

Though it is true that I do not remember the repudiated

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावार्थः—यद्यपि सम्प्रत्येव निराकृतां मुनेस्तनयां परिणीतां स्वां पत्नीमिव पर्याप्तं न स्मरामि तथापि बलवत् क्लिश्यमानं हृदयं विश्वासमुत्पादयतीव यत् परिग्रहेयमिति।

(इति=इत्युक्त्वा, सर्वे=राज्ञा सह समुपस्थिताः जनाः, निष्क्रान्ताः=प्रस्थिताः।)

इति पञ्चमोऽङ्कः।

नहीं आती तथापि मेरा अतिशय व्याकुल मन उस बाला को 'यह मेरी पाणिग्रहीत भार्या' है ऐसा विश्वास करा रहा है॥ ३४॥

(इसके बाद सबका प्रस्थान।)

पञ्चम अङ्क समाप्त।

---

sage's daughter to be my wife, but my heart which is exceedingly aching, as though convinces me. (34)

(Exeunt all)

End of act-V

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चमाङ्कांशोऽङ्कावतारः

(ततः प्रविशति नागरकश्यालः पश्चाद्बाहुबद्धं पुरुषमादाय रक्षिणौ च।)

रक्षिणौ—(पुरुषं ताडयित्वा) अले कुंभिलआ! कधेहि कहिं तुए एशे महामणि-भाशुले उक्किण्णणामाक्खले लाअकीए अंगुलीअए शमाशादिदे। [अरे कुम्भिलक! कथय कुत्र त्वया एतन्महामणिभासुरमुत्कीर्णनामाक्षरं राजकीयमङ्गुलीयकं समासादितम्।]

पुरुषः—(भीतिनाटितकेन) पशीदंतु पशीदंतु मे भावमिश्शे। ण हग्गे ईदिशश्श अकज्जश्श कालके। [प्रसीदन्तु प्रसीदन्तु मे भावमिश्राः। नाहमीदृशस्य अकार्यस्य कारकः।]

अङ्कावतारः—अङ्कः=अङ्कान्तरम्, अङ्गभावेनावतरति=आविर्भवत्यस्मिन्निति अङ्का-वतारः। तल्लक्षणं यथा—

'अङ्कान्ते सूचितः पात्रैस्तदङ्कस्याविभागतः। यत्राङ्कोऽवतरत्येषोऽङ्कावतार इति स्मृतः'॥

(ततः=तदनन्तरम्, प्रविशति=रङ्गभूमावायाति, नागर एव नागरकः=नगरस्य प्रधानरक्षकः, तस्य श्यालः=पत्नीभ्राता, पश्चात् बाहुबद्धं=पृष्ठतो बाहुद्वयं सगमय्य बद्धम्, पुरुषम्=कमपि जनम्, आदाय=गृहीत्वा, रक्षिणौ=प्रहरिणौ च।)

रक्षिणौ—(पुरुषं=व्यक्तिविशेषम्, ताडयित्वा) अरे इति नीचसम्बोधने, कुम्भिलक= चौर! कथय=ब्रूहि, कुत्र=कस्मात् स्थानात् व्यक्तिविशेषाद्वा, त्वया, एतत्=दृश्यमानम्, महामणिना= उपरिनिहितेन महार्घ्यरत्नेन, भासुरम्=उज्ज्वलं, महामणिभासुरम्, उत्कीर्णानि=उपरिक्षुण्णानि, नामाक्षराणि=राज्ञो नामवर्णाः, यस्मिन् तत् उत्कीर्णनामाक्षरम्, राज्ञ इदमिति राजकीयम्=दुष्यन्त-सम्बन्धि, अङ्गुरीयकम्=अङ्गुलिमुद्राम्, समासादितम्=प्राप्तम्?

पुरुषः—(भीतेः=भयस्य, नाटितकं=नाटनं, तेन भीतिनाटितकेन) प्रसीदन्तु प्रसीदन्तु= अनुगृह्णन्तु, मे=ममोपरि, भावाः=विद्वांसः, तेषु मिश्राः=श्रेष्ठाः, भावमिश्राः, अहम्, ईदृशस्य अकार्य-स्य=चौर्य्यस्य, कारकः=कर्त्ता, न अस्मीति।

(इसके अनन्तर राजा का साला तथा एक मनुष्य के हाथ पीछे बाँधकर दो सिपाहियों का प्रवेश)

दोनों सिपाही—(उस व्यक्ति को पीटते हुए) अरे चोर! बता, जिसमें इतना मूल्यवान् रत्न जड़ा हुआ है तथा राजा का नाम भी जिस पर अंकित है, वह अँगूठी तुझे कहाँ से मिली?

व्यक्ति—(भय का अभिनय करके) आप लोग मुझ पर दया करें। मैं ऐसा बुरा कार्य करने वाला नहीं हूँ।

(Then enter the chief of police staff and after him two guards leading a man bound)

Guards—(Beating) O Thief! tell where you obtained this royal ring, set with a precious gem and having the name of the king engraved on it?

Man—(Gesticulating fear) May your honours be pleased. I am not at all a doer of such act.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकः—किण्णु क्खु शोहणे वह्मणेशि त्ति कंदुअ लज्जा दे परिग्गहे दिण्णे? [किन्नु खलु शोभनो ब्राह्मणोऽसीति कृत्वा राज्ञा ते परिग्रहो दत्तः ?]

पुरुषः—शुणुध दाव, हग्गे क्खु शक्कावदालवाशी धीवले। [शृणुत तावत्, अहं खलु शक्रावतारवासी धीवरः।]

द्वितीयः—अले पाअच्चले! किं तुमं अह्मेहिं वशदिं जादिं च पुच्छीअसि? [अरे पाटच्चर! किं त्वमस्माभिर्वसतिं जातिञ्च पृच्छ्यसे?]

नागरकः श्यालः—सूअअ! कधेदु सव्वं अणुक्कमेण, मा अंतरा पडिबंधेअ। [सूचक! कथयतु सर्वमनुक्रमेण, मा अन्तरा प्रतिबधान।]

उभौ—जं आवुत्ते आणवेदि। लवेहि ले। [यदावुत्त आज्ञापयति। लप रे!]

एकः—किन्नु उपहासपुरस्सरप्रश्ने, शोभनः=आभिजात्यादिगुणसम्पन्नः, ब्राह्मणः=विप्रः, असि, इति कृत्वा=इति विभाव्य, राज्ञा=दुष्यन्तेन, ते=तुभ्यम्, प्रतिगृह्यत इति प्रतिग्रहः=दानपात्रमिति मत्वा अङ्गुरीयकम्, दत्तः ?

पुरुषः—तावत्=मदीयकथनपरिसमाप्त्यन्तम्, शृणुत=आकर्णयत, अहं खलु, शक्रावतारे=गङ्गातीरस्थिततदाख्यग्रामे, वसतीति सः शक्रावतारवासी, धीवरः=कैवर्त्तः।

द्वितीयः—अरे पाटच्चर=चौर! अस्माभिः, त्वं किं वसतिं=वासस्थानम्, जातिञ्च=धीवरत्वरूपाम्, चकारः समुच्चये, किं पृच्छ्यसे? इदमङ्गुरीयकं त्वया कुतो लब्धमित्यस्माभिस्त्वं पृष्टो न तु वसतिर्जातिर्वेति भावः।

नागरकः श्यालः—सूचयति=ज्ञापयति, चौरादीनिति सः, तत्सम्बुद्धौ सूचक! इति द्वितीयरक्षिणो नामधेयम्। अनुक्रमेण=आनुपूर्व्येण, सर्वं=सकलं, कथयतु एष इति शेषः, अन्तरा=वाक्यस्य मध्ये, मा प्रतिबधान=प्रतिबन्धं नोत्पादय।

उभौ—यद्=यथा, आवुत्तः=भगिनीपतिः, आज्ञापयति। रे! लप=अनुक्रमेण कथय।

एक—तब क्या तुम नैष्ठिक ब्राह्मण हो, जो राजा ने यह अंगूठी तुम्हें दान में दी है?

पुरुष—सुनिए तो सही, मैं शक्रावतार (तीर्थ) वासी धीवर हूँ।

दूसरा—अरे चोर! क्या हमने तुम्हारी जाति और निवासस्थान के सम्बन्ध में पूछा है?

नागरक-श्याल—सूचक! इसे यथाक्रम सब कहने दो, बीच में मत रोको।

दोनों—जैसी स्वामी की आज्ञा।

First (One)—Is it that this is a charity (gift) presented by the king himself, considering you to be a worthy Brāhmaṇa?

Man—Please listen me. I am a fisherman residing at Śakrāvatāra.

Second—O thief! was your caste and residence asked by us?

Śyāla—Soocaka! Let him tell all in order. Do not stop him in the middle.

Both—As your honour commands. Tell your story O' thief!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धीवरः—शो हग्गे जाल-वलिश-प्पहुदिहिं मच्छबंधणोवाएहिं कुडुंबभलणं कलेमि। [सोऽहं जाल-बडिशप्रभृतिभिर्मत्स्यबन्धनोपायैः कुटुम्बभरणं करोमि।]

नागरकः श्यालः—(विहस्य) विसुद्धो दाणिं से आजीवो। [विशुद्ध इदानीमस्य आजीवः।]

धीवरः—भट्टके! मा एव्वं भण। [भर्त्तः! मा एवं भण।]

शहजं किल जे विणिंदिदे णहु शे कम्मं विवज्जणीअए।
पशुमालणकम्मदालुणे अणुकंपामिदुके वि शोत्तिए॥ १॥
[सहजं किल यद्विनिन्दितं न तु तत् कर्म्म विवर्जनीयकम्।
पशुमारणकर्मदारुणः अनुकम्पामृदुकोऽपि श्रोत्रियः॥ १॥]

धीवरः—सोऽहम्=पूर्वदत्तपरिचयोऽहम्, जालवडिशप्रभृतिभिः—जालं=शाणसूत्रादि-निर्मितमत्स्यग्रहणसाधनविशेषः, वडिशं=मत्स्यग्रहणसाधनभूतदण्डविशेषः, तत्प्रभृतिभिः, मत्स्य-बन्धनोपायैः=मत्स्यधारणसाधनभूतैः, कुटुम्बस्य=पौष्यवर्गस्य, भरणं=पोषणं करोमि।

नागरकः श्यालः—(विहस्य=सोपहासम्) इदानीम्=सम्प्रति, अस्य=धीवरस्य, आजीवः=जीवनालम्बनोपायः, विशुद्धः=पवित्रः (विपरीतलक्षणयातीव जघन्य इति भावः।)

धीवरः—भर्त्तः! एवम्=ईदृशम्, मा भण=न कथय।

अन्वयः—विनिन्दितं यत् सहजं तत् कर्म्म न तु विवर्जनीयकम्। अनुकम्पामृदुकोऽपि श्रोत्रियः पशुमारणकर्म्म दारुणः भवति॥ १॥

सहजमिति। विनिन्दितम्=लोकेषु विगर्हितमपि, यत्=कर्म्म, सहजं=स्वाभाविकं, कुल-क्रमागतं, तत् किल कर्म्म, न तु विवर्जनीयकम्=नैव परित्याज्यं, अनुकम्पया=सर्वप्राणिषु दयया, मुदुकः=सुकुमारप्रकृतिरपि, श्रोत्रियः=वेदविद्ब्राह्मणः, पशुमारणकर्मणा=यज्ञकर्मणि पशुवध-कार्येण, दारुणः=निष्ठुरः भवति। अत्र अर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। सुन्दरी वृत्तम्॥ १॥

धीवर—मैं जाल, कटिया (वंसी) आदि साधनों से मछली फँसाने का धन्धा (व्यवसाय) करके अपने कुटुम्ब को पालता हूँ।

राजा का साला—(हँसकर) जीविका का साधन तो बहुत शुद्ध है।

धीवर—स्वामी! ऐसा न कहें। क्योंकि—

निन्दित होने पर व्यक्ति को कुलपरम्परागत कर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिए। दयालु होने पर भी श्रोत्रिय ब्राह्मण यज्ञ में दारुण पशुबलिरूप कर्म करते ही हैं (सहज कर्म होने से उससे विरत नहीं होते)॥ १॥

Fisherman—I effect the maintenance of my family by nets, hooks and other contrivances (deceitful practice) of catching fish.

Śyāla—(Laughing) A holy profession indeed.

Fisherman—Master! say not so.

Whatever censured duty one is born to, should verily not be abandoned, they say. The learned Brāhmaṇa, though kind hearted, is merciless in the business of killing the sacrificial animal. (1)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नागरकः श्यालः—तदो तदो ? [ततस्ततः ?]

धीवरः—एकश्शिं दिअशे मए लोहिदमच्छके पाविदे, तदो खंडशो कप्पिदे। जाव तश्श उदलब्भंतले पेक्खामि, दाव एशे महालअणभाशुले अंगुलीअए पेक्खिदे, पच्चा इध विक्क अत्थं दंशअंते ज्जेव गहिंदे भावमिश्शेहिं। एत्तिके दाव एदश्श आगमे। अध मं मालेध कुट्टेध वा। [एकस्मिन् दिवसे मया रोहितमत्स्यकः प्राप्तः, ततः खण्डशः कल्पितः। यावत् तस्य उदराभ्यन्तरे प्रेक्षे, तावदेतन्महारत्नभासुरम् अङ्गुरीयकं प्रेक्षितम्, पश्चादिह विक्रयार्थं दर्शयन्नेव गृहीतो भावमिश्रैः। एतावान् तावदेतस्य आगमः। अथ मां मारयत कुट्टयत वा।]

नागरकः श्यालः—(अङ्गुरीयकमाघ्राय) जालुअ! मच्छोदरलब्भंतलगदोत्ति णत्थि संदेहो, जदो अअं आमिसगंधो वाअदि। आगमो दाणिं एदश्श एसो विमरिसिदव्वो ता एव

भावार्थः—तथा दयाशीलोऽपि श्रोत्रियो हिंसात्मकतया बौद्धादिभिर्विनिन्दितमपि पशुमारणकर्म्म यज्ञादौ कुलक्रमागतधर्म्ममिव मत्वा समाचरति तथा अहमपि निन्दितमपि मत्स्या-धारणं कर्म्म समाचरामि। अत एव नाहं निन्दापात्र इति भावः ॥ १ ॥

नागरकः श्यालः—ततस्ततः=तदनन्तरं कथय।

धीवरः—एकस्मिन् दिवसे, मया=मत्स्यजीविना, रोहितमत्स्यकः=मत्स्यविशेषः, प्राप्तः, ततः=प्राप्त्यनन्तरं, खण्डशः=खण्डं, खण्डम्, कल्पितः=कृतः, (खण्डं खण्डं कृत्वा) यावत्=यदा, तस्य=मत्स्यस्य, उदराभ्यन्तरे=उदरान्तरभागे, प्रेक्षे=दृष्टिं निक्षिपामि, तावत्=तदैव, एतत्= भवदीयकरे विद्यमानम्, महारत्नभासुरं=महार्घमणिसमुज्ज्वलम्, अङ्गुरीयकम्=करमुद्रिकाम्, प्रेक्षितम्= अवलोकितम्, पश्चात्, इह=अत्रापणे, विक्रयार्थं, दर्शयन् एव, भावमिश्रैः=माननीयैः, गृहीतः=धृतः। एतावान्=एतावत् परिमितः, एतस्य=अङ्गुरीयकस्य, आगमः=प्राप्तिवृत्तान्तः। अथ= एतच्छ्रवणानन्तरम्, मारयत=ताडयत, कुट्टयत=चूर्णयत वा।

नागरकः श्यालः—(अङ्गुरीयकमाघ्राय) जालुक=प्रथमरक्षिणो नाम तत्सम्बोधनम्,

---

राजा का साला—तब आगे क्या हुआ ? (आगे कहो)

धीवर—एक दिन मुझे (जाल डालने पर) रोहित मत्स्य प्राप्त हुआ। तब मैंने उसके टुकड़े किये। टुकड़े करने पर जब मैंने उसके पेट में झाँककर देखा तो यह रत्नजटित अंगूठी दिखायी पड़ी। इसके पश्चात् उसे बेचने के लिए दिखाते समय मुझे आप लोगों ने पकड़ लिया। इतना ही इसे पाने का वृत्तान्त है। अब आप मुझे मारें या कूटें।

राजा का साला—(अंगूठी को सूंघकर) जालुक! यह अंगूठी मत्स्य के पेट में थी

Śyāla—Then (what happened).

Fisherman—One day I got a fish by name Rohita. When I cut it into pieces and looked inside of the belly of the fish, then this ring was seen sparkling due to preceious jewel. Afterwards, while showing it for sale, I was arrested by your honours. Now beat me or release me. This is the story of its aquisition.

Śyāla—Jāluka! the ring was in the belly of fish, there is no

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाअउलं ज्जेव गच्छह्म। [जालुक! मत्स्योदराभ्यन्तरगतमिति नास्ति सन्देहः, यतः अयमामिषगन्धो वाति। आगम इदानीमेतस्यैष विमर्ष्टव्यः, तदेतं राजकुलमेव गच्छामः।]

रक्षिणौ—(धीवरं प्रति) गच्छ ले गंठिच्छेदअ! गच्छ। [गच्छ रे ग्रन्थिच्छेदक! गच्छ।] (इति परिक्रामन्ति)

नागरकः श्यालः—सूअअ! इध गोउलदुआले अप्पमत्ता पडिपालेध मं, जाव लाअउलं पवेशिअ णिक्कमामि। [सूचक! इह गोपुरद्वारे अप्रमत्तौ प्रतिपालयत माम्, यावत् राजकुलं प्रविश्य निष्क्रमामि।]

उभौ—पविशदु आवुत्तो शामिप्पशादत्थं। [प्रविशतु आवुत्तः स्वामिप्रसादार्थम्।]

(नागरकः श्यालः परिक्रम्य निष्क्रान्तः)

मत्स्यस्य=रोहितस्य, उदराभ्यन्तरे=जठरकुहरे, गतम् इदमाङ्गुरीयकम्, इति=अस्मिन् विषये, नास्ति सन्देहः, यतः=यस्मात्, अयमामिषगन्धः=मत्स्यमांसगन्धः, वाति=घ्राणविषयीभवति। एतस्य= अङ्गुरीयकस्य, एषः=धीवरोक्तः, आगमः=आगमनवृत्तान्तः, इदानीम्=सम्प्रति, विमर्ष्टव्यः= विवेक्तव्यः, तत्=तस्मात्, एत=आगच्छत, राजकुलम्=राजभवनम् एव गच्छामः।

रक्षिणौ—(धीवरं प्रति=धीवरमुद्दिश्य) गच्छ=अस्माभिःसह राजकुलं चल, ग्रन्थिच्छेदक—ग्रन्थिं छिनत्ति=कृन्ततीति ग्रन्थिच्छेदकः=चौरः, तत्सम्बोधने, रे इति तुच्छसम्बोधने, रे ग्रन्थिच्छेदक=रे चोर! (इति=इत्युक्त्वा, परिक्रामन्ति=राजकुलमुद्दिश्य गमनमभिनयन्ति।)

नागरकःश्यालः—सूचक! इह=अत्र, गोपुरद्वारे=मुख्यप्रवेशद्वारे, अप्रमत्तौ=धीवरं प्रति सावधानौ सन्तौ, प्रतिपालयतं=युवां प्रतीक्षेथाम्। यावत्=यावत्कालपर्यन्तम्, (अहम्) राजकुलम्= राजभवनं, प्रविश्य=गत्वा, निष्क्रमामि=प्रत्यागच्छामि।

उभौ—प्रविशतु, आवुत्तः=भगिनीपतिः, स्वामिनः=राज्ञः, प्रसादार्थं=चौरग्रहणव्यापारे प्रसन्नतालाभार्थम्, स्वामिप्रसादार्थम्।

इसमें कोई सन्देह नहीं, क्योंकि अब भी इसमें से मत्स्यमांस की गन्ध आ रही है। अब इसके प्राप्त होने की जाँच करनी होगी, अतः आओ राजदरबार में चलें।

दोनों सिपाही—(धीवर से) चले रे! गिरहकट चल। (सब चलते हैं)

राजा का साला—सूचक! तुम दोनों यहीं मुख्य द्वार पर सावधानीपूर्वक ठहर कर मेरी प्रतीक्षा करो। जब तक मैं राजभवन में जाकर लौटता हूँ।

दोनों सिपाही—आप महाराज को प्रसन्न करने के लिए भीतर जायें।

---

doudt. Stinking of raw flesh clear this doubt. Now his aquisition of the ring must be thought over. Let us go to the palace itself.

Both—(To fisherman) Proceed, O' cutpurse (pickpocket, thief).

Śyāla—Soocaka, watch this man carefully at the main gate, till, having reported to his majesty and having received his command I come out.

Both—Let your honour enter to please the master.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूचकः—जालुअ! चिलाअदि क्खु आवुत्ते। [जालुक! चिरयति खल्वावुत्तः।]

जालुकः—णं अवशलोवशप्पणीआ लआवो होंति। [ननु अवसरोपसर्पणीया राजानो भवन्ति।]

सूचकः—फुल्लंति मे अग्गहत्था इमं गंथिच्छेदअं वावादिदुं। [स्फुरतो मे अग्रहस्तौ इमं ग्रन्थिच्छेदकं व्यापादयितुम्।

धीवरः—णालिहदि भावे अआलणमालके भविदुं। [नार्हति भावः अकारणमारको भवितुम्।]

जालुकः—(विलोक्य) एशे अह्माणं इश्शले पत्ते गेह्णिअ लाअशाशणं आअच्छदि। शंपदं एशे शउलाणं मुहं पेक्खदु, अहवा गिद्धशिआलाणं वली होदु। [एषः अस्माकमीश्वरः

(नागरकः श्यालः=प्रधानारक्षी, परिक्रम्य=राजकुलप्रवेशमभिनीय, निष्क्रान्तः=निर्गतः।)

सूचकः—जालुक! आवुत्तः=भगिनीपतिः, चिरयति=विलम्बते, खलु इति प्रश्ने।

जालुकः—ननुरनुप्रश्ने, अवसरोपसर्पणीयाः=अवकाशेन उपगन्तव्याः, उपगम्य निवेदनीया इत्यर्थः, राजानः भवन्ति। (प्रायेण राज्ञां नानाकार्य्यव्यासक्ततया तैः सहालापः सर्वदा न सुकर इति भावः।)

सूचकः—मे=मम, अग्रहस्तौ=हस्तयोरग्रभागौ (करतलौ), स्फुरतः=स्पन्देते, इमं=पुरतःस्थितं, ग्रन्थिच्छेदकं=चौरं, व्यापादयितुम्=मारयितुम्।

धीवरः—भावः=भवान्, अकारणमारकः=अनिमित्तकघातुकः (विना दोषं हन्ता), भवितुम्=सम्भवितुम्, नार्हति=न योग्योऽसि।

जालुकः—(विलोक्य=दृष्ट्वा) एषः=पुरो दृश्यमानः, अस्माकम्, ईश्वरः=प्रभुः, राजशा-

---

(राजा का साला घूमकर बाहर निकल जाता है।)

सूचक—जालुक! स्वामी देर कर रहे हैं।

जालुक—अवसर पाकर ही राजा के पास पहुँचा जाया करता है।

सूचक—इस गिरहकट का वध करने के लिए मेरे हाथ फड़क रहे हैं।

धीवर—आपके लिए अकारण वधिक बनना उचित नहीं है।

जालुक—(देखकर) हमारे स्वामी पत्र में महाराज की आज्ञा लिये इधर ही आ रहे

(The brother-in-law of the king exits after roaming about)

Sūcaka—Jāluka! his honour is indeed delaying.

Jāluka—Why! kings have to be approached at their leisure or at the proper time only.

Sūcaka—My hands are throbbing to cut the head of this fisherman.

Fisherman—It behoves not your honour to be a slaughterer without reason.

Jāluka—Here our master, letter in hand, having received the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पत्रे गृहीत्वा राजशासनमागच्छति। साम्प्रतमेषः स्वकुल्यानां मुखं प्रेक्षताम्, अथवा गृध्रशृगालानां बलिर्भवतु।]

नागरकः श्यालः—(प्रविश्य) सिग्घं सिग्घं एदं ···· ![शीघ्रं शीघ्रमेतम्···।]
(इत्यर्द्धोक्ते)

धीवरः—हा हदोह्मि। [हा हतोऽस्मि।] (इति विषादं नाटयति।)

नागरकः श्यालः—मुंचध जालोवजीविणं। उववण्णे से अंगुलिअस्स आगमे, अह्म शामिणा जाव कधिदं। [मुञ्चतं जालोपजीविनम्। उपपन्नः अस्य अङ्गुलीयकस्य आगमः, अस्मत्स्वामिना यावत् कथितम्।]

सनम्=राजाज्ञाम्, पत्रे गृहीत्वा=पत्रे लिपिबद्धं कृत्वा, आगच्छति=समायाति। साम्प्रतम्=इदानीम्, एषः=धीवरः, स्वकुल्यानां=स्वकीयपुत्रपौत्रादीनाम्, मुखम्=आननम्, प्रेक्षतां=पश्यतु (मुक्तो भवतु), अथवा गृध्रशृगालानाम्=आमिषभोजीनाम्, बलिः=भक्ष्यः, भवतु=दण्डेन व्यापादनादिति भावः।

नागरकः श्यालः—(प्रविश्य) शीघ्रं शीघ्रमेतम्=शीघ्रमेतं मुञ्चतं जालोपजीविनम्, इति पूर्णवाक्यस्य 'शीघ्रं शीघ्रमेतम्' इत्यर्द्धांशे कथिते···

धीवरः—हा इति खेदे, हतोऽस्मि=व्यापादितोऽस्मि। (इति=इत्युक्त्वा, विषादं=विषण्णताम्, नाटयति=अभिनयति।)

नागरकः श्यालः—मुञ्चतं=त्यजतम्, जालोपजीविनम्=धीवरम्, अस्य=प्राप्तस्य, अङ्गुलीयकस्य=राजमुद्रिकायाः, यावत्=यतः, आगमः=प्राप्तिवृत्तान्तः, उपपन्नः=युक्तियुक्तः (सत्यमेवोक्तमनेनेति भावः), इति अस्मत्स्वामिना=राज्ञा दुष्यन्तेन, कथितम्।

हैं। अब यह या तो (मुक्त होकर) अपने परिवारिकों का मुख देखेगा या गिद्ध और सियारों का आहार (बलि) बनेगा।

राजा का साला—(प्रवेश करके) शीघ्र, बहुत शीघ्र इसे····(आधा वाक्य कहकर)

धीवर—हाय! मैं मारा गया। (ऐसा कहकर विषाद का अभिनय करता है।)

राजा का साला—इस धीवर को छोड़ दो। अँगूठी प्राप्त होने की बात इसने ठीक-ठीक बतायी है। ऐसा महाराज कहते हैं।

---

royal command, is seen in this direction. Now, either this will be able to see the faces of his kinsman or will be an oblation for vulture, jackal etc.

Śyāla—*(Entering)* Let this man be........*(Saying half sentence)*

Fisherman—Oh, I am killed. *(Gesticulate of sorrow)*

Śyāla—Let this fisherman be released. The finding of the royal ring (by him) is consistent compatible.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूचकः—जहा आणवेदि आवुत्ते। जमवशदिं गदुअ पडिणिउत्ते क्खु एशे। [यथा आज्ञापयति आवुत्तः। यमवसतिं गत्वा प्रतिनिवृत्तः खल्वेषः।]

(इति धीवरं बन्धनान्मोचयति)

धीवरः—भट्टके! शंपदं तुह कीलके मे जीविदे। [भर्त्तः! साम्प्रतं तव क्रीतकं मे जीवितम्।] (इति पादयोः पतति)

नागरकः श्यालः—उट्ठेहि एस भट्टिणा अंगुलीअ-मुल्लसंमिदे पारिदोसिए दे प्पसादीकिदे, ता गेह्न एदं। [उत्तिष्ठ, एतत् भर्त्रा अङ्गुरीयमूल्यसम्मितं पारितोषिकं ते प्रसादीकृतं; तत् गृहाण इदम्।] (इति धीवराय कटकं ददाति)

धीवरः—(सहर्षं सप्रणामञ्च प्रतिगृह्य) अणुग्गहीदोह्मि। [अनुगृहीतोऽस्मि।]

सूचकः—यथा आवुत्त आज्ञापयति तथा कुर्म्मः। यमवसतिं=यमसदनं, गत्वा=प्राप्य, एषः=धीवरः, प्रतिनिवृत्तः=सौभाग्यात् प्रत्यायतः खलु।

(इति=एवमादिष्टः सन्, धीवरं=मत्स्यजीविनं, बन्धनात्=पाशात्, मोचयति=मुञ्चति।)

धीवरः—भर्त्तः=स्वामिन्! साम्प्रतम्=इदानीम्, मे=मम, जीवितम्=जीवनम्, तव=त्वया, क्रीतकम्=क्रयीकृतम् (तव दययैवाद्य मम प्राणसंरक्षणं जातमिति भावः)। (इति=इत्युक्त्वा, पादयोः=चरणयोः, पतति।)

नागरकः श्यालः—उत्तिष्ठ, एतत्=धनादिकं दर्शयन्, भर्त्रा=राज्ञा दुष्यन्तेन, अङ्गुरीय-मूल्यसम्मितम्=अङ्गुरीयकमूल्यपरिमितमूल्यकम्, पारितोषिकं=पुरस्कारः, ते=तुभ्यम्, प्रसादी-कृतम्=प्रसन्नतया दत्तम्, तत्=तस्मात्, इदम्=धनम्, गृहाण=स्वीकुरु। (इति=इत्युक्त्वा, धीवराय=जालोपजीविनम, कटकं=वलयम्, ददाति=प्रयच्छति।)

धीवरः—(सहर्षं=प्रसन्नतापूर्वकम्, सप्रणामञ्च=नमस्कारपूर्वकञ्च, प्रतिगृह्य=गृहीत्वा) अनुगृहीतोऽस्मि=कृतानुग्रहोऽस्मि।

सूचक—जैसी स्वामी की आज्ञा। निश्चय ही यह यमराज के घर जाकर लौट आया है। (ऐसा कहकर धीवर को बन्धन-मुक्त कर देता है।)

धीवर—स्वामी! अब आपने मेरा जीवन खरीद लिया है (जीवनदान दिया है)। (यह कहकर चरणों में गिर पड़ता है।)

राजा का साला—उठो, महाराज ने अँगूठी की कीमत का यह पुरस्कार दिया है, इसे स्वीकार करो। (यह कहकर धीवर को कड़ा देता है।)

धीवर—(प्रसन्नतापूर्वक तथा प्रणामपूर्वक लेकर) मैं अनुगृहीत हुआ।

Sūcaka—As your honour says. Certainly this one entering Yama's abode he has returned. *(Makes the man free from boundage)*

Fisherman—Master! you have bought my life. *(Bows at his feet)*

Śyāla—Arise, here his majesty has given this prize equal to the ring, accept it. *(Gives a bangle to the fisherman)*

Fisherman—*(Accepting with a bow, happily)* Master! I am favoured.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जालुकः—एशे क्खु लण्णा तधा अणुग्गहीदे, जधा शुलादो ओदालिअ इत्थिक्खंधे शमालोविदे। [एष खलु राज्ञा तथा अनुगृहीतः, यथा शूलादवतार्य्य हस्तिस्कन्धे समारोपितः।]

सूचकः—आवुत्ते! पालितोशिएण जाणामि महालिहलदणेण अंगुलीअएण शामिणो बहुमदेण होदव्वं। [आवुत्त! पारितोषिकेण जानामि महार्हरत्नेन अङ्गुरीयकेण स्वामिनो बहुमतेन भवितव्यम्।]

नागरकः श्यालः—ण तस्सिं भट्टिणो महालिहलदणं त्ति कदुअ परिदोसो। एत्ति उण तक्केमि। [न तस्मिन् भर्तुर्महार्हरत्नमिति कृत्वा परितोषः। एतत् पुनस्तर्कयामि।]

उभौ—किं उण? [किं पुनः?]

जालुकः—एषः=धीवरः, राज्ञा=दुष्यन्तेन, तथा=तेन रूपेण (पुरस्कारद्वारा), अनुगृहीतः=अनुकम्पितः, यथा शूलात्=मारणसाधनभूतकीलकात्, अवतार्य, हस्तिस्कन्धे=गजोपरि, समारोपितः=संस्थापितः (वध्यो राजसम्मितं पारितोषिकं ग्राहितः।)

सूचकः—आवुत्त=भर्तः! पारितोषिकेण=धीवराय पुरस्कारदानेन, जानामि=निश्चिनोमि, महार्हरत्नेन=बहुमूल्यमणिसद्भावेन हेतुना, अङ्गुरीयकेण=अङ्गुलिमुद्रया, स्वामिनः=भर्तुर्दुष्यन्तस्य, बहुमतेन=अतिप्रियेण, भवितव्यम्।

नागरकःश्यालः—तस्मिन्=अङ्गुरीयके, भर्तुः=स्वामिनः, महार्हरत्नम्=बहुमूल्यरत्नम्, इति कृत्वा=इत्यस्माद्धेतोः, न परितोषः=नैव सन्तोषः, एतत्=वक्ष्यमाणम्, पुनः=भूयः, तर्कयामि=सम्भावयामि।

उभौ—किं पुनः=तत्पुनः किम्?

जालुक—महाराज ने इस पर कैसी कृपा की, मानो सूली से उतार कर हाथी के कन्धे पर बिठा दिया।

सूचक—श्रीमन्! पारितोषिक-प्रदान से तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह बहुमूल्य रत्न से मण्डित अंगूठी महाराज को विशेष प्रिय है।

राजा का साला—उस अंगूठी में बहुमूल्य रत्न है, इसलिए महाराज को सन्तोष नहीं है अपितु मेरा विचार है कि—

दोनों—फिर क्या?

Jāluka—This is indeed a favour of his majesty that being made to descend from the stake, he has been installed on the neck of an elephant.

Sūcaka—Your honour! the reward proclaims that the ring, with its gem of great price, must have been highly valued by his majesty.

Śyāla—Not that the gem of great price there on was highly valued by his majesty, I guess....

Both—Than what?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नागरकः श्यालः—तस्स दंसणेण भट्टिणा को वि अहिमदो जनो सुमरिदो त्ति, जदो मुहूत्तअं पइदिगंभीरो वि पज्जुसुअमणा आसी। [**तस्य दर्शनेन भर्त्रा कोऽप्यभिमतो जनः स्मृत इति, यतो मुहूर्त्तं प्रकृतिगम्भीरोऽपि पर्युत्सुकमना आसीत्।**]

सूचकः—दोसिदे शोइदे अ दाणिं भट्टा अवुत्तेण। [**तोषितः शोचितश्चेदानीं भर्त्ता आवुत्तेन।**]

जालुकः—णं भणेमि इमश्श मच्छशत्तुणो किदे। [**ननु भणामि अस्य मत्स्यशत्रोः कृते।**] (इति धीवरमसूयया पश्यति।)

धीवरः—भट्टालक इदो अद्धं तुह्माणंपि शुलामुल्लं होदु। [**भट्टारक! इतः अर्द्धं युष्माकमपि सुरामूल्यं भवतु।**]

नागरकः श्यालः—तस्य=अङ्गुरीयकस्य, दर्शनेन=अवलोकनेन, भर्त्रा=राज्ञा दुष्यन्तेन, कोऽपि, अभिमतः=अभीष्टः, जनः=व्यक्तिविशेषः, स्मृतः=ध्यातः (मनसि कृतः), इतीतिना तर्कयामि, यतः=यस्मात्, प्रकृतिगम्भीरोऽपि—प्रकृत्या=स्वभावेन, गम्भीरः=धीरोऽपि राजा, मुहूर्त्तम्=क्षणमात्रम्, पर्य्युत्सुकम्=उत्कण्ठितं, मनो यस्य सः पर्य्युत्सुकमनाः, आसीत् (तस्य तदानीमभिमतजनस्मरणं जातम्)।

सूचकः—आवुत्तेन=भगिनीपतिना भवता, भर्त्ता=राजा दुष्यन्तः, इदानीम्=साम्प्रतम्, तोषितः=प्रीणितः, शोचितः=शोकं प्रापितश्च।

जालुकः—ननु इति सम्बोधने, अस्य=पुरःस्थितस्य, मत्स्यशत्रोः=मीनविनाशकस्य धीवरस्य, कृते=निमित्ते, भणामि=कथयामि। (इति=इत्युक्त्वा, असूयया=भ्रूकुटीविकारपूर्वकं दोषारोपेण, धीवरम्=जालोपजीविनम्, पश्यति।)

राजा का साला—उस अंगूठी को देखने से महाराज को कोई प्रियजन स्मरण हो आया और इसीलिए स्वभाव से गम्भीर होते हुए भी वे कुछ देर के लिए विचलित (उत्कण्ठित) हो उठे थे।

सूचक—तो आपने महाराज को प्रसन्न भी किया और चिन्तित भी।

जालुक—मैं तो कहता हूँ कि मत्स्यशत्रु के कारण (महाराज की ऐसी दशा हुई)।

(यह कहकर धीवर को असूया से देखता है।)

धीवर—मान्यवर! इस पुरस्कार-राशि का (कटक मूल्य का) आधा भाग आप लोगों की शराब के लिए होना चाहिए।

Śyāla—(I guess) Its sight reminded his majesty of some beloved person. Though naturally serious, his majesty was perturbed for a moment.

Sūcaka—(I feel through this) You have pleased his majesty and made him gloomy too.

Jāluka—I say, this enemy of the fishes is the cause of the said condition of his majesty.

Fisherman—Master! let half from this be the price of wine to you all.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जालुकः—धीवल! महत्तले शंपदं अह्माणं पिअ वअश्शके शंवुतेशि, कादंबली-शक्खिके क्खु पढमं शोहिदे इच्छीअदि। ता एहि, शुंडिआलअं ज्जेव गच्छह्म। [धीवर! महत्तरः साम्प्रतमस्माकं प्रियवयस्यः संवृतोऽसि। कादम्बरीसाक्षिकं खलु प्रथमसौहृदमिष्यते, तदेहि, शौण्डिकालयमेव गच्छामः।]

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति अङ्कावतारः।

धीवरः—भट्टारक=स्वामिन्! इतः=अस्मात् पारितोषिकात्, अर्द्धम्, युष्माकमपि, सुरामूल्यम्=मद्यक्रयणार्हम्, भवतु (युष्मभ्यमपि सुरापानार्थम् इतोऽर्द्धं दातुमिच्छामि इति भावः)।

जालुंकः—धीवर! साम्प्रतम्=इदानीम्, महत्तरः=प्रधानतरः, अस्माकम्, प्रियवयस्यः=प्रियसखा, संवृतोऽसि=जातोऽसि। प्रथमसौहृदं=प्रथमसौहार्दम्, कादम्बरी=सुरा, साक्षिणी यस्य तत्तादृशम्, खलु इष्यते लोकैः, तद्=तस्मात्, एहि=आगच्छत, शौण्डिकालयम्=मदिराकारगृहं, मधुपानशालाम् एव, गच्छामः=व्रजामः।

(इति=एवमुक्त्वा, सर्वे=मञ्चोपरि उपस्थिताः जनाः, निष्क्रान्ताः=निर्गताः।)

(अत्राङ्गुरीयकलाभप्रदर्शनार्थो धीवरवृत्तान्तः। किञ्च अङ्गुरीयकदर्शनेन दुर्वासः-शापनिवृत्त्या राज्ञः शकुन्तलास्मरणम्, तेन च विरहाक्रान्ततया पर्य्याकुलचित्तत्वमपि सूचितम्।)

इति पञ्चमाङ्कांशोऽङ्कावतारः।

जालुक—धीवर! इस समय तुम हमारे सर्वश्रेष्ठ मित्र हो गये हो। मद्य को आरम्भिक मित्रता का साक्षी माना जाता है, अतः आओ कलवार के घर (अथवा दुकान) चलें।

(सबका प्रस्थान)

पञ्चमाङ्क का अंशभूत अङ्कावतार समाप्त।

Jāluka—Fisherman! you have now become our dearest friend. With liquor as its witness our first friendship is desired. So let us go to the liqucor-sellers shop itself.

(Exeunt omnes)

End of the Interlude.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठोऽङ्कः

(ततः प्रविशत्याकाशयानेन मिश्रकेशी)

मिश्रकेशी—णिव्वत्तिदं मए पज्जाअणिव्वत्तणिज्जं अच्छरात्तित्थसंदिट्टं ता जाव साहुजणस्स अहिसेअकालो भवे दाव संपदं इमस्स राएसिणो वुत्तंतं पच्चक्खीकरिस्सं। णं मेणआसंबंधेन सरीरभूदा दाणिं मे सउंतला, तए अ दुहिदुणिमित्तं संदिट्टपुव्वह्मि। [**निर्वर्त्तितं मया पर्यायनिर्वर्त्तनीयमप्सरस्तीर्थसन्दिष्टं तद्यावत् साधुजनस्याभिषेककालो भवेत्, तावत् साम्प्रतमस्य राजर्षेर्वृत्तान्तं प्रत्यक्षीकरिष्यामि। ननु मेनकासम्बन्धेन शरीरभूतेदानीं मे शकुन्तला, तया च दुहितृनिमित्तं सन्दिष्टपूर्वास्मि।**]

(ततः=तदनन्तरम्, आकाशयानेन=आकाशगामिना यात्रासाधनेन, वायुयानेन, मिश्रकेशी= एतन्नाम्नी अप्सरा, प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

मिश्रकेशी—मया=मिश्रकेश्या, पर्य्यायेण=क्रमेण, निर्वर्त्तनीयम्=समापनीयम्, पर्य्याय-निवर्तनीयम्, अप्सरस्तीर्थैः=अप्सरयोनिभिर्मेनकादिभिः, सन्दिष्टम्=उक्तम् (कुबेरस्य परिचर्य्यात्मकं कर्म्म ज्ञातमित्यर्थः), निवर्तितम्=समापितम्, तत्=तस्मात्, यावत्=यावत्कालपर्य्यन्तम्, साधु-जनस्य=कुबेरस्य, अभिषेककालः=स्नानसमयो भवेत्, तत्=तस्मात्, यावत्कालपर्यन्तम्, साम्प्रतम्= अधुना, अस्य राजर्षेः=दुष्यन्तस्य, वृत्तान्तम्=समाचारं वृत्तं वा, प्रत्यक्षीकरिष्यामि=लोचनगोचरी-करिष्यामि (साधुजनस्याभिषेककालोपस्थितौ तु मयापि तत्रैव गन्तव्यमिति भावः)। ननु=यस्मात् कारणात्, मेनकासम्बन्धेन=मेनकाकन्यात्वेन हेतुना, इदानीम्=अधुना, शकुन्तला मे शरीरभूता= शरीरवत् प्रेमास्पदीभूता, तया=मेनकया च, दुहितृनिमित्तं—दुहितुः=कन्यायाः शकुन्तलायाः, निमित्तम्=अर्थः, (शकुन्तलासमाश्वसनाय) पूर्वं सन्दिष्टा इति सन्दिष्टपूर्वा=पूर्वमादिष्टा अस्मि। (प्रत्याख्यानात् परं शकुन्तलानिमित्तं दुष्यन्तः किं करोति वा न वेति समाचारपरिज्ञानायोक्तपूर्वा अस्मि।)

(इसके पश्चात् व्योमयान से मिश्रकेशी का प्रवेश)

मिश्रकेशी—उस अप्सरातीर्थ का सम्पादनीय कार्य मैंने सम्पादित कर लिया है। इधर जब तक कुबेर (साधुओं) के स्नान का समय होता है तब तक मैं इस राजा की दशा देखूँगी। मेनका के सम्बन्ध से शकुन्तला मेरे लिए अपने अंग के समान प्रिय हो गई है और मेनका ने भी मुझे पहले ही अपनी कन्या के विषय में सचेत कर दिया था।

(Then enter in an aerial car (aeroplane) a nymph called Miśrakeśī)

Miśrakeśī—Attendence at Apsarāteertha, which has to be kept by us in rotation, so long as it is bathing time for sages, has been observed by me. Now therefore I shall see with my own eyes news of this royal sage. Through my relation with Menakā, Śakuntalā has become my very body. And by her, for the sake of her daughter I have already been asked to do something.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(समन्तादवलोक्य) किण्णु क्खु उवत्थिदुच्छवेवि दिअहे णिरुच्छवारंभं विअ एदं राअउलं दीसदि। अत्थि मे विहवो सव्वं पणिधाणेण जाणिदुं, किंतु सहीए मए आदरो माणइदव्वो। भोदु, इमाणं ज्जेव उज्जाणबालआणं पास्सपरिवत्तिणी भविअ तिरक्करिणीए विज्जाए पच्छण्णा उवलहिस्सं। **[किन्नु खलु उपस्थितोत्सवेऽपि दिवसे निरुत्सवारम्भमिव इदं राजकुलं दृश्यते। अस्ति मे विभवः सर्वं प्रणिधानेन ज्ञातुम्। किन्तु सख्या मया आदरो मानयितव्यः। भवतु, एषामेवोद्यानपालकानां पार्श्वपरिवर्त्तिनी भूत्वा तिरस्करिण्या विद्यया प्रच्छन्ना उपलप्स्ये।]** (इति नाट्येनावतीर्य स्थिता)

(ततः प्रविशति चूताङ्कुरमालोकयन्ती चेटी तत्पृष्ठे अपरा च)

(समन्ताद्=चतुर्दिक्षु, अवलोक्य=दृष्ट्वा) किन्नु इति वितर्के, खल्विति प्रश्ने, उपस्थितोत्सवेऽपि—उपस्थितः=सन्निहितः, उत्सवः=वसन्तोत्सवः, यत्र तस्मिन् उपस्थितोत्सवे अपि, दिवसे=माधवीयदिवसे, निरुत्सवारम्भम्—निर्=न विद्यते, उत्सवारम्भः=उत्सवप्रवृत्तिः, यस्मिन् तत् निरुत्सवारम्भम्, इव, इदम्=दृश्यमानम्, राजकुलम्=राजसदनम्, दृश्यते। सर्वं=वृत्तान्तम्, प्रणिधानेन=समाधिना (ध्यानेन वा), ज्ञातुम्=अवगन्तुम्, मे=मम, विभवः=सामर्थ्यमस्ति। किन्तु=तथापि, सख्याः=शकुन्तलायाः सम्बन्धे, आदरः=आदरेण कृतोऽनुरोधः, मया, मानयितव्यः=सम्मानेन रक्षणीयः, भवतु=तदेव भवतु, एषामेव, उद्यानपालकानाम्=उपवन-रक्षकानाम्, पार्श्वपरिवर्त्तिनी=निकटवर्त्तिनी, भूत्वा, तिरस्करिण्या=अदृश्यकारिण्या, विद्यया=मन्त्रेण, प्रच्छन्ना=अदृश्यदेहा सती, उपलप्स्ये=राजवृत्तान्तं ज्ञास्यामि। (इति=इत्युक्त्वा, नाट्येन= अभिनयेन, अवतीर्य=गगनतलादवतरणं कृत्वा, स्थिता= तिष्ठति।)

(ततः=तदनन्तरम्, चूताङ्कुरं=रसालमुकुलम्, आलोकयन्ती=पश्यन्ती, चेटी=काचित् राज्ञो गृहस्थिता दासी, तस्याः=उक्तायाश्चेट्याः, पृष्ठे=पश्चाद्भागे, अपरा=अन्या चेटी दासी च, प्रविशति।)

(चारों ओर देखकर) उत्सव का दिन उपस्थित होने पर भी यह राजभवन उत्सव शून्य-सा दिखायी दे रहा है। यद्यपि मैं ध्यान द्वारा सब कुछ जान लेने का सामर्थ्य रखती हूँ तथापि सखी के उस आदरयुक्त अनुरोध की भी तो रक्षा मुझे करनी चाहिए। अस्तु, इन उद्यान-रक्षिकों के पास जाकर अपनी तिरस्करिणी विद्या के प्रभाव से अदृश्य होकर राजा का वृत्तान्त जानूँगी। **(ऐसा कहकर आकाश से उतरने का अभिनय करती हुई बैठ जाती है।)**

(इसके पश्चात् आम्रमञ्जरी देखती हुई एक दासी तथा उसके पीछे दूसरी दासी का प्रवेश।)

(Looking around) Why indeed may it be that even in the festival day of the spring season, the palace appears as though void of any festive activities? I have power to ascertain all by means of meditation. But respect of my friend must be paid regard too by me. Well, standing near these very female gardeners, concealed by the veil of invisibility, I shall try to know about the king. *(Having acted descent, stands)*

(Then enter a maid servant gazing at the mango blossom, and another behind her)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथमा—कथं उवत्थिदो महुमासो ? [कथमुपस्थितो मधुमासः ?]

आतम्महरिअवेंटं उस्ससिअं विअ वसंतमासस्स।
दिट्ठं चूअअंकुरअं छणमंगल्लं निअच्छामि॥ १॥
[आताम्रहरितवृन्तम् उच्छ्वसितमिव वसन्तमासस्य।
दृष्टं चूताङ्कुरकं क्षणमङ्गल्यं नियच्छामि॥ १॥]

द्वितीया—परहुदिए! किं एदं एआइणी मंतेसि ? [परभृतिके! किमेतदेकाकिनी मन्त्रयसे ?]

प्रथमा—महुअरिए! चूअकलिअं पेक्खिअ उम्मत्तिआ क्खु परहुदिआ होदि। [मधुकरिके! चूतकलिकां प्रेक्ष्य उन्मत्ता खलु परभृत्तिका भवति।]

प्रथमा—प्रथमा चेटी, कथमिति हर्षे, मधुमासः=चैत्रमासः, उपस्थितः=समागतः।

अन्वयः—आताम्रहरितवृन्तं मङ्गल्यं क्षणं दृष्टं चूताङ्कुरकं वसन्तमासस्य उच्छ्वसितमिव नियच्छामि॥ १॥

आताम्रेति। आताम्राणि=ईषल्लोहितवर्णानि, हरितानि=पलाशवर्णानि, च वृन्तानि=बन्धनानि, यस्य तत् आताम्रहरितवृन्तम्, मङ्गलाय=मङ्गलकार्य्याय, हितमिति मङ्गल्यम्, क्षणम्=उत्सवरूपम्, दृष्टम्=अवलोकितम्, चूताङ्कुरकम्=आम्रमुकुलम्, वसन्तमासस्य=चैत्रमासस्य, उच्छ्वसितं=जीवितमिव, नियच्छामि=निश्चिनोमि। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा (वाच्याभावाभिमानिनी) आताम्रेत्यादि स्वभावोक्तिः। आर्य्या जातिः॥ १॥

भावार्थः—आताम्रहरितवृन्तं मङ्गलकार्य्याय हितम् उत्सवरूपम् अवलोकितं चूताङ्कुरकं (दृष्ट्वा) चैत्रमासस्य जीवितम् इव निश्चिनोमि॥ १॥

द्वितीया—परभृतिके=प्रथमचेट्या सम्बोधनम्, किमेतद्, एकाकिनी=स्वगतमेव, मन्त्रयसे=आलपसि ?

प्रथमा—मधुरिके=द्वितीयचेट्या नाम, चूतकलिकाम्=आम्रमञ्जरीं, प्रेक्ष्य=अवलोक्य, खल्विति निश्चयेन, परभृतिका=कोकिला अहञ्च, उन्मत्ता=उल्लासिनी, भवति।

पहली दासी—अरे! क्या मधुमास (वसन्त) आ पहुँचा ?

जिसका वृन्त कुछ उज्ज्वल, रक्ताभ तथा हरा है और जो उत्सव रूप मङ्गलकार्य में संग्रह करने योग्य है, ऐसे इस दृश्यमान आम्रमुकुल को मैं मधुमास का प्राण ही मानती हूँ॥ १॥

दूसरी—परभृतिके! तू अकेली यहाँ क्या सोच रही है ?

पहली—मधुरिके! आम्रमञ्जरी को देखकर कोयल (मैं) मतवाली हो जाती है।

First—The blossom of the mango tree—a little red, green and pale, the all in all of the life of the vernal (of spring season) month. The auspicious of the season is really able for collection. I feel so. (1)

Second—Parbhritike! why are you muttering alone?

First—Madhurike! Parbhritika (the female cuckoo or I) becomes intoxicated at the sight of the mango bud.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीया—(सहर्षं त्वरया उपगम्य) कधं उवत्थिदो महुमासो? [कथमुपस्थितो मधुमासः?]

प्रथमा—महुअरिए! तवावि एसो कालो मदविब्भमुग्गीदाणं। [मधुकरिके! तवापि एष कालो मदविभ्रमोद्गीतानाम्।]

द्वितीया—सहि! अवलंबस्स मं, जाव अग्गपदे परिट्ठिदा भविअ चूअप्पसवं गेण्हिअ संपादेमि कामदेवस्स अच्चणं। [सखि! अवलम्बस्व माम्, यावदग्रपदे परिस्थिता भूत्वा चूतप्रसवं गृहीत्वा सम्पादयामि कामदेवस्य अर्चनम्।]

प्रथमा—जइ एव्वं, ता ममावि अद्धं अच्चणफलस्स। [यदि एवम्, तन्ममाप्यर्द्ध-मर्च्चनफलस्य।

द्वितीया—(सहर्षं=हर्षसहितं, त्वरया=क्षिप्रगत्या, उपगम्य=अन्तिके प्राप्य) कथमिति हर्षे, मधुमासः=वसन्तमासः, उपस्थितः=प्राप्तः।

प्रथमा—मधुकरिके!—मधु=मधुवन्मधुरं वचनं पुष्पसारञ्च, करोतीति मधुकरी, तत्सम्बोधने हे मधुकरिके=भ्रमरि! चेटी च, तवापि=भ्रमर्य्याः अपि, पक्षे-तदाख्यचेट्याः अपि, मदविभ्रमेण=मत्तताविलासेन, उद्गीतानाम्=उच्चैःस्वरेण गानानाम्, एषः=प्रसिद्धः, वसन्ताख्यः कालः। एतेन मधुरिका वसन्तगीतिषु प्रावीण्यं प्रकटितम्।

द्वितीया—सखि! माम् अवलम्बस्व=यथा न धराशायी भवामि तथा अवलम्बनं देहि। यावत्=यावता कालेन, अग्रपदे=पदयोरग्रे (अङ्गुलीमात्रसमाश्रयेणेति भावः), परिस्थिता=उन्नता भूत्वा, चूतप्रसवम्=आम्रमञ्जरीं, गृहीत्वा=अवचित्य, कामदेवस्य=स्मरस्य, अर्चनम्=पूजनम्, सम्पादयामि=निष्पादयामि।

प्रथमा—यद्येवं=मत्कृतावलम्बनेन, यदि चूतप्रसवग्रहणं करिष्यसि तदा, तत् अर्चन-फलस्य=त्वत्कृतस्मरपूजनफलस्य, अर्द्धम्=एको भागः, ममापि भवेत्। (यदि तवार्चनफलस्यार्द्ध-भागिनी अहं भविष्यामि इति त्वमनुमन्यसे तदा त्वामहमवलम्बे इति भावः।)

दूसरी—(हर्षपूर्वक शीघ्र पास आकर) क्या मधुमास आ गया?

पहली—मधुरिके! मस्ती के साथ गाने का तुम्हारा (कोयल का) भी तो यही समय है।

दूसरी—सखी! जरा मुझे सँभालो, जिससे मैं पाँवों की अँगुलियों (पंजे) के बल खड़ी होकर आम की मञ्जरी तोड़ लूँ और उससे कामदेव का पूजन करूँ।

पहली—यदि ऐसा है तो उस पूजन का आधा फल मुझे भी मिलना चाहिए।

Second—*(Joyfully approaching with haste)* What! has the spring month arrived?

First—Madhurike (the female bee)! Here now is your time for your intoxicated graceful songs.

Second—Friend! support me, till·standing on the tips of my feet, I pluck the mango-but and perform the worship of cupid (Kāma).

First—If mine too would be half of the fruit of the worship.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीया—सहि! अभणिदे वि एदं संपजइ एव्व। जदो एक्कं जेव णो एदं सरीरं द्विधा भिण्णं पजावइणा। (सखीमवलम्ब्य चूतप्रसवं गृहीत्वा) अम्महे! अप्पबुद्धो वि चूअप्पसवो बंधणभंगसुरही राअदि। (कपोतहस्तं कृत्वा) णमो भअवदे मअरद्धजाअ। [सखि! अभणितेऽपि एतत् सम्पद्यत एव। यत् एकमेव नौ एतत् शरीरं द्विधा भिन्नं प्रजापतिना। अहो! अप्रबुद्धोऽपि चूतप्रसवो बन्धनभङ्गसुरभी राजते। नमो भगवते मकरध्वजाय।]

अरिहसि मे चूअंगुर! दिण्णो कामस्स गहिदचावस्स।
पहिअजणजुअइलक्खो पंचंतरिओ सरो होदुं॥ २॥
[अर्हसि मे चूताङ्कुर! दत्तः कामस्य गृहीतचापस्य।
पथिकजनयुवतिलक्ष्यः पञ्चान्तरितः शरो भवितुम्॥ २॥]

द्वितीया—सखि! अभणितेऽपि=मया अनाख्यातेऽपि, एतत् मयार्चनफलस्यार्द्धभागम्, सम्पद्यत एव=तव भवत्येव। यतः-यस्मात् एकमेव=अभिन्नमेव, नौ-अस्माकम् शरीरम्-देहः, प्रजापतिना-विधात्राद्विधा भिन्नम्=द्विधा कृतम्। (सखीम्=परभृतिकानाम्नीम्, अवलम्ब्य=आश्रयं गृहीत्वा, चूतप्रसवम्=आम्रमञ्जरीम्, गृहीत्वा) अहो=इत्याश्चर्ये, अप्रबुद्धोऽपि=अप्रस्फुटितोऽपि, चूतप्रसवः=आम्रमञ्जरी, बन्धनभङ्गेन सुरभिः=वृन्तत्रोटनेन सुगन्धिः, राजते=शोभते (अप्रतिबोध-दशायामपि बन्धनभङ्गमात्रेण ईदृशसौरभोद्गमे प्रतिबोधकाले तु किं वा न भविष्यतीति भावः)

(कपोतहस्तं कृत्वा=करयोः कपोताकारमञ्जलिं विधाय) नमो भगवते मकरध्वजाय= स्मराय, सर्वशक्तिसम्पन्नाय कामदेवाय नमः। अर्चनमन्त्रोऽयम्।

अन्वयः—हे चूताङ्कुर! मे दत्तः पथिकजनं युवतिलक्षः, पञ्चान्तरितः गृहीतचापस्य कामस्य शरो भवितुम् अर्हसि॥ २॥

अर्हसीति। हे चूताङ्कुर=हे आम्रमुकुल! मे=मया, दत्तः=स्मरमुद्दिश्योत्सृष्टः त्वम्, पथिक-

---

दूसरी—यदि तुम न कहती तब भी ऐसा ही होता (पूजा के फल का आधा भाग तुम्हें ही मिलता) क्योंकि ब्रह्मा नें हम दोनों के एक ही शरीर को दो भागों में बाँट दिया है। (सखी के सहारे से मञ्जरी तोड़कर) अहो! यद्यपि अभी यह मञ्जरी विकसित नहीं हुई है तथापि वृन्त से अलग होते ही सुगन्ध फैला रही है। (अञ्जली बाँधकर) भगवान् कामदेव को नमस्कार है।

हे आम्रमुकुल! मेरे द्वारा कामदेव के प्रति समर्पित तुम धनुर्धारी कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण बन कर विरहीजनों की युवतियों को अपना लक्ष्य बनाओ॥ २॥

Second— This happens even when not told. For our life is one, though the body is divided in two parts. *(Leaning on her friend and plucking the mango blossom)* Oh! the mango blossom though not fully blown, spreading fragrance here owing to the cutting of the stalk. *(Folding the hands so as to form a hollow)* Respectful salutation to God cupid.

You have been, mango-blossom! given by me to kāma (cupid), who has taken up his bow, with the young wives of the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कञ्चुकी—(प्रविश्य अपटीक्षेपेण सक्रोधम्।) मा तावदनात्मज्ञे! देवेन प्रतिषिद्धेऽपि मधूत्सवे चूतकलिकाभङ्गमारभसे।

उभे—(भीते) पसीदटु पसीदटु अज्जो, अगहिदत्था अम्हे।[प्रसीदतु प्रसीदतु आर्यः, अगृहीतार्थे आवाम्।]

जनानां=प्रोषितजनानां, युवतयः=वध्वः, लक्ष्याणि=शरव्याणि, यस्य सः पथिकजनयुवतिलक्ष्यः, पञ्चानां=पञ्चसंख्यकानाम् (सम्मोहनादीनाम्), शराणाम्, अन्तरितः=अन्तर्गतः पञ्चान्तरितः, गृहीतचापस्य=धृतधनुषः, कामस्य=स्मरस्य, शरो भवितुमर्हसि। अत्र आर्य्या जातिः ॥ २ ॥

भावार्थः—हे चूताङ्कुर! मया स्मरमुद्दिश्योत्सृष्टस्त्वं प्रोषितजनयुवतिलक्ष्यः (यस्य तादृशस्त्वम्) पञ्चसङ्ख्यकेभ्यः शरेभ्यः अभ्यधिकः अतिरिक्तः षष्ठः (शरः) धृतधनुषः कामस्य शरो भवितुमर्हसि ॥ २ ॥

कामस्य शराः सन्त्यधस्तनाः—

'सम्मोहनोन्मादनौ च शोषणस्तापनस्तथा। स्तम्भनश्चेति कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः ॥
अरविन्दमशोकञ्च चूतञ्च नवमल्लिका। नीलोत्पलञ्च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः ॥'

कञ्चुकी—(प्रविश्य=मञ्चे समागत्य, अपटीक्षेपेण=ससम्भ्रम्, सक्रोधम्=सकोपम्) राज्ञा वसन्तोत्सवे प्रतिषिद्धेऽपि चूताङ्कुरद्वारा कामपूजनमवलोक्य कथयति—मा तावद्=इति निषेधे, साम्प्रतमेवं मा कुरुतमित्यर्थः। हे अनात्मज्ञे=आत्मज्ञानविरहिते! देवेन=राज्ञा दुष्यन्तेन, मधूत्सवे=वसन्तोत्सवे, प्रतिषिद्धे=वारितेऽपि, चूतकलिकाभङ्गम्=आम्रमुकुलत्रोटनम्, आरभसे=करोषि।

उभे—(भीते=भयं नाटयन्त्यौ) आर्य्यः=भवान्, प्रसीदतु=प्रसन्नो भवतु, सम्भ्रमे द्विरुक्तिः, अगृहीतः अर्थः=राजकर्तृकमधूत्सवप्रतिषेधलक्षणविषयः, याभ्यां ते अगृहीतार्थे, आवाम्। (आवाभ्यां राजकृतमधूत्सवप्रतिषेधरूपार्थो न ज्ञातः। अत एवाज्ञानकृतापराधस्य मर्षणीयत्वाद् भवान् तं मर्षयतु इति भावः।)

कञ्चुकी—(**एकाएक आकर क्रोध के साथ**) अरी मूढो! ऐसा न करो। महाराज ने वसन्तोत्सव रोक दिया है फिर भी तुम आम की मञ्जरी तोड़ रही हो।

दोनों—(**भयभीत होकर**) आर्य प्रसन्न हों, हमें निषेधाज्ञा का ज्ञान नहीं था।

---

travelling folk as your target, be you an arrow superior to the usual five arrows of kāma. (2)

Chamberlain—(Entering in anger with hurry) Do not O' thoughtless girl! why do you begin the plucking of mango-buds, when the spring festival has been prohibited by his majesty?

Both—(Frightened) Pleased be your honour. We have not learnt the prohibition order.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कञ्चुकी—हुं, न किल श्रुतं भवतीभ्यां यद्वासन्तैस्तरुभिरपि देवस्य शासनं प्रमाणीकृतं तदाश्रयिभिश्च। तथाहि—

चूतानां चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति न स्वं रजः
सन्नद्धं यदपि स्थितं कुरुवकं तत् कोरकावस्थया।
कण्ठेषु स्खलितं गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां रुतं
शङ्के संहरति स्मरोऽपि चकितस्तूणार्द्धकृष्टं शरम्॥ ३॥

कञ्चुकी—हुम्=इति क्रोधे परिप्रश्ने वा, भवतीभ्यां=चेटीभ्याम्, किलेत्यसम्भावनायाम्, न श्रुतं=नाकर्णितम्, युवाभ्यां देवशासनं न श्रुतमित्येतदसम्भाव्यम् इत्याशयः। यत्=यस्मात्, वासन्तैः=वसन्तकालोद्भवैः, तरुभिः=वृक्षैरपि, तदाश्रयिभिः=वासन्ततर्वाश्रयिभिः पुंस्कोकिलादिभिश्च, देवस्य=राज्ञो दुष्यन्तस्य, शासनं=मधूत्सवप्रतिषेधाज्ञा, प्रमाणीकृतम्=पालितमेव। तथाहि—

अन्वयः—चिरनिर्गतापि चूतानां कलिका स्वं रजः न बध्नाति। यदपि कुरुवकं सन्नद्धं तदपि तत् कोरकावस्थया स्थितम्। तथा शिशिरे गतेऽपि पुंस्कोकिलानां रुतं कण्ठेषु स्खलितम्। स्मरोऽपि चकितः तूणात् अर्द्धकृष्टं शरं संहरति इति शङ्के॥ ३॥

चूतानामिति। चिरनिर्गतापि=बहुपूर्वं बहिर्गतापि, चूतानाम्=आम्राणाम्, कलिका=मञ्जरी, स्वं=स्वकीयम्, रजः=परागम्, न बध्नाति=नाविष्करोति। तथा च, यदपि, कुरुवकं=शोणकुरण्टकपुष्पमुकुलम्, सन्नद्धं=बहिर्निर्गतम्, तदपि=बहिर्निर्गमनवत्कुरुवकमुकुलमपि, तत्=कुरुवकम्, कोरकावस्थया=कलिकारूपेणैव, स्थितम्। तथा, शिशिरे=शिशिरर्तौ, गतेऽपि=अतीतेऽपि, वसन्ताविर्भावेऽपि, पुमांसश्च ते कोकिलाश्चेति तेषां पुंस्कोकिलानां=कोकिलयूनाम्, रुतं=शब्दितम्,

---

कञ्चुकी—हूँ, क्या तुम दोनों ने यह नहीं सुना कि वसन्तकाल के वृक्षों और उनके आश्रित पक्षियों तक ने महाराज की आज्ञा का पालन किया है। देखो—

मञ्जरी यद्यपि काफी समयपूर्व निकल गई है तथापि वह पराग नहीं धारण करती, कुरुबक कलिकारूप में ही बना रह गया, विकसित नहीं हुआ। शीतकाल बीत जाने पर भी पुंस्कोकिल छिपा बैठा है, कूकता नहीं। यह सब देखकर मैं सोचता हूँ कि कामदेव ने भी भयभीत होकर तरकस से आधा निकाला हुआ बाण फिर यथास्थान रख दिया है, चलाया नहीं॥ ३॥

Chamberlain—Indeed! have you not heard the command of his majesty, which has been considered authoritative even by the trees, that blossom in the spring and the birds, that resort to them. For—

The bud of mango trees, though long since come out, does not form its own pollen; that Kurbāka also, which is completly ready to blossom, remains in the state of a bud; the note of the male-cuckoos, even though the winter season has gone, falters (stumbles) in their throats; I fear even Kāma, being amazed, arrests his arrow half drawn from his quiver (arrow keeper). (4)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—णत्थि एत्थ संदेहो, महाप्पहावो क्खु राएसी। [नास्त्यत्र सन्देहः, महाप्रभावः खलु राजर्षिः ।]

प्रथमा—अज्ज ! कदिचिद्दिअसाइं मित्तावसुणा रट्टिएण भट्टिणो पादमूलं पेसिदा अम्हे इध पमदवणे चित्तकम्म अप्पिदुं। ता आगंतुअदाए ण सुदपुव्वो अम्हेहिं एसो वुत्तंतो। [आर्य! कतिचिद्दिवसानि मित्रावसुना राष्ट्रियेण भर्त्तुः पादमूलं प्रेषिते आवाम् इह प्रमदवने चित्रकर्म्म अर्पयितुम्, तदागन्तुकतया न श्रुतपूर्व आवाभ्यामेष वृत्तान्तः ।]

कञ्चुकी—तेन हि न पुनरेवं प्रवर्त्तितव्यम्।

कण्ठेषु=गलप्रदेशेषु एव, स्खलितं=निर्गमनकाले लीनम्। स्मरोऽपि=सर्वविजयी कामोऽपि, चकितः=राजशासनात् भीतः, सन्, तूणात्=तूणीरात्, अर्द्धकृष्टम्=अर्द्धनिष्कासितम्, शरम्=बाणम्, संहरति=पुनस्तूणीरे एव स्थापयति, इति शङ्के=इति सम्भावयामि। अत्रोत्प्रेक्षा वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गश्चालकारौ। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ३ ॥

भावार्थः—यत्राचेतनैः स्थावरैः पादपैः विशिष्टचेतनैर्जङ्गमैः पक्ष्यादिभिस्ततोऽपि माहात्म्यवद्भिर्देवैरपि राजशासनं पाल्यते तत्र भवतीभ्यामेव राजशासनं न श्रुतम् इत्याश्चर्यजनकमेव मन्ये॥ ३ ॥

मिश्रकेशी—नास्त्यत्र सन्देहः=कञ्चुकीयोक्तं सर्वं सत्यमेवेत्यर्थः। महान् प्रभावो यस्य सः महाप्रभावः=प्रखरशक्तिसम्पन्नः, खल्विति निश्चयेन, राजर्षिः=महाराजो दुष्यन्तः।

प्रथमा—आर्य! इति कञ्चुकीयसम्बोधनम्, कतिचिद्दिवसानि=कियन्त्येवाहानि, मित्रावसुना=तन्नाम्ना, राष्ट्रियेण=राजश्यालेन (नगराध्यक्षेण), प्रमदवने=तन्नामकमहिलोद्याने (राज्ञोऽन्तःपुरोद्याने), चित्रकर्म्म अर्पयितुं=पटे चित्रं कारयितुं, भर्त्तुः=स्वामिनो दुष्यन्तस्य, पादमूलम्=चरणान्तिकम्, आवाम्=मधुकरिकापरभृतिके चेट्यौ, प्रेषिते=प्रेरिते। तत्=तस्मात्, आगन्तुकतया=नवागततया, आवाभ्याम्, न श्रुतपूर्वः=न पूर्वं श्रुतः, एषः वृत्तान्तः=वसन्तोत्सव-निषेधरूपः वृत्तान्तः।

मिश्रकेशी—इस (कञ्चुकी के कथन) में कोई सन्देह नहीं है; क्योंकि महाराज का प्रभाव महान् है।

पहली—आर्य! कई दिन पूर्व राजश्यालक मित्रावसु ने इस प्रमदोद्यान में चित्र बनाने के लिए हमलोगों को महाराज के पास भेजा था। अतएव यहाँ के लिए नई-नई आनेवाली हम दोनों ने यह वसन्तोत्सव निषेधाज्ञापरक वृत्तान्त नहीं सुना था।

कञ्चुकी—यदि ऐसा है, तो फिर कभी ऐसा न करना।

Miśrakeśī—There is no doubt. The royal sage is of great prowess.

First—Honorable sir, only a few days ago since Mitravasu, the king's brother-in-law, sent us near the feet of his majesty in this ladies garden to draw the portrait. So, being new commer to this place we both have not heard this news even before. i.e. the royal order for prohibition of spring function.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—(सकौतूहलम्) अज्ज! जइ इमिणा जणेण सोदव्वं, ता कधेदु अज्जो किं णिमित्तं भट्टिणा वसंतुच्छवो पडिसिद्धोत्ति। [आर्य! यद्यनेन जनेन श्रोतव्यम्, तत् कथयतु आर्यः किं निमित्तं भर्त्रा वसन्तोत्सवः प्रतिषिद्ध इति।]

मिश्रकेशी—उच्छवप्पिआ क्खु राआणो होंति, ता एत्थ गुरुणा कारणेन होदव्वं। [उत्सवप्रियाः खलु राजानो भवन्ति, तदत्र गुरुणा कारणेन भवितव्यम्।]

कञ्चुकी—(स्वगतम्) बहुलीभूतोऽयमर्थः, तत् किं न कथ्यते। (प्रकाशम्) अस्ति भवत्योः कर्णपथमायातं शकुन्तलाप्रत्यादेशकौलीनम्?

कञ्चुकी—तेन=यद्येवं तर्हि, पुनः=भूयः, एवं=चूतकलिकाभङ्गादिभिरुत्सवारम्भेण, न प्रवर्तितव्यम्=न प्रवृत्तिर्विधेया।

उभे—(सकौतूहलम्=कौतूहलेन सह) आर्य!=मान्य! यदि अनेन जनेन=अस्मद्विधेन चेटीजनेन, श्रोतव्यम्=श्रवणार्हम्, तत्=तदा, आर्यः=मान्यः, कथयतु, किं निमित्तम्=केन हेतुना, वसन्तोत्सवः=मधूत्सवः (भर्त्रा दुष्यन्तेन), प्रतिषिद्धः=वारितः (इति कथयतु)।

मिश्रकेशी—खल्विति निश्चये, राजानः=भूपालाः, उत्सवः प्रियो येषान्ते उत्सवप्रियाः=इष्टोत्सवाः, भवन्ति, तत्=तस्मात्, अत्र=उत्सवनिषेधे, गुरुणा=महता, कारणेन=हेतुना, भवितव्यम्।

कञ्चुकी—(स्वगतम्=आत्मगतम्) अयमर्थः=वसन्तोत्सवनिषेधहेतुवृत्तान्तः, बहुलीभूतः=प्रायेण सर्वत्र व्याप्तः, तत्=तस्मात्, किं न कथ्यते=अनयोः सविधे कथं मया न प्रकाश्यते। (प्रकाशम्=सुस्पष्टम्) भवत्योः=युवयोः चेट्योः, कर्णपथमायातम्=श्रवणगोचरीभूतम्, शकुन्तलाप्रत्यादेशकौलीनम्—शकुन्तलायाः=कण्वदुहितुः, प्रत्यादेशस्य=निराकृतेः, कौलीनम्=लोकवादः, कर्णपथमायातं किम्? इति काक्वा पृच्छति।

दोनों—(कौतूहल के साथ) आर्य! यदि हमें बताने में कोई हानि न हो अथवा यदि हमारे सुनने योग्य हो तो कृपया बताइए कि यह वसन्तोत्सव रोक क्यों दिया गया?

मिश्रकेशी—राजा लोग तो उत्सवप्रिय होते हैं, अतः निश्चय ही इस निषेधाज्ञा का कोई विशेष कारण होगा?

कञ्चुकी—(स्वगत) जब यह बात फैल ही चुकी है तब इन्हें भी क्यों न बता दूँ? (प्रकट) क्या आप दोनों ने शकुन्तला के त्याग का लोकापवाद सुना है?

Chamberlain—All right. You should not again act in this way.

Both—*(With curiosity)* Respected sir, if it is fit to be heard by these persons, let your honour tell why has the spring festival been prohibited by his majesty?

Miśrakeśī—Kings, indeed are fond of festivals. There should be a great reason.

Chamberlain—*(To himself)* This has been wide spread, why should it not be told? *(Openly)* Has not the scandal of the repudiation of Śakuntalā crossed the range of your ears here?

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—अज्ज ! सुदं रट्ठिअमुहादो अंगुलीअदंसणं जाव। [आर्य! श्रुतं राष्ट्रियमुखात् अङ्गुरीयकदर्शनं यावत्।

कञ्चुकी—तेन स्वल्पं कथयितव्यम्। यदैवाङ्गुरीयदर्शनादनुस्मृतं देवेन सत्यमूढपूर्वा रहसि मया तत्रभवती शकुन्तला मोहात् प्रत्यादिष्टेति, तदाप्रभृत्येव पश्चात्तापमुपगतो देवः। तथा हि—

> रम्यं द्वेष्टि यथा पुरा प्रकृतिभिर्न प्रत्यहं सेव्यते,
> शय्योपान्तविवर्तनैर्विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः।
> दाक्षिण्येन ददाति वाचमुचितामन्तःपुरेभ्यो यदा
> गोत्रेषु स्खलितस्तदा भवति च व्रीडावनम्रश्चिरम्॥ ४॥

उभे—आर्य=मान्य! राष्ट्रियस्य=राजश्यालकमित्रावसोर्मुखात्, श्रुतम्=आकर्णितम्, अङ्गुरीयकदर्शनं यावत्=अङ्गुलिमुद्रादर्शनावधि धीवरालब्धेति शेषः।

कञ्चुकी—तेन हि=बहुतरांशस्य श्रुतत्वादेव, स्वल्पम्=अवशिष्टवृत्तभागमात्रम्, कथयितव्यम्=वक्तव्यविषयस्याल्पमात्रावशेषोऽस्तीत्यर्थः। रहसि=एकान्ते, निर्जनवनप्रदेशे, ऊढपूर्वा= गान्धर्वविधिना परिणीतपूर्वा, तत्रभवती=मान्या शकुन्तला, किन्तु मोहात्=विस्मरणात्, प्रत्यादिष्टा= 'न त्वं मे पत्नी' इत्यादिकथनेन निराकृता, इति देवेन=राज्ञा दुष्यन्तेन, यदैव अङ्गुरीयकदर्शनाद्धेतोरनुस्मृतम्, तदाप्रभृत्येव=तदारभ्यैव, देवः=राजा दुष्यन्तः, पश्चात्तापम्=अनुतापम्, उपगतः= प्राप्तवान्। तथाहि—

अन्वयः—देवः रम्यं द्वेष्टि यथा पुरा प्रकृतिभिः प्रत्यहं न सेव्यते। उन्निद्रः शय्योपान्त-

---

दोनों—आर्य! हमने नगराध्यक्ष से महाराज द्वारा अँगूठी देखने तक का वृत्तान्त सुना है।

कञ्चुकी—तब तो अधिकांश वृत्तान्त भाग जान लेने के कारण शेष थोड़ा ही भाग बताना है। अँगूठी देखकर जैसे ही महाराज को स्मरण आया कि सत्य ही मैंने एकान्त में शकुन्तला के साथ विवाह किया था और अब अज्ञानवश उसका अपमान कर बैठा हूँ तभी से उन्हें अतीव पश्चात्ताप हो रहा है। क्योंकि—

महाराज अब रम्य वस्तु देखकर उससे घृणा करते हैं। पहले की भाँति अमात्यादि की सेवा स्वीकार नहीं करते। शय्या पर लेटकर सोते नहीं बल्कि करवटें बदलते हुए रात बिता

Both—We have heard this incident from the mouth of the royal brother-in-law as for as the seeing of the ring.

Chamberlain—Then, a little is to be told. Just when, at the sight of his own ring his majesty recollected that really Śakuntalā was married by him before in secret and was repudiated through (foolishness) infatuation, his majesty has been subject to repentance (sorrow). For—

He hates the delightful, he is not daily waited upon by ministers as before, he passes the nights altogather without sleep in

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—पिअं मे पिअं। [**प्रियं मे प्रियम्।**]

कञ्चुकी—अस्मात् प्रभवतो वैमनस्यादुत्सवः प्रत्याख्यातः।

विवर्तनैः एव क्षपाः विगमयति। यदा दाक्षिण्येन अन्तःपुरेभ्यः उचितां वाचं ददाति तदा गोत्रेषु स्खलितः चिरं क्रीडावनम्रः भवति॥ ४॥

रम्यमिति। देवः=राजा दुष्यन्तः, रम्यं=रमणीयं वस्तु, द्वेष्टि=नाभिनन्दति, यथा पुरा=पूर्ववत्, प्रकृतिभिः=अमात्यादिभिः, प्रत्यहम्=अनुदिनम्, न सेव्यते=राजकार्यसम्पादनार्थं नोपास्यते (राजकार्यं सम्यक् न पश्यतीति भावः), उन्निद्रः—उत्सृष्टा निद्रा येन सः=जागरित एव, शय्यायाः= आस्तरणस्य, उपान्तयोः=सीम्नोः, विवर्तनैः=विलुण्ठनैः, शय्योपान्तविवर्तनैः, एव, क्षपाः=निशाः, विगमयति=अतिवाहयति। यदा दाक्षिण्येन=अत्यन्तानुरोधेन औदार्येण वा, अन्तःपुरेभ्यः=अन्तः- पुरवासिनीभ्यो महिलाभ्यः, उचितां=तत्कालयोग्याम्, वाचम्=वाक्यम्, ददाति=प्रयच्छति, तदा गोत्रेषु=नामसु, स्खलितः=प्रभ्रष्टः (यस्याः कस्याश्चिन्नाम्नि उच्चारयितव्ये भावनाबलात् कृत- शकुन्तलानामप्रयोगः सन्नित्यर्थः), चिरं=चिरकालं, व्रीडया=लज्जया, अवनम्रः=नतमस्तकश्च भवति। अत्र समुच्चयोऽलङ्कारः काव्यलिङ्गं च। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ४॥

भावार्थः—राजा दुष्यन्तः शकुन्तलाविरहे स्रक्चन्दनादिकं रमणीयं वस्तु नाभिनन्दति (उद्वेजकत्वात् चक्षुषापि न पश्यति)। पूर्ववत् अमात्यादिभिः मन्त्रणां कृत्वा राजकार्यं सम्यक् न पश्यति। जागरित एव शय्योपान्तविवर्तनैः निशा अतिवाहयति। यदा औदार्येण अन्तःपुरवासिनीभ्यो तत्कालयोग्यां वाचं ददाति तदा गोत्रेषु प्रभ्रष्टः यस्याः कस्याश्चिन्नाम्नि उच्चारयितव्ये भावनाबलात् कृतशकुन्तलानामप्रयोगः सन् चिरं व्रीडया अवनम्रो भवति॥ ४॥

मिश्रकेशी—प्रियं मे प्रियम्=शकुन्तलां प्रति राज्ञोऽनुरागं ज्ञात्वा सहर्षं कथयति मिश्रकेशी इदं वचनं प्रीतिकरम्।

कञ्चुकी—अस्मात् कारणात्, प्रभवतः=बलवत्तरात्, वैमनस्यात्=मनःसन्तापात्, उत्सवः=वसन्तोत्सवः, प्रत्याख्यातः=निराकृतः राज्ञेति शेषः।

देते हैं। उदार स्वभाव के कारण अन्तःपुर की महिलाओं को उत्तर देते समय बरबस जब शकुन्तला का नाम मुख से निकल जाता है तब लज्जा के कारण चिरकाल सिर नीचा कर बैठ जाते हैं॥ ४॥

मिश्रकेशी—मुझे अच्छा लगा, अच्छा लगा।

कञ्चुकी—इसी कारण, अतीव मन की व्याकुलता के कारण उन्होंने वसन्तोत्सव का निषेध किया है।

---

rolling about on the edge of his bed (couch). And when out of politeness he addresses suitable words to the ladies in his harem, then, blundering in their names, he remains perplexed with shame for a long time. (4)

Miśrakeśī—I am very happy to hear or joy to me.

Chamberlain—Owing to the overpowering mental perturbance, the festival has been condemned.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—जुज्जदि। [युज्यते।]

(नेपथ्ये) एदु एदु भवं। [एतु एतु भवान्।]

कञ्चुकी—(कर्णं दत्त्वा) अये! इत एवाभिवर्त्तते देवः, तत् गच्छतं स्वकर्मानुष्ठानाय।

उभे—तह। [तथा।] (इति निष्क्रान्ते।)

(ततः प्रविशति पश्चात्तापसदृशवेशो राजा, विदूषकः प्रतीहारी च)

कञ्चुकी—(राजानं विलोक्य) अहो! सर्वास्ववस्थासु रमणीयकमाकृतिविशेषाणाम्। तथा ह्येवं वैमनस्यपरीतोऽपि प्रियदर्शनो देवः। य एषः—

उभे—युज्यते=उपपद्यते, ईदृशवैमनस्यादुत्सवप्रत्याख्यानमिति भावः। (नेपथ्ये=परोक्षे) एतु एतु भवान्=भवान् अनेन मार्गेण आगच्छतु।

कञ्चुकी—(कर्णं दत्त्वा=श्रवणेन्द्रियमवहितीकृत्य) अये! ससम्भ्रमे सम्बोधनम्, देवः= राजा दुष्यन्तः, इत एव=अत्रैव, अभिवर्तते=आयाति। तत्=तस्मात्, स्वकर्मानुष्ठानाय=स्वकार्य-सम्पादनाय, गच्छतं=युवाम् इति शेषः।

उभे—तथा=यथा भवदादेशस्तथैव कुर्वः (आवां गच्छावः)। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ते=प्रस्थिते)

(ततः=तदनन्तरम्, पश्चात्तापस्य सदृशः वेशो यस्य स तथाभूतः पश्चात्तापोपयुक्तवेशधारी, राजा=दुष्यन्तः, विदूषकः, प्रतीहारी च, प्रविशते=रङ्गे समागच्छति।)

कञ्चुकी—(राजानं=दुष्यन्तं, विलोक्य=दृष्ट्वा) ,अहो इत्याश्चर्ये विस्मये वा, आकृति-

---

दोनों—उचित ही है।

(नेपथ्य में) आप इधर पधारें।

कञ्चुकी—(कान देकर) अरे महाराज इधर ही आ रहे हैं, अतः आप दोनों अपना कार्य करने जाएँ।

दोनों—जो आज्ञा (अच्छा) (दोनों का बाहर प्रस्थान)।

(इसके बाद पश्चात्ताप के योग्य वेश धारण किये राजा,
विदूषक और प्रतीहारी का प्रवेश)

कञ्चुकी—(राजा को देखकर) अहो! विशिष्टाकृति वालों में मनोहरता सभी अवस्थाओं में विद्यमान रहती है। इसीलिए इस विपरीत स्थिति में भी महाराज मनोहर लग रहे हैं।

Both—It is proper.

(Behind the scenes) Let your majesty come, come.

Chamberlain—*(Listening)* Oh! even to this side does his majesty turn. Let your own duty be performed by you.

Both—All right. *(Exeunt)*

*(Then enter the king in a dress suited to his repentance,
jester and the female door-keeper)*

Chamberlain—*(observing the king)* Oh! the loveliness of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधिर्वामप्रकोष्ठे श्लथं
बिभ्रत् काञ्चनमेकमेव वलयं श्वासापरक्ताधरः।
चिन्ताजागरणप्रताम्रनयनस्तेजोगुणैरात्मनः
संस्कारोल्लिखितो महामणिरिव क्षीणोऽपि नालक्ष्यते॥ ५॥

विशेषाणां=विशिष्टाकृतीनाम्, सर्वासु अवस्थासु=दुःखावस्थायामपि, रमणीयकम्=रमणीयत्वम्। तथाहि एवम्=ईदृशेन, वैमनस्येन=मनोव्याकुलतया, परीतः=युक्तोऽपि (शकुन्तलाविरहेण दुःखभागपि), प्रियं=मनोहरं, दर्शनं यस्यासौ प्रियदर्शनः=सौम्यमूर्त्तिः, एव देवः=राजा दुष्यन्तः। य एषः=पुरःस्थितः दुष्यन्तः—

अन्वयः—प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधिः वामप्रकोष्ठे श्लथम् एकमेव काञ्चनं वलयं बिभ्रत् श्वासापरक्ताधरः। चिन्ताजागरणप्रताम्रनयनः य एषः देवः संस्कारोल्लिखितः महामणिः इव क्षीणोऽपि आत्मनः तेजोगुणैः नालक्ष्यते॥ ५॥

प्रत्यादिष्टेति। प्रत्यादिष्टः=कार्श्यादरतेश्च निराकृतः, विशेषमण्डनस्य=विशिष्टप्रसाधनस्य (हारकुण्डलादीनां), विधिः=विधानं, धारणं येन सः प्रत्यादिष्टविशेषमण्डनविधिः, वामप्रकोष्ठे= वामकूर्पस्याधोभागे, श्लथम्=शिथिलम्, एकमेव=एकमात्रमेव, काञ्चनस्येदं काञ्चनम्=हिरण्मयम्, वलयम्=कटकम्, बिभ्रत्=धारयन्, श्वासैः=उष्णैर्निःश्वासमारुतैः, अपरक्तः=रक्तताविहीनः, अधरः=अधरोष्ठः, यस्य सः श्वासापरक्ताधरः, तथा चिन्तया=शकुन्तलानुध्यानेन, यद् जागरणं= निद्राच्छेदः, तेन प्रताम्रे=अतिलोहिते, नयने यस्य सः चिन्ताजागरणप्रताम्रनयनः, य एषः देवः=दुष्यन्तः, संस्कारेण=शाणघर्षणादिना, उल्लिखितः=तनूकृतः, संस्कारोल्लिखितः, महामणिः= बहुमूल्यरत्नम्, इव, क्षीणोऽपि=कृशोऽपि, आत्मनः=स्वस्य, तेजोगुणैः=प्रभावमहिम्ना, नालक्ष्यते= क्षीणो न दृश्यते। अत्र श्रौतोपमा स्वभावोक्तिश्चालङ्कारौ। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ ५॥

भावार्थः—निराकृतप्रसाधनविधिः, वामप्रकोष्ठे शिथिलम् एकाकी हिरण्मयं वलयं धारयन्, उष्णनिश्वासमारुतैः रक्तताविहीनाधरयुक्तः तथा चिन्ताजागरणादिना प्रताम्रनयनः य एषः

इन महाराजा ने अलंकृत होना बन्द कर दिया है। बायीं भुजा में एक मात्र ढीला-ढाला स्वर्णकंकण पड़ा है, ठण्डी साँस लेने से रक्ताभ अधर मलिन हो गये हैं और चिन्तावश जागने के कारण दोनों नेत्र ताम्रवत् रक्तिम हो गये हैं, परन्तु इस प्रकार दुर्बल होने पर भी संस्कारित मणी की भाँति अपने तेज के गुण के कारण ये दुर्बल दिखायी नहीं पड़ते॥ ५॥

---

distinguished figures in all conditions. Though thus longingly anxious, his majesty possesses a pleasing appearance. For—

Discarding forms of special decoration, wearing only a single golden bracelet placed around his left fore-arm, with the lower lip turned pale from sighing, with eyes exceedingly red from wakefulness, caused by thought about his beloved, his majesty although emiciated, is not observed to be so lean, owing to the excellence of his own luster, like a precious gem ground to give it polish. (5)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—(राजानं विलोक्य) ठाणे क्खु पच्चादेसविमाणिदा वि इमस्स किदे सउंतला किलिस्सदि। [स्थाने खलु प्रत्यादेशविमानितापि अस्य कृते शकुन्तला क्लिश्यति।]

राजा—(ध्यानमन्दं परिक्रम्य)

> प्रथमं सारङ्गाक्ष्या प्रियया प्रतिबोध्यमानमपि सुप्तम्।
> अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम्॥ ६॥

मिश्रकेशी—णं ईदिसाइं तवस्सिणीए भागधेआइं। [नन्वीदृशानि तपस्विन्या भागधेयानि।]

देवः शाणघर्षणादिना परिशोधितबहुमूल्यं रत्नमिव स्वकीयप्रभावमहिम्ना क्षीणः सन्नपि क्षीणो न दृश्यते॥ ५॥

मिश्रकेशी—(राजानं=दुष्यन्तं, विलोक्य=दृष्ट्वा) प्रत्यादेशेन=प्रत्याख्यानेन, विमानिता=अवमानितापि, शकुन्तला=कण्वदुहिता, अस्य=दुष्यन्तस्य, कृते=निमित्तम्, यत् क्लिश्यति=विरह-दुःखमनुभवति, तत् स्थाने खलु=युक्तमेव।

राजा—(ध्यानेन=शकुन्तलाविषयकचिन्तया, मन्दम्=शनैःशनैः, परिक्रम्य=पादं प्रक्षिप्य)

अन्वयः—सारङ्गाक्ष्या प्रियया प्रथमं प्रतिबोध्यमानमपि सुप्तम् इदं हतहृदयम् अनुशयदुःखाय सम्प्रति विबुद्धम्॥ ६॥

प्रथममिति। सारङ्गस्य अक्षिणीव अक्षिणी यस्यास्तया सारङ्गाक्ष्या=हरिणाक्ष्या, प्रियया=शकुन्तलया, प्रथमम्=पूर्वम्, प्रतिबोध्यमानमपि=संज्ञाप्यमानमपि, सुप्तम्=निद्रितं, इदं=मदीयम्, हतहृदयम्=दुष्टहृदयम्, चित्तहतकम्, अनुशयदुःखाय=सततपश्चात्तापदुःखानुभवाय, सम्प्रति=इदानीम्, विबुद्धम्=जागरूकम्। अत्र पूर्वार्द्धे विशेषोक्तिः, उत्तरार्द्धे विभावना तथा सारङ्गाक्ष्या इत्यत्र लुप्तोपमा। आर्य्या जातिः॥ ६॥

भावार्थः—सारङ्गाक्ष्या शकुन्तलया पूर्वं प्रतिबोध्यमानमपि निद्रितं मदीयं चित्तहतकं सततपश्चात्तापदुःखानुभवाय इदानीं जागरूकं जातम्॥ ६॥

मिश्रकेशी—(राजा को देखकर) इस प्रकार अपमानपूर्वक त्यागी हुई भी शकुन्तला जो इनके लिए विरहदुःख भोग रही है, वह उचित ही है।

राजा—(चिन्ता के कारण धीरे-धीरे चलकर)

पहले जब उस मृगनयनी ने अपने विवाह की याद दिलाकर मेरे हृदय को जगाना चाहा तब तो यह जागा नहीं और अब सतत सन्तापदुःख भोगने के लिए जाग उठा है॥ ६॥

मिश्रकेशी—उस बेचारी का भाग्य ही ऐसा है।

Miśrakeśī—*(Observing the king)* Rightly indeed does Śakuntalā, although disrespected by rejection, suffers for this king.

The king—*(Walking round slowly in meditation)* This cruel heart which previously slept although it ws being awakened by my fawn-eyed beloved, has now become awake to suffer the torment of repentance. (6)

Miśrakeśī—Indeed, such are the fortunes of the poor girl.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(अपवार्य) हुं, भूओवि लंघिदो एसो सउंतलावादेण। ण आणे कधं चिकिच्छिदव्वो भविस्सदि। [हुँ, भूयोऽपि लङ्घित एष शकुन्तलावातेन। न जाने कथं चिकित्सितव्यो भविष्यति।]

कञ्चुकी—(उपसृत्य) जयति जयति देवः। देव! प्रत्यवेक्षिताः प्रमदवनभूमयः। यथाकाममध्यास्तां विनोदस्थानानि देवः।

राजा—वेत्रवति! मद्वचनादमात्यपिशुनं ब्रूहि, अद्य चिरप्रबोधात्र सम्भावितमस्माभिर्धर्म्मासनमध्यासितुम्, यत् प्रत्यवेक्षितमार्य्येण पौरकार्य्यं तत् पत्रमारोप्य प्रस्थाप्यतामिति।

मिश्रकेशी—तपस्विन्याः=दीनायाः शकुन्तलायाः, भागधेयानि=भाग्यानि, ईदृशानि ननु=एवम्भूतान्येव।

विदूषकः—(अपवार्य) हुं=वितर्के परिप्रश्ने वा, शकुन्तलावातेन=शकुन्तला शकुन्तलेति वातव्याधिना, भूयोऽपि=पुनरपि, एषः=दुष्यन्तः, लङ्घितः=अभिभूतः, आक्रान्तः। न जाने कथं=केन प्रकारेण, चिकित्सितव्यो भविष्यति=शकुन्तलाया दुर्लभत्वाद् कथमारोग्यं प्राप्यति।

कञ्चुकी—(उपसृत्य=अन्तिकं प्राप्य) जयति जयति देवः=महाराजः। देव=स्वामिन्! प्रत्यवेक्षिताः=पर्यवेक्षिताः, प्रमदवनभूमयः=विहारोचितस्थानानि। देवः यथाकामः=यथेच्छम्, विनोदस्थानानि=विरहवेदनापनोदनोपयुक्तदेशान्, अध्यास्ताम्=अधितिष्ठतु।

राजा—वेत्रवति=प्रतीहार्याः सम्बोधनम्, मद्वचनात्=राज्ञेदमुच्यत इत्युक्त्वा, अमात्यश्चासौ पिशुनश्चेति तममात्यपिशुनम्=पिशुननामधेयं मन्त्रिणं, ब्रूहि=कथय, अद्य=चिरप्रबोधात्, रात्रावतिजागरणात्, अस्माभिः=मया, धर्मासनं=विचारासनं, अध्यासितुम्=अधिष्ठातुम्, न सम्भावितम्=नैव

विदूषक—(रोककर) हूँ, शकुन्तला रूपी वातव्याधि ने फिर इन्हें अभिभूत कर दिया है। न जाने कैसे इसका उपचार होगा?

कञ्चुकी—(पास जाकर) महाराज की जय हो, जय हो। मैंने प्रमदवन का सारा क्षेत्र देख लिया है। अतः अब जहाँ आनन्दानुभूति होती हो वहाँ महाराज बिराजें।

राजा—वेत्रवति! मेरी ओर से मन्त्री पिशुन से कहो कि रात में अधिक देर तक जागने के कारण मैं आज धर्मासन पर नहीं बैठ सकूँगा, अतः उन्होंने नगर का जो कार्य देखा हो उसे पत्रांकित कर मेरे पास भेज दें।

Jester—*(Aside)* Here he is even again seized by the Śakuntalā-malady (sickness). It is not known how he is to be treated.

Chamberlain—*(Approaching)* May your majesty be victorious, be victorious. O Lord! the regions of the pleasure-garden have been completely inspected by me. May your majesty occupy the seat of diversion at will.

The king—Vetravatī! speak to minister Piśuna at my words thus owing to having kept awake (at night) for long, it was not possible for me to occupy the judgement seat today. Whatever

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—जं देवो आणवेदि। [यद् देव आज्ञापयति।] (इति निष्क्रान्ता)

राजा—पार्वतायन! त्वमपि स्वनियोगमशून्यं कुरु।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति देवः। (इति निष्क्रान्तः।)

विदूषकः—किदं भअदा णिंमक्खिअं, संपदं सिसिरविच्छेअरमणीए इमस्सिं पमदवणुद्देसे अत्ताणं विणोदेहि। [कृतं भवता निर्मक्षिकम्, साम्प्रतं शिशिरविच्छेदरमणीये अस्मिन् प्रमदवनोद्देशे आत्मानं विनोदय।]

राजा—(निःश्वस्य) वयस्य! यदुच्यते रन्ध्रोपपातिनोऽनर्था इति तदव्यभिचारि। पश्य—

शक्यम्। अत एव आर्येण=माननीयेन, मन्त्रिणा भवता, यत् पौरकार्यम्=पुरजनसम्बद्धं कर्म, प्रत्यवेक्षितम्=पर्यालोचितम्, तत्=कार्यम्, पत्रमारोप्य=पत्रे लिखित्वा, प्रस्थाप्यताम्=प्रेष्यताम्।

प्रतिहारी—यद्देव=यथा भवान् आज्ञापयति। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ता)

राजा—पार्वतायन=कञ्चुकीयस्य नामधेयम्। त्वमपि, स्वनियोगम्=स्वाधिकारम्, अशून्यम्=अनुष्ठितम्, कुरु।

कञ्चुकी—यदाज्ञापयति=यथा ब्रवीति, निर्दिशति, देवः=प्रभुः। (इति निष्क्रान्तः)

विदूषकः—कृतम्=विहितम्, भवता=त्वया, निर्मक्षिकम्=निर्जनम्, साम्प्रतम्=अधुना, शिशिरविच्छेदेन=शीतकालापगमेन, रमणीये=मनोहरे, अस्मिन्=सम्मुखस्थे, प्रमदवनोद्देशे=उद्याने, आत्मानं, विनोदय=आनन्दय।

राजा—(निश्वस्य=दीर्घमुष्णञ्चेति) वयस्य=मित्र! यद् उच्यते=कथ्यते लोकैः, अनर्थाः=

प्रतीहारी—जैसी प्रभु की आज्ञा। (प्रस्थान)

राजा—पार्वतायन! तुम भी मेरी आज्ञा का पालन करो (अपना कार्य देखो)।

कञ्चुकी—महाराज की जो आज्ञा। (प्रस्थान)

विदूषक—आपने इस स्थान को जनशून्य बना दिया है, अतः अब शीतकाल बीत जाने के कारण मनोहर इस प्रमदवन के किसी स्थान पर बैठकर अपना मन बहलाइए।

राजा—(साँस भरकर) सखे! जो यह कहा जाता है कि विपत्तियाँ छिद्र पाकर ही उपस्थित हुआ करती हैं, वह ठीक ही है। देखो—

---

business of the citizens may have been looked into by your honour shuld be sent to me after having put it in a letter.

Door-keeper—As your majesty commands. *(Exit)*

The king—Parvatāyana! you also occupy your own office.

Chamberlain—As your majesty commands. *(Exit)*

Jester—You have made the place free from every fly. Now you will recreate yourself in this region of the pleasure-garden, which is delightful on account of the saperation from winter season.

The king—Friend! what they say that calamities rush in at vulnerable points is a saying which never fails. How—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः।
मनसिजेन सखे! प्रहरिष्यता धनुषि चूतशरश्च निवेशितः॥७॥
उपहितस्मृतिरङ्गुलिमुद्रया प्रियतमामनिमित्तनिराकृताम्।
अनुशयादनुरोदिमि चोत्सुकः सुरभिमाससुखं समुपैति च॥८॥

उपद्रवाः, रन्ध्रेण=निरूढावकाशेन, उपपतन्ति=आगच्छन्ति, इति रन्ध्रोपपातिनः= छिद्रोपसर्पिणः, तद् वचनम्, अव्यभिचारी=सत्यमेव। पश्य—

अन्वयः—मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना तमसा इदं मम मनः मुक्तञ्च। हे सखे! प्रहरिष्यता मनसिजेन धनुषि चूतशरः निवेशितः॥७॥

मुनिसुतेति। मुनिसुतायाः=कण्वदुहितुः शकुन्तलायाः, प्रणयस्य=प्रेम्णः, स्मृतिं, रुणद्धि= प्रतिबध्नाति, तेन मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना, तमसा=तमोगुणोद्भवेन मोहेन, इदं मम मनः, मुक्तञ्च=परित्यक्तञ्च, हे सखे! प्रहरिष्यता=प्रहारं करिष्यता, मनसिजेन=कामेन, धनुषि=स्वकीय-पुष्पचापे, चूतशरः=आम्रमञ्जरीरूपबाणः, निवेशितः=मयि निवेशार्थं नियोजितश्च। अत्र स्मरणा-लङ्कारः। द्रुतविलम्बितं वृत्तम्॥७॥

भावार्थः—स्मरेण मयि प्रहर्तुमिच्छतापि एतावत्कालं व्याप्योपयुक्तोऽवसरो न समासादितः, किन्तु तत्र यदैव मम मनो मोहयुक्तं सत् शकुन्तलां स्मृतिं निन्ये, तदानीमेवासौ स्वोपयुक्तावसरमासाद्य मयि प्रहर्तुं सम्प्रवृत्तः॥७॥

अन्वयः—अङ्गुलिमुद्रया उपहितस्मृतिः उत्सुकः अनिमित्तनिराकृतां प्रियतमाम् अनु अनुशयात् रोदिमि च सुरभिमाससुखं समुपैति च॥८॥

उपहितेति। अङ्गुलिमुद्रया=स्वनामाङ्कितकराङ्गुरीयकदर्शनेन, उपहिता=उत्पादिता, स्मृतिः= शकुन्तलापरिणयस्मरणं, यस्य सः तथाभूतोऽहम्, उत्सुकः=उत्कण्ठितः व्याकुलो वा, अनिमित्त-निराकृताम्=अकारणप्रत्यादिष्टाम्, प्रियतमां=शकुन्तलाम्, अनु=लक्ष्यीकृत्य, अनुशयात्=पश्चात्तापात्,

---

मुनितनया शकुन्तला की प्रणयस्मृति में बाधा पहुँचाने वाले मोह ने मेरे मन को छोड़ दिया (और यह देखकर) कामदेव ने अपने धनुष पर आम्रमञ्जरी का बाण चढ़ा लिया॥७॥

उस नामाङ्कित अँगूठी ने मेरी स्मृति जगा दी कि मैंने अकारण ही अपनी निर्दोष प्रियतमा को छोड़ दिया था। अब उसके लिए व्याकुल होकर सतत रोता रहता हूँ और इधर यह वसन्त का आनन्ददायी मास भी आ उपस्थित हुआ है॥८॥

No sooner was my mind abandoned by the darkness which obstructed the remembrance of my love for the sage's daughter, then oh friend! the shaft of the mango-blossom was fixed on his flowery bow by the mind-born (Kāma) who is about to strike (on me). (7)

That ring on which my name was engraved awakened the memory of mine. I insulted and discarded my beloved wife unnecessarily. Now, being anxious for her, I am contineuously weeping. Mean while (when I am in such a critical posiiton)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो वअस्स! चिट्ठ दाव इमिणा दंडकट्ठेण कंदप्पवाणं णासेमि। [भो वयस्य! तिष्ठ तावत् अनेन दण्डकाष्ठेन कन्दर्पबाणं नाशयामि।] (इति दण्डकाष्ठमुद्यम्य चूताङ्कुरं ताडयितुमिच्छति।)

राजा—(सस्मितम्) भवतु,-दृष्टं ब्रह्मवर्च्चसम्। सखे! क्वेदानीमुपविष्टः प्रियायाः किञ्चिदनुकारिणीषु लतासु दृष्टिं विनोदयामि?

विदूषकः—णं भअदा आसण्णपरिचारिआ लिविअरी मेहाविणी आदिट्ठा माहवीलदाहरए इमं वेलं अदिवाहिस्सं तहिं चित्तफलए मे सहत्थलिहिदं तत्थभोदीए सउंतलाए पडिकिदिं आणेहि त्ति। [**ननु भवता आसन्नपरिचारिका लिपिकरी मेधाविनी आदिष्टा माधवीलतागृहे इमां वेलामतिवाहयिष्यामि तस्मिन् चित्रफलके मे स्वहस्तलिखितां तत्रभवत्याः शकुन्तलायाः प्रतिकृतिमानयेति।**]

रोदिमि=विलपामि च, सुरभिमाससुखं=वसन्तमासोपस्थितिबन्धनं सुखम्, समुपैति=समुपस्थितं भवति च। अत्र समुच्चयोऽलङ्कारः, स्मरणालङ्कारोऽपि। द्रुतविलम्बितं नाम वृत्तम्॥ ८॥

भावार्थः—प्रियावियोगजनितदुःखावकाशमासाद्यैव निरतिशयसुरतसुखसम्पादको वसन्तमासः समायातः॥ ८॥

विदूषकः—भोः वयस्य=सखे! तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, तिष्ठ=सन्तापं मा कृथाः। (यावत्) अनेन=करस्थितेन, दण्डकाष्ठेन=लगुडेन, कन्दर्पबाणं=स्मरसन्निहितआम्रमुकुलबाणं, नाशयामि=निहन्मि। (इति=इत्युक्त्वा, दण्डकाष्ठमुद्यम्य=लगुडंमुत्तोल्य, चूताङ्कुरम्=आम्रमुकुलं, ताडयितुं=कन्दर्पबाणत्वादाहन्तुम्, इच्छति=वाञ्छति।

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) भवतु=कन्दर्पबाणनाशनोद्योगः, ब्रह्मवर्चसम्=ब्रह्मतेजः, दृष्टम्=प्रत्यक्षीकृतम् (परिहासोक्तिरियम्)। अथ परिहासमपवार्य प्रकृतानुसरणेन सन्तापशान्तेरुपायं पृच्छति—सखे! क्व=कस्मिन् स्थाने, उपविष्टः=स्थितिमान् भूत्वा, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, किञ्चि-दनुकारिणीषु=स्वल्पसादृश्यवतीषु, लतासु, दृष्टिं=नयनम्, विनोदयामि=आनन्दयामि।

विदूषक—मित्र! आप जरा ठहरिये, मैं इस लाठी से कामदेव के बाण को नष्ट किये देता हूँ। (**यह कहकर लाठी उठाकर आम्रमञ्जरी पर प्रहार करना चाहता है।**)

राजा—(**मुस्कराकर**) अच्छा, मैंने तुम्हारा ब्रह्मतेज देख लिया। सखे! (बताओ) इस समय मैं कहाँ बैठकर प्रियतमा का अनुकरण करने वाली लताओं को देखकर अपने नेत्रों को आनन्दित करूँ।

---

the month of spring season which is full of pleasure has arrived too. (8)

Jester—Dear! wait a while I shall destroy the arrow of cupid (kāma) by means of this wooden stick. *(Raising the wooden stick, desires to destroy the mango-sprout)*

The king—*(With a smile)* Let it be, the Bramanical power is seen. Friend! where seated shall I amuse my sight among the creepers that slightly imitate my beloved.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—ईदृशमेव हृदयाश्वासनम्। तत्तदेवादेशय माधवीलतागृहम्।

विदूषकः—इदो इदो एदु भवं। [इत इत एतु भवान्।]

(इत्युभौ परिक्रामतः, मिश्रकेशी अनुगच्छति)

विदूषकः—एसो मणिसिलावट्टसणाहो माहवीलदामंडवो विवित्तदाए उवहाररमणीज्जदाए णिसग्गमारुदेण अ साअदेण विअ पडिच्छदि तुमं, ता पविसिअ निसीद्दु भवं। [एष मणिशिलापट्टसनाथो माधवीलतामण्डपो विविक्ततया उपहाररमणीयतया निसर्गमारुतेन च स्वागतेनेव प्रतीच्छति त्वाम्; तत् प्रविश्य निषीदतु भवान्।]

विदूषकः—नन्विति सम्बोधने, भवता=त्वया, आसन्नपरिचारिका=सततसन्निकृष्टा सेविका, लिपिकरी=चित्ररचनाकारिणी, मेधाविनी=स्मरणशक्तिसम्पन्ना (अत एव सा न विस्मरिष्यतीति भावः), सा भवता आदिष्टा=उक्ता, यत्, माधवीलतागृहे=माधवीलतानिर्मितगृहे, इमां वेलां=वर्तमानकालम्, अतिवाहयिष्यामि=यापयिष्यामि। तस्मिन् प्रदेशे, चित्रफलके= चित्राङ्कनपट्टे, मे=मम, स्वहस्तलिखितां=स्वकरचित्रिताम्, तत्रभवत्याः=मान्यायाः, शकुन्तलायाः= कण्वदुहितायाः, प्रतिकृतिम्=प्रतिमूर्तिम्, आनय इति आदिष्टा।

राजा—ईदृशमेव=शकुन्तलाप्रतिकृतिदर्शनजन्यमेव, हृदयस्य=विरहसन्तप्तचित्तस्य, आश्वासनं=शान्त्युपायः अस्ति। तत्=तस्मात्, तदेव=माधवीलतामण्डपमेव, आदेशय=तन्मार्गप्रदर्शनेन ब्रूहि।

विदूषकः—इत इतः=अमुनानेन मार्गेण, एतु=आगच्छतु, भवान्।

(इति=इत्युक्त्वा, उभौ=राजा विदूषकश्च, परिक्रामतः=सञ्चरणं कुर्वतः।) (मिश्रकेशी अनुगच्छति=राजाविदूषकयोः पश्चात् गच्छति।)

विदूषक—आपने अपनी सतत पार्श्ववर्तिनी, विशेष स्मरणशक्तिसम्पन्ना चित्रकारिणी को बताया था कि मैं माधवी लतामण्डप में यह समय बिताऊँगा। वहीं (तुम) मेरे द्वारा चित्रफलक पर अङ्कित प्रियतमा शकुन्तला की प्रतिकृति लेती आना।

राजा—अब इसी प्रकार मन को बहलाना होगा। तो चलो माधवीलतागृह का ही मार्ग दिखाओ।

विदूषक—इधर इधर आयें महाराज!

(दोनों घूमते हैं। मिश्रकेशी पीछे-पीछे चलती है।)

Jester—Why! the personal attendant, who has very sharp memory and is an artist has been ordered by you thus—'I shall pass this time in the bower of the Mādhavī creeper. Bring there the portrait of her ladyship Śakuntalā, which on the painting board and is drawn by my own hand.

The king—Such a place for diverting the heart. Therefore show the way for the bower of the Mādhavī creeper.

Jester—This way, this way your majesty may proceed.

(Both walk raund, Miśrakeśī goes after)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(उभौ प्रविश्योपविष्टौ)

मिश्रकेशी—लदासंस्सिदा पेक्खिस्सं दाव पिअसहीए पडिकिदिं, तदो से भत्तुणो वहुमदं अणुराअं णिवेदइस्सं। [लतासंश्रिता प्रेक्षिष्ये तावत् प्रियसख्याः प्रतिकृतिम्, ततः अस्या भर्तुर्बहुमतम् अनुरागं निवेदयिष्यामि।] (इति तथा कृत्वा स्थिता।)

राजा—(निःश्वस्य) सखे! सर्वमिदानीं स्मरामि शकुन्तलायाः प्रथमदर्शनवृत्तान्तम्, यं किल कथितवानस्मि भवते। स भवान् प्रत्यादेशसमये मत्समीपगतो नासीत्, किन्तु पूर्वमपि न त्वया कदाचित् सङ्कीर्तितं तत्रभवत्या नामादिकम्। कच्चिदहमिव विस्मृतवांस्त्वमपि।

विदूषकः—एषः=पुरः स्थितः, मणिशिलायाः=मणिमयशिलायाः, पट्टकेन=फलकेन, सनाथः=युक्तः, मणिशिलापट्टसनाथः, माधव्याः लतायाः मण्डपः=कुञ्जः, माधवीलतामण्डपः, विविक्ततया=विजनतया, उपहारेण=उपायनीकृतेन कुसुमावचयेन, या रमणीयता=मनोहरता, तया उपहाररमणीयतया, . निसर्गमारुतेन=प्राकृतिकवायुना, च, स्वागतेनेव=स्वागतप्रश्नेनेव, त्वाम्, प्रतीच्छति=प्रतिगृह्णाति। तत्=तस्मात्, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय, निषीदतु=विरहतापापनेतुम् उपविशतु, भवान्। (उभौ=राजा विदूषकश्च, प्रविश्य उपविष्टौ)

मिश्रकेशी—लतासंश्रिता=लतावलम्बिनी भूत्वा (लतापृष्ठभागे तिरोहिता भूत्वा), प्रियसख्याः=शकुन्तलायाः, प्रतिकृतिम्=चित्रम्, प्रेक्षिष्ये=अवलोकयिष्यामि। ततः=तत्पश्चात्, अस्याः=शकुन्तलायाः समीपे, भर्तुः=पत्युः, बहुमतं=बहुमानयुक्तं, अनुरोगं=स्नेहं, निवेदयिष्यामि=ज्ञापयिष्यामि। (इति तथा कृत्वा=लता संश्रित्य, स्थिता।)

राजा—(निःश्वस्य=दीर्घमुष्णञ्च निःश्वासं परित्यज्य) सखे!=माधव्य! इदानीम्=सम्प्रति, शकुन्तलायाः=स्वकीयप्रियायाः, सर्वम्=अखिलम्, प्रथमदर्शनवृत्तान्तम्=प्राथमिकसाक्षात्कारकाले

विदूषक—मणिमय शिलापट्ट से युक्त यही माधवीलतामण्डप है। एकान्त में छितराये हुए फूलों के कारण रमणीय तथा प्राकृतिक वायु से सम्पन्न यह प्रदेश मानो स्वागतार्थ आपको बुला रहा है। अतः आप यहाँ प्रवेश कीजिए।

(दोनों प्रविष्ट होकर बैठते हैं।)

मिश्रकेशी—लताओं के पीछे छिपकर मैं अपनी प्रियसखी शकुन्तला का चित्र देखूँगी। इसके पश्चात् शकुन्तला के प्रति इनका जितना आदर और अनुराग है, वह शकुन्तला को जाकर बताऊँगी। (यथोक्त ढंग से बैठ जाती है।)

राजा—(ठण्डी साँस भरकर) सखे! अब मुझे शकुन्तला के प्रथम मिलन का पूरा

Jester—Here the Mādhavī bower, furnished with a slab of crystal stone, is no doubt greeting us with a welcome as though, owing to the lovliness of the offering in the form of the bunches of flowers. Let your majesty take a seat. *(Both effecting entrance take seats)*

Miśrakeśī—Resorting to the creeper, I shall just see my friend's portrait. Then I shall tell her, her husband's manifold affection. *(Remains doing the same)*

The king—*(With a sigh)* Friend! now I remember all about

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—अदो ज्जेव महीबदिहिं खणंपि सहिअआओ सहाआओ णु विरहिदव्वाओ। **[अत एव महीपतिभिः क्षणमपि सहृदयाः सहाया न विरहितव्याः।]**

विदूषकः—ण विसुमरामि, किंतु सव्वं कहिअ अवसाणे उण तुए भणिदं—परिहासविअप्पिओ एसो, ण भूदत्थोत्ति; मए वि मंदबुद्धिणा तधा ज्जेव गहीदं। अधवा भविदव्वदा क्खु एत्थ बलवदी। **[न विस्मरामि, किन्तु सर्वं कथयित्वा अवसाने पुनस्त्वया भणितम्—परिहासविजल्पित एषः, न भूतार्थ इति; मयापि मन्दबुद्धिना तथैव गृहीतम्। अथवा भवितव्यता खल्वत्र बलवती।]**

संवृत्तवृत्तजातम्, स्मरामि=स्मरणपथमानयित्वा विभावयामि। यं=प्रथमदर्शनवृत्तान्तम्, किल इति सम्भावनायाम्, भवते=विदूषकाय, कथितवानस्मि=द्वितीयाङ्के निवेदितवानस्मि। स भवान्=त्वम्, प्रत्यादेशसमये=शकुन्तलाप्रत्याख्यानावसरे, मत्समीपगतः=मत्समीपस्थः, नासीत्। किन्तु, पूर्वमपि=प्रत्यादेशात् प्रागपि, त्वया=विदूषकेण, तत्रभवत्याः=माननीयायाः शकुन्तलायाः, नामादिकम्, न कदाचित्=न कदापि, सङ्कीर्तितम्=नोच्चरितम्, कच्चित्=किम्? अहमिव=यथाहं तथैव त्वमपि, विस्मृतवान्।

मिश्रकेशी—अत एव=एतस्माद् विस्मरणरूपाद्धेतोरेव, महीपतिभिः=राजभिः, क्षणमपि=मुहूर्त्तमपि, सहृदयाः=प्रशस्तमनस्काः, सहायाः=सखायः, न विरहितव्याः=न त्यक्तव्याः।

विदूषकः—न विस्मरामि=सर्वमेव वृत्तजातमवगच्छामि, किन्तु=परन्तु, सर्वं=शकुन्तलावृत्तान्तम्, कथयित्वा=सूचयित्वा, अवसाने=वाक्यशेषे, पुनः=भूयः, त्वया=भवता, भणितम्=कथितम्, एषः=मदुक्तशकुन्तलापरकवृत्तान्तः, परिहासविजल्पितः—परिहासेन, विजल्पितः=

समाचार स्मरण आ रहा है—जो मैं आपको बता चुका हूँ। जिस समय मैंने उसका परित्याग किया आप मेरे पास नहीं थे किन्तु पहले भी कभी आप मान्या शकुन्तला का नाम आदि कभी जबान पर नहीं लाये। क्या मेरी ही तरह आप भी तो उसे भूल नहीं गये थे?

मिश्रकेशी—इसीलिए क्षणभर भी राजा को किसी सहृदय सहायक के बिना अकेले नहीं रहना चाहिए।

विदूषक—मैं भूला नहीं हूँ किन्तु उस समय आपने सारा वृत्तान्त सुनाने के बाद कहा था कि यह सब मजाक में कहा है, सच न समझ लेना और इसीलिए मन्दबुद्धि मैंने भी

---

the first meeting with Śakuntalā. I also had told it to you. You were not present near me at the time of repudiation. Even before was never mentioned by you the name of her ladyship. Was it that you have also forgotten (her) like me?

Miśrakeśī—That's why, I, king should not remain alone even for a moment, leaving his generous friends or helpers.

Jester—I do not forget. But after telling all in the end again you said thus—this is a random talk in just, not a real fact. By me

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—एवं णेदं। [एवमेतत्।]

राजा—(क्षणं ध्यात्वा) सखे! परित्रायस्व माम्।

विदूषकः—भो वअस्स! किं एदं तुह उववण्णं? ण कदा वि सप्पुरिसा सोअचित्ता होंति। णं पवादेवि णिक्कंपाज्जेव गिरिओ। [भो वयस्य! किमेतत्तव उपपन्नम्? न कदापि सत्पुरुषाः शोकचित्ता भवन्ति। ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा एव गिरयः।]

राजा—वयस्य! निराकरणविक्लवायास्ते सख्यास्तामवस्थामनुस्मृत्य बलवदशरणोऽस्मि। सा हि—

कथितः (अनर्थकमुक्तः), न भूतार्थः=न सत्यार्थ इति। मन्दबुद्धिना=जडबुद्धिना, मया=विदूषकेणापि, तथैव=परिहासविजल्परूपेणैव, गृहीतम्=अङ्गीकृतम् (बुद्धम्), अथवा=पक्षान्तरे, भवितव्यता=नियतिः, खल्विति निश्चयेन, अत्र=अस्मिन् प्रकरणे (विषये), बलवती=बलिष्ठा।

मिश्रकेशी—एवमेतत्—एतत्=अत्रालोच्यमानं वस्तु, एवम्=ईदृशमेव, नाऽत्र कोऽपि दोषभाक् इत्यर्थः।

राजा—(क्षणं ध्यात्वा=मुहूर्तं विचिन्त्य) सखे! मां=राजानं, परित्रायस्व=परिरक्ष।

विदूषकः—भो वयस्य!=भो मित्र! तव=राज्ञो दुष्यन्तस्य, एतत्=कातरभावः, किमुपपन्नम्=किं सङ्गतम्? सत्पुरुषाः=साधवः, शोकः=इष्टवियोगदुःखं, चित्ते येषान्ते शोकचिताः, कदापि=कस्यामपि दशायाम्, न भवन्ति। ननु=यस्मात्, प्रवातेऽपि वाते, गिरयः=पर्वताः, निष्कम्पाः=अचला एव तिष्ठन्ति।

राजा—निराकरणेन=प्रत्याख्यानेन, विक्लवायाः=कातरायाः, निराकरणविक्लवायाः, ते=तव, सख्याः=शकुन्तलायाः, ताम्=अतिशयशोचनीयाम्, अवस्थाम्=दशाम्, अनुस्मृत्य=चिन्त-

---

उसे उसी रूप में मान लिया था अथवा कहना चाहिए कि इस प्रसंग में भाग्य की ही प्रधानता रही है।

मिश्रकेशी—यही ठीक है।

राजा—(क्षणभर ध्यान करके) सखे! मेरी रक्षा करो।

विदूषक—क्या ऐसा कहना तुम्हारे लिए उचित है? सत्पुरुष कभी शोकाकुल नहीं होते। प्रबल वायु के प्रवाह में भी पर्वत अडिग ही रहते हैं।

राजा—मित्र! तुम्हारी सखी शकुन्तला जब मेरे द्वारा त्याग देने के कारण व्याकुल हो

---

also, whose intellect is like a lump of clay, it was understood as even so or destiny indeed is powerful.

Miśrakeśī—So it is indeed.

The king—*(Meditating for a white)* Friend! save me.

Jester—Oh friend! what is this? Such (speach) is really unbecoming of you. Never do good persons allow themsalves to be the receptacle of grief. Why even in a tempetuous wind the mountain remain quiverless (immovable).

The king—Friend! recollecting the condition of my

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इतः प्रत्यादिष्टा स्वजनमनुगन्तुं व्यवसिता
स्थिता तिष्ठेत्युच्चैर्वदति गुरुशिष्ये गुरुसमे।
पुनर्दृष्टिं बाष्पप्रकरकलुषामर्पितवती
मयि क्रूरे यत्तत् सविषमिव शल्यं दहति माम्॥ ९॥

मिश्रकेशी—अम्हहे! ईदिसी परवसदा इमस्स मंपि संदाबेदि। [अहो! ईदृशी परवशता अस्य मामपि सन्तापयति।]

यित्वा, बलवत्=अत्यर्थमेव, अशरणः=दुःखाक्रमणात् निरालम्बः, अस्मि। हि=यस्मात्, सा=शकुन्तला—

अन्वयः—इतः प्रत्यादिष्टा स्वजनम् अनुगन्तुं व्यवसिता, (परञ्च) गुरुसमे गुरुशिष्ये तिष्ठ इति उच्चैः वदति सति स्थिता सा क्रूरे मयि बाष्पप्रकरकलुषां दृष्टिं यत् पुनरर्पितवती तत् सविषं शल्यमिव मां दहति॥ ९॥

इत इति। इतः=मत्सकाशात्, प्रत्यादिष्टा=निराकृता सती, स्वजनं=शार्ङ्गरवादिम्, अनुगन्तुम्=अनसर्तुं, व्यवसिता=उद्युक्ता, (परञ्च) गुरुसमे=कण्वसदृशे (गुरुवन्माननीये), गुरुशिष्ये=गुरुसदृशे शार्ङ्गरवे, तिष्ठ=अनुगमनाद् विरम, इति=इमं शब्दम्, उच्चैः=तारस्वरेण, वदति सति, स्थिता=अनुसरणान्निवृत्ता, सा=शकुन्तला, क्रूरे=कठोरहृदये, मयि=दुष्यन्ते, बाष्पाणां=नेत्रोदकानां, प्रकरेण=निर्गमेन, कलुषां=मलिनां, बाष्पप्रकरकलुषाम्, दृष्टिं=नयनम्, यत् पुनरर्पितवती=निक्षिप्तवती, तत्=दृष्ट्यर्पणम्, सविषम्=विषाक्तम्, शल्यमिव=बाणाग्रमिव, मां दहति=सन्तापयति। अत्र सविषं शल्यमिव इति श्रौतोपमा तथा लाटानुप्रासश्चालङ्कारौ। शिखरिणी वृत्तम्॥ ९॥

भावार्थः—सा मत्सकाशात् निराकृता सती स्वान् गताः, तैरपि त्यक्ता पुनर्मामेव प्राप्ता, क्रूरस्त्वं तथापि विमुखे एव आसम्। अद्य पुनस्तत् सर्वं स्मृत्वा अत्यर्थमशरणोऽस्मीति तर्कयामि॥ ९॥

गई थी—उस समय की उसकी अवस्था का स्मरण कर मैं स्वयं को सर्वथा असहाय-सा पाता हूँ। क्योंकि जब वह—

मेरे द्वारा अपमानित होकर स्वजनों के साथ जाने लगी उस समय गुरु (पिता) के समान कण्व के शिष्य शार्ङ्गरव ने उसे ऊँचे स्वर में रुकने का आदेश दिया था, इस पर उसने रुककर मुझ क्रूर पर अपनी आँसुओं से कलुषित जो दृष्टि डाली थी वह विष-बुझे बाण के अग्रभाग की तरह आज भी मुझे जला (साल) रही है॥ ९॥

मिश्रकेशी—ओह! इसकी ऐसी अधीरता तो मुझे भी सन्तप्त बनाये दे रही है।

---

beloved, distressed at my rejection, I have become exceedingly helpless. For she—

Owing to her repudiation from her (i.e. from me), moved to follow her own kinsmen, (but) stopped as her father's pupil, who was her father's equal, was loudly saying 'stay' (and she) again cast her eye bedimmed with the flow of tears, on me, who was cruel, it is all that which burns me like an envenomed (infuse poison) shaft.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो! अत्थि मे तक्को, केन उण तत्थभोदी आआससंचारिणा णीदेत्ति। [भोः! अस्ति मे तर्कः, केन पुनस्तत्रभवती आकाशसञ्चारिणा नीतेति।]

राजा—वयस्य! कः पतिव्रतां तामन्यः परामर्ष्टुमुत्सहते। मेनका किल सख्यास्ते जन्मप्रतिष्ठेति तत्सखीजनादस्मि श्रुतवान्; तत्सहचरीभिस्तया वा नीतेति हृदयमाशङ्कते।

मिश्रकेशी—संमोहे वि विह्मणीओ क्खु इमस्स पडिबोधो। [सम्मोहेऽपि विस्मयनीयः खल्वस्य प्रतिबोधः।]

मिश्रकेशी—अहो! इत्याश्चर्ये, अस्य=राज्ञो दुष्यन्तस्य, ईदृशी, परवशता=पराधीनता, मामपि=उदासीनामपि, सन्तापयति=व्याकुलयति।

विदूषकः—भो=भो वयस्य! केनापि आकाशसञ्चारिणा=व्योमविहारिणा पुरुषेण, तत्रभवती=मान्या शकुन्तला, नीता=अपहृता, इति मे=मम, तर्कः=अनुमानमस्ति।

राजा—वयस्य=सखे! कोऽन्यः=कः लम्पटः (अपरः), पतिंव्रतां=साध्वीम्, तां= शकुन्तलाम्, परामर्ष्टुम्=स्प्रष्टुम्, उत्सहते=अध्यवस्यति, मेनका=तदाख्या अप्सराः, किल=इति निश्चये, ते=तव, सख्याः=शकुन्तलायाः, जन्मप्रतिष्ठा=उत्पत्तिस्थानमस्ति, इति=एवम्, तत्सखी-जनात्=शकुन्तलासखीजनसकाशाद्, श्रुतवान् अस्मि। तत्सहचरीभिः—तस्याः=मेनकायाः, सह-चरीभिः=सखीभिः, तया वा=मेनकया वा, नीता=स्वस्थानं प्रापिता (अपहृता), इति=ईदृशम्, मे= मम, हृदयम्=चित्तम्, आशङ्कते=सम्भावयति।

मिश्रकेशी—सम्मोहेऽपि=चित्तविकलतायामपि, विस्मयनीयः=आश्चर्यकरः, खल्विति निश्चये, अस्य= दुष्यन्तस्य, प्रतिबोधः=अनुभवः।

विदूषक—मित्र! मैं जानना चाहूँगा कि कौन आकाशचारी उन्हें उड़ा ले गया होगा?

राजा—मित्र! अन्य कौन व्यक्ति उस पतिव्रता का स्पर्श कर सकता है? मेनका तुम्हारी सखी की माता है, यह मैंने शकुन्तला की सखियों से सुना था। इसी से सम्भावना होती है कि मेनका की सहचरियों में से कोई अथवा स्वयं मेनका ही उसे अपने स्थान पर ले गई होगी।

मिश्रकेशी—इस प्रकार की व्याकुलता के अवसर पर भी इनकी स्मरणशक्ति आश्चर्यजनक है।

Miśrakeśī—Oh! such devotion is pinning me too.

Jester—Oh! I want to know, by which aerial being her ladyship was taken away?

The king—Who else would dare to touch rudely her; a chest women? I have heard that Menakā is really the place of your friend's birth. My heart suspects that your friend was carried away by her companions or by Menakā herself.

Miśrakeśī—The infatuation indeed is to be wondered at not the awakening.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो! जइ एव्वं, ता समस्ससदु भवं; अत्थि क्खु समागमो कालेण तत्थभोदिए। [भो! यद्येवम्, तत् समाश्वसितु भवान्; अस्ति खलु समागमः कालेन तत्रभवत्याः।]

राजा—कथमिव?

विदूषकः—ण क्खु मादापिदरा भत्तिविओअदुक्खिदं दुहिदरं चिरं पेक्खिदुं पारेंति। [न खलु मातापितरौ भर्तृवियोगदुःखितां दुहितरं चिरं प्रेक्षितुं पारयतः।]

राजा—वयस्य!

स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु क्लृप्तं नु तावत् फलमेव पुण्यैः।
असन्निवृत्त्यै तदतीतमेव मनोरथानामतटप्रपातः॥ १०॥

विदूषकः—भो इति सम्बोधने, यद्येवं=यदि शकुन्तला मेनकया तत्सखीभिः वा नीता चेत्, तत्=तदा, समाश्वसितु भवान्=त्वम् आश्वासनमानय। खलु=यस्मात्, कालेन=कदापि, तत्रभवत्याः=शकुन्तलायाः, समागमः=सम्मेलनम्, अस्ति=भविष्यत्येव।

राजा—कथमिव=केन रूपेण सम्भावयामि?

विदूषकः—माता च पिता च मातापितरौ, भर्तुः=पत्युः, वियोगेन=विरहेण, दुःखितां=सन्तापवतीम्, भर्तृवियोगदुःखिताम्, दुहितरं=कन्याम्, चिरं=दीर्घकालम्, प्रेक्षितुं=द्रष्टुं, न=नहि, खल्विति निश्चये, पारयतः=शक्नुतः।

राजा—वयस्य!

अन्वयः—तत् स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु पुण्यैः तावदेव फलं क्लृप्तं नु। तत् असन्निवृत्त्यै अतीतं मनोरथानाम् अतटात् प्रपातः (एव) भवति॥ १०॥

स्वप्न इति। तत्=शकुन्तलालक्षणं वस्तु तत्सङ्गमनसुखं वा, स्वप्नो नु=स्वाप्नं वस्तु किम्? माया नु=ऐन्द्रजालिकादि निर्मितं वस्तु किम्? मतिभ्रमो नु=मतिभ्रमेण प्रतीतं वस्तु किम्?

विदूषक—यदि ऐसा है तो आप धैर्य रखें, निश्चय ही यथासमय शकुन्तला के साथ आपका मिलाप होगा।

राजा—कैसे?

विदूषक—माँ-बाप पतिवियोग से दुःखी कन्या को अधिक समय तक नहीं देख सकते।

राजा—मित्र! मेरा और शकुन्तला का जो मिलन हुआ था, वह स्वप्न था, माया थी, मेरी बुद्धि का भ्रम था अथवा मेरे पूर्वजन्मार्जित पुण्यों का एकमात्र फल था? वह सम्मिलन

Jester—If so, there is indeed union with her ladyship in time.

The king—How possibily?

Jester—Not indeed are the father and the mother able to behold their daughter afflicted (harassed) by separation from her husband.

The king—Friend!

Was it a dream or an illusion or a delusion of the mind or

 CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो! मा एव्वं। णं अंगुलीअअं ज्जेव एत्थ णिदंसणं। अवस्संभाविणो अचिंतणीअसमागमा होंति। [**भोः! मैवम्। नन्वङ्गुरीयकमेवात्र निदर्शनम्। अवश्यम्भाविनोऽचिन्तनीयसमागमा भवन्ति।**]

राजा—(अङ्गुरीयकं विलोक्य) अये! इदं तदसुलभस्थानभ्रंशि शोचनीयम्।

पुण्यैः=पूर्वजन्मार्जितसुकृतैः, तावदेव=तत्परिमितकालभोग्यमेव, फलं=शकुन्तलासङ्गमनसुखरूपम्, क्लृप्तं नु=उत्पादितं किम्? तत्=शकुन्तलासङ्गमनसुखम्, असन्निवृत्त्यै=अपुनरावर्त्तनाय, अतीतं= गतमेव, मनोरथानां=तद्गताभिलाषाणां पुनः, अतटात्=भृगोः उच्चस्थानात्, प्रपातः=प्रकर्षेण पतनमेव भवतीति शेषः। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः, पूर्वार्द्धे तु शुद्धसन्देहोऽलङ्कारः। काव्यलिङ्गमलङ्कार इति केचित्। उपजातिर्वृत्तम्॥ १०॥

भावार्थः—यथा कश्चिज्जनः पर्वतादेरुच्चदेशात् पतितो मृत्युमुखं याति तद्वन्ममाभिलाषपरम्परापि शकुन्तलासङ्गमनसुखरूपविषयात् प्रभ्रष्टा विनाशमुपगच्छतीत्यनर्थकं तदाशाकरणमिति भावः॥ १०॥

विदूषकः—भो! मैवं भण, ननु=यस्मात्, अत्र=शकुन्तलासङ्गमनादिरूपविषये, अङ्गुरीयकम्=अङ्गुलिमुद्रैव, निदर्शनम्=दृष्टान्तः। (यथा मत्स्योदरगतस्यासम्भावितसमागमस्याप्यङ्गुरीयकस्य पुनर्लाभो दैवेन घटितः तथैव शकुन्तलया सह सङ्गमं भविष्यतीत्याशयः।) अवश्यं भविष्यन्तीत्यवश्यम्भाविनो विषयाः, अचिन्तनीयः=अनिर्द्धारणीयः, समागमः=सङ्गमः, येषान्ते अचिन्तनीयसमागमाः भवन्ति (नैराश्यं मा व्रज शकुन्तलासमागमोऽवश्यं भविष्यतीति भावः)।

राजा—(अङ्गुरीयकं=कराङ्गुलिमुद्रिकां, विलोक्य=दृष्ट्वा) अये! इति विषादे, इदम्=अङ्गुरीयकम्, तद्=शकुन्तलाया अङ्गुलीरूपं यदसुलभं=दुष्प्रापं, स्थानं, तस्मात् भ्रश्यति=पततीति तथोक्तं, तदसुलभस्थानभ्रंशि, शोचनीयम्=शोच्यमेव सञ्जातम् (शकुन्तलाङ्गुलीरूपस्थानस्य भूयो दुष्प्रापत्वादिति भावः)।

सुख तो चला ही गया, अब लौटकर नहीं आयेगा। इसी कारण उस विषय में जितनी आशाएँ (कल्पनाएँ, संभावनाएँ) की जा रही हैं वे सब ऊँचे शिखर से नीचे गिरने वाले प्रपात की भाँति शून्य में विलीन हो रही हैं॥ १०॥

विदूषक—अरे! ऐसा न कहो। देखो, वह अँगूठी ही इस विषय का प्रमाण है। अवश्यंभावी बात के संयोग भी सहसा ही बनते हैं।

राजा—(**अँगूठी को देखकर**) ओह! यह अँगूठी उस दुर्लभ स्थान पर गिर गई थी, यही बात इस समय शोक का कारण बन गई है।

---

merit exhausted with only that much fruit? That has gone away, never to return. These hopes are indeed falls from a precipice.

Jester—Oh! not so. The ring itself is an illustration that a union, which is necessarily to take place happens unthought of.

The king—(Looking the ring) Oh! this in the mean while is to be lamented, fallen as it is from a not easily obtainable place.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तव सुचरितमङ्गुरीय! नूनं प्रतनु कृशेन विभाव्यते फलेन।
अरुणनखमनोहरासु तस्याश्च्युतमसि लब्धपदं यदङ्गुलीषु॥ ११॥

मिश्रकेशी—जइ अण्णहत्थगदं भवे, तदो सच्चं सोअणीअं भवे। सहि! दूरे वट्टसि, एआइणि ज्जेव कण्णसुहाइं अणुभवेमि। [यदि अन्यहस्तगतं भवेत्, ततः सत्यं शोचनीयं भवेत्। सखि! दूरे वर्त्तसे, एकाकिन्येव कर्णसुखानि अनुभवामि।]

विदूषकः—भो! इअं णाममुद्दा केण उद्देसेण भअदा तत्थभोदीए हत्थसंसग्गं पाविदा। [भोः! इयं नाममुद्रा केन उद्देशेन भवता तत्रभवत्या हस्तसंसर्गं प्रापिता।]

अन्वयः—हे अङ्गुरीय! कृशेन तव सुचरितं नूनं प्रतनु विभाव्यते, यत् अरुणनखमनोहरासु तस्याः अङ्गुलीषु लब्धपदं (त्वम्) च्युतमसि॥ ११॥

तवेति। हे अङ्गुरीय! कृशेन=क्षुद्रेण फलेन, तव सुचरितं=तादृशफलनिदानभूतं पुण्यम्, नूनम्=निश्चितम्, प्रतनु=क्षुद्रमासीदिति, विभाव्यते=मयानुमीयते, यत्=यस्मात्, अरुणैः=लोहित-वर्णैः, नखैः=कररुहैः, मनोहरासु अरुणनखमनोहरासु, तस्याः=शकुन्तलायाः, अङ्गुलीषु, लब्धं पदं येन तत् लब्धपदम्=प्राप्तावस्थानं सत् (त्वम्), च्युतम्=ततो भ्रष्टमसि। अत्र अनुमान-समासोक्तिश्चालङ्कारौ। पुष्पिताग्रा वृत्तम्॥ ११॥

भावार्थः—हे अङ्गुरीयक! यदि तावत्तव सुचरिताधिक्यं स्यात् तदावश्यं दीर्घकाल-व्याप्यावस्थानमपि स्यात्तत्तु नास्तीत्याशयः॥ ११॥

मिश्रकेशी—यदि, अन्यहस्तगतं=दुष्यन्तेतरकरगतम्, ततः=तदा, सत्यम्=अवश्यम्, शोचनीयम्=शोच्यम्, भवेत्। सखि! (शकुन्तलामुद्दिश्य कथयति) दूरे वर्त्तसे=मत्समीपे न वर्त्तसे, (अत एव) एकाकिन्येव=त्वद्विनैव, कर्णसुखानि=श्रवणमधुराणि राजवचनानि, अनुभवामि।

विदूषकः—भोः! इयं नाममुद्रा=नामाङ्कितमङ्गुरीयकम्, केनोद्देशेन=किमुद्दिश्य, भवता=त्वया, तत्रभवत्याः=शकुन्तलायाः, हस्तसंसर्गं=करसम्बन्धम्, प्रापिता=नीता।

मुद्रिके! अल्प फल देखकर तुम्हारा पुण्य भी अल्प ही है—मैं ऐसा अनुमान करता हूँ, क्योंकि तुम उस शकुन्तला के रक्तवर्ण नखों वाली अँगुली में स्थान पाकर भी गिर पड़ी थी॥ ११॥

मिश्रकेशी—यदि यह किसी और के हाथ लग जाती तो अवश्य शोक का कारण बन जाती। सखी! तुम यहाँ से दूर हो, अतः मैं अकेली ही कर्णसुख भोग रही हूँ।

विदूषक—हाँ, तो आपने अपने नाम से अंकित यह अँगूठी किस उद्देश्य से उनके हाथ में दी थी?

Your good deed O ring! is proved by the fruit to be indeed very small, like mine, since having obtained a position on her fingers attractive with their red nails, you have slipped down.

Miśrakeśī—If it had gone to another's hand, quite surely it would have been lamentable (regret). Friend! as you are away, I alone am enjoying the happiness of the ear.

Jester—Oh! by what occasion was this signet ring placed into her ladyship's hand?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—मम वि कोदूहलेण वावारिदो एसो। [**ममापि कौतूहलेन व्यापारित एषः।**]

राजा—वयस्य! श्रूयताम्, तदा स्वनगराय तपोवनात् प्रस्थितं मां प्रिया सबाष्पमाह स्म—'कियच्चिरेणार्यपुत्रः पुनरस्माकं स्मरिष्यती'ति।

विदूषकः—तदो तदो। [**ततस्तः।**]

राजा—अथैनां मुद्रामङ्गुल्यां निवेशयता मया प्रत्यभिहिता।

विदूषकः—किं त्ति? [**किमिति?**]

मिश्रकेशी—अपीति प्रश्ने, मम, कौतूहलेन=शकुन्तलायै नाममुद्रार्पणस्य कारण-श्रवणेच्छया, एषः=विदूषकः, अपि व्यापारितः=पृच्छकत्वेन किं नियुक्तः (कथमयं मम कौतुकोत्पत्तिक्षणे एव पृच्छतीत्याशयः।)

राजा—वयस्य=सखे! श्रूयताम्=आकर्ण्यताम्, तदा, स्वनगराय=स्वनगरं हस्तिनापुरम्, तपोवनात्=कण्वाश्रमात्, प्रस्थितम्=प्रस्थातुमारब्धम्, मां=दुष्यन्तम्, प्रिया=शकुन्तला, सबाष्पम्=साश्रुजलम्, आह स्म, कियच्चिरेण=कियद्विलम्बेन, आर्यपुत्रः, पुनः=भूयः, अस्माकम्=अस्मान्, स्मरिष्यति इति।

विदूषकः—ततस्ततः=तदनन्तरं किमभूत्?

राजा—अथ=शकुन्तलायास्तादृशप्रश्नात् परम्, एनां=सम्प्रति मद्हस्तगताम्, मुद्राम्=अङ्गुलीयम्, अङ्गुल्यां=शकुन्तलायाः अङ्गुलौ, निवेशयता=परिधापयता, मया=दुष्यन्तेन, प्रत्यभि-हिता=प्रत्युक्ता।

विदूषकः—किमिति=किं त्वया सा प्रत्यभिहिता?

मिश्रकेशी—क्या मेरे ही कौतूहल ने इसे यह बात पूछने के लिए प्रेरित किया है?

राजा—मित्र! सुनो, जिस समय मैं तपोवन से विदा हो रहा था—उसी समय मेरी प्रिया ने आँखों में आँसू भरकर कहा था—"आर्यपुत्र अब कितने दिन बाद मेरा स्मरण करेंगे?"

विदूषक—तब, तब क्या हुआ?

राजा—इसके बाद अँगूठी उनकी अंगुली में पहनाते हुए मैंने कहा—

विदूषक—क्या कहा?

Miśrakeśī—He also has been impelled by my quriosity.

The king—Friend! listen, as I started for the capital, my beloved with tears in her eyes asked me this—"After how long will my lord remember me?"

Jester—Then (what) then (happened)?

The king—Afterwerds as I put this ring on her finger, I answered her thus—

Jester—What?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—

एकैकमत्र दिवसे दिवसे मदीयं नामाक्षरं गणय गच्छसि यावदन्तम्।
तावत् प्रिये! मदवरोधनिदेशवर्त्ती नेता जनस्तव समीपमुपैष्यतीति॥ १२॥

तच्च दारुणात्मना मया मोहान्नानुष्ठितम्।

मिश्रकेशी—रमणीओ क्खु अवही विहिणा विसंवादिदो। [रमणीयः खल्ववधिर्विधिना विसंवादितः।]

अन्वयः—प्रिये! अत्र दिवसे दिवसे एकैकं नामाक्षरं गणय। यावत् अन्तम् गच्छसि तावत् मदवरोधनिदेशवर्ती नेता जनः तव समीपम् उपेष्यति॥ १२॥

एकैकमिति। हे प्रिये!=शकुन्तले! अत्र=तपोवने (स्थितैव त्वम्), दिवसे दिवसे=प्रतिदिनम्, (मदीयम्) एकैकम्=एकमेकम्, नामाक्षरम्=दुष्यन्त इति नाम्नोऽक्षरं, गणय=गणितं कुरु। यावत्=यदा, अन्तम्=चरमक्षरम्, गच्छसि=गणनया प्राप्स्यसि, तावत्=तदा, मदवरोधस्य=ममान्तः-पुरस्य, निदेशे=आज्ञायां, वर्त्तत इति मदवरोधनिदेशवर्ती=मम सौधान्तःपुरचरो कञ्चुकीयः, नेता=त्वामन्तःपुरं प्रापयिष्यन्, जनः, तव समीपम्=अन्तिकम्, उपैष्यति=आगमिष्यति। अत्र पर्यायोक्ति-रलङ्कारः, वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १२॥

भावार्थः—अचिरादेव त्वां नेतुं ममान्तःपुरस्थो जनः आगमिष्यति इत्येवं कथयित्वा समाश्वासिता मया प्रिया॥ १२॥

तत्=प्रियानेतृजनप्रेषणेनानयनम्, दारुणः=भीषणः, आत्मा यस्य सः तेन दारुणात्मना=भयङ्करस्वभावेन, मया=दुर्जनेन दुष्यन्तेन, मोहात्=चित्तविभ्रमात्, नानुष्ठितम्=न कृतम्।

मिश्रकेशी—रमणीयः=शोभनः, अवधिः=नेतृजनप्रेषणेनान्तःपुरानयनकालसीमा, विधिना=दैवेनं, विसंवादितः=विपरीतीकृतः। (नानाक्षरगणना तु बहुशः जाता अन्तःपुरप्राप्ता नेता तु न समायात इति विसंवादितत्वं दैवेनेति चिन्त्यम्।)

राजा—इसी तपोवन में रहती हुई आप एक-एक दिन हमारे नाम के एक-एक अक्षर गिनें। जब गणना अन्तिमाक्षर पहुँचेगी उससे पूर्व ही हमारे अन्तःपुर का कोई सेवक आपको ले जाने के लिए आपके पास पहुँच जायेगा॥ १२॥

और वह दिया हुआ वचन कठोर प्रकृतिवाला मैं मोहवश पूरा न कर सका।

मिश्रकेशी—विधाता ने इन दोनों के उस सुन्दर समय को विपरीत कर दिया।

The king—Darling! count one letter at a time of my name here day by day. As soon as you reach to the end, the person, who will lead you to the entrance of the apartments of my harem, will arrive into your presence. (12)

And that promise was not fulfilled by me, hard-hearted that I am.

Miśrakeśī—A charming appointment (period of time) indeed was failed by the luck itself.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो ! कधं लोहिदमच्छस्स वडिसं विअ मुहप्पविट्टं एदं आसी ? [भोः ! कथं रोहितमत्स्यस्य वडिशमिव मुखप्रविष्टमेतदासीत्।]

राजा—शचीतीर्थे सलिलं वन्दमानायास्ते सख्या हस्ताद्गङ्गास्रोतसि परिभ्रष्टम्।

विदूषकः—जुज्जदि। [युज्यते।]

मिश्रकेशी—अदो क्खु तवस्सिणीए सउंतलाए अधर्मभीरुणो एदस्स राएसिणो परिणए संदेहो जादो। अथवा ण ईदिसो अणुराओ आहिणाणं अवेक्खदि ? दा कधं विअ एदं। [अतः खलु तपस्विन्याः शकुन्तलाया अधर्मभीरोरस्य राजर्षेः परिणये सन्देहो जातः। अथवा नेदृशोऽनुरागः अभिज्ञानमपेक्षते। कथमिवैतत्।]

विदूषकः—भोः=वयस्येति शेषः, कथम्=केन प्रकारेण, लोहितमत्स्यस्य=मत्स्यविशेषस्य, वडिशमिव=मत्स्यधारणास्त्रमिव, एतद् अङ्गुरीयकम्, मुखप्रविष्टम्, आसीत्।

राजा—शचीतीर्थे=शक्रावतारतीर्थस्य शचीघट्टे, सलिलं=पावनं जलं, वन्दमानायाः=स्पर्शपूर्वकं प्रणमन्त्याः, ते=तव, सख्याः=शकुन्तलायाः, हस्तात्=करात्, गङ्गास्रोतसि=गङ्गाप्रवाहे, परिभ्रष्टम्=निपतितम् (अङ्गुरीयकम्) (स च खाद्यबुध्या रोहितमत्स्येन भक्षितम्)।

विदूषकः—युज्यते=शकुन्तलाहस्तादङ्गुरीयकस्य गङ्गास्रोतसि पतनं रोहितोदरगमनञ्च सङ्गच्छत इत्यर्थः।

मिश्रकेशी—अतः खलु=अभिज्ञानभूतायाः अङ्गुलिमुद्रायाः प्रभ्रंशादेव, तपस्विन्याः=दीनायाः, शकुन्तलायाः, परिणये=गान्धर्वविवाहविषये, अधर्मात्=पापात्, भीरोः=भयशीलस्य

विदूषक—सखे ! वंशी की भाँति यह अँगूठी उस रोहू मछली के पेट में कैसे जा पहुँची ?

राजा—जब तुम्हारी सखी शचीतीर्थ में जल की वन्दना कर रही थी उस समय वह अँगूठी गिरकर गंगा की धारा में जा पड़ी (जहाँ खाद्य समझ कर उसे रोहू मछली ने निगल लिया।)

विदूषक—हो सकता है।

मिश्रकेशी—इसी से इस तपस्विनी शकुन्तला के साथ विवाह ही में इस अधर्मभीरु राजर्षि को सन्देह हो गया। इस प्रकार का प्रगाढ़ प्रेम तो किसी स्मृतिचिह्न की अपेक्षा ही नहीं रखता। तब यह विस्मरण ही इसे कैसे हुआ ?

Jester—How did it reach inside the belly of a Rohita fish, like a hook?

The king—It slipped into the stream of the Ganges from the hand of your friend, while she was doing obeisance to the Śachī-tīrtha.

Jester—That's right.

Miśrakeśī—Hence indeed arose the doubt of this sin fearing royal sage regarding the marriage with poor Śakuntalā. Or, how is it that such an affection requires a token of recollection of past memories (recognition).

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—उपालप्स्ये तावदिदमङ्गुरीयकम्।

विदूषकः—(सस्मितम्) भो! अहं पि दाव एदं दंडकट्ठं उवालहिस्सं। कधं उज्जुअस्स मे कुडिलं तुमं सि त्ति। [भो अहमपि तावदेतत् दण्डकाष्ठमुपालप्स्ये। कथम् ऋजुकस्य मे कुटिलं त्वमसीति।]

राजा—(तदश्रृण्वन्नेव)

कथं नु तं कोमलबन्धुराङ्गुलिं करं विहायासि निमग्नमम्भसि।

अथवा—

अचेतनं नाम गुणं न वीक्षते मयैव कस्मादवधीरिता प्रिया॥ १३॥

(परस्त्रीस्पर्शपापशङ्किनः), अस्य राजर्षेः=ऋषिकल्पस्य अस्य राज्ञो दुष्यन्तस्य, सन्देहः=संशयः—मयेयं परिणीता न वेति संशयः, जातः=उत्पन्नः, अथवा=उत, ईदृशः=अलौकिकः, अनुरागः=प्रणयः, अभिज्ञानम्=स्मृतिहेतुचिह्नम्, नापेक्षते=नाकाङ्क्षति स्मारयितुमिति शेषः, तत्=तस्मात्, एतत्=विस्मरणम्, कथमिव=कीदृशम्?

राजा—तावत्=अत एव, इदं=मत्स्योदरादुपलब्धम्, विस्मृतिकारणभूतम्, अङ्गुरीयकम्=करमुद्रिकाम् (एव), उपालप्स्ये=भर्त्सयिष्ये।

विदूषकः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) अहमपि=त्वमिव अहमपि, एतत्=मदीयकर-स्थितम्, दण्डकाष्ठम्=काष्ठनिर्मितदण्डम्, उपालप्स्ये=भर्त्सयिष्ये, कथम्=केन कारणेन, ऋजुकस्य=सरलप्रकृतेः, मे=मम सम्बन्धे, त्वं कुटिलं=वक्रम् असि। (तथा च मम दण्डोपालम्भनस्येव तवाङ्गुलीयकोपालम्भनस्यापि निष्फलत्वमेवेति भावः।)

राजा—(तत्=विदूषककथनम्, अश्रृण्वन्=कर्णगोचरमकुर्वन्नेव)

अन्वयः—हे अङ्गुरीय! कोमलबन्धुराङ्गुलिं तं करं विहाय अम्भसि कथं नु निमग्नामसि? (अथवा) अचेतनं गुणं न वीक्षते (किन्तु) मयैव कस्मात् प्रिया अवधीरिता॥ १३॥

कथंन्विति। हे अङ्गुरीय! कोमलाः=मृदुलाः, बन्धुराः=सुन्दराः, अङ्गुलयो यस्य तं

राजा—तो अब मैं इसी अँगूठी को उपालम्भ दूँगा।

विदूषक—(मुस्कराकर) तो अब मैं भी अपनी लाठी का तिरस्कार करूँगा। हे लाठी! मैं तो सीधा-सादा हूँ फिर तुम मेरी होकर इतनी कुटिल क्यों हो?

राजा—(विदूषक की बात अनसुनी कर)

हे अँगूठी! जिसकी अँगुलियाँ कोमल तथा ऊँची-नीची थीं, प्रिया के उस हाथ को छोड़कर न जाने तुम क्यों जल में डूब गई थी? अथवा यह अचेतन (प्रिया की अँगुलियों) गुणों को कैसे पहचानता, हमीं ने उस समय प्रिया का परित्याग क्यों किया?॥ १३॥

The king—I shall now rebuke this ring.

Jester—I too rebuke my stick. Thus O stick! when I am so simple (straight) why you are so cruel?

The king—*(Not taking any notice of his words)*

O' ring! how possibly could you deeply drowned (merge) into the water, having left that hand of beautiful and delicate

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—सअं ज्जेव पडिवण्णो जं अम्हि वत्तुकामा। [स्वयमेव प्रतिपन्नः, यदस्मि वक्तुकामा।]

विदूषकः—भो! सव्वधा अहं बुभुक्खाए मारिदव्वो। [भोः! सर्वथा अहं बुभुक्षया मारयितव्यः।]

राजा—(अनादृत्य) प्रिये! अकारणपरित्यागादनुशयदग्धहृदयस्तावदनुकम्प्यतामयं जनः पुनर्दर्शनेन।] (प्रविश्य चित्रफलकहस्ता)

कोमलबन्धुराङ्गुलिम्, तं=शकुन्तलायाङ्गभूतम्, करम्=हस्तम्, विहाय=त्यक्त्वा, अम्भसि=गङ्गाजले, कथं=केन निमित्तेन, नु=इति प्रश्ने, निमग्नमसि=निमज्जितमसि ? अथवा, अचेतनं=चेतनाविरहितं वस्तु, गुणं=सौन्दर्यप्रेमादिकं, न वीक्षते=न पश्यति, (किन्तु) मयैव=सचेतनेनैव, कस्मात्=केन निमित्तेन, प्रिया=अनुरागसर्वस्वभूता शकुन्तला, अवधीरिता=तिरस्कृता। अत्र अवधीरणायाः कारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेर्विभावनालङ्कारः, तृतीयचरणे सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १३॥

भावार्थः—हे अङ्गुरीय! कोमलबन्धुराङ्गुलिं शकुन्तलायाङ्गभूतं करं विहाय त्वं किन्निमित्तेन गङ्गाजले निमग्नासि ? अथवा स्वभावत एव अचेतनं गुणं न पश्यति किन्तु सचेतनेनैव मया कस्मात् मदीयहृदयसर्वस्वभूता प्रिया शकुन्तला तिरस्कृता, कथमिदमाचरितं मया इति न जाने॥ १३॥

मिश्रकेशी—यत्=अचेतनस्य गुणदर्शित्वम्, वक्तुकामा=प्रतिविवक्षुरस्मि, तत् नाचेतनस्य गुणदर्शित्वम्, स्वयमेव=प्रष्टा (राजा), प्रतिपन्नः=स्वीकृतवान् (सम्प्रति नास्ति मे तद्विवक्षावसरः इति भावः)।

विदूषकः—भोः! सर्वथा=पूर्णतः (बाढमेव), अहं=विदूषकः, बुभुक्षया=क्षुधातया, मारयितव्यः=विनाशयितव्यः। (तव प्रियासमालोचनापेक्षया मम भोजनसमालोचनस्य गरीयस्त्वाद् त्वदेतदालोचनं विहाय गृहं चल, नो चेत्तव प्रियासमालोचना मामत्रैव विनशिष्यतीति भावः।)

राजा—(अनादृत्य=विदूषककथनमवहेलनापूर्वकं श्रुत्वा). प्रिये! अकारणपरित्यागेन

मिश्रकेशी—मैं जो कुछ कहना चाहती थी, उसे ये स्वयं स्वीकार करते हैं।

विदूषक—अरे! जान पड़ता है भूख से मुझे मार ही डाला जायेगा।

राजा—(उपेक्षापूर्वक) प्रिये! बिना कारण तुम्हारा त्याग कर देने से सन्ताप के कारण मेरा हृदय जला जा रहा है, अतएव पुनः दर्शन देकर इस व्यक्ति पर दया करो।

---

fingers? Or rather—It may be that an animate object may not observe excellence. Why did I myself repudiate my beloved. (13)

Miśrakeśī—What I wanted to say, he (the king) accepts himself.

Jester—How am I to be devoured by hunger?

The king—O causelessly discarded beloved! let this person whose heart burns due to remorse, be just favoured with your sight again.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चेटी—भट्टा! इअं चित्तगदा भट्टिनी। [भर्त्तः! इयं चित्रगता भट्टिनी।] (इति चित्रफलकं दर्शयति)

राजा—(विलोक्य) अहो! रूपमालेख्यगताया अपि प्रियायाः। तथाहि—

दीर्घापाङ्गविसारिनेत्रयुगलं लीलाञ्चितभ्रूलतं
दन्तान्तःपरिकीर्णहासकिरणज्योत्स्नाविलिप्ताधरम्।
कर्कन्धूद्युतिपाटलोष्ठरुचिरं तस्यास्तदेतन्मुखं
चित्रेऽप्यालपतीव विभ्रमलसत्प्रोद्भिन्नकान्तिद्रवम्॥ १४॥

योऽनुशयः=पश्चात्तापः, तेन दग्धं हृदयं=मनः, यस्य सः अकारणपरित्यागादनुशयदग्धहृदयः, अयं=मल्लक्षणो जनः, पुनर्दर्शनेन=पुनः दर्शनप्रदानेन, अनुकम्प्यताम्=अनुगृह्यताम्।

(प्रविश्य=प्रवेशं विधाय, चित्रफलकहस्ता=चित्रपटहस्ता)

चेटी—चित्रकर्तृमेधाविनी, भर्तः=हे स्वामिन्! चित्रगता=आलेख्यपट्टस्था स्वहस्तचित्रिता, भट्टिनी=ते अकृताभिषेका पत्नी। (इति=इत्युक्त्वा, चित्रफलकं=चित्रपट्टं, दर्शयति।)

राजा—(विलोक्य=चित्रफलकं दृष्ट्वा) आलेख्यगतायाः=चित्रलिखितायाः अपि, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, रूपम्, अहो=आश्चर्यम्। तथाहि रूपोत्कर्षं दर्शयितुमाह—

अन्वयः—दीर्घापाङ्गविसारिनेत्रयुगलं लीलाञ्चितभ्रूलतं दन्तान्तःपरिकीर्णहासकिरणज्योत्स्नाविलिप्ताधरं कर्कन्धूद्युतिपाटलोष्ठरुचिरं विभ्रमलसत्प्रोद्भिन्नकान्तिद्रवम् एतत् तस्याः तत् मुखं चित्रेऽपि आलपतीव॥ १४॥

दीर्घेति। दीर्घाभ्यां=विशालाभ्याम्, अपाङ्गाभ्याम्=नयनप्रान्ताभ्याम्, विसारि=विस्तारवत्, नेत्रयुगलम्=नेत्रद्वयम्, यत्र तत् दीर्घापाङ्गविसारिनेत्रयुगलम्, लीलया=विलासेन, अञ्चिते=शोभिते, भ्रूलते=लते इव भ्रुवौ, यत्र तत् लीलाञ्चितभ्रूलतम्, दन्तानां=दशनानाम्, अन्तः=अभ्यन्तरेषु, परिकीर्णाः=व्याप्ताः, ये हासकिरणाः=स्मितदीप्तयः, ते एव ज्योत्स्नाः=चन्द्रिकाः (कौमुदीः), ताभि-

---

दासी—(हाथ में चित्रफलक लेकर प्रविष्ट होकर) महाराज! ये चित्रस्थ स्वामिनी हैं। (यह कहकर चित्रपट्ट दिखाती है)

राजा—(देखकर) मात्र चित्रांकित भी प्रिया का रूप कितना सुन्दर है; क्योंकि—

नेत्रों के प्रान्तभाग एवं नेत्र दोनों ही विस्तृत हैं। विलास के कारण भ्रूलता भी सुशोभित है। दन्तपंक्ति के मध्य से निकलती हुई ज्योत्स्ना की भाँति ईषद् हास्य की किरणों से दोनों ओठ व्याप्त हैं। पक्वबदरी फल के समान रक्तिम ओष्ठ अतीव सुन्दर प्रतीत हो रहे हैं। मुखारविन्द

Maid servant—*(Entering with the picture-board in hand)* Here is my mistress in the picture. *(Shows the picture-board)*

The king—*(Observing)* What a charming appearence of my beloved, even if it painted only in a picture-board.

The angles of the eyes and the eyes both are drawn extendingly, the eye-brows are also appearing very graceful, as though moon light coming out from the row of teeth, the sweet smile spreading over the teeth. Her lips, like fully developed

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(विलोक्य) साहु वअस्स! साहु, जं तए महुरो भट्टिणीए दंसितो भवाणुप्पवेसो, खलांदि विअ मे दिट्ठी णिहुदप्पदेसेसु। किं बहुणा, सत्ताणुप्पवेससंकाए आलवणकोदूहलं मे जणअदि। **[साधु वयस्य! साधु, यत् त्वया मधुरो भट्टिन्या दर्शितो भावानुप्रवेशः, स्खलतीव मे दृष्टिर्निभृतप्रदेशेषु। किं बहुना, सत्त्वानुप्रवेशशङ्कया आलपन-कौतूहलं मे जनयति।]**

विलिसौ=व्याप्तौ, अधरौ=ओष्ठौ, यस्मिन् तत् दन्तान्तःपरिकीर्णहासकिरणज्योत्स्नाविलिप्ताधरम्, कर्कन्धोः=पक्वबदरीफलस्य, द्युतिरिव=कान्तिरिव, द्युतिर्यस्य सः अत एव पाटलः=श्वेतरक्तः, यः ओष्ठस्तेन रुचिरं=मनोज्ञम्, कर्कन्धूद्युतिपाटलोष्ठरुचिरम्, विभ्रमेण=शृङ्गारभावविकारविशेषेण, लसत्=शोभमानम्, तथा प्रोद्भिन्ना=आविर्भूता, कान्तिः=शोभाविशेषः, येभ्यस्ते च ते द्रवाः= स्वेदबिन्दवः, यस्मिन् तत् विभ्रमलसत्प्रोद्भिन्नकान्तिद्रवम्, एतत्=चित्रफलके चित्रितम्, तस्याः=शकुन्तलायाः, तत्=प्रागनुभूतम्, मुखम्=आननम्, चित्रे=आलेख्ये अपि, आलपतीव=प्रेम्णा मामाभाषत इव। अत्र 'भ्रूलता' इत्यंशे उपमा, 'हासकिरणज्योत्स्ना' इत्यंशे एकदेशवर्त्ति रूपकम्, 'आलपतीव' इत्यंशे क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारश्च। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १४॥

भावार्थः—चित्रफलके चित्रितं प्रियायाः मुखं, प्रियामुखस्थभावपरिचयं यथावद् ददत् चित्रेऽपि प्रेम्णा मामाभाषत इव अनुभवामिं इत्याशयः॥ १४॥

विदूषकः—(विलोक्य=दृष्ट्वा) साधु=शोभनम्, वयस्य=मित्र! साधु, यत्=यस्मात्, त्वया= भवता, मधुरः=दृष्टिप्रियः, भट्टिन्याः=शकुन्तलायाः, भावानुप्रवेशः=चित्रेऽपि चेष्टानुबन्धः, दर्शितः= प्रकटितः, मे=मम, दृष्टिः=नेत्रदर्शनशक्तिः, निभृतप्रदेशेषु=गुप्तावयवभागेषु, स्खलतीव=सञ्चरतीव।

विलास के कारण विशेष सुन्दर प्रतीत हो रहा है। उस पर झलकती हुई पसीने की बूँदें कान्तिद्रव-सी प्रतीत हो रही है और इस प्रकार समष्टि रूप में प्रिया का यह चित्रांकित मुख भी मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो मुझ से बातें कर रहा हो॥ १४॥

विदूषक—ठीक है मित्र! ठीक है, क्योंकि आपने चित्रफलक पर स्वामिनी (शकुन्तला) के भावों का जिस कुशलतापूर्वक चित्रण किया है उससे मेरी दृष्टि इसके गुह्य स्थानों में मानों स्वयं ही दौड़ने लगी है। अधिक कहने से क्या लाभ? मानो यह सजीव हो इस आशंका से मेरे मन में इससे बात करने का उत्कण्ठा स्वयमेव उत्पन्न हो रही है।

(riped) Jujule fruit, are appearing very pleasent. Through flurry (excitement) the sweat drops are appearing as if it jucy drops of lovelyness and with all these qualities and appearances the face of my beloved which is drawn in this picture-board appears as speaking to me.

Jester—Excellent my friend! excellent. The representation of the various feelings (such as fear, curiosity etc. as described in previous verse) in beautiful on account of the exquisite delineation. My sight as though stumbles in the secret parts of the painting it self and with a doubt as if it is living one, my quriosity compells me to make conversation with it. What to say more?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—अम्हो! एसा राएसिणो वत्तिआलेहणिउणदा। जाणे पिअसही मे अग्गदो वट्टदि त्ति। [अहो! राजर्षेर्वर्तिकालेखनिपुणता। जाने प्रियसखी मे अग्रतो वर्त्तते इति।]

राजा— यद् यत् साधु न चित्रे स्यात् क्रियते तत्तदन्यथा।
तथाप तस्या लावण्यं लेखया किञ्चिदन्वितम्॥ १५॥

किं बहुना वक्तव्येनेति शेषः, सत्त्वस्य=प्राणस्य, अनुप्रवेशः=समावेशः, तस्य शङ्कया=सम्भावनया, सत्त्वानुप्रवेशशङ्कया=अस्याः प्रतिकृतौ प्राणाः सन्तीति सम्भावनया, मे=मम, आलपने =भाषणे, कौतूहलं=कौतुकम्, आलपनकौतूहलं, जनयति=उत्पादयति। (चित्रफलकगतायामपि तां प्रियां चेष्टासन्निवेशदर्शनात् सजीवामिव तां मत्वा आलपितुमिच्छामीति भावः।)

मिश्रकेशी—अहो इत्याश्चर्ये, राजर्षेः=दुष्यन्तस्य, वर्तिकया=तूलिकया, या लेखा=चित्रणं, तस्यां निपुणता=दक्षता, वर्तिकालेखनिपुणता, जाने=अनुभवामि (मन्ये)। प्रियसखी=शकुन्तला, मे=मम, अग्रतः=पुरतः, •र्त्तते=तिष्ठति (अस्ति)।

राजा—

अन्वयः—यद् यत् चित्रे साधु न स्यात् तत् तत् अन्यथा क्रियते तथापि तस्याः लावण्यं लेखया किञ्चित् अन्वितम्॥ १५॥

यद्यदिति। यद् यत्=अङ्गं, चित्रे=आलेख्ये, साधु=सम्यक् सुन्दरं वा, न स्यात्=न भवेत् (प्रकृताङ्गस्य सुन्दरत्वादविकलचित्रणे तु शोभनं नैव भवेदिति भावः), तत् तत्=अङ्गम्, अन्यथा= सौन्दर्यविधानाय प्रकृतमूर्त्तितो विफलम्, क्रियते=चित्रकारैः सुन्दरं विधायैव चित्र्यत इत्याशयः। तथापि=एवं चित्रकारपद्धतौ सत्यामपि, तस्याः=शकुन्तलायाः, लावण्यं=शरीरावयवसौष्ठवम्, लेखया=मत्कृतचित्रेण, किञ्चित्=ईषदेव, अन्वितम्=सम्बद्धम्॥ १५॥

भावार्थः—शकुन्तलायाः सर्वाङ्गव्यापिलावण्यस्य चित्रे निवेशनाय यत्ने कृतेऽपि तत् लावण्यं स्वल्पमेव आयातम्। विधिना परिकल्पितसर्वयोग्या सा कथं मानुषेण मया यथावदालेख्यते इति भावः॥ १५॥

मिश्रकेशी—राजर्षि की चित्र-निर्माण कला आश्चर्यजनक है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है मानो मेरी प्रिय सखी शकुन्तला मेरे सामने ही विराजमान है।

राजा—चित्रकार चित्र बनाते समय जिस-जिस अंग में सुन्दरता की कमी देखता है उसकी पूर्ति करता चलता है परन्तु इस चित्रांकन द्वारा शकुन्तला का सौन्दर्य बढ़ा नहीं, बल्कि कुछ घटा ही है॥ १५॥

Miśrakeśī—Oh this skill of the royal sage is really wonderful. I feel as my deer friend is standing (siting) in front of me.

The king—What ever may be not good in the picture is constantly being made otherwise (i.e. improved). Yet her loveliness is to a small extent imitated (reduced) by the drawing. (15)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा हि—

अस्यास्तुङ्गमिव स्तनद्वयमिदं, निम्नेव नाभिः स्थिता
दृश्यन्ते विषमोन्नताश्च वलयो भित्तौ समायामपि।
अङ्गे च प्रतिभाति मार्दवमिदं स्निग्धप्रभावाच्चिरं
प्रेम्णा मन्मुखमीषदीक्षत इव स्मेरा च वक्तीव माम्॥ १६ ॥

मिश्रकेशी—सरिसं एव्वं पच्चादावगुरुणो सिणेहस्स। [सदृशमेवं पश्चात्तापगुरोः स्नेहस्य।]

तथाहि=किञ्च—

अन्वयः—समायामपि भित्तौ (इदं) अस्याः इदं स्तनद्वयं तुङ्गम् इव (वर्त्तते), तथा नाभिः निम्ना इव स्थिता, वलयः विषमोन्नताः दृश्यन्ते, अङ्गे इदं मार्दवं च चिरं प्रतिभाति; प्रेम्णा मन्मुखम् ईषत् ईक्षत इव तथा च स्मेरा मां वक्तीव (प्रतिभाति) ॥ १६ ॥

अस्या इति। समायामपि=समतलायामपि, भित्तौ=चित्रफलके (आधारे), अस्याः= शकुन्तलायाः, इदं=पुरोदृश्यमानम्, स्तनद्वयम्=कुचद्वयम्, तुङ्गम्=उन्नतमिव वर्त्तते, तथा नाभिः, निम्ना=गभीरा इव, स्थिता, वलयः=उदरगता मांसतरङ्गाश्च, विषमोन्नताः=उच्चावचाः, दृश्यन्ते= आलक्ष्यन्ते, अङ्गे=अवयवे (गात्रे), इदं=दृश्यमानम्, मार्दवम्=कोमलता च, चिरं प्रतिभाति= स्थायिभावेन दृश्यते, प्रेम्णा=अनुरागेण, मन्मुखम्=ममाननम्, ईषत्=लज्जया किञ्चिदल्पम्, ईक्षत इव=वक्रदृष्ट्या पश्यतीव, तथा स्मेरा=हास्यव्याजेन च सती, मां वक्तीव=किमपि मन्दमालपतीव प्रतिभाति। अत्रोत्प्रेक्षालङ्कारः, शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १६ ॥

भावार्थः—समतलचित्राधारे चित्रितमपि अस्याः अनुकृतिः तद्वदेव प्रतीयते। तथाहि अस्याः स्तनद्वयम् उन्नतमिव वर्त्तते, नाभिः निम्नेव स्थिता, वलयश्च विषमोन्नता आलक्ष्यन्ते। गात्रे मार्दवं स्थायिभावेन वर्तत इव दृश्यते। अनुरागेण मन्मुखं किञ्चिदल्पं पश्यतीव तथा स्वाधराङ्कित-हासव्याजेन मां किमपि मन्दमालपतीव प्रतिभाति॥ १६ ॥

जैसे कि—

यद्यपि चित्रफलक समतल है तथापि शकुन्तला के दोनों स्तन कुछ ऊँचे हैं और नाभि गम्भीर-सी प्रतीत होती है। स्निग्धता के कारण अङ्गों में कोमलता स्थायीरूप से दिखायी देती है और ऐसा प्रतीत होता है कि अनुरागपूर्वक यह थोड़ा-थोड़ा मुझे देखती हुई मुस्कराकर मुझसे कुछ कह रही हो॥ १६ ॥

मिश्रकेशी—पश्चात्ताप से बढ़े हुए स्नेह के कारण शकुन्तला के प्रति इस प्रकार का बहुमान उपयुक्त ही है।

For example—

Though this picture-board is equal, yet the breasts of Śakuntalā appear lifted and the navel (cavity) as very deep. Due to oiliness, tenderness appearing over all the limbs and also it seems as if this observing my face a little and utters some thing with a sweat smile (to me.) (16)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(निःश्वस्य)

साक्षात् प्रियामुपगतामपहाय पूर्वं
चित्रार्पितामहमिमां बहुमन्यमानः।
स्त्रोतोवहां पथि निकामजलामतीत्य
जातः सखे! प्रणयवान् मृगतृष्णिकायाम्॥ १७॥

मिश्रकेशी—एवं=चित्रगताया अपि शकुन्तलाया बहुमानम्, पश्चात्तापेन=अनुतापेन, गुरोः=वृद्धिंगतस्य, पश्चात्तापगुरोः, स्नेहस्य=अनुरागस्य, सदृशम्=अनुरूपम् (उपयुक्तम्)।

राजा—(निःश्वस्य=दीर्घमुष्णं च निश्वासमुत्सृज्य)

अन्वयः—हे सखे! अहं पूर्वं साक्षात् उपगतां प्रियाम् अपहाय इमां चित्रार्पितां बहुमन्यमानः पथि निकामजलं स्त्रोतोवहाम् अतीत्य मृगतृष्णिकायां प्रणयवान् जातः (अस्मि)॥ १७॥

साक्षादिति। हे सखे=हे मित्र! अहं=दुष्यन्तः, पूर्वम्=अव्यवहितसमये न तु कालान्तरे, साक्षात्=प्रत्यक्षेण, उप=समीपे, गताम्=प्राप्ताम्, उपगताम्, प्रियां=शकुन्तलाम्, अपहाय=अवगणय्य (न तु त्यक्त्वा, त्यक्तस्य पुनरुपादाने महापुरुषस्यानौचित्यप्रसङ्गात्), इमां=पुरोदृश्यमानाम्, चित्रार्पिताम्=चित्राङ्किताम् (प्रियाम्), बहुमन्यमानः=आद्रियमाणः, पथि=गमनमार्गे, निकामजलाम्=सम्पूर्णोदकाम्, स्त्रोतोवहाम्=नदीम्, अतीत्य=अतिक्रम्य, मृगतृष्णिकायाम्=नदीवदाभासमानायां मरुमरीचिकायाम्, प्रणयवान्=प्रीतियुक्तः, जातः=संवृत्तोऽस्मि। अत्र निदर्शनालङ्कारः, वसन्ततिलका वृत्तम्॥ १७॥

भावार्थः—यथा प्रथमं मार्गे उपस्थितां महानदीमुत्तीर्य गतवतः—पिपासोर्मृगतृष्णिकायां प्रणये जलावाप्तिस्तु न भवति परन्तु पिपासामात्रं वर्द्धते तथा प्रथमं स्वयमुपनतां प्रियामवधीरितवतो मम आलेखगतायां तस्यां च प्रणये मनःशान्तिस्तु नैव भवति परन्तु कामव्यथामात्रं वर्द्धत इति भावः॥ १७॥

राजा—(साँस भरकर)

प्रिया शकुन्तला उस समय स्वयं आकर उपस्थित हुई थी, किन्तु मैंने उसका परित्याग कर दिया था और अब इस चित्रांकित शकुन्तला का अतिशय आदर कर रहा हूँ। हे मित्र! (मेरा यह कार्य ऐसा ही है) मानो मैं अगाध जलवाली नदी का परित्याग कर मरुमरीचिका के जल के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ॥ १७॥

Miśrakeśī—This is befitting an affection, grown intense through remorse.

The king—(With a sigh)

Having previously abandoned my beloved who had arrived in person and again thinking highly of her who is now committed to a picture, have become, O friend! possessed of a longing for the mirage, after having crossed on my way a river of plentiful water. (17)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भोः ! तिणिआ आइदिओ दीसंति, सव्वाओ ज्जेव दंसणीआओ, ता कदमा एत्थ तत्थमोदी सउंतला ? [भो! तिस्त्र आकृतयो दृश्यन्ते, सर्वा एव दर्शनीयाः, तत् कतमाऽत्र तत्रभवती शकुन्तला ?]

मिश्रकेशी—अणहिणो क्खु एसो सहीएरूवस्स मोहचक्खु, इअं क्खु ण से गदा पच्चक्खदं। [अनभिज्ञः खल्वेष सखीरूपस्य मोघचक्षुः, इयं खलु नास्य गता प्रत्यक्षताम्।]

राजा—त्वं तावत् कतमां तर्कयसि।

विदूषकः—(निर्वर्ण्य) तक्केमि जा एसा सिढिलबंधणुव्वंतकुसुमेण केसहत्थेण बद्धसेअविंदुणा अवणेण विसेसदो णमिदंसआहिं बाहुलदाहिं उच्चलिदणीविणा वसणेण अइसीपरिस्संता विअ अहिसेअसिणिद्धदरपल्लवस्स बालचूअरुक्खस्स पास्से आलिहिदा, एसा तत्थभोदी सउंतला, इदराओ सहीओ त्ति। [तर्कयामि यैषा शिथिलबन्धनोद्वान्तकुसुमेन केशहस्तेन बहुस्वेदबिन्दुना वदनेन विशेषतो नमितांसकाभ्यां बाहुलताभ्याम् उच्चलितनीविना

विदूषकः— भोः=भो मित्र! तिस्त्रः=त्रिसंख्याकाः, आकृतयः=प्रतिकृतयः, दृश्यन्ते, सर्वा एव=सकला एव, दर्शनीयाः=अवलोकनीयाः (रूपवत्यः), तत्=तस्मात्, अत्र=आसु मध्ये, कतमा= का, तत्रभवती=मान्या, शकुन्तला ?

मिश्रकेशी—एषः=विदूषकः, सखीरूपस्य=शकुन्तलारूपस्य, अनभिज्ञः=अनुभवाक्षमः, अत एव मोघं=शकुन्तलाया अदर्शनान्निरर्थकम्, चक्षुर्यस्य सः मोघचक्षुः (अस्ति), इयं=शकुन्तला, अस्य=विदूषकस्य, प्रत्यक्षताम्=प्रत्यक्षविषयताम्, न गता=न प्राप्ता अद्यावधि इति यावत्। अनेन शकुन्तला पूर्वं न दृष्टा किम् ? अत एवायमनभिज्ञः, इति भावः।

राजा—तावत् कथय, त्वम्=भवान्, कतमाम्=आसां मध्ये कां शकुन्तलामिति, तर्कयसि= मन्यसे ?

विदूषकः—(निर्वर्ण्य=प्रतिकृतिः निरीक्ष्य) या एषा=पुरोदृश्यमाना, शिथिलबन्धनेन=

विदूषक—(इसमें) तीन आकृतियाँ दिखायी दे रही हैं और सभी दर्शनीय भी हैं, अतः (बतलाइए) इनमें से कौन-सी शकुन्तला है ?

मिश्रकेशी—इसने मेरी सखी का रूप नहीं देखा है अतः इसके नेत्र निष्फल हैं। यह इसके सामने कभी नहीं आई है।

राजा—अच्छा, तुम इनमें से किसे शकुन्तला समझते हो ?

विदूषक—(देखकर) मेरे विचार में जिसके शिथिल केशपाश से फूल गिर पड़े हैं, मुख पर पसीने की बूँदें झलक रही हैं, कन्धे झुके हुए-से दिखायी पड़ रहे हैं, नीवीबन्ध

Jester—Oh, three ladees are seen in this picture-board and all are beautiful. Which is her ladyship Śakuntalā here?

Miśrakeśī—Ignorant indeed of such beauty (of my friend), this person (i.e. Jester) has his sight in vain.

The king—Well! whom do you guess to be Śakuntalā?

Jester—I guess that she who is here painted, as though a little fatigued, by the side of the mango-tree, whose fresh foliage is (cluster

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वसनेन च ईषत् परिश्रान्तेव अभिषेकस्निग्धतरपल्लवस्य बालचूतवृक्षस्य पार्श्वे आलिखिता, एषा तत्रभवती शकुन्तला, इतरे सख्यौ इति।]

राजा—निपुणो भवान्। अस्त्यत्र ममापि भावचिह्नम्—

स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशाद् रेखा प्रान्तेषु दृश्यते मलिना।
अश्रु च कपोलपतितं लक्ष्यमिदं वर्णकोच्छ्वासात्॥ १८॥

बन्धनस्य शिथिलतया, उद्वान्तानि=निर्गलितानि, कुसुमानि=पूर्वविन्यस्तानि पुष्पाणि, यस्मात् तेन शिथिलबन्धनोद्वान्तकुसुमेन, केशहस्तेन=केशकलापेन, उपलक्षिता, बद्धाः=धृताः, स्वेदस्य= घर्म्मजलस्य, बिन्दवो येन तेन बद्धस्वेदबिन्दुना, वदनेन=मुखेन, उपलक्षिता, विशेषतः=अतिशयेन, नमितौ=नम्रीभूतौ, अंसौ=स्कन्धौ, ययोस्ताभ्यां नमितांसकाभ्याम्, बाहुलताभ्याम्=भुजलताभ्या-मुपलक्षितौ। तथा उच्चलिता=श्रमकाले विचलिता, नीविः=कटिवस्त्रग्रन्थिः, यस्य तेन उच्चलित-नीविना, वसनेन=वस्त्रेण च उपलक्षिता, ईषत्=अल्पं, परिश्रान्ता=जलसेककरणेन श्रमार्त्तेव, अभिषेकेण=जलसेकेन, स्निग्धतराणि=अतिशयेन मसृणानि, पल्लवानि=पत्राणि, यस्य तस्य अभिषेकस्निग्धतरपल्लवस्य, बालचूतवृक्षस्य=क्षुद्रआम्रवृक्षस्य, पार्श्वे=समीपस्थप्रदेशे, आलिखिता= चित्राङ्किता, एषा=पुरश्चित्रे दृश्यमाना, तत्रभवती=मान्या, शकुन्तला, इतरे=अपरे, सख्यौ इति तर्कयामि।

राजा—निपुणः=वस्तुनिर्णयकुशलः, भवान्=त्वम्, अत्र=चित्रगतायामत्रभवत्याम्, ममापि =दुष्यन्तस्य अपि, भावयोः=सात्त्विकभावयोः, चिह्नम्=भावचिह्नम् अस्ति।

अन्वयः—स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशात् प्रान्तेषु मलिना रेखा दृश्यते। वर्णकोच्छ्वासात् कपोलपतितम् इदम् अश्रु च लक्ष्यम्॥ १८॥

स्विन्नाङ्गुलीति। स्विन्नायाः=चित्रणकाले कामविकाराविर्भावात् स्वेदार्द्रायाः, अङ्गुलेः=

शिथिल पड़ गया है और जो कुछ थकी हुई-सी दिखायी पड़ रही है, अभिषेक (सींचने) के कारण जिसके पत्ते अतीव स्निग्ध प्रतीत हो रहे हैं ऐसे आम के निकट चित्रित ही मान्या शकुन्तला हैं और अन्य सखियाँ।

राजा—आप बहुत चतुर हैं, (परन्तु) इस चित्र में भी मेरे भावचिह्न अंकित हैं—

सात्त्विक भाव उदय होने से स्वेदार्द्र अंगुली रखने के कारण चित्र के प्रान्तभाग में नीली रेखा दीख रही है और मेरे आँसू टपक जाने से चित्र का रङ्ग कुछ फैल गया है जिससे कपोल पर आँसुओं की स्थिति भी झलक रही है॥ १८॥

---

of leaves) glistening (shining) through the sprinking of water, with a mass of hair from which flowers have dropped down owing to the loosened braid, with a face covered with drops of perspiration and especially with arms much dropping, she is Śakuntalā, the others are friends.

The king—Clever you are. Here is a sign of my passion.

The soild impression of my perspiring finger is observed on the edges of the picture and here my tear, that dropped on her cheak, is noticeable owing to the puff of the paint. (18)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(चेटीं प्रति।) चतुरिके! अर्द्धलिखितमेतद्विनोदस्थानमस्माभिः, तद्गच्छ वर्त्तिका-स्तावदानय।

चेटी—अज्ज! माहव्व! अवलंब चित्तफलअं, जाव आअच्छामि। [आर्य! माधव्य! अवलम्बस्व चित्रफलकम्, यावदागच्छामि।]

राजा—अहमेवावलम्बे। (इति यथोक्तं करोति।)

(चेटी निष्क्रान्ता।)

ममाङ्गुलेः, विनिवेशात्=चित्रफलके विन्यासात्, स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशात्, प्रान्तेपु=शकुन्तला-प्रतिकृतिरेखोपान्तेषु, मलिना=कराङ्गुलिवर्त्तिकोच्छ्वासात् श्यामा, रेखा दृश्यते। वर्णकस्य=चित्रस्थरञ्जनवर्णस्य, उच्छ्वासात्=सर्वतः किञ्चित् प्रसरणात्, वर्णकोच्छ्वासात्, कपोलात्=ममैव गण्डस्थलात्, पतितम्=च्युतम्, इदम् अश्रु=एतन्नयनजलञ्च, लक्ष्यम्=ऊह्यम्, अनुमानेनावगन्तव्यम्। पाठान्तरे—'दृश्यमिदं वर्त्तिकोच्छ्वासात्' इति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः। आर्य्या जातिः ॥ १८ ॥

भावार्थः—यद्यपि त्वं वस्तुनिर्णये कुशलस्तथापि मम सात्त्विकभावानां चिह्नविशेषात् एव भवद्भिर्दर्शतं स्वकीयनैपुण्यं शकुन्तलापरिज्ञाने यतः कामविकाराविर्भावात् स्विन्नाङ्गुलिविनिवेशात् शकुन्तलाप्रतिकृतिरेखोपान्तेषु मलिना रेखा दृश्यते। चित्रस्थरञ्जनवर्णस्य सर्वतः किञ्चित् प्रसरणात् ममैव गण्डस्थलात् च्युतम् एतन्नयनजलञ्च अनुमानेनावगन्तव्यं केनापि धीमता इति भावः ॥ १८ ॥

(चेटिं प्रति=गृहसेविकामुद्दिश्य) चतुरिके=चेट्या नाम, एतद् विनोदस्थानम्=विरहयापन-स्थानम् (आलेख्यम्), अस्माभिः=मया, अर्द्धलिखितम्=तदानीमवसरसङ्कोचादसम्यक्चित्रितम्। तत्=तस्मात्, गच्छ=याहि, तावत्=यावदहं पृष्ठभूमिं विचारयामि, वर्त्तिका=तूलिका, आनय=प्रापय।

चेटि—आर्य माधव्य! (विदूषकसम्बोधनम्) चित्रफलकम्=चित्रपटम्, अवलम्बस्व=धारय, यावदागच्छामि=मदागमनपर्य्यन्तमित्यर्थः।

राजा—अहमेवावलम्बे=स्वविनोदार्थमिति। (इति=इत्युक्त्वा, तथा करोति=चित्रफल-कमवलम्बते)

(चेटी=दासी, निष्क्रान्ता=निर्गता)

(दासी से) चतुरिके! यह चित्रफलक जो मेरे मनोविनोद का साधन है, अभी अधूरा है अतः जाकर कूची ले आओ।

चेटि—आर्य माधव्य! आप जरा इस चित्रफलक को सम्हालिए, तब तक मैं आती हूँ।

राजा—मैं ही इसे थामे रहूँगा। (यथावत् करता है)

(चेटी का प्रस्थान)

(To maidservent) Chaturike—this source of my diversion is half drawn. Go and just bring the brush.

Maid—Honourable Mādhavya! hold the picture-board till I come back.

The king—I shall myself hold it. *(Does as said)*

(Exit-maid)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—भो! किं एत्थ अवरं आलिहिदव्वं? [भोः! किमत्रापरमालिखितव्यम्?]

मिश्रकेशी—जो जो पिअसहीए अहिंमदो पदेसो, तं तं आलिहिदुकामो त्ति तक्केमि। [यो यः प्रियसख्या अभिमतः प्रदेशः, तं तमालिखितुकाम इति तर्कयामि।]

राजा—सखे! श्रूयताम्—

कार्या सैकतलीनहंसमिथुना स्त्रोतोवहा मालिनी,
पादास्तामभितो निषण्णचमरा गौरीगुरोः पावनाः।
शाखालम्बितवल्कलस्य च तरोर्निर्मातुमिच्छाम्यधः,
शृङ्गे कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगीम्॥ १९॥

विदूषकः—अत्र=चित्रफलके, किमपरं=किमन्यत् आलिखितव्यम्=चित्रयितव्यमस्तीति शेषः।

मिश्रकेशी—प्रियसंख्याः=शकुन्तलायाः, यः यः, प्रदेशः=अवयवः (क्षेत्रविशेषः), अभिमतः=रमणीयत्वेन सम्मतः, तं तम्, आलिखितुकामः=लिलिखिषतीति, तर्कयामि=सम्भावयामि, तस्य तस्यासद्भावादिति शेषः।

राजा—सखे!=मित्र! श्रूयताम्=आकर्ण्यताम्—

अन्वयः—सैकतलीनहंसमिथुना मालिनी स्त्रोतोवहा कार्य्या। ताम् अभितः निषण्णचमराः पावनाः गौरीगुरोः पादाः (कार्य्या)। शाखालम्बितवल्कलस्य तरोः अधः कृष्णमृगस्य शृङ्गे वामनयनं कण्डूयमानां मृगीं निर्म्मातुम् इच्छामि॥ १९॥

कार्य्येति। सैकतेषु=बालुकामयपुलिनेषु, लीनानि=अवस्थितानि, हंसमिथुनानि=हंसानां द्वन्द्वानि, यस्याः सा सैकतलीनहंसमिथुना, मालिनी=तन्नाम्नी, स्त्रोतोवहा=नदी, कार्य्या=चित्रयितव्या, तां=मालिनीम्, अभितः=पार्श्वतः, निषण्णाः=उपविष्टाः, चमराः=मृगविशेषाः (केचित्तु—चमरनामधेया पर्वतीयगौ इति), येषु ते निषण्णचमराः, पावनाः=पवित्राः, गौर्य्याः=शिवायाः, गुरोः=पितुः

विदूषक—मित्र! अभी इसमें और क्या कुछ चित्रित करना है?

मिश्रकेशी—मेरा विचार है कि मेरी प्रिय सखी को जो-जो प्रदेश प्रसन्द थे (अथवा उसके जो-जो अवयव इन्हें विशेषतः पसन्द थे) उन्हें ही ये चित्रित करना चाहते हैं।

राजा—मित्र! सुनो—

मैं इस चित्रपट्ट में हंसयुगल से सेवित मालिनी नदी, चमरी गौओं (चमर मृगों) से सेवित हिमालय की तलहटी, शाखाओं पर सूखते हुए वल्कलों से युक्त वह वृक्ष जिसके नीचे

Miśrakeśī—The places which were favourite to my dear friend (or the limbs which were more agrecable to his majesty), them only he wants to draw (add) in this picture-board.

The king—Friend! hear—

The river Mālinī is to be drawn with pair of swans resting on its sandy banks, (and) on both sides of it (are to be painted) the sacred adjoining hills of the Himālaya, the father of Gaurī, with

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—(स्वगतम्) जधा मंतेदि तथा तक्केमि पूरिदव्वं अणेण चित्तफलअं आकिदिहिं लंबकुच्चाणं वक्कलपरिहाणं तावसाणं त्ति। [यथा मन्त्रयति तथा तर्कयामि पूरयितव्यमनेन चित्रफलकमाकृतिभिः लम्बकूर्च्चानां वल्कलपरिधानानां तापसानामिति।]

राजा—वयस्य! अन्यच्च शकुन्तलायाः प्रसाधनमभिप्रेतं लेखितुं विस्मृतमस्माभिः।

हिमालयस्य, पादाः=प्रत्यन्तपर्वताः, कार्य्या, तथा शाखासु लम्बितानि=अवसक्तानि, वल्कलानि=तपस्विनां वसनभूतानि, यस्य तस्य शाखालम्बितवल्कलस्य, तरोः=कस्यचिद्वृक्षस्य, अधः=तलप्रदेशे, कृष्णमृगस्य=कृष्णसाराख्यहरिणस्य, शृङ्गे=विषाणे, वामनयनं=निजं कामनेत्रं, कण्डूयमानां=खर्जनं कुर्वतीम्, मृगीं=हरिणीञ्च, निर्म्मातुम्=चित्रयितुम्, इच्छामि। अत्र तुल्य-योगिता-स्वभावोक्ति-उदात्तादयोऽलङ्काराः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १९॥

भावार्थः—पद्येऽस्मिन् आश्रमस्थं पूर्वानुभूतं दृश्यं स्मरति कथयति च अहं पुरोदृश्यमाने अस्मिन् चित्रफलके सैकतलीनहंसमिथुना मालिनीनदीं, तामभितः निषण्णचराः पावनाः हिमालयस्य प्रत्यन्तपर्वताः, तथा शाखालम्बितवल्कलस्य वृक्षस्य अधःप्रदेशे कृष्णसारमृगस्य शृङ्गे स्वकीयवामनयनं कण्डूयमानां मृगीं चित्रयितुमिच्छामि॥ १९॥

विदूषकः—(स्वगतम्=स्वमनसि, परोक्षे वा) राजा, यथा=यत्प्रकारम्, मन्त्रयति=विवेचयति, तथा=तेन प्रकारेण, तर्कयामि=सम्भावयामि अहमिति शेषः। अनेन=राज्ञा, लम्ब-कूर्चानाम्=दीर्घश्मश्रूणाम्, वल्कलं=वृक्षत्वगेव, परिधानं=वस्त्रं, येषां तेषां वल्कलपरिधानानां, तापसानाम्=आश्रमस्थतपस्विजनानाम्, आकृतिभिः=प्रतिकृतिभिः, चित्रफलकं=चित्रपट्टम्, पूरयितव्यम्=चित्रणीयम् इति तर्कयामि।

राजा—वयस्य=मित्र! अन्यच्च=अपरमपि, शकुन्तलायाः=मम प्रियसख्याः, प्रसाधनम्=वेशरचनम्, अभिप्रेतं=प्रकृतलेख्यतयाऽवधारितम्, लेखितुम्=चित्रयितुम्, अस्माभिः= मया (आदरे) विस्मृतम्।

बैठे हुए कृष्णसार मृग के सींग से मृगी अपनी बायीं आँख खुजा रही हो, चित्रित करना चाहता हूँ॥ १९॥

विदूषक—(स्वगत) जैसा ये कह रहे हैं उससे प्रतीत होता है कि ये लम्बी दाढ़ी वाले वल्कलधारी तपस्वियों की आकृति से चित्रफलक को भर देंगे।

राजा—मित्र! मैंने शकुन्तला के और भी वेश-विन्यास युक्त रूप चित्रित करने की इच्छा की थी किन्तु वे अब विस्मृत हो गये।

---

deer reclining on them and under a tree, possessing bark garments suspended from its branches I desire to represent (to create) a doe (female deer) rubbing her left eye on the horn of a black antelope. (19)

Jester—(To himself) As for as I guess, he should fill the picture-board with multitudes of long bearded bearing bark garments, hermits.

King—Friend! And another thing, a decoration of Śakuntalā, which was intended to be drawn here, was forgotten by us.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—किं विअ? [किमिव?]

मिश्रकेशी—वणवासस्स कणआभावस्स अ जं सरिसं भविस्सदि। [वनवासस्य कन्यकाभावस्य च यत् सदृशं भविष्यति।]

राजा—

कृतं न कर्णार्पितबन्धनं सखे! शिरीषमागण्डविलम्बिकेशरम्।
न वा शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे॥ २०॥

विदूषकः—किमिव=किं तत्प्रसाधनम्, इवेति वाक्यालङ्कारे।

मिश्रकेशी—यत् प्रसाधनम्, वनवासस्य सदृशं पुष्पमयाभरणधारणम्, कन्यकाभावस्य च=सदृशसीमन्तसिन्दूरादिधारणं च, सदृशं भविष्यति। (क्वचित् पुस्तके 'सौकुमार्यस्य अविनयस्य' इत्यधिकपाठो दृश्यते।)

राजा—

अन्वयः—सखे! कर्णार्पितबन्धनम् आगण्डविलम्बिकेशरं शिरीषं न कृतम्, (तथा) स्तनान्तरे शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं मृणालसूत्रं न वा रचितम्॥ २०॥

कृतमिति। हे सखे! कर्णयोः अर्पितं=निवेशितं, बन्धनं=वृन्तं, यस्य तं कर्णार्पितबन्धनम्, तथा आगण्डं=कपोलपर्यन्तम्, विलम्बिनः=लम्बमानाः, केशराः=किञ्जल्काः, यस्य तत् आगण्डविलम्बिकेशरम्, शिरीषं=तदाख्यपुष्पम्, न कृतम्=न चित्रितम् (विस्मरणादिति भावः), तथा स्तनान्तरे=स्तनयोरभ्यन्तरे, शरच्चन्द्रस्य=शरदिन्दोः, मरीचिवत् कोमलं=सुकुमारम्, शरच्चन्द्रमरीचिकोमलम्, मृणालसूत्रम्=मृणालमयो हारः, न वा रचितम्=विस्मरणान्न वा चित्रितम्। अत्र क्रिययोः समुच्चितत्वात् समुच्चयालङ्कारः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ २०॥

भावार्थः—हे सखे! मया कर्णार्पितबन्धनम् आगण्डविलम्बिकेशरं शिरीषं तथा स्तनान्तरे शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं मृणालसूत्रम् एतदुभयं विस्मरणवशान्न चित्रितं सम्प्रति तच्चित्रयितुमिच्छामीति भावः॥ २०॥

विदूषक—किस प्रकार के?

मिश्रकेशी—जो रूप वनवास और कन्या भाव के अनुरूप होता।

राजा—हे सखे! मैंने जिसका मूल भाग कानों में बँधा हुआ हो तथा केसर कपोल पर झलक रहे हों ऐसा सिरीष पुष्प चित्रित नहीं किया तथा शरत्कालीन चन्द्रमा के समान उज्ज्वल मृणाल का हार भी इसके स्तनों के मध्य चित्रित नहीं किया है॥ २०॥

Jester—What possibly?

Miśrakeśī—Some thing that will be appropriate to her forest residence, tenderness and modesty or early married position.

The King—O' friend! a Śirīṣa flower, with its stalk placed on her ear and its filments hanging down to the cheeks, has not been drawn, nor has a necklace of lotus-fibres, delicate like the rays of the autumnal moon been formed in the interval of her breasts. (20)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदूषकः—किं णु क्खु तत्थभोदी रत्तकुवलअसोहिणा अग्गहत्थेन मुहं आवारिअ चकिदचकिदा विअ ट्ठिदा। (सावधानं दृष्ट्वा) आ ही ही भो! एसो दासीए पुत्तो कुसुमरसपाडच्चरो टुट्टमहुअरो तत्थभोदीए वअणकमलं अहिलसदि। [किन्नु खलु तत्रभवती रक्तकुवलयशोभिना अग्रहस्तेन मुखमावार्य चकितचकितेव स्थिता। आ ही ही भोः! एष दास्याः पुत्रः कुसुमरसपाटच्चरो दुष्टमधुकरस्तत्रभवत्या वदनकमलमभिलषति।]

राजा—ननु वार्यतामेष धृष्टः।

विदूषकः—भो! तुमं ज्जेव अविणीदाणं सासिदा इमस्स वारणे पहवसि। [भोः! त्वमेव अविनीतानां शासिता अस्य वारणे प्रभवसि।]

विदूषकः—किन्नु खलु इति प्रश्ने, तत्रभवती=मान्या शकुन्तला, रक्तकुवलयमिव= रक्तोत्पलमिव, शोभते इति तेन रक्तकुवलयशोभिना, अग्रहस्तेन=हस्ताग्रेण, मुखम्=स्ववदनम्, आवार्य्य=आच्छाद्य, चकितात्=भीतादपि, चकिता=भीता, अतिभीता, इवेति सम्भावनायाम्, स्थिता। (सावधानं=निपुणम्, निरूप्य=दृष्ट्वा) आ इति क्रोधे, ही–ही इति विस्मये, भो इति सम्बोधने, एषः=सम्मुखस्थः, दास्याः पुत्रः=नीचः, कुसुमरसस्य=पुष्पमधुनः, पाटच्चरः=चौरः, कुसुमरसपाटच्चरः, दुष्टमधुकरः=दुष्टभ्रमरः, तत्रभवत्याः=मान्यायाः शकुन्तलायाः, वदनकमलम्=मुखपङ्कजम्, अभिलषति=कामयते। मुखं पद्मबुद्ध्याऽभिलषतीति भावः।

राजा—नन्विति सम्बोधने, धृष्टः=प्रगल्भः, एषः=मधुकरः, वार्य्यताम्=ताड्यताम्।

विदूषकः—भो=वयस्य! त्वमेव, अविनीतानाम्=दुर्वृत्तानाम्, धृष्टानाम्, शासिता=शासनकर्त्ता, अतः त्वमेव, अस्य=धृष्टभ्रमरस्य, वारणे=अपसारणे, ताडने, प्रभवसि=वारयितुं समर्थः, न त्वहम्।

विदूषक—यहाँ शकुन्तला रक्तकमल सदृश कराग्रभाग से अपना मुखमण्डल छिपाकर मानो डरी हुई-सी बैठी है। (भली प्रकार देखकर) ओ हो हो! यह नीच पुष्परस का चोर दुष्ट भ्रमर मान्या शकुन्तला के मुखकमल का पान करना चाहता है।

राजा—इस ढीठ भ्रमर को रोको।

विदूषक—मित्र! दुष्टों के शासक आप ही हैं अतः आप ही इसे रोकने में समर्थ हो सकते हैं।

Jester—Oh, why is it that her ladyship stands, as though very much frightened, having covered her face, with the front portion of her hand, which shines like a red lotus? *(Having observed closely)* Ah! here the whore-son, the bee, the robber of the honey of flowers is rushing at her ladyship's face, considering it as a lotus flower.

The king—Let this impudent fellow be warded off.

Jester—You alone, the chastiser of the undiciplined, will be able to drive it off.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—युज्यते। अयि भोः! कुसुमलताप्रियातिथे! किमत्र परिपतनखेदमनुभवसि?

एषा कुसुमनिषण्णा तृषितापि सती भवन्तमनुरक्ता।
प्रतिपालयति मधुकरी न खलु मधु त्वां विना पिबति॥ २१॥

मिश्रकेशी—अदिअत्थं क्खु वारिदो। [अत्यर्थं खलु वारितः।]

विदूषकः—भो! पडिसिद्धवामा क्खु एषा जादी। [भोः! प्रतिषिद्धवामा खलु एषा जातिः।]

राजा—युज्यते=युक्तमेव, अयि भो! अयीति कोमलामन्त्रणे, भो इति सम्बोधने, कुसुमप्रधाना लता कुसुमलता, तस्याः प्रियातिथे=प्रीतिकरातिथिस्वरूप! कुसुमलताप्रियातिथे! किं=किमर्थम्, अत्र=शकुन्तलामुखे, परिपतनखेदं=सञ्चरणपरिश्रमं, अनुभवसि=स्वीकरोषि? न खल्वियं कुसुमलता किन्तु शकुन्तलामुखमेव, अत्र परिपतने केवलं परिश्रम एव प्राप्स्यसीति भावः।

अन्वयः—कुसुमनिषण्णा भवन्तम् अनुरक्ता एषा मधुकरी तृषितापि सती प्रतिपालयति खलु त्वां विना मधु न पिबति॥ २१॥

एषेति। कुसुमनिषण्णा=पुष्पोपविष्टा, भवन्तं=त्वां प्रति, अनुरक्ता=अनुरागवती, एषा=पुरःस्थिता (चित्रलिखिता), मधुकरी=भ्रमरी, तृषिताऽपि=पिपासिताऽपि, सती, प्रतिपालयति=भवन्तं प्रतीक्षते। (ननु भ्रमरी मां प्रतिपालयतीति त्वया कथमवगम्यते?) उत्तरयति—खलु=यस्मात्, त्वां विना, मधु=पुष्परसं, न पिबति=नास्वादति। अत्र समासोक्तिरलङ्कारः, आर्य्या जातिः॥ २१॥

भावार्थः—भो भ्रमर! कुसुमनिषण्णा भवन्तमनुरक्ता एषा मधुकरी तृषिताऽपि त्वामेव प्रतिपालयति, त्वां विना पुष्परसमपि नास्वादति, तस्मात् तत्रैव ते परिपतनं नितान्तं समीचीनं न तु शकुन्तलामुखे इति भावः॥ २१॥

मिश्रकेशी—अत्यर्थं खलु=अतिशयेनैव, वारितः=प्रतिषिद्धः भ्रमरः।

विदूषकः—भो! हे सखे! एषा जातिः=भ्रमरजातिः, प्रतिषिद्धवामा=निषिद्धविषयानुष्ठायिनी, खल्विति निश्चयेन (तस्य वारणे सत्यपि पुनस्तत्करणादिति भावः)।

राजा—ठीक है। हे पुष्पित लता के प्रिय अतिथि! तुम शकुन्तला के मुख को पुष्प समझ कर उस पर गिरने का परिश्रम क्यों उठा रहे हो?

पुष्प पर बैठी हुई आप पर अनुरक्त यह भ्रमरी प्यासी होने पर भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है, तुम्हारे बिना अकेली मधुपान नहीं करती॥ २१॥

मिश्रकेशी—वाह! आपने खूब रोका।

विदूषक—मित्र! यह भ्रमरजाति ऐसी है कि रोकने पर भी वही काम करती है।

The king—All right, oh! you! the favourite guest of creepers in flowers! why do you undergo the trouble of hovering (loctoring) about here?

Here the female bee, attached to you and seated on a flower, is waiting for you, though she is thirsty, indeed she does not drink the honey without you. (21)

Miśrakeśī—How cleverly he has been warded off.

Jester—Though prohibited, this class (the bees) perverse.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा-(सकोपम्) भोः न मे शासने तिष्ठसि, श्रूयतां तर्हि सम्प्रति हि—

अक्लिष्टबालतरुपल्लवलोभनीयं
पीतं मया सदयमेव रतोत्सवेषु।
बिम्बाधरं दशसि चेद् भ्रमर! प्रियाया-
स्त्वां कारयामि कमलोदरबन्धनस्थम्॥ २२॥

विदूषकः—भो एव्वं तिक्खदंडस्स दे कधं ण भाइस्सदि। (विहस्यात्मगतम्) एसो दाव उम्मत्तो, अहंपि एदस्स संगेण ईदिसो ज्जेव संवुत्तो। [भोः! एवं तीक्ष्णदण्डस्य ते कथं न भेष्यति। एष तावदुन्मत्तः, अहमपि एतस्य सङ्गेन ईदृश एव संवृत्तः।]

राजा—(सकोपम्-सक्रोधम्) भोः=इति भ्रमरसम्बोधनम्, (त्वम्) मे=मम, शासने= आज्ञायाम्, न तिष्ठसि=न वर्त्तसे। तर्हि=तदा, श्रूयताम्=आकर्ण्यताम्। सम्प्रति हि इत्यस्य श्लोकेनान्वयः—

अन्वयः—हे भ्रमर! अक्लिष्टबालतरुपल्लवलोभनीयं मया रतोत्सवेषु सदयमेव पीतं प्रियायाः बिम्बाधरं चेत् दशसि तदा त्वां कमलोदरबन्धनस्थं कारयामि॥ २२॥

हे भ्रमर! अक्लिष्टः=करस्पर्शादिनाऽदूषितोऽन्यास्पृष्टः, यो बालः=नूतनः, तरुपल्लवः= वृक्षपर्णः, तद्वल्लोभनीयं=मनोहरम्, अक्लिष्टबालतरुपल्लवलोभनीयम्, मया=दुष्यन्तेन, रतोत्सवेषु= सुरतोत्सवेषु, सदयमेव=अतिकोमलतया, पीतं=चुम्बितम्, प्रियायाः=शकुन्तलायाः, बिम्बाधरं= पक्वबिम्बफलसदृशमोष्ठम्, चेत्=यदि, दशसि=दन्तक्षतं करोषि; तदा त्वाम्, कमलोदरं= पद्माभ्यन्तरमेव, बन्धनं=कारागृहं, तत्र तिष्ठतीति तं कमलोदरबन्धनस्थम्, कारयामि=विधाष्यामि। अत्र अतिशयोक्तिः, समासोक्तिः, लुप्तोपमा, रूपकम्, श्लेषश्चालङ्काराः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २२॥

भावार्थः—भो भ्रमर! प्रियायाः यदधरं सुरतोत्सवेषु अपि मया अतीव कोमलतयैव चुम्बितं, तदेव प्रियायाः बिम्बाधरं यदि सम्प्रति त्वं दशसि, मम शासनमनादृत्य स्वेच्छाचरणं करिष्यसि तदा त्वां कमलोदररूपकारागारे बन्धनगतं करिष्यामि॥ २२॥

राजा—(क्रोध से) ओ भ्रमर! क्या तू मेरी आज्ञा नहीं मानता? यदि ऐसा है तो सुन—

अम्लान, नव किसलय के समान प्रिया के जिस सुन्दर अधरोष्ठ का मैंने रतिकाल में भी अतीव कोमलतापूर्वक पान किया था। हे भ्रमर! यदि अब तू उस बिम्बफल के समान अधर को निर्दयतापूर्वक काटेगा तो मैं तुझे कमलसम्पुट के कारागार में डाल दूँगा॥ २२॥

विदूषक—सखे! इस प्रकार तीक्ष्ण दण्ड देने वाले आप से वह क्यों न डरेगा? (हँसकर मन में) ये तो पागल हैं, मैं भी इनके संसर्ग से ऐसा ही हो चला हूँ।

The king—(With anger) O' bee! you do not conform to my command. Hear then now—

If, O, bee! you touch the Bimba-like lower lip of my beloved, which is attractive like the un injured young leaf of a tree and which was drunk only tenderly by me in festivals of love, I shall have you put in the prision of the hollow of a lotus.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—निवार्यमाणोऽपि कथं स्थित एव।

मिश्रकेशी—अम्हो! धीरंपि जणं रसो विआरेदि। [अहो! धीरमपि जनं रसो विकारयति।]

विदूषकः—(प्रकाशम्) भो! चित्तं क्खु एदं! [भोः चित्रं खल्वेतत्।]

राजा—कथं चित्रम्?

मिश्रकेशी—अहं पि दाणिं अवगदत्था, किं उण जधाचिंतिदाणुसारी एसो। [अहमपि इदानीमवगतार्था, किं पुनर्यथाचिन्तितानुसारी एषः।]

विदूषकः—भोः, एवम्=उक्तरूपः, तीक्ष्णः=कठोरः, दण्डो यस्मात् तस्य=उग्रशासनस्य, ते=तव, कथं न भेष्यति=न भयं करिष्यति (सुकुमारोऽयं दण्ड इति भावः)। एषः=राजा, उन्मत्त-स्तावत्=उन्मत्त एव, अहमपि, एतस्य=उन्मत्तस्य, सङ्गेन=संसर्गेण, ईदृश एव=उन्मत्त एव, संवृत्तः= सञ्जातः।

राजा—निवार्यमाणोऽपि=प्रतिषिध्यमानोऽपि, स्थित एव भ्रमरः इति कथम्?

मिश्रकेशी—अहो इति खेदानुभवे, रसः=प्रवासविप्रलम्भाख्यः शृङ्गारः, धीरमपि= स्वभावतो धैर्यशालिनमपि जनम्, विकारयति=अन्यथयति दूषयति वा (अत एव शकुन्तला-विप्रलम्भः अतिशयधैर्यशालिनमपि राजानं उन्मत्तं चकारेति भावः)।

विदूषकः—(प्रकाशम्=सुस्पष्टम्) भोः! चित्रम्=निर्जीवमालेख्यम्, खल्विति निश्चयेन, एतत्=दृश्यमानम्।

राजा—कथमिति सम्भ्रमे, चित्रम्=निर्जीवमालेख्यमात्रमेव?

मिश्रकेशी—अहम्=मिश्रकेशी अपि, इदानीम्=अस्मिन्नेव समये, अवगतः=चित्रत्वेन

राजा—मेरे रोकने पर भी यह यहीं स्थित है।

मिश्रकेशी—ओह! धैर्यशाली व्यक्ति को भी हृदयस्थ भाव विकारग्रस्त बना देता है।

विदूषक—(प्रकट) सखे! यह (केवल एक) चित्र है।

राजा—क्या यह चित्र है? (चित्र कैसे?)

मिश्रकेशी—मैं भी अब समझ पाई कि यह चित्र है, तब शकुन्तला के ध्यान में लीन ये ऐसा कर रहे हैं तो आश्चर्य ही क्या है?

Jester—How will he not fear one whose punishment is so severe? *(Laughing to himself)* As for him, he has gone mad. I too have become as though of similar condition (complexion) through association with him.

The king—Even after my warning this remains here only.

Miśrakeśī—Oh, a sentiment even spoils a courageous person.

Jester—*(Aloud)* Oh! it is only a picture.

The king—How picture?

Miśrakeśī—I too have now realised the fact. What of him

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—किमिदमनुष्ठितं पौरोभाग्यम्?

दर्शनसुखमनुभवतः साक्षादिव तन्मयेन हृदयेन।
स्मृतिकारिणा त्वया मे पुनरपि चित्रीकृता कान्ता॥ २३॥

(इति बाष्पं विसृजति।)

मिश्रकेशी—पुव्वापरविरुद्धो अपुव्वो एसो विरहिमग्गो। [पूर्वापरविरुद्धः अपूर्व एष विरहिमार्गः।]

ज्ञातः, अर्थः=मृगादिरूपं वस्तु, यया सा अवगतार्था, यथा चिन्तितानुसारी=मनसा यादृशं कल्पितं तत्त्वत एव तदनुसारी, एषः=राजा, पुनः किं=किं वक्तव्यः। (तथा च एकाग्रतया शकुन्तलां चिन्तयन् राजा तन्मयतया चित्रे तात्त्विकभावानां कर्तुमर्हत्येव यतः शकुन्तलाविषये तादृशचिन्ताशून्यापहमितः पूर्वं चित्रे तात्त्विकभ्रमवत्येवासमित्याशयः।)

राजा—किं=किमर्थम्, इदं पौरोभाग्यम्=दोषैकदर्शित्वम्, अनुष्ठितम्=आचरितम्। (चित्र इति कथनेन मम विरहदुःखमात्रमेव भवता उत्तेजितम् इति भावः।)

अन्वयः—तन्मयेन हृदयेन साक्षात् इव दर्शनसुखम् अनुभवतः मे स्मृतिकारिणा त्वया पुनरपि कान्ता चित्रीकृता॥ २३॥

दर्शनेति। तन्मयेन=शकुन्तलामयेन, हृदयेन=मनसा (इयमेव मे प्रिया शकुन्तलेति बुद्ध्या), साक्षात्=प्रत्यक्षत इव, दर्शनसुखं=प्रियावलोकनानन्दम्, अनुभववतः=उपलभमानस्य, मे=मम, स्मृतिकारिणा=आलेख्यकान्तेयमिति स्मृतिं कारितवता, त्वया=भवता, पुनरपि=भूयोऽपि, कान्ता=मम प्रेयसी शकुन्तला, चित्रीकृता=ध्याने जीविताऽपि सा आलेख्यतया धीविषयीकृता। अत्र उत्प्रेक्षा, विरोधाभासः, स्मरणश्चालङ्काराः। आर्य्या जातिः॥ २३॥

भावार्थः—आलेख्ये प्रकृतशकुन्तलां विभाव्य प्रत्यक्षदर्शनानन्दमनुभवतो मे सम्प्रति त्वत्कृतस्मरणेन भ्रमापगते सति चित्रमेवेदमिति तत्त्वावधारणान्महानेव विषादः समुत्पन्न इति त्वया पौरोभाग्यमेवं स्वनुष्ठितमिति भावः॥ २३॥

(इति=इत्युक्त्वा, बाष्पम्=अश्रूणि, मुञ्चति=विमुञ्चति।)

राजा—किसलिए तुमने यह मूर्खता की?

मैं तन्मयतापूर्वक इस चित्र में मानो साक्षात् शकुन्तला का ही दर्शन कर रहा था परन्तु तुमने 'यह चित्र मात्र है' यह स्मरण कराकर इसे चित्र ही बना दिया॥ २३॥

(यह कहकर आँसू बहाता है)

मिश्रकेशी—पूर्वापर-विरुद्ध यह विरहियों का मार्ग असाधारण (अद्भुत) है।

---

who is experiencing what he has painted (under meditation of his beloved).

The king—Why this meddlesomeness has been perpetrated by you while, with my heart wholy absorbed in her, I was experiencing the pleasure of her sight, as though she were present before my eyes, you have, by reviving my recollection, again transformed my beloved into a picture. (23)

(These sheds tears) unprecedented is this cource of love.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—वयस्य! कथमेवमविश्रामं दुःखमनुभवामि।

प्रजागरात् खिलीभूतस्तस्याः स्वप्नसमागमः।
बाष्पस्तु न ददात्येनां द्रष्टुं चित्रगतामपि॥ २४॥

मिश्रकेशी—सव्वधा पमज्जिदं तुए पच्चादेसदुक्खं पिअसहीए पच्चक्खं ज्जेव सहिजणस्स। [सर्वथा प्रमार्जितं त्वया प्रत्यादेशदुःखं प्रियसख्याः प्रत्यक्षमेव सखीजनस्य।]

मिश्रकेशी—पूर्वापरयोः=अतीतवर्त्तमानयोः कालयोः, विरुद्धः=परस्परविपरीतः, पूर्वापरविरुद्धः, एषः=दृश्यमानः, विरहिणः=वियोगिनः राज्ञः, मार्गः अवस्था=विरहिमार्गः, अपूर्वः=अभिनवः। (पूर्वं हि आस्थया प्रियायाः परिग्रहः पश्चाद् व्यभिचारिणीसम्भावनया अनास्थया परित्यागः पुनरिदानीं पतिव्रताज्ञानादास्थया पश्चात्ताप इति परस्परविरुद्धत्वमिति मन्तव्यम्।)

राजा—वयस्य! कथमेवं=केन प्रकारेण, अविश्राममम्=अनवरतं, दुःखमनुभवामि। सततदुःखं सोढुं न शक्नोमीत्यर्थः।

अन्वयः—प्रजागरात् तस्याः स्वप्नसमागमः खिलीभूतः तु बाष्पः चित्रगताम् एनां द्रष्टुं न ददाति॥ २८॥

प्रजागरादिति। प्रजागरात्=प्रकर्षेण जागरणाद्धेतोः, तस्याः=शकुन्तलायाः, स्वप्नसमागमः=स्वप्नावस्थायामपि सङ्गमः, खिलीभूतः=निरुद्धः। तु=पुनः, बाष्पः=नयनजलम्, चित्रगताम्=आलेख्यगतामपि, एनां=शकुन्तलां, द्रष्टुं न ददाति नयनावरणादिति भावः। अत्र हेतुरलङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २४॥

भावार्थः—प्रजागरात् तस्याः शकुन्तलायाः स्वप्नावस्थायामपि सङ्गमः सर्वथैव निरुद्धः, पुनः नयनजलम् आलेख्यगतामपि एनां द्रष्टुं मां रुणद्धि॥ २४॥

मिश्रकेशी—सर्वथा=सर्वतोभावेन, सखीजनस्य=मम, प्रत्यक्षं=समक्षमेव, प्रियसख्याः=

मिश्रकेशी—पूर्वापर सम्बन्ध से विरहित विरही का यह मार्ग सर्वथा अपूर्व ही है।

राजा—मित्र! मैं इस प्रकार लगातार दुःख क्यों भोग रहा हूँ?

रात्रि में जागते रहने के कारण उस प्रियतमा के साथ स्वप्न में होने वाले मिलाप में भी रुकावट आ गई और अब ये आँसू चित्रगत शकुन्तला को भी देखने नहीं देते (इसमें भी रुकावट डाल रहे हैं)॥ २४॥

मिश्रकेशी—उसकी सखी अर्थात् मेरे सामने इस प्रकार अपना भाव प्रगट कर आपने शकुन्तला के त्याग का सारा दुःख दूर कर दिया।

Miśrakeśī—Unprecedented (Novel) is this course of love in as much as it involves a contradiction between what has preceded and what follows (i.e. the king's previous and subsequent conduct).

The king—Friend! how is it that I am facing pain contineuously?

Though conscious union with her is barred in a dream. Tears on the other hand do not permit me to behold her even when represented in a picture. (24)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुरिका—(प्रविश्य) जेदु जेदु भट्टा। वत्तिआकरंडअं गेण्हिअ इदो अहं पत्थिदम्हि। [जयतु जयतु भर्त्ता! वर्त्तिकाकरण्डकं गृहीत्वा इतोऽहं प्रस्थिताऽस्मि।]

राजा—ततः किम्?

चेटी—तं मे हत्थादो पिंगलिआवेदिआए देवीए वसुमदीए अहं ज्जेव अज्जउत्तस्स उवणइस्सं त्ति भणिअ सवलक्कारं गहीदं। [तन्मे हस्तात् पिङ्गलिकाऽऽवेदितया देव्या वसुमत्या अहमेवार्यपुत्रस्य उपनेष्यामीति भणित्वा सबलात्कारं गृहीतम्।]

विदूषकः—तुमं कधं विमुक्का? [त्वं कथं विमुक्ता?].

शकुन्तलायाः, प्रत्यादेशेन=निराकरणेन, यदस्माकं दुःखं, तद्=प्रत्यादेशदुःखं, सखीजनस्य=मम, प्रत्यक्षं=समक्षमेव, प्रमार्जितम्=क्षालितम्, तद्दुःखादपि एवमधिकदुःखानुभवदर्शनात् इति भावः।

चतुरिका—(प्रविश्य=रङ्गे प्रवेशं विधाय) जयतु जयतु भर्त्ता=विजयतु अस्माकं प्रभुः। वर्त्तिकायाः=चित्रलेखनसाधनीभूतायाः तूलिकायाः, करण्डकं=पेटकम्, गृहीत्वा, अहम्=चेटी, इतः=अस्यां दिशि, भवदधिष्ठितप्रदेशे, प्रस्थितास्मि=चलितास्मि।

राजा—ततः किम्=ततः किं सञ्जातम्?

चेटी—तत्=वर्तिकाकरण्डकम्, मे=मम, हस्तात्=करात्, पिङ्गलिका=तदाख्या चेटी, तया आवेदितया=विज्ञापितया (अन्यां काञ्चिद् ललनां चित्रयितुं स्वामिनो नियोगाच्चतुरिका वर्त्तिकाकरण्डकं नयति इति विज्ञापिता), देव्या=कृताभिषेकया, वसुमत्या=तन्नामकराज्ञा कर्त्र्या, अहं=वसुमत्येव, आर्यपुत्रस्य=स्वामिनो दुष्यन्तस्य, उपनेष्यामि=समीपे प्रापयिष्यामि, इति=एतत्, भणित्वा=उक्त्वा, सबलात्कारं=हठकारितया (बलपूर्वकम्), मे=मम चतुरिकायाः, हस्तात्=करात्, तत्=वर्त्तिकाकरण्डकम्, गृहीतम्=नीतम्।

चतुरिका—(प्रवेश कर) महाराज की जय हो! जय हो! तूलिका की पेटी लेकर जब मैं इधर आ रही थी····।

राजा—तब क्या हुआ?

चेटी—'मेरे हाथ में कूची की पेटी है' इस बात की सूचना पिङ्गलिका दासी से पाकर पट्टमहिषी वसुमती—'मैं स्वयं उसे आर्यपुत्र के पास ले जाऊँगी' कहकर मुझसे बलपूर्वक वह पेटी छीन ले गईं।

विदूषक—तब भला तुम कैसे छूटी?

Miśrakeśī—Showing your inner feelings thus before me, you have completly wiped off Śakuntalā's grief for repudiation.

Caturikā—*(Entering)* May our lord be victorious, be victorious. Having taken the box of brushes I had started in this direction....

The king—Then what happened?

Maid—That (brush-box) was on the way forcibly seized from my hand by queen Vasumatī, who was accompanied (informed) by Piṅgalikā saying—"I shall myself carry it to my lord."

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चेटी—जाव देवीए लदाविडवलग्गं उत्तरीअंचलं पिंगलिआ मोआवेदि, दाव णिह्नविदो मए अप्पा। [**यावद् देव्या लताविटपलग्नम् उत्तरीयाञ्चलं पिङ्गलिका मोचयति, तावत् निह्नुतो मया आत्मा।**]

राजा—वयस्य! उपस्थिता देवी बहुमानगर्विता च; तत् भवानिमां प्रतिकृतिं रक्षतु।

विदूषकः—उत्ताणं पि किं त्ति ण भणासि। (चित्रफलकमादायोत्थाय च) जइ भवं अंतेउर-कूड-वागुरादो मुंचिस्सदि, तदो मं मेहच्छण्णप्पासादे सद्दाविस्सदि; एदं च तहिं गोवाएमि, जहिं पारावदं उज्झिअ अण्णो को वि ण पेक्खिस्सदि। [**आत्मानमपि किमिति न भणसि। यदि भवानन्तःपुरकूटवागुरातो मोक्ष्यते, तदा मेघाच्छन्नप्रासादे शब्दायिष्यते। इदञ्च तत्र गोपायामि, यत्र पारावतमुज्झित्वा अन्यः कोऽपि न प्रेक्षिष्यते।**] (इति द्रुतपदं निष्क्रान्तः)

विदूषकः—त्वम्, कथं=केनोपायेन, विमुक्ता=वसुमतीहस्तात् इति।

चेटी—लताविटपलग्नम्—लतायाः विटपे=शाखायां, लग्नम्=संसक्तम्, देव्याः=वसुमत्याः, उत्तरीयाञ्चलं=पूर्वकायांशुकम्, यावत्=यत्कालं, पिङ्गलिका=तन्नाम्नी चेटी, मोचयति=विटपाद् वियोजयति, तावत्=तस्मिन्नेवावसरे, मया, आत्मा=स्वदेहः, निह्नुतः=ततो निर्गमनाद् गोपायितः।

राजा—वयस्य=हे सखे! उपस्थिता=उपस्थितप्राया, देवी=वसुमती, सा च, बहुमानेन=मत्कृत-अत्यादरेण, गर्विता=जातगर्वा, बहुमानगर्विता, तत्=तस्मात्, भवान्=त्वम्, इमां=पुरतः स्थिताम्, प्रतिकृतिं=शाकुन्तलेयचित्रम्, रक्षतु=क्वचिद् गोपायतु उत एतां गृहीत्वा भवानपयातु।

विदूषकः—आत्मानम्=मामपि रक्षतु, इति=इत्थम्, किम्=कथं, न भणसि=कथयसि, यदि=चेत्, भवान्=त्वम्, अन्तःपुरम्=अवरोधवर्त्तिनी रमणी, सैव कूटवागुरा=यन्त्रमयमृगबन्धनोपायः, तस्याः अन्तःपुरकूटवागुरातः, मोक्ष्यते=परित्राणं प्राप्स्यति, तदा, मेघाच्छन्नप्रासादे=तन्नामकप्रासादविशेषे, शब्दायिष्यते=आमन्त्रयिष्यते (रहःस्थानतया तत्रैवाहं गच्छामीत्यभिप्रायः),

---

चेटी—तभी, जब तक पिङ्गलिका लताशाखा में उलझे हुए महारानी के उत्तरीय (दुपट्टे) को छुड़ाने लगी, इसी बीच में मैं छिप गई।

राजा—सखे! अधिक आदर पाने से गर्विता महारानी वसुमती इधर ही आ रही हैं, अतः (अब) तुम इस चित्र की रक्षा करो।

विदूषक—'अपनी भी रक्षा करो' ऐसा क्यों नहीं कहते। (**चित्रफलक लेकर और खड़ा होकर**) जब तुम अन्तःपुर (महारानी) के जाल से छूटो तो मुझे मेघाच्छन्न प्रासाद पर

Jester—Then how you were let off?

Maid servent—While Piṅgalikā was disengaging the queen's upper garment, stuck to the branch of a creeper, I took my self away or hid myself.

The king—Friend! the queen is at hand and she is proud of my great esteem of her. Do you therefore save this picture.

Jester—Why not you say—"Save your self too."*(Taking up the picture-board and rising)* If your majesty is let off from the deadly poison of the harem, then call me in the Megha-

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रः—अम्हो! अण्णसंकंतहिअओ वि पढमसंभावणं रक्खदि, थिरसोहिदो दाव एसो। [अहो! अन्यसंक्रान्तहृदयोऽपि प्रथमसम्भावनं रक्षति, स्थिरसौहृदस्तावदेषः।]

प्रतीहारी—(प्रविश्य पत्रहस्ता) जेदु जेदु देवो। [जयतु जयतु देवः।]

राजा—वेत्रवति! न खल्वन्तरे त्वया दृष्टा देवी?

प्रतीहारी—देव! दिट्ठा, पत्तहत्थं मं पेक्खिअ पडिणिउत्ता। [देव! दृष्टा, पत्रहस्तां मां प्रेक्ष्य प्रतिनिवृत्ता।]

इदं=चित्रफलकम्, तव=तस्मिन् एकान्तस्थमेघाच्छन्नप्रासादे, गोपायामि=प्रच्छादयामि। यत्र=यस्मिन् स्थाने, पारावतं=कपोतम्, उज्झित्वा=त्यक्त्वा (विहाय), अन्यः कोऽपि जनः, न प्रेक्षिष्यते=नैव द्रष्टुं शक्ष्यति। (इति=एवं, द्रुततरं=क्षिप्रगत्या, निष्क्रान्तः=निर्गतः)।

मिश्रकेशी—अहो इति विस्मये, अन्यस्यां=नायिकायाम्, शकुन्तलायाम्, संक्रान्तं= संसक्तं, हृदयं=चेतः, यस्य सः अन्यसंक्रान्तहृदयः, अपि, प्रथमसम्भावनम्=पूर्वप्रणयम्, रक्षति, अत एव स्थिरं=दृढं, सौहृदं=प्रणयः, यस्य सः स्थिरसौहृदः, तावदेषः=सर्वथा प्रशंसनीय एवायमिति भावः।

(प्रविश्य=रङ्गे आगत्य, पत्रं हस्ते यस्याः सा पत्रहस्ता=पत्रं नीयमाना, प्रतिहारी=द्वार्-रक्षिका) जयतु जयतु देवः=अस्माकं स्वामी विजयतु।

राजा—वेत्रवति! खल्विति प्रश्ने, त्वया=भवता, अन्तरे=पथि मध्ये, देवी=वसुमती, न दृष्टा=नावलोकिता किम्?

पुकारना। मैं इस चित्र को वहाँ ऐसी जगह छिपाऊँगा, जहाँ कबूतरों के सिवाय और कोई देख नहीं सकता। (ऐसा कहकर तेजी से प्रस्थान)

मिश्रकेशी—आश्चर्य की बात है। यद्यपि इनका हृदय अन्य नायिका में अनुरक्त है, फिर भी ये अपने प्रथम प्रणय की रक्षा कर रहे हैं। अतः इनका प्रेम स्थायी है।

प्रतीहारी—(हाथ में पत्र लिये प्रवेश कर) महाराज की जय हो, जय हो।

राजा—वेत्रवती! तुमने मार्ग में महारानी को तो नहीं देखा था।

प्रतीहारी—देव! देखा था। मेरे हाथ में यह पत्र देखकर वे लौट गईं।

---

praticchana palace. I shall hide this picture there at such a place, where except peason no one can be able to see it. *(Exit with hasty steps)*

Miśrakeśī—This person (the king) whose affection has now become less ardent, shows regard to his first love, though his heart is transferred to another.

Door-keeper—*(Entering with letter in hand)* May your majesty be victorious, be victorious.

The king—Vetravatī! did you really not seen the queen on your way?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—कार्यज्ञा देवी, कार्योपरोधं मे परिहरति।

प्रतिहारी—देव! अमच्चो विण्णवेदि अज्ज रज्जकज्जस्स बहुलदाए एक्कं ज्जेव मए पोरकज्जं पच्चवेक्खिदं, तं देवो पत्तारोविदं पच्चक्खीकरेदुत्ति। [देव! अमात्यो विज्ञापयति अद्य राज्यकार्यस्य बहुलतया एकमेव मया पौरकार्यं प्रत्यवेक्षितम्, तत् देवः पत्रारोपितं प्रत्यक्षीकरोतु इति।]

राजा—इतः पत्रं दर्शय।

(प्रतिहार्युपनयति)

प्रतीहारी—देव! दृष्टा=पथिमध्ये देवी वसुमती अवलोकिता मया, (किन्तु) पत्रहस्तां=पत्रधारिणीम्, मां, प्रेक्ष्य=अवलोक्य, प्रतिनिवृत्ता=ततः प्रत्यावृत्य गता।

राजा—कार्यं=करणीयम्, जानाति या सा कार्यज्ञा=कार्याकार्यविवेकवती, देवी=वसुमती, अत एव, मे=मम, कार्योपरोधम्=कार्यविरोधम्, परिहरति=परित्यजति (राजकार्यविघ्नजननमकार्यमिति मत्वा निवर्तिता इत्यर्थः)।

प्रतीहारी—देव! अमात्यः=सचिवः, विज्ञापयति=निवेदयति (सूचयति), अद्य=भवदनुपस्थितिदिवसे, राजकार्यस्य=राज्यरक्षणहेतुभूतकार्यस्य, बहुलतया=अधिकतया, एकमेव=एकमात्रम्, मया=अमात्येन, पौरकार्यम्=भवत्प्रत्यवेक्षणीयं पुरवासिनां कार्यम्, प्रत्यवेक्षितम्=दृष्टम्, तत्=तत्कार्यम्, पत्रारोपितं=पत्रे लिखितम्, प्रत्यक्षीकरोतु=विलोकयतु भवानिति शेषः।

राजा—इतः=ममान्तिके, पत्रं दर्शय।

(प्रतीहारी=द्वारपालः, उपनयति=राज्ञो हस्ते पत्रमर्पयति।)

राजा—महारानी राजकार्य की महत्ता को समझती हैं, इसीलिए मेरे कार्य में बाधा डालने से दूर रहती हैं।

प्रतीहारी—देव! सचिव महोदय कहते हैं—आज राजकार्य की अधिकता के कारण मैं एक ही जनकार्य देख सका हूँ, वह इस पत्र में लिखकर भेज रहा हूँ, आप उसे देख लें।

राजा—इधर पत्र दिखाओ।

(प्रतीहारी पत्र पास लाती है)

Door-keeper—Yes, seeing me with a letter in hand, she returned.

The king—Conscious of the importance of my duty, she avoids, causing interruption to my work.

Door-keeper—You majesty! the minister thus reports. By reason of the load of work only one case of the citizens has been investigated (thoroughly checked) by me. May your majesty see it as put on paper.

The king—Show the letter here.

(Door-keeper brings it near)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(वाचयति) विदितमस्तु देवपादानाम्, धनवृद्धिर्नाम वणिक् वारिपथोपजीवी नौव्यसनेन विपन्नः, स चानपत्यः, तस्य चानेककोटिसंख्यं वसु, तदिदानीं राजस्वतामापद्यते इति श्रुत्वा देवः प्रमाणम् इति। (सविषादम्) कष्टं खल्वनपत्यता। वेत्रवति! महाधनतया बहुपत्नीकेनानेन भवितव्यम्, तदन्विष्यतां यदि काचिदापन्नसत्त्वास्य भार्या स्यात्।

प्रतीहारी—दाणिं ज्जेव साकेदउरस्स सेट्ठिणो दुहिदा णिव्वुत्तपुंसवणा तस्सा जाआ सुणीअदि। [**इदानीमेव साकेतपुरस्य श्रेष्ठिनो दुहिता निर्वृत्तपुंसवना तस्य जाया श्रूयते।**]

राजा—(वाचयति=पठति) देवपादानाम्=नरपतिचरणानाम्, विदितमस्तु=ज्ञातमस्तु, वारिणः पन्थाः इति वारिपथः, तेन उपजीवतीति वारिपथोपजीवी=समुद्रादिजलपथे वाणिज्यार्थं नौकापरिचालनेन जीविकानिर्वाही, धनवृद्धिर्नाम=एतन्नामकः, वणिक्=पण्याजीवः, नावः=नौकायाः, व्यसनं=विपत् (जलमज्जनम्), तेन=नौव्यसनेन, विपन्नः=मृतः, सः=वणिक् च, अनपत्यः=(न पतति वंशो येन जातेन तदपत्यं तस्मात्) निःसन्तानः, तस्य=वणिजस्य, अनेककोटिसंख्यम्-अनेकाः=बहवः, कोटयः=सङ्ख्याः, यस्य तत्, वसुधनम्, अस्तीति शेषः, तत्=वसु, इदानीम्=धनवृद्धेर्देहान्तात् परम्, राजस्वताम्=राजस्वामिकताम्, आपद्यते=प्राप्नोति, इति श्रुत्वा=श्रवणविषयीकृत्य, देवः=भवान् (राजा), प्रमाणम्=कर्तव्यतानिश्चयकृत्। (सविषादम्=सखेदम्) कष्टम्=दुःखम्, खल्विति निश्चयेन, अनपत्यता=निःसन्तानता। वेत्रवति! (प्रतीहार्य्याः सम्बोधनम्) महाधनतया=बहुधनतया (कोटीश्वरत्वेन), अनेन=धनवृद्धिना, बह्व्यः=अनेकाः, पत्न्यः=भार्याः, यस्य तेन बहुपत्नीकेन, भवितव्यम्। तत्=तस्मात्, अन्विष्यताम्=अनुसन्धीयताम्, यदि, अस्य=वणिजस्य, काचित् भार्या=पत्नी, आपन्नं=गर्भे प्राप्तं, सत्त्वं=जन्तुः, यया सा आपन्नसत्त्वा=गर्भिणी, स्यात्।

राजा—(पढ़ता है) महाराज को ज्ञात हो कि जलमार्ग से जीविका कमाने वाला कोई धनवृद्धि नाम का वैश्य नौका डूबने से मर गया है। उसे कोई सन्तान नहीं है और उसके पास करोड़ों का धन है। वह धन अब राज्य की सम्पत्ति माना जा रहा है, यह सुनकर आप कर्त्तव्य का निश्चय करें। (खेदपूर्वक) निःसन्तान होना भी कष्टकर बात है। वेत्रवति! वह बहुत धनाढ्य था, इस कारण उसकी अनेक पत्नियाँ होंगी, अतः पता लगाओ कि उनमें से शायद कोई गर्भवती हो।

The king—(Reads) A leading merchant, named Dhanmitra, carrying on business by sea, died in a ship-wreck. He is childless though owner of crors of rupees. His store of wealth now being considered as the property of state-treasury. Hearing this your majesty should decide for its lordship. *(Sorrowfully)* Childlessness is misery indeed. Vetravatī! on account of his being possessed of vast wealth the merchant must have had many wives. Let it be enquired if some one among his wieves quick with child or pragnent?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—स खलु गर्भः पित्र्यमृक्थमर्हति। गत्वैवममात्यं ब्रूहि।

प्रतीहारी—जं देवो आणवेदि। [यत् देव आज्ञापयति।] (इति प्रस्थिता)

राजा—एहि तावत्।

प्रतीहारी—(प्रतिनिवृत्य) एसाम्हि। [एषास्मि।]

राजा—किमनेन सन्ततिरस्ति नास्तीति।

येन येन वियुज्यन्ते प्रजाः स्निग्धेन बन्धुना।
स स पापादृते तासां दुष्यन्त इति घुष्यताम्॥ २५॥

प्रतीहारी—साकेतपुरस्य=अयोध्यायाः, श्रेष्ठिनः=वणिजः, दुहिता=तनया, निर्वृत्तं=निष्पन्नं, पुंसवनं=पुंसन्तानसम्पादकसंस्कारविशेषः, यस्याः सा निर्वृत्तपुंसवना, तस्य=धनवृद्धेः, जाया=पत्नी, इदानीमेव=सम्प्रत्येव (निर्वृत्तपुंसवना जाता इति), श्रूयते=लोकपरम्परया आकर्ण्यते।

राजा—स खलु= स एव, गर्भः=उदरस्थः बालः, पित्र्यम्=पैतृकम्, ऋक्थम्=धनम्, अर्हति=प्राप्तुं योग्यो भवति। गत्वा=अमात्यअन्तिकं प्राप्य, एवं=मदीयोक्तं, ब्रूहि=कथय।

प्रतीहारी—यद्देव आज्ञापयति=यद् भवान् निर्दिशति, तदेव गत्वा निवेदयामि। (इति= इत्युक्त्वा, प्रस्थिता=निर्गता)

राजा—एहि=प्रतिनिवर्तस्व तावत्।

प्रतीहारी—(प्रतिनिवृत्त्य=पुनरेत्य) एषास्मि प्रतिनिवृत्ता।

राजा—सन्ततिः=धनवृद्धेः सन्तानः, अस्ति वा नास्ति वा अनेन विचारेण किं प्रयोजनम्। (सन्ततिरस्तु वा मास्तु वा तद्विचारो मास्तु।)

प्रतीहारी—अभी-अभी सुना जा रहा है कि साकेत-निवासी किसी सेठ की पुत्री जो धर्मवृद्ध की पत्नी है, उसका पुंसवन संस्कार हो चुका है।

राजा—वही गर्भस्थ बालक अपने पिता के धन का अधिकारी है, यह बात जाकर अमात्य को बता दो।

प्रतीहारी—महाराज की जो आज्ञा (जाने के लिए तैयारी)।

राजा—यहाँ आओ।

प्रतीहारी—(पास आकर) यह मैं उपस्थित हूँ।

राजा—उसकी कोई सन्तान है या नहीं—इसका पता लगाने की क्या आवश्यकता?

Door-keeper—(Sir) It is reported that his wife, the daughter of a merchant of Sāketa, has had her Puṁsavana ceremony performed only recently.

The king—Surely the babay under embroy deserves paternal property. Go, say so to the minister.

Door-keeper—As your majesty commands. *(Started)*

The king—Just come.

Door-keeper—Here I am.

The king—What matters it if one has or has not progency?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—एदं णाम घोषइदव्वं। देव! (इति निष्क्रम्य पुनः प्रविश्य) काले पविट्टं विअ अहिणंदिदं देवस्स सासणं महाजणेण। [**एतत् नाम घोषयितव्यम्। देव! काले प्रवृष्टमिव अभिनन्दितं देवस्य शासनं महाजनेन।**]

राजा—(दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य) एवं भोः! सन्ततिविच्छेदनिरवलम्बना मूलपुरुषावसाने सम्पदः परमुपतिष्ठन्ते; ममाप्यन्ते पुरुवंशश्रिय एष वृत्तान्तः।

अन्वयः—प्रजाः येन येन स्निग्धेन बन्धुना वियुज्यन्ते पापादृते तासां स सः दुष्यन्तः इति घुष्यताम्॥ २५॥

येनेति। प्रजाः=राज्यस्था जनाः, येन येन स्निग्धेन=स्नेहवता, बन्धुना=पुत्रादिबान्धवजनेन, वियुज्यन्ते=नियतिवशाद् वियुक्ता भवन्ति, पापादृते=पापं विना अथवा पापिनं विना, तासां=प्रजानाम्, स सः=बन्धुः, दुष्यन्तः=राजा दुष्यन्तः, इति घुष्यताम्=तारस्वरेण सूच्यताम्। अत्र रूपकालङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २५॥

भावार्थः—धनवृद्धेः स्थितायामपि सन्ततौ सम्प्रति तदर्थजातं मदधीनमेव तिष्ठतु यथान्यः कोऽपि तन्नापहर्तुं शक्नुयात्, परिशेषे तु तदपत्यमेव प्राप्स्यतीति भावः। अहमेव नियतिवशाद् बन्धुवियुक्तानां बन्धुः संरक्षकश्च इति सर्वत्र राज्ये भेरीनादपूर्वकम् आवेद्यतामिति च भावः॥ २५॥

प्रतीहारी—एतत्=भवदुक्तप्रकारेण, घोषयितव्यम्=भेरीनिनादपूर्वकमावेदयितव्यम्, नामेत्युपगमे। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रम्य=निर्गत्य, पुनः=भूयः, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) देव!=स्वामिन्! देवस्य=भवतः, शासनम्=निदेशम्, काले=अपेक्षितसमये, प्रवृष्टं=प्रकृष्टवर्षणमिव, महाजनेन=श्रेष्ठप्रजाजनेन, अभिनन्दितम्=प्रशंस्य स्वीकृतम्।

राजा—(दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य भोः! भो इति विषादसूचकमव्ययम्। अथवा प्रतीहारी-

---

हमारी प्रजा में घोषणा करा दो कि जो लोग अपने किसी भी बन्धु से रहित हों, पापियों के अतिरिक्त अन्य सबका बन्धु दुष्यन्त है॥ २५॥

प्रतीहारी—यही घोषित करना चाहिए। (**यह कहकर प्रस्थान तथा पुनः प्रवेश**) समय पर होने वाली वृष्टि की भाँति समस्त महाजनों ने आपकी घोषणा का अभिनन्दन किया है।

राजा—(**गर्म और लम्बी साँस लेकर**) हाय! सन्तान के अभाव में कमाने वाले व्यक्ति के मर जाने पर सम्पत्ति पराये हाथ में चली जाती है। मेरे पश्चात् पुरुवंश की सम्पत्ति की भी यही दशा होने वाली है।

From whatever loving kinsman the subjects are separeted, Duśyanta will be (in the place of) that (kinsman) to them, except sinners, let this be proclaimed. (25)

Door-keeper—Thus surely should be proclaimed. *(Going out and entering again)* your majesty's proclamation (command) had been greeted by the people like a timely shower.

The king—*(Heaving a deep and hot sight)* Thus, O! the riches of families, that have become supportless owing to the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—पडिहदं अमंगलं। [प्रतिहतममङ्गलम्।]

राजा—धिङ्मामुपनतश्रेयोऽवमानिनम्।

मिश्रकेशी—असंसअं पिअसहीं ज्जेव हिअए कदुअ णिंदिदो अणेण अप्पा। [असंशयं प्रियसखीमेष हृदये कृत्वा निन्दितः अनेनात्मा।]

राजा—

संरोपितेऽप्यात्मनि धर्मपत्नी त्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा।
कल्पिष्यमाणा महते फलाय वसुन्धरा काल इवोप्तबीजा॥ २६॥

सम्बोधनम् इति केचित्। सम्पदः=विभवाः, मूलपुरुषस्य=अर्जयितुर्वंशधरस्य, अवसाने=नाशे (अन्ते), मूलपुरुषावज्ञाने, सन्ततेः=अपत्यस्य, विच्छेदेन=विलोपेन, निरवलम्बनाः=निराश्रयाः, एवम्=इत्थम् (धनवृद्धिसम्पद् इव), परं=तदितरं जनम्, उपतिष्ठन्ते=उपगच्छन्ति। तथाहि, ममापि= अनपत्यस्य दुष्यन्तस्यापि, अन्ते=अवसाने, पुरुवंशश्रियः=पौरवलक्ष्म्याः, एष वृत्तान्तः= ईदृगेव प्रकारः स्यादिति।

प्रतीहारी—अमङ्गलं=भवदाशङ्कितं निजावसानरूपं, सन्ततिविच्छेदरूपं पौरवश्रियः पराश्रयणं चेति सर्वमशुभम्, प्रतिहतम्=देवताप्रसादात् निराकृतं भवतु।

राजा—उपनतं=स्वयमेवोपस्थितम्, श्रेयः=ससत्त्वशकुन्तलारूपं कल्याणं, अवमन्यते= प्रत्याख्यानादिना तिरस्करोतीति तम् उपनतश्रेयोऽवमानिनम्, माम्=दुष्यन्तम्, धिक्=निन्दामीत्यर्थः।

मिश्रकेशी—असंशयं=सुनिश्चितमेव, अनेन=राजा दुष्यन्तेन, प्रियसखीम्=शकुन्तलामेव, हृदये=स्वमनसि कृत्वा, आत्मा, निन्दितः=तिरस्कृतः भर्त्सितः।

अन्वयः—काले उप्तबीजा (अत एव) महते फलाय कल्पिष्यमाणा वसुन्धरा इव मया कुलप्रतिष्ठा (हेतुभूता) धर्मपत्नी आत्मनि संरोपिते अपि त्यक्ता नाम॥ २६॥

प्रतीहारी—ईश्वर इस अमंगल को दूर करें।

राजा—स्वयमागत मंगल का अपमान करने वाले मुझ दुष्यन्त को धिक्कार है।

मिश्रकेशी—निःसन्देह प्रिय सखी शकुन्तला का विचार कर ही इन्होंने स्वयं की निन्दा की है।

राजा—उचित समय पर कोई इसलिए बीज बोए कि भविष्य में विशेष फल मिलेगा और यह कार्य कर वह व्यक्ति आशान्विता वसुधा को त्याग दे, ठीक उसी प्रकार मैंने उसमें

failure of progeny, wait upon another on the death of the original representative. At my demise too such is the fate of the riches of Purū's line.

Door-keeper—Let evil be averted.

The king—Fie (disgust) on me that disregarded the good (attractive) that had arrived itself.

Miśrakeśī—Certainly, having none but my dear friend in mind, he censured himself.

The king—Although myself was implanted (in her), I cast off my lawful wife the support of my family, who like the earth

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—अपरिच्चत्ता दाणिं दे भविस्सदि। [**अपरित्यक्ता इदानीं ते भविष्यति।**]

चेटी—(जनान्तिकम्) अज्जे! इदं पत्तं पेसअंतेण किं विआरिदं अमच्चेण। पेक्ख दाव भट्टिणो वाहजलप्पवाहो संवुत्तो। अधवा ण एसो सोअं बुद्धिपुव्वअं पडिवज्जिस्सदि ता मेहच्छण्णागारट्ठिदं णिव्वाणसमत्थं अज्जमाहव्वं गेण्हिअ आअच्छ। [**आर्ये! एतत् पत्रं प्रेषयता किं विचारितममात्येन। प्रेक्षस्व तावत् भर्तुर्बाष्पजलप्रवाहः संवृत्तः। अथवा नैष शोकं बुद्धिपूर्वकं परिवर्जयिष्यति, तन्मेघाच्छन्नागारस्थितं निर्वाणसमर्थम् आर्यमाधव्यं गृहीत्वा आगच्छ।**]

संरोपित इति। काले=उचितसमये, उप्तं=रोपितं, बीजं यस्याः सा उप्तबीजा=कृतबीजावपना, अत एव, महते=प्रभूताय (विपुलाय), फलाय=शस्याय, कल्पिष्यमाणा=प्रभविष्यन्ती, प्रभूतं शस्यं जनयितुं शक्ष्यन्ति, वसुन्धरा=भूमिरिव, मया=दुष्यन्तेन, कुलस्य=स्ववंशस्य, प्रतिष्ठा= स्थितिहेतुभूता (तद्रक्षसन्तानधारणादाश्रयस्वरूपा), धर्मपत्नी=धर्मानुसारेण परिगृहीता स्त्री शकुन्तला, आत्मनि=स्वस्मिन्, संरोपिते='आत्मा वै जायते पुत्रः' 'आत्मा प्रविश्य जायायां पुत्ररूपेण जायते' इत्यादि श्रुतिस्मृतिभ्यां गर्भरूपेण तदुदरे आहितेऽपि, बीजे निषिक्तेऽपि, त्यक्ता=अवधीरिता, नाम इति कुत्सायाम्। अत्र हेतुहेतुमद्भावात् पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्, समुदाये तु श्रौतोपमालङ्कारः। उपजातिर्वृत्तम्॥ २६॥

भावार्थः—यथा वसुन्धरा काले उपबीजत्वेनैव महते फलाय कल्पिष्यमाणा भवति तथैव पत्नीरपि, परन्तु तस्याः परित्यागेन सन्ततिविच्छेदस्याप्यहमेव हेतुरित्याशयः।

मिश्रकेशी—इदानीम्=सम्प्रति (प्रत्यक्षेण मया तवेदृश्या दशाया दर्शनादेतदव्यवहितकाले एवेत्यर्थः), अपरित्यक्ता=पुनर्लब्धा शकुन्तला, ते=त्वत्कृते, भविष्यति। (मत्सकाशात्ते गाढानुरागमाकर्ण्य शकुन्तला पुनरवश्यं त्वत्समीपमागमिष्यत्येव।)

चेटी—(जनान्तिकम्=सख्याः कर्णे) आर्य्ये=इति प्रतीहार्य्याः सम्बोधनम्, एतत्=तवानीतम्, पत्रं=धनवृद्धिवृत्तान्तोल्लिखितं पत्रम्, प्रेषयता=राज्ञोऽन्तिकं प्रेरयता, अमात्येन=मन्त्रिणा

पुत्र रूपी बीज तो बो दिया था परन्तु अपने वंश की स्थिति की हेतुभूता उस पत्नी को त्याग दिया है (अतः निश्चय ही मैं सर्वथा गर्हित हूँ)॥ २६॥

मिश्रकेशी—अब वह तुम्हारे लिए परित्यक्ता नहीं रहेगी।

चेटी—(**प्रतीहारी के कान में**) आर्ये! इस पत्र को भेजकर अमात्य ने (देखो) क्या कर डाला? देखो, स्वामी के आँसू बहने लगे। अथवा—ये महाराज तो बुद्धिपूर्वक विचार कर निज शोक को त्यागेंगे नहीं, अतः मेघाच्छन्न प्रासाद में विराजमान शोक दूर करने में समर्थ आर्य माधव्य को लेकर यहाँ आ जाओ।

---

with the seed sown at the proper time, was to conduce to a mighty fruit. (26)

Miśrakeśī—Now, she will not be a discarded one for you.

Maid—(To door-keeper) Madam! see, what that minister has done, by sending this letter? See, the flow of tears had started from the eyes of his majesty. Or this will not be able to remove his grief through wisdom. So, in order to console him fetch the

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—सुट्ठु दे भणिदं। [सुष्ठु त्वया भणितम्।] (इति निष्क्रान्ता)

राजा—अहो! दुष्यन्तस्य संशयमारूढाः पिण्डभाजः। कुतः—

अस्मात् परं बत यथाश्रुति सम्भृतानि
को नः कुले निवपनानि करिष्यतीति।
नूनं प्रसूतविकलेन मया प्रसिक्तं
धौताश्रुसेकमुदकं पितरः पिबन्ति॥ २७॥

पिशुनेन, किं विचारितम्=किं विवेचनं कृतम्। प्रेक्षस्व=पश्य, तावत्, भर्त्तुः=स्वामिनो राज्ञः दुष्यन्तस्य, बाष्पजलप्रवाहः=नयनजलस्रोतः, प्रवृत्तः=आरब्धः। अथवा, एषः=राजा दुष्यन्तः, बुद्धिपूर्वकम्=प्रज्ञापूर्वकम् (विचारपूर्वकम्), शोकं=शकुन्तलावियोगजं दुःखम्, न=नैव, परिवर्जयिष्यति=न परित्यक्ष्यति। तत्=तस्मात्, मेघाच्छन्नागारस्थितम्=मेघाच्छन्नागारनामकप्रासादगतम्, निर्वाणसमर्थम्=शोकापनोदक्षमम्, आर्य्यमाधव्यम्=विदूषकं, गृहीत्वा, आगच्छत=सहैवात्रानय।

प्रतीहारी—सुष्ठु त्वया भणितम्=साधु त्वयोक्तम्। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ता=माधव्यान्तिकं प्रस्थिता।)

राजा—अहो इति शोके, दुष्यन्तस्य=मम, पिण्डं=श्राद्धान्ननिर्मतं पिण्डं, भजन्ते=अर्हन्तीति पिण्डभाजः=पितरः, संशयमारूढाः=अग्रे पिण्डदानाभावात् पिण्डं लप्स्यन्ते न वेतीति सन्देहापन्नाः।

अन्वयः—अस्मात् परं नः कुले कः यथाश्रुति सम्भृतानि निवपनानि (करिष्यति) इति पितरः प्रसूतिविकलेन मया प्रसिक्तम् उदकं धौताश्रुसेकं नूनं पिबन्ति बत॥ २७॥

अस्मादिति। अस्मात्=दुष्यन्तात्, परम्=अनन्तरम्, नः=अस्माकं, कुले=वंशे, कः=जनः, श्रुतिं=वेदम्, अनतिक्रम्येति यथाश्रुति=वेदोक्तविधानेन, सम्भृतानि=सम्यगायोजितानि, निवपनानि=

प्रतीहारी—तुमने ठीक कहा। (प्रस्थान)

राजा—हा! दुष्यन्त के पिण्डभागी पितर अब सन्देह में पड़ गये। क्योंकि—

मेरे बाद मेरे वंश में कौन व्यक्ति ऐसा होगा, जो शास्त्रानुसार आयोजित श्राद्ध, पिण्डदान और तर्पण करेगा। इसी बात को सोचकर हमारे पितर मुझ सन्तानहीन व्यक्ति द्वारा प्रदत्त तर्पणजल को पीयेंगे तो सही परन्तु उस तर्पणजल में आँसू भी (जो उनके मुख का धोवन होगा) मिलाकर पीयेंगे॥ २७॥

---

venerable Mādhavya from the Meghācchanna palace and come back.

Door-keeper— You say well. *(Exit)*

The king—Oh! the ancestors of Duśyanta have mounted upon a doubt. Why?

Who after this (Duśyanta) in our family, alas! will offer (us) the libations prepared according to scriptural preceept? Thus thinking, surely my forefathers drink what remains of the water after washing their tears (the water) which is poured out (to them) by me, who am destitute of (devoid of) progeny.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रकेशी—हद्दी ! हद्दी ! सहि क्खु दीवे ववधाणदोसेण अंधआरं अणुहोदि राएसी। [हा धिक्! हा धिक्! सति खलु दीपे व्यवधानदोषेण अन्धकारमनुभवति राजर्षिः ।]

चेटी—भट्टा ! अलं संदाबिदेन, वअत्थो ज्जेव पहू अबरासु देवीसु अणुरूवपुत्त-जम्मेण पुव्वपुरुसाणं अणिणो भविस्सदि। (आत्मगतम्) ण मे वअणं पडिच्छदि। अणुरूवं वि ओसधं आदंकं णिअत्तेदि। [भर्त्तः! अलं सन्तापितेन, वयस्थ एव प्रभुः अपरासु देवीषु अनरूपपुत्रजन्मना पूर्वपुरुषाणामनृणो भविष्यति। न मे वचनं प्रतीच्छति। अनुरूपमपि औषधम् आतङ्कं निवर्त्तयति।]

श्राद्धीयपिण्डतर्पणादीनि (करिष्यति), इति=एवं चिन्तयित्वा, पितरः=मम पूर्वपुरुषाः, प्रसूत्या=सन्तत्या, विकलेन=रहितेन (पुत्रहीनेन), मया=दुष्यन्तेन, प्रसिक्तम्=तेभ्यो दत्तम्, उदकं=तर्पणजलम्, धौतः=क्षालितः, अश्रुसेकः=बाष्पबिन्दुः, येन तत् यथा स्यात्तथा धौताश्रुसेकम्, नूनम्=निश्चितमेव, पिबन्ति। बत इति खेदे। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमपि। वसन्ततिलकावृत्तम्॥ २७॥

भावार्थः—मदीयः पितरः मत्परं पिण्ड-तर्पणजलाभावमुत्प्रेक्ष्य शोकजनितबाष्पप्रवाहेण गण्डं तदनु अधरमपि प्लावयिष्यन्ति, मदर्पितं तर्पणजलमासाद्य चामेध्यं तमश्रुप्रवाहं प्रक्षाल्यावशिष्टं पास्यन्तीत्यहो कष्टम्॥ २७॥

मिश्रकेशी—हा धिक्! हा धिक्! इति खेदे, खलु इति निश्चयेन, दीपे सत्यपि, व्यवधानं=दूरता, एव दोषः, तेन व्यवधानदोषेण, अन्धकारमनुभवति, राजर्षिर्दुष्यन्तः। (यथा दीपस्य विद्यमानतायामपि दूरत्वादिदोषजुष्टत्वाल्लोकोऽन्धकारमनुभवति तथाऽयं राजर्षिः शकुन्तलागर्भस्थस्य पुत्रस्य सद्भावेऽपि अन्तर्द्धि आदि दोषजुष्टतयाऽनपत्यतादुःखमनुभवति।)

चेटी—सन्तापितेन=शोकेन, अलम्=पर्याप्तम्, भर्तः स्वामी ! प्रभुः=भवान् (राजा), वयसि यौवने तिष्ठतीति यः सः वयस्थः=तरुण एव, अपरासु=शकुन्तलेतरासु, देवीषु=कृताभिषेकमहिषीषु, अनुरूपपुत्रजन्मना=आत्मसदृशपुत्रोत्पत्त्या, पूर्वपुरुषाणाम्=पितॄणाम्, अनृणः=ऋणविमुक्तः,

---

मिश्रकेशी—हाय! हाय! दीपक के रहते हुए भी मध्य में व्यवधान (रुकावट) के कारण ये राजर्षि इस समय अन्धकार का अनुभव कर रहे हैं।

चेटी—स्वामी! अधिक सन्ताप न कीजिए। अभी आप तरुण हैं, अन्य रानियों के गर्भ से अपने अनुरूप पुत्र उत्पन्न कर पितृऋण से मुक्त हो सकेंगे। (मन में) ये मेरी बात तो सुनते ही नहीं। वस्तुतः उपयुक्त औषधि ही रोग के आतंक को नष्ट करने में समर्थ होती है।

Miśrakeśī—Oh alas! oh alas! Though the lamp is really there, he is experiencing the evil of darkness owing to the fault of the screen.

Maid—My lord! do not be so gloomy. Still you are quite young, by producing progeny from your other queens, you can clear your ancestorial debt. *(To herself)* His is not hearing me. Actually a suitable medicine only can succeed to remove (uproot) a desease.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(शोकनाटितकेन)

आमूलशुद्धसन्तति कुलमेतत् पौरवं प्रजावन्ध्ये।
मय्यस्तमितमनार्य्ये देश इव सरस्वतीस्रोतः॥ २८॥

(इति मोहमुपागतः)

भविष्यति। (आत्मगतम्=स्वगतम्) मे=मह्यं, वचनं=वाक्यं (कथनं), प्रतीच्छति=गृह्णाति (मद्वचनेन राजा नैवाश्वासनयुक्तो भवति), अनुरूपम्=उपयुक्तम् अपि, औषधम्, आतङ्कं=भयजनकं रोगम्, विवर्त्तयति=विनाशयति। (अनुरूपं भेषजं यथा रोगं नाशयति तथा माधव्यकर्तृकानुरूपोपदेश एवास्य सन्तापं नाशयिष्यति न पुनर्हीनाया मम वचनेनेत्याशयः)।

राजा—(नाटितमेव नाटितकम्, शोकस्य नाटितकम्=नाटनम्, इति शोकनाटितकम्, तेन शोकनाटितकेन=शोकाभिनयेन)

अन्वयः—आमूलशुद्धसन्ततिः पौरवम् एतत् कुलं प्रजावन्ध्ये अनार्ये मयि सरस्वतीस्रोतः इव अस्तम्॥ २८॥

आमूलेति। आमूलात्=आदितः (एकत्रादिपुरुषाच्चन्द्रमसः), सरस्वतीपक्षे—प्रथमोत्पत्ति-देशात्, आरभ्य, शुद्धा=अकलङ्किता, पक्षे-पवित्रा, सन्ततिः=पुत्रपौत्रादिपरम्परा, पक्षे—धारा, आमूलशुद्धसन्ततिः, पौरवम्=पुरुसम्बन्धि, पक्षे—भूयिष्ठम्, एतत् कुलम्=अयं वंशः, प्रजावन्ध्ये=निःसन्ताने, पक्षे—जनशून्ये अरण्यादिक्षेत्रे, अनार्ये=अप्रशस्ते, पक्षे-अनार्यम्लेच्छादि अध्युषिते, मयि=दुष्यन्ते, पक्षे—तथाविधे देशे, तथाभूतं सरस्वतीस्रोत इव—सरस्वत्याः=तदाख्यायाः नद्याः, स्रोतः=प्रवाहः, तदिव, अस्तम्=अदर्शनम्, इतं=गतम् (विलुप्तम्), पक्षे शोषं गतम्। अत्र श्रौती-पूर्णोपमालङ्कारः। आर्य्या जातिः॥ २८॥

भावार्थः—यथा अनार्यम्लेच्छादि अध्युषिते निर्जनप्रदेशे सरस्वत्याः प्रवाहः विलुप्तं भवति तथैव आमूलशुद्धसन्ततिः पुरुसम्बन्धी एतत् कुलं प्रजावन्ध्ये अस्तं गमिष्यति, इदमतीव दुःखकरमिति भावः॥ २८॥

(इति मोहम्=मूर्च्छाम्, उपागतः=प्राप्तः)

राजा—(शोक का अभिनय करके)

अनार्यों से आक्रान्त देश में सरस्वती के निर्मल स्रोत की भाँति, आरम्भ से ही शुद्ध सन्ततिवाला पुरुवंश मुझ निःसन्तान अनार्य के कारण नष्ट हो रहा है॥ २८॥

(यह कहकर मूर्च्छित हो जाता है।)

The king—*(Acting as if full of sorrow)*

As the current of holy river Sarswatī disappears in such a certain place, wherever resinding Anāryās, accordingly. The race of Purū which is from the very begining well known for its pure progeny, is going to disappear due to me, who is childless and Anārya. (28)

(Becomes senseless)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चेटी—(ससम्भ्रमम्) समस्ससदु समस्ससदु भट्टा। **[समाश्वसितु समाश्वसितु भर्ता।]**

मिश्रकेशी—किं दाणिं ज्जेव णिव्वुदं करेमि। अथवा सुदं मए सउंतलं समस्संतीए देवजणणीए मुहादो जणभाअसमुस्सुआओ देवाओ ज्जेव तह अणुचिट्ठिस्संति, जह सो भट्टा अइरेण धम्मपदिणीं तुमं अहिणंदिस्सदित्ति। ता ण जुत्तं मे एत्थ विलंबिदुं, जाव इमिणा वुत्तंतेण पिअसहीं सउंतलं समस्सासेमि। **[किमिदानीमेव निर्वृत्तं करोमि, अथवा श्रुतं मया शकुन्तलां समाश्वासयन्त्या देवजनन्या मुखात् यज्ञभागसमुत्सुका देवा एव तथा अनुष्ठास्यन्ति; यथा स भर्ता अचिरेण धर्मपत्नीं त्वामभिनन्दिष्यतीति तन्न युक्तं मे अत्र विलम्बितुम्, यावदेतेन वृत्तान्तेन प्रियसखीं शकुन्तलां समाश्वासयामि।]** (इत्युद्भ्रान्तकेन निष्क्रान्ता)

चेटी—(ससम्भ्रमम्=व्यस्ततासहितं सत्वरं वा) समाश्वसितु समाश्वसितु=धैर्यम् आश्रयतु, भर्त्ता=प्रभुः।

मिश्रकेशी—किमिति प्रश्ने, इदानीमेव=सम्प्रत्येव, निर्वृत्तं=शकुन्तलावृत्तान्तनिवेदनेन सुखितम्, करोमि। अथवा, शकुन्तलाम्=पतिविरहदुःखिताम्, समाश्वासयन्त्या=सम्यग्रूपेण आश्वासयन्त्या, देवजनन्याः=अदितेः, मुखात्=आननात्, श्रुतम्=आकर्णितम्, मया, (यत्) यज्ञभागाय=यज्ञभागग्रहणाय, समुत्सुकाः=उत्कण्ठिताः, देवाः=अमराः, तथा एव=तेनैव रूपेण, अनुष्ठास्यन्ति=विधास्यन्ति, यथा=येन रूपेण, स भर्त्ता=स्वामी राजा दुष्यन्तः, अचिरेण=शीघ्रमेव, धर्मपत्नीं=सहधर्मिणीं, त्वाम्=शकुन्तलाम्, अभिनन्दिष्यति=सादरं ग्रहीष्यति (इति मया श्रुतम्)। तत्=तस्मात्, मे=मम, अत्र=अस्मिन् प्रदेशे, विलम्बितुम्=चिरायितुम्, न युक्तम्=नैवोचितम्। यावत्=यावत्कालपर्यन्तम्, एतेन=पूर्वनिर्दिष्टेन, वृत्तान्तेन=समाचारेण, प्रियसखीम्=शकुन्तलाम्, समाश्वासयामि। (संम्प्रति शकुन्तलार्थमेव पर्य्याकुलतया राज्ञो यज्ञानुष्ठानासम्भवात् भविष्यत्यपि दुष्यन्तात् परमस्मिन् भूमण्डले सत्यराजके स्वभोग्ययज्ञभागलोपाच्च स्वार्थसम्पादनार्थमेव देवा आग्रहीष्यन्तीति भावः।) इत्युद्भ्रान्तकेन=गतिविशेषेण, निष्क्रान्ता=प्रस्थिता)

चेटी—(घबराहट के साथ) महाराज! धैर्य धरिये, धैर्य धरिये।

मिश्रकेशी—क्या अभी इन्हें शकुन्तला के सम्बन्ध में समाचार सुनाकर प्रसन्न कर दूँ। अथवा शकुन्तला को आश्वासन देते समय मैंने देवमाता अदिति के मुख से सुना था कि यज्ञभाग पाने के लिए स्वयं देवता ऐसा करेंगे, जिससे यह राजा धर्मपत्नी कहकर तुम्हें आदरपूर्वक स्वीकार करेगा। अतः अब यहाँ देर करना उचित नहीं, तब तक इस वृत्तान्त से प्रिय सखी शकुन्तला को ढाढ़स बँधाऊँ। **(ऐसा कहकर खिसक जाती है।)**

Maid—(With confusion) Your majesty! Please have courage! (be couragious) or let master take comfort.

Miśrakeśī—Shall I even now make him happy or rather, I have heard from the mouth of mother of gods, as she was consoling Śakuntalā that the gods themselves, longing for their share at sacrifices, will so arrange that the husband will in a short period hail or accept his duly wedded wife. It is therefore improper to waste my time here or delay. In the mean while I console my dear friend with this news. *(Exit with a jump in the sky)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) भो! अब्बह्मणं अब्बह्मणं। [भोः! अब्रह्मण्यम् अब्रह्मण्यम्।]

राजा—(प्रत्यागतचेतनः कर्णं दत्त्वा) अये! माधव्यस्येवार्त्तनादः।

चेटी—सो णाम माधव्वो तवस्सी पिंगलिआमिस्सिआहिं चेडिआहिं चित्तफलअहत्थो पाविदो भवे। [स नाम माधव्यस्तपस्वी पिङ्गलिकामिश्रिताभिश्चेटिकाभिश्चित्रफलकहस्तः प्राप्तो भवेत्।]

राजा—चतुरिके! गच्छ, मद्वचनादनिषिद्धपरिजनां देवीमुपालभस्व।

(नेपथ्ये=जवनिकापृष्ठभागे (परोक्षे), भोः! ब्रह्मणे साध्विति ब्रह्मण्यम्, न ब्रह्मण्यमित्यब्रह्मण्यम्=ब्राह्मणवधस्य पापजनकत्वादवध्योऽहम् इत्याशयः।

राजा—(प्रत्यागतचेतनः=पुनर्लब्धसंज्ञः, कर्णं दत्त्वा=ध्यानपूर्वकं श्रुत्वा) अये इति सम्भ्रमे, माधव्यस्येव=विदूषकस्येव, आर्त्तनादः=करुणक्रन्दनम् (आपन्नकरुणशब्दः)।

चेटी—नामेति सम्भावनायाम्। सः=मेघाच्छन्नप्रासादगतः, तपस्वी=अनुकम्पार्हः, माधव्यः=तन्नामकः विदूषकः, चित्रफलकं हस्ते यस्य सः चित्रफलकहस्तः=धृताङ्कितशकुन्तलाचित्रपट्टः (सन्), पिङ्गलिका=तदाख्या देव्या वसुमत्या दासी, तथा—मिश्रिताभिः=मिलिताभिः, पिङ्गलिकामिश्रिताभिः, चेटिकाभिः=अन्याभिर्दासीभिः, प्राप्तः=आक्रमितः, भवेत्।

राजा—चतुरिके! गच्छ=याहि, मद्वचनात्=मम वचनमाश्रित्य, न निषिद्धः=दुर्व्यवहारात्र निवारितः, परिजनः=स्वपरिचारकलोकः, यया ताम् अनिषिद्धपरिजनाम्, देवीम्=महिषीम्, उपालभस्व=तिरस्कुरु। (तव परिचारिकाभिः माधव्योपरि ईदृशमन्याय्यमाचर्यते तत्र त्वया न किञ्चित् प्रतिविधीयते एष ते क आचार एवं मद्वचनमाश्रित्य देवीमुपालभस्व।)

(नेपथ्य में) अरे! रे! मैं अवध्य हूँ, अवध्य हूँ (बहुत बुरा, बहुत बुरा)।

राजा—(होश में आकर, कान देकर) अरे! यह तो माधव्य का-सा करुण क्रन्दन है।

चेटी—मैं समझती हूँ, हाथ में शकुन्तला का चित्रफलक लिये हुए माधव्य पर पिङ्गलिका सहित अन्य दासियों ने आक्रमण किया है।

राजा—चतुरिके! जाओ और मेरी ओर से रानी को उप.लम्भ दो कि उन्होंने अपनी दासियों को (आक्रमण करने से) रोका क्यों नहीं?

(Behind the scenes) Oh! a crime against a Brāhmaṇa, a crime against a Brāhmaṇa.

The king—*(Coming to his senses and listening)* Oh! the cry of distress is like that of Mādhavya.

Maid—I guess, the Mādhavya, who was keeping in his hand the picture-board, was attacked by maid servants, including Piṅgalā.

The king—Caturike! go, and blame the queen on my behalf that why not she prohibited her servants from attacking on my friend Mādhavya.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(चेटी निष्क्रान्ता।)

(नेपथ्ये—भूयः स एव शब्दः)

राजा—परमार्थतो भीतिभिन्नस्वरो ब्राह्मणः। कः कोऽत्र भोः!

कञ्चुकी (प्रविश्य)—आज्ञापयतु देवः।

राजा—निरूप्यतां किमेवं माधव्यब्राह्मणः क्रन्दतीति।

कञ्चुकी—यावदवलोकयामि। (इति निष्क्रम्य ससम्भ्रमं पुनः प्रविष्टः)

राजा—पार्वतायन! न खलु किञ्चिदत्याहितम्।

(चेटी=दासी, निष्क्रान्ता=निर्गता)

(नेपथ्ये=परोक्षे, भूयः=पुनरपि, स एव=अब्रह्मण्यमिति, शब्दः=करुणक्रन्दनम्।)

राजा—परमार्थतः=यथार्थतः, भीत्या=भयेन, भिन्नः=स्वाभाविकेतरः, स्वरः=कण्ठध्वनिः, यस्य सः भीतिभिन्नस्वरः, ब्राह्मणः=माधव्यः, अत्र=अस्मिन् स्थाने, कः=कोऽस्ति, भो इति सम्बोधने।

कञ्चुकी—(प्रविश्य=आगत्य) आज्ञापयतु=निर्दिशतु, देवः=प्रभुः।

राजा—निरूप्यताम्=अवलोक्यताम्, किम्=कथम्, एवम्=अनेन रूपेण, माधव्य-ब्राह्मणः= माधव्यनामकः ब्राह्मणविदूषकः, क्रन्दति=आर्त्तनादं करोति, इति निरूप्यताम्=निश्चीयताम्।

कञ्चुकी—यावत्=यद्भूतम् तद्, अवलोकयामि=अवलोकनं करोमि। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रम्य=बहिर्गत्वा, ससम्भ्रमम्=सोद्वेगम्, पुनः=भूयः, प्रविश्य=प्रवेशं विधाय)।

(दासी का प्रस्थान)

(नेपथ्य में पुनः वही शब्द)

राजा—निश्चय ही भय के कारण ब्राह्मण का स्वर विकृत हो गया है। अरे! है यहाँ कोई ?

कञ्चुकी—(प्रवेश कर) महाराज! आज्ञा दीजिए।

राजा—देखो तो सही, क्या इस प्रकार माधव्य ब्राह्मण ही चीख रहा है ?

कञ्चुकी—अभी जाकर देखता हूँ। (जाकर और घबराहट के साथ पुनः प्रवेशकर)

राजा—पार्वतायन! कुछ अधिक अनिष्ट तो नहीं हुआ ?

(Female servant exits.)

(Behind the seenes—again the same sound appears.)

The king—Certainly, due to fear the voice of the Brāha-aṇa, became otherwise. Who is here?

Chamberlain—(Entering) What is the command, your majesty!

The king—Find out whether Mādhavya cries like this?

Chambarlain—I shall find out. *(Goes out and hastily entering again)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कञ्चुकी—मैवम्।

राजा—ततः कुतोऽयं वेपथुः। तथा हि—

प्रागेव जरसा कम्पः सविशेषस्तु सम्प्रति।
आविष्करोति सर्वाङ्गमश्वत्थमिव मारुतः॥ २९॥

कञ्चुकी—परित्रायतां सुहृदं महाराजः।

राजा—पार्वतायन=कञ्चुकिन्! (पार्वतायन इति कञ्चुकिनो नामधेयम्) खल्विति प्रश्ने, न किञ्चिदत्याहितम्=न किमपि महाभयं जातम् (किम्?)।

कञ्चुकी—मैवम्=न किञ्चिदत्याहितमित्यर्थः।

राजा—ततः=तदा, अयं वेपथुः=तव गात्रोत्कम्पः, कुतः=कस्मात् कारणात् अस्तीति शेषः। तथाहि—

अन्वयः—जरसा प्रागेव कम्पः (आसीत्), सम्प्रति तु सविशेषः मारुतः अश्वत्थम् इव सर्वाङ्गम् आविष्करोति॥ २९॥

प्रागेवेति। जरसा=वार्द्धक्येन, प्रागेव=इतः पूर्वमेव, कम्पः=वेपथुः (आसीदिति शेषः), सम्प्रति=इदानीं तु, सविशेषः=अधिकः सन्, मारुतः=वायुः, अश्वत्थं=तन्नामकं (पिप्पलनामानं) वृक्षमिव, सर्वाङ्गम्=त्वदीयं सर्वावयवं प्राप्येति शेषः, आविष्करोति=सर्वावयवावच्छेदेनात्मानं प्रकाशयति। अत्रोपमालङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ २९॥

भावार्थः—यदि अत्याहितं नासीत् तर्हि कथम् ईदृशस्यागन्तुकस्य कम्पस्यावसरः इति भावः॥ २९॥

कञ्चुकी—परित्रायताम्=परिरक्षतु, सुहृदम्=स्वमित्रं माधव्यम्, महाराजः=भवान्।

कञ्चुकी—नहीं तो।

राजा—फिर भला तुम काँप क्यों रहे हो?

एक तो बुढ़ापे के कारण तुम पहले ही काँप रहे थे परन्तु अब वह काँपना और बढ़ गया है। जिस प्रकार वायु पीपल के समस्त अङ्गों में व्याप्त होकर अपना अस्तित्व प्रगट करता है, उसी प्रकार तुम्हारे अङ्गों में भी वह विशेषतः अपना अस्तित्व प्रगटा रहा है॥ २९॥

कञ्चुकी—महाराज! अपने मित्र को बचाइए।

The king—Parvatāyan! I think there is nothing to worry. (or not at all something very bad had happened)

Chamberlain—No, not at all.

The king—Then from where you have got this shaking? For—

Even before you were shaking due to old age but that shaking (trembleness) now increased somehow more. As the wind indicates its existence, spreading allover the Piple tree (the holy fig tree) accordingly it discloses its existence in your limbs too.

Chamberlain—Let your majesty protect your friend.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—कस्मात् परित्रातव्यः ?

कञ्चुकी—महतः कृच्छ्रात्।

राजा—अये! भिन्नार्थमभिधीयताम्।

कञ्चुकी—योऽसौ दिगवलोकनप्रासादो मेघप्रतिच्छन्नो नाम।

राजा—किन्तत्र ?

कञ्चुकी—

तस्याग्रभागाद् गृहनीलकण्ठैरनेकविश्रामविलङ्घ्यशृङ्गात्।
सखा प्रकाशेतरमूर्त्तिना ते केनापि सत्त्वेन निगृह्य नीतः ॥ ३० ॥

राजा—कस्मात्=किमभिधानात् पदार्थात् जनाद्वा, परित्रातव्यः=परिरक्षितव्यः ?

कञ्चुकी—महतः कृच्छ्रात्=प्रबलतमविपत्तेः।

राजा—अये इति विरक्तिसूचकं सम्बोधनम्, भिन्नः अर्थो यस्मिंस्तद्यथा स्यात्तथा भिन्नार्थम्=स्पष्टार्थम् (स्पष्टतरम्), अभिधीयताम्=सूच्यताम्।

कञ्चुकी—यः=दृश्यमानः, असौ=पूर्वोक्तः, दिगवलोकनप्रासादः=दिशामवलोकनाय निर्मितः प्रासादः=हर्म्यम्, मेघप्रतिच्छन्नो नाम=एतन्नामकः।

राजा—किन्तत्र=तत्र प्रासादे किमभूत् ?

कञ्चुकी—

अन्वयः—गृहनीलकण्ठैः अनेकविश्रामविलङ्घ्यशृङ्गात् तस्य अग्रभागात् प्रकाशेतरमूर्तिना केनापि सत्त्वेन ते सखा निगृह्य नीतः ॥ ३० ॥

राजा—किससे बचाऊँ ?

कञ्चुकी—भयानक विपत्ति से।

राजा—अरे! साफ-साफ कहो।

कञ्चुकी—यह जो चारों दिशाओं को देखने के लिए (शत्रु की गतिविधियों की जानकारी पाने के लिए) निर्मित मेघच्छत्र नामक महल है।

राजा—वहाँ क्या ?

कञ्चुकी—घर में पाले हुए मयूर जिसके शिखर पर अनेक बार विश्राम कर ही पहुँच पाते हैं उसी मेघच्छत्र प्रासाद के सर्वोच्च भाग से कोई अदृश्य आकार का जन्तु आपके मित्र को पकड़कर ले गया है ॥ ३० ॥

The king—From whom?

Chamberlain—From a great danger or calamity.

The king—Oh! tell me clearly.

Chamberlain—The palace Meghapratichanna by name, which is constructed to observe all the four directions (regions)....

The king—There what? (what happened there?)

Chamberlain—At the top of which (Meghapraticchanna palace) the house-tamed peacocks can reach even after taking rest

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सहसोत्थाय) आ:, ममापि सत्त्वैरभिभूयन्ते गृहा: ? अथवा बहुप्रत्यवायं नृपत्वम्।

अहन्यहन्यात्मन एव तावज्ज्ञातुं प्रमादस्खलितं न शक्यम्।
प्रजासु क: केन पथा प्रयातीत्यशेषत: कस्य पुन: प्रभुत्वम्॥ ३१ ॥

तस्येति। गृहनीलकण्ठै:=प्रासादपालितमयूरै:, अनेकविश्रामै:=एकवारेणारोहणाय कुण्ठितसामर्थ्यात्, पुन: पुन: विश्रामकरणै:, विलङ्घ्यानि=अतिक्रमणीयानि, शृङ्गाणि=शिखराणि, यस्य तस्मात् अनेकविश्रामविलङ्घ्यशृङ्गात्, तस्य=मेघच्छन्नप्रासादस्य, अग्रभागात्=उपरित-नालिन्दात्, प्रकाशेतरा=अप्रकाशा (अलक्ष्या), मूर्त्तिर्यस्य तेन प्रकाशेतरमूर्त्तिना=प्रच्छन्नाकृतिना, केनापि=अदृश्येन, सत्त्वेन=रक्ष:पिशाचादिजन्तुना, ते=तव, सखा=माधव्य:, निगृह्य=पराभूय सनिग्रहं धृत्वा, नीत:=अन्यस्थानं प्रापित:। अत्र पर्य्यायोक्तमलङ्कार:। उपजातिर्वृत्तम्॥ ३०॥

भावार्थ:—दिगवलोकनाय निर्मितस्य अत्युच्चमेघच्छन्ननामकप्रासादस्य अग्रभागात् केनापि अदृश्यरक्ष:पिशाचादिजन्तुना तव सखा माधव्य: निगृह्य अपहृत:, अन्यस्थानं प्रापितश्चेति भाव:॥ ३०॥

राजा—(सहसोत्थाय=हठादासनादुत्थाय) आ: इति क्रोधप्रदर्शने (इदं क्रोधसूचकम-व्ययम्), ममापि=दुष्यन्तस्यापि, गृहा:=प्रासादा:, सत्त्वै:=रक्ष:पिशाचादिभिर्जन्तुभि:, अभिभूयन्ते=आक्रम्यन्ते। अथवा, बहव:=नानाविधा:, प्रत्यवाया:=विहितानुष्ठानलङ्घनजनितानि पापानि, यस्मिन् तत् बहुप्रत्यवायम्, नृपत्वम्=राजधर्म्म: (राजकार्य्यम्)।

अन्वय:—अहनि अहनि आत्मन एव तावत् प्रमादस्खलितं ज्ञातुं न शक्यम्। अथ पुन: प्रजासु क: केन पथा प्रयाति इति अशेषत: ज्ञातुं कस्य प्रभुत्वम् (अस्ति)॥ ३१॥

अहनीति। अहनि-अहनि=प्रतिदिनम्, आत्मन एव=स्वस्यैव, तावत्=साकल्येन, प्रमादेन=अनवधानतया, जातं स्खलितं=दुराचरणं (त्रुटितम्), ज्ञातुं=निर्णेतुम्, न शक्यम्, मादृशैर्नृपैरिति शेष:। अथ पुन:=किन्तु, प्रजासु=स्वराज्यवासिजनेषु (प्रकृतिषु), क:=जन:, केन=धर्म्मसम्मतेन तद्विपरीतेन वा, पथा=मार्गेण, प्रयाति=गच्छति (क: किमाचरतीत्यर्थ:), इत्येतत्,

---

राजा—(सहसा उठकर) ओह! क्या हमारे घर भी दुष्ट जन्तुओं का आक्रमण होता है? अथवा राजकार्य में प्रमादवश अनेक पाप होते ही हैं—

मानव प्रमादवश प्रतिदिन अनेकानेक त्रुटियाँ करता हुआ भी उन्हें नहीं जान पाता, इस स्थिति में कौन प्रजाजन किस मार्ग का अनुसरण कर रहा है इसे जानने की शक्ति भला किस (राजा) में हो सकती है?॥ ३१॥

---

at several places, from there, some spirit of invisible form has taken away your friend, after having overpowered on him. (30)

The king—(Rising up hastily) Oh, even my house is infested by invisible evil spirits? Or rather—

It is not possible to know, in the first place, one's own slips through carelessness day after day. It there the power to ascertain fully as to who of my subjects goes by which path? (31)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(नेपथ्ये) अविधावेहि भो! अविधावेहि। [अभिधाव भोः! अभिधाव।]

राजा—(आकर्ण्य गतिभेदं रूपयन्) सखे! न भेतव्यं न भेतव्यम्।

(नेपथ्ये) भो कधं न भाइस्सं। एसो मं को वि पच्चामोडिअ सिरोधरं इक्खु विअ भग्गत्थि करिदुमिच्छदि। [भोः! कथं न भेष्यामि। एष मां कोऽपि प्रत्यामोड्य शिरोधराम् इक्षुमिव भग्नास्थि कर्तुमिच्छति।]

राजा—(सदृष्टिक्षेपम्) धनुर्धनुः।

अशेषतः=कात्स्न्येंन, ज्ञातुम्=अवधारयितुम्, कस्य=नृपस्य, प्रभुत्वम्=शक्तिरस्ति? न कस्यापीत्यर्थः। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कारः, उपजातिर्वृत्तम्॥ ३१॥

भावार्थः—प्रतिदिनं स्वस्यैव प्रमादेन जातं स्खलितं ज्ञातुं न शक्यम्, अथ पुनः स्वराज्यवासिजनेषु कः जनेन केन न्यायेन अन्यायेन वा मार्गेण व्यवहरति प्रयाति वा इत्येतत् अशेषतः ज्ञातुं कस्य शक्तिरस्ति? (आत्मनः प्रमादस्खलनात् प्रजानामन्यायाचरणाद् वा समुद्भूतेन प्रत्यवायेनैव मद्गेहेऽपीदृशी सत्त्वबाधेति भावः)॥ ३१॥

(नेपथ्ये=परोक्षे) अभिधाव=मां लक्षीकृत्य द्रुतमायाहि। सम्भ्रमे द्विरुक्तिः। भोः इति सम्बोधने।

राजा—(आकर्ण्य=श्रुत्वा, गतिभेदं=धावनम्, निरूप्य=नाटयित्वा) सखे=मित्र माधव्य! न भेतव्यम्, न भेतव्यम्=भयं न कर्त्तव्यम्।

(नेपथ्ये=जवनिकापृष्ठभागे) भोः वयस्य! कथं न भेष्यामि=कथं भयं न करिष्यामि? एषः कोऽपि=अदृश्यजन्तुः; शिरोधराम्=ग्रीवाम्, प्रत्यामोड्य=पश्चाद् मोडयित्वा, मां=माधव्यम्, इक्षुम्=इक्षुदण्डमिव, भग्नास्थिं=खण्डितुम्, कर्त्तुमिच्छति=वाञ्छति।

राजा—(सदृष्टिक्षेपम्=विदूषकाह्वानदिशि दृष्टिपातपूर्वकम्) धनुर्धनुः आनय इति। क्रोधे द्विरुक्तिः।

(नेपथ्य में) अरे! मेरी ओर आओ! मेरी ओर आओ।

राजा—(सुनकर शीघ्र चलने का अभिनय करते हुए) मित्र! मत डरो, मत डरो।

(नेपथ्य में) अरे! डरूँ कैसे नहीं। यह कोई जन्तु मेरी गर्दन गन्ने की तरह मरोड़कर हड्डियों को चूर-चूर कर देना चाहता है।

राजा—(दृष्टिपातपूर्वक) धनुष लाओ धनुष।

(Behind the scenes) come (approach) towards me, come towards me.

The king—(Walking round with an altered gait) Friend! fear not, fear not.

(Behind the scenes) How shall I not fear? Here some one is crushing me (breaking me into three/having three folds) like a sugarcane, with my neck bent backwards.

The king—(Casting a glance) Just my bow.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारी—(प्रविश्य धनुर्हस्ता) जअदु जअदु भट्टा। एदं ससरं सरासणं हत्थावारओ अ। [जयतु जयतु भर्त्ता। एतत् सशरं शरासनं हस्तावारकश्च।]

(राजा सशरं धनुरादत्ते।)

(नेपथ्ये)

एष त्वामभिनवकण्ठशोणितार्थी शार्दूलः पशुमिव हन्मि चेष्टमानम्।
आर्त्तानां भयमपनेतुमात्तधन्वा दुष्यन्तस्तव शरणं भवत्विदानीम्॥ ३२॥

प्रतिहारी—(प्रविश्य=प्रवेशं विधाय, धनुः हस्ते यस्याः सा धनुर्हस्ता, प्रतीहारी=द्वार-रक्षिका) भर्त्ता= प्रभुः, जयतु जयतु=अस्मत् स्वामिनो विजयोऽस्तु। एतत्=प्रस्तुतं, सशरं=बाण-सहितम्, शरासनम्=धनुः, हस्तं=पाणिम्, आवृणोति=ज्याघातनिवारणायाच्छादयतीति सः हस्ता-वारकः, च।

(राजा सशरं=बाणसहितम्, धनुः=चापम्, आदत्ते=गृह्णाति।)

(नेपथ्ये=जवनिकापृष्ठभागे)

अन्वयः—अभिनवकण्ठशोणितार्थी एषः शार्दूलः पशुमिव चेष्टमानं त्वां हन्मि, आर्त्तानां भयम् अपनेतुम् आत्तधन्वा दुष्यन्तः इदानीं तव शरणं भवतु॥ ३२॥

एष इति। अभिनवं=सद्यो निःसरणात् नूतनम्, कण्ठशोणितम्=गलरक्तं, अर्थयति=काम-यते, इति सः अभिनवकण्ठशोणितार्थी, एषः= अहम्, शार्दूलः=व्याघ्रः, पशुं=मृगादिजन्तुमिव, चेष्टमानम्=आत्मरक्षणाय पलायितुं यतमानम्, त्वाम्, हन्मि=नाशयामि, आर्तानाम्=पीडितानाम्, भयम्, अपनेतुं=दूरीकर्त्तुम्, आत्तं=गृहीतं, धनुर्येन सः आत्तधन्वा, दुष्यन्तः, इदानीम्=सम्प्रति, तव शरणं=रक्षको भवतु (तस्य सामर्थ्यमस्ति चेत् स रक्षतु।) अत्र श्रौतोपमालङ्कारः, प्रहर्षिणी वृत्तम्॥ ३२॥

भावार्थः—अभिनवकण्ठशोणितार्थी अहं शार्दूलः मृगादिजन्तुमिव आत्मरक्षणाय पलायितुं यतमानं त्वां नाशयामि। यदि चेत् शक्तिः तदा पीडितानां भयमपनेतुम् आत्तधन्वा दुष्यन्तः त्वां रक्षतु॥ ३२॥

प्रतीहारी—(हाथ में धनुष लिये हुए आती है) स्वामी की जय हो। यह धनुष-बाण और हस्तावरण प्रस्तुत हैं।

(राजा धनुष-बाण लेता है।)

(नेपथ्य में) कण्ठ का ताजा खून पीने की इच्छा रखने वाले सिंह की भाँति मैं तुझे आत्मरक्षणार्थ छटपटाते हुए पशु की भाँति मार डालूँगा। दुखियों का भय दूर करने के लिए धनुष धारण करने वाले दुष्यन्त में सामर्थ्य हो तो तुझे बचा लें॥ ३२॥

Door-keeper—(Entering, bow in hand) **Master! here is your bow, arrow along with the handguard.**

(The king takes the bow with arrows)

(Behind the scenes) **Here, thirsting for fresh blood from the throat, I kill you struggling, like a tiger a beast. let Duśyanta, who has taken up his bow to remove the fear of the distressed, be your protector now. (32)**

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सरोषम्) कथं मामेवोद्दिशति। आः, तिष्ठ तिष्ठ, कौणपापसद! त्वमिदानीं न भवसि। (चापमारोप्य) पार्वतायन! सोपानमार्गमादेशय।

कञ्चुकी—इत इतो देवः।

(सर्वे सत्वरमुपसर्पन्ति)

राजा—(समन्तादवलोक्य) अये! शून्यं खल्विदम्।

(नेपथ्ये) भो! परित्ताआहि परित्ताआहि। अहं तुमं पेक्खामि, तुमं मं ण पेक्खसि। मज्जारगहिदो उंदुरु विअ णिरासोम्हि जीविदे। [**भोः! परित्रायस्व परित्रायस्व। अहं त्वां प्रेक्षे, त्वं मां न प्रेक्षसे। मार्जारगृहीत उन्दुरुरिव निराशोऽस्मि जीविते।**]

राजा—(सरोषम्=सकोपम्) कथम्=किम्, मामेव=दुष्यन्तमेव, उद्दिशति=लक्षीकृत्य वदति। आः इति क्रोधातिशये, तिष्ठ–तिष्ठ=स्थिरीभव, द्विरुक्तिः वीप्सारोषावेगं सूचयति, कुणपं=शवम्, अदन्तीति कौणपाः=क्रव्यादादयः, तेष्वपसीदति=पश्चात् वर्त्तत, इति सः कौणपापसद= हे राक्षसाधम! त्वम्, इदानीम्=सम्प्रति, न भवसि=न मे लक्ष्यं भवसि इति काक्वा प्रश्नः (इदानीं त्वं मे लक्ष्यमेव भवसीत्यर्थः) अद्यैव त्वां हन्मि। (चापमारोप्य) पार्वतायन=कञ्चुकीय! सोपानमार्गम्=मेघप्रतिच्छन्नप्रासादारोहणमार्गम्, आदेशय=दर्शयतु।

कञ्चुकी—इत इतो देवः=पुरोवर्त्तिनानेनानेन मार्गेण देव! आरोहतु।

(सर्वे मञ्चस्थिता जनाः, सत्वरम्=शीघ्रम्, उपसर्पन्ति=आरोहणं नाटयन्ति।)

राजा—(समन्ताद्=इतस्ततः, अवलोक्य=दृष्टिनिक्षेपं विधाय) अये इत्याश्चर्ये, इदं=स्थानम्, शून्यम्=सत्त्वरहितम्।

(नेपथ्ये=परोक्षे) भोः! परित्रायस्व परित्रायस्व=मां रक्ष, रक्ष। अहं, त्वाम्=भवन्तम्,

---

राजा—(**क्रोधपूर्वक**) क्या (यह) मुझे ही लक्ष्य करके कह रहा है? आः राक्षसाधम! ठहर, ठहर, मैं अभी तुझे समाप्त किये देता हूँ। (**धनुष चढ़ाकर**) पार्वतायन! सीढ़ी का मार्ग बताओ।

कञ्चुकी—महाराज! इधर आइए इधर।

(**सब तेजी से बढ़ते हैं**)

राजा—(**चारों ओर देखकर**) अरे! यह तो सर्वथा खाली है (यहाँ तो कोई भी नहीं है।)

(**नेपथ्य में**) मित्र! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो। मैं तो तुम्हें देख रहा हूँ, क्या तुम मुझे नहीं देखते? बिल्ली द्वारा पकड़े गये चूहे की भाँति मैं तो जीवन से निराश हो गया हूँ।

***The king**—(With rage)* How! it alludes to even me. Stay, eater of corpses! you will not be now. *(Stringing the bow)* Parvatāyana! show the way to the stair-case.

Chamberlain—This way, this way, may your majesty move.

(All approach hastily)

***The king**—(Looking around)* This is indeed vacant.

(Behind the scenes) O' friend save me, save me. alas! Alas! I

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भोस्तिरस्करिणीगर्वित ! मदीयमस्त्रमपि त्वां न पश्यति ? स्थिरो भव, मा च ते वयस्यसम्पर्काद्विश्वासोऽभूत्। एष तमिषुं सन्दधे—

यो हनिष्यति वध्यं त्वां रक्ष्यं रक्षिष्यति द्विजम्।
हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः॥ ३३॥

(इति शस्त्रं सन्धत्ते)

प्रेक्षे=अवलोकयामि, त्वम्=भवान्,मां, न प्रेक्षसे=न द्रष्टुं समर्थोऽसि। मार्जारगृहीतः=बिडालाक्रान्तः, उन्दुरुरिव=मूषिक इव, जीविते=जीवने, निराशोऽस्मि=निष्प्रत्याशोऽस्मि।

राजा—भोः! तिरस्करिण्या=अदृश्यकारिणीविद्यया, गर्वितः=साहङ्कारः (तिरस्करिणी-विद्याप्रभावात् अहमेव सर्वं पश्यामि न कोऽपि मामिति सञ्जातगर्वः), मदीयम्=मामकीनम्, अस्त्रम्=बाणमपि, त्वाम्, न पश्यति=नावलोकयति (काक्वा पश्यत्येवेत्यर्थः)। स्थिरो भव= स्वस्थाने एव तिष्ठ, ते=तव मनसि, वयस्यसम्पर्कात्=माधव्येन संयोगात्, विश्वासः=माधव्याङ्गेषु पतनसम्भावनया दुष्यन्तो बाणं निक्षेप्तुं न शक्ष्यतीति प्रत्ययः, मा भूत्=न भवतु। एषः=अहम्, तं=तथाविधम्, इषुं=बाणं, सन्दधे=योजयामि।

अन्वयः—यः वध्यं त्वां हनिष्यति रक्ष्यं द्विजं रक्षिष्यति। हि हंसः क्षीरम् आदत्ते तन्मिश्राः अपः वर्जयति॥ ३३॥

य इति। यः=इषुः, वध्यं=वधार्हम्, त्वाम्, हनिष्यति=प्रहरिष्यति, तथा रक्ष्यं=रक्षायोग्यम्, द्विजम्=ब्राह्मणम्, रक्षिष्यति (तमिषुं सन्दधे), हि=तथाहि, हंसः=सरस्वतीवाहनभूतः पक्षिविशेषः, क्षीरं=दुग्धम्, आदत्ते=जलमध्यात् गृह्णाति, किन्तु तन्मिश्राः=क्षीरसम्पृक्ताः, अपः=जलानि, वर्जयति= त्यजति, स्वभाव एवायं तस्येति भावः। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ ३३॥

भावार्थः—यथा हंसः क्षीरमिश्रितजलानि वर्जयित्वा मात्रं क्षीरमेव गृह्णाति तथैव मदीय-बाणोऽपि वध्यं त्वामेव हनिष्यति न तु रक्ष्यं माधव्यमिति भावः॥ ३३॥

(इति=इत्युक्त्वा, शस्त्रं=बाणं, सन्धत्ते=योजयति धनुषि)

राजा—ओ तिरस्करिणी विद्या के कारण गर्वित! क्या मेरा अस्त्र भी तुम्हें नहीं देख सकेगा। ठहरो! मित्र के शरीर का स्पर्श पा लेने के कारण तुम बच जाओगे, तुम्हें यह विश्वास न हो जाय, अतः मैं ऐसा बाण चढ़ाता हूँ—

जो मारने योग्य तुझे मार डालेगा और रक्षणीय ब्राह्मण को बचा देगा, जैसे हंस दूध और जल मिले हुए पात्र में से दूध ले लेता है और जल को त्याग देता है॥ ३३॥

(ऐसा कहकर बाण चढ़ाता है।)

---

see your majesty, you see me not. Like a mouse seized by a cat, I have become hopeless of my life.

The king—Oh, you proud of your veil of invisibility. If not I, my weapon will see you. Here I fix that arrow—

Which will kill you, who deserve to be killed, and protect the Brāhamaṇa, who is worthy of protection. For the swan takes up milk and rejects the water mixed up with it. (33)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति मातलिर्विदूषकश्च)

मातलिः—आयुष्मन्!

कृताः शरव्यं हरिणा तवासुराः शरासनं तेषु विकृष्यतामिदम्।
प्रसादसौम्यानि सतां सुहृज्जने पतन्ति चक्षूंषि न दारुणाः शराः ॥ ३४॥

राजा—(ससम्भ्रममस्त्रमुपसंहरन्) अये मातलिः! स्वागतं देवराजसारथेः।

विदूषकः—भो मणस्सि! इमिणा अहं पशुमारणं मारिदुं पाविदो, भवं उण इमं साअदेण अहिणंददि। [भो मनस्विन्! अनेनाहं पशुमारणं मारयितुं प्राप्तः, भवान् पुनरिमं स्वागतेनाभिनन्दति।]

(ततः=तदनन्तरम्, मातलिः=इन्द्रसारथिः विदूषकश्च प्रविशति।)

मातलिः—आयुष्मन्!

अन्वयः—हरिणा असुराः तव शरव्यं कृताः इदं शरासनं तेषु विकृष्यताम्। (यतः) सुहृज्जने सतां प्रसादसौम्यानि चक्षुषि पतन्ति दारुणाः शराः न पतन्ति ॥ ३४॥

कृता इति। हरिणा=इन्द्रेण, असुराः=दानवाः, तव=भवतः, शरव्यं=शरमोक्षणलक्ष्यं, कृताः=विहिताः, (अतः) इदं=शरासनं धनुः, तेषु=असुरेषु, विकृष्यताम्=आकृष्यताम् (न तु मयीति भावः), यतः सुहृज्जने=मित्रजने, सत्तां=सज्जनानाम् (प्रशस्तपुरुषाणाम्), प्रसादेन=प्रसन्नतया, सौम्यानि=सुन्दराणि, प्रसादसौम्यानि, चक्षुषि=नयने, पतन्ति, दारुणाः=भीषणाः, शराः न पतन्ति। अत्र परिसंख्या काव्यलिङ्गमलङ्कारश्च। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ ३४॥

भावार्थः—इन्द्रेण निखिलानामसुराणां विनाशं प्रतिपादयितुम् एकेनैव शरपातेन शरव्यमित्येकत्वं कृतम्। अतः संहितमपि शरमुपसंहृत्य सप्रसादं चक्षुरेव मयि पातयेत्याशयः ॥ ३४॥

राजा—(ससम्भ्रम्=सोद्वेगम्, अस्त्रं=बाणं, उपसंहरन्=उपयोजयन्) अये इति विस्मये, मातलिः, देवराजसारथेः=इन्द्रसूतस्य, स्वागतम्=शुभागमनं भवतु।

(इसके बाद मातलि और विदूषक का प्रवेश)

मातलि—आयुष्मन्!

देवराज इन्द्र ने असुरों को आपके बाण का लक्ष्य निर्दिष्ट कर दिया है। अतः आप उन असुरों पर ही धनुष चढ़ायें। सज्जन लोग अपने बन्धुओं पर प्रसाद-सौम्य दृष्टिपात ही किया करते हैं, भयानक बाणों का सन्धान नहीं करते॥ ३४॥

राजा—(घबराहट के साथ, बाण धनुष से उतारता हुआ) अरे मातलि! देवराज के सारथी! आपका स्वागत है।

(Aims the missile i.e. arrow)

(Then enter Mātalī and viduśaka)

Mātalī—O' Longlived one!

The mamons have been made your target by the lord of gods i.e. Indra. Let this bow be drawn against them. Of the good, on friendly people, fall eyes, soft with fevour, not dreadful arrows.

The king—*(Hastily, with drawing the arrow)* Oh, Mātalī, welcome Mahendra's charioteer!

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—(सस्मितम्) आयुष्मन्! श्रूयतां यदर्थमस्मि हरिणा भवत्सकाशं प्रेषितः।

राजा—अवहितोऽस्मि।

मातलिः—अस्ति कालनेमिप्रसूतिर्दुर्जयो नाम दानवगणः।

राजा—अस्ति, श्रुतपूर्वो मया नारदात्।

मातलिः—

सख्युस्ते स किल शतक्रतोरवध्यस्तस्य त्वं रणशिरसि स्मृतो निहन्ता।
उच्छेत्तुं प्रभवति यन्न सप्तसप्तिस्तन्नैशं तिमिरमपाकरोति चन्द्रः॥ ३५॥

विदूषकः—भो मनस्विन्!=प्रशस्तमना! अनेन=मातलिना, अहम्=विदूषकः, पशोर्मारण-मिव मारणं यस्मिन् कर्मणि तद् यथा स्यात्तथा पशुमारणं, मारयितुम्=हन्तुम्, प्राप्तः= गृहीतः, भवान्=त्वम्, पुनः=भूयः, इमं=जनम्, स्वागतेन=स्वागतप्रश्नेन, अभिनन्दति=आद्रियते। इदं ते महदनुचितमिति भावः।

मातलिः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) आयुष्मन्! श्रूयताम्=आकर्ण्यताम् (अवधार्यताम्), यदर्थम्=येन उद्देश्येन, हरिणा=इन्द्रेण, (अहम्) भवत्सकाशं=भवत्पार्श्वे (सन्निधौ), प्रेषितः अस्मि।

राजा—अवहितोऽस्मि=कृतावधानोऽस्मि।

मातलिः—कालनेमिः तदाख्यासुरः, तस्य प्रसूतिः=सन्ततिः, दुःखेन जीयत इति दुर्जयः= जेतुमशक्यः, नाम=तन्नामकः, दानवगणः=दानवसमुदायः, अस्ति=विद्यते।

राजा—(स दानवगणः मया, नारदात्=देवर्षेः सकाशात्, श्रुतपूर्वः=मया पूर्वं श्रुत इत्यर्थः।

विदूषक—ओ मनस्वी! यह मुझे पशु की मौत मारना चाहता था और आप इसका स्वागतपूर्वक अभिनन्दन कर रहे हैं।

मातलि—आयुष्मन्! मुझे जिस कार्य के लिए इन्द्र ने आपके पास भेजा है, उसे सुनिये।

राजा—मैं सावधान हूँ (ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ)।

मातलि—कालनेमि की सन्तान दुर्जय नामक एक राक्षसों का समुदाय है।

राजा—हाँ, मैंने नारद से सुना है।

मातलि—वह दानव-समुदाय क्योंकि तुम्हारे मित्र इन्द्र के लिए अवध्य है अतः संग्राम में आप ही उनका वध कर सकेंगे ऐसा देवराज का विचार है। क्योंकि सूर्य जिस

Jester—He, by whom I was about to be killed in the manner of sacrificial animal, is being greated by you with a welcome.

Mātalī—*(With a smile)* Long-lived one! hear, why I am sent to your presence by Indra.

The king—I am attentive.

Mātali—There is a group of demons, called Durjaya, the progeny of Kālanemi.

The king—There is, this has been heard by me from Nārada.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स भवानात्तशस्त्र एवेदानीं देवरथमारुह्य विजयाय प्रतिष्ठताम्।

राजा—अनुगृहीतोऽस्मि अनया मघवतः सम्भावनया। अथ माधव्यम्प्रति भवता किमेवं प्रयुक्तम्।

मातलिः—

अन्वयः—सः किल ते सख्युः शतक्रतोः अवध्यः रणशिरसि त्वं तस्य निहन्ता स्मृतः। सप्तसप्तिः नैशं यत् तिमिरम् उच्छेत्तुं न प्रभवति तत् चन्द्रः अपाकरोति ॥ ३५ ॥

सख्युरिति। सः=दानवगणः, किलेति प्रसिद्धौ, ते=तव, सख्युः इन्द्रस्य, अवध्यः=कुतोऽपि कारणाद् हन्तुमशक्यः, (अतः) रणशिरसि=युद्धाग्रे, त्वम्=दुष्यन्तः, तस्य=दानवगणस्य, निहन्ता=विनाशकर्त्ता, स्मृतः=शतक्रतुनैव निर्णीतः। सप्त सप्तयः=अश्वाः, यस्य सः सप्तसप्तिः=सप्ताश्ववाहनः सूर्यः, नैशम्=निशाभवम्, यत् तिमिरम्=अन्धकारम्, उच्छेत्तुं=नाशयितुम्, न प्रभवति=न शक्नोति, तत्=तिमिरम्, चन्द्रः=निशाकरः, अपाकरोति=विध्वंसयति (दूरीकरोति)। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः। प्रहर्षिणी वृत्तम्॥ ३५ ॥

भावार्थः—तद्दानवगणस्येन्द्रवध्यत्वेऽपि त्वमेव तद्दानवगणस्य विनाशं कर्त्ता स्वयं शतक्रतुनैव निर्णीतः। यथा नैशतमसः सूर्याविनाश्यत्वेऽपि चन्द्रविनाश्यत्वं स्वयं विधात्रा एव निर्णीतः ॥ ३५ ॥

सः=पूर्वोक्तः इन्द्रसखा, भवान्=त्वम्, आत्तशस्त्रः=गृहीतायुध एव, देवरथम्=इन्द्रस्यन्दनम्, आरुह्य=आरोहणं कृत्वा, विजयाय=विजेतुम्, प्रतिष्ठताम्=गच्छतु।

राजा—मघवतः=इन्द्रस्य, अनया=भवदुक्तया, सम्भावनया=बहुमत्या, अनुगृहीतोऽस्मि=कृतकृत्योऽस्मि। अथ इति प्रश्ने, माधव्यम्प्रति=मम वयस्यं विदूषकम्प्रति, भवता=त्वया, एवम्=अनेन प्रकारेण, किम्=कथम्, प्रयुक्तम्=आचरितम्।

अन्धकार को नष्ट कर पाने में समर्थ नहीं होता, उस रात्रिकालीन अन्धकार को चन्द्रमा नष्ट कर दिया करता है ॥ ३५ ॥

अतः आप अभी अपने शस्त्रों को लेकर देवरथ पर सवार होकर विजययात्रार्थ प्रस्थान करें।

राजा—देवराज के इस सम्मान से मैं अनुगृहीत हुआ। किन्तु माधव्य के प्रति आपने ऐसा व्यवहार क्यों किया?

Mātali—That (group of demons) they say, is impossible to be conquered by Indra, your friend; but you are distined to be its destroyer at the head of the war. The nocturnal (pertaining to night) darkness, which the sun is not able to destroy, the moon removes. (35)

Let that self of yours, even with the weapon taken up, start for victory, having mounted that chariot of Indra.

The king—I am favoured by this honour of Indra. Well, why was it thus performed by you with refrence to Mādhavya?

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—(सस्मितम्) तदपि कथ्यते। किञ्चिन्निमित्तादपि मनःसन्तापादायुष्मान् मया विकृतो दृष्टः, पश्चात् कोपयितुमायुष्मन्तं तथा कृतवानस्मि। कुतः—

ज्वलति चलितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणां कुरुते।
तेजस्वी संक्षोभात् प्रायः प्रतिपद्यते तेजः॥ ३६॥

राजा—युक्तमनुष्ठितं भवद्भिः। (विदूषकं प्रति) वयस्य! अनतिक्रमणीया दिवस्पते-राज्ञा, तद्गच्छ परिगतार्थं कृत्वा मद्वचनादमात्यपिशुनं ब्रूहि।

मातलिः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) तदपि कथ्यते=माधव्यपीडनघटनाया कारणं मया निवेद्यते, किञ्चित्=अस्माभिरज्ञातं किमपि, निमित्तं=कारणं, यस्य सः तस्मात् किञ्चिन्निमित्तादपि, मनःसन्तापात्=मनस्तापात्, आयुष्मान्=भवान्, मया=मातलिना, विकृतः=अधीरः (अस्वभावस्थ इव), दृष्टः=अवलोकितः, पश्चात्=अस्वभावस्थत्वदर्शनानन्तरम्, आयुष्मन्तम्=भवन्तम्, कोपायितुम्=कोपाविष्टं कर्तुम्, तथा=माधव्यग्रीवापीडनम्, कृतवान् असि=मयानुष्ठितम्। कुतः= कोपाधाने हेतुं दर्शयति—

अन्वयः—अग्निः चलितेन्धनः ज्वलति तथा पन्नगः विप्रकृतः फणां कुरुते। (एवं) तेजस्वी संक्षोभात् प्रायः तेजः प्रतिपद्यते॥ ३६॥

ज्वलतीति। अग्निः=वह्निः (दाह्यभावतया निर्वाणप्रायोऽपीति शेषः), चलितं=प्राप्तचलनम्, चुल्यादौ पुनर्निक्षेपात्सञ्चरितम्, इन्धनं=काष्ठं, यस्मिन् सः चलितेन्धनः सन्, ज्वलति=पुनर्दीप्यते, तथा पन्नगः=सर्पः, विप्रकृतः=केनाप्युद्वेजितः सन्, फणां कुरुते=फणोत्तोलनपूर्वकम्, स्वपराक्रममा-विष्करोति। (एवमेव) तेजस्वी=तेजःसम्पन्नः पुरुषः, संक्षोभात्=सम्यक् क्षोभम्=उत्तेजनां प्राप्य, प्रायः=बाहुल्येन, तेजः=स्वकीयं पराक्रमम्, प्रतिपद्यते=आसादयति. आविष्करोति। अत्र अप्रस्तुत-प्रशंसा दृष्टान्तश्चालङ्कारौ, आर्य्या जातिः॥ ३६॥

भावार्थः—यथा वह्निः काष्ठादिचालनेन पुनर्दीप्यते, तथा उद्वेजितसर्पः फणोत्तोलनपूर्वकं स्वपराक्रमं फूत्कारव्याजेनाविष्करोति तथैव तेजस्वी पुरुषः संक्षोभादेव प्रायः स्वकीयं पराक्रमम् आविष्करोति। ते प्रियवयस्यस्य उत्पीडनरूपां पीडां प्राप्य त्वमपि आगन्तुकसन्तापादित्यागपूर्वकं पुनः पूर्वतेजं प्रासवानित्याशयः॥ ३६॥

मातलि—(मुस्कराकर) यह भी बताता हूँ। किसी कारणवश मैंने आपको शोकाकुल देखा था। अतः आपको उत्तेजित करने के लिए ही मैंने ऐसा किया था। क्योंकि—

लकड़ियों को इधर-उधर करने से आग धधकती है तथा छेड़ने पर साँप अपना फन फैलाकर फूत्कारता है, वैसे ही तेजस्वी जन भी उत्तेजना पाने पर ही प्रायः अपना तेज प्रगट करते हैं॥ ३६॥

Mātali—That also is told. The long-lived one was seen by me in a distressed condition owing to mental affliction of a certain cause. I acted in that manner. Why—

Fire burn up brightly when the fuel is stirred. the snake when offended expands its hood. For, usually people attain their proper greatness through provocation. (36)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वन्मतिः केवला तावत् प्रतिपालयतु प्रजाः।
अधिज्यमिदमन्यस्मिन् कर्म्मणि व्यापृतं धनुः॥ ३७॥

विदूषकः—जं भवं आणवेदि। [यद्भवानाज्ञापयति।] (इति निष्क्रान्तः)

मातलिः—आयुष्मान् रथमारोहतु।

राजा—तथा करोति।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति षष्ठोऽङ्कः।

राजा—भवद्भिः=त्वया, युक्तम्=उचितम्, अनुष्ठितम्=आचरितम्। (विदूषकं प्रति= विदूषकमुद्दिश्य) दिवस्पतेः=स्वर्गाधीश्वरस्य, इन्द्रस्य,आज्ञा, अनतिक्रमणीया=अनवहेलनीया, तद्= तस्मात्, गच्छ, परिगतः=परिज्ञातः, अर्थः=अयं वृत्तान्तः, येन तं परिगतार्थम्, कृत्वा=विधाय (एतद्वृत्तान्ताभिज्ञं कृत्वा), मद्=दुष्यन्तस्य, वचनात्=वाक्यात्, अमात्यम्=मन्त्रिणम्, पिशुनम्= पिशुननामधेयं, ब्रूहि=कथय—

अन्वयः—केवला त्वन्मतिः प्रजाः तावत् प्रतिपालयतु, अधिज्यम् इदं धनुः अन्यस्मिन् कर्मणि व्यापृतम्॥ ३७॥

त्वन्मतिरिति। केवला=एकाकिनी, त्वन्मतिः=तव बुद्धिः, प्रजाः=मदीयराज्यस्थान् जनान्, तावत्=मत्प्रत्यागमनपर्यन्तम्, प्रतिपालयतु=परिरक्षतु, अध्यारूढा ज्या यत्र तत् अधिज्यम्=युक्त-मौर्वीकम्, इदं=मदीयम्, धनुः, अन्यस्मिन् कर्मणि=दुर्जयदानवगणहनने, व्यापृतम्=नियुक्तम्। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः॥ ३७॥

भावार्थः—यतः दिवस्पते राज्ञा अनतिक्रमणीया अतः मदीयं धनुः दुर्जयदानवगणहनने नियुक्तम्, मत्प्रत्यागमनपर्यन्तम् एकाकिनी तव बुद्धिरेव प्रजाः प्रतिपालयतु॥ ३७॥

विदूषकः—यत्=यथा, भवान्=त्वम्, आज्ञापयति। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्तः= निर्गतः।)

राजा—आपने ठीक ही किया। (विदूषक से) इन्द्र की आज्ञा टाली नहीं जा सकती। अतः जाओ, यह सब वृत्तान्त सुनाकर हमारी ओर से सचिव पिशुन से कहो—

'अब कुछ समय तक केवल आपकी बुद्धि ही प्रजा का पालन करे। प्रत्यञ्चायुक्त मेरा यह धनुष अब दूसरे कार्य में लग रहा है॥ ३७॥

विदूषक—जैसी महाराज की आज्ञा।

The king—Well done (by you). *(Towards jester)* The command of the lord of heaven is not to be transgressed. Therefore, making him acquainted with facts in this matter, say thus to minister Piśuna "Let your intelligence alone protect the subjects for a certain period. This strung bow is engaged in another work." (37)

Jester—As your majesty commands.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मान्, रथम्=देवयानम्, आरोहतु=आरोहणं करोतु।
राजा—तथा करोति=रथमारोहति।

(इति=एवं वृत्ते सति, सर्वे=दुष्यन्तादयः, निष्क्रान्ताः।)

इति षष्ठोऽङ्कः।

मातलि—आयुष्मान्! आप रथ पर आरूढ़ हों।
राजा—वैसा ही करता है (रथ पर बैठता है)

(सबका प्रस्थान)।

षष्ठ अङ्क समाप्त।

Mātali—Let the long-lived one mount the chariot.
The king—*(gesticulates ascending the chariot.)*

(Exeunt All.)

'END OF ACT VI'

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सप्तमोऽङ्कः

(ततः प्रविशत्याकाशवर्त्मना रथारूढो राजा मातलिश्च)

राजा—मातले! अनुष्ठितनिदेशोऽपि मघवतः सत्क्रियाविशेषादनुपयुक्तमिवात्मानं समर्थये।

मातलिः—(सस्मितम्) आयुष्मन्! उभयत्राप्यसन्तोषमवगच्छ! कुतः—

उपकृत्य हरेस्तथा भवान् लघु सत्कारमवेक्ष्य मन्यते।
गणयत्यवदानसम्मितां भवतः सोऽपि न सत्क्रियामिमाम्॥ १ ॥

(ततः=तदनन्तरम्, आकाशवर्त्मना=आकाशमार्गेण, रथारूढः=स्यन्दनारूढः, राजा=दुष्यन्तः, मातलिश्च=इन्द्रसारथिश्च।)

राजा—मातले! अनुष्ठितः=प्रतिपालितः, निदेशः=आज्ञा, येन सः अनुष्ठितनिदेशः, अपि, मघवतः=इन्द्रस्य, सत्क्रियाविशेषात्=सम्मानातिशयात्, अनुपयुक्तमिव=अयोग्यमिव आत्मानं, समर्थये=सम्भावयामि। (इन्द्रं प्रति यन्मया कार्यं कृतं तदिन्द्रसम्माननायाः सहस्रांशेनापि तुलयितुं न क्षममिति भावः।)

मातलिः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) आयुष्मन्! उभयत्रापि=भवति मघवति च (उभयपक्षे), असन्तोषम्=अपरितोषम्, अवगच्छ। कुतः—

अन्वयः—भवान् हरेः तथा उपकृत्य सत्कारम् अवेक्ष्य लघु मन्यते। तथा सः अपि इमां सत्क्रियां भवतः अवदानसम्मितां न गणयति॥ १ ॥

उपकृत्येति। भवान्=आयुष्मान् (राजा दुष्यन्तः), हरेः=इन्द्रस्य, तथा= दुर्जयदानवहननात्मकव्यापारसाधनद्वारा, उपकृत्य=उपकारं कृत्वा, अभीष्टं पूरयित्वा, सत्कारं=परमसन्तुष्टेनेन्द्रेण कृतं

(इसके पश्चात् आकाशमार्ग से रथ पर सवार राजा और मातलि का प्रवेश)

राजा—मातलि! यद्यपि मैंने देवराज की आज्ञा का पालन किया है तथापि उन्होंने जो मेरा सम्मान किया है, मैं स्वयं को उसके योग्य नहीं मानता।

मातलि—आयुष्मन्! असन्तोष दोनों ओर है, यह समझो। क्योंकि आप इस प्रकार इन्द्र का उपकार करके भी अपनी सेवा को तुच्छ समझते हैं और उधर देवराज भी इस (स्वकृत) सम्मान को आपके उपकार की तुलना में सर्वथा तुच्छ (नगण्य) मानते हैं॥ १ ॥

(Then enter along the aerial path the king mounted on a chariot and Mātalī)

The king—Mātalī! Although I have executed the command of Indra, I deem myself to be as though of no use (to him), owing to the special honour of Indra.

Mātali—Long-lived one! both of you are dissatisfied (please rember). For—

You think lightly of the prior obligation (conferred by you) on Indra by reason of the honour (done to you by him). He on his part considers this honour very poor or light. (1)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—मातले! मा मैवम्। स खलु मनोरथानामपि दूरवर्त्ती, यो विसर्जनावसरे सत्कारः। मम हि दिवौकसां समक्षमर्द्धासनोपवेशितस्य।

अन्तर्गतप्रार्थनमन्तिकस्थं जयन्तमुद्वीक्ष्य कृतस्मितेन।
आमृष्टवक्षोहरिचन्दनाङ्का मन्दारमाला हरिणा पिनद्धा॥ २॥

सम्भावनम्, अवेक्ष्य=अवलोक्य, लघु=स्वल्पम्, मन्यते=सम्भावयति। तथा सः=हरिरपि, इमाम्=स्वकृताम्, सत्क्रियाम्=सत्कारम्, भवतोऽवदानेन=दुर्जयदानवसमुदायहननरूपव्यापारेण, सम्मिताम्=उपयुक्ताम्, भवतः अवदानसम्मिताम्, न गणयति=न मन्यते। तथा चापरस्मिन् पक्षे इन्द्रस्याप्यसन्तोष एवेति भावः। अत्र सूक्ष्मालङ्कारः॥ १॥

भावार्थः—भवान् इन्द्रस्य तथाविधं दुर्जयदानवहननात्मकम् अभीष्टं सम्पाद्य, परमसन्तुष्टेनेन्द्रेण कृतं सत्कारमवेक्ष्य स्वकीयकृत्यं स्वल्पं मन्यते तथा च परस्मिन् पक्षे इन्द्रोऽपि स्वकृतां सत्क्रियां भवतोऽवदानसम्मितां न गणयति। (इन्द्रं प्रति यन्मया कार्यं कृतं तदिन्द्रसम्मानायाः सहस्रांशेनापि तुलयितुं न क्षमम् इति भावः।)॥ १॥

राजा—मातले=देवराजसारथे! मा मैवम्=एवं मा ब्रूहि। विसर्जनावसरे=मम प्रस्थापनकाले, यः सत्कारः=समाननं, वासवेन कृतम्, स खलु=सत्कारः, मनोरथानाम्=अभिलाषाणामपि, दूरवर्ती=अगोचरः। हि=यस्मात्, द्यौः=स्वर्गः, ओकः=वासस्थानम्, येषां तेषां दिवौकसाम्= देवानाम्, समक्षम्=प्रत्यक्षमास्थानमण्डपे, अर्द्धासने=स्वासनार्द्धभागे, उपवेशितस्य=इन्द्रेण स्वयं गृहीत्वा निवेदितस्य, मम इत्यस्य श्लोकेन सहान्वयः—

अन्वयः—अन्तिकस्थम् अन्तर्गतप्रार्थनं जयन्तम् उत वीक्ष्य कृतस्मितेन हरिणा आमृष्टवक्षोहरिचन्दनाङ्काः मन्दारमाला पिनद्धा॥ २॥

अन्तर्गतेति। अन्तिकस्थं=समीपवर्त्तिनं, अन्तर्गता=हृद्गता, प्रार्थना=मन्दारमालाविषयिणी

राजा—मातलि! नहीं ऐसा नहीं है। विदा करते समय उन्होंने जो मेरा सम्मान किया वह आशातीत था। उन्होंने देवताओं के सामने अपने आधे आसन पर बिठाये हुए—

मन्दारमाला के लिए मन-ही-मन अभिलाषा रखने वाले, अपने पास में ही बैठ गये। पुत्र जयन्त को देखकर किञ्चित् मुस्कराते हुए अपने वक्ष पर पड़ी हुई हरिचन्दन से लिप्त मन्दारपुष्पों (पारिजात) की माला देवराज ने मुझे पहना दी। अर्थात् अपने पुत्र की उपेक्षा कर यह सम्मान मुझे प्रदान किया॥ २॥

King—Mātalī! no, not say so. The honour (bestowed to me) at the time of bidding me farewell was, indeed, beyond the expectations of even my fondest desires. For on me, who was made to sit on half his seat, in the presence of Gods.

Was fastened a garland of mandāra flowers, marked with the celestial sandal called Hari candan on his chest that was rubbed off by it by Indra, who indulged in a smile, as he looked at his son Jayanta, who was sitting near and who had an inward longing for the same garland or for such distenction. (2)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—किमिव नायुष्मानमरेश्वरादर्हति ? पश्य—

सुखपरस्य हरेरुभयैः कृतं त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम्।
तव शरैरधुना नतपर्वभिः पुरुषकेशरिणश्च पुरा नखैः॥ ३॥

याच्ञा, यस्य तम् अन्तर्गतप्रार्थनम्, जयन्तम्=तन्नामकं स्वतनयम्, उत=अधिकम्, वीक्ष्य=दृष्ट्वा, उद्वीक्ष्य (तदन्तर्गतप्रार्थनां ज्ञात्वापि), कृतस्मितेन=कृतमन्दहासेन, हरिणा=इन्द्रेण, आमृष्टस्य=संश्लिष्टस्य, वक्षोहरिचन्दनस्य=वक्षःस्थललिप्तसुरलोकसुलभचन्दनविशेषस्य, अङ्कः=चिह्नं, यस्याः सा हरिचन्दनाङ्का, मन्दारमाला=मन्दारनामकदेवतरुकुसुमस्रक्, पिनद्धा=मम कण्ठे परिधापिता। अत्र उदात्तालङ्कारः परिकरालङ्कारश्च। उपजातिर्वृत्तम्॥ २॥

भावार्थः—सर्वेषां देवानां समक्षं स्वपुत्रमप्यविगणय्येदृशसम्मानकरणं ममाशातीतमिति भावः॥ २॥

मातलिः—आयुष्मान्=भवान् (प्रशस्तायुःशाली), अमरेश्वरात्=देवाधिपतेः, आदातुमिति शेषः, किमिव नार्हति=सर्वमेव वस्तु आदातुं योग्यो भवति। पश्य=अवलोकय—

अन्वयः—अधुना नतपर्वभिः तव शरैः तथा पुरा नतपर्वभिः पुरुषकेशरिणः नखैः इत्युभयैः सुखपरस्य हरेः त्रिदिवम् उद्धृतदानवकण्टकं कृतम्॥ ३॥

सुखेति। अधुना=इदानीम्, नतानि=किञ्चिदाकुञ्चितानि, पर्वाणि=ग्रन्थिदेशाः, येषां तैः नतपर्वभिः, तव, शरैः=बाणैः (दुर्जयदानवगणहननादिति भावः), तथा पुरा=पूर्वस्मिन् काले, नतानि=किञ्चित् कुञ्चितानि, पर्वाणि=अङ्गुलिपर्वभागाः, येषां तैः नतपर्वभिः, पुरुषश्चासौ केशरी चेति तस्य पुरुषकेशरिणः=नृसिंहस्य भगवतः, नखैः=नखरैश्च (हिरण्यकशिपोर्विदारणात्), इत्युभयैः कर्तृभिः, सुखे परः सुखपरस्तस्य अथवा सुखमेव परं यस्य तस्य सुखपरस्य=केवलसुखभोगासक्तस्य, हरेः=इन्द्रस्य, त्रिदिवं=त्रयः ब्रह्माविष्णुमहेशाः दीव्यन्ति यत्र तत् त्रिदिवम्=स्वर्गधाम, यद्वा—त्रिदिवं=सुखं विद्यते यत्र तत् त्रिदिवम्, उद्धृतम्=अपसारितम्, दानवरूपं कण्टकं यस्मात् तत् उद्धृतदानवकण्टकम्, कृतम्। अत्र दीपकालङ्कारः, द्रुतविलम्बितं वृत्तम्॥ ३॥

भावार्थः—येन त्वया सम्प्रति नतपर्वभिः शरः सुखपरस्य इन्द्रस्य स्वर्गं दानवकण्टकमुद्धृत्य निष्कण्टकं कृतम्, तथा येन नृसिंहरूपधारिणा विष्णुना नतपर्वभिर्नखैः हिरण्यकशिपोर्विदारणात् सुखपरस्य इन्द्रस्य धाम निष्कण्टकं कृतं, तस्य कृते न किमपि अदेयमस्ति देवराजकृते। अत आयुष्मानमरेश्वरात् किमिव नार्हतीति भावः॥ ३॥

मातलि—आयुष्मान्! आप देवराज से क्या नहीं पा सकते। देखिए—

इस समय झुका हुआ है ग्रन्थिभाग जिनका ऐसे आपके बाणों ने तथा पूर्वकाल में भगवान् नृसिंह के कुछ झुके हुए नाखूनों ने सुखभोग में लिप्त देवराज के स्वर्गधाम के दानव रूपी कण्टकों को दूर किया है (अतः आप उनसे सब कुछ पाने के अधिकारी हैं)॥ ३॥

Mātali—What possibly does the long-lived one not deserve from the lord of immortals? Behold—

The heaven of Indra, who is addicted to pleasure, has been rendered free from the thorns of demons that were uprooted, by two—now by your arrows, of which the joints are smooth (bent) and formerly by the claws of man-lion i.e. Lord Narsimha. (3)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—तत्र खलु शतक्रतोरेव महिमा। पश्य—

सिद्ध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः
सम्भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।
किं प्राभविष्यदरुणस्तमसां वधाय
तञ्चेत् सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्॥ ४॥

मातलिः—सदृशन्तवैतत्। (स्तोकमन्तरमतीत्य) आयुष्मन्! इतः पश्य नाकपृष्ठप्रतिष्ठितस्य सौभाग्यमात्मयशसः।

राजा—तत्र=मत्कर्तृकदानवोद्धरणे, शतक्रतोः=इन्द्रस्यैव, महिमा=माहात्म्यं, न मम इति। पश्य—

अन्वयः—नियोज्याः महत्सु अपि कर्मसु यत् सिद्ध्यन्ति तम् ईश्वराणां सम्भावनागुणम् अवेहि। अरुणः तमसां वधाय किं प्राभविष्यत् चेत् सहस्रकिरणः तं धुरि न अकरिष्यत्॥ ४॥

सिद्ध्यन्तीति। नियोज्याः=नियोक्तुं योग्याः किङ्कराः, महत्सु=गुरुतरेष्वपि, कर्मसु=व्यापारेषु, यत् सिद्ध्यन्ति=कृतकार्य्या भवन्ति, तम्, ईश्वराणां=प्रभूणां, सम्भावनायाः=बहुमानस्य, गुणम्=अङ्गम्, अथवा प्रभूणां प्रभावमाहात्म्यम्, अवेहि=अवगच्छ। (पश्य) अरुणः=सूर्यसारथिः, तमसां=तिमिराणाम्, वधाय=ध्वंसाय, किं प्राभविष्यत्=किं समर्थोऽभविष्यत्? नैव, चेत्=यदि, सहस्रकिरणः (सहस्रं किरणा यस्य सः)=सूर्य्यः, तम्=अरुणम्, धुरि=अग्रे (यात्रामुखे), न अकरिष्यत्=कथमपि नैव। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ४॥

भावार्थः—सूर्यस्य प्रभावेणैवारुणकृततमसो नाश इव इन्द्रस्य प्रभावेणैव अस्मत्कृतदानवविनाशो जातः। अत एव एतत् सर्वम् इन्द्रस्यैव प्रभावमाहात्म्यम्॥ ४॥

मातलिः—एतत्=कथनम्, तव=भवतः (महत्पुरुषस्य पक्षे), सदृशम्=उपयुक्तम्

राजा—उस कार्य (दानव-विनाश) में भी देवराज की महिमा ही कारण है। देखिये—

किसी कार्य के लिए नियुक्त व्यक्ति यदि उस महत्त्वपूर्ण कार्य को करने में सफल हो जाय तो उसमें उस व्यक्ति का नहीं, अपितु उसके स्वामी की महत्ता का गुण ही कारण हुआ करता है। (देखो जैसे) यदि सूर्य अरुण (सारथी) को अपने आगे न बिठायें तो क्या उसमें (अरुण में) अन्धकार नष्ट करने की सामर्थ्य आ सकती है?॥ ४॥

मातलि—आपका यह कथन सर्वथा आपके अनुरूप ही है। (कुछ दूर चलकर) आयुष्मन्! इधर देखिए—स्वर्ग पर प्रतिष्ठित आपका यश कितना सुन्दर दीख रहा है—

The king—In this matter really the might of Indra alone is to be praised or main cause. See—

If a person succeeds in the work alloted to him, it is the effect of the greatness of masters. Could else Aruṇa have become the piercer of darkness, had the thousand-rayed (sun) not placed him on the yoke of his chariot? (4)

Mātali—This is quite worthy of the long-lived one.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विच्छित्तिशेषैः सुरसुन्दरीणां वर्णैरमी कल्पलतांशुकेषु।
सञ्चिन्त्य गीतिक्षममर्थबन्धं दिवौकसस्त्वच्चरितं लिखन्ति॥ ५॥

राजा—मातले! असुरसम्प्रहारोत्सुकेन पूर्वेद्युर्दिवमधिरोहता न लक्षितोऽयं प्रदेशो मया, तत् कतमस्मिन् पथि वर्त्तामहे मरुताम्।

(महत्पुरुषस्यैव विनयनम्रतादेरौचित्यादिति भावः)। (स्तोकम्=स्वल्पम्, अन्तरम्=अवकाशम्, अतीत्य=अतिक्रम्य) आयुष्मन्!=प्रशस्तायुःशालिन्! इतः=निर्दिश्यमानायां दिशि, नाकपृष्ठे=स्वर्गतले, प्रतिष्ठितस्य=सर्वदा स्थिरत्वेन प्रतिष्ठां प्राप्तस्य, आत्मनो यशसः=स्वकीययशसः, सौभाग्यम्=समधिकभाग्यवत्वम्, पश्य।

अन्वयः—अमी दिवौकसः गीतिक्षमम् अर्थबन्धं सञ्चिन्त्य सुरसुन्दरीणां विच्छित्तिशेषैः वर्णैः कल्पलतांशुकेषु त्वच्चरितं लिखन्ति॥ ५॥

विच्छित्तीति। अमी=पुरो लक्ष्यमाणाः, दिवौकसः=देवाः, गीतिक्षमम्=गानयोग्यम् (गेयम्), अर्थबन्धं=पदावलीम्, सञ्चिन्त्य=चिन्तापूर्वकं विरचय्य, सुरसुन्दरीणां=देवाङ्गनानाम्, विच्छित्तिशेषैः—विच्छित्तिः=तिलकादिरलङ्कारः, तच्छेषैः=तदवशिष्टैः, वर्णैः=रक्तपीतादिवर्णकैः रञ्जनसाधनैः, कल्पलतांशुकेषु=कल्पतरुसमुद्भूतवसनेषु, त्वच्चरितम्=परोपकारादिरूपं तव चरित्रम्, लिखन्ति। अत्र उदात्तालङ्कारः दीपकालङ्कारश्च। उपजातिर्वृत्तम्॥ ५॥

भावार्थः—पुरो दृश्यमाना अमी देवाः गेयपदावलीं सञ्चिन्त्य देवाङ्गनाङ्गरागविशिष्टैः वर्णैः कल्पवृक्षसमुद्भूतवसनेषु परोपकारादिगुणसम्पन्नं त्वच्चरितं लिखन्ति (देवानामेवंविधा सदा शृङ्गाररसोपभोगयोग्यगीतादिसंरचना तेषां गानञ्च त्वदनुग्रहादेवेति भावः)॥ ५॥

राजा—मातले=देवराजसारथे! असुराणाम्=दैत्यानाम्, सम्प्रहारे=युद्धे विषये, उत्सुकेन=उत्कण्ठितेन, असुरसम्प्रहारोत्सुकेन, दिवं=स्वर्गम्, अधिरोहता=आरोहता, मया, अयं

ये देवता गाने योग्य पद बनाकर देवाङ्गनाओं के उपभोग से बचे हुए अङ्गराग के रङ्गों से कल्पवृक्ष द्वारा उत्पादित वस्त्रों पर आपका यश लिख रहे हैं॥ ५॥

राजा—मातलि! गत दिवस राक्षसों के साथ युद्ध करने की उत्कण्ठा के कारण स्वर्ग की ओर आते समय मैंने इस प्रदेश की ओर ध्यान नहीं दिया था। अतः (बताओ) इस समय हम वायु के किस मार्ग पर हैं।

(traversing a small distance) Long-lived one! this way behold the glory of your fame that is firmly established on the surface of the heaven.

With paints left over after the personal decorations of heavenly beauties, the inhabitant of heaven gods here are writing your exploit on vestments obtained from the desire-yielding trees, after having thought out a composition suitable for singing. (5)

The king—Mātalī! being eager to fight with the demons, I did not observe the way to heaven while ascending the sky yesterday. On which track of the wind are we?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—

त्रिस्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठां
ज्योतींषि वर्त्तयति चक्रविभक्तरश्मिः।
तस्य व्यपेतरजसः प्रवहस्य वायो-
र्मार्गो द्वितीयहरिविक्रमपूत एषः॥ ६॥

राजा—अतः खलु मे सबाह्यान्तःकरणोऽन्तरात्मा प्रसीदति। (रथाङ्गमवलोक्य) शङ्के मेघपदवीमवतीर्णाः स्मः।

प्रदेशः=एषः पुरःस्थितः क्षेत्रभागः (मार्गभागः), पूर्वेद्युः=पूर्वस्मिन्नहनि, न लक्षितः=न निरीक्षितः, तत्=तस्मात्, (कथय) मरुताम्=वायूनाम्, कतमस्मिन् पथि=कतमस्मिन् मार्गे, वर्त्तामहे=वर्त्तमाना स्मः (आवहादयः सप्तवायवस्तेषां मध्ये कतमस्मिन् वायोर्मार्गे सम्प्रति वयं वर्त्तमानाः स्म तत्कथय)।

मातलिः—अन्वयः—यः गगनप्रतिष्ठां त्रिस्रोतसं वहति तथा चक्रविभक्तरश्मिः ज्योतींषि वर्त्तयति, व्यपेतरजसः तस्य प्रवहस्य वायोः एषः द्वितीयहरिविक्रमपूतः मार्गः वर्त्तत इति शेषः॥ ६॥

त्रिस्रोतसमिति। यः=प्रवहो नाम वायुः, गगने=अन्तरिक्षे, प्रतिष्ठा=स्थितिः, यस्यास्तां गगनप्रतिष्ठाम्, त्रिस्रोतसं=गङ्गाम्, वहति=धारयति, तथा चक्रेण=स्वस्थितज्योतिषां मण्डलेन, विभक्ता=विभज्य विन्यस्ता, रश्मयः=किरणाः, यत्र सः चक्रविभक्तरश्मिः, सन्, प्रवहस्य वायुः, ज्योतींषि=ग्रहनक्षत्रादीनि, वर्त्तयति=धारयति चालयति वा, व्यपेतानि=भूवायोरुपरि स्थितत्वात् विगतानि, रजांसि=धूलयः, यस्मात् तस्य व्यपेतरजसः, तस्य=तादृशगुणोपेतस्य, प्रवहस्य=तन्नामकस्य वायोः, एषः=दृश्यमानः, द्वितीयेन हरेः=वामनस्य (विष्णोः), विक्रमेण=पादक्षेपेण, पूतः=पवित्रीकृतः, द्वितीयहरिविक्रमपूतः, मार्गः=पन्थाः, वर्त्तत इति शेषः। अत्र वसन्ततिलका वृत्तम्॥ ६॥

भावार्थः—यथा कश्चित् सारथिः प्रग्रहं धृत्वा स्वस्थं चालयति तथैव यः प्रवहो नाम वायुः गगने स्थितां मन्दाकिनीं धारयति उत चालयति व्यपेतरजसः तस्य प्रवहो नाम वायुः एषः विष्णोः पादक्षेपेण पवित्रीकृतः मार्गः वर्त्तत्ते इति भावः॥ ६॥

राजा—अतः=उक्तगुणविशिष्टवायुमार्गवर्त्तनात्, खल्विति निश्चयेन, मे=मम दुष्यन्तस्य,

---

मातलि—जो प्रवह नामक वायु आकाशगङ्गा को तथा नक्षत्रमण्डल को धारण किये हुए हैं तथा जो वायु नक्षत्रमण्डल के ऊपर पृथक् भाव से किरणों को विन्यस्त किये हुए हैं, पार्थिव धूलि से रहित प्रवह नामक वायु का यह पथ है। यह पथ भगवान् वामन के द्वितीय चरण-निक्षेप से पावन हो चुका है॥ ६॥

राजा—इसीलिए भीतर और बाहर से मेरी अन्तरात्मा प्रसन्न हुई है। (रथ के पहिये को देखकर) मेरा विचार है कि अब हम मेघ-मार्ग पर उतर रहे हैं।

***Mātali*—This is the path, sanctified by the second step of Hari, of the wind pravāha, which is free from dust (Rajas), which bears the triple streamed river (Ganges) located in the sky and which causes the luminaries to revolve with their rays (duly) distributed. (6)**

***King*—Hence indeed my inner self, together with the exter-**

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! कथमवगम्यते?

राजा— अयमगविवरेभ्यश्चातकैर्निष्पतद्भि-
हरिभिरचिरभासां तेजसा चानुलिप्तैः।
गतमुपरि घनानां वारिगर्भोदराणां
पिशुनयति रथस्ते शीकरक्लिन्ननेमिः॥ ७॥

बाह्यैश्चक्षुरादिभिः=अन्तःकरणैः मनःप्रभृतिभिश्च सह वर्तत इति सबाह्यान्तःकरणः, अन्तरात्मा=जीवात्मा, प्रसीदति=प्रसन्नो भवति। (रथाङ्गम्=चक्रम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा) शङ्के=तर्कयामि (मन्ये), मेघपदवीम्=प्रवहादधोवर्त्तिनमावहापरपर्य्यायं भूवायुम्, अवतीर्णाः=अवतरिताः (प्राप्ताः) स्म।

मातलिः—आयुष्मन्=प्रशस्तायुःशालिन्! केन=केन लक्षणेन, अवगम्यते=ज्ञायते, यत् मेघपदवीमवतीर्णाः स्म इति।

राजा—

अन्वयः—शीकरक्लिन्ननेमिः अयं ते रथः अगविवरेभ्यः निष्पतद्भिः चातकैः अचिरभासां तेजसा अनुलिप्तैः हरिभिः वारिगर्भोदराणां घनानाम् उपरि गतम् (इति) पिशुनयति॥ ७॥

अयमिति। शीकरैः=जलबिन्दुभिः, क्लिन्नाः=आर्द्रीकृताः, नेमयः=चक्रप्रान्तभागाः, यस्य सः शीकरक्लिन्ननेमिः, अयम्, ते=तव, रथः=स्यन्दनः, अगविवरेभ्यः=शैलरन्ध्रेभ्यः, निष्पतद्भिः=निर्गच्छद्भिः, चातकैः=तन्नामकपक्षिविशेषैः, अचिरम्=अचिरस्थायिन्यः, भासः=दीप्तयः, यासां तासाम् अचिरभासाम्=विद्युताम्, तेजसा=किरणेन, अनुलिप्तैः=अनुरञ्जितैः, हरिभिः=वाजिभिश्च, वारीणि=जलानि, गर्भे=मध्ये, येषां तानि वारिगर्भाणि च, उदराणि=अभ्यन्तरावकाशाः, येषां तेषां वारिगर्भोदराणाम्, घनानाम्=मेघानाम्, उपरि=ऊर्ध्वभागे, गतं=गमनम्, (इति) पिशुनयति=सूचयति। अत्र समुच्चयः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम् अनुमानश्चालङ्काराः। मालिनी वृत्तम्॥ ७॥

मातलि—आयुष्मन्! आपने यह कैसे जाना?

राजा—क्योंकि इस रथ के पहिये का प्रान्तभाग जलकणों से कुछ-कुछ गीला हो गया है। इस स्थिति में इस रथ के पर्वतीय छिद्रों से निकलते हुए चातकों तथा विद्युत् के तेज से रङ्गे हुए घोड़ों के द्वारा यही विदित होता है कि हम जलपूर्ण मेघों के ऊपर चल रहे हैं (मेघपथ पर उतर गये हैं)॥ ७॥

---

nal and internal organs, feels a pleasant tranquility. *(Looking at a wheel of the chariot)* we have descended to the region of the clouds.

Mātali—How is this known?

The king—Here your chariot, with its rims bedewed with sprays, indicates our passage over clouds, whose bellies are filled with water, by the chātakas flying forth through the interstics of the spoks of (coming out from the holes (nests) of the mountain) by the horses glistening with the glow of lightning. (I can guess that we have descended over the cloudy-way) (7)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—अथ किम्। क्षणाच्चायुष्मान् स्वाधिकारभूमौ वर्तिष्यते।

राजा—(अधोऽवलोक्य) मातले! वेगादवंतरणादाश्चर्यदर्शनः संलक्ष्यते मनुष्य-लोकः। तथाहि—

शैलानामवरोहतीव शिखरादुन्मज्जतां मेदिनी,
पर्णाभ्यन्तरलीनतां विजहति स्कन्धोदयात् पादपाः।
सन्धानं तनुभागनष्टसलिलव्यक्त्या व्रजन्त्यापगाः,
केनाप्युत्क्षिपतेव पश्य भुवनं मत्पार्श्वमानीयते॥ ८॥

भावार्थः—नेमेः क्लिन्नत्वात् हरीणां विद्युत्तेजसानुलिप्तत्वात् चातकानां शैलरन्ध्रेभ्यः जलयानायागमनाच्च अनुमीयते यद् वयं मेघपदवीमवतीर्णाः स्मः॥ ७॥

मातलिः—अथ किम्=इत्येकमव्ययमङ्गीकारार्थकम्, क्षणात् च=स्वल्पेनैव कालेन, क्षणेनैवेत्यर्थः, आयुष्मान्=भवान्, स्वाधिकारभूमौ=स्वराज्यभूतमर्त्यलोके, वर्त्तिष्यते=उपस्थास्यति।

राजा—(अधः=नीचैः, अवलोक्य=दृष्ट्वा) मातले! वेगात्=शीघ्रगत्या, अवतरणात्=अधोऽवनमनात्, आश्चर्यं दर्शनं यस्य सः आश्चर्यदर्शनः=विस्मयकररूपः, मनुष्यलोकः= मर्त्यलोकः, संलक्ष्यते=सन्दृश्यते। तथाहि—

अन्वयः—मेदिनी उन्मज्जतां शैलानां शिखरात् अवरोहतीव पादपाः स्कन्धोदयात् पर्णाभ्यन्तरलीनतां विजहाति, आपगाः तनुभागनष्टसलिलव्यक्त्या सन्धानं व्रजन्ति, तथा उत्क्षिपता केनापि भुवनं मत्पार्श्वम् आनीयते इव॥ ८॥

शैलानामिति। मेदिनी=क्षितिः, उन्मज्जताम्=उन्नमताम्, शैलानाम्=पर्वतानाम्, शिखरात्=शृङ्गात्, अवरोहतीव=अवतरतीव, पादपाः=वृक्षाः, स्कन्धानां=मूलाच्छाखावधिदेशानाम्, उदयात्=स्फुटं प्रकाशात्, स्कन्धोदयात्, पर्णानां=पत्राणाम्, अभ्यन्तरेषु=मध्येषु, लीनताम्=अन्तर्हितत्व-

---

मातलि—और क्या! क्षणभर में ही आप अपनी अधिकार भूमि (राज्य) में पहुँच जायेंगे।

राजा—(नीचे देखकर) मातलि! वेग से उतरने के कारण यह मानवलोक आश्चर्यजनक दिखायी पड़ रहा है। जैसे कि—

ऐसा प्रतीत होता है कि मानो पर्वत ऊपर उठ रहे हों और उनकी चोटियों से पृथ्वी नीचे उतर रही हो। शाखाओं के स्पष्ट दिखायी देने से वृक्ष ऐसे प्रतीत होते हैं मानों पत्तों के आवरण से बाहर आ रहे हों। दूर से क्षीण धारा के कारण जिनका जल दिखायी नहीं पड़ रहा

Mātali—Of course! Within a moment the long-lived one! will be on the land under his own control.

The king—(Looking below) Mātalī! the world of men is observed to be of wonderful appearance owing to our rapid descent. For—

The earth as though descends from the peack of the mountains that are emerging; owing to the rise (i.e. coming into view) of their trunks, the trees give up the state of being enveloped in their foliage; rivers, whose water had disappeared through

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! साधु दृष्टम्। (सबहुमानमालोक्य) अहो! उदाररमणीया पृथिवी।

राजा—मातले! कतमोऽयं पूर्वापरसमुद्रावगाढः कनकरसनिष्यन्दो सान्ध्य इव मेघः सानुमानालोक्यते।

मापद्यताम्, पर्णाभ्यन्तरलीनतां, विजहाति=विमुञ्चन्तीव, आपगाः=नद्यः, तनुभागेषु=अविस्तृत-भागेषु, नष्टानां=दूरतयाऽनुपलब्धानां, सलिलानां=जलानां, व्यक्त्या=क्रमशो नैकट्यात् प्रकाशेन, सन्धानम्=संयोगमविच्छिन्नत्वम्, इति यावत्, व्रजन्ति=प्राप्नुवन्तीव, तथा उत्क्षिप्ता=भुवनमेवोर्ध्व-निक्षिप्ता, केनापि=कुतुकिना जनेन, भुवनम्=अयं भूलोकः, मत्पार्श्वं=मत्समीपम्, आनीयते=प्राप्यते, इवेति, त्वं पश्य=अवलोकय। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्गम्, स्वभावोक्तिश्चालङ्काराः। शार्दूल-विक्रीडितं वृत्तम्॥ ८॥

भावार्थः—पूर्वं किञ्चिद् दूरावस्थितत्वेन भुवनस्याचलत्वरूपेण मदीयप्रतीतिरासीत्, सम्प्रति तु वेगेभ्य अवतरणात् मम निकटवर्त्तितया केनापि कुतुकिना भुवनमुत्क्षिप्तमिवालक्ष्यते इति भावः॥ ८॥

मातलिः—आयुष्मन्=प्रशस्त आयुःशालिन्! साधु दृष्टम्=सम्यगेव त्वयावलोकितम्। (सबहुमानम्=सादरम्, आलोक्य=दृष्ट्वा) अहो! इत्यादरे प्रशंसायां वा, उदाररमणीया=अतिमनोहरा, पृथिवी=क्षितिः।

राजा—मातले! अयम्=पुरतो दृश्यमानः, कतमः, पूर्वापरयोः=पूर्वपश्चिमयोः सागर-योर्मध्ये, अवगाढः=प्रविष्टः, पूर्वापरसमुद्रावगाढः, कनकरसं=सुवर्णद्रवं, निष्यन्दयितुं=स्रावयितुं, शीलमस्यास्ति इति कनकरसनिष्यन्दीस्वर्णमयधातुरसस्रावी, सन्ध्याया अयम् इति सान्ध्यः=सन्ध्या-कालीनः, मेघ इव=वारिद इव, सानुमान्=तन्नामकः पर्वतः, आलोक्यते=दृश्यते।

था वे नदियाँ अब आपस में मिली हुई-सी दिखायी पड़ रही हैं। यह सब देखकर ऐसा अनुमान होता है मानो कोई इस मानव लोक को ऊपर उछाल रहा हो और इस प्रकार इसे मेरे पास ला रहा हो॥ ८॥

मातलि—आयुष्मान्! आपने ठीक देखा। (**विशेष आदर के साथ देखकर**) अहो! पृथ्वी अतीव रमणीय दिखायी पड़ रही है।

राजा—मातलि! पूर्व और पश्चिम समुद्र में प्रविष्ट, सुवर्णरस को प्रवाहित करने वाला सन्ध्याकालीन मेघ के समान प्रतीत होने वाला यह कौन-सा पर्वत दिखायी दे रहा है?

---

thinness, acquire manifestation through expension; behold, the world is as though being brought near me by some one flinging (throwing) it up. (8)

Mātali—Long-lived one! well observed (by you). *(looking with great respect)* Oh! how grand and charming is the earth!

The king—Mātali! what mountain is yonder (within view) seen has plunged in the eastern and the western ocean and that, possessing a stream of liquid gold, is like a bar of evening cloud?

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! एष खलु हेमकूटो नाम किंपुरुषपर्वतः परं तपस्विनां क्षेत्रम्। पश्य—

स्वायम्भुवान्मरीचेर्यः प्रबभूव प्रजापतिः।
सुरासुरगुरुः सोऽस्मिन् सपत्नीकस्तपस्यति॥ ९॥

राजा—(सादरम्) तेन ह्यनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि। प्रदक्षिणीकृत्य भगवन्तं गन्तुमिच्छामि।

मातलिः—आयुष्मन्! एषः=भवन्निर्दिष्टः, खल्विति निश्चयेन, हेम्नः=सुवर्णस्य, कूटानि=शिखराणि, यस्य सः हेमकूटः, नाम=नामकः, किम्पुरुषपर्वतः=किम्पुरुषवर्षपर्वतः, तपस्विनां, परम्=उत्कृष्टम्, क्षेत्रम्=स्थानम्। पश्य=अवलोकय—

अन्वयः—स्वायम्भुवात् मरीचेः यः प्रजापतिः प्रबभूव, सुरासुरगुरुः सपत्नीकः सः अस्मिन् तपस्यति॥ ९॥

स्वायम्भुवादिति। स्वयम्=आत्मना, भवतीति स्वयम्भूः=ब्रह्मा, तस्यापत्यमिति स्वायम्भुवस्तस्मात्=ब्रह्ममानसपुत्रात्, मरीचेः=तदाख्यात् देवर्षेः, यः प्रजापतिः=प्रजास्रष्टा कश्यपः, प्रबभूव=प्रथमं यज्ञे, सुराणामसुराणाञ्च गुरुः=पिता, सुरासुरगुरुः, सपत्नीकः=पत्नीसहितः, सः=कश्यपः, अस्मिन्=पर्वते, तपस्यति=तपस्यामाचरति। अत्र पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ ९॥

भावार्थः—यतः सुरासुरगुरुः कश्यपः सपत्नीकः अस्मिन्नेव पर्वते तपस्यामाचरति अतः तपस्विनां परं क्षेत्रमेतत् इति जानीहि॥ ९॥

राजा—(स्वगतम्=आत्मगतम्) अनतिक्रमणीयानि=अनवहेलनीयानि, हि इति निश्चयेन, श्रेयांसि=मङ्गलानि। भगवन्तम्=कश्यपम् (माहात्म्यशालिनम्), प्रगतं दक्षिणमिति प्रदक्षिणम्, प्रदक्षिणीकृत्य=प्रदक्षिणीकृत्वा, दक्षिणावर्त्तेन परिवेश्य, गन्तुम्=स्वराज्ये गन्तुम्, इच्छामि=कामये।

मातलि—आयुष्मन्! तपस्वियों के लिए उत्कृष्ट स्थान यह हेमकूट नामक पर्वत दीख रहा है। देखिए—

ब्रह्मा के पुत्र मरीचि से जिनका जन्म हुआ है, जो देव-दानव दोनों के जनक हैं वही प्रजापति कश्यप अपनी पत्नी के साथ इस पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं।

राजा—(मन में) माङ्गलिक (स्थानों, व्यक्तियों) आदि को इस प्रकार छोड़कर (बिना उन्हें समुचित आदर दिये) जाना उचित नहीं। मैं चाहता हूँ कि प्रभावशाली भगवान् कश्यप का दर्शन (प्रदक्षिणा) करके ही मैं जाना चाहता हूँ।

Mātali—Long-lived one! this is indeed mountain of the kimpuruṣās, Hemakūta named, region of the perfact fulfilment of penance. Behold—

That Prajāpati, who sprang from Marīci, the son of the self born (Bramhā) and who himself is the father of gods and demons, is here practicing penance wtih his wife. (9)

The king—Then surely blessings are not to be passed by. I desire to proceed after having circumambulated the revered sage.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! प्रथमः कल्पः। (अवतरणं नाटयन्) एतावक्तीर्णौ स्वः।

राजा—(सस्मितम्) मातले!

उपोढशब्दा न रथाङ्गनेमयः प्रवर्त्तमानं न च दृश्यते रजः।
अभूतलस्पर्शतया निरुद्धतिस्तवावतीर्णोऽपि न लक्ष्यते रथः॥ १०॥

मातलिः—एतावानेव शतमन्योरायुष्मतश्च रथस्य विशेषः।

मातलिः—आयुष्मन्! प्रथमः=मुख्यः, कल्पः=पक्षः। (अवतरणं=हेमकूटपर्वते रथस्यावतरणं, नाटयन्=अभिनयन्) एतौ स्वः=आवाम् अवतीर्णौ।

राजा—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) मातले!

अन्वयः—अभूतलस्पर्शतया रथाङ्गनेमयः उपोढशब्दाः (न भवन्ति), च रजः प्रवर्त्तमानं न दृश्यते, तथा निरुद्धतिः तव रथः अवतीर्णोऽपि न लक्ष्यते॥ १०॥

उपोढेति। नास्ति भूतले=पृथिवीपृष्ठे स्पर्शो यस्य तया अभूतलस्पर्शतया=व्योमवर्त्तितया, रथाङ्गानाम्=चक्राणां, नेमयः=प्रान्तभागाः, रथाङ्गनेमयः, उपोढाः=धृताः, शब्दाः याभिस्तास्तादृश्यो न भवन्तीति शेषः, उपोढशब्दाः=निःशब्दा भवन्तीति भावः। च=एवं, रजः=धूलिश्च, प्रवर्त्तमानम्=नेमित उत्पद्यमानम्, न दृश्यते=न दृष्टिपथमायाति। तथा—निर्=नास्ति, उद्धतिः=शनैः शनैः भूसंयोगादुच्चनीचस्पर्शजनितमौद्धत्यं, यस्य सः निरुद्धतिः, तव, रथः=स्यन्दनः, अवतीर्णोऽपि=पर्वतीयक्षेत्रे कृतावतरणोऽपि, न लक्ष्यते=अवतीर्णत्वेन नावबुध्यते। अत्र काव्यलिङ्गमलङ्कारः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १०॥

भावार्थः—नेमीनां शब्दाभावाद्रजसामदर्शनादुद्धतेरभावात् अभूतलस्पर्शतया च तव रथः भूतले कृतावतरणोऽपि नावबुध्यते॥ १०॥

मातलि—आयुष्मन्! वस्तुतः यही प्रथम करणीय कर्त्तव्य है। (उतरने का अभिनय करते हुए) लीजिए हम उतर आये।

राजा—(मुस्कराकर) मातलि!

भूतल का स्पर्श न करने के कारण, पहियों से किसी प्रकार का शब्द न निकलने के कारण, धूल के दिखायी न देने के कारण तथा ऊपर-नीचे न होने के कारण आपका रथ नीचे उतर आया है, यह पता ही नहीं चलता॥ १०॥

मातलि—आपके और देवराज के रथ में इतना ही तो (अन्तर है)।

Mātali—Long-lived one! an excellent idea indeed. *(They gesticulate descent)* See, we have descented.

The king—*(With a smile)*

The rims of the wheels have produced no sound; no dust too is seen rising, your chariot which is free from jolting owing to its not touching the surface of the earth, is not, though descended, noticed (to be so). (10)

Mātali—This much only is the difference between the chariot of Indra and of the long-lived one.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—मातले ! कतमस्मिन् प्रदेशे मारीचाश्रमः ?

मातलिः—(हस्तेन दर्शयन्) पश्य—

वल्मीकार्द्धनिमग्नमूर्त्तिरुरगत्वग्ब्रह्मसूत्रान्तरः
कण्ठे जीर्णलताप्रतानवलयेनात्यर्थसम्पीडितः ।
अंसव्यापि शकुन्तनीडनिचितं बिभ्रज्जटामण्डलं
यत्र स्थाणुरिवाचलो मुनिरसावभ्यर्कबिम्बं स्थितः ॥ ११ ॥

मातलिः—एतावानेव=इयन्मात्रमेव, शतमन्योः=शतक्रतोः इन्द्रस्य, आयुष्मतः=भवतश्च, रथस्य, विशेषः=अन्यरथेभ्यो वैलक्षण्यम् ।

राजा—मातले ! कतमस्मिन् प्रदेशे=हेमकूटपर्वतस्य कस्मिन् भागे, मारीचस्य=कश्यपस्य, आश्रमः, अस्तीति शेषः ।

मातलिः—(हस्तेन=करेण, दर्शयन्=आश्रमं निर्दिशन्) पश्य—

अन्वयः—वल्मीकार्द्धनिमग्नमूर्तिः तथा उरगत्वग्ब्रह्मसूत्रान्तरः जीर्णलताप्रतानवलयेन कण्ठे अत्यर्थसम्पीडितः । एवं अंसव्यापि शकुन्तनीडनिचितं जटामण्डलं बिभ्रत् (असौ मुनिः यत्र अचलः स्थाणुरिव अभ्यर्कबिम्बं स्थितः स मारीचाश्रम इति) ॥ ११ ॥

वाल्मीकेति । वल्मीके=उयिकोत्थापितमृत्पुञ्जमध्ये, अर्द्धनिमग्ना=अर्द्धावगाढा, मूर्तिः=शरीरं, यस्य सः वल्मीकार्द्धनिमग्नमूर्तिः, तथा, उरगत्वक्=सर्पनिर्मोकः, ब्रह्मसूत्रान्तरम्=अपरं यज्ञोपवीतं, यस्य सः उरगत्वग्ब्रह्मसूत्रान्तरः, जीर्णानां=परिणतानां, लतानां=वल्लीनां, प्रतानः=कुटिलतन्तुः, स एव वलयं=वर्त्तुलं, वेष्टनम्, तेन जीर्णलताप्रतानवलयेन, कण्ठे=गलदेशे, अत्यर्थम्=अतिशयेन, सम्पीडितः=क्लेशं प्रापितः, अत्यर्थसम्पीडितः, एवं अंसव्यापि=स्कन्धपर्य्यन्तव्यापकम्, शकुन्तानां=पक्षीणां, नीडैः=कुलायैः, निचितम्=व्याप्तम्, शकुन्तनीडनीचितम्, जटामण्डलम्=जटाजूटम्, बिभ्रत्=दधानः, असौ=दृश्यमानः, मुनिः=कश्चिन्महातपा महर्षिः, यत्र=यस्मिन् देशे, अचलः=निस्पन्दः, स्थाणुः=पत्रशाखादिवर्जितवृक्षकाण्डः इव, अभ्यर्कबिम्बम्=सूर्यमण्डलम्, अभिलक्ष्यीकृत्य, स्थितः=तिष्ठति । स एव मारीचाश्रमः=मरीचेरपत्यं पुमान् मारीचः=

राजा—मातलि ! महर्षि कश्यप का आश्रम कहाँ है ?

मातलि—(हाथ से दिखाते हुए) देखिए—

जिनका आधा शरीर वल्मीक (बाँबी) में छिपा है, ज़िनके कन्धे पर साँप की काँचुली के नीचे यज्ञोपवीत शोभित है, जिनका गला पुरानी लताओं के तन्तुओं से जकड़ा हुआ है, जिनकी जटाओं में पक्षियों ने अपने रहने के घोंसले बना लिये हैं, जो जटाजूट धारण

The king—Mātali! In which region is the hermitage of Mārīca?

Mātali—(Indicating with hand)—

Where motionless like the dry trunk of a tree, stands the sage, facing the sun's orb with his body half buried in an ant-hill, with his chest having a serpent's slough closely adhering to it, with his neck excessively pressed by a coil of the tendrils of old creepers

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(विलोक्य) नमोऽस्मै कष्टतपसे।

मातलिः—(संयतप्रग्रहं रथं कृत्वा) एतावदिति परिवर्द्धितमन्दारवृक्षं प्रजापतेराश्रमं प्रविष्टौ स्वः।

राजा—अहो! स्वर्गादिदमधिकतरं निर्वृत्तिस्थानम्। अमृतह्रदमिवावगाढोऽस्मि।

कश्यपस्तस्येति भावः। अत्र परिकरालङ्कारः तथा श्लेषघटितश्रौतोपमा च। शार्दूलविक्रीडितं नाम वृत्तम्॥ ११॥

भावार्थः—अनेककालं व्याप्यैकनिष्ठतया तपश्चरणादुयिकाभिर्मृदमुत्तोल्य शरीरार्द्धं यावद्यस्यावृतं तथा च निश्चलतयावस्थानात् वल्मीकबुद्ध्या केनचित् सर्पेण यस्य स्कन्धदेशे यज्ञोपवीतमिव निजनिर्म्मोकः परिधापितः, तथा च यस्य गलप्रदेशं समुत्पद्यमाना लता दीर्घकालावस्थित्या परिणतिं गता स्वकीयतन्तुभिर्निगडैरिव सम्बध्योत्पीडितं तथा च यस्य निश्चलावस्थानेन जटासु पक्षिणोऽप्यावासं कृत्वा स्थिताः, सः असौ दृश्यमानः मुनिः यस्मिन् क्षेत्रे स्थाणुरिव सूर्यमण्डलम् अभिलक्ष्यीकृत्य तिष्ठति स एव मारीचाश्रम इति ज्ञेयम्॥ ११॥

राजा—(विलोक्य=दृष्ट्वा) कष्टं=कृच्छ्रं, तपो यस्य तस्मै कष्टतपसे, अस्मै=मुनये, नमः।

मातलिः—(रथं=स्यन्दनं, संयतः=कराभ्यां धृतः, प्रग्रहः=रज्जुः, यस्य तं संयतप्रग्रहम्, कृत्वा=विधाय) अदित्या=कश्यपपत्न्या, परिवर्द्धितः=जलसेकादिना वृद्धिं प्रापितः, मन्दारवृक्षः=तन्नामकदेवतरुः, यस्मिन् तम् अदितिपरिवर्द्धितमन्दारवृक्षम्, प्रजापतेः=कश्यपप्रजापतेः, आश्रमं=तपोवनम्, स्वः=आवाम्, प्रविष्टौ।

राजा—अहो इति प्रशंसायाम्, इदम्=दृश्यमानम्, निर्वृत्तेः=सुखस्य, स्थानं निर्वृत्तिस्थानम्, स्वर्गात्=अमरलोकात् अपि, अधिकतरम्=उत्कृष्टतरम्, अमृतस्य=सुधायाः, ह्रदं=जलाशयमिव, अमृतह्रदमिव, अवगाढोऽस्मि=अभ्यन्तरे प्रविष्टोऽस्मि (निमज्जितोऽस्मि)।

किये हुए हैं, ऐसे जो ये मुनि वृक्ष के ठूँठ की भाँति सूर्य के बिम्ब की ओर देखते हुए अचल भाव से जहाँ विराजमान हैं वही मारीचाश्रम है॥ ११॥

राजा—(देखकर) इस कष्टकारी तप को करने वाले मुनि को प्रणाम है।

मातलि—(रथ की बागडोर खींचकर) यह हम प्रजापति कश्यप के आश्रम में प्रविष्ट हो गये हैं, जहाँ के मन्दार वृक्ष को अदिति ने अपने हाथों सींचकर बड़ा किया है।

राजा—अहो! यह स्थान स्वर्ग से भी अधिक शान्तिदायक है। (यहाँ पहुँचकर) मानो मैं अमतृसर में निमज्जित हो गया हूँ।

---

and bearing a mass of matted hair that envelops his shoulders and is thickly filled with nests of birds. (11)

The king—(Observing) A bow to you whose penance is so severe.

Mātali—(Drawing in the reins of the chariot) Here we have entered the hermitage of the Prajāpati, the Mandāra trees in which are grown up by Aditi herself.

The king—Oh! this place of happiness is indeed superior to the heaven. I am as though immersed in a pool of nectar.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—(रथं स्थापयित्वा) अवतरत्वायुष्मान्।

राजा—(अवतीर्य) भवान् किमिदानीम्?

मातलिः—समययन्त्रित एवायमास्ते रथः, तद्वयमप्यवतरामः। (तथा कृत्वा) इत इत आयुष्मन्! दृश्यन्तामत्रभवतामृषीणां तपोवनभूमयः।

राजा—ननु विस्मयादुभयमप्यवलोकयामि—

प्राणानामनिलेन वृत्तिरुचिता सत्कल्पवृक्षे वने,
तोये काञ्चनपद्मरेणुकपिशे पुण्याभिषेकक्रिया।
ध्यानं रत्नशिलागृहेषु विबुधस्त्रीसन्निधौ संयमो,
यद्वाञ्छन्ति तपोऽभिरन्यमुनयस्तस्मिंस्तपस्यन्त्यमी॥ १२॥

मातलिः—(रथं=स्यन्दनं, स्थापयित्वा=स्थिरीकृत्य) आयुष्मान्=प्रशस्तायुःशालिन्, (रथाद्) अवतरतु=अवरोहतु।

राजा—(अवतीर्य=अवरुह्य) भवान् किमिदानीम्=किमिदानीमवतरेदिति वाक्यशेषः। देवराजसारथित्वात् सम्मानरक्षार्थमस्पष्टतया भवदवतरणमपेक्षे इत्याशयः।

मातलिः—अयं रथः, समयेन=मया निर्धारितकालेन, सङ्केतविशेषेण नियमेन वा, यन्त्रितः=अवरोधितः, समययन्त्रित एव, आस्ते=तिष्ठति, मदीय इच्छां विना नैकपदमपि चलितुं शक्नुयादिति भावः। तद्=तस्मात्, वयमप्यवतरामः=अहमपि अवरोहामः। (तथा कृत्वा= रथादवतरणं कृत्वा) इत इत आयुष्मान्=अनेनानेन मार्गेण आगच्छतु आयुष्मान्, अत्रभवताम्=पूजनीयानाम्, ऋषीणां=तापसानाम्, तपोवनभूमयः=तपःसाधनवनभूमयः, दृश्यन्ताम्=अवलोक्यन्ताम्।

राजा—नन्विति सम्बोधने, विस्मयात्=विस्मयमवलम्ब्य, उभयं=तपः तपोवनभूमिश्चैतद्-द्वयमपि, अवलोकयामि—

मातलि—(रथ रोककर) आयुष्मान्! (रथ से) उतरें।

राजा—(उतरकर) तो क्या अब आप भी ····· ?

मातलि—यह रथ सङ्केत मात्र से नियन्त्रित है, अतः मैं भी उतरूँगा। (उतरकर) इस मार्ग से पधारें आयुष्मान् और पूज्य तपस्वियों की तपोवनभूमि को देखें।

राजा—मैं विस्मय के साथ दोनों बातें (तप और तपस्यास्थान) देख रहा हूँ।

Mātali—*(Having stopped the chariot)* Let the long-lived one alight.

The king—*(Alighting)* How will you (got down) now.....?

Mātali—The chariot has been controlled by time or indication we too shall get down. *(Doing the same)* This way long-lived one! Let the regions of the penance-grove of these revered sages be observed.

The king—Why! with wonder I behold. (The both-the hermitage and the hermit)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—उत्सर्पिणी खलु महतां प्रार्थना। (परिक्रम्य आकाशे) वृद्धसाकल्य! किंव्यापारः सम्प्रति भगवान् मारीचः? (आकर्ण्य) किं ब्रवीषि—दाक्षायण्या पतिव्रतापुण्य-

---

अन्वयः—सत्कल्पवृक्षे वने अनिलेन प्राणानां वृत्तिः उचिता, काञ्चनपद्मरेणुकपिशे तोये पुण्याभिषेकक्रिया (उचिता), तथा च रत्नशिलागृहेषु ध्यानं विबुधस्त्रीसन्निधौ संयमः, एवं च अन्यमुनयः तपोभिः यत् वाञ्छन्ति अमी तस्मिन् तपस्यन्ति॥ १२॥

प्राणानामिति। सन्तः=विद्यमानाः, कल्पवृक्षाः=अभीष्टफलदायिनः तरुविशेषाः, यस्मिन् तत् सत्कल्पवृक्षे, वने=तपोवने, अनिलेन=वायुना (केवलवायुभक्षणेन न तु कल्पवृक्षप्रदत्तभक्ष्य-वस्तुना), प्राणानां वृत्तिः=स्थितिः, उचिता=अभ्यस्ता। (इच्छापूरककल्पवृक्षसम्पन्नवनेऽपि वायु-भक्षणेनैव जीवनधारणमतीव विस्मयकरमिति भावः)। काञ्चनपद्मानाम्=सुवर्णकमलानाम्, रेणुभिः=परागैः, कपिशे=पिङ्गलवर्णे, काञ्चनपद्मरेणुकपिशे, तोये=जले, पुण्या=पावनी, अभिषेक-क्रिया=पुण्याभिषेकक्रिया, नियमस्नानकर्म्मसम्पादनं न तु विहारप्रवृत्तिः (तथा च काञ्चनपद्म-रेणुकपिशे जले सुन्दरीभिः सह विहारमकृत्वा नियमस्नानसम्पादनमतीव विस्मयापादकम्), रत्नशिला=रत्नविकारा उपलाः, तासां गृहेषु रत्नशिलागृहेषु=रत्ननिर्मितभवनेषु, ध्यानम्=आत्म-प्रत्ययैकतानता, न तु सुन्दरीभिः सहैकत्र शयनम् (इदमपि अतीव विस्मयजनकम्), तथा विबुधस्त्रीणां=देवाङ्गनानाम् (अप्सरसां), सन्निधौ=समीपे, संयमः=इन्द्रियनिग्रहः (देवाङ्गनाभिः सह सम्भोगमकृत्वा तासां सन्निधाविन्द्रियवशीकरणमतीव विस्मयजनकमिति भावः), एवञ्च अन्यमुनयः=विश्वामित्रादयः, तपोभिः=तपश्चरणैः, यत्=स्थानं वस्तु वा, वाञ्छन्ति=काङ्क्षन्ति, अमी=दृश्यमानाः मुनयः, तस्मिन्=स्थाने, तपस्यन्ति=तपस्यां कुर्वन्ति। अत्र विशेषोक्तिः, वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं व्यतिरेकश्चालङ्काराः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ १२॥

भावार्थः—सत्कल्पवृक्षे अस्मिन् तपोवने केवलवायुभक्षणेनैव जीवनधारणं काञ्चनपद्म-रेणुकपिशे सुरभिते च जले दैनन्दिनीयपूजनादिसम्पादनार्थं स्नानमात्रसम्पादनम्, रत्नगृहेषु आत्मप्रत्ययैकतानता तथा देवाङ्गनासमीपे इन्द्रियवशीकरणमतीव विस्मयजनकम्। एवञ्च अन्यमुनयः तपोभिर्यद्वाञ्छन्ति तस्मिन् स्वर्गादपि महत्तरे रमणीयस्थाने अमी तपस्यन्तीत्यहो।

अभीष्ट फलदायक कल्पवृक्ष युक्त वन में मात्र वायु पीकर प्राण धारण करना, स्वर्णकमलों के पराग से पीताभ जल में मात्र स्नान करना, रत्नशिला-निर्मित आगारों में केवल आत्मतत्त्व का चिन्तन करते हुए ध्यान लगाना, देवाङ्गनाओं के निकट रहकर भी इन्द्रियनिग्रह करना तथा अन्य मुनि तपस्या द्वारा (जो स्थान या वस्तु) चाहते हैं ऐसे स्वर्ग से भी श्रेष्ठ स्थान पर रहकर तपस्या करना (इनकी श्रेष्ठता का परिचायक है)॥ १२॥

In a penance-grove, where there are desire-yielding trees, the necessary maintenance of life (is secured) with air, in water which become tawny (brownish, yellow) with the pollen of gold lotuses (is done) the act of ablution for religious practices, in the houses made of the rocks of jewells meditation is being practiced and restraint in the company of celestial damsels, these (asatics) perform penance in the mids of that which other sages aspire after by means of austerity. (12)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मधिकृत्य पृष्टस्तदस्यै महर्षिपत्नीगणसहितायै कथयतीति। तत् प्रतिपाल्यावसरः खलु प्रस्तावः। (राजानमवलोक्य) अस्यामशोकच्छायायां तावदास्तामायुष्मान्, यावत्त्वामहमिन्द्र-गुरवे निवेदयामि।

राजा—यथा भवान् मन्यते। (इति स्थितः)

(मातलिर्निष्क्रान्तः)

मातलिः—उत्=ऊर्ध्वम्, सर्पति=गच्छति, इति या सा उत्सर्पिणी=क्रमिकोर्ध्वगामिनी, खल्विति निश्चयेन, महतां=मनस्विनाम्, प्रार्थना=आशंसा (महान्तः खलु उत्तरोत्तरमुन्नतिमेव कांक्षन्ति), (परिक्रम्य=कश्यपसमीपगमनाय चंक्रमणं विधाय, आकाशे=शून्ये) वृद्ध साकल्य! (कस्यचित् कश्यपशिष्यस्य सम्बोधनम्, किं व्यापारः=किमाचारः, किं करोतीति भावः, भगवान्, मरीचेरपत्यं मारीचः=कश्यपः? (आकर्ण्य=श्रवणाभिनयमभिनीय) किं ब्रवीपि? दक्षस्यापत्यं स्त्री दाक्षायणी, तया दाक्षायण्या=अदित्या, पतिव्रतायाः=पातिव्रत्यसम्पन्नायाः स्त्रियाः, पुण्यम्= धर्म्मम्, पतिव्रतापुण्यम्, अधिकृत्य=आश्रित्य, पृष्टः=कृतप्रश्नः, तद=धर्म्मम्, अस्यै=दाक्षायण्यै, महर्षिपत्नी-गणसहितायै, कथयति=श्रावयति इति। तत्=तस्मात्, प्रतिपाल्यः=प्रतीक्ष्यः, अवसरो यस्य प्रति-पाल्यावसरः=अपेक्षणीयसमयः, खलु प्रस्तावः, विषयान्तरप्रसङ्गः (तत्कथनपरिसमाप्तौ सत्यां विषयान्तरप्रसङ्गः आरम्भणीय इति भावः)। (राजानम्=दुष्यन्तम्, अवलोक्य=दृष्ट्वा) अस्याम्=सम्मुखस्थ-अशोकच्छायायाम्, अशोकवृक्षतलस्थितानातपभूभागे, आयुष्मान्=भवान्, तावत्=तावत्कालपर्यन्तम्, आस्यताम्=उपविशतु, यावत्, अहम्=मातलिः, त्वाम्=दुष्यन्तम्, इन्द्रगुरवे=कश्यपाय, निवेदयामि=सूचयामि।

मातलि—महात्माओं की प्रार्थना क्रमशः ऊर्ध्वगामिनी हुआ करती है। (कुछ कदम चलकर, आकाश में) वृद्ध साकल्य! इस समय भगवान् कश्यप क्या कर रहे हैं? (सुनकर) क्या कहा? दाक्षायणी ने पतिव्रताधर्म के सम्बन्ध में प्रश्न किया था उसी के सम्बन्ध में अनेकानेक महर्षि-पत्नियों के साथ बैठी हुई दाक्षायणी को उस (पतिव्रता धर्म) के सम्बन्ध में बता रहे हैं। अतएव कोई दूसरा प्रस्ताव लाने के लिए कुछ समय तक प्रतीक्षा करनी होगी। (राजा की ओर देखकर) आप थोड़ी देर इस अशोकवृक्ष की छाया में विश्राम करें तब तक मैं इन्द्रगुरु प्रजापति कश्यप को आपके आगमन की सूचना दे आऊँ।

Mātali—High-soaring indeed is the prayer of the great. *(Walking round, in the air)* Oh, Vridha Sakalya! what is his holiness Mārīca doing? *(Hearing)* What do you say? That being questioned by Dākṣāyaṇī respecting the duties of devoted wives, he is expounding them to her in company with the wives of the great sages. So, we have to wait till we get a proper chance to inform the sage for our arrival. *(Looking towards the king)* Let the long- lived one sit at the shadow (at the foot) of this Aśoka tree so long as I remain on the look out for an opportunity to announce you to the father of Indra.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(निमित्तं सूचयित्वा)

मनोरथाय नाशंसे किं बाहो! स्पन्दसे मुधा।
पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखं हि परिवर्त्तते॥ १३॥

(नेपथ्ये) मा क्खु चवलदं करेहि, जहिं तहिं ज्जेव अत्तणो पेइदिं दंसेसि। [मा खलु चपलतां कुरु, यस्मिन् तस्मिन्नेव आत्मनः प्रकृतिं दर्शयसि।]

राजा—यथा भवान् मन्यते=भवतो यदभिमतं तत् करोतु। (इति स्थितः=एवमुक्त्वा अशोकच्छायामाश्रित्य तिष्ठति)

(मातलिः=देवराजसारथिः, निष्क्रान्तः=निर्गतः)

राजा—(निमित्तं=दक्षिणबाहुस्पन्दनरूपं शुभलक्षणम्, सूचयित्वा=रूपयित्वा)

अन्वयः—हे बाहो! मनोरथाय न आशंसे तस्मात् किं मुधा स्पन्दसे। हि पूर्वावधीरितं श्रेयः दुःखं सत् परिवर्तते॥ १३॥

मनोरथायेति। हे बाहो!=दक्षिणभुज! मनोरथाय=मनोरथविषयीभूताय (शकुन्तला-समागमाय), तस्मात् किं=कथम्, मुधा=मृथा, स्पन्दसे=स्फुरसि। (मनोरथविषयीभूतस्य प्राप्त्य-सम्भवत्वात् ते स्फुरणं निरर्थकम्), हि=तथाहि, पूर्वावधीरितम्=प्रथमं तिरस्कृतम्, श्रेयः= कल्याणम्, दुःखं सत्, परिवर्त्तते=व्यावर्त्तते, दुःखरूपेण परिणमति। अत्र पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १३॥

भावार्थः—हे दक्षिणभुज! अहं मनोरथविषयीभूताय शकुन्तलासमागमाय न प्रार्थये, मम तु मनोरथाशंसापि नास्ति, शकुन्तलाप्राप्तिस्तु दूरे आस्तां तस्या अत्यन्तासम्भवात्। अतः शकुन्तलासमागमस्यासम्भाव्यत्वान्नैराश्ये प्राप्तिसूचकं ते स्फुरणं निरर्थकमेव। तथाहि—प्रथमं तिरस्कृतं कल्याणं दुःखरूपेण परिणमति। तथा च पूर्वकृता शकुन्तलावधीरणा मम चित्ते दुःखरूपेणैव परिणता भवतीति भावः॥ १३॥

(नेपथ्ये=रङ्गपृष्ठभागे परोक्षे वा) खल्विति निश्चयेन, चपलताम्=चापल्यम्, मा कुरु!

राजा—जैसा आप योग्य समझें, करें। (इस प्रकार कहकर बैठ जाता है।)

(मातलि चला जाता है।)

राजा—(शुभ लक्षण की सूचना कर)

मैं अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए अभिलाषा नहीं रखता तब हे बाहु! तू व्यर्थ क्यों फड़क रहा है? जब मैंने उस समय कल्याण का अनादर कर दिया तो अब उसके बदले मुझे कष्ट ही प्राप्त होगा॥ १३॥

(नेपथ्य में) चञ्चलता मत कर, तू जहाँ रहता है वहीं अपना स्वभाव दिखाता रहता है।

The king—As you think *(Stays).*

(Mātali exits)

The king—(Indicating an omen)

I hope (not to gain the object) of my desire. Why do you throb. O arm! in vain? My bliss has been repudiated before, misery indeed is around me now. (13)

(Behind the scenes) Do not do rashness. Wherever you go

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(कर्णं दत्त्वा) अभूमिरियमविनयस्य, तत् को नु खल्वेवं निषिध्यते। (शब्दानुसारेणावलोक्य सविस्मयम्) अये! को नु खल्वयमवरुध्यमानस्तापसीभ्यामबालसत्त्वो बालः?

अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेशरम्।
प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं करेणैवावकर्षति॥ १४॥

यस्मिन् तस्मिन्नेव=यत्र तत्र सर्वत्र, स्वस्मात् बलिष्ठेऽपि, आत्मनः=क्षत्रियस्य बालस्य वा, प्रकृतिं=स्वभावम्, दर्शयसि।

राजा—(कर्णं दत्त्वा) अविनयस्य=औद्धत्यस्य, इयमभूमिः=इदमस्थानम्। तत्=तस्मात्, कः=जनः, नु इति जिज्ञासायां, खल्विति सम्बोधने, इयम्=इदम्, निषिध्यते=अविनयाद् वार्य्यते। (अत्र महर्षीणां तपःक्षेत्रत्वादशिष्टाचारस्यावकाशोऽपि नास्ति ततः कः कम्, निषिध्यते=अविनयाद् वार्य्यते।) (शब्दस्य अनुसारः=अनुसरणं, तेन शब्दानुसारेण=यस्माद्देशात् उपरोक्तं शब्द आयातस्तस्मिन् देशे दृष्टिपातेन, अवलोक्य=दृष्ट्वा, सविस्मयम्=साश्चर्यम्) अये! इति विस्मये, तापसीभ्याम्= तपस्विनीभ्याम्, अवरुध्यमानः=अवष्टभ्यमानः (ध्रियमाणः), अबालम्=अस्तोकं (प्रभूतम्), सत्त्वं=पराक्रमः, यस्य सः अबालसत्त्वः, को नु=कः (अयं), बालः=शिशुः।

अन्वयः—मातुः अर्धपीतस्तनम् आमर्दक्लिष्टकेशरं सिंहशिशुं प्रक्रीडितुं करेणैव अवकर्षति॥ १४॥

अर्धपीतेति। मातुः=सिंहशिशोरेव जनन्याः, केशरिण्याः, अर्द्धम्=असमग्रम्, यथा स्यात्तथा पीतः स्तनः=स्तननिःसृतदुग्धम् (स्तन्यम्), येन तम् अर्धपीतस्तनम्, आमर्देन=तेनैव बालकेन कृतविमर्द्देन, क्लिष्टाः=सपीडं स्रस्ताः, केशराः=शटाः, यस्य तम् आमर्दक्लिष्टकेशरम्, सिंहशिशुम्=केशरिशावकम्, प्रक्रीडितुम्=मनोविनोदार्थं क्रीडां कर्त्तुम्, करेणैव=हस्तेनैव, अवकर्षति=आकर्षति। अत्र स्वभावोक्तिरलङ्कारः। पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १४॥

राजा—(कान देकर) यह स्थान तो अशिष्टाचरण के योग्य नहीं है फिर किसे रोका जा रहा है। (शब्द की दिशा में देखकर, आश्चर्य के साथ) ओह! यह बालक कौन है जिसे दो तापसियाँ रोक रही हैं। इसकी शक्ति तो असाधारण प्रतीत होती है।

जिस (सिंहशिशु) ने अभी अपनी माँ के स्तनों से आधा ही दूध पीया है तथा जिसके केसर मसलने के कारण छितराये हुए हैं ऐसे सिंहशावक को अपने साथ खेलने के लिए यह (कौन बालक) हाथ से ही (अन्य किसी साधन से नहीं) खींच रहा है।॥ १४॥

---

you show your nature. (every where your naughtiness remains with you).

The king—(Listening) This is no place for rudeness, who may indeed be this that is thus checked? *(Looking in the direction of the voice, with amazement)* Oh! who may indeed be this boy of unboy-like strength, closely attended by two female hermits.

Who is this boy, who is dragging away the cub from the lioness (his mother) whose mane are disorderd, forcibly, for sport, who has only sucked half milk from its mother, by his hand only. (14)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टकर्म्मा तापसीभ्यां सह बालः)

बालः—जिह्म ले सिंहसावआ! जिह्म, दंताइं दे गणइस्सं। [जृम्भस्व रे सिंहशावक! जृम्भस्व, दन्तान् ते गणयिष्यामि।]

प्रथमा—अविणीद! किं णो अवच्चणिव्विसेसाइं सत्ताइं विप्पअरेसि। हंत! वड्ढइ विअ दे संरंभो। ट्ठाणे क्खु इसिजणेण सव्वदमणोत्ति किदणामहे ओसि। [अविनीत! किं नः अपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि। हन्त! वर्द्धत इव ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।]

राजा—किं नु खलु बालेऽस्मिन्नौरस इव पुत्रे स्निह्यति मे हृदयम्? (विचिन्त्य) नूनमनपत्यता मां वत्सलयति।

भावार्थः—अन्यः खलु बालः कस्याप्याकर्षणमेव नैव कर्त्तुमर्हति, तत्रायं बालः सिंह-शावकं मातुः क्रोडात् स्तन्यं पिबन्तं केनचिद् दण्डादिना विना स्वकरेणैव तस्य शटा धृत्वा स्वमनोविनोदार्थम् इति भावः॥ १४॥

(ततः=तदनन्तरम्, यथानिर्दिष्टम्=सिंहशावकाकर्षणरूपं, कर्म यस्य सः यथानिर्दिष्टकर्मा= सिंहीसकाशात् जटायां सिंहशावकमाकर्षन्, तापसीभ्याम्=तपस्विनीभ्यां, सह=साकम्, बालः= शिशुः।)

बालः—जृम्भस्व=विदारितास्यो भव, रे सिंहशावक=सिंहशिशु! जृम्भस्व, ते=तव, दन्तान्=दंष्ट्राः, गणयिष्यामि=सङ्ख्यास्यामि।

प्रथमा—अविनीत=दुःशील! किं=कथम्, नः=अस्माकम्, अपत्येभ्यः=सन्तानेभ्यः, निर्विशेषाणि=अभिन्नानि (सन्तानतुल्यानि), अपत्यनिर्विशेषाणि, सत्त्वानि=जन्तून्, विप्रकरोषि= उत्पीडयसि। हन्तेति विषादे, ते=तव, संरम्भः=दर्पः (आटोपः), वर्द्धत इव। स्थाने खलु= अन्वर्थत्वात् युक्तमेव, ऋषिजनेन=तापसजनेन, सर्वदमनः—सर्वान्=समस्तान् प्राणिनः, दमयति= अभिभवतीति सर्वदमनः, कृतं नामधेयं=नाम, यस्य कृतनामधेयः असि।

(इसके पश्चात् दो तापसियों के साथ पूर्वोक्त व्यापार में संलग्न बालक का प्रवेश।)

बालक—रे सिंहशावक! मुँह फैला (जम्हाई ले), मैं तेरे दाँत गिनूँगा।

पहली तापसी—दुर्विनीत! हमारे बालकों के समान इन जन्तुओं के शिशुओं को क्यों कष्ट देता है? हाय! तेरा गर्व तो बढ़ता ही जाता है। ऋषियों ने तेरा सर्वदमन नाम अन्वर्थक ही रखा है।

(Then enter a boy engaged as described with two female hermits)

Boy—Yawn o child of lion! yawn, I shall count your teeth.

First ascetic woman—Undisciplined one! why do you lease the animals, which are to us not different from our children. Oh! your turbulence is increasing. Rightly, indeed, are you named Sarvadamana (the tamer of all) by the sages.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीया—एसा तुमं केसरिणी लंघइस्सदि, जइ से पुत्तअं णं मुंचिस्सदि। [एषा त्वां केशरिणी लङ्घयिष्यति, यद्यस्याः पुत्रकं न मोक्ष्यसि।]

बालः—(सस्मितम्) अम्हहे! बलिअं क्खु भीदम्हि। [अहो! बलीयः खलु भीतोऽस्मि।] (इत्यधरं दर्शयति)

राजा—(सविस्मयम्)

महतस्तेजसो बीजं बालोऽयं प्रतिभाति मे।
स्फुलिङ्गावस्थया वह्निरेधोऽपेक्ष इव स्थितः॥ १५॥

राजा—किं नु इति वितर्के, अस्मिन्=दृश्यमाने, बाले=बालके, औरसे पुत्रे इव=आत्मजे इव, मे=मम, हृदयम्=चेतः, स्निह्यति=स्नेहं करोति। (विचिन्त्य=विचार्य्य) नूनम्=निश्चयेन, अनपत्यता=सन्तानशून्यता, मां=दुष्यन्तम्, वत्सलयति=वात्सल्ययुक्तं करोति।

द्वितीया तापसी—एषा=पुरःस्थिता, केशरिणी=सिंही, त्वाम्=सर्वदमनम्, लङ्घयिष्यति= आक्रमिष्यति, यदि, अस्याः=सिंह्याः, पुत्रकं=क्षुद्रं पुत्रम्, न मोक्ष्यसि।

बालः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) अहो=इति उपहासपूर्णसम्बोधने, बलीयः खलु=अत्यर्थमेव, भीतोऽस्मि=भयाक्रान्तोऽस्मि (विपरीतलक्षणया सिंहीतो मनागपि न बिभेमीत्यर्थः)। (इति=इत्युक्त्वा, अधरम्=अधरोष्ठं, दर्शयति=प्रसार्य्य तापस्यै दर्शयति)

राजा—(सविस्मयम्=साश्चर्यम्)

अन्वयः—एधोऽपेक्षः स्फुलिङ्गावस्थया वह्निः इव अयं बालः मे महतः तेजसः बीजं प्रतिभाति॥ १५॥

राजा—मेरा हृदय इस बालक पर औरस पुत्र के समान क्यों स्नेह कर रहा है? (विचारकर) निश्चय ही सन्तान का अभाव मुझे वात्सल्य प्रेम से युक्त कर रहा है।

दूसरी तापसी—यदि तू इसके बच्चे को नहीं छोड़ेगा तो यह सिंहनी तुझे धर दबायेगी।

बालक—(मुस्कराकर) अरे! मैं तो बहुत डर गया। (ऐसा कहकर अधरोष्ठ दिखाता हुआ उसे चमकाता है।)

राजा—(विस्मयपूर्वक) ईंधन की अपेक्षा रखने वाले अग्निकण के समान यह बालक भविष्य में बड़ा तेजस्वी होगा—ऐसा मुझे जान पड़ता है॥ १५॥

The king—Why, indeed, does my mind feel affection for this boy as for a heart-begotten son? *(Verily)*, childlessness makes me affectionate.

Second ascetic woman—This lioness will surely attack you, if you do not let off her cub.

Boy—*(With a smile)* Oh! I am indeed greatly frightened! *(Shows his lower lip)*.

The king—*(with surprise)* This boy, the seed of a great lustre, appears to me to be like fire remaining in the state of a spark and awaiting fuel. (15)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथमा—वच्छ! एदं मुंच वालमइंदअं अवरं दे कीलणअं दाइस्सं। [वत्स! मुञ्च बालमृगेन्द्रकम्, अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।]

बालः—कहिं देहि णं। [कस्मिन् देहि एनम्।] (इति हस्तं प्रसारयति)

राजा—(बालस्य हस्तं दृष्ट्वा) कथं चक्रवर्त्तिलक्षणमप्यनेन धार्यते।

प्रलोभ्यवस्तुप्रणयप्रसारितो विभाति जालग्रथिताङ्गुलिः करः।
अलक्ष्यपत्रान्तरमिद्धरागया नवोषसा भिन्नमिवैकपङ्कजम्॥ १६॥

महत इति। एधः=काष्ठम्, अपेक्षत इति एधोऽपेक्षः, स्फुलिङ्गावस्थया=कणमात्ररूपेण स्थितिः, वह्निः=अग्निरिव, अयं=पुरोवर्त्ती, बालः=शिशुः, मे=मम सम्बन्धे, महतः=प्रभूतस्य, तेजसः=प्रभावस्य, वह्निपक्षे=दीप्तेश्च, बीजं=कारणम्, प्रतिभाति=प्रतीतिविषयो भवति। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः, पथ्यावक्त्रं वृत्तम्॥ १५॥

भावार्थः—यथा एधोऽपेक्षोऽग्निकणो महादीप्तेः कारणं भवेत् तथाऽयं शिक्षापेक्षो बालो महाप्रभावस्य कारणं भविष्यतीति मे प्रतिभाति इति भावः॥ १५॥

प्रथमा—वत्स=पुत्र! एतं=तव करपाशस्थितम्, बालमृगेन्द्रकम्=सिंहशावकम्, मुञ्च=त्यज। ते=तुभ्यम्, अपरम्=अन्यम्, क्रीडनकम्=क्रीडासाधनम्, दास्यामि=प्रदास्यामि।

बालः—कस्मिन्=क्रीडनकं कस्मिन् स्थाने अस्ति इति भावः, एनम्=क्रीडनकम्, देहि। (इति=इत्युक्त्वा, हस्तं=करम्, प्रसारयति=क्रीडनक-आदानार्थं करं प्रसारयति।)

राजा—(बालस्य=सर्वदमनस्य, हस्तं=करं, दृष्ट्वा=अवलोक्य) कथमिति विस्मये, चक्रवर्त्तिलक्षणम्=सार्वभौमचिह्नम्, अपि, अनेन=बालेन, धार्य्यते।

अन्वयः—प्रलोभ्यवस्तुप्रणयप्रसारितः जालग्रथिताङ्गुलिः करः इद्धरागया नवोषसा भिन्नम् अलक्ष्यपत्रान्तरम् एकं पङ्कजम् इव विभाति॥ १६॥

प्रलोभ्येति। प्रलोभ्यं=प्रलोभकारकं, यद् वस्तु=क्रीडनकादिकं, तत्र यः प्रणयः=प्रीतिः प्रार्थना वा, तेन प्रसारितः=विस्तृतः, प्रलोभ्यवस्तुप्रणयप्रसारितः, जालवत्=गवाक्षवत्, ग्रथिताः=

पहली तापसी—पुत्र! इस सिंहशावक को छोड़ दो, मैं तुम्हें और खिलौना दूँगी।

बालक—कहाँ है खिलौना? लाओ दो। (हाथ फैलाता है।)

राजा—(बालक का हाथ देखकर) क्या? इसके हाथ में तो चक्रवर्ती सम्राट् के लक्षण हैं।

पूर्व उषा के आगमन के साथ-साथ कुछ-कुछ अन्धकार के कारण जिसके दल अलग-अलग परिलक्षित नहीं होते तथा देदीप्यमान रक्तिम प्रभात द्वारा विकसित कमल जैसे

First ascetic woman—Child! release this cub. I shall give you another toy.

Boy—Where? give that. *(Extends his hand)*

The king—How! the sign of a universal monarch (emperor) is also borne by him. For his—

Hand, extended to beg for the object which is desired by him and having its fingers connected as in a web, shines like a single

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीया—सुव्वदे! मुंच णं। ण एसो सक्को वाओमेत्तेण समइदुं ता गच्छ ममकेरए उडए संकोचणस्स इसिकुमारस्स वण्णचित्तिदो मट्टिआमोरओ चिट्ठदि, तं से उवहर। [सुव्रते! मुञ्चैनम्। नैष शक्यो वाङ्मात्रेण शमयितुम्। तद् गच्छ, मदीये उटजे सङ्कोचनस्य ऋषिकुमारस्य वर्णचित्रितो मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति, तमस्योपहर।]

प्रथमा—तह। [तथा।] (इति निष्क्रान्ता)

परस्परं निरन्तरसंश्लिष्टाः, अङ्गुलयो यस्मिन् सः जालग्रथिताङ्गुलिः, करः=हस्तः, इद्धः=प्रकाशितः, रागः=लौहित्यं, यस्याः सा तया इद्धरागया, नवोषसा=उषःप्रारम्भेण, भिन्नं=स्फुटितीकर्तुमारब्धम् (विघटितं), अलक्ष्याणि=तदानीमप्यालोकातिशयाभावादननुभवनीयानि, पत्राणां=दलानाम्, अन्तराणि=परस्परावकाशदेशाः, यस्य तत् अलक्ष्यपत्रान्तरम्, एकम्=अद्वितीयम्, पङ्कजम्=कमलम्, इव, विभाति=शोभते। अत्र वंशस्थविलं वृत्तम्॥ १६॥

भावार्थः—यथा पूर्वसन्ध्यायां प्रथममुपस्थितायामेवालोकातिशयाभावेनेपद्विकचभावमाप्नुवतोऽपि कस्यचित् कमलस्य कतिपयदलमात्रं विकसितं परिलक्ष्यते न तु दलान्तर्देशः, तथा क्रीडनकादानाय करप्रसारणकाले कतिपयाङ्गुलिमात्रं परिलक्ष्यते न त्वङ्गुलिसन्धिभाग इति भावः॥ १६॥

द्वितीया—सुव्रते! सख्याः सम्बोधनं, एनम्=बालकम्, मुञ्च=त्यज। एषः=बालकः, वाङ्मात्रेण=केवलवचनेन, शमयितुं=निवर्त्तयितुम्, न शक्यः। तद्=तस्मात्, गच्छ, मदीये=मामकीने, उटजे=पर्णशालायाम्, सङ्कोचनस्य=तन्नाम्नः, ऋषिकुमारस्य=तापसपुत्रस्य, वर्णचित्रितः—वर्णैः=रक्तपीतादिभिः, चित्रितः=अनुरञ्जितः, चित्रीकृतः, मृत्तिकामयूरः=मृत्तिकानिर्मितमयूरः, तिष्ठति=विद्यते। तम्=मयूरं, अस्य=बलकस्य समीपे, उपहर=आनय।

प्रथमा—तथा=यथा त्वं वदसि तथैव विधास्यामि (उटजान्मृत्तिकामयूरमेव आनयामि)। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ता=निर्गता।)

सुशोभित होता है उसी प्रकार गवाक्ष की भाँति परस्पर संश्लिष्ट अँगुलियों से युक्त ललचाने वाली एक वस्तु (खिलौने) के लिए फैला हुआ इस (बालक) का हाथ बड़ा सुन्दर लगता है॥ १६॥

दूसरी—सुव्रते! इसे छोड़ दे। इसे केवल बातों से नहीं बहलाया जा सकता। अतः जा, मेरी कुटिया में ऋषिकुमार सङ्कोचन का रङ्गा हुआ मिट्टी का मोर है, उसे इसके पास ले आओ।

पहली—जैसा तुम कहती हो। (यह कहकर प्रस्थान)

---

lotus opened by the early dawn, that has enhanced its redness, and having the interestics between its petals imperceptible. (16)

Second—Suvrate! it is not possible to stop him by mere words. So, you go. In my cottage there is the clay peacock, painted with colours, belonging to the hermit boy, Saṅkocan, present that to him.

First—Right. ***(Exits)***

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बालः—दाव इमिणा ज्जेव कीलिस्सं। [तावदनेनैव क्रीडिष्यामि।]

तापसी—(विलोक्य हसन्ती) ण मुंच णं। [ननु मुञ्चैनम्।]

राजा—स्पृहयामि खलु दुर्ललितायास्मै। (निःश्वस्य)

आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासैरव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन् ।
अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान् वहन्तो धन्यास्तदङ्गरजसा कलुषीभवन्ति॥ १७॥

बालः—तावत्=मयूरानयनपर्यन्तम्, अनेनैव=सिंहशावकेनैव सह, क्रीडिष्यामि।

तापसी—(विलोक्य=दृष्ट्वा, हसन्ती=बालस्वभावावलोकनेन कौतुकोदयात् ईषद्धासं कुर्वन्तीत्यर्थः) ननु=इति अनुनये, एनं=मृगेन्द्रशिशुं, मुञ्च=त्यज।

राजा—दुर्ललिताय=दुर्दान्ताय, अस्मै=बालकाय, स्पृहयामि=आदातुमिच्छामि, खल्विति निश्चयेन। (निःश्वस्य=दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य)।

अन्वयः—धन्याः अनिमित्तहासैः आलक्ष्यदन्तमुकुलान् अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन् अङ्काश्रयप्रणयिनः तनयान् वहन्तः तदङ्गरजसा कलुषीभवन्ति ते धन्याः॥ १७॥

आलक्ष्येति। धन्याः=सुकृतिनो जनाः, अनिमित्ताः=अकारणाः, ये हासाः, तैरनिमित्तहासैः=कारणं विना हास्यकरणैः, आलक्ष्याणि=ईषत्प्रेक्षणीयानि, दन्तमुकुलानि=दन्ताङ्कुराः (नवोद्‌गता दन्ताः), येषां तान् आलक्ष्यदन्तमुकुलान्, अव्यक्तैः=अपरिस्फुटैः, वर्णैः=अक्षरैः, रमणीया=शिशुमुखे विकलीकृत्वोच्चरितत्वेन श्रुतिसुखवहत्वात् मनोहारिणी, वचसां=वाक्यानाम्, प्रवृत्तिः=आविर्भावः, येषां तान् अव्यक्तवर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन्, तथा अङ्के=क्रोडे, यः आश्रयः=निवासः, तस्मिन् यः प्रणयः, तद्वतः अङ्काश्रयप्रणयिनः, तनयान्=पुत्रान्, वहन्तः=अङ्के धारयन्तः सन्तः, तेषां=पुत्राणाम्, अङ्गरजसा=गात्रधूल्या, (ये) कलुषीभवन्ति=मलिनीभवन्ति, ते धन्याः=

बालक—तब तक इसी से खेलूँगा।

तापसी—(देखकर हँसती हुई) अरे! इसे छोड़ दे।

राजा—इस दुर्ललित बालक को प्यार करने की इच्छा मन में जाग रही है। (ठण्डी साँस भरकर)

अकारण हँसने से जिसके नये-नये दाँत कभी-कभी दिखायी दे जाते हैं, तोतली वाणी से उच्चरित जिसके शब्द बहुत मधुर लगते हैं और जो गोद में आने के लिए ललक रहा हो—ऐसे पुत्र को गोद में लेने से भाग्यवानों के अङ्ग ही उस बालक के अङ्ग की धूलि से मलिन होते हैं। ऐसे लोग वस्तुतः धन्य हैं॥ १७॥

Boy—I shall play with this in the meanwhile.

Woman ascetic—(*Laughs looking at the boy*) Child! let it free.

The king—I really long for this wayward boy.

Blessed are they who, carrying their sons, who solicit shelter in their lap, whose bud-like teeth are slightly visible by causeless innocent smiles and whose attempts at speech are charming with their indistinct words, are soiled by the dust of their bodies. (17)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तापसी—(साङ्गुलीतर्जनम्) भो! ण मं गणेसि। (पार्श्वमवलोक्य) को एत्थ इसिकुमारआणं। (राजानं दृष्ट्वा) भद्दमुह! एहि दाव, मोआवेहि इमिणा दुम्मोक्खहत्थग्गहेण डिंभएण बाधीअमाणं बालमइंदअं। [भोः! न मां गणयसि। कोऽत्र ऋषिकुमाराणाम्? भद्रमुख! एहि तावत्, मोचय अनेन दुर्मोक्षहस्तग्रहेण डिम्भकेन बाध्यमानं बालमृगेन्द्रकम्।]

राजा—तथा। (इत्युपगम्य सस्मितम्) अयि भो महर्षिपुत्रक!

एवमाश्रमविरुद्धवृत्तिना संयमी किमिति जन्मदस्त्वया।
सत्त्वसंश्रयगुणोऽपि दूष्यते कृष्णसर्पशिशुनेव चन्दनः॥ १८॥

भाग्यवन्तः। न पुनर्मादृशा यः परपुत्राय स्पृहयति। अत्र अप्रस्तुतप्रशंसा, लुप्तोपमा, स्वभावोक्तिः परिसंख्यादयोऽलङ्काराः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ १७॥

भावार्थः—ये सुकृतिनो जनाः अकारणहास्यकरणैः, आलक्ष्यदन्तमुकुलान्, अव्यक्त-वर्णरमणीयवचःप्रवृत्तीन्, अङ्काश्रयप्रणयिनः तनयान् क्रोडे धारयन्तः सन्तः तदङ्गरजसा मलिनी-भवन्ति त एव भाग्यवन्त न पुनर्मादृशा अपुत्रकाः जनाः इति भावः॥ १७॥

तापसी—(साङ्गुलीतर्जनम्=अङ्गुल्या तर्जनमभिनीय) भोः! न=नहि, मां=तापसीम्, गणयसि=मन्यसे। (पार्श्वमवलोक्य=पार्श्वभागे दृष्टिपातं कृत्वा) ऋषिकुमाराणां=मुनिबालकानां, मध्ये कोऽत्र वर्त्तते? (राजानं=दुष्यन्तं, दृष्ट्वा=अवलोक्य) भद्रमुख! (मान्यं प्रति सम्बोधनम्) दुर्मोक्षः=दुःखेन मोचनीयः, हस्तग्रहः=करपाशः, यस्य तेन दुर्मोक्षहस्तग्रहेण, अनेन डिम्भकेन=शिशुना, बाध्यमानम्=आकर्षणापकर्षणादिना बहुधा पीड्यमानम्, बालमृगेन्द्रकम्=सिंहशावकम्, मोचय=अस्य हस्तात् परित्रायस्व।

राजा—तथा=मोचयामीत्यर्थः। (इत्युपगम्य=एवमुक्त्वा अन्तिकं प्राप्य, सस्मितम्=सेषद्धासम्) अयीत्यनुनये, भो महर्षिपुत्रक! (सौम्यताभिप्रायेण सम्बुद्धिः)

तापसी—(अंगुली से धमकाती हुई) अरे! मेरी बात नहीं मानता? (पास में देखकर) ऋषिकुमारों में से यहाँ कौन (उपस्थित) है? (राजा को देखकर) भद्रमुख! आप जरा इधर आइए और जिसके हाथों से छुड़ाया जाना सर्वथा कठिन है ऐसे इस बालक के हाथ से सताये जाते हुए इस सिंहशावक को छुड़ाइए।

राजा—अच्छा (पास आकर मुस्कराते हुए) ओ महर्षिपुत्र!

काले साँप का बच्चा जैसे चन्दन वृक्ष को दूषित कर देता है उसी प्रकार तुम भी

Ascetic woman—How! he cares me not. *(Looking by side)* Who is here of the hermit-boys. *(Seeing the king)* Gentle sir! just come. Liberate this little lordly lion (cub), which is being tormented in boyish play by this boy, the grasp of whose hand is difficult to unloose.

The king—*(Approaching with a smile)* Oh! you son of a great sage!

Why is it that from your very birth the forbearance, though pleasant for the resort of animals, is thus violated by you, whose

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तापसी—भद्दमुह! ण क्खु एसो इसिकुमारओ। [भद्रमुख! न खल्वेष ऋषिकुमारकः।]

राजा—आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति; स्थानप्रत्ययात्तु वयमेवं तर्किणः। (यथाभ्यर्थितमनुतिष्ठन् बालकस्य स्पर्शमुपलभ्य स्वगतम्)

अन्वयः—एवम् आश्रमविरुद्धवृत्तिना त्वया सत्त्वसंश्रयः गुणः अपि जन्मदः संयमी किं कृष्णसर्पशिशुना चन्दनः इव दूष्यते॥ १८॥

एवमिति। एवम्=अनेन प्रकारेण, आश्रमविरुद्धा=तपोवनविरोधिनी, वृत्तिः यस्य तेन आश्रमविरुद्धवृत्तिना=परपीडनरूप-आश्रमविरुद्धकर्मणा, त्वया=बालकेन, सत्त्वसंश्रयः=आत्मावलम्बनमेव गुणो यस्य सः, चन्दनपक्षे—सत्त्वगुणेन संश्रयः= ललाटादौ तिलकरूपेण धारणमेव गुणो यस्य सः सत्त्वसंश्रयगुणोऽपि, यद्वा सत्त्वसंश्रयः=आत्मनिष्ठः, गुणः=विद्याविनयसौजन्यादिः, चन्दनपक्षे—शैत्यसौगन्ध्यादिर्यस्य सः सत्त्वसंश्रयगुणोऽपि (स्वयं गुणवानपि), जन्मदः=जनयिता, संयमी=मुनिः, किम्=कथम्, कृष्णसर्पस्य=कृष्णवर्ण-उरगस्य, शिशुना=अर्भकेण, चन्दनः=तदाख्यो वृक्ष इव, दुष्यते=निरपराधप्राणिपीडनेन कलुषीक्रियते। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। रथोद्धता नाम वृत्तम्॥ १८॥

भावार्थः—यथा कृष्णसर्पशिशुना स्वगरलैश्चन्दनवृक्षो दूष्यते तथैव आश्रमविरुद्धाचरणेन त्वयापि सत्त्वसंश्रयगुणः संयमी जनकः दूष्यते। इदं ते महदनुचितम्, तस्मात् बालमृगेन्द्रं मुञ्चेति भावः॥ १८॥

तापसी—भद्रमुख!=सौम्य! खल्विति निश्चयेन, एषः=पुरोवर्ती, ऋषिकुमारकः=तापसपुत्रः, न=नास्ति।

राजा—आकारसदृशम्=आकृत्यनुरूपम्, अस्य=शिशोः, चेष्टितं=कर्म्म, कथयति= 'नायमृषिकुमारः' इति स्पष्टं विज्ञापयति, तु=किन्तु, स्थानस्य-तपोवनस्य, प्रत्ययात्=विश्वासात्,

---

आश्रम के विरुद्ध आचरण करके अपने सत्त्वगुणसम्पन्न, जितेन्द्रिय जन्मदाता को क्यों दूषित कर रहे हो?॥ १८॥

तापसी—सौम्य! यह ऋषिकुमार नहीं है।

राजा—आकृति के अनुरूप इसकी चेष्टा ही कह रही है कि यह ऋषिकुमार नहीं है, फिर इस स्थान के विश्वास से मैंने ऐसा अनुमान लगाया था। (तापसी की प्रार्थनानुसार सिंहशावक को छुड़ाकर, बालक का स्पर्श कर मन में)

---

behaviour is opposed to the ways of the hermitage, like a sandal tree by a young black serpent? (18)

Ascetic woman—Gentle sir! indeed he is not the son of a sage.

The king—His action itself, which is conformable to his appearance, bespeaks it. We, however, guessed in this way by reason of the place (that he is in). *(On feeling the touch of the boy while doing as requested to himself)*

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण स्पृष्टस्य गात्रे सुखिता ममैवम्।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद् यस्यायमङ्गात् कृतिनः प्रसूतः॥ १९॥

तापसी—(उभौ विलोक्य) अच्चरीअं अच्चरीअं। [आश्चर्यमाश्चर्यम्।]

राजा—आर्ये! किमिव?

तापसी—इमस्स बालअस्स असंबद्धे वि भद्दमुहे संवादिणी अकिदित्ति विह्मिदह्मि। अविं अ वामसीलो वि भविअ अवरिचिदस्स वि दे वअणेण पइदित्थो संवुत्तो। [अस्य बालकस्य असम्बद्धेऽपिं भद्रमुखे संवादिनी आकृतिरिव विस्मितास्मि। अपि च वामशीलोऽपि भूत्वा अपरिचितस्यापि ते वचनेन प्रकृतिस्थः संवृत्तः।]

स्थानप्रत्ययात् (तपस्विनां स्थानमिदमिति विश्वासात्), वयम्, एवं तर्किणः=ऋषिकुमारतया अनुमानिनः। अत्र तु ऋषिकुमारेणैव भवितव्यमिति अनुमानिनः इति भावः।

(यथाभ्यर्थितम्=यथाप्रार्थितम्, अनुतिष्ठन्=कुर्वन्, बालकस्य, स्पर्शम्=गात्रसम्पर्कम्, उपलभ्य=प्राप्य, स्वगतम्)

अन्वयः—कस्यापि कुलाङ्कुरेण अनेन गात्रे स्पृष्टस्य मम एवं सुखिता किन्तु अयं यस्य कृतिनः अङ्गात् प्रसूतः तस्य चेतसि कां निर्वृतिं कुर्यात्॥ १९॥

अनेनेति। कस्यापि=अनिर्दिष्टजनस्य, कुलाङ्कुरेण=वंशोऽङ्कुररूपेण, अनेन=बालकेन, गात्रे=शरीरे (अङ्गे), स्पृष्टस्य=अलिङ्गनं कुर्वतः, मम, एवम्=इत्थम्, सुखिता=सुखित्वं भवति। किन्तु अयं=बालः, यस्य कृतिनः=सुकृतिनः (महाभागस्य), अङ्गात्=शरीरात्, प्रसूतः=जातः, तस्य=कृतिनः, चेतसि=हृदि, कां निर्वृतिं=कीदृशं सुखम्, कुर्यात् इति निरूपयितुं न शक्यते। अत्र अर्थापत्तिरलङ्कारः। उपजातिर्वृत्तम्॥ १९॥

भावार्थः—यस्य कस्यापि वंशोऽङ्कुररूपेण अनेन बालकेन स्पर्शमात्रेणैव मम चेतसि सुखमुत्पादितं (उत अहमित्थं सुखमनुभवामि) तस्य चेतसि कीदृशं सुखं भविष्यति योऽस्य जनकः। अहं तस्य सुखादि अनुभवं निरूपयितुं न शक्नोमि इति भावः॥ १९॥

तापसी—(उभौ=दुष्यन्तं बालकञ्च, विलोक्य=दृष्ट्वा) आश्चर्यम् आश्चर्यम्=अतीव विस्मयजनकं सञ्जातम्।

राजा—आर्ये!=मान्ये! किमिव=किमाश्चर्यजनकं संवृत्तम्?

किसी के वंश के अङ्कुरस्वरूप इस बालक के शरीर का स्पर्श कर जब मुझे इतना सुख मिला है तब भला जिस भाग्यशाली के शरीर से यह उत्पन्न हुआ होगा उसे कितना सुख प्राप्त होता होगा?॥ १९॥

तापसी—(दोनों को देखकर) आश्चर्य! आश्चर्य!!

राजा—आर्ये! आश्चर्य कैसा?

Such is the delight in my limbs as I am touched by this scion (a descendant) of the family of some one; what bliss may be create (to beget) in the heart of that lucky person from whose body he has sprung? (19)

Ascetic woman—(Looking both) Wonder! wonder!

King—Noble lady! what possibly?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(बालकमुपलालयन्) आर्ये! न चेन्मुनिकुमारोऽयम्, तत् कोऽस्य व्यपदेशः?

तापसी—पोरवो त्ति। [पौरव इति।]

राजा—(स्वगतम्) कथमेकान्ववायोऽयमस्माकम्। अतः खलु मदनुकारिणमेनमत्रभवती मन्यते। (प्रकाशम्) अस्त्येतत् पौरवाणामन्त्यं कुलव्रतम्—

तापसी—असम्बद्धेऽपि=सर्वथा सम्पर्कशून्येऽपि, भद्रमुखे=सज्जनश्रेष्ठे त्वयि, अस्य बालकस्य, आकृतिः=आकारः, संवादिनी=सुसदृशी, इति=हेतोः, विस्मितास्मि=विस्मयभावापन्नास्मि। अपि च=अन्यच्च, वामशीलः=आश्रमविरुद्धाचारोऽपि, भूत्वा, अपरिचितस्य=अज्ञातस्यापि, ते=तव, वचनेन=कथनेन, प्रकृतिस्थः=शान्तः, संवृत्तः=सञ्जातः।

राजा—(बालकम् उपलालयन्=हस्तेन परामृशन्) चेत्=यदि, अयम्=दृश्यमानबालः, मुनिकुमारः=मुनिबालकः, न=नास्ति, तत्=तदा, अस्य=बालकस्य, व्यपदिश्यते=विख्ययते अनेनेति व्यपदेशः=कुलम्, कोऽस्ति?

तापसी—पौरव इति व्यपदेशः।

राजा—(स्वगतम्=आत्मगतम्) कथम्=किम्, अयम्=बालः, अस्माकम्, एकान्ववायः=अभिन्नवंशः। अतः खलु=एकान्ववायत्वेनैव हेतुना, तत्रभवती=मान्या तपस्विनी, एनं=बालकम्, मदनुकारिणम्=मत्सदृशाकृतिम्, मन्यते=अनुभवति। (प्रकाशम्=स्पष्टम्) एतत्=वक्ष्यमाणम्, पौरवाणाम्=पुरुवंशोद्भवानाम्, अन्त्यम्=चरमम्, कुलव्रतम्=कौलिको नियमः, अस्ति।

तापसी—यद्यपि आपका और इसका कोई सम्बन्ध नहीं है फिर भी आप दोनों के आकार में समानता देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इसके अतिरिक्त विपरीत आचरण वाला होते हुए भी आप जैसे अपरिचित के कहने से यह शान्त हो गया (यह भी आश्चर्य की बात है)।

राजा—(बालक को प्यार करते हुए) आर्ये! यदि यह ऋषिकुमार नहीं है तो फिर किस वंश का है?

तापसी—पौरव वंश का?

राजा—(स्वगत) तो क्या यह हमारे ही वंश का है? इसीलिए यह तापसी इसे हमारे अनुरूप मान रही है। (प्रकट) किन्तु पुरुवंशियों का तो यह (तपोवन में निवास) अन्तिम कुलव्रत है। क्योंकि—

Ascetic woman—That your form corresponds with the appearance of this boy. I am surprised that he has become calm or has proved not obstinate to you though unacquinted with him.

The king—*(Fondling the child)* If he has not the son of a sage, then what is his race or line?

Ascetic woman—Purū's race.

The king—*(To himself)* How! This is a colineal of me. Hence indeed her ladyship thinks him as similar to me. *(Aloud)* But there exists this final vow of the descendents of Purū.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भवनेषु सुधासितेषु पूर्वं क्षितिरक्षार्थमुशन्ति ये निवासम्।
नियतैकयतिव्रतानि पश्चात् तरुमूलानि गृहीभवन्ति तेषाम्॥ २०॥

कथं पुनरात्मगत्या मानुषाणामेष विषयः ?

तापसी—जधा भद्दमुहो भणादि। किंतु अच्छरासंबंधेण उण इमस्स बालअस्स जणणी इधज्जेव देवगुरुणो तवोवणे पसूदा। [यथा भद्रमुखो भणति। किन्तु अप्सरःसम्बन्धेन पुनरस्य बालकस्य जननी इहैव देवगुरोस्तपोवने प्रसूता।]

अन्वयः—ये पूर्वं क्षितिरक्षार्थं सुधासितेषु भवनेषु निवासम् उशन्ति, तेषां पश्चात् नियतैकयतिव्रतानि तरुमूलानि गृहीभवन्ति॥ २०॥

भवनेष्विति। ये=पौरवाः, पूर्वं=यौवने वयसि, क्षितिरक्षार्थम्=भुवः परिपालनार्थम्, सुधाभिः=भित्तिलेपनसाधनभूतद्रव्यविशेषैः, सितेषु=धवलेषु, सुधासितेषु, भवनेषु=प्रासादेषु, निवासम्=अवस्थितिम्, उशन्ति=कामयन्ते। तेषां=पौरवाणामेव, पश्चात्=वृद्धावस्थायाम्, नियतम्=अवश्यकर्तव्यतया विहितं, एकं=केवलं, यतिव्रतं येषु तानि नियतैकयतिव्रतानि, तरुमूलानि=तपोवनवृक्षतलानि, गृहीभवन्ति=गृहाणि भवन्ति। अत्र परिणामालङ्कारः। औपच्छन्दसिकं वृत्तम्। अत्र केचित् व्यस्तरूपकमपि मन्यन्ते॥ २०॥

भावार्थः—ये पौरवाः पूर्वं प्रथमे वयसि क्षितिरक्षार्थं धवलहर्म्येषु निवसन्ति त एव वार्धक्ये तरुमूलमाश्रयन्ति, परन्तु अस्त्येतत् पौरवाणामन्त्यं कुलव्रतम्, ततः कथमेकान्ववायोऽयमस्माकमिति भावः॥ २०॥

कथमिति आशङ्कायाम्, मानुषाणाम्=मर्त्यानाम्, एषः=स्वर्गीयदेशः (मारीचाश्रमः), कथं पुनः, आत्मगत्या=केवलमानुषगत्या, विषयः=आश्रययोग्यः, स्यादिति। (यतः मनुष्याणां स्वभावत एवायमगम्य इति कथं वात्र पौरवाणां पुत्रसम्भव इति शङ्काशयः।)

तापसी—भद्रमुखः=भवान्, यथा भणति=कथयति, तत्तथेति शेषः। किन्तु अप्सरः-

---

वे अपने यौवनकाल में पृथ्वी-पालनार्थ चूने से पुते हुए धवल भवनों में निवास की इच्छा करते हैं और वार्धक्य में यतियों के व्रत को अपना कर वृक्षों के मूल भाग को ही अपना घर बनाते हैं॥ २०॥

परन्तु यह स्थान मनुष्य की अपनी गति से तो पहुँच के बाहर ही है अर्थात् मानव अपनी गति से तो यहाँ पहुँचने से रहा।

तापसी—जैसा आप कह रहे हैं (वह ठीक है) परन्तु अप्सरा से सम्बन्ध रखने के कारण इस बालक की माँ ने इसे यहीं देवगुरु मरीचि के आश्रम में जन्म दिया है।

To them, who in early life desire to live in residence in white washed palaces for the protection of the earth, the feet of trees, where the sole-vow of asceticism is rigidly observed, become afterwards homes. (20)

But this is no region for the mortals (to come to) by their own motion.

Ascetic woman—As the gentle one says. Owing to her

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(स्वगतम्) हन्त! द्वितीयमिदमाशाजननम्। (प्रकाशम्) अथ सा तत्रभवती किमाख्यस्य राजर्षेः पत्नी।

तापसी—को तस्स धम्मदारपरिच्चाइणो णामं कीत्तइस्सदि। [कस्तस्य धर्म्मदार-परित्यागिनो नाम कीर्त्तयिष्यति।]

राजा—(स्वगतम्) कथमियं कथा मामेव लक्ष्यीकरोति। यावदस्य शिशोर्मातरं नामतः पृच्छेयम्। (विचिन्त्य) अथवा अनार्यः खलु परदारपृच्छाव्यापारः।

तापसी—(प्रविश्य मृन्मयूरहस्ता) सव्वदमण! पेक्ख! सउंतलावण्णं। [सर्वदमन! प्रेक्षस्व शकुन्तलावण्यम्।]

सम्बन्धेन=अप्सरःसहकारेण, पुनरस्य बालकस्य=अस्य दृश्यमानबालकस्य, जननी=माता, इहैव=अत्रैव, देवगुरोः=इन्द्रपितुः, पिताकण्वस्य, तपोवने=आश्रमे, प्रसूता=प्रसुषुवे।

राजा—(स्वगतम्=आत्मगतम्) हन्त=इति हर्षे, इदम्=अप्सरःसम्बन्धकथनम्, द्वितीयम्=अपरम्, आशाजननम्=एतत् शिशुगतपुत्रत्वविषयकमनोरथसञ्चारकम् (शकुन्तलाया मेनकापत्यत्वादिति भावः)। (प्रकाशम्=प्रगटम्) अथ इति प्रश्ने, सा=अस्य जनयित्री, किमाख्यस्य=किन्नामधेयस्य, राजर्षेः=ऋषिकल्पस्य राज्ञः, पत्नी=भार्या?

तापसी—कः=जनः, धर्मदारपरित्यागिनः=अधर्मशीलस्य, धर्मपत्नीपरित्यागिनः पापिनः, तस्यः=राज्ञः, नाम, कीर्तयिष्यति=ग्रहीष्यति।

राजा—(स्वगतम्) कथम्=किम्, इयं कथा=तापस्युक्तप्रकारा कथा, मामेव=दुष्यन्तमेव, लक्ष्यीकरोति=विषयीकरोति। यावदिति वाक्यालङ्कारे, अस्य शिशोः=बालकस्य, मातरं=जननीम्, नामतः=नाम्ना, पृच्छेयम्=ज्ञातुमिच्छेयम्। (विचिन्त्य=विचार्य) अथवा, परदारपृच्छाव्यापारः= परदारविषयकप्रश्नप्रसङ्गः, अनार्यः=अनुचितः, खल्विति निश्चयेन।

राजा—(स्वगत) अरे! यह तो दूसरी आशाजनक बात सामने आई। (प्रकट) हाँ, तो वे मान्या किस राजर्षि की पत्नी हैं?

तापसी—अपनी धर्मपत्नी का परित्याग करने वाले का नाम भला कौन लेगा?

राजा—(स्वगत) क्या यह बात मुझ को ही लक्ष्य कर रही है? तो क्या इस बालक की माता का ही नाम पूछूँ? (सोचकर) नहीं परायी स्त्री का नाम पूछना उचित नहीं है।

..ationship with an apsarā (nimph), his mother was delivered here i.. he penance-grove of the father of the Gods.

The king—(To himself) Oh! here is the second creator of hope. *(Aloud)* well! of what royal sage is her ladyship the wife.

Ascetic woman—Who will think of mentioning the name of that deserter of his lawful wife?

The king—(To himself) This story surely points to myself alone. If I question about this child's mother concerning her name. *(Thinking)* It is improper to enquire about another's wife.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बालः—(सदृष्टिक्षेपम्) कहिं सा मे अंबा। [कस्मिन् सा मे अम्बा।]

(उभे प्रहसतः।)

प्रथमा—णामसारिस्सेण उबच्छंदिदो मादिवच्छलो। [नामसादृश्येन उपच्छन्दितो मातृवत्सलः।]

द्वितीया—इमस्स मोरस्स रमणीअदं पेक्खेत्ति भणिदोसि। [अस्य मयूरस्य रमणीयतां प्रेक्षस्वेति भणितोऽसि।]

राजा—(स्वगतम्) किं शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या। अथवा सन्ति पुनर्नामधेय-सादृश्यानि, अपि नाम मृगतृष्णिकेव नाममात्रप्रस्तावो मे विषादाय कल्पते।

तापसी—(प्रविश्य=प्रवेशं विधाय, मृन्मयूरहस्ता=हस्ते मृन्मयमयूरं गृहीत्वा) सर्वदमन! शकुन्तस्य=पक्षिणः, लावण्यम्=कान्तिविशेषणम्, प्रेक्षस्व=अवलोकय (शकुन्तलायाः=तदाख्यायाः, स्वमातुः वर्णम्=रूपम्)।

बालः—(सदृष्टिक्षेपम्=इतस्ततो दृष्टिं सञ्चाल्य) कस्मिन् स्थाने, सा=शकुन्तलाभिधाना, मे=मम, अम्बा=माता।

(उभे=तापस्यौ, प्रहसतः=उच्चैर्हसतः।)

प्रथमा—नामसादृश्येन=शकुन्तलेति वर्णसाम्यात्, उपच्छन्दितः=मातृनिमित्तं प्रलोभितः, मातृवत्सलः=मातरि स्नेहवान् अयं बालः।

द्वितीया—अस्य मयूरस्य=मृन्मयूरस्य, रमणीयताम्=सौन्दर्यम्, प्रेक्षस्व=अवलोकय, इति भणितोऽसि=एवमुक्तोऽसि, न तु शकुन्तलावर्णम्।

राजा—(स्वगतम्=अस्पष्टम्) अस्य=बालकस्य, मातुः=जनन्याः, शकुन्तलेति

तापसी—(हाथ में मिट्टी का मोर लिये हुए प्रवेश) सर्वदमन! देख इस पक्षी का रङ्ग।

बालक—(इधर-उधर देखकर) कहाँ है वह मेरी माँ?

(दोनों तापसियाँ हँसती हैं।)

प्रथम तापसी—हमने नाम के सादृश्य से ही इस मातृवत्सल बच्चे को लुभा लिया।

दूसरी तापसी—हमने 'इस मोर की सुन्दरता देखो' यह कहा था।

राजा—(स्वगत) क्या इसकी माता का नाम शकुन्तला है? अथवा नामों में प्रायः

Ascetic woman—(Entering with a clay-peacock in hand) Sarvadaman! Look at the beauty of this bird.

Boy—(Casting a glance) Well! where is my mother?

(Both women laugh)

First ascetic woman—Fond of his mother, he is deceived by the resemblance (of the syllables) with the name.

Second ascetic woman—Child! look at the loveliness of this clay peacock—thus you were addressed.

The king—(To himself) What! is Śakuntalā his mother's

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाल:—अंतिए! रोअदि मे चडुलके एसे मौले। [अन्तिके! रोचते मे चटुलक एष मयूरः।] (इति क्रीडनकमादत्ते)

प्रथमा—(विलोक्य सावेगम्) अम्मो! रक्खाकांडओ से मणिबंधे ण दीसदि। [अहो! रक्षाकाण्डकः अस्य मणिबन्धे न दृश्यते।]

राजा—आर्ये! अलमावेगेन। नन्वयमस्य सिंहशावकस्य विमर्दात् परिभ्रष्टः। (इत्यादातुमिच्छति)

आख्या=नाम किम्? अथवा सन्ति पुनर्नामधेयसादृश्यानि=अन्यस्या अपि एवं नाम सम्भवतीति भावः। अपीति शङ्कायाम्, नामेति सम्भावनायाम्, मृगतृष्णिकेव=सूर्यमरीचिषु उदकबुद्धिरिव, नाममात्रप्रस्तावः=केवलं शकुन्तलेति नाममात्रोल्लेखः, मे=मम, विषादाय=खेदाय, कल्पते=भवति। (यथा मृगतृष्णिकायां पिपासोर्जलभ्रान्तिरेव भवति न तु तत्र वस्तुतो जलं तथात्र नाममात्रेणैव सादृश्यं न तु वस्तुतः शकुन्तलेत्यतो मे विषाद एव वर्द्धते न पुनः शकुन्तलाप्राप्तिसम्भावनेति सरलार्थः।)

बाल:—अन्तिके=हे ज्येष्ठभगिनि! एषः चटुलः=चञ्चलः, मयूरः, मे=मह्यम्, रोचते= रुचिकरः प्रतीयते। (इति=इत्युक्त्वा, क्रीडनकम्=मृत्तिकामयूरम्, आदत्ते=गृह्णाति।)

प्रथमा—(विलोक्य=दृष्ट्वा, सावेगम्=ससम्भ्रमम्) अहो इति विस्मये, अस्य=बालकस्य, मणिबन्धे=प्रकोष्ठे, रक्षाकाण्डकः=रक्षार्थमाबद्धो वलयाकारसमूललतौषधविशेषः, न दृश्यते= नास्माकं दृष्टिपथमायाति (नावलोक्यते)।

राजा—अलमिति निषेधे, आवेगेन=सम्भ्रमेण, नन्वित्यवधारणे, अयं=भूतले दृश्यमानः रक्षाकाण्डकः, अस्य सिंहशावकस्य=सिंहशिशोः, विमर्दात्=एतद्बालककर्तृकसङ्घर्षणात्,

---

समानता हो जाती है। मृगमरीचिका की भाँति केवल शकुन्तला इस नाम के लेने से मेरे हृदय में विषाद उत्पन्न हो गया।

बालक—अन्तिके! मुझे यह चञ्चल मयूर अच्छा लगता है। (यह कहकर खिलौना ले लेता है।)

पहली तापसी—(देककर घबराहट के साथ) ओ! इसकी कलाई में रक्षासूत्र नहीं दिखायी पड़ रहा है।

राजा—आर्ये! आप घबरायें नहीं। इस सिंहशावक के साथ संघर्ष करते समय यह यहाँ गिर पड़ा है। (यह कहकर उसे उठाना चाहता है)

---

name? But there do exist resemblanc (similarity) of names. Is it possible that this occasion here, like a mirage would not conduce to my distress *(fickle)?*

Boy—Antike! this beautiful peacock pleases me.

First ascetic woman—*(Observing with confusion)* Oh! the amulate of protection is not seen on his wrist.

The king—Please do not be afraid *(Away away with agitation)*. Why! here it hes fallen owing to his rough encounter with the lion's cub. *(Desires to take it up)*

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उभे—मा क्खु मा क्खु एदं। (विलोक्य) कधं गहिदो ज्जेव ? [मा खलु मा खलु एतम्। कथं गृहीत एव ?] (विस्मयादुरोनिहितहस्ते परस्परमवलोकयतः)

राजा—किमर्थं भवतीभ्यां प्रतिषिद्धोऽस्मि।

प्रथमा—सुणादु महाभाओ। एसा महाप्पहावा अवराजिदा णाम सुरमहोसही, इमस्स दारअस्स जादकम्मसमए भअवदा मारीएण दिण्णा। एदं किल मादापिदरो अप्पाणं च वज्जिअ अवरो भूमिपदिदं ण गेहादि। [शृणोतु महाभागः। एषा महाप्रभावा अपराजिता नाम सुरमहौषधिः। अस्य दारकस्य जातकर्म्मसमये भगवता मारीचेन दत्ता। एतां किल मातापितरौ आत्मानञ्च वर्जयित्वा अपरो भूमिपतितां न गृह्णाति।]

परि°ष्टः=मणिबन्धात् भूतले विच्युतः। (इति=इत्युक्त्वा, आदातुं=ग्रहीतुम्, भूतलादुत्तोलयितुम्, इच्छति=कामयते, उपक्रमते।)

उभे—मा खलु मा खलु एतं=रक्षाकाण्डकं मा स्पृश। (विलोक्य=दृष्ट्वा) कथं गृहीत एव=भूतलादुत्तोल्य हस्ते धृत एव किम्? (विस्मयात्=आश्चर्यात्, उरसि=वक्षसि, निहितौ= स्थापितौ, हस्तौ याभ्यां ते उरोनिहितहस्ते, परस्परम्=अन्योन्यं, अवलोकयतः।)

राजा—किमर्थम्=कथम् (केन कारणेन), भवतीभ्याम्, प्रतिषिद्धोऽस्मि=रक्षाकाण्ड-ग्रहणविषये वारितोऽस्मि।

प्रथमा—महाभागः=महैश्वर्यशाली भवान्, शृणोतु। एषा, महाप्रभावा=महाशक्तिशालिनी, अपराजिता नाम=अपराजितेति नाम्ना प्रसिद्धा, सुरमहौषधिः=देवलोके महौषधिरूपेण ख्यातनामा, दारकस्य=शिशोः, जातकर्म्मसमये=नाडीच्छेदात् प्राक् अनुष्ठीयमानजातकर्माख्यसंस्कारकरणसमये, भगवता मारीचेन=भगवता कश्यपेन, दत्ता=प्रदत्ता। एतां=महौषधिं, मातापितरौ, तथा आत्मानञ्च=

दोनों तापसियाँ—नहीं नहीं, इसे न उठाइए। (देखकर) क्या उठा ही लिया ?

(विस्मयपूर्वक छाती पर हाथ रखे दोनों एक-दूसरे को निहारती हैं।)

राजा—आप दोनों ने मुझे क्यों रोका था ?

पहली—श्रीमान् सुनिये! यह अतिशय प्रभावशालिनी अपराजिता नामक देव-महौषधि है। इस बालक के जातकर्म के समय स्वयं भगवान् कश्यप ने यह औषधि दी थी। इसे माता-पिता और स्वयं धारक को छोड़कर पृथ्वी पर गिर जाने पर अन्य नहीं उठाता (उठा सकता)—ऐसी व्यवस्था उन्होंने की है।

Both ascetic woman—Not indeed, not indeed take it. *(Seeing)* How! taken by him.

(Through amazement they stare at each other with hands placed on their bosom)

The king—For what were we forbidden?

First—May your majesty hear. This is a herb named Aparājitā given by his reverence Mārīci at the time his natal ceremony. No one indeed, excepting the parents and oneself, takes it up when fallen on the ground.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अथ गृह्णाति ?

प्रथमा—तदो सप्पो भविअ तं दंसइ। [ततः सर्पो भूत्वा तं दशति।]

राजा—अत्रभवतीभ्यां कदाचिदन्यत्र प्रत्यक्षीकृतमिदम् ?

उभे—अणेअसो। [अनेकशः।]

राजा—(सहर्षमात्मगतम्) तत् किं खल्विदानीं पूर्णमात्मनो मनोरथं नाभिनन्दामि ? (इति बालकं परिष्वजते।)

द्वितीया—सुव्वदे! एहि इमं वुत्तंतं णिअमवावडाए सउंतलाए णिवेदेम्ह। [सुव्रते! एहि इमं वृत्तान्तं नियमव्यापृताया: शकुन्तलाया निवेदयाव:।] (इति निष्क्रान्ते)

स्वयमेव च, वर्जयित्वा=त्यक्त्वा, अपरः=अन्यः कश्चिदपि, भूमिपतितां=भूलुण्ठितां, न गृह्णाति=नैव स्पृशति।

राजा—अथेति प्रश्ने, गृह्णाति=यद्यन्यः कश्चिद् गृह्णाति तर्हि किं स्याद् ?

प्रथमा—ततः=तदा, सर्पो भूत्वा एषोषधीति शेषः, तं=जनं, दशति।

राजा—अत्रभवतीभ्यां=युवाभ्याम्, कदाचित्=कदापि, अन्यत्र=मदितरस्मिन् ग्रहीतरि, इदं=रक्षाकाण्डस्य सर्पभावेन दंशनम्, प्रत्यक्षीकृतम्=दृष्टम्।

उभे—अनेकशः=बहुशः।

राजा—(सहर्षमात्मगतम्=प्रसन्नतापूर्वकं स्वगतम्) तत्=सर्वविधसंशयच्छेदात्, उक्तरूप-हेतुप्रचयेन, पूर्णम्=स्त्रीपुत्रलाभेन सफलम्, आत्मनः=स्वस्य, मनोरथम्=अभिवाञ्छितम्, नाभिनन्दामि=लक्ष्यीकृत्य नानन्दितो भवामि। किमिति प्रश्ने, खल्विति निश्चयेन। (इति=इत्युक्त्वा, बालकं, परिष्वजते=आलिङ्गति।)

राजा—यदि कोई दूसरा उठा ले तो ?

प्रथमा—तो यह सर्प बनकर उसे डस लेगा।

राजा—क्या आप दोनों ने कभी यह घटित होते हुए देखा है ?

दोनों—बहुत बार।

राजा—(हर्ष के साथ स्वगत) तो इस स्थिति में मैं क्यों अपने सफल होने वाले मनोरथ का अभिनन्दन न करूँ। (ऐसा कहकर बालक को आलिङ्गन करता है।)

द्वितीया—सुव्रते! चलो यह वृत्तान्त व्रतनिरत शकुन्तला को भी सुना दें।

(दोनों का प्रस्थान)

The king—If some one takes it up?

First ascetic woman—Then becoming a snake, it bites him.

The king—Has its transformation witnessed by your ladyship at any time?

Both—Several times.

The king—*(With joy to himsefl)* Why realy do I not hail my hearts desire, though it is fulfilled? *(Embraces the boy)*

Second ascetic woman—Survate! come. We shall report this

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बालः—मुंच मं मुंच मं, अंबाए सआसं गमिस्सं। [मुञ्च माम् मुञ्च माम्, अम्बायाः सकाशं गमिष्यामि।]

राजा—पुत्र! मयैव सह मातरमभिनन्दिष्यसि।

बालः—दुस्संतो मम तादो, ण क्खु तुमं। [दुष्यन्तो मम तातः, न खलु त्वम्।]

राजा—एष विवाद एव मां प्रत्याययति।

(ततः प्रविशत्येकवेणीधरा शकुन्तला।)

शकुन्तला—(सवितर्कम्) विआरकाले वि पइदित्थं सव्वदमणस्स ओसहिं सुणिअ ण मे आसंसो अत्तणो भाअधेएसुं। अधवा जधा मिस्सकेसीए मे आचक्खिदं तधा संभावी-

---

द्वितीया—सुव्रते, एहि=मया सह आगच्छ, इमं वृत्तान्तं—इमं=भूमिपतितं रक्षाकाण्डं गृह्णतोऽपि राज्ञः तत्कर्तृकसर्परूपेणादंशनम्, वृत्तान्तं=वार्ताम्, नियमव्यापृतायाः=पतिव्रतधर्मपालन-निरतायाः शकुन्तलायाः, समीपे, निवेदयावः=विज्ञापयावः। (इति=इत्युक्त्वा, निष्क्रान्ते=निर्गते।)

बालः—मुञ्च माम्=माम् परित्यज, अम्बायाः=मातुः शकुन्तलायाः, सकाशं=समीपं, गमिष्यामि।

राजा—पुत्र=वत्स! मयैव सह=मया साकमेव, मातरं=जननीम्, अभिनन्दिष्यसि=अभि-नन्दनं करिष्यसि, प्रणामं करिष्यसि।

बालः—दुष्यन्तः=तन्नाम्ना प्रसिद्धः राजा, मम=सर्वदमनस्य, तातः=जनकः, न खलु त्वं मे पिता।

राजा—एष विवादः=विरुद्धो वादः, एव, माम्=दुष्यन्तम्, प्रत्याययति=विश्वासं जनयति (त्वं मे पुत्र इति)।

(ततः=तदनन्तरम्, एकवेणीधरा=विरहचिह्नरूपा एकवेणीधरा, शकुन्तला, प्रविशति=रङ्गे आगच्छति।)

बालक—मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो। मैं अपनी माँ के पास जाऊँगा।

राजा—पुत्र! मेरे साथ ही माँ के पास चलकर उनका अभिनन्दन करना।

बालक—मेरे पिता दुष्यन्त हैं, तुम नहीं हो।

राजा—यह विवाद ही तो मुझे विश्वास दिलाता है।

(इसके पश्चात् एक वेणी धारण किये शकुन्तला का प्रवेश)

---

incident to dear Śakuntalā, who is engaged in the observance of her vows. *(Exeunt)*

Boy—Release me, release me. I shall go to my mother.

The king—Son! even along with me you will greet your mother.

Boy—My father indeed is Duśyanta, not you.

The king—This contradiction itself convinces me.

(Then enter Śakuntalā having her hair tied is one mass)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अदि एदं। [विकारकालेऽपि प्रकृतिस्थां सर्वदमनस्य ओषधिं श्रुत्वा न मे आशंसा आत्मनो भागधेयेषु। अथवा यथा मिश्रकेश्या मे आख्यातं तथा सम्भाव्यते एतत्।] (इति परिक्रामति)

राजा—(शकुन्तलां विलोक्य सहर्षखेदम्) अये! सेयमत्रभवती शकुन्तला—

वसने परिधूसरे वसाना नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः।
अतिनिष्करुणस्य शुद्धशीला मम दीर्घं विरहव्रतं बिभर्त्ति॥ २१॥

शकुन्तला—(सवितर्कम्=तर्काभिनयेन सह) विकारकालेऽपि=विकारयोग्यकालेऽपि, प्रकृतिस्थाम्=अविकाराम्, सर्वदमनस्य=स्वपुत्रस्य, ओषधिम्=अपराजितां नाम सुरमहौषधीम्, श्रुत्वा= आकर्ण्य, मे=मम, आत्मनः=स्वस्य, भागधेयेषु=भाग्येषु, आशंसा न=न प्रत्याशाः (आशा नैव जायते)। अथवा—यथा=येन प्रकारेण, मे=मम समीपे, मिश्रकेश्या, एतत्=भर्तृस्वीकरणम्, आख्यातं= वर्णितम्, तत् यथा=तेनैव प्रकारेण, सम्भाव्यते। (इति परिक्रामति=राज्ञोऽन्तिकं ... पादसञ्चारं करोति।)

राजा—(शकुन्तलाम्=स्वपत्नीं, विलोक्य=दृष्ट्वा, हर्षखेदाभ्यां सह वर्तते इति तद्यथा स्यात्तथा सहर्षखेदम्=प्रियाप्राप्तिपरकहर्षं तथा स्वकृत्ये खेदम् इत्युभाभ्यां सहितम्) अये= इति सम्भ्रमे, सा इयम्= पूर्वपरिणीता पश्चात् भर्त्सिता (प्रत्याख्याता), अत्रभवती=मान्या, शकुन्तला= कण्वदुहिता।

अन्वयः—परिधूसरे वसने वसाना नियमक्षाममुखी धृतैकवेणिः शुद्धशीला अतिनिष्करुणस्य मम दीर्घं विरहव्रतं बिभर्ति॥ २१॥

शकुन्तला—(वितर्कपूर्वक) यद्यपि सर्वदमन की औषधि गिरने और उसके उठाये जाने की बात मैंने सुनी है तथापि मुझे अपने भाग्य से यह आशा नहीं है कि वे स्वयं यहाँ आये होंगे? किन्तु जैसा कि मिश्रकेशी ने कहा था, वह यदि सच है तो यह भी सम्भव है। (ऐसा कहकर आगे बढ़ती है।)

राजा—(शकुन्तला को देखकर हर्ष और खेद के साथ) अरे! यही वे मान्या शकुन्तला हैं—

जिन्होंने मलिन वस्त्र धारण कर रखे हैं, व्रतोपवासादि के कारण जिनका मुख कुम्हला गया है तथा जो मात्र एक ही वेणी धारण किये हुए हैं। अतः ज्ञात होता है कि ये मुझ निर्दयी के लिए चिरकाल से विरहव्रत का पालन कर रही हैं॥ २१॥

Śakuntalā—Having heard that Sarvadamana's herb remained in its natural condition even at the tme of transformation, I had no hope in my fortunes or as was told by Miśrakeśī, so this is possible.

The king—(Observing Śakuntalā) Oh! this is her ladyship Śakuntalā—who here—

Wearing a pair of dirty (dusky) garments, with her face emaciated through severe vows, bearing a single braid of hair and

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(पश्चात्तापविवर्णं राजानं दृष्ट्वा सवितर्कम्) ण क्खु अज्जउत्तो अअं, ता को एसो किदरक्खामंगलं दारअं मे गत्तसंसग्गेण दूसेदि। [न खलु आर्यपुत्रोऽयम्, तत् क एषः कृतरक्षामङ्गलं दारकं मे गात्रसंसर्गेण दूषयति।]

बालः—(मातरमुपगम्य) अंब! को एसो मं पुत्तकेत्ति ससिणेहं आलिङ्गदि। [अम्ब! क एष मां पुत्रकेति सस्नेहमालिङ्गति।]

वसने इति। परिधूसरे=संस्काराद्यभावान्मलिने, वसने=वस्त्रे, वसाना=परिदधाना, नियमैः=व्रतोपवासादिभिः, क्षामं=क्षीणं, मुखं यस्याः सा नियमक्षाममुखी=क्षीणानना, (शिरसि) धृता एका वेणिर्यया सा धृतैकवेणिः=मात्रैकवेणीं दधाना, शुद्धं=पवित्रं, शीलं=चरित्रं, यस्याः सा शुद्धशीला, अतिनिष्करुणस्य=सुतरां क्रूरस्य, मम=दुष्यन्तस्य, दीर्घं=चिरकालव्यापि, विरहव्रतं=नियोगनियमं, बिभर्त्ति=पालयति। अत्र काव्यलिङ्गस्वभावोक्त्यलङ्कारौ। औपच्छन्दसिकं वृत्तम्॥ २१॥

भावार्थः—स्वगर्हितकार्य्ये खेदं प्रकटयन् कथयति राजा दुष्यन्तः-सेयं पूर्वं परिणीता मम जाया शकुन्तला या सम्प्रति संस्काराद्यभावात् मलिनवस्त्राणि परिदधति, व्रतोपवासादिभिः क्षीणानना अस्ति। प्रोषितपतिकानां कृते वैधव्यकेशधारणप्रतिषेधात् शिरसि मात्रैकवेणीं धारयति, अत एव ज्ञायते यत् शुद्धशीला सा सुतरां क्रूरस्य मम दुष्यन्तस्य कृते चिरकालव्यापि विरहव्रतं बिभर्त्ति इति॥ २१॥

शकुन्तला—(पश्चात्तापेन=स्वप्रत्याख्यानजनितानुतापेन, विवर्णं=मलिनाकृतिं, पश्चात्ताप-विवर्णं, राजानं=दुष्यन्तं, दृष्ट्वा=अवलोक्य, सवितर्कम्) न खलु आर्यपुत्रोऽयम्=स्वामी दुष्यन्तः, तत्=तदा, क एषः=कोऽयं जनः। कृतं रक्षायै मङ्गलं यस्य तं कृतरक्षामङ्गलम्, दारकं=पुत्रं, मे=मम, गात्रसंसर्गेण=आलिङ्गनेन, दूषयति=अपवित्रतां नयति।

बालः—(मातरं=शकुन्तलां, उपगम्य=प्राप्य) अम्ब=मातः! क एषः=अपरिचितः कश्चिदेषः, मां=सर्वदमनम्, पुत्रकेति सम्बुद्ध्य, सस्नेहम्=स्नेहपूर्वकम्, आलिङ्गति=परिष्वजति।

शकुन्तला—(पश्चात्ताप के कारण विवर्ण राजा को देखकर वितर्कपूर्वक) नहीं, ये आर्यपुत्र नहीं हैं। तब ये कौन हैं जो रक्षासूत्रधारी मेरे पुत्र को अपने शारीरिक स्पर्श से दूषित कर रहे हैं।

बालक—माँ! यह कौन है ? जो पुत्र कहकर प्यार करता है ?

---

pure character, undergoes the long vow of seperation from me, who was excessively suthless (cruel) to her. (21)

Śakuntalā—(Observing the king who had turned pale through repentance, with suspition) No, certainly this is not my lord. Who then is this that, with the contact of his body is now contaminating (polluting) my boy, protected by an auspicious amulet.

Boy—(Approaching his mother) Mother, who is this? Who embraces me, saying O' my son.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—प्रिये! क्रौर्यमपि मे त्वयि प्रयुक्तमनुकूलपरिणामं संवृत्तम्। तदहमिदानीं त्वया प्रत्यभिज्ञातमात्मानमिच्छामि।

शकुन्तला—(स्वगतम्) हिअअ! समस्सस समस्सस। पहरिअ परिच्चत्तमच्छरेण अणुकंपिदम्हि देव्वेण। अज्जउत्तो एव्व एसो। [**हृदय! समाश्वसिहि समाश्वसिहि। प्रहृत्य परित्यक्तमत्सरेण अनुकम्पिताऽस्मि दैवेन। आर्यपुत्र एव एषः।**]

राजा—प्रिये!

स्मृतिभिन्नमोहतमसो दिष्ट्या प्रमुखे स्थितासि मे सुमुखि!।
उपरागान्ते शशिनः समुपगता रोहिणी योगम्॥ २२॥

राजा—प्रिये! मे=मम, त्वयि=तवोपरि, क्रौर्यमपि=प्रत्याख्यानमपि (क्रूरताप्रदर्शनमपि), प्रयुक्तम्=कृतम्, तदपि अनुकूलः परिणामः=पश्चात्तापलक्षणः, यस्य तत् अनुकूलपरिणामं, संवृत्तम्=जातम्। तत्=तस्मात्, अहम्=दुष्यन्तः, इदानीम्=सम्प्रति, त्वया=भवत्या, प्रत्यभिज्ञातम् आत्मानम्='आर्यपुत्र एवायमि'ति परिचितं, इच्छामि=कामये।

शकुन्तला—(स्वगतम्=आत्मगतम्, अनतिस्पष्टम्) हृदय! समाश्वसिहि समाश्वसिहि= धैर्यमवलम्बस्व। प्रहृत्य=प्रहारं कृत्वा, परित्यक्तः=परिहृतः, मत्सरः=द्वेषः, येन तेन परित्यक्त-मत्सरेण, दैवेन=विधिना, अनुकम्पिताऽस्मि=अनुग्रहपात्रीकृता अस्मि। एषः=सम्मुखस्थः, आर्यपुत्र एव=मम भर्त्ता एव।

राजा—प्रिये!

अन्वयः—हे सुमुखि! दिष्ट्या स्मृतिभिन्नमोहतमसः मे प्रमुखे स्थितासि। रोहिणी उपरागान्ते शशिनः योगं समुपगता॥ २२॥

स्मृतीति। हे सुमुखि! दिष्ट्या=भाग्येन, स्मृत्या=पूर्ववृत्तान्तजातस्मरणेन, भिन्नं=खण्डितं, मोह एव तमः=अन्धकारः, मोहः तमः=राहुरिव वा यस्य तस्य स्मृतिभिन्नमोहतमसः, मे=मम

राजा—प्रिये! यद्यपि मैंने तुम्हारे साथ ऐसी क्रूरता की थी तथापि वह आज हमारे लिए अनुकूल ही सिद्ध हुई। इसलिए अब मैं यही चाहता हूँ कि तुम मुझे पहचान लो।

शकुन्तला—(मन में) हृदय! धैर्य धरो, धैर्य धरो। विधाता ने पहले तो मुझ पर प्रहार किया किन्तु बाद में द्वेषभाव त्याग कर उसने मुझ पर दया की है। ये आर्यपुत्र ही हैं।

राजा—पिये!

हे सुमुखि! भाग्यवश पूर्व समय की सब बातें याद आ गयीं और मेरे अज्ञान का

The king—Beloved! even cruelty, practised by me towards you, has come to have a favourable conclusion in as much as I now see myself recognized by you.

Śakuntalā—*(To herself)* Heart! take courage, take courage. I have been pitied by fate, that has left its malice. this is certainly my lord.

The king—Beloved!

Fortunately you stand before me, whose darkness in the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(सहर्षम्) जअदु जअदु अज्जउत्तो। [जयतु जयतु आर्यपुत्रः।] (इत्यर्द्धोक्ते बाष्पसन्नकण्ठी विरमति।)

राजा—प्रिये!

> बाष्पेण प्रतिरुद्धेऽपि जयशब्दे जितं मया।
> यत्ते दृष्टमसंस्कारपाटलोष्ठपुटं मुखम्॥ २३॥

दुष्यन्तस्य, प्रमुखे=सम्मुखे, स्थितासि=तिष्ठसि। रोहिणी=चन्द्रपत्नी (तारिका), उपरागान्ते=राहुग्रासावसाने, शशिनः=चन्द्रमसः, योगम्=सम्मिलनम्, समुपगता=सम्प्राप्ता। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः। आर्या जातिः॥ २२॥

भावार्थः—यथा उपरागावसाने शशिना सह रोहिण्या मिलनमिव विस्मरणावसाने मया सह तव मिलनं जातमिति। तयोर्मिलनमिवावयोर्मिलनमतीव रम्यतरमिति भावः॥ २२॥

शकुन्तला—(सहर्षम्) जयतु, जयतु आर्यपुत्रः=मदीयस्वामिनो जयोऽस्तु। (इति=एवं, अर्धोक्ते=अपरिसमाप्तस्वकीयकथने, बाष्पेण=अश्रुभारेण, सन्नः=अवरुद्धः, कण्ठो यस्याः सा बाष्पसन्नकण्ठी, विरमति=अन्यस्माद् वक्तव्यान्निवर्तते।)

राजा—प्रिये=वल्लभे!

अन्वयः—बाष्पेण जयशब्दे प्रतिरुद्धेऽपि मया जितम्। यत् असंस्कारपाटलोष्ठपुटं ते मुखं दृष्टम्॥ २३॥

बाष्पेणेति। बाष्पेण=अश्रुभारेण, जयशब्दे=जयतु जयतु आर्यपुत्रः इति शब्दे, प्रतिरुद्धेऽपि=निरुद्धेऽपि, मया जितम्=ममोत्कर्षोऽभूत्। यत्=यस्मात्, असंस्कारेण=संस्काराभावेन, पाटलः= श्वेतरक्तः, ओष्ठपुटो यस्य तत् असंस्कारपाटलोष्ठपुटम्=अकृत्रिममनोहरम्, ते=तव,

---

अन्धकार दूर हो गया। इस समय तुम मेरे सामने खड़ी हो। हमारा यह मिलन उसी प्रकार है जैसे ग्रहण के पश्चात् रोहिणी और चन्द्रमा का होता है॥ २२॥

शकुन्तला—(हर्षपूर्वक) आर्यपुत्र की जय हो! जय हो! (केवल आधी बात कह कर गला भर आने से चुप हो जाती है।)

राजा—प्रिये! यद्यपि अश्रुवेग ने जय शब्द को रोक लिया है तथापि मैंने जयलाभ कर ही लिया है; क्योंकि मुझे आज संस्कारविहीन रक्त-श्वेतवर्ण के तुम्हारे ओठों को देखने का अवसर मिल गया है॥ २२॥

---

form of delusion is dispelled by recollection. O' lovely faced one! at the end of the eclips Rohiṇī has approached union with the moon. (22)

Śakuntalā—May my lord be victorious, be victorious. ***(Stops with choaking throat, when half said)***

The king—O' beautcous one!

I have become victorious, though the word 'victory' was impeded by tears, in as much as I have seen your face with its lips pale-red through want of decoration. (23)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बालः—अंब को एसो। [अम्ब! क एषः।]

शकुन्तला—भाअधेआइं पुच्छ। [भागधेयानि पृच्छ।]

राजा—

सुतनु! हृदयात् प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते
किमपि मनसः सम्मोहो मे तदा बलवानभूत्।
प्रबलतमसामेवं प्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः
स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया॥ २४॥

(इति पादयोः पतति)

मुखम्=आननम्, दृष्टम्। अत्र जयशब्दे प्रतिषिद्धेऽपि जितमिति विरोधाभासालङ्कारः। तथा जितं प्रति परार्द्धवाक्यार्थस्य हेतुत्वेनोपपादनात् काव्यलिङ्गमपि॥ २३॥

भावार्थः—तव अकृत्रिममनोहराननस्य दर्शनेन विरहनाशात् मया जितमिति भावः॥ २३॥

बालः—अम्ब=मातः! क एषः=कोऽयम्?

शकुन्तला—भागधेयानि=अदृष्टानि, पृच्छत=जिज्ञासस्व। (येषां विडम्बनया तातनयोरपि नास्ति परिचय इति भावः।)

राजा—

अन्वयः—सुतनु! ते हृदयात् प्रत्यादेशव्यलीकम् अपैतु तदा मे मनसः किमपि बलवान् सम्मोहः अभूत्। हि प्रबलतमसां शुभेषु वृत्तयः एवम्प्रायाः अन्धः शिरसि क्षिप्तां स्रजमपि अहिशङ्कया धुनोति॥ २४॥

सुतन्विति। हे सुतनु=शोभनाङ्गि! ते=तव, हृदयात्, प्रत्यादेशेन=मत्कृतनिराकरणेन, व्यलीकं=पीडा, प्रत्यादेशव्यलीकम्, अपैतु=अपसरतु, तदा=प्रत्याख्यानकाले, मे=मम, मनसः, किमपि=अनिर्वचनीयम् (केनापि हेतुना वा), बलवान्=अधिकः, सम्मोहः=भ्रमः, अभूत्=जातः। हि=तत्र हि, प्रबलं=बलवत्, तमः=सम्मोहोऽन्धकारश्च, येषां तेषां प्रबलतमसां जनानाम्, शुभेषु=श्रेयःसाधनेषु विषयेषु, वृत्तयः=प्रवृत्तयः, एवम्प्रायाः=बाहुल्येनेत्थम्भूताः (निराकरणरूपा) भवन्ति। (यथा) अन्धः=चक्षुर्भ्यां विहीनो जनः, शिरसि=मस्तके, क्षिप्ताम्=अन्येनार्पिताम्, स्रजमपि=पुष्पमालामपि, अहिशङ्कया=सर्पभ्रान्त्या, धुनोति=कम्पयति (शिरःकम्पनेन कम्पयित्वाऽधः

बालक—माँ! यह कौन है?

शकुन्तला—अपने भाग्य से पूछ।

राजा—हे सुन्दरी! अब तुम उस समय की त्याग सम्बन्धी बातें भूल जाओ, क्योंकि उस समय मेरा मन प्रबल मोहजनित अज्ञानान्धकार से पूर्ण था। अत्यन्त अज्ञानी की कल्याण कामना करनेवालों को ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए। जैसे यदि किसी अन्धे के गले में

Mother—Mother! who is this?

Śakuntalā—(Child!) ask your fate.

The king—Fair one! let the grief of repudiation go away from your heart. Some how there was a mighty infatuation in my mind then. For such, for the most part, are the tendencies towards

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—उत्थेदु अज्जउत्तो। णूणं मे सुहप्पडिबंधअं पुराकिदं तेसुं दिअसेसुं परिणाममुहं आसि; जेण साणुक्कोसो वि अज्जउत्तो मइ विरसो संवुत्तो। [उत्तिष्ठतु आर्य्यपुत्रः। नूनं मे सुखप्रतिबन्धकं पुराकृतं तेषु दिवसेषु परिणाममुखमासीत्; येन सानुक्रोशोऽपि आर्य्यपुत्रो मयि विरसः संवृत्तः।]

(राजा उत्तिष्ठति)

क्षिपतीत्यर्थः)। अत्र वाक्यार्थगतकाव्यलिङ्गम्, अर्थान्तरन्यासः दृष्टान्तश्चालङ्कारः। हरिणी वृत्तम्॥ २४॥

भावार्थः—इदं मे त्वयि निवेदनं यत् तदा सम्मोहात् प्रत्याख्यानेन पीडा दत्ता न तु कामतः, अतस्तदपराधो भवत्या क्षन्तव्यः। हि प्रबलतमसां जनानां श्रेयःसाधनेषु विषयेषु प्रवृत्तयः बाहुल्येनेत्थम्भूता भवन्ति। यथा अन्धः शिरसि क्षिप्तां पुष्पमाला सर्पभ्रान्त्या शिरःकम्पनेन कम्पयित्वा अधः पातुमिच्छति तथैव प्रबलतमसो जनस्य शुभेषु विपरीतवृत्तयो भवन्ति॥ २४॥

(इति पादयोः पतति)

शकुन्तला—(उत्तिष्ठतु=आत्मानमुत्थापयतु, आर्यपुत्रः=भर्त्ता) नूनं=निश्चितम्, मे=मम, सुखस्य प्रतिबन्धकम्=व्याघातकम् (दुःखोत्पादकम्), पुराकृतं=पूर्वजन्मानुष्ठितं दुष्कृतमेवेति शेषः, तेषु=अतीतेषु, दिवसेषु=दिनेषु (निराकरणावधिकारकदिनेषु), परिणाममुखम्=परिपाकाभिमुखम् (दुःखजननप्रवृत्तम्) आसीत्। येन=हेतुना, सानुक्रोशोऽपि=मयि अनुरागातिशयेन सदयोऽपि, आर्य्यपुत्रः=भवान्, विगतः रसः रागः=अनुरागः, यस्य सः विरसः, संवृत्तः=सञ्जातः।

(राजा उत्तिष्ठति=शकुन्तलायाः पादतलादिति शेषः।)

सहसा पुष्पमाला डाल दी जाय तो वह उसे साँप समझकर फेंक देगा; वैसी ही प्रवृत्ति मोहान्ध व्यक्ति की शुभ कार्यों में समझनी चाहिए॥ २४॥

(ऐसा कहकर पाँवों पर गिरता है।)

शकुन्तला—आर्यपुत्र! उठिए। उस समय किसी पूर्वजन्मकृत पाप से मेरे सुखभोग में व्याघात उत्पन्न हो गया था, जिसके कारण आप जैसा सहृदय प्रेमी भी मुझसे उदासीन हो गया था।

(राजा उठता है)

---

auspicious matters, of those in whom darkness is supreme; a blind man shakes off even a garland thrown on his head, feeling it to be a serpent. (24)

(Falls at her feet.)

Śakuntalā—Let my lord rise up. Certainly my evil doing in a former existence, obstrucing the operation of my good deeds, was in those days drawing towards fruition (enjoyment), on account of which my lord, though possessed of compassion become unfeeling towards me.

(The king rises up)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—अध कथं अज्जउत्तेण सुमरिदो दुक्खभाई अअं जणो। [अथ कथमार्यपुत्रेण स्मृतो दुःखभागी अयं जनः।]

राजा—उद्धृतविषादशल्यः कथयिष्यामि।

मोहान्मया सुतनु! पूर्वमुपेक्षितस्ते
यो बाष्पबिन्दुरधरं परिबाधमानः।
तं तावदाकुटिलपक्ष्मविलग्नमद्य
कान्ते! प्रमृज्य विगतानुशयो भवामि॥ २५॥

(इति यथोक्तं करोति)

शकुन्तला—अथेति प्रश्ने, दुःखभागी=दुःखैकमात्रभोगी, अयं जनः=अहम्, आर्य्यपुत्रेण=भवता, कथं स्मृतः=केन हेतुना स्मृतिपथमानीतः।

राजा—उद्धृतम्=उन्मूलितं, विषादः=शोकः, शल्यं=शङ्कुरिव येन सः उद्धृतविषादशल्यः=अपनीतशोकशङ्कुः सन्, कथयिष्यामि=वक्ष्यामि।

अन्वयः—हे सुतनु! मया अधरं परिबाधमानः ते यः बाष्पबिन्दुः पूर्वं मोहात् उपेक्षितः कान्ते अद्य आकुटिलपक्ष्मविलग्नं तं प्रमृज्य तावत् विगतानुशयः भवामि॥ २५॥

मोहादिति। हे सुतनु=हे शोभनाङ्गि! मया=दुष्यन्तेन, अधरम्=अधरोष्ठम्, परितः=सर्वतः, बाधमानः=पीडयन्, परिबाधमानः, ते=तव, यः बाष्पबिन्दुः=अश्रुकणः, पूर्वम्=प्रत्याख्यानकाले, मोहात्=अज्ञानात्, उपेक्षितः=न प्रोञ्छितः, न परिमार्जितः, हे कान्ते! अद्य=सम्प्रति, आकुटिलेषु=ईषद्वक्रेषु, पक्ष्मसु=नेत्रलोमसु, विलग्नम्=संसक्तम्, आकुटिलपक्ष्मविलग्नम्, तम्=अश्रुबिन्दुम्, प्रमृज्य=परिमार्ज्य, तावत्=परिप्रोञ्छ्यैव, विगतानुशयः=विनष्टानुतापः (उद्धृतविषादशल्यः), भवामि। अत्र विशेषोक्तिः काव्यलिङ्गं चालङ्कारौ। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ २५॥

शकुन्तला—कहिए! आर्यपुत्र ने इस दुःखिया को कैसे याद किया?

राजा—जब विषाद रूपी काँटा निकल जायेगा तभी वे सब बातें बताऊँगा।

उस समय मोहवश ओठों को सताने वाले जिन अश्रुकणों की मैंने उपेक्षा की थी, हे कान्ते! कुछ तिरछी पलकों में उलझे हुए उन अश्रुकणों को आज मैं अपने हाथों से पोंछकर अनुतापरहित हो जाऊँगा॥ २५॥

(ऐसा कहकर आँसू पोछता है।)

Śakuntalā—How then was this person, doomed to misery, remembered by my lord?

The king—With the dart of grief extracted, I shall tell you.

Having first wiped off to the drop of tear, which paining your lower lip, was, O' beautious one! formerly disregarded by me through infatuation, and which now is clinging to your alightly curved eye-lashes, I shall, O' beloved of mine! be free from remorse or repentance . (25)

(Does as said)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(प्रमृष्टबाष्पा अङ्गुरीयकं विलोक्य) अज्जउत्त! तं एदं अंगुलीअअं?! [आर्यपुत्र! तदेतद् अङ्गुलीयकम्?]

राजा—अथ किम्! अस्याद्भुतोपलम्भान्मया स्मृतिरुपलब्धा।

शकुन्तला—विसमं किदं क्खु इमिणा, जं तदा अज्जउत्तस्स पच्चाअणकाले दुल्लहं आसि। [विषमं कृतं खल्वनेन, यत् तदा आर्यपुत्रस्य प्रत्यायनकाले दुर्लभमासीत्!]

राजा—तेन हि ऋतुसमागमचिह्नं प्रतिपद्यतां लताकुसुमम्।

भावार्थः—पूर्वं मोहात् उपेक्षितबाष्पबिन्दूनद्य प्रोञ्छ्य उद्धृतविषादशल्यो भवामि इति भावः॥ २५॥

(इति=इत्युक्त्वा, तथा करोति=अश्रुबिन्दून् परिमार्जयति।)

शकुन्तला—(प्रमृष्टः=दुष्यन्तेन प्रोञ्छितः, बाष्पः=नेत्रजलं, यस्याः सा प्रमृष्टबाष्पा, अङ्गुरीयकं=कराङ्गुलीयम्, विलोक्य=दृष्ट्वा) आर्यपुत्र! तदेतदङ्गुरीयकम्=या शचीतीर्थे क्वापि पतिता तथा च यदपायान्ममेयं दुर्दशेति भावः।

राजा—अथ किम्—इदमेकमव्ययपदमङ्गीकारार्थकम्। अस्य=अङ्गुरीयकस्य, अद्भुतोपलम्भात्=आश्चर्यरूपाल्लाभात्, मया=दुष्यन्तेन, स्मृतिः=परिणीतारूपेण तव स्मरणम्, उपलब्धा=प्राप्ता।

शकुन्तला—अनेन=अङ्गुलीयकेन, विषमं=दारुणं, कृतं=विहितं, खल्विति निश्चये, यत्=यस्मात्, तदा, आर्यपुत्रस्य=भवतः, प्रत्यायनकाले=विश्वासोत्पादनसमये, दुर्लभम्=अनासन्नम् (दुष्प्रापं) आसीत्।

राजा—तेन=इदानीमासादितत्वेन, ऋतोः=वसन्तस्य (मम), यः समागमः=सम्मेलनं,

---

शकुन्तला—(आँसू पुँछ जाने पर अँगूठी देखकर) आर्य्यपुत्र! यह वही अँगूठी है।

राजा—और क्या? एक विचित्र ढंग से इसके मिलने पर ही तो मुझे तुम्हारी याद आयी।

शकुन्तला—इसने सत्य ही बड़ी गड़बड़ी की जो उस समय आपको विश्वास दिलाने के लिए नहीं मिली।

राजा—यदि ऐसा है तो ऋतु के साथ समागम होने के प्रतीकस्वरूप लता इस पुष्प को धारण करें।

***Śakuntalā**—(Seeing the ring after wiped of tears)* My lord! this is that ring?

The king—Really the strange acquisition of this ring, I recollected the memories of my marriage with you or recollection was obtained.

Śakuntalā—An evil was done by it, in as much as it was difficult to obtain than at the time of convincing my lord.

The king—Then, let the creeper receive the flower as a sign of its union with the spring season.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—ण से विस्ससेमि, अज्जउत्तो ज्जेव णं धारेदु। [नास्य विश्वसिमि, आर्यपुत्र एव एनं धारयतु।]

(ततः प्रविशति मातलिः)

मातलिः—दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्रमुखदर्शनेन च आयुष्मान् वर्द्धते।

राजा—सुहृत्सम्पादितत्वात् साधुतरफलो मे मनोरथः। मातले! न खलु विदितोऽयमाखण्डलस्यार्थः ?

मातलिः—(सस्मितम्) किमीश्वराणां परोक्षम्। एहि भगवान् मारीचस्ते दर्शनमिच्छति।

तस्य चिह्नं=सूचकम्? ऋतुसमागमचिह्नं, कुसुमं=स्वपुष्पम् (अङ्गुरीयकम्), लता=वल्ली (लतेव तन्वङ्गी त्वम्), प्रतिपद्यताम्=लभताम्। (यथा वल्ली वसन्तसमागमचिह्नभूतं स्वपुष्पं धारयति तथा त्वमपि मत्समागमचिह्नभूतमिदमङ्गुरीयकं पुनर्धारयेति भावः।)

शकुन्तला—अस्य=अङ्गुरीयकस्य सम्बन्धे, न विश्वसिमि=न विश्वासं करोमि। आर्य्यपुत्र एव=भवानेव, एनम्=अङ्गुरीयकम्, धारयतु=अङ्गुलौ स्थापयतु।

(ततः=तदनन्तरम्, मातलिः=देवराजसारथिः, प्रविशति=रङ्गे समायाति।)

मातलिः—दिष्ट्या=इत्यानन्दे, धर्मपत्नीसमागमेन=सम्मेलनेन, च=तथा, पुत्रस्य मुखदर्शनेन, आयुष्मान्=भवान्, वर्द्धते=अभ्युदेति।

राजा—सुहृदा=सख्या, भवतः, सम्पादितत्वात्=साधितत्वात्, सुहृत्सम्पादितत्वात्, मे=मम, मनोरथः=अभिलाषः, साधुतरम्=अतीवोत्कृष्टं, फलं यस्य सः साधुतरफलः, जात इति शेषः। मातले! अयमर्थः=मम पुत्र-पत्नीसमागमरूपो विषयः, आखण्डलस्य=महेन्द्रस्य, न खलु विदितः=इन्द्रेण नैवावगतः (किम्) ?

शकुन्तला—मुझे इसका विश्वास नहीं है। आर्यपुत्र ही इसे धारण करें।

(इसके पश्चात् मातलि का प्रवेश)

मातलि—सौभाग्य से धर्मपत्नी से मिलने तथा पुत्र का मुख देखने से आयुष्मान् की अभिवृद्धि हुई है।

राजा—आप जैसे मित्र की सहायता से मुझे सर्वोत्कृष्ट फल की प्राप्ति हुई है। मातलि! मुझे इन्द्र का यह तात्पर्य नहीं मालूम था।

मातलि—(मुस्कराकर) अणिमादि सिद्धियों के स्वामी से भला कोई बात छिपी रह सकती है ? चलिए भगवान् कश्यप आपको देखना चाहते हैं।

Śakuntalā—I trust it not. Let my lord himself wear it.

(Then enter Mātalī)

Mātali—Fortunately the long-lived one thrives by union with his lawful wife and by seeing his son's face.

The king—My desire has come to attain a sweet fruit. *Mātalī*! (I hope) this account may really not be known to Indra?

Mātali—*(With a smile)* What is out of sight to the lords

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—प्रिये! अवलम्ब्यतां पुत्रः, त्वां पुरस्कृत्य भगवन्तं द्रष्टुमिच्छामि।

शकुन्तला—लज्जेमि क्खु अज्जउत्तेण सद्धं गुरुअणसमीबं गंतुम्। [लज्जे खलु आर्य्यपुत्रेण सार्द्धं गुरुजनसमीपं गन्तुम्।]

राजा—आचरितव्यमेतदभ्युदयकालेषु; तदेहि तावत्।

(इति सर्वे परिक्रामन्ति)

(ततः प्रविशत्यदित्या सहासनोपविष्टो मारीचः)

मातलिः—(सस्मितम्=सेषद्धासम्) ईश्वराणाम्=अणिमाद्यैश्वर्यशालिनाम्, किं=वस्तु, परोक्षम्=अगोचरम् (न किमपीत्यर्थः), एहि=आगच्छ, भगवान् मारीचः=कश्यपः, ते=तव, दर्शनम्=साक्षात्कारं, इच्छति=आकांक्षति।

राजा—प्रिये! पुत्रः=सुतः, अवलम्ब्यताम्=अङ्कमारोप्यताम्, त्वां=भवतीम्, पुरस्कृत्य=अग्रेसरीकृत्य, भगवन्तम्=कश्यपम्, द्रष्टुम्=अवलोकयितुम्, इच्छामि=वाञ्छामि।

शकुन्तला—आर्य्यपुत्रेण सार्द्धं=भवता सह, गुरुजनसमीपं गन्तुं=गुरुजनपार्श्वे प्रयातुं, लज्जे=लज्जामनुभवामि, खल्विति निश्चयेन।

राजा—अभ्युदयकालेषु=माङ्गलिकेषु अवसरेषु, एतत्=वन्दनाद्यर्थं गुरुजनसमीपे स्त्रीपुत्रैः सह भर्तुर्गमनम्, आचरितव्यम्=विधातव्यम् (अत एव लज्जाकरणमनुचितम्)। तत्=तस्मात्, तावत् एहि=आगच्छ। (इति सर्वे परिक्रामन्ति=पादन्यासं कुर्वन्ति।)

(ततः=तदनन्तरम्, प्रविशति=रङ्गे समायाति, अदित्या=स्वपत्न्या सह, आसनोपविष्टः=एकासनस्थः, मारीचः=मरीचिपुत्रः कश्यपः।)

राजा—प्रिये! बच्चे को सम्हालो, तुम्हें आगे करके ही मैं भगवान् कश्यप के दर्शन करना चाहता हूँ।

शकुन्तला—आर्यपुत्र के साथ गुरुजन के समीप जाने में मुझे शर्म आती है।

राजा—अभ्युदय के समय ऐसा करना ही चाहिए। इसलिए आओ।

(सब घूमते हैं।)

(इसके बाद अदिति के साथ आसन पर बैठे कश्यप दिखायी पड़ते हैं)

---

possesor of super human power? Now you please come, His holiness Mārīca is waiting for you (he wants to see you).

The king—Dear! hold the son. I desire to see his reverence placing you in front of me.

Śakuntalā—I feel bashful to go near the elders in company with my lord.

The king—Even this should be observed in times of prosperity. So, come with me.

(All walk round)

(Then enter Mariche occupying a seat with Aditi)

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारीचः—(राजानमवलोक्य) दाक्षायणि!

पुत्रस्य ते रणशिरस्ययमग्रयायी
दुष्यन्त इत्यभिहितो भुवनस्य भर्त्ता।
चापेन यस्य विनिवर्त्तितकर्म्म जातं
तत् कोटिमत्कुलिशमाभरणं मघोनः ॥ २६ ॥

अदिति—संभावणीअप्पहावा से आकिदि। [सम्भावनीयप्रभावा अस्याकृतिः।]

मारीचः—राजानमवलोक्य=दुष्यन्तं दृष्ट्वा) दाक्षायणि!=दक्षस्यापत्यं स्त्री, तत्सम्बुद्धौ दाक्षायणि=दक्षदुहिते!

अन्वयः—अयं ते पुत्रस्य रणशिरसि अग्रयायी दुष्यन्त इति अभिहितः भुवनस्य भर्त्ता यस्य चापेन विनिवर्त्तितकर्म्म तत् कोटिमत् कुलिशं मघोनः आभरणं जातम्।

पुत्रस्येति। अयम्=उपस्थित एषः पुरुषः, ते=तव, पुत्रस्य, रणशिरसि=समरमूर्द्धनि, अग्रयायी=अग्रेसरः, दुष्यन्त इति अभिहितः=दुष्यन्त इति नाम्रा लोके प्रसिद्धः, भुवनस्य=भूमण्डलस्य, भर्त्ता=पालकः, यस्य=दुष्यन्तस्य, चापेन=धनुषा, विनिवर्त्तितम्=सम्पादितं, कर्म्म=दानवविजयरूपं कार्य्यं, यस्य तत् विनिवर्त्तितकर्म्म, तत्=प्रसिद्धम्, कोटिमत्=तीक्ष्णाग्रम्, कुलिशं=वज्रम्, मघोनः=इन्द्रस्य, आभरणम्=शोभामात्रफलकम्, जातम्=समपद्यत। अत्र उदात्तालङ्कारः, रूपकञ्च। वसन्ततिलका वृत्तम्॥ २६ ॥

भावार्थः—उपस्थित एषः पुरुषः समरमूर्द्धनि तव पुत्रस्य अग्रेसरः भवति, दुष्यन्त इति नाम्रा लोके प्रसिद्धः अयं भूमण्डलस्य पालक अस्ति। कुलिशं हि केवलं मघोनः करशोभामात्रं जनयति न तेन शत्रुपराजयः साध्यते, अनेनैव रणशिरसि स्थित्वा निखिलशत्रोर्हननादिति भावः ॥ २६ ॥

अदितिः—सम्भावनीयः=ऊह्यः, प्रभावः=शक्तिः, यया सा सम्भावनीयप्रभावा, अस्य=पुरुषस्य, आकृतिः=मूर्तिः (अस्याकृतिरेव तादृशालौकिकप्रभावं सूचयतीति भावः)।

मारीच—(राजा को देखकर) दाक्षायणी!

यह व्यक्ति तुम्हारे पुत्र इन्द्र के युद्ध में आगे चलने वाला है। लोक में यह दुष्यन्त नाम से प्रसिद्ध है और लोक का पालनकर्त्ता है। इसके धनुष से ही इन्द्र के समस्त कार्य पूर्ण हो जाते हैं और इन्द्र का तीक्ष्ण वज्र इन्द्र के लिए केवल आभरण मात्र बनकर रह जाता है ॥ २६ ॥

अदिति—इसकी आकृति देखकर ही इसके प्रभाव का अनुमान हो जाता है।

Mārīca—Dākshāyaṇī—

Here is he, who marches, foremost at the head of your son's battles, addressed to as Duśyanta, the sustainer of the world, by whose bow, its office having been performed, that edged thunderbolt has become a mere ornament to Indra.

Aditi—His form has its majesty capable of being inferred from it.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! एतौ पुत्रप्रीतिपिशुनेन चक्षुषा दिवौकसां पितरावायुष्मन्तमवलोकयतः, तदुपसर्प।

राजा—मातले!

प्राहुर्द्वादशधा स्थितस्य मुनयो यत्तेजसः कारणं
भर्त्तारं भुवनत्रयस्य सुषुवे यद्यज्ञभागेश्वरम्।
यस्मिन्नात्मभुवः परोऽपि पुरुषश्चक्रे भवायास्पदं
द्वन्द्वं दक्षमरीचिसम्भवमिदं तत् स्त्रष्टुरेकान्तरम्॥ २७॥

मातलिः—आयुष्मन्! एतौ दिवौकसां=देवानां, पितरौ=मातापितरौ, अदितिकश्यपौ, आयुष्मन्तं=भवन्तम्, पुत्रे=पुत्रस्वरूपे त्वयि, या प्रीतिः=स्नेहः, तस्या पिशुनेन=सूचकेन, चक्षुषा=नेत्रेण, अवलोकयतः=पश्यतः, तत्=तस्मात्, उपसर्प=एतयोः समीपं गच्छ।

राजा—मातले!

अन्वयः—मुनयः यत् द्वन्द्वं द्वादशधा स्थितस्य तेजसः कारणं प्राहुः, यत् द्वन्द्वं भुवनत्रयस्य भर्त्तारं यज्ञभागेश्वरं सुषुवे, तथा यस्मिन् आत्मभुवः परः पुरुषः अपि भवाय आस्पदं चक्रे; दक्षमरीचिसम्भवं स्त्रष्टुः एकान्तरम् इदं तत् द्वन्द्वं किम्?॥ २७॥

प्राहुरिति। मुनयः=व्यासादयः, यत् द्वन्द्वं=मिथुनम् (कर्म्म), द्वादशधा=द्वादशभिः प्रकारैः, स्थितस्य=विद्यमानस्य (द्वादशसु मासेषु द्वादशमूर्तिधरस्य), तेजसः=सूर्य्यस्य, कारणं=प्रभवम्, प्राहुः=वदन्ति। यत् द्वन्द्वम्, भुवनत्रयस्य=भूर्भुवःस्वर्लक्षणस्य लोकस्य, भर्त्तारम्=पालकम् (धारणसमर्थं स्वामिनम्), तथा यज्ञे भागो येषान्ते यज्ञभागाः=देवाः, तेषामीश्वरं यज्ञभागेश्वरम्=इन्द्रम्, सुषुवे=जनयामास। तथा यस्मिन्=द्वन्द्वे, आत्मभुवः=ब्रह्मणः, परः=उत्कृष्टः, पुरुषः=नारायणः, अपि, भवाय=वामनरूपेण जन्मने, आस्पदं=जन्मता सम्बन्धेन प्रतिष्ठाम्, चक्रे=कृतवान्। दक्षमरीचिभ्यां सकाशात् सम्भवतीति दक्षमरीचिसम्भवम्=दक्षसम्भवा अदितिः मरीचिसम्भवः कश्यपश्चेत्युभयरूपम्, स्त्रष्टुः=विधातुर्ब्रह्मणः, सकाशात्, एकेन=पुरुषेण दक्षेण मरीचिना च, अन्तरं=व्यवधानं, यस्य तत् एकान्तरम्, इदं=पुरोदृश्यमानम्, तत्=प्रसिद्धं, द्वन्द्वम्=अदितिकश्यपात्मकस्त्री-

---

मातलि—आयुष्मान्! देवताओं के पिता और उनकी माता पुत्रस्नेहयुक्त दृष्टि से आप को देख रहे हैं। अतः इनके पास पहुँचिए।

राजा—मातलि!

मुनिगण जिन्हें द्वादश भागों में विभक्त तेज (सूर्य) का पिता कहते हैं, जिन्होंने तीनों लोकों के भर्त्ता और यज्ञभाग के अधिकारी इन्द्र को उत्पन्न किया और ब्रह्मा से भी प्रधान पुरुष

Mātali—Long-lived one! here the parents of the gods are looking at the long lived one with an eye indicative of an affection for a son. Approach them.

The king—Mātali—

Is this that pair, sprung from Daksha and Mārīci, sepereted by one from the creator, which sages call the source of the luster that subsists in twelve forms (the sun), which begot the lord of the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—अथ किम्?

राजा—(प्रणिपत्य) उभाभ्यामपि वां वासवनियोज्यो दुष्यन्तः प्रणमति।

मारीचः—वत्स! चिरं जीवन् पृथिवीं पालय।

अदितिः—अप्पदिरधो होहि। [अप्रतिरथो भव।]

(शकुन्तला पुत्रसहिता पादयोः पतति)

पुंसौ किम्? काक्वाऽयं प्रश्नो गम्यते। अत्र नानाविधकारणोपन्यासात् समुच्चयालङ्कारः। शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्॥ २७॥

भावार्थः—व्यासादयः यत् द्वन्द्वं द्वादशधा स्थितस्य सूर्यस्य प्रभवं वदन्ति, तथा च यत् द्वन्द्वं भुवनत्रयस्य भर्त्तारं किञ्च यज्ञभागेश्वरं (इन्द्रम्) सुषुवे, तथा यस्मिन् द्वन्द्वे आत्मभुवः परः पुरुषः नारायणः अपि वामनरूपेण जन्मने जन्यतासम्बन्धेन प्रतिष्ठां कृतवान्; दक्षमरीचिसम्भवं विधातुर्ब्रह्मणः सकाशात् एकान्तरम् इदं पुरोदृश्यमानं तत् द्वन्द्वं किम्? इति राज्ञः जिज्ञासा इति च भावः॥ २७॥

मातलिः—अथ किम्=इदमेकमव्ययमङ्गीकारार्थकम्। त्वं यदात्थ तत्तथैवेति।

राजा—(प्रणिपत्य=नम्रीभूय) वासवस्य=इन्द्रस्य, नियोज्यः=किङ्करः, वासवनियोज्यः, दुष्यन्तः=तन्नामधेयः, उभाभ्यामपि वां=युवाभ्याम् अदितिकश्यपाभ्यां, प्रणमति=नमस्कुरुते।

मारीचः—वत्स=पुत्र! चिरं=चिरकालपर्यन्तम्, जीवन्=प्राणान् धारयन्, पृथिवीं=धरित्रीम्, पालय=रक्ष।

अदितिः—अप्रतिरथः=प्रतिपक्षशून्यः, भव।

(शकुन्तला पुत्रसहिता, पादयोः=अदितिकश्यपयोश्चरणयोः, पतति।)

नारायण ने वामन रूप में अवतरित होने के लिए जिनका आश्रय लिया; दक्ष और मरीचि से उत्पन्न तथा ब्रह्मा से केवल एक पुरुष के व्यवधान से युक्त क्या ये वही दम्पती हैं?॥ २७॥

मातलि—और क्या?

राजा—(प्रणाम करके) इन्द्र का सेवक दुष्यन्त आप दोनों को प्रणाम करता है।

मारीच—वत्स! बहुत समय जीते हुए (दीर्घायु होकर) प्रजा का पालन करो।

अदिति—विपक्षहीन (शत्रुहीन) होओ।

(शकुन्तला पुत्र सहित चरणों में गिरती है।)

---

three worlds, the chief of the sharers of sacrifices and in which the man who is higher than even the self-existent (Lord Braṁha) made the abode for his birth. (27)

Mātali—What else?

The king—*(Saluting)* Even to you both, Duśyanta, the servant of Indra, offers his salutations.

Mārīca—Child! live long and protect the earth.

Aditi—Be an unrivalled warrior.

(Śakuntalā with her son falls at their feet)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारीचः—वत्से !

आखण्डलसमो भर्त्ता जयन्तप्रतिमः सुतः।
आशीरन्या न ते योज्या पौलोमीमङ्गला भव॥ २८॥

अदितिः—जादे ! भत्तुणो बहुमदा होहि, अअंच दीहाऊ उहअपक्खं अलंकरेदु। एध उपविसध। [जाते! भर्तुर्बहुमता भव। अयञ्च दीर्घायुः उभयपक्षमलङ्करोतु। एतम् उपविशतम्।]

(सर्वे प्रजापतिमभित उपविशन्ति)

मारीचः—वत्से=पुत्रि!

अन्वयः—भर्त्ता आखण्डलसमः सुतः जयन्तप्रतिमः (अत एव) ते अन्या आशीः न योज्या (केवलं) पौलोमीमङ्गला भव ॥ २८॥

भर्त्ता=तव पतिर्दुष्यन्तः, आखण्डलसमः=प्रभावे सम्पत्तौ चेन्द्रतुल्यः, तथा सुतः=पुत्रः सर्वदमनः, जयन्तः=पाकशासनिः, प्रतिमा=उपमा, यस्य सः जयन्तप्रतिमः=जयन्ताख्येन्द्रपुत्रतुल्यः, अत एव ते=तव सम्बन्धे, अन्या=एतदतिरिक्ता, आशीः=शुभाशंसनम्, न योज्या=अस्माभिर्न प्रवर्त्त-नीया, केवलं, पौलोम्याः=पुलोमदुहितुः शचीदेव्याः, मङ्गलमिव मङ्गलं=सौभाग्यरूपं, यस्याः सा पौलोमीमङ्गला भव। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः, उपमाऽलङ्कारश्च। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ २८॥

भावार्थः—यस्य ते भर्त्ता प्रभावे सम्पत्तौ चेन्द्रतुल्यः, पुत्रश्च जयन्तप्रतिमः सा त्वम् अन्या आशीः नापेक्षसे केवलं यथेन्द्राणी नियतमिन्द्रेणाविरहिता चिरमविधवा च तथा त्वमपि भूया इत्येव आशीः त्वद्विषये योज्या इति भावः॥ २८॥

अदितिः—जाते=पुत्रि! भर्तुः=पत्युः, बहुमता=अत्यादृता, भव। अयञ्च दीर्घायुः= चिरंजीवी ते पुत्रः, उभयपक्षम्=मातृकुलं पितृकुलञ्च, अलङ्करोतु=भूषयतु। एतम्=आगच्छतम्, उपविशतम्=उपवेशनं कुरुतम्, युवामिति शेषः।

(सर्वे=दुष्यन्तः, मातलिः पुत्रसहिता शकुन्तला च, प्रजापतिम्=कश्यपम्, अभितः= उभयपार्श्वयोः, उपविशन्ति।)

मारीच—पुत्री! इन्द्र के तुल्य तुम्हारे पति हैं और जयन्त के समान पुत्र। अतः अन्य आशीर्वाद न देकर केवल यही आशीर्वाद देता हूँ कि तुम इन्द्राणी के समान अखण्ड सौभाग्यवती (मङ्गलवती) होओ॥ २८॥

अदिति—पुत्री! पति की सम्माननीया बनो और यह चिरंजीवी बालक मातृ-पितृ दोनों कुलों को अलंकृत करे। आओ बैठो।

(सब कश्यप के आस-पास बैठ जाते हैं।)

Mārīca—Daughter! Your husband is like Indra, your son resembles Jayanta. No other benedication is suitable to you. may you be like pulomaja (wife of Indra). (28)

Aditi—Daughter! be highly respected by your husband and may this long lived (your son) be the delighter of both families. Sit down.

(All sit down around Prajāpati)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मारीचः—(एकैकं निर्दिशन्)

> दिष्ट्या शकुन्तला साध्वी सदपत्यमिदं भवान्।
> श्रद्धा वित्तं विधिश्चेति त्रितयं यत् समागतम्॥ २९॥

राजा—भगवन्! प्रागभिप्रेतसिद्धिः, पश्चाद्दर्शनम्; इत्यपूर्वः खलु वोऽनुग्रहः। कुतः—

> उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः।
> निमित्तनैमित्तकयोरयं क्रमस्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः॥ ३०॥

मारीचः—एकैकं=क्रमशः प्रत्येकं, निर्दिशन्=अङ्गुल्या दर्शयन्—

अन्वयः—दिष्ट्या साध्वी शकुन्तला, इदं सदपत्यं, तथा भवान् तत् श्रद्धा वित्तं विधिः च इति त्रितयं समागतम्॥ २९॥

दिष्ट्येति। दिष्ट्या=भाग्येन, साध्वी=सच्चरित्रा, शकुन्तला, इदं सदपत्यम्=अयं सत्पुत्रः, तथा भवान्=तत्तद्गुणगरिष्ठो भवान्, तत्=तस्मात्, श्रद्धा=आस्तिक्यबुद्धिः, वित्तं=धनम्, विधिः= यागादिक्रिया, इति त्रितयम्=एतत् त्रयम्, समागतम्=मिलितम्। अत्र समालङ्कारः। अनुष्टुप् वृत्तम्॥ २९॥

भावार्थः—शकुन्तला श्रद्धा, सदपत्यं वित्तं, भवांश्च विधिः एतत् त्रयं दिष्ट्या समागतम् इति मन्ये इति भावः॥ २९॥

राजा—भगवन्! प्राग्=पूर्वम्, अभिप्रेतस्य=अभिलषितस्य—पुत्रकलत्रसमागमरूपस्य, सिद्धिः=निष्पत्तिः पश्चात् (युष्माकम्) दर्शनम्, (इत्थं) वः=युष्माकम्, अनुग्रहः=अनुकम्पारूप-प्रसादः, अपूर्वः खलु=विचित्र एव (प्राक् फलं पश्चात् दर्शनमित्यपूर्वता)। कुतः—

अन्वयः—पूर्वं कुसुमम् उदेति ततः फलम् उदेति, तथा प्राक् घनोदयः भवति तदनन्तरं पयः भवति। तथा च निमित्तनैमित्तिकयोः अयं क्रमः तु तव प्रसादस्य पुरः सम्पदः।

मारीच—एक-एक का निर्देश करते हुए—

यह साध्वी शकुन्तला, उत्तम पुत्र और आप तीनों को आज भाग्यवश एकत्र देखकर यह प्रतीत होता है कि मानो श्रद्धा, धन और विधि आज ये तीनों एकत्र हो गये हों॥ २९॥

राजा—भगवन्! पहले तो हमारी अभीष्ट सिद्धि हुई, पश्चात् आपका दर्शन हुआ। यह आपका अनुग्रह सर्वथा अभूतपूर्व है; क्योंकि—

पहले फूल आता है उसके बाद फल। पहले मेघ प्रगट होता है फिर जल। इसी प्रकार

Mārīca—(Pointing to each)

Fortunately, virtuous Śakuntalā, this noble child and yourself that triad, faith, fortune and performance (of yajña), is here com-bined. (29)

The king—Your holiness! first the accomplishment of desire, afterwards your sight: Therefore your favour is indeed unprecedented. Why—

First appears the flower, then the fruit; first the rising of

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मातलिः—आयुष्मन्! एवं प्रसीदन्ति विश्वगुरवः।

राजा—भगवन्! इमामाज्ञाकरीं वो गान्धर्वेण विवाहविधिनोपयम्य कस्यचित् कालस्य बन्धुभिरानीतां स्मृतिशैथिल्यात् प्रत्यादिशन्नपराद्धोऽस्मि, अत्रभवतो युष्मद्गोत्रस्य कण्वस्य, पश्चादेनामङ्गुरीयकदर्शनारूढस्मृतिः ऊढपूर्वामवगतोऽहम्, तच्चित्रमिव मे प्रतिभाति।

उदेतीति। पूर्वम्=फलसमागात् प्राक्, कुसुमं=फलकारणीभूतं पुष्पम्, उदेति=उद्गच्छति, ततः=तदनन्तरम्, फलं=कुसुमकार्य्यभूतं फलम् उदेति। तथा प्राक्=पूर्वम्, घनोदयः=मेघाविर्भावः, भवति, तदनन्तरम्=तत्पश्चात्, पयः=घनोदयकार्य्यभूतं वृष्टिजलं भवति। तथा च निमित्तनैमित्तिकयोः=कारणकार्य्यमात्रयोः, अयम्=उक्तरूपः, क्रमः=पौर्वापर्य्यभावनियमः, तु=किन्तु, तव प्रसादस्य=सम्पत्कारिणीभूतानुग्रहस्य, पुरः=पूर्वमेव, सम्पदः=कार्य्यभूतपुत्रकलत्रादिलाभसम्पत्तयः। अत्र काव्यलिङ्गं क्रियादीपकालङ्कारश्च। केचित्तु दृष्टान्तोऽलङ्कारः। वंशस्थविलं वृत्तम्॥ ३०॥

भावार्थः—सर्वत्राशिषोऽनन्तरं सम्पल्लाभस्य नियमः दृष्टिपथमायाति, अत्र तु पुत्र-कलत्र-रूपसम्पल्लाभानन्तरमाशीः प्रकाश इति निपुणं भवत आशिषो वैशिष्ट्यम् इत्याशयः॥ ३०॥

मातलिः—आयुष्मन्=प्रशस्तायुःशालिन्! विश्वेषां=निखिलानां, गुरवः=स्रष्टारः, विश्वगुरवः (क्वचित् विधातारः), एवम्=इत्थम्प्रकारमेव, प्रसीदन्ति=अनुगृह्णन्ति। (इच्छासिद्धयो विश्वगुरवो यद् यदैवेच्छन्ति तत्तदेव सम्पद्यत इति भावः।)

राजा—भगवन्! वः=युष्माकं, आज्ञाकरीम्=आज्ञाकारिणीम्, इमाम्=शकुन्तलाम्, गान्धर्वेण=तदाख्येन, विवाहविधिना=विधानेन, उपयम्य=परिणीय, कस्यचित् कालस्य अतिक्रमानन्तरम्=किञ्चित्कालानन्तरम्, बन्धुभिः=शार्ङ्गरवशारद्वतादिभिः, आनीतां=मत्समीपमुपस्थापिताम्, इमां शकुन्तलाम्, स्मृतिशैथिल्यात्=स्मृतिभ्रंशात्, प्रत्यादिशन्=निराकुर्वन्, अपराद्धोऽस्मि=कृतापराद्धोऽस्मि। अत्रभवतः=पूजनीयस्य, युष्मद्गोत्रस्य=भवद्वंशीयस्य, कण्वस्य=कण्वेति नाम्ना

निमित्त और नैमित्तिक का क्रम बँधा हुआ है परन्तु आपकी कृपा कुछ अनोखी है, क्योंकि उसमें पहले सम्पद्-प्राप्ति होती है और दर्शन बाद में मिलते हैं॥ ३०॥

मातलि—आयुष्मन्! विश्वगुरु इसी प्रकार प्रसन्न होते हैं।

राजा—आपकी आज्ञाकारिणी इस शकुन्तला के साथ मैंने गान्धर्व विवाह किया था। कुछ समय पश्चात् इसके बान्धव इसे मेरे पास लाये, उस समय विवाह की बात भूल जाने के कारण इसका तिरस्कार करके मैं आपके वंशज पूज्य कण्व का अपराधी बना। इसके बाद

---

clouds, after that the water (rain) of the cause and effect this is the order; but prosperity has come in advance of your favour. (30)

Mātali—Long-lived one! thus the ordainers (preceptors of the universe) show favour.

The king—Sir! having married this lady, obedient to your commands, by the Gandharva form of marriage and repudiating her through looseness of memory, when brought to me some time after by her relatives, I have offended your kinsman, the revered Kaṇva. Afterwards at the sight of the ring I came to know his

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा गजे साधु समक्षरूपे कस्मिन्नपि क्रामति संशयः स्यात्।
पदानि दृष्ट्वाथ भवेत् प्रतीतिस्तथाविधो मे मनसो विकारः ॥ ३१ ॥

मारीचः—वत्स! अलमात्मापराधशङ्कया, सम्मोहोऽपि त्वय्युपपन्न एव। श्रूयताम्—

प्रसिद्धस्य, अपराद्धोऽस्मि। पश्चात्=तदनन्तरम्, एनाम्= पुरतःस्थिताम्, अङ्गुरीयकदर्शनेन=नामाङ्कितमुद्रादर्शनेन, आरूढा=उदिता (उत्पन्ना), स्मृतिर्यस्य सः अङ्गुरीयकदर्शनारूढस्मृतिः, ऊढपूर्वाम्=पूर्वं परिणीताम्, इति अहम् अवगतः=ज्ञातवान्, तत्=स्मृतिशैथिल्यं साक्षाद्दृष्टायामज्ञानमङ्गुरीयकदर्शनाच्च ज्ञानम्, चित्रमिव=आश्चर्यमिव, मे=मम सम्बन्धे, प्रतिभाति=प्रकाशते।

अन्वयः—साधु समक्षरूपे कस्मिन्नपि गजे क्रामति (यथा) संशयः स्यात्, अथ पदानि दृष्ट्वा प्रतीतिः मे मनसः तथाविधः विकारः (आसीत्)।

यथेति। साधु=सम्यक्, समक्षं=प्रत्यक्षीभूतं, रूपम्=आकृतिः, यस्य तस्मिन् समक्षरूपे, कस्मिन्नपि गजे=हस्तिनि, क्रामति=तिरोहिते सति, यथा संशयः=सन्देहः (गजो वा न वा इति), स्यात्=भवेत्। अथ=अनन्तरम्, पदानि=तस्यैव गजस्य पादन्यासचिह्नानि, दृष्ट्वा=अवलोक्य, प्रतीतिः=निश्चयात्मकः प्रत्ययो भवेत्, मे=मम, मनसः=चित्तस्य, तथाविधः=तादृशः, विकारः=अन्यथात्वभावः, आसीत्। अत्र निदर्शनालङ्कारः। उपजातिर्वृत्तम्॥ ३१ ॥

भावार्थः—सम्यक्तया प्रत्यक्षीभूतेऽपि कस्मिन्नपि गजे स्वपुरतः तिरोहिते सति यथा गजो वा न वा इति सन्देहः कस्यापि मनसि उत्पन्नो भवेत् तथैव पूर्वमस्यामुपगतायामियं न मम भावयेति पुनस्तिरोहितायां 'इयं किं परिणीतपूर्वा' इति पश्चाद् अङ्गुलीयकदर्शनेन—'मम भार्यैवे'ति प्रतीतिर्जातेति भावः ॥ ३१ ॥

मारीचः—वत्स=पुत्र! आत्मापराधशङ्कया—आत्मनो योऽपराधः=शकुन्तलाप्रत्याख्यान-

---

अंगूठी देखने पर मुझे याद आया कि यह मेरी पूर्व विवाहिता है। यह सब मुझे विचित्र-सा लगता है; क्योंकि—

जैसे कोई हाथी ठीक सामने से निकल जाय और बाद में सन्देह उत्पन्न हो कि हाथी गया है या नहीं, तदनन्तर उसके पाँवों के चिह्न देखकर यह निश्चय किया जाय कि हाथी ही गया है, इसी प्रकार मेरे मन की भी स्थिति (मन में विकार उत्पन्न हुआ) हुई थी॥ ३१ ॥

मारीच—वत्स! तुम स्वयं के अपराधी होने की शङ्का न करो। इस प्रकार का सम्मोह भी तुम्हारे लिए उपयुक्त ही हुआ। सुनो।

---

daughter as having been married by me (previously). That appears as though strange to me.

Just as (one should think this is) not an elephant when its form is before one's eyes, then a doubt (as to whether it was, or was not, an elephant) should arise, when it is passing away, but after seeing its foot steps conviction should take place, of that kind is the change of my mind. (31)

Mārīca—Child! away with suspicion of your own fault. Even infatuation in you was accountable. Listen—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—अवहितोऽस्मि।

मारीचः—यदैवाप्सरस्तीर्थावतरणात् प्रत्याख्यानविक्लवां शकुन्तलामादाय दाक्षायणीमुपगता मेनका, तदैव ध्यानादवगतवृत्तान्तोऽस्मि, दुर्वाससः शापादियं तपस्विनी सहधर्मचारिणी त्वया प्रत्यादिष्टा; स चाङ्गुरीयदर्शनावसानः शाप इति।

राजा—(सोच्छ्वासमात्मगतम्) एष वचनीयान्मुक्तोऽस्मि।

द्वारा कण्वमहर्षौ समाचरितो दोषः, तस्य शङ्कया=सम्भावनया, अलम्=न प्रयोजनम्। सम्मोहः=स्मृतिभ्रंशः, अपि, त्वयि=दुष्यन्ते, उपपन्न एव=युक्त एव। श्रूयताम्=आकर्ण्यताम्। सम्मोहकारणं वर्णयामि तदाकर्णय इति भावः।

राजा—अवहितोऽस्मि=श्रवणाय कृतमनोयोगोऽस्मि।

मारीचः—यदा एव, अप्सरस्तीर्थस्य=शचीतीर्थस्य, अवतरणात्=घट्टात्, अप्सरस्तीर्थावतरणात्, प्रत्याख्यानविक्लवां=निराकरणकातराम्, शकुन्तलामादाय=गृहीत्वा, मेनका=तन्नाम्नी अप्सरा, दाक्षायणीम्=अदितिम्, उपगता=शकुन्तलाया रक्षणार्थमुपस्थिता, तदैव=तस्मिन्नेव क्षणे, ध्यानात्=प्रणिधानात्, अवगतवृत्तान्तोऽस्मि=ज्ञातसमाचारोऽस्मि। दुर्वाससः=तन्नाम्नः मुनेः, शापात्=अभिशापात्, इयं=पुरोवर्त्तिनी, तपस्विनी=दीना, सहधर्मचारिणी=धर्मपत्नी, त्वया प्रत्यादिष्टा=प्रत्याख्याता। च=तथा, सः शापः=दुर्वाससः शापः, अङ्गुरीयदर्शनावसानः—अङ्गुरीयकदर्शनमेवावसानं=समाप्तिः, यस्य सः तथाभूतः (जातः), दुर्वाससः शापादेव त्वयि सम्मोहः समुत्पन्न इति भावः।

राजा—(सोच्छ्वासम्=सदीर्घनिश्वासम्, आत्मगतम्=स्वगतम्) एषः=दुष्यन्तः (अहम्), वचनीयात्=अकारणं शकुन्तला निराकृता इति लोकापवादात्, मुक्तोऽस्मि (दुर्वाससः शापादेव तदा तथाचरितम् इति लोकापवादात् मुक्तोऽस्मि)।

राजा—मैं सावधान हूँ।

मारीच—जिस समय निरादृत विह्वला शकुन्तला को मेनका शचीतीर्थ से लेकर यहाँ अदिति के पास आयी, उसी समय मैंने ध्यान द्वारा यह सब वृत्तान्त जान लिया था कि दुर्वासा के शाप से तुमने इस अपनी दीन धर्मपत्नी को त्याग दिया है और अंगूठी का दर्शन ही उस शाप का अन्त था।

राजा—(लम्बी साँस भरकर) लो, (अब) मुझे बदनामी से छुटकारा मिला।

The king—I am attentive.

Mārīca—Even when Menakā came to Dakshāyaṇī bringing Śakuntalā, whose distress was quite visible from the ford (shallowpant of a river) of the Apsarā-tīrtha, exactly then I knew from contemplation that owing to the curse of Durvāsā this poor partner of yours in religion was repudiated by you and not otherwise. And here that curse has its termination at the sight of the ring.

The king—*(With a sigh of relief)* Here I am freed from blame.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(स्वगतम्) दिट्ठिआ अआरणपच्चादेशी ण अज्जउत्तो। ण उण सत्तं अत्ताणं सुमरेमि। अधवा ण सुदो सुण्णहिअआए मए अअं सावो, जदो सहीहिं अच्चाअरेण संदिट्ठम्हि 'सो राआ जइ तुमं ण सुमरेदि, तदा एदं अंगुलीअअं दंसेसि' त्ति। [दिष्ट्या अकारणप्रत्यादेशी नार्यपुत्रः। न पुनः शप्तमात्मानं स्मरामि। अथवा न श्रुतः शून्यहृदयया मया अयं शापः, यतः सखीभ्यामत्यादरेण सन्दिष्टास्मि, 'स राजा यदि त्वां न स्मरति, तदा इदमङ्गुरीयकं दर्शयसि' इति।]

मारीचः—(शकुन्तलां विलोक्य) वत्से! विदितार्थासि। तददिदानीं सहधर्मचारिणं प्रति न त्वया मन्युः करणीयः। पश्य—

शकुन्तला—(स्वगतम्) दिष्ट्या=भाग्येन, आर्यपुत्रः=मदीयभर्त्ता, अकारणप्रत्यादेशी=कारणं विनैव मम निराकरणकारी, न=नास्ति। पुनः=भूयः (किञ्च), आत्मानं=शकुन्तलाम्, शप्तम्=दुर्वाससः शापवादविषयम्, न स्मरामि। अथवा, शून्यहृदयया=चिन्तावशादन्यमनस्कया, मया=शकुन्तलया, अयं=कश्यपोक्तः शापः, न श्रुतः=नाकर्णितः। यतः=अत एव प्रस्थानकाले (आश्रमात् पतिगृहं प्रति इति भावः), सखीभ्याम्=अनसूया-प्रियंवदाभ्याम्, अत्यादरेण=सम्मानपूर्वकम् सन्दिष्टास्मि=उपदिष्टास्मि। स राजा=दुष्यन्तः, यदि=चेत्, त्वाम्=भवतीम्, न स्मरति=न स्मरिष्यति, तदा इदमङ्गुरीयकम्=तन्नामाङ्कितमुद्रिकां, दर्शयसि इति। यदि प्रत्यभिज्ञानमन्थरो राजा त्वां न स्मरिष्यति तदास्मै इदमङ्गुरीयकं दर्शयिष्यसि। इत्येवं कथं वोक्तमभूदित्याशयः।

मारीचः—(शकुन्तलां विलोक्य) वत्से! विदितार्थासि=अवगतवस्तुतत्त्वाऽसि। तत्=तस्मात्, इदानीम्=सम्प्रति, सहधर्म्मचारिणं=भर्त्तारम् (प्रति), त्वया, न=नैव, मन्युः=क्रोधः, करणीयः=कर्त्तव्यः। पश्य—

शकुन्तला—(स्वगत) भाग्यवश महाराज ने अकारण नहीं त्यागा था। किन्तु मुझे अपने अभिशप्त होने की बात याद नहीं आती। अथवा सम्भव है शून्यहृदया मैंने उस समय इस शाप को नहीं सुना हो। क्योंकि (पतिगृह जाते समय) मेरी सखियों ने विशेष आदर का प्रदर्शन करते हुए मुझसे कहा था कि 'यदि राजा तुम्हें स्मरण न कर पायें तो उन्हें यह अंगूठी दिखा देना।'

मारीच—(शकुन्तला को देखकर) पुत्री! समस्त वृत्तान्त तुम्हें विदित हो गया है, अतः अब अपने स्वामी से क्रुद्ध न होना। देखो—

Śakuntalā*—*(To herself) Fortunately my lord did not repudiate me without any reason. I really do not remember myself to have been cursed or indeed the curse though incurred, was not known by me, being absent minded then. Therefore I was directed by my friends that the ring should be shown to my husband.

Mārīca*—*(Observing towards Śakuntalā) Daughter! you have come to know the facts. Therefore now no resentment should be entertained by you towards your co-worker in religion (life partner). Behold—

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शापादसि प्रतिहता स्मृतिलोपरूक्षे
भर्त्तर्यपेततमसि प्रभुता तवैव।
छाया न मूर्च्छति मलोपहतप्रसादे
शुद्धे तु दर्पणतले सुलभावकाशा॥ ३२॥

राजा—यथाह भगवान्।

मारीचः—वत्स! कच्चिदभिनन्दितस्त्वया अस्माभिर्विधिवदनुष्ठितजातकर्मादिक्रियः पुत्र एष शाकुन्तलेयः ?

अन्वयः—भर्त्तरि शापात् स्मृतिलोपरूक्षे प्रतिहता असि। (अधुना) अपेततमसि भर्त्तरि तवैव प्रभुता (वर्त्तते)। तथा च छाया मलोपहतप्रसादे न मूर्च्छति, तु शुद्धे दर्पणतले सुलभावकाशा भवति॥ ३२॥

शापादिति। भर्त्तरि=पत्यौ दुष्यन्ते, शापात्=दुर्वाससः अभिशापात्, स्मृतिलोपेन=स्मृति-भ्रंशेन, रूक्षे=प्रत्याख्याननिष्ठुरे सति, प्रतिहता=त्वं निराकृताऽसि। अधुना, अपेतम्=अपगतं, तमः=मोहः, यस्य सः अपेततमसि, भर्त्तरि=तस्मिन्नेव पत्यौ, तवैव प्रभुता=पत्नीलभ्यं प्रभुत्वं सहवासादिविषये वर्त्तते। तथा च छाया=प्रतिबिम्बम्, मलेन=आगन्तुकमालिन्येन, उपहतः=विलुप्तः, प्रसादः=स्वच्छता, यस्य तस्मिन् मलोपहतप्रसादे, दर्पणतले=मुकुरोपरि, न मूर्च्छति=न पतति। तु=परन्तु, शुद्धे=निर्मले, तस्मिन्नेव दर्पणतले, सुलभः=अव्याहतया लभ्यः, अवकाशः=प्रवेशः, यया सा सुलभावकाशा भवत्येवेति शेषः। अत्र रूपकातिशयोक्तिः दृष्टान्तश्चालङ्कारः। वसन्ततिलकं वृत्तम्॥ ३२॥

भावार्थः—यद्यपि दुर्वाससः शापवशादेव त्वम् अनेन पुरा निराकृतासि तथापि अधुना अपेततमसि भर्त्तरि तवैव प्रभुता वर्त्तते। यथा मलोपहतप्रसादे छाया न पतति परन्तु शुद्धे दर्पणतले सा सुलभावकाशा भवति। तथैवावस्थानमपि अवेहि॥ ३२॥

राजा—यथाह भगवान्=भवान् यदुक्तवान् तत्सत्यमेव।

दुर्वासा के शापवश भूल जाने के कारण इन्होंने निष्ठुर भाव से तुम्हारा तिरस्कार किया था, अब इन्हें यह बात याद आ गई है, अतः इन पर अब तुम्हारी ही प्रभुता हो गई है; क्योंकि दर्पण पर यदि धूल आदि गिर जाय तब प्रतिबिम्ब भलीभाँति नहीं दीखता परन्तु दर्पण के स्वच्छ होने पर वह उसमें सुस्पष्टतया प्रतिबिम्बित होता है॥ २३॥

राजा—आपका कहना यथार्थ है।

You were repulsed through the curse, your husband being harsh through the obstraction of his memory, but now over your husband whose darkness has gone away your's alone is the mastery. An image takes, no effect on the surface of a mirror, whose brightness is marred by dust, but on a clean one it finds easy scope. (32)

The king—As your reverance says.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भगवन्! अत्र खलु मे वंशप्रतिष्ठा। (इति बालकं हस्तेन गृह्णाति।)

मारीचः—भाविनं चक्रवर्त्तिनमेनमवगच्छतु भवान्। पश्यतु—

रथेनानुद्घातस्तिमितगतिना तीर्णजलधिः
पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधामप्रतिरथः।
इहायं सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः
पुनर्यास्यत्याख्यां भरत इति लोकस्य भरणात्॥ ३३॥

मारीचः—वत्स=पुत्र! अस्माभिः=मया मुनिगणेन समम्, विधिवत्=यथाशास्त्रम्, अनुष्ठिताः=कृताः, जातकर्म्मादिक्रियाः यस्य सः विधिवदनुष्ठितजातकर्म्मादिक्रियः, शाकुन्तलेयः= शकुन्तलाया अपत्यं, शकुन्तलागर्भसम्भूतः, एषः=पुरः स्थितः, पुत्रः=सन्ततिः, त्वया=भवता, अभिनन्दितः=अतिशयेनादृतः, कच्चित्? इत्यहं वेदितुमिच्छामि। (इति एवमुक्त्वा बालकं=तनयं सर्वदमनं, हस्तेन=करणे गृह्णाति)

राजा—भगवन्! अत्र खलु=अस्मिन्नेव शाकुन्तलेये पुत्रे, मे=मम, वंशस्य=कुलस्य, प्रतिष्ठा=स्थितिः, तस्मात् कथं नाभिनन्दामि? इत्याशयः। (इति=एतमुक्त्वा, बालकं=तनयं सर्वदमनं, हस्तेन=करेण गृह्णाति)

मारीचः—एनं=पुत्रम्, भाविनं=भविष्यन्तम्, चक्रवर्तिनम्=सम्राजम्, अवगच्छतु=जानातु, भवान्=त्वम्। अयमेव शाकुन्तलेयः पुत्रः कालेन चक्रवर्ती भवष्यतीत्यवेहि। पश्यतु—

अन्वयः—अयं अप्रतिरथः सन् अनुद्घातस्तिमितपतिना रथेन तीर्णजलधिः सन् पुरा सप्तद्वीपां वसुधां जयति। इह सत्त्वानां प्रसभदमनात् सर्वदमनः अयं पुनः लोकस्य भरणात् भरत इति आख्यां यास्यति॥ ३३॥

रथेनेति। अयम्=एषः शाकुन्तलेयः, अप्रतिरथः=शत्रुहीनः सन्, अनुद्घातेन= अभूतलस्पर्शात् प्रतिघाताभावेन, स्तिमिता=निश्चला, गतिः=गमनं, यस्य तेन अनुद्घातस्तिमित-

---

मारीच—पुत्र! हम लोगों ने जिसके विधिपूर्वक जातकर्म आदि संस्कार करा दिये हैं, उस शकुन्तला के पुत्र का आपने अभिनन्दन किया है या नहीं?

राजा—भगवन्! यही बालक तो मेरे वंश का आधार है।

(यह कहकर बालक को हाथ से ग्रहण करता है।)

मारीच—आप इसे भावी चक्रवर्ती समझें। देखिए—

आपका यह पुत्र शत्रुविहीन होकर किसी को हानि न पहुँचाते हुए गम्भीर गति से चलने वाले अपने रथ से समुद्रों का उल्लंघन कर इस सप्तद्वीपवती पृथिवी को जीतेगा। इस

Mārīca—Son! have you greated this son of Śakuntalā whose natal ceremony is performed by us according to injunction.

The king—Your reverence! in him indeed lies the permanence of my family or line.

Mārīca—Similarly may your majesty know him to be the universal emperor that is to be. Behold—

Crossing the oceans in a chariot, whose motion will be steady he, an unrivalled warrior, will surely conquer the earth, which is having seven islands. Here known as Sarvadamana from

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भगवत्कृतसंस्कारेऽस्मिन् सर्वमाशंसे।

अदितिः—इमाए दुहिदिमणोरहसंपत्तीए कण्णो दाव सुदवित्थारो करीअदु, दुहिदिवच्छला मेणआ उर इध मं परिअरंती सण्णिहिदा ज्जेव। [अनया दुहितृमनोरथसम्पत्त्या कण्वस्तावत् श्रुतविस्तारः क्रियताम्, दुहितृवत्सला मेनका पुनरिह मां परिचरन्ती सन्निहितैव।]

गतिना, रथेन=स्यन्दनेन, उत व्योमयानेन, तीर्णाः=लङ्घिताः, जलधयः=सप्त समुद्राः, येन सः तीर्णजलधिः सन्, पुरा=आगामिनि काले, सप्तद्वीपाम्=सप्तद्वीपयुक्ताम्, वसुधाम्=पृथिवीम्, जयति=जेष्यति। इह=अस्मिन्नाश्रमे, सत्त्वानाम्=सिंहव्याघ्रादिजन्तूनाम्, प्रसभं=हठेन, दमनात्= शासनाद्धेतोः, सर्वदमनः=सर्वदमननामा, अयं=बालः, पुनः=भूयोऽपि, लोकस्य=भुवनस्य, भरणात्=रक्षणात्, 'भरत इति' आख्यां=संज्ञां, यास्यति=प्राप्स्यति। अत्र भाविकालङ्कारः काव्यलिङ्गं च। शिखरिणी वृत्तम्॥ ३३॥

भावार्थः—अचिरेणैव कालेनायं अप्रतिरथो भूत्वा सप्तद्वीपवर्ती महीं जेष्यति, पश्चात् अयं सर्वदमनः लोकस्य भरणाद्धेतोः भरत इति नाम्ना प्रसिद्धिं प्राप्स्यति। अत एव महाप्रभावोऽयं बालकस्त्वया निश्चिन्तेनावश्यमेवाभिनन्दनीय इति भावः॥ ३३॥

राजा—भगवता=अणिमाद्यैश्वर्यशालिना भवता, कृताः=विहिताः, संस्काराः=जातकर्म्मादिक्रियाः, यस्य तस्मिन् भगवत्कृतसंस्कारे, अस्मिन्=मम पुत्रे, शाकुन्तलेये, सर्वम्=जलधितरणादिकं भवदुक्तप्रकारम्, आशंसे=सम्भावये। (भवत्कृतसंस्कारशक्तिमूलकतयैवास्य सर्वाः सम्पदः सम्पत्स्यन्ते इत्याशयः।)

अदितिः—अनया, दुहितुः=सुतायाः शकुन्तलायाः, यः मनोरथः=प्रियसमागमरूपः, तस्याः सम्पत्तिः=सिद्धिः, तया दुहितृमनोरथसम्पत्त्या, तावत्, कण्वः=कण्वमहर्षिः, श्रुतः=आकर्णितः, विस्तारः=विस्तृतवृत्तान्तः, येन सः श्रुतविस्तारः, क्रियताम् (कण्वस्याप्येतदभ्युदय-

---

आश्रम के सम्पूर्ण जन्तुओं का हठपूर्वक दमन करके के कारण सर्वदमन नाम से प्रसिद्ध यह बालक आगे चलकर समस्त जगत् का भरण करने के कारण 'भरत' नाम से प्रसिद्ध होगा॥ ३३॥

राजा—स्वयं आपने ज़िसका संस्कार किया है उसके लिए सभी बातों की आशा की जा सकती है।

अदिति—कन्या की अभिलाषापूर्तिपरक समाचार अब विस्तारपूर्वक महर्षि कण्व के पास भेज देना चाहिए। पुत्री में स्नेह रखने वाली मेनका तो हमारी सेवा करती हुई यहाँ है ही।

---

his forcible taming of all animals, he will again attain the appellation, 'Bharata' from his support of the world. (33)

The king—We expect all in him, whose purifactory rites have been performed by your reverence.

Aditi—Let Kaṇva also be made acquainted with the details of this fulfilment of his daughter's hearty desires. Menakā full of affection for her daughter, is even here staying in our attendence.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शकुन्तला—(आत्मगतम्) मणोगदं मे बाहरिदं भअवदीए। [मनोगतं मे व्याहृतं भगवत्या।]

मारीचः—तपःप्रभावात् सर्वमिदं प्रत्यक्षं तत्रभवतः कण्वस्य।

राजा—अतः खलु ममानतिक्रुद्धो मुनिः।

मारीचः—तथाऽप्यसौ दुहितुः सपुत्रायाः पत्या परिग्रहप्रियमस्माभिः श्रावयितव्यः। कः कोऽत्र भोः ?

संविभागो भवतु इति भावः)। दुहितरि=शकुन्तलायां, वत्सला=स्नेहवती, मेनका, मां परिचरन्ती=शुश्रूषमाणा, पुनरिह=आश्रमे, सन्निहितैव=उपस्थितैवास्ति। (मेनकया तु अत्रैव सन्निहितत्वात् सर्वमिदं ज्ञातमेवेति भावः।)

शकुन्तला—(आत्मगतम्) मे=मम, मनोगतम्=अभिप्रेतम्, भगवत्या=अदित्या, व्याहृतम्=उक्तम्। (तातकण्वस्यान्तिके यद् वार्ता प्रेषणं ममाभिप्रेतमासीत् तदेव भगवत्या प्रस्तुतम्।)

मारीचः—तपःप्रभावात्=तपोबलेन, तत्रभवतः=मान्यस्य, कण्वस्य=तन्नामकमहर्षेः, सर्वमिदम्=दुष्यन्तसमागमादिरूपं वृत्तान्तजातम्, प्रत्यक्षम्=अनभूयमानमस्ति।

राजा—अतः खलु=ध्यान(तपो)बलेन विदिताद्यन्तवृत्तान्तत्वादेव, मम सम्बन्धे, अनतिक्रुद्धः=नातिक्रुद्धः, मुनिः=कण्वः। (तपोबलेन विदिताद्यन्तवृत्तान्ततया दुर्वाससः शापवृत्तान्ते ज्ञातेऽपि कन्यादुःखदर्शनेन मयि किञ्चित् क्रुद्ध एवेति भावः।)

मारीचः—तथापि=विदिताखिलवृत्तान्तत्वेऽपि, कण्वस्य, सपुत्रायाः=पुत्रयुक्तायाः, दुहितुः=शकुन्तलायाः, पत्या=दुष्यन्तेन, परिग्रहप्रियम्=ग्रहणरूपप्रीतिकरविषयम्, अस्माभिः=मया, श्रावयितव्यः=निवेदयितव्यः। कः कोऽत्र भोः=सन्देशं कण्वमहर्षेः श्रावयितुं अस्ति कोऽप्यत्रोपस्थितः ?

शकुन्तला—(स्वगत) भगवती अदिति ने मेरे मन की बात कह दी।

मारीच—तपस्या के प्रभाव से महर्षि कण्व को यह सब प्रत्यक्षवत् विदित है।

राजा—इसीलिए तो वे मुझ पर विशेष क्रुद्ध नहीं होंगे।

मारीच—फिर भी पुत्र के साथ कन्या को उसके पति ने स्वीकार कर लिया है, यह आनन्ददायक समाचार हमें उन्हें सुनाना ही चाहिए। अरे! कोई है यहाँ ?

Śakuntalā*—*(To herself) Indeed, my heart's wish has been said by her reverence.

Mārīca—Through the power of penence all this is visually present to his reverence Kaṇva.

The king—Threfore, indeed, the sage will not be more angry on me?

Mārīca—Never the less we should inform him of the happy event that his daughter with her son has been accepted by Duśyanta i.e. her husband. Who is here, who, ho?

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिष्यः—(प्रविश्य) भगवन्! अहमस्मि।

मारीचः—वत्स! गालव! मद्वचनादिदानीमेव वैहायस्या गत्या तत्रभवते कण्वाय प्रियमावेदय यथा पुत्रवती शकुन्तला तच्छापनिवृत्तौ स्मृतिमता दुष्यन्तेन परिगृहीतेति।

शिष्यः—यथाज्ञापयन्ति गुरवः। (इति निष्क्रान्तः)

मारीचः—(राजानं प्रति) वत्स! त्वमपि सापत्यदारः सख्युराखण्डलस्य रथमारुह्य स्वां राजधानीं प्रतिष्ठस्व।

शिष्यः—(प्रविश्य=प्रवेशं विधाय) भगवन्! अयम्=अहम्, अस्मि=उपस्थितोऽस्मि।

मारीचः—वत्स=पुत्र! गालव! मद्वचनात्=मम वचनमवलम्ब्य, इदानीमेव=सपदि एव (तत्कालमेव), वैहायस्या=आकाशवर्त्तिन्या गत्या, तत्रभवते=पूज्याय, कण्वाय=कण्वमहर्षये, प्रियम्=प्रीतिकरं, आवेदय=सूचय, यथा—पुत्रवती=पुत्रयुक्ता, शकुन्तला, तस्याः=शकुन्तलायाः, यः शापः=दुर्वासःकृताभिसम्पातः, तस्य निवृत्तौ=अवसाने, तच्छापनिवृत्तौ, स्मृतिमता=शकुन्तला-परिणयविषये लब्धस्मृतिना, दुष्यन्तेन=राज्ञा, परिगृहीतेति।

शिष्यः—गुरवः (मान्यार्थे बहुवचनम्) यथाऽऽज्ञापयन्ति=यथा निर्दिशन्ति। (इति निष्क्रान्तः=प्रस्थितः)

मारीचः—(राजानं=दुष्यन्तं प्रति) वत्स! त्वमपि, सापत्यदारः=पुत्रकलत्रसहितः, सख्युः=सुहृदः, आखण्डलस्य=इन्द्रस्य, रथमारुह्य=स्यन्दने आरोहणं कृत्वा, स्वां=स्वकीयाम्, राजधानीम्=प्रधाननगरीम्, प्रतिष्ठस्व=गच्छ।

शिष्य—(आकर) यह मैं (उपस्थित) हूँ।

मारीच—वत्स गालव! अभी आकाशगामिनी गति से महर्षि कण्व के पास जाकर उन्हें मेरी ओर से यह सुखद समाचार दो कि पुत्रवती शकुन्तला को उसका शाप निवृत्त हो जाने के बाद, भूली स्मृति के लौट आने पर उसे राजा दुष्यन्त ने स्वीकार कर लिया है।

शिष्य—जैसी गुरुजनों की आज्ञा। (प्रस्थान)

मारीच—(राजा से) पुत्र! तुम भी पुत्र और पत्नी के साथ अपने मित्र इन्द्र के रथ में सवार होकर अपनी राजधानी को प्रस्थान करो।

Pupil—(Entering) Here I am, your reverence.

Mārīca—My son Gālava! even now having gone be the sky, report this happy news to his reverence Kaṇva at my words thus—That Śakuntalā with her son has been accepted by Duṣyanta, who gained memory at the cessation of her curse.

Pupil—As your reverence commands. *(Exit.)*

Mārīca—Child! you also, accompanied by your son and wife, start for your capital, mounting the chariot of your friend Indra.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—(सप्रणामम्) यदाज्ञापयति भगवान्।

मारीचः—सम्प्रति हि—

तव भवतु विडौजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु
त्वमपि विततयज्ञो वज्रिणं प्रीणयालम्।
युगशतपरिवृत्तैरेवमन्योन्यकृत्यै-
र्नयतमुभयलोकानुग्रहश्लाघनीयैः ॥ ३४॥

राजा—(सप्रणामम्=प्रणतिपूर्वकम्) यद्=यथा, आज्ञापयति=मां निर्दिशति, भवान्=त्वम्।

मारीचः—सम्प्रति हि=इदानीम्—

अन्वयः—विडौजाः तव प्रजासु विषये प्राज्यवृष्टिः भवतु, त्वमपि विततयज्ञः सन् वज्रिणं अलं प्रीणय। युगशतपरिवृत्तैः एवम् उभयलोकानुग्रहश्लाघनीयैः अन्योन्यकृत्यैः जयतम्॥ ३४॥

तवेति। विडौजाः=इन्द्रः, तव=भवतः, प्रजासु विषये, प्राज्या=प्रभूता, वृष्टिर्यस्मात् सः प्राज्यवृष्टिः, भवतु। त्वमपि=दुष्यन्तोऽपि, वितताः=सम्यक् सम्पादिताः, यज्ञाः येन सः विततयज्ञः सन्, वज्रिणम्=इन्द्रं, अलम्=पर्याप्तम् (अत्यर्थम्), प्रीणय=यज्ञभागैस्तर्पय। युगशतं=सत्यादिक्रमेण शतयुगं व्याप्य, परिवृत्तैः=जातिविनिमयैः, युगशतपरिवृत्तैः, एवम्=एवम्प्रकारैः, उभयोर्लोकयोः=स्वर्गमर्त्ययोः, अनुग्रहेण=यज्ञवृष्टिभ्यामुपकारेण, श्लाघनीयैः=प्रशंसनीयैः, उभयलोकानुग्रहश्लाघनीयैः, अन्योन्यकृत्यैः=पारस्परिककर्म्मभिः (अन्योन्यस्य=परस्परस्य, कृत्यैः= कर्तव्यैः), जयतम्=सर्वोत्कर्षेण वर्त्तेथाम्, युवामिति शेषः। अत्र परिवृत्तिरलङ्कारः। मालिनी नाम वृत्तम्॥ ३४॥

भावार्थः—मारीचः श्लोकेऽस्मिन् गमनारम्भसमुचितामाशिषं प्रयुङ्क्ते—इन्द्रः तव प्रजासु विषये प्राज्यवृष्टिर्भवतु तथा त्वमपि सम्यक्तया यज्ञादिकं सम्पादयित्वा स्वसुहृदं इन्द्रमलं प्रीणय। एवं स्वर्गमर्त्याधिपयोर्द्वयोर्युवयोः परस्परोपकार्य्योपकारकत्वसत्त्वात्प्रीतिभङ्गः कदापि मा भवत्विति भावः॥ ३४॥

राजा—(प्रणामपूर्वक) जैसी आपकी आज्ञा।

मारीच—अब से—

इन्द्र तुम्हारी प्रजा के हेतु प्रचुर वृष्टि करे और तुम भी यज्ञों के विस्तार से (प्रचुर यज्ञ करके) इन्द्र को पर्याप्त प्रसन्न करो। स्वर्ग और मर्त्य इन दोनों लोकों का हित साधन करने वाले प्रशंसनीय कार्यों द्वारा पारस्परिक हितसाधन करते हुए तुम दोनों सैकड़ों युगों तक उत्कर्ष लाभ करो॥ ३४॥

The king—(With salutation) As your reverence commands.

Mārīca—From this moment—

May Indra bestow bountifully of his rain towards your subjects. You also performing sacrifices please the Indra. Thus with reciprocal actions, laudable on account of the favours. Conforred on both the worlds, pass you both, the round of a hundred ages. (34)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा—भगवन्! यथाशक्ति श्रेयसे यतिष्ये।

मारीचः—वत्स! किन्ते भूयः प्रियमुपहरामि?

राजा—अतः परमपि प्रियमस्ति? तथाप्येतदस्तु।

(भरतवाक्यम्)

प्रवर्त्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतिमहती न हीयताम्।
ममापि च क्षपयतु नीललोहितः पुनर्भवं परिगतशक्तिरात्मभूः॥ ३५॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

इति सप्तमोऽङ्कः।

समाप्तमिदं महाकविश्रीकालिदासविरचितमभिज्ञानशाकुन्तलनामकं नाटकम्।

राजा—भगवन्! श्रेयसे=कल्याणाय, यथाशक्ति=शक्तिमनतिक्रम्य, यथासामर्थ्यम्, यतिष्ये=यत्नं करिष्ये।

मारीचः—वत्स=पुत्र! भूयः=पुनः, ते=तव सम्बन्धे, किं प्रियम्=इष्टम्, उपहरामि= उपनयामि, उपहाररूपेण प्रयच्छामि।

राजा—अतः परम्=अधिकम्, प्रियं=प्रीतिकरं वस्तु, अस्त्यपि=वर्त्तते किम्? तथापि एतद्=वक्ष्यमाणरूपम्, अस्तु=भवतु।

(भरतवाक्यम्=नटवाक्यम्; नाटकाभिनयसमाप्तौ सामाजिकेभ्यो नटेनाशीर्दीयते।)

अन्वयः—पार्थिवः प्रकृतिहिताय प्रवर्तताम्, श्रुतिमहती सरस्वती न हीयताम्, परिगतशक्तिः आत्मभूः नीललोहितः ममापि च पुनर्भवं क्षपयतु॥ ३५॥

प्रवर्तितामिति। पार्थिवः=पृथिवीपतिः, प्रकृतिः=प्रजाः, तस्या हिताय=हितं कर्तुं, प्रवर्तताम्=प्रवृत्तिमान् भवतु, श्रुतौ=श्रवणविषये, महती=प्रशस्ता (श्रवणमधुरा), महती=प्रकाशित-

---

राजा—भगवन्! मैं यथाशक्ति कल्याण-प्राप्ति की चेष्टा करूँगा।

मारीच—पुत्र! और तुम्हारा क्या प्रिय कार्य करूँ?

राजा—क्या इससे भी बढ़कर प्रियकार्य हो सकता है? फिर भी यह हो।

(भरतवाक्य)

राजा प्रजा के हितसाधन में संलग्न हों, वेदों द्वारा जिसकी महिमा गायी जाती है वह

The king—Your reverence! I shall strive for good according to my strength.

Mārīca—Child! what further good shell I present to you?

The king—Is there any good even greater than this. If your holiness even diseres to do something good, then let this be.

(The actor's speech)

May the king endeavour for the welfare of his subjects. May

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माहात्म्येति वा, सरस्वती=वाग्देवी कविकृतभारती वा, न हीयताम्=लोकैर्न त्यज्यताम्। परिगता=परितो व्याप्ता, शक्तिः=सामर्थ्यं, यस्य सः परिगतशक्तिः, यद्वा परिगता=मिलिता, देहार्धतामापन्ना, शक्तिः=शिवा, यस्य सः परिगतशक्तिः, आत्मना भवतीत्यात्मभूः=स्वयम्भूः, नीलश्चासौ लोहितश्चेति सः नीललोहितः=शिवः, ममापि च=दुष्यन्तस्य भरतस्य च (कालिदासस्येति च), पुनर्भवं=पुनर्जन्म, क्षपयतु=विच्छिनत्तु, तत्त्वज्ञानप्रदानेनेति भावः।

केचित्तु—'सरस्वती श्रुतिमहतां महीयताम्' इति पठन्ति। तत्र—श्रुत्या=वेदज्ञानेन शास्त्र-श्रवणेन वा, महताम्=श्रेष्ठानाम्, ब्राह्मणानाम्, सरस्वती=वाणी, महीयताम्=पूजां लभताम्। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गम्, वृत्त्यानुप्रासश्चालङ्कारौ। रुचिरावृत्तम्॥ ३५॥

भावार्थः—पार्थिवः प्रजाहिताय प्रवर्तताम्, श्रवणमधुरा वाग्देवी उत कविकृतभारती लोकैर्न त्यज्यताम्, तथा परिगतशक्तिः स्वयम्भूः शिवः तत्त्वज्ञानप्रदानेन मम कालिदासस्यापि पुनर्भवं क्षपयतु॥ ३५॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)

सरस्वती (देववाणी) कभी विनष्ट न हो—उसे संसार के लोग त्यागें नहीं और आत्मभू शक्तिसंयुत भगवान् शिव हमारे पुनर्जन्म को निवृत्त कर दें॥ ३५॥

(सबका प्रस्थान)

सप्तम अंक समाप्त।

महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तल नामक नाटक समाप्त।

---

the speech of those that are eminent in learning be honoured and may the self born Śivā, whose power is all encompassing, put an end to my re-birth. (35)

(Exeunt all)

(End of act VII)

HERE ENDS THE DRĀMĀ NAMED ABHIJÑĀN ŚĀKUNTALA OF GREAT POET KĀLIDĀSA.

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभिज्ञानशाकुन्तल में प्रयुक्त छन्दों का सपरिचय विवरण

छन्द	मात्रा	कहाँ कहाँ प्रयुक्त हुआ अंक	श्लोक	छन्द का लक्षण
अनुष्टुप्	८	प्रथम	१,५,६,११,१२,२६	'श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्।
		द्वितीय	१३,१६,१७	द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो:'॥
		तृतीय	१,१९,२२	
		पंचम	१४,२४,२६,२९	
		षष्ठ	१४,२२,२३,२८,३२	
		सप्तम	९,१३,१४,१५,२३,२८,२९	
त्रिष्टुप्	११	चतुर्थ	७	चार पक्तियों तथा ११ मात्रा का वैदिक छन्द
शालिनी	११	पंचम	३०	'मात्तौ गौचेच्छालिनी वेदलोकै:'।
रथोद्धता	११	सप्तम	१८	'रात्परैर्नरलगै रथोद्धता'।
द्रुतविलम्बित	१२	प्रथम	११	'द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ'।
		तृतीय	१८	
		पंचम	२७	
		षष्ठ	८	
		सप्तम	३	
वंशस्थ	१२	प्रथम	१८,२२,२३	'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ'।
		तृतीय	१३	
		चतुर्थ	१	
		पंचम	१२,१५,१७	
		षष्ठ	१३,१८,२८	
		सप्तम	१०,१६,३०	
प्रहर्षणी	१३	षष्ठ	२७,३०	'त्र्याशाभिर्मनजरगा प्रहर्षणीयम्'
रुचिरा	१३	सप्तम	३५	'जभौ सजौ गितिरूचिरा चतुर्ग्रहै:'।
वसन्ततिलका	१४	प्रथम	८,२७,३१	'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ ग:'।
		द्वितीय	९,१२	
		तृतीय	१०,२०,२६	
		चतुर्थ	१,२,१०,१२,१३,१४,१९	
		पंचम	२,३,६,२२,२३	
		षष्ठ	१२,१६,२०,२५	
		सप्तम	४,६,१७,२५,२६,३२	
मालिनी	१५	प्रथम	१०,१९,२०	'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकै:'।
		द्वितीय	४	
		तृतीय	३	
		पंचम	७,८,१९	
		सप्तम	७,३४	

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha.

मन्दाक्रान्ता	१७	प्रथम	१५,३३	'मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ
		द्वितीय	१४,१५	गयुग्मम्'
शिखरिणी	१७	प्रथम	९,२४	'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः
		द्वितीय	१०	शिखरिणी'
		तृतीय	८	
		पंचम	१०	
		षष्ठ	९	
		सप्तम	३३	
हरिणी	१७	तृतीय	१२	'रसयुगहयैर्न्सौ म्रौस्लौ गो
		चतुर्थ	१८	तदा हरिणी तदा'।
		सप्तम	२४	
शार्दूलविक्रीडित	१७	प्रथम	१४,३०	'सूर्याश्वैर्मसजयततः सगुरवः
		द्वितीय	२,५,६	शार्दूलविक्रीडितम्'।
		तृतीय	९,२५	
		चतुर्थ	४,५,८,१६,१७	
		पंचम	९	
		षष्ठ	४,५,६,१७	
		सप्तम	८,११,१२,२७	
स्रग्धरा	२१	प्रथम	१,७	'मभ्रैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतिसुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्'।
वैतालीय अथवा	१०/११	द्वितीय	१८	'विषमे ससजा गुरुः समे राभरा
वियोगिनी		षष्ठ	१	लोऽथ गुरुर्वियोगिनी'।
		सप्तम	१	
अपरवक्त्रा	११/१२	चतुर्थ	९	'अयुजि नमरला गुरुः समे तदपर-
		पंचम	१	वक्त्रमिदं नजौ जरौ'।
औपच्छन्दसिक	११/१२	तृतीय	२३,२४	'पर्यन्ते यौं तथैव (वैतालीयं इव)
		सप्तम्	२०, २१	शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्'
पुष्पिताग्रा	१२/१३	प्रथम	३२	'अयुजि नयुगरेफतो यकारो
		द्वितीय	३	युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा'।
		षष्ठ	११	
गीति		प्रथम	४	'आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि भवति
		तृतीय	१५	यत्र हंसगते। छन्दोविदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते'॥
आर्या		प्रथम	२,३,१३,१६,१७,२१ २५,२८,२९,३४	'यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थ-
		द्वितीय	१,८	के पञ्चदश साऽऽर्या'॥
		तृतीय	२,५,६,७,११,१४,१६,१७,२१	

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

		चतुर्थ	११,१५,२०	
		पंचम	११,१३,१६,१८,२१,२८,३१	
		षष्ठ	२,३,७,१५,१९,२१,३०	
		सप्तम	२२	
इन्द्रवज्रा	११	चतुर्थ	२१	'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः'।
		पंचम	४	
उपजाति	११	द्वितीय	४	'अनन्तरोदीरितलक्ष्म भाजौ पादौ
		तृतीय	४	यीयावुपजातयस्ताः'।
		पंचम	५,२०,२५	
		षष्ठ	१०,२४,२६	
		सप्तम	२,५,१९,३१	



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाटकादिलक्षणानि

(१) नाटकम्—

(१) अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्—दशरूपक ७।

(२) वीरश्रृङ्गारयोरेकः प्रधानं यत्र वर्ण्यते।
प्रख्यातनायकोपेतं नाटकं तदुदाहृतम्॥

(१) मूल पात्र की अवस्था के अनुकरण को नाटक कहते हैं।

(२) जिस रचना में वीर अथवा शृंगार इन दोनों रसों में से कोई एक प्रधान रूप से वर्णित हो तथा अन्य रस उसके अंग रूप हों एवं जिसका नायक जगविख्यात हो उसे आचार्यों ने 'नाटक' कहा है।

(1) Drama is the imitaton of situations.

(2) The work which deseribes śṛṅgāra (the erotic) or vira (the heroic) or (some times karuṇa-pathetice) as its main sentiment (Rasa) and others i.e. Hāsya-comic, Raudra-furious, Bhayānaka-terrible, Vibhatsa-loathsome, Adbhuta-the marvellous and śanta-the-quietistic, being introduced as conductive to its development and which has a very famous hero is called as Natakam—a drama.

(According to Sāhitya Darpaṇa besides the above mentioned qualities a drama must have the following merits, its hero should be of the dhīrodatta class and this (Nātaka) may consist of five to ten acts. Its whole matter should be well determind. The hero is required to be modest, decorous, comely (pleasant), munificent, civil of sweet address, eloquent, sprung from a noble family and must be very famous.

(२) पूर्वरङ्गः—

यन्नाट्यवस्तुतः पूर्वं रङ्गविघ्नोपशान्तये।
कुशीलवाः प्रकुर्वन्ति पूर्वरङ्गः स उच्यते॥

नाट्य वस्तु से पूर्वरङ्ग (नाट्यशाला) के विघ्नों को दूर करने के लिए नर्तक लोग जो कुछ करते हैं, उसे पूर्वरङ्ग कहते हैं।

While before commencement of the play for removel of obstacles of the theatre or play the assistants of the stage manager or dancers perform something that is called pūrvaraiṅga.

(After the sūtradhāra's exit, probably another actor the sthāpaka took his place at the conclusion of the ceremony known as pūrvaraṅga. As it was this sthāpaka who comes to the stage now, it was natural that this part of the introductory ceremony come to be designated the sthāpanā.)

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(३) नेपथ्यम्—

कुशीलवकुटुम्बस्य स्थलं नेपथ्यमुच्यते'।

नटों के रहने (वेशादि परिवर्तन करने) के स्थान को नेपथ्य कहते हैं।

A dramatic device for the entry of characters is called Nepathyam (behind the curtain).

The word is derived in "Vyākhyā-sudhā" Thus

'निनो नेत्रस्य नेनेतुर्वा पथ्यम्' Where नि-eye, नि-a leader.

It means 1. curtain, 2. The tiring room, 3. The actor's costume and 4. The decoration or toilet.

'नेपथ्यं स्याज्जवनिका रङ्गभूमिः प्रसाधनम्'। तथा—

'रागादिव्यञ्जको वेशो नटे नेपथ्यमुच्यते''।

(४) नान्दी—

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

—नाट्यशास्त्र ५। २४-२५ तथा सा० दर्पण

मङ्गल्यशङ्खचन्द्राब्जकोककैरवशंसिनी ।
पदैर्युक्ता द्वादशभिरष्टाभिर्वा पदैरुत॥ —सा०द०
सूत्रधारः पठेत्तत्र मध्यमं स्वरमाश्रित।
नान्दी पदैर्द्वादशभिरष्टाभिर्वाप्यलंकृताम्॥—ना०शा० ५/१०६-१०७

जिसमें देवता, ब्राह्मण और राजाओं की आशीर्वादात्मक स्तुति की जाती है उसे नान्दी कहते हैं।

जहाँ सूत्रधार द्वारा आठ या बारह पदों में मांगलिक शंख, चन्द्र, कमल, कोक, कैरव आदि के निर्देशपूर्वक स्तुति की जाती है, उस स्तुति को नान्दी कहते हैं।

Where in the divinites, bramhṇas, gods and the kings delight by the prayer.

To mark the actual commencement of the performance of a poet's play Nāndi is a verse or group of verses containing a benedication. This is the technical Nāndī. It has eight or twelve padās (stanzas) and is recited by the stage manager (sūtrādhāra) in the middle tone.

(५) आमुखं, स्थापना, प्रस्तावना वा—

सूत्रधारो नटीं ब्रूते मारिषं वा विदूषकम्।
स्वकार्यं प्रस्तुताक्षेपि चित्रोक्त्या यत्तदामुखम्॥
स्थाप्यते कथावस्त्वादि अस्याम् इति स्थापना।
सर्वमुखाङ्गवीथ्यङ्गसमेतैर्वाक्यविस्तरैः।
सूत्रधारो यत्र नटी विदूषकनटादिभिः।
संलापेन प्रस्तुतं चार्थम् आदिशेत् स्थापना ही सा॥ —रसार्णवसुधाकर

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नटी विदूषको वापि पारिपार्श्विक एव वा।
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते॥
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनाऽपि सा॥ —सा०दर्पण

जहाँ सूत्रधार नटी, मारिष या विदूषक से अपने कार्य के विषय में विचित्र उक्ति से इस प्रकार वार्तालाप करें जिससे प्रस्तुत कथा का विषय सभी को विदित हो जाये, उसे आमुख कहते हैं। उसी का अन्य नाम है—प्रस्तावना। प्राचीन कवि भास ने अपने नाटकों में इसी के लिए 'स्थापना' शब्द का प्रयोग किया है। जिससे कथावस्तु आदि की स्थापना की जाये उसे स्थापना कहते हैं।

भरतमुनि के अनुसार—सूत्रधार के पश्चात् सूत्रधार के समान ही गुण एवं आकृति युक्त स्थापक रंगमंच पर आकर नाट्यशाला में उपस्थित दर्शकों को प्रसन्न बनाते हुए, नाटककार का नाम बताकर काव्य की प्रस्थापना की आश्रयभूता प्रस्तावना प्रस्तुत करे। स्थापना वही है जिसके द्वारा नाटक, नाटककार, कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

साहित्यदर्पणकार सूत्रधार के साथ चित्रवाक्यों में नटी, विदूषक आदि के उस वार्तलाप को आमुख अथवा प्रस्तावना कहते हैं जिससे उनके भावी कार्य-कलाप का परिचय मिले।

Sthāpanā or prologue, that in which the subject matter of the play is fixed. This is identical with prastāvanā or Āmukha.

The prologue thus contains a conversation of the sūtradhāra (stage manager) with the Naṭī (his wife) or the vidūṣaka (the jester) or other characters, suggesting the matter of the play. According to others the sūtradhāra converses with his asistants and through it he intrroduces the play, plot of the play in brief and the auther (dramatist) to audience. Sthāpanā is another name for the āmukha or prastāvanā.

(६) प्रवेशकः—

प्रवेशकोऽनुदात्तोक्त्या नीचपात्रप्रयोजितः।
अङ्कद्वयान्तर्विज्ञेयः शेषं निष्कम्भको यथा॥ —सा० द०

प्रवेशक का प्रयोग निम्न उक्ति (कथन) से नीच पात्रों द्वारा कराया जाता है।

The introducer, an interlude acted by inferior characters such as servents, buffoons etc. for the purpose of squainting the audience with events not represented on the stage, but a knowledge of which is essential for the proper comprehension of the drama in what follows (like viṣkambhaka—it connects the story of the drama and sub divisions of the plot, by briefly referring to what has occurred in the intervals of the acts, or what is likely to happen at the end, it never occurs at the begining of the first act.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

In it the dialogue would not be in an eleveted language.

(७) सूत्रधारः—

१. आसूत्रयन् गुणान् नेतुः कवेरपि च वस्तुनः।
रङ्गप्रसाधनाप्रौढः सूत्रधार इहोदितः॥
नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात्सबीजकम्।
रङ्गदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः॥
वर्णनीयकथासूत्रं प्रथमं येन सूच्यते।
रङ्गभूमिं समासाद्य सूत्रधारः स उच्यते॥ —संगीतसर्वस्व

२. सूत्रं धारयति इति सूत्रधारः। —नाट्यशास्त्र ३५/४५-५०

३. नाट्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।
सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो बुधैः॥

४. नाटकीयकथासूत्रं प्रथमं येन सूच्यते।
रङ्गभूमिं समाक्रम्य सूत्रधारः स उच्यते॥

५. चतुरातोद्यनिष्णातोऽनेकभूषासमावृतः।
नानाभाषणतत्त्वज्ञो नीतिशास्त्रार्थतत्त्ववित्॥
वेशोपचारचतुरः पौरैषणविचक्षणः।
नानागतिप्रचारज्ञो रसभावविशारदः॥
नाट्यप्रयोगनिपुणो नानाशिल्पकलान्वितः।
छन्दोविधानतत्त्वज्ञः सर्वशास्त्रविचक्षणः॥
तत्तद्गीतानुगलय कला तालावधारणः।
अवधायप्रयोक्ता च योक्तॄणामुपदेशकः॥
एवं गुणगणोपेतः सूत्रधारोऽभिधीयते॥

सूत्रधार—नायक, कवि और नाटक की प्रतिपाद्य वस्तु के गुणों को संक्षेप में सूचित करने वाला सूत्रधार कहलाता है। यह रंगमंच को सजाने में अतीव कुशल होता है।

किये जाने वाले नाटक के सूत्रों को बीज सहित प्रगट करने में चतुर, रंगमंच पर आकर देवताओं की स्तुति (नान्दी) सम्पादित करने वाला सूत्रधार कहलाता है।

वर्णन किया जाने वाला (दिखायी जाने वाली) कथा के सूत्र को जो नाटक के आरम्भ में रंगमंच पर आकर सूचित करता है, उसे सूत्रधार कहते हैं।

सूत्र को धारण करने वाला सूत्रधार कहलाता है।

रंगभूमि में आकर सर्वप्रथम नाट्य सूत्र की सूचना देने वाला सूत्रधार कहलाता है।

नाटक के उपकरणों को सूत्र कहते हैं, जो इस सूत्र को धारण करता है, उसे सूत्रधार कहते हैं।

अतीव कुशल, अनेक प्रकार की वेशभूषा धारण करने वाला, नाना भाषणों के तत्त्व को जानने वाला, नीतिशास्त्र के रहस्य का मर्मज्ञ, वेश धारण करने-कराने में पटु, नागरिकों की विविध कामनाओं का जानकार, नाना चेष्टाओं की अभिव्यक्ति में कुशल, रस और भाव

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का जानकार, नाट्य प्रयोग में निपुण, नाना शिल्पों के विधान में निपुण, छन्द-प्रयोग का जानकार, सब शास्त्रों में निपुण; गीत, लय, ताल आदि का जानकार, समझकर विषय का प्रयोक्ता, योजकों को उपदेश देने में कुशल आदि गुणों से युक्त व्यक्ति को सूत्रधार कहते हैं।

Sūtradhāra (The stage manager) This is the principal character who arranges the cast of characters and instructs them. He takes a permanent part in the prastāvanā or prelude. According to Nāṭyaśāstra, sūtradhāra means one who holds the thread of the drama. The word is taken by 'Pischel' to suggest that the representation of Sanskrit drama procceds and progressed originally from puppet shows. The sūtradhāra dressed in the manner required for the play. He pleased the audience by a description of some reason.He reffered to the plot of drama, gave the name of poet etc.

(८) विदूषकः (Jester of Buffoon)—

विकृताङ्गवचोवेषैर्हास्यकारी विदूषकः।—रसार्णवसुधाकर १/९२
कुसुमवसन्ताद्यभिधः कर्मवपुर्वेशभाषाद्यैः।
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात्स्वकर्मज्ञः॥—सा०द० ३/४९
..................अन्यः हास्यकृत् च विदूषकः॥—दशरूपक १०/९
प्रकृत्युत्पन्नप्रतिभो नर्मकृतानर्मगर्भनिर्वेद्यः।
यस्तु विदूषितरचनो विदूषको नाम विज्ञेयः॥
विदूषकस्यापि गतिर्हास्यत्रयसमन्विता।
अङ्गवाक्यकृतं हास्यं हास्यं नेपथ्यजं तथा॥
दन्तुरः खलतिः कुब्जः खञ्जश्च विकृताननः।
य ईदृशः प्रवेशः स्यादङ्गास्यं तु तद् भवेत्॥
—नाट्यशास्त्र ३५/७१, १३/१२६,१३७
विदूषकविटादीनां पाठ्यं तु प्राकृतं भवेत्।
वेशेषेण दूषयति असौ विदूषकः॥

जो अपने विकृत अंगों, ऊटपटांग कथनों तथा विचित्र वेशों से हास्य की सृष्टि करे, उसे विदूषक कहते हैं।

साहित्यदर्पण के अनुसार पुष्प अथवा ऋतुपरक नाम वाले, कर्म (चेष्टा), वेश, शरीर तथा भाषा की दृष्टि से हास्य उत्पन्न करने वाले, कलह (झगड़ा लगाने) में रुचि रखने वाले एवं अपने कर्म को यथावत् सम्पादित करने में कुशल पात्र को विदूषक कहते हैं। दशरूपक के अनुसार हास्य करने वाले (हँसने-हँसाने वाले) को विदूषक कहते हैं।

नाट्यशास्त्र के अनुसार स्वभाव से ही प्रतिभासम्पन्न, नर्मसचिव, रहस्य से परिचित, विचित्र वेश-भूषा वाले पात्र को विदूषक कहते हैं। विदूषक वाणी या अंग द्वारा तथा नेपथ्य में रहकर तीन प्रकार से हास्य उत्पन्न करता है।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लम्बे-लम्बे दाँत, कुबड़ा, खञ्ज, कुरूप आदि विशेषताओं द्वारा दर्शकों को हँसाने वाला विदूषक कहलाता है। यह प्राकृत भाषा का प्रयोग करता है। यह राजा का नर्मसचिव तो होता ही है, शृंगार में उसका सहायक भी होता है। साहित्यदर्पण में कहा गया है—

शृङ्गारेऽस्य सहाया विटचेटविदूषकाद्याः।
भक्ता नर्मसु निपुणाः कुपितवधूमानभञ्जनाः शुद्धाः॥

The jester is the humorous companion and the trusted friend of the hero in the play, who excites mirth (gladness) by his quaint dress, speeches, gestures, appearances etc, and by allowing himself to be made the butt of redicule by almost everybody. He is usually a Brāhmaṇa, but (target) he is innocent of any learning or behaviour of a true orthodox Brāhmaṇa. His features are usually ugly and he makes refrences in his speech to eating, dinners etc. He is the 'Narmasuhṛit' of kings and help them in there intrigues of love. He speaks in Prākṛita language. He is a comic-character usually. He is so called because he finds fault with everybody.

(९) काञ्चुकीयः (Chamberlain)—

अन्तःपुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः।
सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते॥ —भरत मुनि
ये नित्यं सत्यसम्पन्नाः कामदोषविवर्जिताः।
ज्ञानविज्ञानकुशलाः काञ्चुकीयास्तु ते स्मृताः॥ —मातृगुप्ताचार्यः

कञ्चुकः अस्य अस्ति इति—कञ्चुकी, कञ्चुकी एव काञ्चुकीयः।
Vārtika on pāṇini 4/2/138

भरत मुनि के अनुसार अन्तःपुर में स्वच्छन्द आने-जाने वाले वृद्ध ब्राह्मण, गुणी, सभी कार्य करने में निपुण व्यक्ति (चरित्र या पात्र) को कञ्चुकी कहते हैं।

मातृगुप्ताचार्य के अनुसार सदैव सत्य बोलने वाले, काम-दोष रहित, ज्ञान-विज्ञान में निपुण व्यक्तियों को कञ्चुकी कहते हैं।

कञ्चुकधारी व्यक्ति को काञ्चुकीय कहते हैं।

Chambearlain—He is so called because he wore a kancuka, a robe indicative of his office of chamberlain. It must have been a jacket. In Abhijñāśākuntalam chamberlain is also a character.

According to renowned scholars the chamberlain should be an old man, a brāmaṇa by caste, having good qualities, expert in all affairs, as he was to go about in the inner palace i.e. Antaḥpura.

(१०) विष्कम्भकः—

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः।
संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भ आदावङ्कस्य दर्शितः॥

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्येन मध्यमाभ्यां वा पात्राभ्यां सम्प्रयोजितः।
शुद्धः स्यात् स तु सङ्कीर्णो नीचमध्यमकल्पितः॥ —सा० द०

पहले कही गयी और भविष्य में कही जाने वाली कथाओं का निदर्शक कथा का संक्षेप करने वाला अङ्क विष्कम्भक कहलाता है। अङ्क के आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। जब एक ही मध्यम पात्र अथवा दो मध्यम पात्रों द्वारा इसका प्रयोग होता है तब इसे शुद्ध विष्कम्भक कहते हैं, परन्तु जब नीच और मध्यम दोनों प्रकार के पात्रों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है तब इसे मिश्रविष्कम्भक कहते हैं। इसमें भाषा और घटनाओं का भी मिश्रण पाया जाता है।

A viṣkambhaka or interlude which is mixed i.e. there is a conversation between middling and low characters. It would therefore be carried on in sanskrit and Prākrit.

(११) भरतवाक्यम्—

भरतानां वाक्यं भरतवाक्यम्।

भरतों (नटों) का वाक्य (आशीर्वादात्मक कथन) भरतवाक्य कहलाता है। संस्कृत नाटकों में यह (भरतवाक्य) प्रायः इस रूप में उपलब्ध होता है—

'किं ते भूयः प्रियमुपकरोमि। किमतः परं प्रियमस्ति। तथापि इदमस्तु......।'

आपका और क्या प्रियं करूँ? इससे बढ़कर और क्या प्रिय हो सकता है? फिर भी यह हो। आदि। इसे प्रशस्ति भी कहते हैं। जैसे—

'नृपदेशादि शान्तिस्तु प्रशस्तिरभिधीयते' —साहित्यदर्पण ६/१४४

The speech of the actors is remembered is Bharata vākyam (benediction) in Sanskrit lilerature. It is the last verse in a drama sung by all those who act. This almost serves as a stage director. All actors gather on the stage and in a chorus recite this Bharat vākyam i.e. benediction. It may also mean a speech in praise and commemoration of Bharata the originator of the science of drama. The verse is introduced in Sanskrit drama with words like "What shall I do more for you, let it be."

(१२) आकाशभाषितम्—

किं ब्रवीष्येवमित्यादि विना पात्रं ब्रवीति यत्।
श्रुत्वेवानुक्तमप्येकस्तत् स्यादाकाशभाषितम्॥
दूरस्थं भाषणं यत्स्यादशरीरनिवेदनम्।
परीक्षान्तरितं वाक्यं तदाकाशे निगद्यते॥ —भरत मुनि

बिना किसी दूसरे पात्र के ही बिना कही हुई बात को इस प्रकार कहकर—'क्या कहते हो?' जो बात रंगमंच पर किसी पात्र द्वारा कही जाय उसे नाटक में आकाशभाषित कहते हैं।

The sense of "in the air" is used in dramas as a stage direction when a character on the stage asks questions to some one not on the

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

stage and listens to an imaginary speech supposed to be a reply, which is usually introduced by the words—"किं ब्रवीषि"? (What do you say?).

(१३) अपवारितम्—

रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्यापवारितम्।

जो रहस्य किसी एक पात्र से छिपाकर दूसरे पात्र से घूमकर कहा जाय, उसे अपवारित कहते हैं।

This word is just opposite to 'प्रकाशम्' (openly). It's meaning is concealed or secret in manner, frequently occuring in dramas in the sense of 'Apart' 'asides to another'. It is speaking in such a way that only the person addressed to may hear it.

साहित्यदर्पण में इसका रूप (लक्षण) इस प्रकार मिलता है—

तद् भवेदपवारितम् रहस्यं तु यदन्यस्य परावृत्त्य प्रकाश्यते।
त्रिपताकाकरेणान्यानपवार्यान्तरा कथा॥

(१४) प्रकाशम्—सर्वश्राव्यं प्रकाशं स्यात्।

जो बात सबको सुनाकर अर्थात् स्पष्टतः कही जाय उसे प्रकाश कहते हैं।

Prakāśa is a technical term of sanskrit dramas. It is just opposite to-'to him/her self'. Its meaning is aloud' or audibly. It is used as a staga directon in sanskrit dramas.

When some character speaks in such a way that all the audience can easily and clearly hear it than it is called as 'Prakāśa' or 'aloud'.

(१५) स्वगतम्—

'अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्'।

जो बात सुनाने योग्य नहीं होती, उसे ही नाटक में 'स्वगत' कहा जाता है। नाटक में जहाँ इस शब्द का प्रयोग होता है वहाँ इसका अर्थ यही होता है कि अमुक बात मुँह से उच्चारण करने के बदले मन में ही सोच ली गई है, परन्तु उसे प्रस्तुत इस प्रकार किया जाता है जिससे दर्शक भी उसे सुन लें।

In theatrical language 'Svagatam' means to oneself or a soliloquy (talking to one's self) when a character is expected to think by himself and not to speak loudly is a 'svagatam'. It is quite different from "to himself", because the concerned character in such a tone that every one can easily hear his words or uttlerings and thus the stage manager succeeds to give a clear picture of the concerned character's mind or thinking.

(१६) नायकः—

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूपयौवनोत्साही।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दक्षोऽनुरक्तलोकस्तेजो वैदग्ध्यशीलवान्नेता॥

दानी, सुयोग्य, कुलीन, श्रीसम्पन्न, रूप-यौवन से परिपूर्ण, उत्साही, चतुर लोगों का प्रेमी, तेजस्वी, उदार और सुशील पुरुष को नाट्यशास्त्राचार्यों ने 'नायक' संज्ञा से अभिहित किया है।

The hero of a poetic composition(play or drama) is regarded as 'Nāyakạ' (hero). He is expected to be as under. He must he liberal, learned (wise), well born, wealthy, beautiful, youthful, courageous, clever, pleasing natured (liking his subject), noble (famous), smart having good conduct, courteous and broad minḍed.

Thus one who posses above mentioned qualities is called as Nāyaka or Hero.

(१७) प्रयोगातिशयः—

यदि प्रयोग एकस्मिन् प्रयोगोऽन्यः प्रयुज्यते।
तेन पात्रप्रवेशश्चेत् प्रयोगातिशयस्तदा॥ —साहित्यदर्पण १९२

यदि एक ही प्रयोग में दूसरा प्रयोग भी आरम्भ हो जाये और उसी के द्वारा पात्र का प्रवेश हो तो उसे 'प्रयोगातिशय' कहते हैं। यह प्रस्तावना का ही एक प्रकार है।

The Sāhitya Darpaṇa thus definss it—"It is one of the five kinds of 'prastāvanā' or prologue in which a part or performance is superseded by another in such a manner that a character is suddenly brought on the stage i.e. where the sūtradhāra (staga manager) goes out hinting the entrance of a character and thus performs a part superseding that which he has apparently intended for his own, viz. dancing, that is called Prayogātiśaya.

(१८) शृंगार—

रम्यदेशकलाकालदेशभोगादिसेवनैः ।
प्रमोदात् या रतिः सैव यूनोरन्योन्यरक्तयोः॥
प्रकृष्यमालाशृङ्गारो मधुराङ्गविचेष्टितैः॥

किञ्च—

पुंसः स्त्रियाः स्त्रियाः पुंसि सम्भोगं प्रति या स्पृहा।
स शृङ्गार इति ख्यातः क्रीडारत्यादिकारकः॥ —साहित्यदर्पण २१०

सुन्दर देश, कला, काल, वेश, भोगादि का सेवन करने से जब परस्पर अनुरक्त नायक और नायिका का प्रेम बढता है और फिर जब उसके कारण मनोहर हाव-भाव आदि होने लगते हैं तब उसे शृंगार रस कहते हैं।

साहित्यदर्पण के अनुसार स्त्री-पुरुष की पारस्परिक संभोग के प्रति इच्छा ही शृंगार है और वह (शृंगार ही) क्रीड़ा-रति आदि का कारक है।

Sṛingāra or the sentiment of love, the first of the nine

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

sentiments in poetical composition, is very inportant. It is of two kinds. Saṁyoga (sexual love) and Vipralambha (love in separation).

It is thus defined—when due to beautiful surroundings (garden etc.), art (fine art i.e. music, dance etc.) time (season like spring season etc.), attractive dress (a dress suited to a specific purpose) and enjoyment the love of hero and heroine, increases and thus Hāva (daliences of love) and Bhāva (emotions) serve to develop and strengthen the prevailing sentiment. Then the specific sentiment is regarded as sentiment of love.

(१९) अंकः—

अङ्क इति रूढिशब्दो भावैश्च रसैश्च रोहयत्यर्थान्।
यत्रार्थस्य समाप्तिर्यत्र स बीजस्य भवति संहारः।
किञ्चिदवलग्नबिन्दुः सोऽङ्क इति सदावगन्तव्यः॥

जो अर्थों को भाव और रसों से अंकुरित करता है, जिसमें अनेकों प्रकार के विधान होते हैं, जहाँ एक अर्थ की समाप्ति और बीज का उपसंहार होता है और कुछ बिन्दु का सम्बन्ध होता है, उसे अङ्क कहते हैं। यह अङ्क शब्द रूढि शब्द है।

An act is defined thus—an act of a play or drama is that which invests the meaning with feelings (emotions) and sentiments and has some different types too. It marks the end of one strand (beach) of meaning and a "Bīja" (the thought seed or germ of the plot of a play) and on the other hand it shows some connection (relation) with vindu (a position in drama). Having all such qualities, it is called an Aṅka or Act.

विशेष—

"नाटकेऽस्मिन् धीरोदात्तो दक्षिणो नायको दुष्यन्तः। तृतीयाङ्कपर्यन्तं शकुन्तला कन्या मुग्धा च, ततः परं स्वकीया मध्या च नायिका। नाटकेऽस्मिन् विप्रलम्भशृङ्गारः प्रधान- रसः वीरकरुणादयो गौणभूता रसाः विप्रलम्भशृङ्गारस्तु गान्धर्वविवाहात् प्राक् पूर्वरागात्मकः ततः परं प्रवासरूपः। प्राचुर्येणात्र प्रसादोगुणः वैदर्भी रीतिश्च।"

(२०) विप्रलम्भः—

यत्रतु रतिप्रकृष्टानाभीष्टमुपैति विप्रलम्भोऽसौ। —सा० द० १९०
स च पूर्वरागमानप्रवासकरुणात्मकश्चतुर्धा स्यात्॥ —सा० द० १९१

अनुराग का अभिवर्द्धक शृंगार रस का वियोगात्मक रूप ही विप्रलम्भ कहलाता है। इसके पूर्वराग, मान, प्रवास तथा करुणा परक चार रूप हैं।

The sentiment of love in separation is of the two main kinds—Sṛṅgāra; Saṁyoga and vipralambha.It is described as—

१. अभिलाषविरहेर्ष्याप्रवासशाप हेतुक इति।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. यूनोरयुक्तयोर्भावो युक्तयोर्वाथवा मिथः।
विप्रलम्भः स विज्ञेय······ ।—उज्ज्वलनीलमणिः

The love in separation has much importance and without its feeling or experience, no one can full enjoy this sentiment.

(२१) वीरस—

उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः।
महेन्द्रदैवतो हेमवर्णोऽयं समुदाहृतः॥
आलम्बनविभावस्तु विजेतव्यादयो मताः।
विजेतव्यादि चेष्टाद्यास्तस्योद्दीपनरूपिणः॥
अनुभावस्तु तत्र स्युः सहायान्वेषणादयः।
सञ्चारिणस्तु धृतिमतिगर्वस्मृतितर्करोमाञ्चाः॥
स च दानधर्मयुद्धैर्दयया च समन्वितश्चतुर्द्धा स्यात्। —सा० द० २२४

वीर रस उत्तम प्रकृति का कहा गया है। इसका स्थायीभाव उत्साह है। महेन्द्र इसका देवता और वर्ण हेम माना गया है। विजयेच्छा इसका आलम्बन विभाव है तथा विजयेच्छापूर्वक की जाने वाली चेष्टाएँ उसकी उद्दीपक हैं। धृति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क, रोमांच इसके संचारी भाव हैं। दान, धर्म, युद्ध तथा दया के साथ संयुक्त होकर यह चार प्रकार का कहा गया है।

The sentiment of heroism—It is described as subordinate sentiment in Abhijñana Śākuntalam. It is distinguished under four heads—Dānavīra, Dharmavīra, Yuddhavīra, Dayāvīra.

(२२) करुण रस—

इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्यो रसो भवेत्।
धीरैः कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवतः॥
शोकोऽत्र स्थायिभावः स्याच्छोच्यमालम्बनं मतम्।
तस्य दाहादिकावस्था भवेदुद्दीपनं पुनः॥
अनुभावा दैवनिन्दा भूपातक्रन्दितादयः।
वैवर्ण्योच्छ्वासनिश्वासस्तम्भप्रलपनानि च॥
निर्वेदमोहापस्मारव्याधिग्लानिस्मृतिश्रमाः।
विषादजडतोन्मादचिन्ताद्या व्यभिचारिणः॥

इष्टनाश अथवा अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला रस करुण रस कहलाता है। इसका स्वामी यम तथा वर्ण धूसर बताया गया है। इसका स्थायी भाव है शोक और आलम्बन शोच। दाहादि इसके उद्दीपन हैं; दैव को कोसना, पृथ्वी पर पछाड़ खाना, रोना आदि इसके अनुभाव हैं। निर्वेद, मोह, अपस्मार आदि इसके व्यभिचारी भाव हैं।

The pathetic sentiment is also described in Abhijñāna Śākuntla as a subordinate sentiment.

The pathetic sentiment (karuṇa rasa) with (the permanent

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

state) sorrow (Śoka) as its essence (results) from loss of something cherished and from attaining of something undesired. In consequence of it (there occur) heaving of sighs, drawing of sighs, weeping, paralysis, fomentation, and the like (as consequents); the transitory states (occuring in connection with it) are sleeping, epilepsy, depression, sickness, death, indolence, agitation, despair, stupor (torpidity), insanity, anxiety and so forth.

The Heroic Sentiment—

The heroic sentiment (vīra rasa) is induced by power, good conduct, determination, courage, infatuation, cheerfulness, polity, astonishment, might, and the like (as determinates), and is based on (the permanent state) energy (utsāha). It is of three kinds, having benevolance, fighting or liberality (as consequent). In it (there occur) assurance, arrogance, contentment and joy (as transitory states).

(२३) प्रसाद गुण—

चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।
स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु च॥

Prasāda guṇa is nothing but clearness of style, one of the three Guṇas according to Mammaṭa, who thus defines it—

१. शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
व्याप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥ —का० प्र० ८

२. यावदर्थकपदत्वरूपमर्थवैमल्यं प्रसादः॥ अथवा—

३. श्रुतमात्रावाक्यार्थं करतलबदरमिव निवदयती घटना प्रसादस्य॥

सूखी लकड़ियों में अग्नि की भाँति तत्काल चित्त में व्याप्त हो जाने वाला गुण प्रसाद गुण है। अभिज्ञानशाकुन्तल में इसी गुण की सर्वत्र प्रधानता है।

As the fire spreads in the dry woods quickly accordingly this Prasād Guṇa spreads in the heart of a reader immediately and helps him to understand the meaning of the matter.

वैदर्भी रीति—

माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका।
अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥

माधुर्यव्यञ्जक वर्णों की ललित रचना को जो समासपरक अथवा समास रहित हो, वैदर्भी रीति कहते हैं।

A particular style of composition with or without compound sentences and with sweet words called as vaidarbhī rīti.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२४) धीरोदात्त नायक—

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावान् अविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥ द० रू० २/५

अतीव शक्तिशाली, अतीव गंभीर, क्षमावान्, बकवाद न करने वाला, स्थिर, अनहंकारी, दृढ प्रतिज्ञादि विशेषताओं से सम्पन्न नायक को धीरोदात्त नायक कहते हैं।

The self controlled and exalted (Hero) (Dhīrodātta) is of great excellence, excedingly serious, forbearing, not bastful, resolute, with self-assertion, suppressed and firm of purpose.

(२५) दक्षिण नायक—

दक्षिणोऽस्यां सहृदयो अथवा एषेत्वनेकमहिलासु समरागो दक्षिणः कथितः।

एक ऐसा चतुर नायक जो अनुराग तो किसी के प्रति व्यक्त करता है और उसका हृदय किसी और के प्रति संलग्न होता है—दक्षिण नायक कहलाता है।

A clever (Hero) (Dakṣiṇa) is (one that is) kind to her i.e. to his previous love, or a lover (courteous person) who professes attatchment to one mistress, while his heart has been entirely taken up by another.

(२६) मुग्धा नायिका—

मुग्धा नववयःकामा रतौ वामा मृदुः क्रुधि।

मुग्धा नायिका नवयुवक की कामना करने वाली, रतिक्रीडा में अरुचि रखने वाली तथा क्रोध में मदु होती है।

The inexperienced (kind of wife) i. e. Mugdhā has the desire of new youth, is coy, in love and gentle in anger. Mugdhā means a young girl attractive by her youthful simplicity.

(२७) मध्या—

मध्योदया यौवनाङ्गा मोहान्तसुरतक्षमा।

वृद्धिगत यौवन के प्रेम से परिपूर्ण, सुरत-कला-दक्ष नायिका को मध्या नायिका कहा गया है।

The partly experienced (kind of wife) (Madhy has youthful exuberance of love and indulges in love to the point of ecstasy,

(२८) प्रतिहारी—

सन्धिविग्रहसम्बद्धं नानाकार्यसमुत्थितम्।
निवेदयन्ति याः कार्यं प्रतिहार्यस्तु ताः स्मृताः॥

सन्धि-विग्रह से सम्बद्ध अनेक कार्यों से उत्पन्न विविध कार्यों को जो निवेदन करे उसे प्रतिहारी कहते हैं।

A female door-keeper, is that who informs the king the matter related with treaty, disolution etc. and is clever to give such

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

informations in such a way which leaves an impression of her cleverness.

(२९) धूर्त—

मुखपद्मदलाकारं वचश्चन्दनशीतलम्।
हृदयं वज्रकठिनं त्रिविधं धूर्तलक्षणम्॥

जिसका मुख कमल के समान दर्शनीय, वचन चन्दन के समान शीतल, हृदय वज्र के समान कठिन हो उसे धूर्त कहते है।

A gay deceiver is that whase appearence is so charming like a lotus flower, whose honeyed tongue is gust like sandel paste and whose heart is just like thunder bolt.

(३०) चारण—

किङ्किणी वाद्यवेदी च वृतो विकटनर्तकैः।
मर्मज्ञः सर्वरागेषु चतुरश्चारणो मतः॥

किंकिणी, वाद्य, वेदी, विकट, नर्तकादि से परिवृत, सम्पूर्ण रागों का जानकार चतुर व्यक्ति चारण कहलाता है।

A wandering actor or singer is that who has thorough knowledge of all the musical mode and is sorrounded by other actors, instruments etc.

(३१) आसन्नपरिचारिका—

संवाहने च गन्धे च तथा चैव प्रसाधने।
तथाभरणसंयोगमाल्यसंग्रथनेषु च॥
विज्ञेया नामतः सा तु नृपतेः परिचारिका॥

आसन्नपरिचारिका—निकट रह कर सेवा करने वाली उसे कहते है जो संवाहन, गन्धादि लेपन, प्रसाधन करने, हटाने, आभरण पहनाने, माला गूँथने आदि में निपुण हो और ये सारे कार्य कुशलतापूर्वक करने में सिद्ध हस्त हो।

The maid servent who helps the master in all his personal decoration is called as Āsanna paricārikā.

कतिपय-ध्यातंव्यलक्षणानि—

(३२) शृंगारलज्जा—

पराङ्मुखीकृतं शीर्षं परावृत्तमुदीरितम्।
तत्कार्यं कोपलज्जादिकृते वक्त्रापसारणे॥
प्रमोदात्मा रतिः सैव यूनोरन्योन्यसक्तयोः।
प्रकृष्यमाणश्रृंगारः.................................॥

प्रकृष्ट रति अर्थात् शृंगारपरक लज्जा अथवा कन्याजनसुलभ लज्जा को शृंगारलज्जा कहते हैं। अथवा कामभाव जनित लज्जासूचक बहिर्विकार को शृंगारलज्जा कहते हैं।

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसरी ओर धुमाये गये मुख को अपनी ओर घुमाने तथा बढे हुए अधरों को देख क्रोध-लज्जादि प्रगटाने के भाव को शृंगारलज्जा कहते हैं।

Śṛngāra-lajjā—An amorous or love gesture is that which indicates the shyness of heroine at the sight of love gestures of the hero.

(३३) हाव—

भ्रूनेत्रादिविकारैस्तु सम्भोगेच्छाप्रकाशकः।
भाव एवाल्प संलक्ष्य विकारो हाव उच्यते॥

भौंह, नेत्र आदि के संभोग की इच्छाव्यंजक विकारों द्वारा जो-जो भाव अत्यल्परूप में दर्शाया जाता है उसे हाव कहते हैं।

When through amorous play of eyebrows or eyes the feeling or gesture of union is indicated slighthy. That is called as Hāva or amorous sensation.

(३४) अङ्कावतार—

अङ्कान्ते सूचितः पात्रैस्तदङ्कस्या विभागतः।
यत्राङ्कोऽवतरत्येषोऽङ्कावतार इति स्मृतः॥

किसी अंक के अन्त में उसके पात्रों द्वारा विभाग रूप मं जहाँ अंक की उलग से अवतारणा की जाती है उसे अंकावतार कहते हैं।

At the end of an act when a mother act is being introduced by its character as a part of previous act, that is called as Aṅkāvatāra.

(३५) हसित—

विकाशितकपोलान्तमुत्फुल्लामललोचनम्।
किञ्चिल्लक्षितदन्ताग्रं हसितं तद्विदो विदुः॥

जिसमें कपोलों का प्रान्तर भाग खिल उठे, स्वच्छ नेत्र विकसित हो उठें, दाँतों का अग्रभाग कुछ-कुछ चमक उठे उसे हसित कहते हैं।

When the curve cheeks glow sweetly, crystal clear eyes dilate and the teeth some how appear that is called Hasitam.

(३६) विषादः=विषण्णता—

या दृष्टिः पतितापाङ्गा विस्तारितपुटद्वया।
निमेषिण्यस्तु तारा च विषण्णा सा विषादिनी॥

जिसमें दृष्टि अपलक हो जाय, नेत्रकनीनिका स्तब्ध हो जाय उस दृष्टि को विषण्णा या विषादिनी कहते हैं।

When the vision becomes hazy (misty) and the pupil of the eye becomes motionless then the condition is stated as viṣāda.

(३७) उत्कण्ठा—

रागे त्वलब्धविषये वेदना महती तु या।

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संशोषणी तु गात्राणां तामुत्कण्ठां विदुर्बुधाः॥

प्रेम में अप्राप्त विषय के सम्बन्ध में जो शरीर को सुखा देने में समर्थ महती वेदना होती है उसे विद्वान् उत्कण्ठा कहते हैं।

Utkaṇṭhā or Anxiety—In love affars, the pain which is able to dry the body increases then the state of that one is called as anxiety.

(३८) लावण्य—

मुक्ताफलेषु च्छाया यास्तरलत्वमिवान्तरा।
प्रतिभाति यदङ्गेषु तल्लावण्यमिहोच्यते॥

मोतियों में छाया (झाँई) की भाँति जो तरलता अंगों में प्रतिबिम्बित होती है उसे लावण्य कहते हैं।

Loveliness or charm—As a reflection under the pearls a liquidised reflection of charm or loveliness appears in the organs of body, that is called as lāvaṇya or loveliness.

(३९) गान्धर्व विवाह—

इच्छायान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च।
गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसम्भवः॥ मनुः

कन्या और वर का एक-दूसरे की इच्छा से जो संयोग होता है वही मैथुन कर्म के लिए विहित गान्धर्व विवाह है। यह कामवश ही मूर्त रूप लेता है।

When a bride and groom make sexual union being passionate with their own wish that is called Gāndharva type of marriage.

(४०) यात्रासफलतासूचक चिह्नानि—

वामे मधुरवाक् पक्षी वृक्षः पल्लवितोऽग्रतः।
अनुकूलो वहन् वायुः प्रयाणे शुभशंसिनः॥

यात्राकाल में यदि वाम भाग में मधुर स्वर वाला पक्षी मिले अथवा सामने पल्लवित पुष्पित वृक्ष मिले या वायु अनुकूल बहे तो यात्रा मांगलिक होती है अथवा ये तीनों वस्तुएँ शुभ सूचक हैं।

If at the time of journy a honeyed tongue bird comes to left side or a fully bloomed tree comes forth or the wind is favourable then the journy is called auspicious one.

(४१) चक्रवर्तिचिह्नानि—

यस्य पादतले पद्मं चक्रे वाप्यथ तोरणम्।
अङ्कुशं कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम्।

तथा—

आजानुलम्बिनौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे॥ —सामुद्रिके

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिसके पाँव के तलवे में पद्म, चक्र या तोरण हो या अंकुश अथवा वज्र का चिह्न हो वह निश्चय ही चक्रवर्ती राजा बनता है। अथवा—

चक्रवर्ती राजा की भुजाएँ घुटनों तक लम्बी, मांसल और गोलकार होती है।

The signs of an emperor—The emperor is that who has in his feet the following marks—a lotus, a chakra (a dise—a sharp circular missile weapon) or a portal (toraṇa) and a hook and also the thunder bolt With these marks, a person surely becomes an emperor. Or an emperor always have knee touching lengthy arms which remains fleshy and round shaped.

(४२) कामदशा—

दृङ्मनः सङ्ग सङ्कल्पो जागरः कृशता रतिः।
ह्रीत्यागोन्मादमूर्च्छान्ता इत्यनङ्गदशा दश॥

काम की दस दशाएँ हैं— दृष्टि, मन, संग, संकल्प, अनिद्रा, दौर्बल्य, रति, निर्लज्जता, उन्माद, मूर्च्छा। इनके द्वारा व्यक्ति की कामभावपरक दशा उजागर होती है।

Kāma daśā—In the state of passion the following conditions are coming forth of a lover—The sight, mind, union, desire, vigilance (wakefulness), weakness, sexual union (fondness for), shamelessness epilepsy and coma. When the sight becomes steady, mind always thinks about his love, the desire for sexual union compells a person to meat his friend and make union. The person when looses his sleep becomes weak and shameless; falling sickness (epilepcy) overpowers on him then we can say that he has reached to the state of passionate person.

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्लोकानामकारादिक्रमेणानुक्रमणी

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

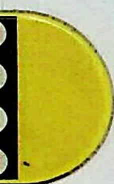
CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha



CCO. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः

- Abhijñana Śākuntala of Kālidāsa by R.D. Karmarkar
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् । 'विमला'-'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम् व्याख्याकार— डॉ. कृष्णमणि त्रिपाठी
- आधुनिक संस्कृत नाटक । डॉ. रामजी उपाध्याय
- Uttararāmcarita of Bhavbhūti by R.D. Karmarkar
- उत्तररामचरितम् । 'रमा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी
- Nāgānanada of Śrīharṣa by R.D. Karmarkar
- नाट्यशास्त्र का इतिहास । डॉ. पारसनाथ द्विवेदी
- नाट्यशास्त्रीय पारिभाषिक शब्दानुक्रमणिका । रामजी उपाध्याय
- नाट्यशास्त्रीयानुसन्धानम् । रामजी उपाध्याय
- प्राचीन संस्कृत नाटक । रामजी उपाध्याय
- मध्यकालिक संस्कृत नाटक । डॉ. रामजी उपाध्याय
- Mālavikāgnimitra of Kālidāsa by R.D. Karmarkar
- मालविकाग्निमित्रम् । संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् । डॉ. रमाशङ्कर पाण्डेय
- Mālatimādhava of Bhavabhūti by R.D. Karmarkar
- मालतीमाधवम् । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । डॉ. गंगासागर राय
- Mudrārākṣasa of Viśākhadatta by R.D. Karmarkar
- मुद्राराक्षसनाटकम् । संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्यात्रय सहित । व्याख्याकार—श्रीजगदीशचन्द्र मिश्र
- Mṛcchakaṭika of Śūdraka by R.D. Karmarkar
- मृच्छकटिकम् । महाकविशूद्रक । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित । डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र
- भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनयदर्पण । वाचस्पति गैरोला
- भासनाटकचक्रम् । (महाकविभास के सम्पूर्ण नाटकों का संकलन) हिन्दी टीका सहित सम्पादक—आचार्य बलदेव उपाध्याय (1-2 भाग)
- मध्यकालिक संस्कृतनाटकालोकः । रामजी उपाध्याय
- बालरामायणम् । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ. गंगासहाय राय
- बालभारतम् । 'गंगा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । डॉ. गंगासहाय राय

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

CC0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha